श्री जिनायनमः

(श्री हेमचंद्राचार्य कृत)

योगशास्त्रनुं गुजराती भाषांतर.

मूल, तेनो अर्थ तथा तेमनीज करेली

टीकानां भावार्थ सहीत.

संस्कृतपरथी गुजरातीमां

(जामनगरवाला पंडित श्रावक हीरालाल वि. । हंसराज)

(पासे भाषांतर करावी)

छपावी प्रसिद्ध करनार.

श्रा० भीमसिंह माणेक

श्री मुंबइमां

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां छाप्युं.

संवत १९५५ सने १८९९

प्रस्तावना.

श्री हेमचंद्राचार्यनुं नाम केवल जैनीउंज जाणे छे, एटलुंज नहीं, पण आ सुधरेला समयमां जरतखंडनां सर्व आर्यो, तथा पाश्चिमात्य विद्वानोमां पण तेमनुं नाम मशहूर छे. ते आचार्य महाराज विक्रम संवत तेरना सैकामां गुर्जरपति कुमारपालनां वखतमां थयेला छे. तेमनुं विशेष वृत्तांत कुमारपालप्रबंध, तथा प्रबंधचिंतामणी आदिक ग्रंथोथी जाणी लेवुं. तेउं कुमारपाल राजानां राजमान्य गुरु हता; अने तेथी कुमारपाल राजा तेमनी आज्ञाने मस्तकपर धरता हता. वली ते वखतनां ब्राह्मणो आदिक सर्व विद्वानोमां तेउं पोतानी अपूर्व विद्याथी सर्वोपरीपणुं जोगवता हता; तथा तेमना करेला अनेक उत्तम ग्रंथो वांचवाथी हालना विद्वानो पण तेमनुं अपूर्व ज्ञान जोइ आश्चर्य पामे छे. केम के, तेमणे व्याकरण, कोश, न्याय, साहित्य, काव्य, नाटक, योग, नीति, वैराग्य विगेरे अनेक विषयोनां उत्तम रहस्यवाला हैमव्याकरण, हैमीयनाममाला, न्यायतत्वतरंग, अलंकारचूडामणि, काव्यानुशासन, द्व्याश्रय महाकाव्य, त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित्रमहाकाव्य, द्रौपदी नाटक, योगशास्त्र, अर्हन्नीति, वैराग्य दीपिका, वीतराग स्तोत्र, मागधी व्याकरण, देशीयनाममाला, हरिश्चंद्रचंपु विगेरे सैंकडो ग्रंथो बनाव्या छे. सर्व मली तेमणे साडात्रण क्रोड श्लोकनी रचना करेली कहेवाय छे; अने तेमानां हाल पण घणां ग्रंथो आपणी दृष्टिये पडे छे, अने तेमां रहेलुं अपूर्व रहस्यवालुं तेमनुं ज्ञान जोइ दरेक विद्वान पोतानुं मस्तक आश्चर्यथी घुणाव्या विना रहेतो नथी. हवे तेउंये जे ग्रंथो रचेला छे, ते पैकी आ "योगशास्त्र" (के जेनुं बीजुं नाम "अध्यात्मोपनिषद्" छे,) पण एक छे. आ मूल ग्रंथ तेमणे संस्कृत जाषामां बनाव्यो छे, तथा तेनापर विवरण (टीका) पण तेमणे कर्युं छे. तेनां बार प्रकाशो छे; तेमांना पेहेला चार प्रकाशोनुं तेणे विवरण कर्युं छे, अने बाकीनां आठ प्रकाशोनुं कर्युं नथी. आ ग्रंथ उत्तमता माटे अत्रे कंइ पण नहीं लखतां, वाचक वर्गने, अमो आद्य अंतसुधि ते वांची जवानीज जलामण करीये छीयें; अने तेथी तेमने पो-

तानी मेळेज मालुम पडशे, के, आ ग्रंथमां सर्वोत्तम रहस्य जरेलुं छे. वळी आ ग्रंथ संस्कृत जाषामां होवाथी हालना समयमां ते जाषानुं सर्वने जाणपणुं नहीं होवाथी, अमोये तेनुं शुरू गुजराती जाषांतर जामनगर निवासी पंडित श्रावक हीरालाल वि. हंसराज पासे करावी प्रसिद्ध कर्युं छे. आ ग्रंथनां मूल श्लोको मुकी, तेनी नीचे, तेनो अर्थ, तथा तेनी नीचे टीकानो जावार्थ, तथा प्रसंगोपात आवती कथाओ पण संक्षेपथी छापेली छे.

आ ग्रंथमां फारम तपासनारनी गफलतीथी कोइ कोइ जगोए जे अशुद्धता रहेली होय, ते सुज्ञ जनोए कृपा करी सुधारीने वांचवी.

शा. जाणजी माया
(जीमसी माणेकना कारजारी.)

अनुक्रमणिका

वीषय.

पांचमो प्रकाश. (५)

विषय. पृष्ठ.

छठो प्रकाश (६)

सातमो प्रकाश. (७)

आठमो प्रकाश. (८)

नवमो प्रकाश. (९)

दशमो प्रकाश. (१०)

अग्यारमो प्रकाश. (११)

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

श्रीमत् हेमचंद्राचार्यविरचित

योगशास्त्रनुं भाषांतर.

सिद्ध थयेली योगनी अद्भुत संपत्तिवाला, तथा मुक्ति प्राप्त थवाथी शोजायमान एवा वीर परमात्माने नमस्कार करीने, जव्य जीवोने प्रतिबोध करवा माटे, योगशास्त्रनुं विशेष टीकायुक्त वर्णन करुंछुं.

नमो डुर्वाररागादि, वैरिवारनिवारिणे ॥
अर्हते योगिनाथाय, महावीराय तायिने ॥ १ ॥

अर्थः— डुखें वारी शकाय, एवा रागादि वैरिना समूहने नाशकरवावाला, तथा योगीना स्वामि, अने (सर्व जीवोनुं) रक्षण करनारा एवा वीर परमात्माने नमस्कार थाउं ?

टीकाः— आ श्लोकमां, "महावीराय" ए विशेष्य पद छे; जे विशेषेकरीने कर्मोने दूर करे, ते "वीर" कहेवाय; वली जे कर्मोनो नाश करे, तथा तपथी शोजे, तथा जे तप अने वीर्ययुक्त होय ते "वीर" कहेवाय. तथा जे बीजा वीरपुरुषोनी अपेक्षाए मोटा होय, ते "महावीर" कहेवाय. तेमज जगवानना जन्मोत्सव वखते स्नात्रपूजा समये इंद्रने शंका थइ के, आ प्रजुनुं शरीर तो नानुं छे, तेथी पाणीनो आटलो बधो जार केम सहन करी शकशे? एवा इंद्रनी शंकारूपी शल्यने दूर करवा वास्ते, प्रजुए डाबा पगना अंगुठाथी मेरुपर्वतने क्षोजाव्यो जेथी तेनां शिखरो कंपवा लाग्यां, तथा कंपायमान थती पृथ्वीपर समुद्र क्षोजायमान थवा लाग्यो तेसमये इंद्रें अवधिज्ञानथी जोयुं, तो प्रजुना प्रजावनो अतिशय जोवाथी आश्चर्य पामीने, तेणें प्रजुनुं "महावीर" नाम पाड्युं. अने ते नामने प्रजुए अनादि जवमां उत्पन्न थयेला प्रौढ कर्मोने नाश करवाना बलथी सार्थक कर्युं. तथा जगवाननुं "वर्धमान" एवुं नाम मातपिताए कर्युं हतुं. बाकीनां विशेषणो तो, पोताना खरा अर्थोने उत्पन्न करतां थकां जगवानना चार अतिशयोने प्रगट करे छे. तेमां पूर्वार्द्धथी (पेहेला अ-

रथा श्लोकथी) "अपायापगम" नामें अतिशय प्रगट थाय छे. कारण के, अपायरूप (कष्टरूप) एवा जे रागआदिक तेउनो नाश थवाथी, जगवानने स्वरूपपणानो लाज थयो छे. "अर्हते" ए शब्दथी सघला देव दानव तथा माणसोए करेली पूजानो अतिशय प्रगट थाय छे. अने "योगिनाथाय" एम कहेवाथी "ज्ञानातिशय" कह्यो छे. अवधिज्ञानि आदिक योगियो कहेवाय, अने तेउना पण नाथ. कारण के, तेउए तो निर्मल केवलज्ञानथी लोकालोकना स्वजावो जाणेला छे. "तायिने" ए पद कहीने "वचनातिशय" जणाव्यो छे. कारण के, प्रजु सघला देव, दानव, माणस तिर्यंच आदिकने पालवावाला छे; अने ते पालवापणुं तो, सघला जुवनोने अजयदान देवामां समर्थ, तथा सघली जाषामां तुल्य, एवी धर्मदेशनाना द्वारें करी आ प्रजुनेज छे. पालनमात्र तो, पोतानी आपदाथी वाघ आदिकने पण संजवे छे. एवी रीतें आ चार अतिशयोयें करीने, महावीर प्रजुनी परमार्थपणानीं निरुक्ति कही. वली योगगर्जित स्तुति कहे छे.

पन्नगे च सुरेंद्रे च, कौशिके पादसंस्पृशि ॥
निर्विशेषमनस्काय, श्रीवीरस्वामिने नमः ॥ २ ॥

अर्थः— पगने स्पर्श करनार इंद्र तथा कौशिक, कौशिक सर्पनेविषे पण, जेनुं तुल्य मन छे, एवा श्रीवीरस्वामिप्रत्ये नमस्कार थाउं ?

टीकाः— सर्पने कौशिकपणुं तेना आगला जवना गोत्रने अनुसारें छे, कारण के, प्रजुयें पण कह्युं हतुं के, "हे कौशिक" तुं बोध पाम्य ? अने इंद्रनुं तो "कौशिक" नाम हतुं. तेउ बन्नेए प्रजुना पगनो स्पर्श कर्यो, एटले सर्पें डंख मारवानी बुद्धिथी, अने इंद्रें पोतानी जक्तिना अतिशयथी स्पर्श कर्यो. "तुल्य मनवाला" एटले प्रजुने रागद्वेषनुं रहितपणुं होवाथी तेमनुं मध्यस्थपणुं जणाव्युं. वली परंपराथी आवो अर्थ पण गम्य छे. (ते कहे छे.)

पूर्व जन्ममां मेलवेल छे, प्रतापी एवुं तीर्थंकर नामकर्म जेणें, तथा त्रण ज्ञानथी पवित्र आत्मावाला, श्री वीरप्रजु, प्राणत देवलोकना पुष्पोत्तर विमानथी चवीने, सिद्धार्थराजाने घेर, त्रिशला राणीनी कुक्षिरूपी

तलावमां, राजहंसनी पेठे आवी उपन्या. ते प्रभु ज्यारे गर्भमां आव्या, त्यारे त्रिशला देवियें, सिंह, हाथी, वृषभ, अभिषेकसहित लक्ष्मी, पुष्पमाला, चंद्र, सूर्य, महाध्वज, जरेलोकुंभ, पद्मसरोवर, समुद्र, विमान, रत्नराशि, तथा धुमाडाविनानो अग्नि, एवी रीतनां चौद स्वप्नां जोयां. पछी शुभ दिवसें, त्रणे लोकने उद्योत करनारा, तथा देव अने दानवोना आसनने कंपावनार, तथा दुःखवार नारकीना जीवोने पण सुख आपनार, एवा प्रभुनो सुखमयसमये जन्म थयो, तथा तेज वखते दिक्कुमारियो "सूतिकर्म" करवा लागियो; पछि सुधर्मेंद्रें, प्रभुनो जन्माभिषेक करवा वास्ते तेने मेरु पर्वतपर लइ जइ, सिंहासनपर बेसाड्या पछी भक्तिथी कोमल छे, चित्त जेनुं, एवा ते इंद्रें शंका करी के, आटलो बधो पाणीनो भार, आ प्रभु, केम सहन करी शकशे? एवी रीतनी इंद्रनी शंका दूर करवाने, प्रभुए लीलामात्रथी, डाबा पगना अंगुठाथी, मेरुने दबाव्यो. ते वखते ते पर्वतनां शिखरो, जाणे प्रभुने नमस्कार करवामाटेज नमतां होय नहीं, तेम नमी गयां, तथा कुलपर्वतो पण जाणे प्रभुपासे आववामाटे (प्रयत्न) करता होय नहीं, तेम चलायमान थया; तथा समुद्रो जाणे स्नात्र करवामाटेज उछलता होय नहीं, तेम अत्यंत उछलवा लाग्या, तथा पृथ्वी जाणे नाचवानी तैयारी करती होय नहीं, तेम कंपवा लागी. "आ शुं थयुं?" एम विचारि इंद्रें अवधिज्ञानना उपयोगथी, भगवाननुं लीलायित जाण्युं (ते जोइ) इंद्र, प्रभुने नस्कार करी कहेवा लाग्यो के, हेस्वामि! मारा जेवो सामान्य माणस, आपनां आवां अतुल्य माहात्म्यने केम जाणी शके? माटे मने जे शंका थइ हती, ते "मिथ्या दुःकृत" छे (हुं तेविषे क्षमा मागुं छुं.) पछी इंद्रोए वाजां वागते, प्रभुनो, तीर्थोनां सुगंधि तथा पवित्र पाणीओथी अभिषेक कर्यो पछी देव, दानव, तथा भुवनपतिओए ते अभिषेकनां जलने वंदन करी, शरीरे छांट्युं वली प्रभुना स्नात्र जलथी स्पर्श थयेली माटी पण वंदनीय थइ, कारणके, मोटाओनी संगतिथी हलका माणसनुं पण गौरव थाय छे. पछी सुधर्मेंद्र, प्रभुने ईशानेंद्रना खोलामां बेसाडीने, स्नान करावीने, तथा पूजिने स्तुति करवा लाग्यो हे अरिहंत, भगवंत! स्वयंबुद्ध, ब्रह्मा, तीर्थंकर, आदिकरनार, पुरुषोत्तम, लोकमां दीपक समान, लोकने प्रद्योत करनारा, लोकमां

उत्तम, लोकना अधीश, लोकोना हितकारी, पुरुषोमां उत्तम, पुंडरीक समान, पुरुषोमां सिंहसमान, पुरुषोमां गंधहस्ति समान, चक्षु देवावाला, अभय देनारा, बोध देनारा, मार्ग देखाडनारा, धर्म देवावाला, धर्मनो उपदेश देनारा, शरणुं देवावाला, धर्ममां सारथीसमान, धर्ममां दोरनारा, धर्ममां चक्रवर्त्ति, छद्मस्थपणाथी रहित, सम्यग् ज्ञान दर्शनने धारण करनार, जिन, जाप करवा लायक तरेला अने तारनारा, मुकाएला (कर्मोथी) मुकावनारा, तथा बोध पामेला, अने बोध देनारा, एवा तमो प्रत्ये नमस्कार थाउं? तेम वली, सर्वज्ञ स्वामी, सघलुं जोनारा, सघला अतिशयोनां पात्ररूप आठ कर्मोने नाश करनारा, वली क्षेत्र, पात्र, तीर्थ तथा परमात्मा, तथा स्याद्वाद कहेवावाला, वीतराग तथा मुनि, एवा तमो प्रत्ये नमस्कार थाउं? वली, पूज्यना पण पूज्य, तथा मोटामां मोटा, तथा आचार्योना पण आचार्य, ज्येष्ठोमां अतिज्येष्ठ तथा सर्वव्यापी, योगियोना स्वामी, पवित्र तथा पवित्र करनारा, अनुत्तर, तथा उत्तर, योगोना आचार्य, निर्मल करनारा, उत्कृष्ट, अग्रेसर बृहस्पति तथा मंगलरूप एवा तमो प्रत्ये नमस्कार थाउं? वली स्वर्ग मृत्यु अने पातालमां एकज वीर, तथा पहेलांथीज उगेला सूर्यसमान, ॐभूर्भुवः स्वः एवी रीतनी वाणीथी स्तववा लायक, एवा तमो प्रत्ये नमस्कार थाउं? वली सर्वने प्रिय, सर्वज्ञ सर्व अर्थ रूप अमृत समान, उदय थयेल छे ब्रह्मचर्य जेने एवा, तथा यथार्थ कहेनार, तथा (जवरूपी समुद्रथी) पार पहोंचेला, तथा दहापण वाला, विकाररहित, रक्षण करनारा, वज्रऋषभनाराच संघयणवाला, तत्व जोनारा, त्रणे कालमां जाणनारा, जिनेंद्र, स्वयंभू, तथा ज्ञान, बल, वीर्य, तेज, शक्ति तथा आश्चर्यवाला, आदिपुरुष, परमेष्टि, महेश, ज्योतितत्ववाला, तथा सिद्धार्थ राजाना कुलरूपी क्षीरसमुद्र प्रत्ये चंद्र समान, धीर, तथा त्रण जगतना स्वामि, एवा तमो महावीर प्रत्ये नमस्कार थाउं? एवी रीतें स्तुति करीने, तथा नमस्कार करी, प्रभुने लइने, तुरत इंद्रे, तेमनी माताने सोंप्या पोताना वंशनी वृद्धि करवाथी, मातपितायें तेमनुं यथार्थ "वर्धमान" नाम पाड्युं. "हुं पेहेलां सेवुं, हुं पेहेलां सेवुं" एवुं बोलता जक्त एवा देव, दानवोथी सेवाता ते प्रभु अमृतने वर्षनारी दृष्टिथी जाणे पृथ्वीने सिंचता होय नहीं, एवा, तथा एक हु-

हजारने आठ लक्षणोवाला तथा स्वाभाविक गुणोथी मोहोटा एवा ते प्रभु अनुक्रमें वयथी पण वधवा लाग्या एक दहाडे ते अत्यंत पराक्रमी प्रभु, सरखी अवस्थावाला, राजपुत्रोनी साथे, उमरने लायक एवी रमतोथी रमवा गया. त्यारे सुधर्मा सभामां इंद्रे अवधिज्ञानथी जाणीने कह्युं के, सघला वीरपुरुषो महावीरप्रभुथी नीचा छे. त्यारे कोइ मत्सरी देवतायें कह्युं के, तेने तो हुं छोभावी दइश, एम विचारि ज्यां प्रभु क्रीडा करता हता त्यां आव्यो. ते वखते प्रभु राजपुत्रो साथे आमलकी क्रीडा करता हता, ते जोइनें, ते देव, मायाथी सर्प थइ ते झाडने वींटाणो. ते वखते सघला राजपुत्रो बीकथी दशे दिशाउमां नाशी गया, त्यारे प्रभुयें जरा हसीने, ते सर्पने दोरडानी पेठे उपाडीने, पृथ्वीपर फेंकी दीधो. पछी ते राजकुमारो पाछा, लज्जासहित रमवा आव्या, त्यारे ते देव पण कुमार थइने आव्यो, तथा सघलाउ वृक्षपर चड्या, पण सघला कुमारोनी पेहेलां प्रभु वृक्षना अग्रभागपर पहोची गया, अथवा एम करवुं प्रभुने शुं मुश्केल छे !! के जे, लोकना अग्रभागप्रत्ये पण जशे. ते वृक्षपर प्रभु मेरु पर्वतपर जेम सूर्य शोभे, तेम शोभवा लाग्या; तथा बीजा लटकता कुमारो वांदराउनी पेठे शोभवा लाग्या. त्यारे एवी रीतें भगवान् जीत्या; अने ते रमतमां शरत एवी हती के, जे कोई जीते ते बीजाने पीठपर चडी बेसे. तेथी वीर प्रभु छोकराउनी पीठपर बेसीने, तेउने घोडानी पेठे फेरववा लाग्या, तथा अनुक्रमें महाबलवान्, ते प्रभु ते देवनी पीठपर पण बेठा. त्यारे ते दुष्टबुद्धि देव, पोतानुं विकराल वेतालनुं रूप करीने, पर्वतोने पण हरावतो थको, उंचो वधवा लाग्यो. पाताल सरखा तेना मुखमां रहेली जीभें, तक्षकनुं रूप लीधुं, तथा मस्तकरूपी पर्वतपर, पीला तथा उंचा वालोए दावानलनुं रूप लीधुं. तेनी अत्यंत भयंकर दाढो करवतसरखी देखावा लागी, तथा तेनी आंखो, बलता अंगारानी सगडीउ सरखी देखावा लागी. तेनां नस्कोरां तो जाणे मोटी, भयंकर पर्वतोनी गुफा सरखां देखावा लाग्यां, तथा भ्रुकुटीथी वांकी वलेली, तथा भयंकर, एवी भमरुयो महोटी नागणियो सरखी जणावा लागी. हवे जेटलामां ते वधतो थको विरम्यो नहीं, तेटलामां तो, महाबलवान् एवा प्रभुए, तेने बांसामां मुठी मारी वामनरूप बनावी दीधो. एवी रीतें

इंद्रें वर्णवेला, प्रजुना धैर्यने नजरे जोइ, तथा प्रजुने पोताना मूलरूपें नमस्कार करी, ते देव पोताने स्थानकें गयो. एक दहाडे मातपिताए, प्रजुने जणाववा मुकवानो महोत्सव करवाथी इंद्रें विचार्युं के, सर्वज्ञने शुं शिष्यपणुं ! ! ! एम विचारि ते त्यां आव्यो; पछी इंद्रें प्रजुने उपाध्यायने आसने बेसाड्या, तथा तेनी प्रार्थनाथी प्रजुयें व्याकरण शास्त्र बोली आप्युं, आ व्याकरण प्रजुए इंद्रने कही बताव्युं, तेथी उपाध्यायें लोकमां तेने " ऐंद्र व्याकरण " ना नामथी प्रसिद्ध कर्युं. पछी दीक्षा लेवामां उत्कंठित एवा, ते प्रजु केटलीक मेहेनतें मातपिताना उपरोधथी, अठावीश वर्ष गृहवासमां रह्या.पछी ज्यारे मात पिता काल करीने देवलोकमां गयां, त्यारे प्रजुए राज्य संपत्तिथी निरीह थइनें दीक्षा लेवानी इछा करी, त्यारे नंदिवर्धन नामना मोटा जाईयें, प्रजुने कह्युं के, हे जगवन् ! तुं " दाऊथापर लूण नाख्य नहीं " एम गदगद कंठे कहीनें प्रजुने रोकी राख्या. पछी प्रजु जावयति थइनें, नाना प्रकारनां आजूषणोथी जूषित थया थका चित्रशालामां काउसग ध्यानें रह्या. एवी रीतें प्रजुए शुद्ध आहारपाणीथी, त्यां केटलीक मेहेनतें एक वर्ष व्यतीत कर्युं. पछी लोकांतिक देवोए तीर्थ प्रवर्त्तावबानुं कहेवाथी, प्रजु, मागणो प्रत्ये इछित दान देवा लाग्या. एवी रीतें बीजा एक वर्ष सुधिमां पृथ्वीने करज रहित करीने, प्रजुए तृणनी पेठे राज्यलक्ष्मीनो त्याग कर्यो. पछी सघला निकायना देवोए प्रजुना निकलवानो महोत्सव कर्यो, तथा प्रजुए पण हजार देवोए उपाडेली चंद्रप्रजा नामें पालखीमां बेशीनें, ज्ञातखंड नामें वनमां जइ, सघला सावद्य व्यापारनो त्याग करी दिवसना चोथे पहोरें दीक्षा लीधी. तेज वखते जगतना मनोजावने जणावनारुं, मनःपर्यव नामेनुं चोथुं ज्ञान प्रजुने उत्पन्न थयुं. पछी त्यांथी संध्या वखते कर्मार गामपासें जइ, प्रजुए मेरुनी पेठे निष्कंप रही कायोत्सर्ग कर्यो. त्यां पोताना आत्माना वेरी एवा गोवालीआए, रात्रियें, कारणविना क्रोध करीने प्रजुने उपद्रव कर्यो. पछी इंद्रें अवधिज्ञानथी ते उपद्रव जाणीने, तेनो नाश कर्या, तथा वली तेणें प्रजुनें प्रार्थना करी के, हे जगवन् ! आपने बार वर्षो सुधी उपसर्गो थशे, माटे तेउंनो नाश करवाने हुं आपनी पासे रहेवा इछुं छुं. त्यारे प्रजु पण समाधि पा-

रीने कहेवा लाग्या के, अरिहंतो, परना सहायनी अपेक्षा राखे नहीं. पछी जगतना गुरु, चंद्रनी पेठे शीतलेश्यावाला, सूर्यनी पेठे, तपना तेजथी दुःखें जोई शकाय तेवा, हाथीनी पेठे बलवान्, मेरुनी पेठे निश्चल, पृथ्वीनी पेठे सर्व स्पर्शने सहन करनारा, समुद्रनी पेठे गंभीर, सिंहनी पेठे निर्भय, सलगेला अग्निनी पेठे मिथ्यादृष्टिर्ठने न जोवाय एवा, गेंडाना शिंगडानी पेठे एकला, मोटा बेलनी पेठे बलवान्, काचबानी पेठे गुप्त इंद्रियोवाला, सर्पनी पेठे एकज जगोए दृष्टिवाला, शंखनी पेठे निरंजन, सोनानी पेठे उत्तम रूपवाला, पक्षीनी पेठे अप्रतिबद्ध, जीवनी पेठे अटकावरहित गतिवाला, आकाशनी पेठे आलंबनविनाना, भारंड पक्षीनी पेठे अप्रमादी, कमलिनीना पांदडानी पेठे लेपरहित, तेम, शत्रु, मित्र, तृण, स्त्री, सोनुं, पत्थर, मणि, माटी, अहींनां तथा परलोकनां, सुख, दुःख, भव तथा मोक्षमां तुल्य आशयवाला, तथा कारणविना दयामां तत्पर रहेला मनपणाए करीने, भवरूपी समुद्रमां आ मुग्धजगतनो (जगतना लोकोनो) उद्धार करवानी इच्छावाला, प्रभु वायुनीपेठे अटकाव रहित, समुद्रनी मेखलावाली, तथा नाना प्रकारनां गाम, नगर अने वनवाली पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या. हवे एक दहाडे प्रभु दक्षिण देशमां भइने श्वेतांबी नगरी प्रत्ये जता हता, ते वखते तेने गोवालीयाना छोकराओ कहेवा लाग्या के, हे देव ! श्वेतांबी तरफ जवानो आ सिद्धो रस्तो छे, पण वच्चे एक कनखल नामें तापसोनो आश्रम आवे छे. ते मार्गमां हमणां एक "दृष्टिविष" सर्प रहे छे, अने तेथी त्यां पक्षिर्ठ पण फक्त हवामांज उडे छे. माटे ते मार्ग छोडी दइने, आ वांका मार्गेथी पण तमो जार्ठ ? कारणके, जेनाथी कान त्रुटी पडे, एवा सोनानी पण शी जरूर होय ? वली आप ते सर्पने जाणो पण छो, कारण के, ते पूर्व जन्ममां एक क्षपक (साधु) हतो, तथा पारणा वास्ते स्थानकमांथी बहार गयो. जतां जतां तेना पगेथी एक देडकी मरी गइ; अने तेनी आलोयणावास्ते एक (बीजा) साधुए तेने ते देडकी देखाडी. पण तेतो उलटो लोकोए मारेली (बीजी) देडकीर्ठने देखाडी साधुने कहेवा लाग्यो के, हे नीच, आ देडकीर्ठ पण शुं में मारी छे ? त्यारे ते साधुए मौन रही विचार्यु के, आ महानुभाव मुनि सांजरे तेनी आलोयणा लेशे. पछी पडीकमणा वखते पण, ते

साधु आलोव्याविना बेसी रह्यो, त्यारे, पेला साधुए विचार्युं के, आ वात ते भूली गयो हशे; तेथी तेणे याद करावी आप्युं के तुं ते देडकीनी आलोयणा केम लेतो नथी त्यारे ते क्षपक एकदम उजो थइ, तेने मारवाना विचारथी दोड्यो, अने ते क्रोधांध, वच्चे स्तंजामां अफलावाथी मृत्यु पाम्यो, एवि रीतें साधुपणानी विराधना करीने ते ज्योतिष्क देवोमां जइ उपन्यो त्यांथी चवीने ते कनखल नामे आश्रममां, पांचसो तपस्वीउना स्वामिनी स्त्रीने पेटें कौशिक नामथी पुत्रपणे उत्पन्न थयो. त्यां कौशिक गोत्र होवाथी बीजा पण कौशिको घणा हता, अने आ घणो क्रोधी होवाथी ते चंडकौशिकना नामथी प्रख्यात हतो पठी ते कुलपति मृत्यु पामवाथी, आ चंडकौशिक तापसोनो स्वामी थयो. ते चंडकौशिक, मोहें करीने, वनमां जमतो थको, त्यां थतां, पुष्प, मूल, फल के पानने, कोइने लेवा देतो नहीं. नीचे विखराइ गयेलां फलादिकने जो कोइ त्यांथी लेतुं तो तेने ते कोदाली तथा पत्थर लइने मारतो. एवी रीतें फलादिकने नहीं मेलवता, तथा तेथी दुःख पामता तपस्वीउ, लाकडी पडवाथी जेम कागडाउ नाशी जाय, तेम त्यांथी दिशा दिशाउमां नाशी गया. एक दहाडे कांटावास्ते कौशिक बहार गयो हतो त्यारे, श्वेतांबीथी केटलाक राजकुंवरोए आवीने, तेना वननो नाश कर्यो पठी ज्यारे ते पाठो आव्यो, त्यारे गोवालीआउ तेने कहेवा लाग्या के, जो? जो? तारूं वन कोइयें नाश कर्युं ठे. (ते सांजली) घीथी जेम अग्नि, तेम क्रोधथी जाज्वल्यमान थइने ते तीक्ष्ण कुहाडो लइ (तेउ तरफ दोडवा) लाग्यो. त्यारे ते राजपुत्रो, बाज पक्षिथी जेम बीजा पक्षिउ, तेम त्यांथी नासवा लाग्या, तथा ते चंडकौशिक पण अथडाइने यमना मुखसरखा खाडामां पड्यो, तथा तेनो कुहाडो तेना माथामां वाग्यो, अरे!! कर्मनो केवो विपाक ठे!!! ते त्यांथी मरीने आज वनमां दृष्टिविष सर्प थयो ठे, कारणके तीव्र अनुबंधवालो क्रोध जवांतरमां पण साथेज आवेठे. (ते सांजली) प्रजुयें विचार्युं के, खरेखर आने बोध देवो जोइयें ठीयें, एम विचारी पोतानी पीडाने पण नहीं गणकारीने तेज सरलमार्गे ते गया. माणसोनो संचार नहीं होवाथी, सरखी वालुका वालुं तथा वृक्षोने पाणी नहीं पवातुं होवाथी बंध पडेली नेहेरोवालुं, तथा सूकां जुंगां जेवां, वृक्षोथी

[illegible] जीर्ण पांदडांथी ढवायेलुं, अने वीखराएला राफडाथी ज्याकुपडिथी [illegible]रूप थयल छे एवा जीर्ण वन प्रत्ये प्रभुए प्रवेश कर्यो, तथा त्यां एक यक्षना मंडपमां, नासिकाना अग्रनागपर लोचन स्थिर राखीने प्रभु प्रतिमाथी रह्या. पछी ते अहंकारी दृष्टिविष सर्प पण, काल रात्रिना मुखथी निकलती जीजनी पेठे, बहार फरवा माटे बिलमांथी निकल्यो, तथा रेतीमां संक्रमण थती फणानी लेखाथी, जाणे पोतानी [illegible]ज्ञानो लेख चितरतो होय नहीं, तेम जमतो थको ते प्रभुने जोतो हवो. अने विचारवा लाग्यो के" अरे!!! आज आ मारी अवज्ञा करीने, शंकारहित अहीं कोणें प्रवेश कर्यो छे? के जे, शंकुनीपेठे स्थिर उनो छे!!! माटे आजें तेने हुं बाली नाखुं, एम विचारिनें तेणें कोपथी फेण चडावी; तथा ज्वालानी श्रेणिने वमती, अने लता तथा वृक्षोने बालती दृष्टिथी, फुंफाडा मारतो थको प्रभुने जोवा लाग्यो. पछी तेनी बलती तथा न जोइ शकाय एवी दृष्टिनी ज्वाला, आकाशथी पडती उल्का जेम पर्वतपर, तेम प्रभुना शरीरपर पडी; पण महाप्राभाविक एवा प्रभुपर तेनुं कंइ जोर चाल्युं नहीं, कारण के, बलवान् पवन पण शुं मेरुने कंपावी शके छे? "अरे! हजु आ काष्ठनीपेठे बल्यो नहीं," एम विचारि क्रोधथी जाज्वल्यमान थइनें, सूर्यने जोतो थको, दृष्टिनी ज्वालाओ छोडवा लाग्यो; ते पण प्रभुप्रत्ये पाणीनी धारा समान थवाथी, ते क्रूर सर्पे प्रभुना चरणकमलपर डंख मार्यो. ते दुष्ट डंखी डंखीने पाछो हठतो हतो, कारण के, तेने शक हतो के, मारा झेरथी आक्रांत थइ मने पण ते पडशे. एवी रीतें ते वारंवार डंखतो हतो, तोपण प्रभुने तेनुं झेर चढ्युं नहीं, पण केवल गायना दूध सरखुं लोही वहेवा मांड्युं. त्यारे आ ते शुं थयुं!!! एम विचारतो थको, आगल आवी, ते प्रभुने जोवा लाग्यो; तथा प्रभुनुं कांति अने सौम्यतावालुं रूप जोइने, तेनी तो आंखोज मिचाइ जवा लागी, एवी रीतें तेने समीप आवेलो जोइने, प्रभु कहेवा, लाग्या के, हे चंडकौशिक! तुं बोध पाम्य? बोध पाम्य? मुंझा मा? एवी रीतनुं प्रभुनुं वाक्य सांजलीने, विचार करता ते सर्पने, पोताना पूर्व [illegible]नुं स्मरण थयुं; (तथा तेणी) प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा करीने कषाय [illegible] थइ, शुद्धमनथी तेणें अनशन लीधुं. पछी प्रभुयें तेने, अनशन-

वाळो, कर्मरहित, तथा शांत जाणीने कह्युं के तारे अहींथी हवे क्यांय पण जवुं नहीं पछी ते सर्पे विचार्युं के मारी आंख्यो झेरथी जयंकर ब-नेली छे, एम विचारि पोतानुं मुख बिलमां नाखीने, ते समतारूपी अ-मृतने पीवा लाग्यो. पछी प्रज्ञु पण ते उपर थयेली अनुकंपाथी त्यांज र-ह्या, कारण के, मोटाउनी प्रवृत्ति परना उपकार माटेज होय छे. प्रज्ञुने एवी रीतें त्यां रहेला जोइने, आश्चर्यथी विकस्वर थयेली छे आंखो जे-मनी एवा गोवाळ, तथा वत्सपालो त्यां तुरत आवी पहोच्या, तथा ते म-हात्मा सर्पने, वृक्षनी बाजुमां संताइने, मरजी प्रमाणे, पत्थर तथा ढे-फांथी, तेउ मारवा लाग्या, तोपण तेने निश्चल जोइने विश्वास लावी, तेनी नजदीक आवी, लाकडीउथी तेने मारवा लाग्या. पछी ते गोवालोए ते वात माणसोने कहेवाथी, तेउ त्यां आवी, महावीर प्रज्ञुने वांदीने सर्पनी पूजा करवा लाग्या, तथा घी वहेंचवा वाली स्त्रीयो (मैयारीयो) ते मार्गे जाती थकी, ते सर्पने मांखणथी नवरावती हती, तथा तेने स्पर्श करतीयो हती, ते घीना गंधथी त्यां तीक्ष्ण डंखवाली कीडीयोयें आवी, तेनां शरीरने फोलवा मांड्युं. "मारां कामो आगल, आ पीडा शुं हि-सावमां छे ?" एवी रीतें आत्माने बोध देतो थको ते सर्प, दुःसह वे-दनाने पण सहन करवा लाग्यो. वली "आ बिचारि निर्बल कीडीयो, न पीलाइ जाय तो सारुं," एम विचारि ते सर्पें जरा पण पोतानुं अंग ह-लाव्युं नहीं. पछी प्रज्ञुयें करेली दयारूपी अमृतनी वृष्टि सरखी, दृष्टिथी सिंचाएलो ते सर्प, एक पखवाडीयाबाद मृत्यु पामी "सहस्रार" ना-मना देवलोकें गयो. एवी रीतें विविध प्रकारना उपसर्ग करता, दृ-ष्टिविष एवा ते सर्पमां अने जक्ति करता इंद्रमां पण, त्रण जगतना एक बंधुसमान प्रज्ञुनुं तुल्यमनपणुं कह्युं.

वली बीजा प्रकारथी योगगर्जित स्तुति कहे छे.

कृतापराधेऽपि जने कृपामंथरतारयोः ॥
ईषद्बाष्पार्द्रयोर्जद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥ ३ ॥

अर्थः— करेलो छे अपराध जेणे एवा संगम आदिकपर पण, दयाथी

नमेली छे कीकीयो जेनी, तथा थोडां करुणाश्रुथी जीनी थयेली, एवी श्री वीरप्रभुनी आंखोप्रत्ये कल्याण थाओ ?

टीकाः—गाम तथा नगरो प्रत्ये विहार करता प्रभु, घणा म्लेच्छोथीआकुल थयेलीएक दृढ भूमिप्रत्ये पहोच्या; तथा त्यां अठमनो तप करीने ते पेढाल नामे गामनी पासे, पेढाल नामना बगिचामां पोलाश नामे देवलमां दाखल थया तथा त्यां जीवजंतु विनानी शिलापर, घुंटणसुधि हाथो लंबावीने, तथा पृथ्वी तरफ शरीर वालीने, तथा मनने स्थिर करीने, तथा आंखोने पण निमेषरहित करीने, प्रभु, एक रात्रिनी महाप्रतिमाथी रह्या. हवे ते वखते सुधर्मेंद्र, सुधर्मा सभामां, चोराशी हजार सामानिक देवताओथी विंटाइने, तथा त्रयस्त्रिंश अने त्रायस्त्रिंशनी त्रण पर्षदाथी तथा चार लोकपालोथी, तथा असंख्यात प्रकीर्णकथी, तथा त्रण दिशाओमां दृढताथी तैयार थयेला चोराशी हजार अंगरक्षकोथी, तथा सेनाथी विंटाएला सात सेनाधिपतिओथी, तथा किल्बिष आदिक आभियोगिक देवदेवियोना समूहथी, घेराएलो, तथा त्रण जातनां वाजां आदिकना विनोदथी वखतने कहाडतो, तथा दक्षिणार्ध लोकनुं रक्षण करनारो, इंद्र सिंहासनपर बेठो हतो, ते वखते अवधिज्ञानथी प्रभुने, एवी रीतें रहेला जाणीने, त्यांथी उठीने, तथा पावडीओ छोडीने, तेम उत्तरासन करीने, तथा डाबो पग पृथ्वीपर मूकीने, तथा जमणो पग उंचो करीने, पृथ्वीतलपर माथुं नमावीने नमुत्थुणाथी ते (प्रभुनी) स्तुति करवा लाग्यो, तथा सघली सभाने उद्देशीने अने सर्व अंगपर रोमांचित थइनें, ते इंद्र कहेवा लाग्यो के, अरे! अरे! सघला सुधर्मा देवलोकमां रहेवावाला देवो, श्रीमहावीरस्वामिनो अद्भुत महिमा तमो सांभलो ? पांच सुमतिनें धारनारा, तथा त्रण गुप्तियोथी पवित्र थयेला, तथा क्रोध, मान, माया, अने लोभथी रहित तथा आश्रवरहित, तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावमां अप्रतिबद्ध बुद्धिवाला, तथा नासिकापर नयनो राखीने ध्यानमां रहेला, एवा ते वीरप्रभु, देव, दानव, यक्ष, राक्षस, भुवनपति तथा माणसोथी पण ध्यानथी चलायमान थइ शके तेम नथी. ते सांभली, शक्रसामानिक देव, ललाटपटमां धारण करेली भ्रुकुटीना भंगथी भयंकर थइने, तथा क्रोधथी कंपता छे, होठ जेना, तथा लाल

थयेल छे, आंखो जेनी, तथा अजव्य, अने अत्यंत मिथ्यात्वी, एवो सं-
गम नामें देवता कहेवा लाग्यो के, हे देव, साधुमात्ररूप एवा आ मा-
णसनुं तमो जे वर्णन करो छो, तेथी सत्यासत्यमां स्वछंदपणाथी आ-
पनुं प्रजुपणुंज कारण छे. माटे आप कहो छो के, ते देवोथी पण चला-
यमान थइ शके तेम नथी, एवुं आपनुं वचन मनथी केम मानी श-
काय? कदाच मानियें तो पण केम बोली शकाय? वली शिखरोथी
जेणें आकाशने रोकेलुं छे, तथा मूलोथी जेणे रसातल रोकेलुं छे, एवा
मेरुपर्वतने पण जेउं, एक ढेफां मात्रनी पेठे फेंकी दे छे, वली कुलपर्वतो
सहित पृथ्वीने डुबाडवामां पण जेनो प्रगट वैजव छे, तथा जेउंने आ
आखो समुद्र पण एक कोगला बरोबर छे. वली जेउं प्रचंड थइने, एक
जुजदंडथी, अनेक पर्वतोने धारण करनारी पृथ्वीने छत्रनी पेठे उपाडे छे,
एवा अतुल्य ऋद्धिवाला, तथा अत्यंत बलवाला, तथा इछापूर्वक मलेली छे
ऋद्धि जेउंने, एवा देवो पासे आ मनुष्यमात्र शुं हिसाबमां छे? माटे
आ हुं तेने ध्यानथी चलावी दइश, एम कही, हाथथी पृथ्वीपर पछा-
डीने, सजामंडपमांथी ते उजो थयो. अहिं तो, परना सहायथी अ-
खंडित तप करे छे, एम विचारि इंद्रे ते डुर्बुद्धिनी उपेक्षा करी. पछी
ते पापी के, जेना वेगथी थता पवनें करी वादलांउं पडवा लाग्यां तथा
जयंकर आकृतिवालो अने डुःखें जोइ शकाय तेवो, तथा जेना जयथी
अप्सराउं खसी गयेली छे तेवो विकट एवा छातीना पछडाटथी जेणें
ग्रहमंडलो एकठां करेलां छे एवो ते पापी, ज्यां प्रजु हता, त्यां गयो.
कारणविना जगतना बंधु, तथा बाधारहित, एवा वीरप्रजुने जोइने तेनी
ईर्ष्या अधिक अधिक वधवा लागी. ते डुष्ट पापी देव अचानक डुःख
देनारी धूलनी वृष्टि प्रजुपर करवा लाग्यो. राहुथी जेम चंद्रने, वादलां-
वाला दिवस जेम सूर्यने, तेम ते प्रजुने सघला अंगपर धूलथी ढांकतो
हवो. वली चारे बाजुथीउडती धूडवडे प्रजुना शरीरनां द्वारो बंध थवाथी,
तेमनो श्वासोश्वास रोकाइ जवा लाग्यो तो पण प्रजु तो तलमात्र चला-
यमान थया नहीं, कारण के शुं!!! हाथियोना जारथी कंइ पर्वतो
चलायमान थाय छे? पछी धूड खेसवीने, प्रजुए सर्व अंगने विदारण क-
रनारी, तथा वज्र सरखा डंखवाली कीडीयो तेणें विकुर्वी ते कीडीयो अ-

प्रभुना अंगपर स्वेछाथी, एक बाजुथी दाखल थइ, बीजी बाजुथी निकलवा लागी, तथा जेम सोयथी कपडाने, तेम तेउं प्रभुना शरीरने, तीक्ष्ण डंखोथी विंधवा लागी. जेम निर्जागियोनी वांछाउं, तेम ते कीडीयो पण निष्फल थवाथी, तेणें डांसो बनाव्यां, कारण के, दुष्टोनां अकृत्योनो कंइ पार आवतो नथी. ते डांसोना प्रहारथी निकलता दूध सरखा रुधिरथी, प्रभु झरणावाला पर्वत सरखा शोजवा लाग्या. तेउंथी पण ज्यारें प्रभु क्षोजायमान न थया, त्यारे ते दुर्बुद्धियें तीक्ष्ण डंखोवाली घीमेलो विकुर्वी. ते घीमेलो, मुख नीचां करीने प्रभुना शरीरमां लागती थकी, जाणे तेउं रुंवाडा साथे उगीज होय नहीं तेम शोजती हती. तेउंथी पण ज्यारे प्रभु क्षोजायमान न थया, त्यारे, ध्यान चलाववामां ढे निश्चय जेनो, एवो ते संगम देव विंछीयोने उत्पन्न करतो हवो. प्रलयाग्निना तणखासरखा, ते विंछीउं, पुंछडीपर रहेला जयंकर कांटाथी प्रभुना शरीरने विदारण करवा लाग्या. तेउंथी पण त्यारे प्रभु आकुल थया नहीं, त्यारे तेणें केटलांक नोलीयांउं कर्यां. तेउं दाढोथी प्रभुना शरीरनें कटके कटका करी तोडवा लाग्यां, तथा तेमांथी मांसनां टुकडा पाडवा लाग्यां. तेउंथी पण ज्यारे ते कृतार्थ थयो नहीं, त्यारे यमना भुजदंडसरखा जयंकर, तथा अत्यंत बीहामणी फणाउंवाला सर्पो तेणें क्रोधथी बनाव्या. ते सर्पो पगथी माथासुधि वीरप्रभुने, वृक्षोने जेम कपिकछुनामनी वेलडी विंटाय, तेम विंटाइने रह्या. तेउं प्रभुनें एवी रीतें फेणो मारवा लाग्या के, तेउंनी फेणो पण त्रुटी पडी, तथा एवा तो डंखवा लाग्या के, तेउंना दांतो पण पडी गया. पढी झेर थइ रह्या बाद ज्यारें तेउं दोरडानी पेठे लांबा थइनें पड्या, त्यारे तेणे वज्रतुल्य दांतोवाला उंदरो बनाव्या. ते उंदरो, प्रभुना अंगने, जयंकर एवा नख, दांत तथा मुखथी खोतरवा लाग्या, तथा तेज जगोए मूतरीनें घापर खार नाखवा लाग्या. तेउं पण ज्यारे कंइ करी शक्या नहीं, त्यारे तेणे, क्रोधथी, प्रचंड दांतोरूपी मुशलवाला हाथीनुं रूप कर्युं तथा पगलांउंथी जाणे पृथ्वीने नमावतो होय नहीं, तथा उंची करेली सूंढथी जाणे आकाशने तोडतो होय नहीं, तेम ते प्रभुतरफ दोड्यो, तथा “आना विखाइ टुकडे टुकडा थइ जाउं?” एवी खराब आशाथी ते प्रभुने आका-

समां अत्यंत उगाळवा लाग्यो. ते हाथी, दुःखें करीने वारि शकाय, ए-
वी पोतानी सूंढथी, प्रभुने आकाशमां उगाड्याबाद, ज्यारे पडता,
त्यारे, दांतो उंचा करी तेपर तेमने झीलतो हतो, तथा ज्यारे पडता त्या-
रे दांतना घातथी प्रभुने ते वारंवार वींधतो, तथा तेथी (तेमनी) व-
ज्रसरखी कठण छातीमांथी तणखाउ निकलता. पछी ज्यारे एवी रीतें
हाथी पण कंइ करी शक्यो नहीं त्यारे तेणे वैरिणी सरखी हाथणी ब-
नावी ते हाथणी पोतानी अखंड शुंढ, तथा दांतथी, प्रभुने नेदवा ला-
गी, तथा जेर सरखा पोताना शरीरना पाणीथी प्रभुने सिंचवा लागी. पछी
ज्यारे ते पण थाकी गइ, त्यारे तेणें मगर सरखी जयंकर दाढोवालो पिशाच
बनाव्यो. ज्वालाउनी श्रेणिथी जरेलुं तेनुं मुखरूपी कोतर, बलता अग्निकुंड
सरखुं जयंकर थयुं. तेणें एमना एक तोरणस्तंज सरखा पोताना बन्ने हाथो
उंचा कर्या, तथा तेनी जंघा उंची तालवृक्षसरखी थइ. एवी रीतें थइने
ते अत्यंत हसतो, फुत्कार करतो, तथा किलकिल शब्द करतो, चांब-
डानां वस्त्रवालो, तथा कातरयुक्त थई प्रभुने उपद्रव करवा लाग्यो. क्षी-
ण थयेला तेलवाला दीवानी पेठे, ज्यारे तेनुं बल पण क्षीण थयुं त्यारे
तेणें क्रोधथी दयारहित थइने वाघनुं रूप कर्युं. ते वाघ पुंछडाना आ-
छोटथी पृथ्वीने पण फाडतो थको, तथा बुत्कारना पडघाथी आकाश
पातालने जाणे रोवरावतोज होय नहीं, तेम प्रभुपासे आवीने, तेमने
वज्रसरखी दाढोथी, तथा शूल सरखा नखोथी प्रभुने उपद्रव करवा
लाग्यो. पछी ते पण दावानलथी बलेला वृक्षनी पेठे ज्यारे निष्फल गयो,
त्यारे तेणें सिद्धार्थ राजा तथा त्रिशला राणीनुं रूप कर्युं. तथा ते कहेवा
लाग्या के, हे पुत्र ! तें आ दुःकर काम शुं कर्युं. ? तुं दीक्षा छोडी दे ?
तथा अमारी अवगणना कर नहीं ? वली वृद्ध तथा अशरण, एवां अ-
मोने नंदिवर्धनें छोडी दीधां छे, माटे तु अमारुं रक्षण कर्य ? एवी री-
तें दीन स्वरोथी तेउ विलाप करवा लाग्यां. एवी रीतें विलापोथी, पण
प्रभुनुं मन ज्यारे लिप्त (स्नेहवश) थयुं नहीं, त्यारे तेणे एक सेना बना-
वीने तेनो पडाव नाख्यो. त्यां रसोइआए, पत्थर नहीं मलवाथी, चोखा
पकाववावास्ते, चुलाने ठेकाणे प्रभुना पगोने राखीने तेपर तपेली चडावी.
पछी तेज वखते तेणें प्रभुना चरणपासे पर्वतपासे जेम दावानलने, तेम

अग्नि सलगाव्यो. एवी रीतें तपेला एवा पण प्रभुनी शोभा सोनानी पेठे हीन थइ नहीं, त्यारे ते दुष्ट देवें जयंकर पक्कण (भिल्लोनी पल्ली) कर्युं, ते पक्कणें (पल्लीवासि भिल्लोयें) पण प्रभुना कंठमां, कानमां, भुजामां, तथा जंघामां क्षुद्र पक्षिउनां पांजरां लटकाव्यां ते पक्षिउयें प्रभुना शरीरने एवो तो उपद्रव कर्यो के, जेथी प्रभुनुं शरीर ते पांजरानी पेठे सेंकडो छिद्रोवालुं थयुं ते पक्कण पण पाकेला पत्रनी पेठे ज्यारे निरुपयोगी थयुं, त्यारे तेणें महा उत्पातवालो प्रचंड पवन उत्पन्न कर्यो. ते पवन आकाशमां मोटां मोटां वृक्षोने घासनी पेठे फेंकतो थको, तथा दिशाउमां धूल, पथरा तथा कांकराउने फेंकतो, तथा चारे बाजुथी धमणनी पेठे आकाश पातालने पूरतो थको, प्रभुने उपाडी उपाडीने पाडवा लाग्यो. ते प्रचंड पवनथी पण ज्यारे ते फाव्यो नहीं, त्यारे, वैरिना कुलमां कलंकसमान एवा ते देवें, वंटोलीआनो पवन बनाव्यो. पर्वतोने पण जमाववामां समर्थ एवो, ते पवन, चक्रपर रहेला माटीना पिंडनी पेठे प्रभुने जमाववा लाग्यो, एवी रीतें पुंजडांनी पेठे जमावता पण ते पवनथी, एक तानवाला प्रभुए जरा पण ध्यान छोड्युं नहीं. (त्यारे ते देव विचारवा लाग्यो के,) वज्रसरखा मनवाला, आ प्रभुनी मे बहु कदर्थना करी, तोपण ते क्षोजायमान थया नहीं, माटे हवे विलखो थइ ते सजामां हुं केम जाउं? माटे हवे तो जो हुं तेमने मारी नाखुं तोज तेना ध्याननो नाश थाय, पण बीजी रीतें थइ शके तेम नथी, एम विचारि, ते दुष्ट देवें कालचक्र बनाव्युं. पछी ते देवें, हजारो जार लोखंडथी बनावेला ते चक्रने, रावणें जेम कैलासने, तेम उपाड्युं. पृथ्वीने संपुटरूप करवाने, जाणे पुटांतर (सांपटियुं) पृथ्वीएक पुटछे तेपर बीजुं माटीनुं कोडियुं वा पांदडानो द्रोण(दडियो)मुकवाजेवुं करतो होय नहीं, तेम तेणें प्रभुपर ते चक्र फेंक्युं उछलती अग्निनी ज्वालाउथी दिशाउने जय करतुं, ते चक्र, समुद्रमां जेम वडवानल, तेम प्रभुपर आवीने पड्युं. मोटा मोटा पर्वतोने पण छगालवामां समर्थ एवा ते चक्रना प्रभावथी, प्रभु घुंटण सुधी पृथ्वीतलमां पेसी गया. आवी रीतें पराजव पामेला पण जगवान्, एवुं शोचवा लाग्या के, जगतने तारनार, एवा पण अमो, आने संसारना कारणरूप थइ पड्या छियें. हवे ते देव पाछो विचारवा लाग्यो के कालचक्रथी

हथीयारोथी एवा पण आ प्रजु मृत्यु पाम्या नहीं, माटे तेने तो हथियारथी मारी शकाय तेम नथी, माटे हवे शुं उपाय करवो? अनुकूल उपसर्गोथी हवे ते कोइ रीतें पण क्षोजाय तेम छे? (माटेतेनी परीक्षा करूं) एवुं विचारि, विमानमां रही आगल आवीने ते कहेवा लाग्यो के, हे महर्षि! हुं हवे तप अने तेजथी तमारापर तुष्ट थयो छुं; अने हवे आ तमारा शरीरने क्लेशकारी एवा तपथी सर्युं; माटे हवे तमो मारीपासे कंइक मागो? तथा हवे कंइ पण शंका करो मा? अने कहो के हवे तमोने शुं आपुं? वली तमारे आ शरीरनुं शुं प्रयोजन छे? ज्यां इछामात्रथीज हमेशां मनोरथो पूराय छे, एवा स्वर्गप्रत्ये हुं तमोने लइ जाउं. अथवा, अनादि जवमां उत्पन्न थयेलां कर्मोथी मुकावनारूं छे लक्ष जेनुं, एवा एकांत परमानंदरूप मोक्षप्रत्ये शुं तमोने लइ जउं? अथवा सघला मंडलीकोना मस्तकोमां लालित थयेलुं छे शासन जेथी, तथा ऋद्धिथी उत्कृष्ट एवुं राज्य, तने हुं अहींज आपुं. एवी रीतनां लालचनां वाक्योथी पण ज्यारे प्रजु क्षोजायमान न थया, तथा ज्यारे तेनो उत्तर न मल्यो त्यारे ते विचारवा लाग्यो के, आणे तो मारी सघली शक्ति निष्फल करी, पण हवे एक कामदेवनो हुकम सफल थाउं, कारण के, कामदेवना हथियाररूप एवी स्त्रियोथी कटाक्षित थयेला, महापुरुषो पण पोताना व्रतने लोपी नाखे छे. मनथी एम विचारि तेणे देवांगनाउ, तथा तेने सहायरूप एवी छ ऋतुउ पण बनावी. कोकिलाउना मनोहर शब्दोथी करेली छे, प्रस्तावना जेणें, तथा कंदर्प (कामदेव)ना नाटकनी नटी समान वसंतश्री (वसंतशोजा) शोजवा लागी. वली खीलीरहेलां कदंबोनां पुष्पोना परागथी (रजःकणथी) मुखना सुगंधने उत्पन्न करती, तथा दिशाउरूपी स्त्रियोनी दासी सरखी ग्रीष्मनी लक्ष्मी शोजवा लागी. वली केतकीनां पुष्पोना मिशथी, कामदेवना राज्याजिषेकनेविषे जाणे तिलकोज करती होय नहीं, एवी वर्षाऋतु शोजवा लागी. नवां नील (श्याम) कमलोना मिशथी, हजारो आंखोवाली थइनें, जाणे, पोतानी उत्कृष्ट शोजाने जोती होय नहीं, एवी शरद् ऋतु शोजवा लागी. वली गणिकानी पेठे, मोगरो तथा गोटाथी आजीविका चलावती शिशिर ऋतु, शोजवा लागी. वली सफेद अक्षरो सरखी, प्रगट थयेली मोगरानी कलि-

थोथी, जाणे कामदेवनी जयप्रशस्ति लखती होय नहीं, तेम हेमंतनी लक्ष्मी शोभवा लागी. एवी रीतें क्षणवारमां सघली ऋतुउं प्रगट थवाथी कामदेवनी पताका (जय ध्वजा) सरखी देवांगनाउं प्रगट थइ. तेउं प्रभुनी पासे आवीने, अंगोपांग खुल्लां राखीने, कामदेवनी जीतना मंत्रेला हथियारसरखुं संगीत (गान) करवा लागी. वली केटलीको तो गांधार रागथी सुंदर थयेलुं गायन, अविछिन्न पणें गावा लागी. कोइक देवांगना ताननां क्रमपूर्वक, व्यंजन धातु सहित सुंदर वीणा वगाडवा लागी. वली केटलीको तो, प्रकट धोंकार शब्दोवाला, तथा मेघनी गर्जना सरखां, त्रण प्रकारनां मृदंगो वगाडवा लागी. वली केटलीको, तो आकाश तथा पृथ्वीपर चालती थकी, तथा आश्चर्य करावती थकी, नवा नवा नयनना हावभावपूर्वक नाच करवा लागी. वली केटलीकोना तो अंगना मोडवाथी कंचुवाउं त्रुटवा लाग्या; तथा केटलीको, तो पोताना ढीला पडेला अंबोडाने बांधती थकी, हाथोनां मूलने देखाडवा लागी. वली केटलीक पोताना चरणो उपाडवाना मिषथी, वारंवार, मनोहर, तथा गोरोचन सरखां सफेद साथलनां मूलो देखाडवा लागी. वली केटलीको तो, ढीला पडेला घाघरानी नाडी बांधवानी लीलाथी, वाव्यसरखा पोतानां नाभिमंडलने देखाडवा लागी. वली हस्तिदंत नामना अभिनयने करती थकी, कोइक तो गाढ आलिंगननी संज्ञा वारंवार करवा लागी. वली घाघराने दृढ करवाना मिशथी, साल्लो उंचो करीनें कोइक तो पोतानां नितंबबिंब प्रगट करवा लागी. मनोहर लोचनवाली कोइक देवांगना तो, अंगजंगना मिशथी वक्षःस्थलमां रहेलां पुष्ट तथा उंचां स्तनोने प्रगट करवा लागी. वली तेउं कहेवा लागी के, ज्यारे तमो वीतराग छो, त्यारे अमोने राग केम करावो छो ? वली ज्यारे शरीरमां पण तमो निरपेक्षी छो, त्यारे अमोने तमारी छाती केम आपता नथी ? वली जो तमो दयालु छो, तो, अचानक चडावेल छे धनुष जेणें, एवा कामदेवथी अमोने केम बचावता नथी ? वली ज्यारे, प्रेमनी लालसावाली, एवी अमोने तमो उपेक्षो छो, ते पण थोडुं करवुं सारुं, पण ते मरणनी अवधिसुधि करवुं लायक नहीं. वली केटलीको तो कहेवा लागी के, हे स्वामिन्, तुं कठोरप-

१ एक जातनो नाट्य प्रयोग.

वाने छोडीने, अमारा मनोरथो पूर्ण करश ? अने अमारी प्रार्थनाथी पराङ्मुख (विमुख) था नहीं ? एवी रीतें, अंगसंबंधि गीत, वाजित्र तथा नृत्य आदिक विकारोथी, तथा तेउनां मीठां वचनोथी, प्रभु क्षोजायमान थया नहीं. एवी रीतें रात्रि व्यतीत थयाबाद, विहार करता प्रभुने ते दुष्ट देवें ब माससुधि उपद्रव कर्यो. पठी ते संगमक देव ब मासने अंते, प्रभुने नमन करी कहेवा लाग्यो के हे प्रभु ! तमे हवे सुखें रहो ? मने स्वेबाचारिने आ श्रम थयो छे; एम कही ते त्यांथी चालतो थयो. ते थयाबाद जगवान् विचारवा लाग्या के, आ विचारो आवां कर्मोथी हवे क्यां जशे ? अमो तारनारथी पण ते तारी शकायो नहीं. एम विचारतां प्रभुनी आंखो अश्रुसहित, तथा चलित कीकियोवाली थइ.

एवी रीतें (इष्ट) देवने नमस्कार करीनें मोक्ष मार्गरूप योगने कहेवानी इछाथी ते शास्त्र विस्तारे छे.

श्रुतांभोधेरधिगम्य, संप्रदायाच्च सद्गुरोः ॥
स्वसंवेदनतश्चापि, योगशास्त्रं विरच्यते ॥ ४ ॥

अर्थः— शास्त्रोरूपी समुद्रथी, तथा सद्गुरुनी परंपराथी, तथा आत्मज्ञानथी पण आ योगशास्त्र, रचायछे.

टीकाः— निर्णय करेला योगना शास्त्रनी रचना, पदवाक्यना संबंधथी करवी उचित छे, एवा हेतुथी योगनो त्रण हेतुउवालो निर्णय कहेछे. ते त्रण प्रकारो नीचे प्रमाणे छे. शास्त्रथी, गुरुनी परंपराथी, तथा अनुजवथी, एवा त्रण प्रकारना योगनो निश्चय करी, आ शास्त्र रचाय छे. तेना निर्वहणवास्ते कहे छे. जे शास्त्रथी, सद्गुरुना मुखथी तथा अनुजवथी जणायुं छे, एवुं योगशास्त्र, चालुक्यवंशना श्रीकुमारपाल राजानी घणी प्रार्थनाथी, आचार्य महाराज श्री हेमचंद्रजीए रचेल छे. हवे ते योगनुं माहात्म्य कहे छे.

योगःसर्वविपद्वल्ली, विताने परशुः शितः ॥
अमूलमंत्रतंत्रं च, कार्मणं निर्वृतिश्रियः ॥ ५ ॥

अर्थः—सघली आपदाउ रूपी वल्लिना समूहने (विदारवाने) तीक्ष्ण

धारवाळा कुहाडा समान, तथा मोक्ष लक्ष्मीनुं, मूळ विनाना मंत्र तंत्र-वाळुं कामणरूप, " योग " छे.

टीकाः—सघळी आपदाओ एटले, आत्मासंबंधि, नौतिक संबंधि, तथा देवसंबंधि, आपदाओ जाणवी; तथा तेओ बहु विस्तारवाळी होवाथी तेने वल्लीरूप कहेली छे; तेओना समूहने कापवाने योग कुहाडा समान छे. एवी रीतें उत्तरार्धथी अनर्थना परिहाररूप योगनुं फळ कह्युं. तथा अर्थनी प्राप्ति नीचे प्रमाणे जाणवी. परमपुरुषार्थरूप जे मोक्षलक्ष्मी तेने वश करवाने मूळविनाना मंत्रतंत्रोवाळा कामण सरखो योग छे. हवे कामण तो मूळमंत्रतंत्रोवाळुं होय छे. अने योगतो मूळविनाज मोक्ष-लक्ष्मीने वश करवाना हेतुरूप छे. कारणना उछेदविना विपत्तिरूप कार्यनो उछेद थइ शके नहीं. माटे विपत्तिनां कारणरूप पापना नाश करवानो हेतु, योगने घटावे छे.

भूयांसोऽपि हि पाप्मानः, प्रलयं यांति योगतः ॥
चंडवाताद् घनघना, घनाघनघटा इव ॥ ६ ॥

अर्थः—जेम चंड पवनथी निबिड (घाटी) एवी वादळांनी घटा नाश पामे छे तेम योगथी घणां पापो पण नाश पामे छे.

टीकाः—अहीं कोइ शंका करे के, कदाच योग, तो एक जन्ममां उत्पन्न थयेलां पापनो नाश करे, पण अनेक नवोनी परंपरामां उत्पन्न करेलां पापोने नाश करवापणुं, योगथी असंजव छे. तेवी शंकानुं समाधान करताथका कहे छे.

क्षिणोति योगः पापानि, चिरकालार्जितान्यपि ॥
प्रचितानि यथैधांसि, क्षणादेवाशुशुक्षणिः ॥ ७ ॥

अर्थः—जेम घणा काळथी एकठां करेलां लाकडांने, क्षणवारमां लागेलो अग्नि नाश करे छे, एवी रीतें योग पण घणा काळथी एकठां थयेलां पापोनो नाश करेछे.

हवे योगनुं बीजुं फळ कहे छे.

कफविप्रुण्मलामर्ष, सर्वौषधिमहर्द्धयः ॥
संभिन्नश्रोतोलब्धिश्च, योगं तांडवडंबरं ॥ ८ ॥

अर्थः—कफ, विप्रुष् (थुंक) मेल, तथा हाथ आदिकनुं थापवुं, ए सर्वेनुं ओषधिनी ऋद्धिरूप थवुं, तथा इंद्रियोना जुदा जुदा विषयोनी प्राप्ति, ए सघलुं, योगनुं विलसित (चरित्र) छे.

टीकाः—" महर्द्धि " शब्द कफआदिक सर्वने जोडी लेवो. कफ, श्लेष्म आदिकथी मांडी मलमूत्र आदिकनुं कारण करवुं; मेल एटले कान, दांत, नाक, आंख तथा जीभ आदिथी, तथा शरीरथी उत्पन्न थयेलो मेल जाणवो. " अमर्श " एटले हाथ आदिकथी स्पर्श करवो ते, एवी रीतें विष्ठा, मूत्र, केश, नख आदिक अत्रे कहेला अने नहि कहेला सघला पदार्थो योगना प्रभावथी, महा ऋद्धिवाली ओषधियोरूप थाय छे. अथवा " महर्द्धि " शब्दनो जूदो अर्थ करीयें, तो " अणिमा " आदिक जाणी लेवी; वली जुदी जुदी इंद्रियोना विषयोनी प्राप्ति पण योगथी थाय छे. आ सघलुं योगनुं माहात्म्य छे. अहीं सनत्कुमारनी कथा कहे छे.

योगना माहात्म्यथी योगियोना कफना बिंदुउ, सनत्कुमारादिकनी पेठे सघला रोगोने नाश करनारा थाय छे. अगाउ, हस्तिनापुर नगरमां छ खंड पृथ्वीने भोगवनार, सनत्कुमार नामें चोथो चक्रवर्त्ती थयो हतो. कोइ एक दहाडे सुधर्मा सभामां, आश्चर्ययुक्त थइ, इंद्रें तेना अत्यंत रूपनुं वर्णन कर्युं, के, कुरुवंशमां शिरोमणि, एवा सनत्कुमार राजानुं जे रूप छे, तेवुं रूप देव, माणस के कोइमां नथी एवी रीतना रूपनी प्रशंसाने नहीं मानता, विजय अने वैजयंत नामना बे देवो पृथ्वीपर आव्या, पछी तेउ, तेनुं रूप जोवा वास्ते, ब्राह्मणोनुं रूप लइ, राजाना मेहेलना बारणा पासे आवी उभा. ते वखते सनत्कुमार पण सघलां कपडां उतारिने स्नान करवा माटे शरीरे विलेपन करावता हता. त्यारे पोलीआए, तेउने बहार उभेला जणाववाथी, ते न्यायी राजाए, ते वखते पण तेउने आववा दीधा. पछी सनत्कुमारने जोइनें, आश्चर्यथी प्रफुल्लित थयेल छे, मन जेनां एवा तेउ मस्तक धुणावता थका, विचारवा लाग्या के, आनुं कपाल तो आठमना चंद्रने दूर करनारुं छे, तथा नीलकमलनी कांतिने जितनारां तेनां लोचनो कानसुधि पहोचेलां छे. वली आना होठो तो पाकां बिंबफल (पाकेलां बोलां)नी कांतिने जितनारा छे, तथा कानो

डीपने दूर करनारा छे. तथा कंठ तो पांचजन्य नामना शंखने जित-नारो छे. वळी तेना हाथ तो ऐरावणनी पण सुंढने तिरस्कार करनारा छे, तथा तेनी छाती मेरुनी शिलानी शोजाने लुंटनारी छे. वळी तेनो मध्यजाग, सिंहना बच्चांना पेट सरखो छे, वधारे शुं कहेवुं!!! आ-नां सघलां अंगनी शोजातो वर्णवी शकाय तेम नथी. अहो! आना ला-वण्यरूपी नदीनो प्रवाह तो निरर्गल (बेहद) छे. के जेथी चांदनीथी जेम तारानी प्रजाने, तेम तेना मर्दनने पण आपणे जाणी शकता नथी. माटे जेवुं इंद्रें वर्णन कर्युं हतुं, तेवुंज छे, एमां कंइ फेर नथी, कारण के, महात्माउ कोइ दहाडे पण जूठुं बोले नहि. पछी सनत्कुमारे तेउने पूछ्युं के, हे उत्तम ब्राह्मणो, तमो क्यांथी आव्या छो? त्यारे तेउ कहेवा लाग्या के, हे माणसोमां सिंह समान राजा, तमारुं लोकोत्तर चमत्कार करनारुं रूप, सघला चराचर जुवनमां, वखणाय छे, ते सांजली हे पृथ्वीं-इ! थएलुं छे कुतूहल जेउने, एवा अमो तमोने जोवा माटे अहीं आ-व्या छियें. वली हे राजन्! लोकोमां जे तमारुं अद्भुत, तथा वखणातुं रूप संजलाय छे, तेथी पण अधिक देखाय छे. (ते सांजली) सनत्कुमा-र, हास्यथी होठोने दीपावता थका कहेवा लाग्या के, अत्यारे तो अं-गविलेपन करेल छे, तेथी केटलीक कांति होय? माटे हे उत्तम ब्राह्म-णो, ज्यां सुधि हुं स्नान करी लउं, त्यांसुधि, क्षणवार तमो आ बाजु उ-जीने थोजो? तथा विचित्र पोषाखथी शोजतुं, तथा घणां घरेणांउथी मंडित थएलुं, रत्नसहित सोना सरखुं रूप जो जो? पछी राजा स्नान क-री, तथा पोशांग अने जूषणो पेहेरीने, सूर्य जेम आकाशमां, तेम ते आडंबरसहित सजामां बेठो. पछी राजाए आज्ञा आपवाथी, ते ब्राह्म-णोए तेनी पासे आवी, तेनुं रूप जोयुं, तथा खेदयुक्त थई तेउ विचारवा लाग्या के, क्यां ते रूप, क्यां ते कांति, तथा क्यां ते लावण्य, एवी रीतें, माणसनुं रूप पण क्षणवारमां बदलाई गयुं, माटे सघलुं क्षणिकज छे. त्यारे राजाए पुछ्युं के, तमो मने जोईने पेहेलां केम खुशी थया हता? अने हमणां अकस्मात्, खेदथी मलिन मुखवाला केम थया छो? त्यारे तेउ अमृत सरखी मधुर वाणीथी कहेवा लाग्या के, हे महाजाग, अ-मो तो सुधर्मा देवलोकमां रहेनार देवो छियें. सुधर्मा सजामां तमारा

रूपनी इंद्रें प्रशंसा करी हती, पण अमो ते नहीं मानवाथी मनुष्यरूप थई अहीं आव्या ठीयें वली जेवुं इंद्रें रूप वर्णवेलुं हतुं, तेवुंज, हे राजा! अमोए तमारुं रूप पेहेलां जोयुं हतुं, पण हमणां उलटी रीतनुं थइ ग-युं ठे. हमणां, सघली कांतिने चोरनारा, व्याधिर्ठथी, निःश्वासोथी जेम आरिसो, तेम तमारुं शरीर घेराएलुं ठे. एवी रीतें यथार्थ कहीने, ते दे-वो तो चाल्या गया, अने पठी राजाए पोताना शरीरने बरफथी ग्रस्त थएला, वृक्षसरखुं तेजरहित जोयुं. अने तेथी ते विचारवा लाग्यो के, आ शरीर तो हमेशां रोगोने देनारुं ठे माटे मुग्ध लोको, फोकट, तुछ बुद्धि लावी तेनापर मूर्ठा राखे ठे. वली आ शरीर तो, जयंकर काष्ठना कीडार्ठथी जेम काष्ठ, तेम अंदर उत्पन्न थएली विविध व्याधिर्ठथी नाश पामे ठे. वली कदाच ते शरीर बहारथी तो सारुं लागे, तो पण, नैग्य-गोधफल (वडना टेटा)नी पेठे अंदर कीडार्ठथी जरेलुं होय ठे. वली जेम सेवालनी वेल मोटा सरोवरनां पाणीनें बगाडे ठे, तेम रोग ठे, ते रूपनी संपदानो नाश करे ठे. शरीर तो शिथिल थायठे, पण आशा ढीली थती नथी, रूपनो नाश थाय ठे, पण पापबुद्धि जती नथी, वली घडपण आवे ठे, पण ज्ञान आवतुं नथी, माटे प्राणिर्ठना शरीरने धिक्कार ठे. वली आ संसारमां, डाजपर रहेला जलबिंदुनी पेठे, रूप, ला वण्य, कांति, शरीर, तथा धन, ए सघलुं अस्थिर ठे. माटे प्राणीर्ठना आ विनश्वर शरीरनुं मोटुं फल तो, सकामनिर्जराना साररूप, तपज ठे. एवी रीतें थएली ठे वैराग्यनी जावना जेने एवा ते राजाने दीक्षा लेवानी इछाथी, तेणे पोताना पुत्रने राज्यपर बेसाड्यो. पठी उद्यानमां जइ; विन-यपूर्वक, विनयंधर मुनिपासेथी सघला पापोनी विरतिथी प्रधान थयेली एवि तेणे दीक्षा लीधी. पठी महाव्रतने, तथा उत्तर गुणोने धारनारा, तथा गामोगाम विहार करता, अने समतामांज एकाग्र चित्तवाला, एवा ते मुनिनी पाठल, अत्यंत रागना अनुबंधथी सघलुं प्रधानमंडल, यूथ पतिनी पाठल जेम हाथियो जाय तेम चालवा लाग्युं, तथा कषाय विनाना, उदासीन, ममताविनाना, परिग्रहविनाना, एवा ते मुनिनी ठ मास सुधि सेवा करीने केटलीकमेहेनतें ते प्रधानमंडल पाछुं फर्युं. पठी विधिपूर्वक तथा अकालजोजनथी तेना व्याधियो, जाणे संपूर्ण डोहला-

बालीयो थइ होय नहीं, तेम वधवा लागी. तथा एवी रीतें, कंडु, शोष, ताव, श्वास, अरुचि, पडखां तथा आंखोनी वेदना एवी रीतें सात प्रकारनी व्याधिउं तेणे सातसो वर्षसुधी सहन करी; वली अतिआकरा परिसहोने सहन करता, तथा शरीरमां अपेक्षाविनाना एवा ते मुनिने लब्धिउं उत्पन्न थइ. एटलामां थयेल छे हृदयमां चमत्कार (आश्चर्य) जेनेएवो इंद्र देवोने उद्देशीने तेनुं वर्णन करवा लाग्यो के, अहो ! सनत्कुमार चक्री तो, चक्रवर्त्तिनी लक्ष्मीने बलता पुलानी पेठे छोडीने आकरूं तप तपे छे. वली तपना माहात्म्यथी तेने सघली लब्धिउं मली छे छतां, शरीरपर अपेक्षा राख्या विना, पोताना रोगो पण ते मटाडता नथी. इंद्रना ते वाक्यपर श्रद्धा नहीं राखता, ते विजय तथा वैजयंत देवो वैद्यनुंरूपलइने तेनी पासे आव्या. तथा कहेवा लाग्या के हे महाभाग, तुं रोगथी शामाटे पीडाय छे अमो बन्ने वैद्यो छियें, तथा सघलाउंने, अमारां औषधोथी साजा करियें छियें; माटे रोगथी ग्रस्त थयेल छे, शरीर जेनुं एवो तुं जो अमोने रजा आपे, तो, तारा आ उपचित थयेला रोगोने अमो मटाडियें त्यारे सनत्कुमार मुनि ते वैद्योने कहेवा लाग्या के, प्राणिउंने रोगो बे प्रकारना होय, एक द्रव्यथी अने बीजा भावथी. प्राणीउंने क्रोध, मान, माया, अने लोभ, ए भावरोगो छे, तथा तेउं दुःखना हेतुरूप थइने, हजारो जन्मांतरसुधि साथे आवे छे. ते रोगोने जो तमो मटाडी शको तेम हो, तो, मटाडो ? अने जो द्रव्यरोगोने मटाडता हो, तो जुउं ? एम कही तेमें झरती रसीवाली, तथा सडेली आंगलीने, जाणे रसायनथीज होय नहीं तेम तेणें पोताना कफथी तथा थुंकथी सोना जेवी करी दीधी. पछी सोनानी शली सरखी चलकती ते आंगलीने जोइनें, तेउं बन्ने पगे पडीनें कहेवा लाग्या के, जे अमो पेहेलां तमारुं रूप जोवामाटे आव्या हता ते अमो देवो हमणांपण आव्या छियें. इंद्रें (सभामां) वर्णन कर्युं के, सनत्कुमार मुनिने लब्धियो मली छे, छतां व्याधिउं सहन करीने पण तप तपे छे. माटे अमोए अहीं प्रत्यक्ष आवी, ते वातनी परीक्षा करी, एम कही, नमस्कार करीने तेउं अंतर्धान थइ गया. एवी रीतें कफलब्धिनुंज मात्र फल बताव्युं; तथा ग्रंथ वधी जवानी बीकथी अहीं बीजी कथाउं कही नथी. वली योगना माहात्म्यथी, कमलसरखी सुगंधि, एवी योगि-

उंनी विष्ठा पण रोगियोना रोगोनो नाश करे छे. प्राणीउंनो मेल बे प्रकारनो छे, एक कान तथा आंखआदिकथी थतो बीजो शरीरथी उत्पन्न थतो छे. योगसंपत्तिना माहात्म्यथी, योगियोनो ते बन्ने प्रकारनो मेल पण, कस्तूरीसरखो सुगंधि थइने, सघला रोगियोना रोगो हरे छे. वली योगियोना शरीरनो स्पर्श पण जाणे अमृत रसने सिंचतो होय नहीं जेम, तेम रोगियोना रोगोनो नाश करेछे. वली योगियोना नख, केश, दांत, तथा बीजी शरीरनी वस्तुउं पण औषधरूप थाय छे, तथा एवी रीतें सघलुं औषधरूप थाय छे; अने तेथीज, तीर्थंकरोनां, तथा योगने धारण करनारा चक्रवर्त्तियोनां शरीरना हाडकांनो समूह पण सघला देवलोकोमां पूजाय छे. वली ते योगना माहात्म्यथी, योगिना अंगथी स्पर्शयुक्त थयेलुं वर्षादनुं तथा नदी अने वाव आदिकमां रहेलुं पाणी पण सर्व रोगोने हरनारुं थाय छे, तथा झेरथी मूर्छित थएला प्राणियो पण तेउंना अंगना स्पर्शवाला वायुथी झेर रहित थाय छे, वली झेरवालुं अन्न तेउंना मुखमां जवाथी झेरविनानुं थाय छे. वली मोटा झेरथी पीडाता प्राणियो पण, तेनां वचनोने सांजलवा मात्रथी, तथा तेनां दर्शनमात्रथी विकार रहित थाय छे. एवी रीतें आ कफादिक औषधिरूप थइने महा ऋद्धिवालां थाय छे. वली ते वैक्रिय आदिक अनेक प्रकारनी जुदी जुदी लब्धियो पण जाणवी. ते नीचे प्रमाणे छे. अणुत्व, महत्त्व, लघुत्व, गुरुत्व, प्राप्ति, प्राकाम्य, इशत्व, वशित्व, अप्रतिघातित्व, अंतर्धान, तथा कामरूपित्व, आदिक छे. "अणुत्व" एटले शरीरने नानुं करवुं, के जेथी एक छिद्रमां पण ते प्रवेश करी शके, अने त्यां चक्रवर्त्तिना जोगो पण जोगवे. "महत्त्व" एटले मेरुथी पण शरीरने मोटुं करवानुं सामर्थ्य, "लघुत्व" एटले वायुथी पण शरीरनुं हलकापणुं, "गुरुत्व" एटले वज्रथी पण शरीरनुं जारीपणुं, एटले इंद्रादिक महाबलवानोथी पण दुःसहपणुं. "प्राप्ति" एटले पृथ्वीपर रहेलो माणस, आंगलीना अग्रजागथी मेरुपर्वतना अग्रजागने, तथा सूर्यने पण स्पर्श करी शके. "प्राकाम्य" एटले पाणीमां पृथ्वीनी पेठे प्रवेश, तथा जवानी शक्ति, अने पाणीनी पेठे पृथ्वीपर डुबकी मारवानी शक्ति. "ईशित्व" एटले त्रण लोकनी प्रजुता, तथा तीर्थंकर इंद्र आदिकनी ऋद्धिनुं बनाववुं; "वशित्व" सघला जी-

कोने वश करवानी शक्ति. " अप्रतिघातित्व " एटले पृथ्वीमां संगरहित गमन. " अंतर्धान " एटले अदृश्यरूपपणुं. " कामरूपित्व " एटले एकी वखतें जुदा जुदा आकारोनी बनावट. इत्यादि महर्द्धिउं जाणवी. अथवा घणा एवा श्रुतावरण, तथा वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी प्रगट थयेल छे, असाधारण महार्द्धियोनो लाज जेउने, तथा बार अंग अने चौद पूर्वोने भण्याविना पण, जे अर्थने चौदपूर्वियो कही शके, एवा ऊंडा विचारवाला अर्थमां पण अतिनिपुण, ते " प्राज्ञश्रमण " कहेवाय. वली बीजी, दश पूर्व, तथा रोहिणी प्रज्ञप्ति आदिक महाविद्याउंने जाणनारा, तथा " अंगुष्ठ प्रसेनिकादिक " अल्प विद्याने जाणनाराउंनी अत्यंत ऋद्धिने पण गोचर न थाय, एवी विद्याउंने धारण करवाथी, तेउं " विद्याश्रमण " कहेवाय छे. वली केटलाक बीज, कोष्ठ, तथा पदानुसारि बुद्धिनी ऋद्धिवाला होय छे. " बीजबुद्धि " एटले, जेम बुद्धिवानें करेली सारी खेती, जमीन, पाणी आदिक अनेक कारणोवालुं एक बीज, वगड्या विना जेम क्रोडो बीजोने देनारुं थाय छे, तेम ज्ञानावरणादिकना क्षयोपशमथी, एक अर्थने सांजली अनेक अर्थोने जाणवुं ते " कोष्ठ बुद्धि " एटले कोष्ठागारियें राखेलां, घणां धान्यबीजो, जेम कोठारमां नाश थया विना पडी रहे छे, तेम, परना उपदेशथी धारेला तथा सांजलेला, घणा ग्रंथोना अर्थोने स्मरणविना जे याद राखवुं ते " पदानुसारि " त्रण प्रकारना " श्रोतःपदानुसारि, " " प्रतिश्रोतःपदानुसारि, " तथा " उजयपदानुसारि " तेमां पेहेला, पदनो अर्थ, तथा ग्रंथ, परथी सांजलीनें छेक छेल्ला पदसुधि आखा ग्रंथना अर्थोना विचारमां हुशियार थवुं ते, " श्रोतःपदानुसारि " बुद्धिवाला कहेवाय. वली अंत पदना अर्थने, अने ग्रंथने बीजानी, पासेथी सांजली, तेना प्रातिकूल्य पणाथी, पेहेला पदथी, आखा अर्थवाला ग्रंथना विचारमां जे प्रवीण थाय, ते " प्रतिश्रोतः पदानुसारि बुद्धिवाला " कहेवाय. मध्यपदना अर्थने ग्रंथने, बीजाना उपदेशथी जाणीने, पेहेलेथी छेल्लेसुधि ग्रंथरूपी समुद्रना पारने पहोचवाने समर्थ, एवा असाधारण अतिशयथी चतुर थयेला माणसो " उजय पदानुसारि बुद्धिवाला " कहेवाय. एक पदा

थैना जाणवाथी, अनेक पदार्थोने जाणनार, ते "बीजबुद्धि" कहेवाय. अने एक पदार्थना जाणवाथी बीजा पदार्थोनुं जे ज्ञान धरावे, ते "पदानुसारि" कहेवाय. तेम मन, वचन, अने कायाना बलवानो पण होय छे. तेमां प्रकृष्ट ज्ञानावरण, तथा वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी तत्वने उधरीने, अंतर्मुहूर्त्तमां सघला शास्त्ररूपी समुद्रमां अवगाहन करवानी शक्तियुक्त मनवाला "मनोबलि" कहेवाय. वली अंतर्मुहूर्त्तमां सघलुं शास्त्र बोली जवानी शक्तिवाला "वाग्बलि" कहेवाय. अथवा, पद, वाक्य, अने अलंकारवाली वाणीने उंचे प्रकारें बोलता थका, वक्र पणा रहित, जेउंनो कंठ बेसी जाय नहीं, तेउ, पण "वाग्बलि" कहेवाय. वली वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी प्रगट थता, असाधारण कायबलथी, प्रतिमावडे करीने रहेता, तथा थाक अने क्लेश रहित, वर्ष वर्ष दहाडासुधि, प्रतिमाथी रहेता बाहुबलि आदिक "कायबलिउ" कहेवाय. तेम वली, दूध, मध, घी तथा अमृतने झरावववाला पण होय छे, जेउंना पात्रमां पडेलुं अनिष्ट जोजन पण दूध, मध, घी तथा अमृत रस सरखुं थाय छे, अथवा, जेउंनुं वचन, शरीर तथा मनसंबंधि दुःख वाला प्राणिउने, दूध आदिकनी पेठे संतोष करनारुं थाय छे, तेउ पण "क्षीराश्रवि, मध्वाश्रवि, सर्पिराश्रवि, तथा अमृताश्रवि" कहेवाय. वली केटलाको तो "अक्षीणर्द्धिवालाउ" कहेवाय छे. तेउंना बे जेदो छे. एक "अक्षीण महानसोवाला" अने बीजा "अक्षीणमहालयोवाला" होय छे. जेउंने असाधारण अंतरायना क्षयोपशमथी, पात्रमां पडेलुं अल्पमात्र पण अन्न, गौतमादिकनी पेठे, घणाउने देवाय, तो पण क्षय पामे नहि, तेउ "अक्षीणमहानसोवाला" कहेवाय. वली जेनी जग्यामां गणतरीनां माणसो समाइ शके, ते जग्यामां असंख्याता, देवो, तिर्यंचो, तथा मनुष्यो परिवारसहित, एकबिजाने बाधा कर्या विना, तीर्थंकरनी पर्षदाने विषे जेम, तेम बेसी शके, तेउ "अक्षीणमहालयो" कही शकाय. प्रज्ञाश्रवणादिकने विषे, महाप्रज्ञादिक महर्द्धिओ देखाडेली छे. जेना प्रजावथी, एकज इंद्रिय, सघली इंद्रियोना विषयोने जोगवी शके, ते "संजिन्नश्रोतोलब्धि" कहेवाय.

चारणाशीविषावधि, मनःपर्यायसंपदः ॥
योगकल्पद्रुमस्यैता, विकासिकुसुमश्रियः ॥ ए ॥

अर्थः—चारण लब्धि, आशीविषलब्धि, अवधिज्ञान, तथा मनःपर्याय ज्ञाननी संपत्तियो, सघली, योगरूपी कल्पवृक्षनी, विकस्वर थयेली पुष्पोनी शोजारूप जाणवी.

टीकाः—फलरूप कैवल्य वा (मोक्ष तो) जरत मरुदेव्यादिना उदाहरणोवडे कहेवाशे. अतिशय गमन करवाथी "चारणो" कहेवाय, तथा कोइने नाश करवानी, अथवा कोइपर कृपा करवानी जे शक्ति, ते "आशीविषलब्धि" कहेवाय. मूर्त्तद्रव्यसंबंधि जे ज्ञान, ते "अवधिज्ञान" कहेवाय. मनसंबंधि द्रव्यने प्रत्यक्ष करवानी जे शक्ति, ते, "मनःपर्याय ज्ञानलब्धि" कहेवाय. ए सघली लब्धियो योगरूपी कल्पवृक्षनां पुष्परूप ठे. अने तेनुं फल तो केवलज्ञान, अथवा मोक्ष ठे, अने ते विषयमां जरत, तथा मरुदेवानुं उदाहरण कहेवाशे. हवे चारणो बे प्रकारना ठे, एक जंघाचारणो, तथा बीजा विद्याचारणो, तेउमां पेहेला एक उत्पातनी लीलाथी रुचकद्वीपें जाय ठे, पढी रुचकद्वीपथी कुदीने, एक पगले तेउ नंदीश्वर द्वीपें आवे ठे, तथा बीजाथी, ज्यांथी गया हता, त्यां आवे ठे, पढी ऊर्ध्वगतिपूर्वक उडीनें, तेउ मेरु पर्वतनां शिखरपर रहेला पांडुक वनमां जाय ठे, त्यांथी उपडी एक पगले तेउ नंदन वनमां जाय ठे, तथा बीजे पगले मूल जगोपर जाय ठे. अने विद्याचारणो तो, एक डगले मानुषोत्तरपर जाय ठे, तथा बीजे पगले नंदीश्वर द्वीपें जाय ठे. अने त्यांथी एक पगले ज्यांथी उठेला, त्यां जाय ठे, तथा तिर्ठी गतिना क्रमथी, तेउ ऊर्ध्व मार्गमां पण जाव आव करी शके ठे. वली तेम बीजा पण घणी जातना चारणो थाय ठे. तेउ नीचे प्रमाणे. पेहेला आकाशगामिउ, के जेउ, पलांठी वालीने, अथवा कायोत्सर्गमां शरीर स्थापीने अथवा पगोने उंचा नीचा आदिक कर्या विना आकाशमां चाले ठे. वली केटलाको तो, जल, जंघा, फल, पुष्प, पत्र श्रेणि, अग्निनी शिखा, धुंवाडो, हिम, वर्षाद, पाणीनी धारा, मर्कटकतंतु, ज्योतिष् किरण अने पवनादिकना अवलंबनथी गति करवामां कुशल तेमां जल

घटले, वाव, नदी, समुद्र आदिकमां जलचर जीवोने विराधना कर्याविना, पाणीमां पृथ्वीनी पेठे, पगोने उंचा नीचा करी गति करवामां जेउ कुशल होय, तेउ "जलचारणो" कहेवाय, वली पृथ्वीपर चार आंगल उंचे, जंघानें उंचीनीची करवामां जेउ कुशल होय, तेउ "जंघाचारण" कहेवाय. वली नाना प्रकारनां वृक्षोनां फलोने लइनें, फलमां रहेला जीवोने, विराधना कर्याविना, फलो प्रत्ये पगो राखवामां जेउ कुशल होय, तेउ "फलचारणो" कहेवाय. वली जुदा जुदा प्रकारनां वृक्ष, तथा लताउनां पुष्पो लइनें, तेउना सूक्ष्म जीवोने विराधना कर्याविना, ते पुष्पोनां तलनें अवलंबीने रहेता, "पुष्पचारणो" कहेवाय. वली नाना प्रकारनां वृक्ष, छोड, तथा वेलडी आदिकनां प्रवाल, तथा पल्लव, आदिकना आलंबनथी, तेउना सूक्ष्म जीवोने विराध्याविना, तेउमां चरणोनो उत्क्षेपनिक्षेप करवामां जेउ समर्थ होय, तेउ "पत्र चारणो" कहेवाय. वली चारसें योजन निषधनी के नीलनी श्रेणि लइनें, उंचे अथवा नीचे पादपूर्वक, उतरवा तथा चडवामां जेउं निपुण होय, तेउ "श्रेणि चारणो" कहेवाय. वली अग्निशिखाने, लइने, तेउना जीवोने विराध्या विना, पोते नहीं बलता थका, तेमां जेउ पगें चाल्या जाय, तेउ "अग्निशिखाचारणो" कहेवाय. वली जेउ तीरछी, तथा उंची गएली, धुंवाडानी शिखाने वलगीने गमन करे तेउं "धूमचारणो" कहेवाय. वली हिमनुं आलंबन लइने, अप्कायना जीवोने विराध्याविना गमन करता "निहारचारणो" कहेवाय. वली अवश्यायने आश्रिने, तेउना जीवोने विराध्या विना गमन करनाराउ, "अवश्यायचारणो" कहेवाय. वली आकाशमां विस्तार पामता वादलांउना समूहमां, तेउना जीवोने विराध्याविना गमन करनाराउ "मेघचारणो" कहेवाय. वर्षाकालना मेघ आदिकथी निकलती जलधाराना अवलंबनथी, जीवोने विराध्याविना गति करनाराउ "वारिधाराचारणो" कहेवाय. वली कुब्जा नामें वृक्षनी अंदर रहेला पोलाणमां, कुब्जवृक्षादिकना बंधाएला मर्कटकतंतु आदिकना आलंबनथी, पगोने उपाडवा मुकवानी शक्तिवाला, ते तंतुउने तोड्याविना गमन करनाराउ "मर्कटकतंतुचारणो" कहेवाय. वली चंद्र, सूर्य, ग्रह तथा नक्षत्र आदिक गमे तेना किरणोना संबंधथी, पृथ्वीमां

जेम, तेम पणे चालीने जवाने जेउ कुशल छे, तेउ "ज्योतीरश्मिचारणो" कहेवाय. वली अनेक दिशाउमां उलटी तथा सुलटी रीतें वाता पवनोमां तेउना प्रदेशनी श्रेणिनुं आलंबन लइनें, अटकाव रहित गति करनाराउ, "वायुचारणो" कहेवाय.

वली तपना माहात्म्यथी, अथवा बीजा गुणोथी, "आशीविषलब्धि, उवाला" निग्रह तथा अनुग्रहमां पण समर्थ थाय छे. जे ज्ञाननो विषय, मूर्त्तिमंत द्रव्यो होय छे, ते "अवधिज्ञान" कहेवाय छे. वली मनुष्य क्षेत्रमां रहेनारा मनवाला प्राणिउना, मनद्रव्यने प्रकाशनारुं ज्ञान, "मनःपर्याय" ज्ञान कहेवाय. मनःपर्यायज्ञानना बे भेदो छे, ऋजु, अने विपुल. वली विपुल पण, विशुद्धि अने अप्रतिपाति भेदोवालुं छे. हवे केवल ज्ञानरूपी फलना देखाडवावडे करीने, योगनीज स्तुति करे छे.

अहो योगस्य माहात्म्यं, प्राज्यं साम्राज्यमुद्वहन् ॥
अवाप केवलज्ञानं भरतोभरताधिपः ॥ १० ॥

अर्थः—अहो! योगनुं माहात्म्य केवुं छे? (के जेथी) उत्कृष्ट चक्रवर्त्तिपणानां राज्यने धारण करनार, भरतना राजा भरतमहाराज केवल ज्ञान पाम्या.

टीकाः— आ अवसर्पिणिमां, एकांत सुषमा आराना चार कोडाकोडी, सागरोपम गयाबाद, तथा त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो सुषमा नामें बीजो आरो गये छते, तथा पछी बे कोडाकोडी सागरोपमना परिमाणवाला सुषमदुषम नामना आरानो पल्यनो आठमो, अंश बाकी रह्ये त्यारे, दक्षिणार्ध भरतमां नीचे प्रमाणे सात कुलकरो थया तेउनां नाम. विमलवाहन, चक्षुष्मान्, यशस्वी, अभिचंद्र, प्रसेनजित, मरुदेव, तथा नाभि नामें थया. तेमांथी नाभि कुलकरने उत्तम शीलथी त्रण जगतने पवित्र करनारी मरुदेवी नामें स्त्री हती. हवे त्रीजा आराना चोराशी लाख पूर्व त्रण वर्ष अने साडाआठ महिना ज्यारे बाकी रह्या हता, त्यारे तेणिने कुखें सर्वार्थ विमानथी, चौद महास्वप्नथी सूचवेला पेहेला तीर्थंकर आवी उपन्या. पछी स्वप्नना अर्थने नहीं जाणता, एवा नाभि अने मरुदेवाने सबलाइंद्रोए हर्षपूर्वक आवीने स्वप्नना अर्थो कह्या. पछी ज्यारे शुभ दिवसे सुखेथी प्रभुनो जन्म थयो, त्यारे छप्पन दिक्कुमारिकायें तेनो

सुतिकामहोत्सव कर्यो. पछी इंद्रें प्रभुने मेरुपर्वतपर लइ जइने, खोळामां बेसाडी तीर्थोनां जळोथी, स्नान कराव्युं, अने पोताने हर्षना अश्रुजळथी स्नान कराव्युं, पछी इंद्रें प्रभुने तेमनी माताने सोंपवा बाद देवांगनाउंए सघळां धात्र्यकर्मो कर्यां. प्रभुना जमणा साथळमां रुषजनो आकार जोइने माबापें हर्षथी तेमनुं "रुषज" नाम पाड्युं. पछी चंद्रनी पेठे अत्यंत आनंद आपता ते प्रभु, देवें दीधेला आहारथी पोषित थया थका अनुक्रमें वृद्धि पामवा लाग्या. एक दहाडे इंद्र प्रभुनी सेवा करवामाटे आव्यो, अने विचारवा लाग्यो के, प्रभुनो वंश कयो स्थापवुं? तेना ते विचारने प्रभुए अवधिज्ञानथी जाणीने, तेना हाथमां रहेली शेरडीपर हाथीनी पेठे तेणे हाथ नाख्यो, पछी ते शेरडी प्रभुने सोंपीने, तथा तेमने नमस्कारकरीने, इंद्रें तेमना वंशनुं "इक्ष्वाकुवंश" नाम पाड्युं. पछी प्रभु बालपणाने तुरत उलंघी जइने, सूर्य जेम मध्याह्ने तेम ते मध्यम वयने पाम्या. प्रभुना पगो यौवनमां पण, कोमल, लाल कमलना गर्जसरखा, उष्ण, कंपविनाना, पसिना रहित, तथा सरखी तलीयोवाला हता. वली नमता प्राणियोनी पीडा दूर करवामाटेज होय नहीं, तेम प्रभुने चक्र उत्पन्न थयुं. वली प्रभुना पगनी तलीयें, जाणे लक्ष्मीना लीला करवाना घरना शंख कुंजो होय नहीं, तेम स्वस्तिक शोजतो हतो. वली प्रभुनो अंगुठो वत्सनी पेठे श्रीवत्सथी लांछित थयेलो, तथा पुष्ट, गोल, उंचो, अने सर्पनी फणा जेवो हतो. वली तेमना चरणरूपी कमलोनां पांदडांउंज जाणे होय नहीं, एवी तथा पवनविना निष्कंप, अने चीकणी दिवाउंनी शिखा जेवी आंगलीयो हती. वली प्रभुना पगोनी आंगलीउं नीचे, नंदावर्तो शोजतां हतां, के जेउंना प्रतिबिंबो, पृथ्वीमां धर्मनी प्रतिष्ठाना हेतुपणाने पाम्या. वली प्रभुनी आंगलीउंनी नीचे, रहेला यवो तो जाणे प्रभुना जगतलक्ष्मीसाथे थता विवाहने माटेज वाव्या होय नहीं, तेम शोजता हता. वली पगरूपी कमलनुं जाणे मूलज होय नहीं, एवी प्रभुनी पार्ष्णि एडी हती, तथा नखो तो अंगुठा अने आंगळीरूपी सर्पना फणापर रहेला मणिउं सरखा हता. वली प्रभुना पगोना गुप्त गुल्फो, (घुटियो) सोनेरी कमलना डोडानी कर्णिकानी शोजाने धारणकरता हता. वली तेमना पगो आगल पाछलथी काचबानी पेठे उंचा गुप्त नसोवाला

स्निग्ध छविवाला, तथा रोमविनाना हता. वली तेमनी जंघा तो, अंदर मग्न थयेलां हाडकांवाली, तथा अनुक्रमें गोलाकारवाली हरणीनी जंघाजेवी हती. वली तेमना गोल अने मांसथी जरेला घुंटणो, तो रूथी जरेला ढांकणामां राखेला अरिसानी शोजाने धारण करता हता. वली तेमना साथलो तो कोमल, स्निग्ध, तथा अनुक्रमें पुष्ट थया थका, मोटा केलना स्तंजना विलासने धारण करता हता. वली स्वामिनां मुष्को (वृषणो) हाथीनी पेठे गुप्त तथा समस्थितिवालां हतां; तथा कुलीन घोडानी पेठे तेमनुं पुरुषचिह्न पण अतिगुप्त हतुं. वली तेमनी केड तो, विस्तारवाली, पुष्ट, स्थूल, विशाल, तथा कठिन हती; तथा मध्यजाग तो पातला पणाथी कलशना उदरसरखो हतो. वली तेमनी गंजीर नाजि तो नदीमां रहेली फुदडिना विलासने धारण करती हती; तथा बन्ने पडखां तो, स्निग्ध, मांसयुक्त, कोमल, सरल, अने सपाट हतां. वली तेमनुं वक्षःस्थल तो, सोनानी शिला सरखुं विस्तारवालुं, तथा श्रीवत्सरूपी रत्नना सिंहासनवालुं लक्ष्मीने क्रीडा करवानी वेदिका सरखुं शोजतुं हतुं. वली तेमना खजा तो, बेलनी कांधसरखा, दृढ, पुष्ट तथा उंचा हता, तथा काखो तो अल्प रोमवाली, उंची, तथा गंध, पसीनो अने मेलविनानी हती. वली तेमना बन्ने पुष्ट हाथो सर्पनी फेण सरखा हता, तथा जुजो तो जाणे चंचल लक्ष्मीने वश करवामां नागपाश सरखा, तथा घुंटणसुधि लांबा हता. वली तेमना हाथो नवा आंबाना पल्लवसरखी लाल तलीयोवाला कार्यविना कर्कश, पसिनाविनाना, छिद्रविनाना, तथा उष्ण हता. वली तेमना ते हाथो, पगोनी पेठे, दंम, चक्र, धनुष्, मत्स्य, श्रीवत्स, वज्र, अंकुश, ध्वजा, कमल, चामर, छत्र, शंख, कुंज, समुद्र, मेरु, मगर, रूषज, सिंह, घोडो, रथ, स्वस्तिक, दिग्गज, प्रासाद, तोरण, तथा हाथीथी अंकित हतां. वली तेमनी, लाल, सरल, राता नखोवाली अंगुठा तथा आंगलीओ, जाणे, छडे माणेकरूपी पुष्पोवाला कल्पवृक्षना अंकुराउज होय नहीं, तेम शोजती हती. वली प्रजुना अंगुठानां पर्वोमां रहेला यवो, तो तेमना यशरूपी घोडाने विशेष पुष्ट करवा माटेज होय नहीं, तेम शोजता हता. वली तेमनी आंगलीउपर रहेला दक्षिणावर्त्तो दक्षिणेवलेख (शंखाकाररेखाउंठो) सर्व संपत्तिने जणावनारा दक्षिणावर्त्तपणाने

पाम्या हता. वळी तेमना हस्तकमळना मूळमां रहेली त्रण रेखाउ, को जाणे पोताने त्रणे जगत्ने प्रयत्नपूर्वक उद्धारवां छे, तेनी संख्याना लेखो ज होय नहिं, तेम शोजती हती. वळी तेमनो कंठ तो, गोळ, उंचो, लांबो; तथा त्रण रेखाउथी पवित्र थयेलो, तथा गंजीर नादवाळो होतो थको शंखनी तुलना करतो हतो. वळी तेमनुं विस्तारवाळुं, गोळ, तथा कांतिवाळुं मुख तो, जाणे लांछनविनानो बीजो चंद्रज होय नहीं तेम शोजतुं हतुं. वळी तेमना कोमळ, पुष्ट तथा स्निग्ध, एवा कपोलो तो, जाणे साथे रहेती सरस्वती अने लक्ष्मीना सोनाना आरिसाउज होय नहीं तेम शोजता हता. वळी अंदर आवर्तोथी शोजता तथा खजासुधि लंबाइने रहेला तेमना कर्णो तो, जाणे मुखनी कांतिरूपी समुद्रने कांठे रहे, बे छीपोज होय नहीं, तेम शोजता हता. वळी तेमना होठो बिंबफळ सरखा, तथा बत्रीश दांतो मोगरा सरखा, तथा नाशिका अनुक्रमें विस्तारवाळी तथा उंचा वांससरखी हती. वळी तेमनी डाढी, नहीं लांबी तेम नहीं टुंकी, पुष्ट, गोळ, तथा कोमळ हती; तथा काळा, घणा, स्निग्ध अने कोमळ रोमने धारण करनारि हती. वळी तेमनी जिह्वा तो कल्पवृक्षना पल्लवसरखी लाल, कोमळ, तेम अति जाडाइ (स्थूलता) विनानि, अने बार अंगना अर्थोने उत्पन्न करनारी हती. तेमनी आंखो, वच्चे काळी तथा सफेद, अने छेडे लाल रंगनी, ते जाणे, नीलम, स्फटिक अने माणेकनीज बनावी होय नहीं तेवी शोजती हती. वळी तेज आंखो, छेक कानसुधि पहोळी, तथा काजळसरखी श्याम पांपणोवाळी, जाणे विकस्वर थयलां, तथा जेनी अंदर जमरा बेठेला छे, एवां कमळो होय नहीं, तेवीयो शोजती हती. वळी तेमनी श्याम, तथा वांकी भ्रुकुटियो तो, आंखरूपी तळावना कांठापर विखराइने पडेली लताउनी शोजाने धारण करती हती. वळी तेमनुं विशाळ, पुष्ट, गोळ, कोमळ, कठिन तथा सरखुं, एवुं कपाळ तो अष्टमीना चंद्रसरखुं सुंदर शोजतुं हतुं. वळी तेमनुं अनुक्रमें उंचुं थतुं मस्तक तो, नीचे मुखें राखेला छत्रपणाने धारण करतुं हतुं. वळी तेमनुं ते मस्तक जगत्ना ईशपणाने धारण करता छत्रपणाने पामते छते, गोळ अने उंचुं उष्णीष (मस्तकनो छेक उपरनो जाग) तो तेपर रहेला कळशनी शोजाने धारण करतुं हतुं. वळी तेमना मस्त-

कपर रहेला जमरासरखा काला, कुंचित थएला (वांकडा अथवा तुटा विखरायेला) कोमल तथा स्निग्ध (चिकणा तथा तैलादि स्नेह द्रव्य विना चलकता) एवा केशो तो यमुना नदीना मोजा सरखा शोजता हता. वली तेमनी गोरोचनना गर्ज सरखी श्वेत, स्निग्ध, तथा स्वच्छ चामडी तो, जाणे तेमनां शरीरपर स्वर्णद्रवनुं (कुंदन वा वरकनुं) विलेपन कर्युं होय नहीं, तेम शोजती हती. वली तेमना शरीरपर, कोमल, भ्रमरसरखा श्याम, बीजा अंकुरा (कोंटा) विनानां, तथा कमलतंतुसरखां पातलां रोमो शोजतां हतां. वली तेमनो श्वासोच्छ्वास, प्रफुल्लित थएला कमलना सुगंध सरखो हतो, तथा तेमनुं रुधिर तो गायना दूध सरखुं श्वेत हतुं. एवी रीतें असाधारण प्रकारनां जुदां जुदां लक्षणोथी लक्षित थयेला प्रजु, रत्नोथी लक्षित थयेला समुद्रनी पेठे कोने सेवनीय न थया? हवे एक दिवसें कोइ जुगलियुं बालक्रीडा करतुं थकुं तालवृक्षनी नीचे गयुं. ते वखते डुर्दैवना योगथी, तेपरथी पुरुषना मस्तकपर, एरंडापर जेम वीजली, तेम ते वृक्षनुं मोटुं फल पड्युं. अने ते फल काकतालीय न्यायथी तेना मर्मस्थानमां लागवाथी, ते बालक पेहेलांज अकाल मृत्युथी मरण पाम्यो. ते मृत्यु पाम्याबाद तेनी स्त्री, यूथथी भ्रष्ट थयेली हरिणीनी पेठे, कर्त्तव्यमां जड थइ बेठी. एवी रीतना मुझरसरखा घाथी अचानक अकाल मृत्यु पामेला ते पुरुषने जोइ बीजां पण युगलीआंउ मूर्छित थयां. पठी ते युगलीयाउ ते जर्तारहित स्त्रीने अगाडी करी "शुं करवुं?" एवी रीतें मूढ थइनें नाजिकुलकरपासे तेणीने लइ गया. (त्यारे नाजि राजाए विचार्युं के) आ स्त्री ऋषजनी धर्मपत्नी थाउ.? एम विचारि नेत्ररूपी कैरवने चंद्रसरखी ते स्त्रीने तेणे ग्रहण करी. हवे एक दिवसें प्रजुना आगला जोगावली कर्मना उदयथी, तेमनो विवाह करवामाटे इंद्र, देवो सहित त्यां आव्यो. पठी त्यां देवोए सोनाना स्तंजोपर शोजती ठे, मणिउनी पुतलीउ जेमां, तथा अनेक द्वारवालो मंडप बनाव्यो. ते मंडप, श्वेत अने मनोहर कपडांना चंद्रुवाथी, जाणे तेने (मंडपने) जोवामाटे आवेली गंगा नदीथीज आश्रित थयो होय नहीं, तेम शोजतो हतो. वली त्यां चारे दिशाउमां कल्पवृक्षनां तोरणो तो जाणे, कामदेवें बाणो चडाव्यां होय नहीं, तेवां शोजतां हतां. वली त्यां आकाशमां च

हती, रत्नोना कलशोनी चार श्रेणियो तो जाणे देवीउंए रतिनां निधानो गोठव्यां होय नहीं तेम शोजती हती. वली ते मंडपना द्वारमां वादलांउं चेलोत्क्षेप वर्षावतां हतां तथा मध्यमां देवांगनाउंए जमीनने यक्षकर्दम (चंदन)थी पंकिल करी. पछी त्यां वाजां वागते छते,तथा मंगल गवाते छते, दिगंगनाउं (दिक्सुंदरियो) पण पडघाथी गावा तथा बजाववा लागी. (पछी ते वखते) इंद्रे सुमंगला अने सुनंदासाथे प्रज्जुनो विवाहमहोत्सव कर्यो. पछी करेलुं छे देवोए मंगल जेने एवी सुमंगलाए जरत अने ब्राह्मी नामनां जोडलांने जन्म आप्यो. तथा त्रण लोकने आनंद उत्पन्न करनारी सुनंदाए पण महाबलवान् बाहुबली, तथा अति खुबसुरत सुंदरीने जन्म आप्यो. वली सुमंगलाए, बलवान्, तथा मूर्त्तिमंत देवो सरखां उंगणपचास जोडलांने जन्म आप्यो. हवे एक दहाडो सघला युगलीआउं एकठा थइ, नाजिराजापासे आवी पोकार करवा लाग्या के, अन्याय थाय छे. वली हमणां सघला लोको मांहोमांहे क्लेश करता थका हकार, मकार, तथा धिक्कारनी त्रण प्रकारनी नीतिने पण गणकारता नथी. त्यारे नाजि कुलकरें कह्युं के, आ क्लेशथी तमोने आ तमारा ऋषजस्वामी रक्षण करशे, माटे तेनी आज्ञाप्रमाणे तमो वर्त्तो ? त्यारे कुलकरनी आज्ञाथी राज्यस्थिति स्थापवाने, त्रण ज्ञानवाला प्रज्जु युगलीआउंने कहेवा लाग्या के, मर्यादाने उलंघनाराउंने रोकनार राजा होय छे, अने तेथी तेने आसनपर बेसाडी जलवडे राज्याजिषेक कराय छे. ते सांजली तेउं (युगलियादेवो) ऋषज प्रज्जुने आसनपर बेसाडी, तेमनीज शिखामणथी, पांदडांना पडीआउंमां पाणी लेवा गया. तेज वखते आसन कंपवाथी अवधिज्ञानें करीने, जगवानना राज्याजिषेकनो वखत जाणीने इंद्र त्यां आव्यो, तथा प्रज्जुने रत्नना सिंहासनपर बेसाडीनें इंद्रे तेमनो अजिषेक कर्यो तथा मुकुट आदिक आजूषणो पहेराव्यां. एटलामां ते युगलियाउंए हाथमां रहेला कमलिनीनां पत्रोमां पोतानां मनसरखुं निर्मल जल आण्युं. पण तेउंए प्रज्जुने तो, सूर्यथी जेम मेरु, तेम मुकुटथी शोजता, तथा शरदऋतुनां वादलांथी जेम आकाश, तेम निर्मल वस्त्रोथी शोजता, तथा हंसोथी जेम शरदऋतु, तेम चलायमान थतां सुंदर चामरोथी शो-

जता, तथा करेलो छे अभिषेक जेमनो, एवा ते रुषभ प्रभुने आश्चर्यथी जोवा. ते जोइ तेउंए विचार्युं के, प्रभुना मस्तकपर पाणी रेडवुं लायक नथी, एम विचारि विनयवंत एवा तेउंए प्रभुना चरणकमलपर पाणी रेड्युं. पछी इंद्र नव योजन विस्तारवाली (लांबी) तथा बार योजन पोहोली, विनीता नामें नगरी वसाववाने कुबेरने हुकम करी पोताने स्थानकें गयो. त्यारे तेणें (कुबेरें) पण पृथ्वीने माणिकना मुकुटसरखी ते नगरी वसावी, तथा वैरीउं तेना सामे लडी नहीं शके, माटे तेनुं " अयोध्या " एवुं पण बीजुं नाम पाड्युं. पछी ते यक्षराजें तेने बनावीने, क्षय न थाय एवां रत्न, वस्त्र, धन तथा धान्यथी भरी दीधी. त्यां हीरा, नीलम, तथा वैदूर्यमणिना बनावेला मेहेलोना किरणोथी भिंतविना आकाशमां चित्रामण थइ रह्युं. तेना गढपर रहेला तेजवाला माणेकना कांगराउं, विद्याधरनी स्त्रियोमाटे मेहेनतविना आरिसापणाने प्राप्त थया. वली ते नगरीमां घरना आंगणामां पृथ्वीपर रहेला स्वस्तिकोनां मोतियोथी छोकरीउं पोतानी मेले कांकराउंनी क्रीडा करती हती, वली त्यां बगीचामां रहेला उंचां वृक्षोपर हमेशां अटकी जतां खेचरीउंनां विमानो (पक्षिउंना) माला पणाने पामतां हतां. वली त्यां मेहेलोमां रत्नोना उंचा ढगलाउं जोइने, रोहणाचल तो तेना कचरानो ढगलो गणातो हतो. वली त्यां जलक्रीडामां प्रीतियुक्त थयेली स्त्रियोना तुटेला हारोनां मोतीयोथी, घरनी वाव्यो तो " ताम्रपर्णीनी (नदीभेद छे) शोभाने धारण करे छे. त्यां शाहुकारो तो एवा छे के, तेउंमांना फक्त एकनीज पासे, वणिक्पुत्र कुबेर वेपार करवा गयो होय एम हुं (कवि) मानुं बुं, वली त्यां रात्रिए चंद्रकांत मणिउंनी भीतवाला मेहलोमांथी झरता पाणीथी स्थिर थई छे धुड जेउंनी एवा चारे बाजुना रस्ताउं छे. वली ते नगरी पोताना अमृतसरखा पाणीवाला लाखो गमें वाव्य कुवा, तथा तलावोथी, नवा छे अमृतना कुंडो ज्यां, एवा नागलोकने पण हरावती हती. ते नगरीने शोभावता श्री वृषभध्वज नरेंद्र (राजा) पोतानां बालकोनी पेठे प्रजाने पालता हता. वली त्यां प्रभुए लोकोना हितवास्ते केटलीक शिल्पकलाउं उत्पन्न करी. वली राज्यस्थिति पालवाने तेणे बेल, घोडा, तथा हाथी विगेरे ग्रहण कर्या,

तथा साम आदिक उपायोवाली रीति पण तेमणे बतावी. जरतने तेउंए बहोतेर कला जणावी. तथा जरतें पण पोताना बीजा जाइयो, तथा पुत्रोने जणावी. वली तेमणें बाहुबलिने हाथी घोडा स्त्री तथा पुरुषोनां अनेक प्रकारनां लक्षणो शिखव्यां. वली तेमणें डाबे हाथे ब्राह्मीने अ-ढार प्रकारनी लिपि शिखवी, तथा जमणे हाथे सुंदरीने गणितशास्त्र शिखव्युं. एवी रीतें जुदी जुदी लोकोनी जातो पाडीने, तथा न्यायमार्गें प्रवर्त्तावतां थकां त्र्याशी लाख पूर्व प्रजुए व्यतीत कर्या. पछी एक दहाडे प्रजु, कामदेवें करेल छे आवास जेमां, एवो वसंत ऋतु आववाथी परि-वारना उपरोधथी बगीचामां गया त्यां ते वसंतश्री, आंबाना मोरपर खुशी थई गुंजारव करता ज्रमराउंथी, जाणे प्रजुने आदरमानज देती होय नहीं, तेम शोजती हती. वली त्यां पंचम स्वर गाति कोकिलाउंए रंगमंडपमां शरूआत करते छते मलयाचलना पवनना उपरीपणा नीचे लताउं नाच करवा लागी. वलीत्यां पुष्पो एकठां करवाना मिशथी दरेक शाखाउंप्रत्ये लागेली स्त्रियोथी, जाणे वननां झाडो, स्त्रियोरूपी फलोवालां थयां होय नहीं तेम शोजतां हतां. वली ते वखते वसंत पण देहधारी राजा थयो होय नहीं, तेम पुष्परूपी वासगृहमां रहेनारो, तथा पुष्पोनांज आजूष-णोवालो, पुष्परूपी छे हाथमां गेंडुक जेने एवो शोजतो हतो. एवी री-तना ते वनमां जरतादिक रमता हता त्यारे, प्रजु अवधिज्ञानथी पोते जोगवेल, उत्तरोत्तर स्वर्गनां सुखो याद करवा लाग्या, अने जेने मोहबं-धन गलित थयुंछे एवा प्रजु विचारवा लाग्या के, धिक्कारछे आ जनने के, जे विषयोमां लोलुप थइने पोतानुं हित जाणी शकतो नथी. वली, अरे! जीवो, आ संसाररूपी कुवामां कर्मे करीने, अरघट्ट घटीनां (रेंट-माल) न्यायथी (एटले तेरेंटमां रहेला घडानी पेठे) चडे छे ने पडे छे. एवी रीतें विचार करता प्रजु जेटलामां मनें करी जवथी पराङ्मुख (विरक्त) थया, तेटलामां त्यां सारस्वतादिक लोकांतिक देवो पण आव्या. तेउंए त्यां जाणे बीजा मुकुटोज करता होय नहीं, तेम हाथ जोडी प्रजुने विन-ति करी के, हे स्वामिन्! आप तीर्थ प्रवर्त्तावो? एम कही तेउं गयाबाद, प्रजुए पण नंदनवनमांथी पाछा वली नगरीमां जइ राजाउंने बोलाव्या, तथा मोटा पुत्र जरतने राज्याजिषेक करावी, बाहुबलि आदिने बीजा

देशो तेमणे वेहेंची आप्या. पछी प्रजुए संवत्सरी दान दइने लोकोने एवा तो तृप्त कर्या के, जेथी "तुं मने दे" एवुं दीन वाक्य कोइना मुखथी निकळ्युंज नहीं. पछी आसन कंपवाथी सघला इंद्रोए आवीनें, वादळांउ जेम पर्वतनो, तेम प्रजुनो तेउंए अजिषेक कर्यो. (ते वखते) इंद्रोए पहेरावेली मालाउं तथा अंगविलेपनथी प्रजु जाणे पोताना यशना ढगला उंथी विटाएला होय नहीं तेम शोजता हता. वली विचित्र वस्त्रोथी तथा रत्नोनां आजूषणोथी जूषित थएला प्रजु, संध्याकालनां वादलां तथा तारा उंथी शोजता आकाशसरखा देखाता हता, वली इंडें, पोताना आत्मामां नहीं माता(अने तेथी उजराइ जता)आनंदनेज जाणे जगत्प्रत्ये आपतो हो-य नहीं, एवो आकाशमां डुंडुजिनाद वगडाव्यो. पछी प्रजु जगत्ने जाणे उर्ध्वलोकनो मार्ग देखाडता होय नहीं, तेम, देव, दानव तथा माण-सोए उपाडेली पालखीपर बेठा. एवी रीतें देवोए तथा इंद्रोए पण प्र-जुना निकलवानो महोत्सव कर्यो, तथा तेने जोइने पोतानी आंखोनुं अनिमेषपणुं तेउंए कृतार्थ कर्युं. पछी प्रजुए सिद्धार्थक उद्यानमां जइ, कषायोनेज जाणे होय नहीं, तेम कुसुम तथा आजरण आदिक तजी दीधां. तथा चार मूठीथी प्रजुए केशोने उखेडी नाख्या, तथा पांचमी मूठीथी (बाकीना) केशो ज्यारे उखेडवा लाग्या, त्यारे इंडें विनति क-री के, हे देव, सोनासरखी कांतिवाला आपना खजापर लटकती आ केशनी श्रेणि घणीज शोजे छे, माटे ते जले रही ? त्यारे प्रजुयें पण ते-मज कर्युं. पछी प्रजुना केशोने पोताना डुपटाना छेडामां लेता सुधर्मेंद्र-नी कांति अत्यंत दीपवा लागी. पछी ते सुमेंडें, क्षीरसमुद्रमां ते के-शोने पधरावी, आव्या वाद; नाटकाचार्यनी पेठे लोकोना घोंघाटने मु-ष्टिसंज्ञाथी अटकावी कह्युं के, " सर्व सावद्यनां मारे पच्चरकाण छे " एवी रीतनां उत्कष्ट चारित्र के जे मोक्षमार्गना रथरूप छे ते प्रत्ये प्रजु आरूढ थया. पछी त्यां प्रजुने सघला प्राणीउंना मन ड्रव्यनें देखाडतुं चोथुं मनःपर्यय ज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी ते प्रजुनी पछाडी चालता चार हजार राजाउंए पण दीक्षा लीधी, कारण के, कुलीनोनो आ नियम (धारो) छे. पछी सघला इंद्रो पोत पोताने स्थानकें गया वाद, प्रजु पण, हाथीउं सहित जेम यूथपति तेम, तेउं सहित विहार करवा लाग्या. ए-

की रीतें जिक्षावास्ते जमता प्रजुने, जिक्षाना तत्वनियमोने नहि जाण-नार मुगलीआउं, कन्या, हाथी, तथा घोडा आदिकनी जेट धरवा ला-ग्या, माटे धिक्कार ठे एवा सरलपणाने ! ! ! एवी रीतें जिक्षा न पामता थका प्रजु परिसहोने सहन करता, तथा क्लेशरहित मनवाला थईने मौनव्रत ग्रहण करता हवा.

पठी ते जुख्या रहेता चार हजार साधुउंए प्रजुने ठोडी दीधा, का-रण के प्रजु सरखा सत्व (धैर्य) वालो कोण होय ? पठी तेउं तो वनमां जइ कंदमूल तथा फलोना आहार करनारा तापसो थया; एवी रीतें मोक्षमार्गथी खसीने जवाटवीना मार्गमां दाखल थयेला तेउंने धिक्कार ठे. पठी प्रजुनी आज्ञाथी क्यांक गएला कछ महाकछना नमि विनमि ना-में बे पुत्रो, ज्यां प्रजु प्रतिमा धारीने रह्या हता त्यां आव्या. तथा प्रजुने नमस्कार करी विनति करवा लाग्या के, हे स्वामि; अमारो कोई धणी नथी, माटे आप अमोने राज्य आपो ? एवा ते सेवकोने पण प्रजुयें तो कंइ जवाब आप्यो नहीं, कारण के. ममतारहित माणसो, कोइनी इछित मागणीथी लिप्त थता नथी. तेउं प्रजुनी पासे रही हाथमां तलवार खेंची, हमेशां, सूर्य तथा चंद्र जेम मेरुने, तेम प्रजुने सेववा लाग्या. प-ठी एक दहाडो प्रजुने वांदवाने आवेला धरणेंद्रें पूछ्युं के, तमो कोण ठो ? तथा तमारे शुं काम ठे ? त्यारे तेउंए कह्युं के, अमो चाकरो ठि-यें, अने आ प्रजु अमारा स्वामी ठे, अमोने तेउंए क्यांक जवानो हुक-म कर्यो हतो, अने पाठलथी पोताना सघला पुत्रोने तेमणें राज्य वेहें-ची आप्युं. जो के, तेमणें सघलुं तजी दीधुं ठे, तो पण ते अमोने रा ज्य आपशे, अने तेथी सेवकें, " तेमनी पासे कंइ ठे के, नहीं " तेनो विचार करवो नहीं, पण तेउंए तो तेमनी सेवाज करवी. त्यारे धरणेंद्रें कह्युं के, तमो जरत पासे जइ मागणी करो ? कारण के, प्रजु तो मम-ता अने परिग्रहरहित ठे, माटे ते तमोने आजे शुं आपी शके? त्यारे ते कुमारोए कह्युं के, आ जगतना स्वामिने मेलवीने अमो बीजो स्वा-मी करशुं नहीं, कारण के, कल्पवृक्षने मेलवीने कंथेर (केरडा)ने को-ण सेवे ? वली अमो आ प्रजुने ठोडीने बीजा पासे याचना करशुं नहीं कारण के, बपैयो वर्षादने तजीने शुं बीजापासे याचना करे ठे ? वली

जरतादिकनुं पण कल्याण थाउं. ? अने तारे पण अमारी फिकर शामाटे करवी जोइयें ? अमारा आ स्वामिथी अमोने जे थवानुं होय ते थाउं ? बीजानी अमारे शी जरुर ठे ? एवी रीतनां तेउंनां वचनथी खुशी थएलो धरणेंद्र कहेवा लाग्यो के, हुं पण आज स्वामिनो सेवक पातालेंद्र हुं. " आज स्वामिने अमारे सेववा ठे " एवी रीतनी तमारी प्रतिज्ञा घणीज उत्तम ठे, अने तेथी प्रजुनी सेवाना फलरूप हुं तमोने विद्याधरोनुं ऐश्वर्य आपीश. आ स्वामिनी सेवाथीज तमोने मलेलुं ठे, एम तमो बोलजो, पण तेथी उलटुं बोलशो नहीं ? एम समजावी तेउंने तेणें प्रज्ञप्तिप्रमुख विद्याउं आपी. पठी तेउं तेनी अनुज्ञाथी, पचास योजनना विस्तारवाला, तथा पचीस योजन उंचा वैताढ्य पर्वतपर आव्या. पठी त्यां नमियें, दश योजनना विस्तारवाली दक्षिणश्रेणिनी मांहें, विद्याना बलथी पचास नगरियो वसावी. तथा विद्यावाला विनमियें पण दश योजनना विस्तारवाली उत्तरश्रेणिमां साठ नगरियो वसावी. पठी त्यां लांबा कालसुधि तेउंए विद्याधरोनुं चक्रवर्त्तिपणुं जोगव्युं. कारण के तेवा स्वामिनी सेवाथी शुं डुर्लज ठे ?

पठी प्रजुपण एक वर्षसुधि आहार पाणीविना मौन रही विहार करता थका पारणानी इछाथी गजपुर नगरमां पधार्या. ते वखते सोमयशाना पुत्र श्रेयांसें स्वप्नमां जोयुं के, (में) श्याम मेरुने अमृतना कुंजोथी धोइने उज्वल बनाव्यो. वली त्यां सुबुद्धि नामें शेठें, पण एक स्वप्न जोयुं के, सूर्यथी निकलेलां हजारो किरणो श्रेयांसें धारण कर्यां, अने तेथी ते अति उज्वल थयो. वली सोमयशें पण स्वप्नमां जोयुं के, पोते बीजा घणा राजाउंथी घेराएलो हतो, पण श्रेयांसना सहायथी पोते जय पाम्यो. पठी तेउं त्रणेए सजामां आवी एकबीजाने स्वप्नां कह्यां, पण तेनो जावार्थ नहीं जणावाथी, तेउं पोत पोताने स्थानकें पाठा फर्या. हवे तेज वखते ते स्वप्नना निर्णयने जाणे प्रगट करवा माटेज होय नहीं, तेम जगवान् पण जिक्षा माटे श्रेयांसने घेर गया. जगवानने आवता जोइने, चंद्रने जोइने जेम समुद्र, तेम श्रेयांसने पण कल्याणना पात्र समान अत्यंत आनंद थयो. पठी प्रजुना दर्शनथी विचारि करता श्रेयांसने, पेहेलां जोगवेला जिन्न जिवाना जिन्न जिन्न जिव्ये

(अने तेथी तेणें जाण्युं के) आ प्रभु पेहेलां वज्रनाभ नामें चक्रवर्ती हता, तथा हुं तेनो सारथि हतो, तथा तेमनी पाछल में पण दीक्षा लीधी हती. इत्यादि तेणें जाण्युं. पछी जाणेल छे निर्दोष भिक्षाना दाननो विधि जेणें, एवा ते श्रेयांसें हर्षसहित ताजो आवेलो शेलडीनो रस वोराव्यो. ते वखतें घणो एवो ते रस प्रभुना हस्तपात्रमां माइ गयो, पण श्रेयांसना हृदयमां हर्ष तो मायोज नहीं!!! पछी ते रस प्रभुना हस्तमां थीजी जइ उंची शिखावालो थइ स्थिर रह्यो, कारण के, प्रभुनो प्रभाव न चिंतवी शकाय तेवो होय छे. एवी रीतें प्रभुए ते रसथी पारणुं कर्युं, अने देव, दानव तथा माणसोनां नेत्रोए, प्रभुना दर्शनरूपी अमृतथी पारणुं कर्युं!!! पछी देवोए आकाशमां, मेघोनी पेठे दुंदुभिनाद कर्यो, तथा जलवृष्टिनी पेठे रत्न अने पुष्पोनो वर्षाद वरसाव्यो. पछी प्रभु बाहुबलीनी तक्षशिला नामें नगरीप्रत्ये गया, तथा त्यां बाहारना उद्यानमां एक रात्रिनी प्रतिमाथी रह्या. सवारमां हुं प्रभुना दर्शनथी मारा लोकोने पवित्र करावीश, एम विचारता बाहुबलिने ते रात्रि एक माससरखी जाती हवी. पछी जेवो प्रभातमां बाहुबलि त्यां गयो, तेटलामां प्रभु तो बीजी जगोए चाल्या गया, तथा तेथी चंद्रविनाना आकाशसरखुं स्वामिविनानुं तेणें ते उद्यान जोयुं. उषर (खारवाली) भूमिमां वावेला बीजनी पेठे मारो मनोरथ नाश पाम्यो, माटे अरे! हुं महा प्रमादी छुं एवी रीतें ते पोतानी निंदा करवा लाग्यो. पछी ज्यां प्रभुनां पगलां पडेलां हतां, त्यां तेणें रत्नोथी हजार दांतानुं बीजा सूर्य सरखुं धर्मचक्र बनाव्युं. विविध अभिग्रहवाला, तथा धर्मने जाणनारा ते प्रभु आर्यदेशनी पेठेज म्लेछदेशमां पण विहार करवा लाग्या, कारण के योगियो तो समभाववाला होय छे. त्यारथी मांडीने पापरूपज छे, कार्यो जेनां, एवा ते अनार्योने धर्मनी आस्तिक बुद्धिथी दृढ क्रियाउनुं चेष्टित थयुं. एवी रीतें एक हजार वर्षसुधी विहार करता करता प्रभु, पुरिमतालनामें नगरमां पधार्या. त्यां ईशान खुणमां रहेला शकटानन नामें वनमां प्रभु, वडनी नीचे, अठम करीने प्रतिमाथी रह्या. तथा अपूर्वकरणना क्रमथी क्षपकश्रेणिपर चडीनें, शुरू शुक्लध्यान ध्यायवा लाग्या. अने तेथी प्रभुनां घातिकर्मो वादलांउनी पेठे दूर थयां, अने तेथी "केवल

ज्ञानरूपीसूर्य" तेमने प्रगट थयो. तेज वखते अति गरदीनेलीधे परस्पर विमानोने घसता चोसठ इंद्रो पण देवोना समूहसहित त्यां आवी पहों-च्या. वली ते वखतें वायु कुमारोए, त्रण लोकना स्वामिना समवसरणना स्थानकने साफ कर्युं. वली मेघकुमारोए गंधोदकथी (चंदनादियुक्त सुवासित जल) पृथ्वीने सिंची, तथा ऋतुउंए पण पृथ्वीपर घुंटणसुधि पुष्पो पाथर्यां. वली त्यां अग्निकुमारोए स्निग्ध छे धूपनी शिखाउं जेमां, तथा आकाशमंडलने पण सुगंधि करनारी धूपघटिकाउं बनावी. पछी इंद्रादिक देवोए, नाना प्रकारना मणि आदिकनी कांतिथी, सेंकडो इंद्र-धनुष्वालुं जाणे होय नहीं, एवुं समवसरण बनाव्युं. वली त्यां भुवनपति ज्योतिषी, तथा वैमानिक देवोए बनावेला, रूपा, सोना तथा माणिकना गढो शोभवा लाग्या. " आ मार्ग स्वर्गमां जाय छे, आ मार्ग मोक्षमां जाय छे," एवुं जाणे प्राणिउंने कहेती होय नहीं, एवी रीतें उछलती धजाउं त्यां शोभती हती. गढपर रहेली रत्नमय विद्याधरीउं (पुतलीउं-रूप) जाणे देवोए (सभासदोना) नहीं मावानी शंकाथी आववा न दीधीयो हाय नहीं तेवीयो शोभती हती. वली ते प्रत्येक गढमां, जाणे चार प्रकारना धर्मने क्रीडा करवाना झरूखाउं ज होय नहीं, एवा चचार दरवाजाउं शोभता हता. वली ते समवसरणमां देवोए, जाणे त्रण रत्नोना (ज्ञान, दर्शन, चारित्र) उदयने करतुं होय नहीं, एवुं त्रण कोश उंचुं अशोकवृक्ष बनाव्युं. तेनी नीचे पूर्व दिशामां देवोए, स्वर्गलक्ष्मीना सा-रसरखुं पादपीठसहित रत्नसिंहासन बनाव्युं. पछी प्रभु पूर्वद्वारथी प्रवेश करीनें, तथा तीर्थने नमस्कार करीने, सूर्य जेम पूर्वाचलपर, तेम (अज्ञानरूपी) अंधकारनो नाश करवामाटे सिंहासनपर बेठा. तेज वखतें देवोए, प्रभुनां बीजां त्रण रूपो, बीजी त्रणे दिशामां रत्नना सिंहासनपर बेठेलां बनाव्यां. नीचुं करेल छे पूर्णिमाना पूर्ण चंद्रनुं पण मंडल जेणें, तथा त्रण लोकोना स्वामिपणाना चिह्न सरखा प्रभुना मस्तकपर त्रण छत्रो शोभवा लाग्यां "एकज आ प्रभु स्वामी छे" एवा हेतुथीज जाणे इंद्रें उंचो कर्यो होय नहीं, एवो प्रभु आगल रत्नध्वज शोभवा लाग्यो. वली केवलज्ञानियोमां चक्रवर्त्तिपणाने सूचवनारूं, तथा अति अद्भुत प्रभाव-वालुं धर्मचक्र प्रभुपासे शोभवा लाग्युं. वली जाणे प्रभुना मुखरूपी क-

मळप्रत्ये दोडता हंसोज होय नहीं, तथा गंगाना मोजासरखां बे चामरो प्रभुपासे शोजवा लाग्यां. वळी जेनी पासे सूर्यमंडल पण एक पतंगिया सरखुं लागे छे, एवुं जामंडल प्रभुना शरीरपाछळ प्रगट थयुं. वळी (पोताना) पडघाथी चारे दिशाउने अत्यंत वाचाल करतो, तथा मेघसरखो गंजीर, डुंडुजिनाद आकाशमां थवा लाग्यो नीचे छे डींटीआं जेनां, एवां पुष्पो देवोए चारे बाजु वरसाव्यां, ते जाणे के, शांत थएला माणसप्रत्ये कामदेवें पोतानां हथियारो छोडी दीधां होय नहीं, तेवां शोजतां हतां. पछी प्रभु पांत्रीश अतिशयोवाळी, वाणीथी त्रण लोकना अनुग्रहवास्ते धर्मदेशना देवा लाग्या.

हवे प्रभुना आ केवलज्ञानना उत्सवने खबरपत्रियोयें, जरतने जणाव्यो, तथा तेज वखतें, तेने चक्र पण उत्पन्न थयुं. त्यारे जरत क्षणवार सुधि विचारमां पड्यो के, आ बाजु पिताजीने केवलज्ञान थयुं छे, मने आ बाजु चक्ररत्न उत्पन्न थयुं छे, माटे पेहेली कोनी पूजा करूं? (एम विचारतां मनमां एम आव्युं के,) अजयदानने देनारा पिताजी क्यां? अने प्राणियोनी घात करनारूं आ चक्र क्यां? एम विचारि तेणे पोताना संबंधिउने प्रभुनी पूजामाटे हुकुम कर्यो. पुत्रना परिषहना समाचारथी दुःखनां अश्रुउए करी जेनी आंखो रोगसहित थएली छे, एवां मरूदेवा मातानी पासे जइ जरतें विनति करी के, हे माताजी, तमो एम कहेतां हतां के, पद्मखंड सरखो कोमल, मारो पुत्र, वर्षा ऋतुमां पाणिनो उपद्रव सहन करे छे, वळी शियालामां मालतीना गुछानी पेठे हमेशां ठंडीना संतापथी क्लेश पामे छे, तथा उनालामां हाथीनी पेठे, अति जयंकर सूर्यनां किरणोथी संतापने जोगवे छे; अने एवी रीतें सर्व वखतें, वनमां रही, आश्रयरहित थइ, एकलवाया माणसनी पेठे एकाकी रहेतो थको मारो पुत्र दुःखीहोशे. ते तमारा पुत्रनी हमणां त्रण लोकना स्वामिपणाने धारण करती संपदा तमो जुउ? एम कही तेणीने जरतें हाथीपर बेसाड्यां पछी ते जरतराजा मूर्त्तिमान् लक्ष्मीसरखा, सोना, हिरा, तथा माणिकना आजूषणावाळा, घोडा, हाथी तथा पायदल सहित त्यांथी चालवा लाग्यो. जूषणोनी कांतिना समूहथी करेलां छे जंगम तीर्थो जेउए, एवां सैन्यो सहित, तो ते राजा दूरथीज रत्नध्वजने जोतो हवो. पछी ते जरत-

राजा मरुदेवा माताने कहेवा लाग्या के, हे देवि, देवोए बनावेलुं प्रभुनुं समवसरण, आ तमारी आगल रह्युं छे. वली प्रभुनी सेवामाटे आवेला देवोनो आ जयजय शब्द संजलाय छे. वली मालव, केशिकि रागथी पवित्र थएली तथा कानोने अमृत सरखी प्रभुनी आ देशनानी वाणी संजलाय छे. वली ते वाणीने मयूर, सारस, क्रौंच, तथा हंसो कान दइने पोतपोताना स्वरथी अधिक मानीने आश्चर्यपूर्वक सांजले छे. वली हे देवि, वर्षाद सरखा तातनी एक योजनसुधि जाती वाणीने सांजलीने मनरूपी बगली ते तरफ दोड्या करे छे. पछी प्रभुनी, ते गंजीर तथा संसारथी तारनारी, तथा पवनविनाना दिवासरखी निष्कंप वाणीने मरुदेवा माताए सांजली. प्रभुनी ते वाणीने सांजलतां, आनंदाश्रुनां पाणीथी, मरुदेवा मातानां आंखनां पडलो, कादवनी पेठे नाश थयां. पछी तेणीए अत्यंत अतिशयवाली तीर्थंकरनी लक्ष्मीने जोइ, तथा ते जोवामां वापरेली स्थिरताथी तेणीनां कर्मो नाश पाम्यां. प्रभुनां दर्शन रूपी आनंदना योगमां स्थिरताने पामेलां मरुदेवा माताने तेज वखते निर्मल केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी तेज वखते आयुःकर्मनो क्षय थवाथी, अंतकृत केवलीपणाथी, मरुदेवा माता, हाथीपर बेठां बेठांज निर्वाण पाम्युं. आ अवसर्पिणिमां पेहेलां सिद्ध आज थयां छे, तेथी देवोए तेनां शरीरने, क्षीरसमुद्रमां नाखी मोक्षोत्सव कर्यो. पछी जाणेल छे तेमनो मोक्ष जेणें, एवो जरतराजा वादलांनी छाया तथा सूर्यना तापवाला शरत् कालनी पेठे, हर्ष अने शोकयुक्त थयो. पछी राजाए, राज्यचिह्नोने तजीने, पगें पाला, तथा परिवार सहित, समवसरणमां प्रवेश कर्यो त्यां तेणें, चार निकायना देवोथी विंटाएला, तथा दृष्टिरूपी चकोरने चंद्रसरखा, प्रभुने जोया. पछी त्रण प्रदक्षिणा दइने तथा प्रभुने नमीने मस्तकपर हाथ जोडी चक्री प्रभुनी स्तुति करवा लाग्यो के, हे सघला जगत्नां नाथ, जगतने अजयदान देनार, पेहेला तीर्थंकर, संसारथी तारनारा, तमो जय पामो ? वली हे अवसर्पिणीना लोकरूपी पद्मना समूहप्रत्ये सूर्यसमान, तमारा दर्शनथी मारो अज्ञानरूपी अंधकार नाश पाम्यो. वली हे नाथ, जव्यजीवोनां मनरूपी पाणीने निर्मल करनारी, कतकना चूर्ण सरखी तमारी वाणी जय पामे छे. करुणासिंधो! हे प्रभो!

जे माणसो तमारा शासनरूपी महारथपर चडे छे, तेउने लोकाग्र (मोक्ष) दूर नथी. वली हे प्रभु, ज्यां तमारुं दर्शन थाय छे, एवा आ संसारने पण हुं लोकाग्रथी सारो मानुं छुं (आ भक्तिवचन छे.) वली हे स्वामि, आ संसारमां पण तमारा दर्शनना आनंदमां मग्न थएलां आ चक्षुउ मोक्षसुखनो स्वाद अनुभवे छे. राग, द्वेष आदिक कषायोरूपी शत्रुउथी रुंधाई रहेलुं आ जगत्, अभयदान देनारा आपथीज छूटशे. वली आप पोतेज तत्व जणावो छो, मार्ग देखाडो छो, तथा जगतनुं रक्षण करो छो, माटे आपविना बीजानी कोनी स्तुति करुं ? एवी रीतें पृथ्वीईदें प्रभुनी स्तुति करीने कानरूपी अंजलिथी (प्रभुनी) देशनानी वाणीरूप अमृत पीधुं. पछी ते वखतें प्रभुए ऋषभसेनादिक चोराशी गणधरोने पोते दीक्षा दीधी. तथा पछी तेणें ब्राह्मीने, तथा भरतना पांचसो दिकरा, अने सातसो पौत्रो (पोत्रा)ने पण दीक्षा दीधी. एवी रीतें प्रभुना पुंडरीकादिक साधुउ, ब्राह्मी आदिक साध्वियो, श्रेयांसादिक श्रावको, तथा सुंदरी आदिक श्राविकाउ थई. एवी रीतें ते वखतें प्रभुए चतुर्विध संघ स्थाप्यो, तथा त्यारथी मांडी आज दिन सुधि तेज व्यवस्था चाली आवे छे. पछी प्रभुए पण भव्योने बोध देवा माटे परिवार सहित बीजी जगोए विहार कर्यो, अने भरत पण अयोध्याप्रत्ये गयो, तथा ऋषभप्रभुना वंशरूपी समुद्रप्रत्ये चंद्रसरखा, तथा देहधारी न्याय सरखा ते भरतराजाए विधिपूर्वक पृथ्वीनुं रक्षण कर्युं. तेने चोसठ हजार स्त्रियो हती, के, जेउनी रूपसंपदाप्रत्ये लक्ष्मियो तो दासीरूप रहेती हती. वली ज्यारे ते इंद्रनी साथे अर्धासनपर बेसतो, त्यारे तेउनो भेद नहीं जणावाथी, देवो पण नमस्कारना संशयमां पडता हता. प्रारंभ करेल छे, दिग्जय जेणें, एवो ते राजा, पूर्वदिशामां जेम सूर्य, तेम अन्य तेजोने जीतनारा तेजोथी जगतने दीपावतो थको, पूर्वदिशामां चाल्यो, मोजा रूपी हाथथी उछलतां परवालांउथी जाणे धन उडाडतो होय नहीं, एवा, तथा गंगाना संयोगथी मनोहर थएला पूर्वसमुद्रप्रति ते पहोंच्यो. त्यां मागधतीर्थना देवकुमारने मनमां चिंतविने, तेणें अर्थ सिद्धिना पेहेला द्वारसरखुं अठम तप कर्युं. पछी रथपर चडी, जलचरोने क्षोभावतो, ते महाबलवान् राजा, मंदराचलनी पेठे समुद्रमां गयो. तथा

रथने नाभिसुधि पाणीमां लइ जई, त्यांथी दूतनी पेठे बार योजन जोता पोताना नामथी अंकित थएल बाणने मागधप्रत्ये तेणें फेंक्युं. ते बाण पडवाथी मागधपति देव, विकट आटोपवाली भ्रुकुटीना भंगथी भयंकर थइ, कोप पाम्यो. पण ते बाणपर रहेला मंत्राक्षर सरखा, नामना अक्षरोने, जोइने ते नागकुमार अत्यंत शांत मनवालो थई गयो. प्रथम चक्री उत्पन्न थया छे, एम विचारि, देहधारि विजयज होय नहीं तेम भरतराजा पासे हाजर थयो. तथा तेनी पासे पोतानी फणापर रहेला मणिसरखुं ते बाण तेने आप्युं. (अने कह्युं के) पूर्व दिक्पाल एवो हुं तमारो चाकर छुं, माटे आपनो शो हुकम छे? (ते सांभली) भरतें पण तेने आदरमान आप्युं. जयस्तंभनी पेठे त्यां तेने स्थापिने, त्यांथी राजा पाछो वल्यो. पछी लश्करना भारथी पृथ्वीने पण क्षोभ करतो, तथा पर्वतोने पण चलायमान करतो ते राजा, दक्षिण सागर पासे आव्यो; तथा एलची, लवींग चारोली, तथा कंकोलथी भरेला तेना कांठाना प्रदेशमां तेणे पडाव नाख्यो. तथा तेजथी बीजा सूर्यसरखो तथा इंद्र जेवो पराक्रमी एवो ते राजा रथपर चड्यो. ते पछी उछलता मोजासरखा घोडाउथी रथनी नाभिसुधि ते पाणीमां गयो. त्यां वरदाम नामना देवप्रत्ये बाण चडावीनें, तेणें धनुर्वेदना उंकार सरखो दोरीनो टंकार कर्यो. तथा कानसुधि खेंचेला धनुष्पर, सोनाना कुंडलरूपी कमलनां नालसरखुं सोनानुं बाण तेणें चडाव्युं. पछी इंद्रसरखा तेणें ते नामवाला बाणने वरदामप्रति फेंक्युं. वरदामें ते बाणने लइ, भरतपासे आवी भेटणुं धर्युं, तथा कह्युं के, आजें आप अहीं पधार्या तेथी हुं धन्य छुं, तथा आजथी आप मारा स्वामी होवाथी हुं सनाथ थयो छुं. पछी भरतें तेने पोतानो करीने सैन्यथी पृथ्वीने कंपावता थका, पश्चिम दिशातरफ प्रयाण कर्युं. त्यां समुद्रमां आवी, प्रभासदेव तरफ, वीजली दंड सरखुं बाण तेणें फेंक्युं. जो तने जीववानी इछा होय तो दंड आप? तथा आज्ञा मान?” एवा अक्षरो तेणें (प्रभासदेवें) ते बाणपर जोया. पछी ते पण मनोहर तथा अद्भुत भेटो एकठी करीने, तथा ते बाण लइने भरतने खुशी करवामाटे त्यां आव्यो. अने बरफसरखा सफेद (मोतीना) हारो, ते जाणे पोताना घणा कालथी एकठा करेला यशोना

[illegible]नेज होय नहीं, तेम तेणें जरतने आप्या. जेनी आगल कौस्तुजमणि पण पत्थर सरखो ठे, एवा मणीउ तेणे राजाने आप्या. वली पोताना मूर्त्तिमंत तेजसरखा, कडां, कंदोरो, चूडामणि तथा मुकुट, अने सिक्काउ पण तेणें राजाने आप्या. एवी रीतें ते जक्तिवंत तथा निष्कपटी देवथी खुशी थएल जरतराजा उत्तरद्धारनी डेलीसरखी सिंधुनदीप्रत्ये गयो. त्यां सिंधुदेवीनां देवलपासे, तेणें पडाव नाखी, तेणीने उद्देशीनें, अठम तप कर्युं. पठी ते सिंधुदेवीए चक्रीने आवेला जाणी, तेनी पासे आवी मनोहर जेटोथी तेनी पूजा करी. पठी सेवा करती एवी तेणीने रजा आपीने, पारणुं करी, तेणीने उद्देशी राजाए अठाइ महोत्सव कर्यो. पठी चक्रनी पठाडी जतो ते राजा, ईशान खुणमां रहेला, तथा जाणे जरतोने जुटा पाडता वैताढ्यप्रत्ये पहोच्यो. त्यां तलेटीमां तंबुउ ठोकीनें, वैताढ्य कुमारने उद्देशीने तेणें अठम तप कर्युं. ते अवधिज्ञानथी जाणीने, दिव्य जेटो सहित राजापासे आव्यो, तथा सेवा करवा लाग्यो. पठी तेने रजा आपीने, राजाए अठमनुं पारणुं कर्युं, तथा तेने नामें विधिपूर्वक अठाइ महोत्सव कर्यो. पठी सूर्यसरखा तेजवालो ते राजा, तमिस्रा नामनी गुफाप्रत्ये गयो, तथा त्यां नजदीकमां तेणे पडाव नाख्यो. तथा त्यां कृतमाल नामना देवने उद्देशीनें तेणें अठम तप कर्युं, तथा ते पण आसन कंपवाथी राजापासे आवी, तेमनी सेवा करवा लाग्यो तेने पण रजा आपी राजाए अठमनुं पारणुं करी, तेना नामथी अठाइ महोत्सवकर्यो. पठी जरत राजाना हुकमथी सुषेण सेनापतियें, चर्मरत्नथी सिंधु उतरीनें सिंधुनो दक्षिण निष्कुट साध्यो, तथा त्यांथी म्लेछो पासेथी कर लइ, पाठो चर्मरत्नथी सिंधुने उतरी जरतपासे ते आव्यो. पठी जरतें सुषेणने वैताढ्यमां रहेली वज्र सरखा कमाडोवाली तमिस्रा गुफाने उघाडवा हुकम कर्यो. पठी सुषेण पण स्वामिनी ते आज्ञाने शेषानी पेठे मस्तकपर चडावतो थको, तमिस्रा गुफानी नजदिक आव्यो. तेना अधिष्ठायक कृतमाल नामना देवनुं स्मरण करीने शुद्धबुद्धिथी ते अठम करी पौषधशालमां रह्यो, पठी अठमने पारणे स्नान करी, बहार, अने अंदरथी पवित्र थइ, तेणे पवित्र वस्त्र तथा विविध आजूषणो पेहेर्या; तथा होमकुंड सरखा, बलता अग्निवाला धूपधाणामां स्वार्थ साधना-

री आहुति सरखी, धूपनी मूठीउं तेणे नाखी, पछी त्यांथी ते अंदरना द्वार सरखा, ते गुफाना द्वारने एकदम उघाडवा गयो. तेज वखते सेना देख-तांज ते कमाडो उघडी गयां; पछी तेणें ते गुफाना द्वारपासे आठ मंगल चितरीने पोतानी मोटाइने उचित अठाइ महोत्सव कर्यो. पछी ते सेना-पतियें इंद्रनी पेठे, वज्रसरखा, तथा सघला शत्रुउंनो नाशकरनारा दंड-रत्नने ग्रहण कर्युं. तथा वक्र ग्रहनी पेठे केटलांक पगलां पाछां हठीने तेणें ते दंडरत्नथी ते द्वारपर त्रण फटका मार्या, अने तेथी, वज्रथी जेम पर्वतोनी पांखो, तेम तडतड अवाज करतां थकां कमाडो तुटी पड्यां. पछी ते गुफाना द्वारसरखा विकस्वर मुखवालो सुषेण, जरतपासे आइ कहेवा लग्यो के, हे स्वामि, अति तपथी यतिने जेम मोक्षनुं द्वार तेम तमारा प्रजावथी ते गुफानुं द्वार खुल्लुं थयुं ठे. (ते सांजली) जरत राजा, इंद्र जेम ऐरावणपर, तेम गंधहस्तीपर बेसीने ते गुफाने बारणे आव्यो. ते वखते तेणें पूर्वाचलपर जेम सूर्यने, तेम हाथीना जमणा कुंजस्थलपर अंधकार मटाडवाने मणिरत्न राख्युं. पछी पाठल गयेलुं ठे सैन्य जेनुं, एवो ते राजा, चक्रनी पाठल चालतो थको, मेष राशिमां जेम सूर्य तेम गुफामां ते दाखल थयो. त्यां बन्ने बाजुए काकिणी रत्नथी तेणें, एक योजन सुधि गोमुत्रिकाने आकारें मांडलां पाड्यां. एवी रीतें ते काकिणी रत्नोथी करेलां उगणपचास मांडलांथी तेनी सेनायें सूर्यना तेजनुं सुख जोगव्युं. पछी राजाए त्यां (गुफामां) उन्निम्नगा अने निम्नगा नामें बे नदीउं जोइ, के जेमांथी एकमां पत्थर पण तरे ठे, अने बीजीमां तरणुं पण बुडी जाय ठे. अति दुस्तर एवी पण ते नदीमां, नेहेरनी पेठे, वार्धकिए पावडियो बनावी ते पावडियोयें करीने, राजा, मेघमंडलथी जेम सूर्य, तेम ते गु-फामांथी बहार निकल्यो, तथा त्यां तेणें उत्तर जरतखंडमां प्रवेश कर्यो, अने दानवो साथे जेम इंद्र, तेम त्यां तेणें म्लेछो साथे लडाइ करी. ते म्लेछोने राजाए जीतवाथी, तेउए पाठी जीत मेलववामाटे मेघकुमार आदिक देवोनी आराधना करी. ते देवो कल्पांत कालनी पेठे मुशलधाराथी जयंकर वर्षाद वरषाववा लाग्या. ते वखते चक्रवर्त्तियें बार योजनना विस्तारवालुं चर्मरत्न नीचेधारण कर्युं, तथा उपर तेटलाज विस्तारनुं छत्र रत्न धारण करी अंदर पोतानी सेनाने राखी. वली तेणें अंधकारनो नाश करवा माटे छत्रदंडपर,

पूर्वाचलपर जेम सूर्यने, तेम तेणें (छत्रदंडपर) मणिरत्न राख्युं. ते बन्ने रत्नोनुं संपुट (विजलीनी वेल) सरखुं देखावा लाग्युं, अने त्यारथी लोकमां पण ब्रह्मांडनी कल्पना थई. वली ग्रहपति, आगले पहोरें वावेला, अने पाछले पहोरें पाकेला चोखाने दरेक आवास प्रत्ये पूरवा लाग्यो. पछी ते मेघकुमारोए एक वर्षसुधी वरसीने, थाकी जई म्लेछोने कह्युं के, आ तो चक्रवर्त्ती छे, अमाराथी जिताय तेम नथी. एवी रीतें निराश थयेला ते म्लेछो भरतने शरणे गया, कारण के, अग्निथी बलेलाओने अग्निज औषध छे. पछी ते सेनापतियें भरत राजाना हुकमथी योगी जेम, संसारने, तेम सिंधुनो उत्तर निष्कुट (देश) जित्यो. पछी हाथीनी पेठे लीलाथी चालतो ते राजा केटलेक प्रयाणे (मजले) हिमाद्रिनी दक्षिण तलाटी पासे पहोंच्यो. त्यां तेणें क्षुद्रहिमवंत कुमारने उद्देशीने, कार्यसिद्धिना प्रथम मंगल सरखुं अठम तप कर्युं. ते अठमने अंते हिमवंत पर जई तेणें त्रण वार ताडना करी, तथा पोताना नामवालुं बाण, ते पर्वतनां मस्तकपर बहोतेर योजनसुधि तेणे फेंक्युं. ते बाण जोई ते हिमवंत कुमारें पण तुरत भरत पासे आवी, मुकुटनी पेठे तेनी आज्ञाने मस्तकें चडावी. पछी भरत राजाए त्यांथी ऋषभकूट पर्वतपर जइने, ऐरावण जेम दांतथी पर्वतने, तेम तेने त्रणवार ताडना करी. तथा त्यां मध्यभागमां तेणें काकिणी रत्नथी एवा अक्षरो लख्या के, “ आ अवसर्पिणीमां त्रीजा आराने छेडे हुं भरत नामें चक्री थएलो छुं. ” पछी त्यांथी पाछा वली, छावणीमां आवी तेणें अठमनुं पारणुं कर्युं. पछी राजाए ते क्षुद्रहिमवंत कुमारने उद्देशीने, पोतानी संपदाप्रमाणे अट्ठाई महोत्सव कर्यो. पछी ते पोताना अत्यंत लश्करथी, गंगा अने सिंधुनी वच्चेना प्रदेशने एकठो करतो थको, चक्रनी पछाडी चालतो थको, पाछो वल्यो, तथा वैताढ्य पर्वतना नितंबने पामीने, तेणें त्यां पडाव नाख्यो, तथा त्यां तेणें नमि विनमि नामना विद्याधरो प्रत्ये, दंड लेवा माटे बाण फेंक्युं. ते दंडना याचवाथी कोप, पामेला ते विद्याधरो लडवावास्ते विद्याधरोना लश्करसहित त्यां आव्या. ते वखते, मणिओनां विमानोथी घणा सूर्यवाला, तथा चलकता हथियारोथी वीजलीमय, तथा घणा डुंडुभिना अवाजोथी मेघनी गर्जनामय, आकाशने करता, एवा विद्याधरना

लश्करने ते जरतें जोयुं. पढी ते विद्याधरो जरतने कहेवा लाग्या के, तारे अमारी पासेथी शुं दंड लेवो ढे? एम कही तेउंए विद्याना मदथी रणसंग्राममाटे बोलाव्यो. पढी जरत पण सैन्यसहित तेउंनी साथे, जुदी जुदी रीतें, तथा एकी वखते पण बार वर्षोसुधी लड्यो, अने ज्यारे तेउंने जीत्या, त्यारे तेउं हाथ जोडीकहेवा लाग्या के, सूर्यथी वधारे तेज कयुं ढे? पवनथी वधारे वेगवालो कोण ढे? मोक्षथी वधारे सुख शुं ढे? तेवी रीतें तमाराथी वधारे बलवान् पण कोण ढे? वली हे जरत, तमोने जो- याथी, अमोए साक्षात् ऋषजदेव प्रजुने जोया ढे, अज्ञानताथी तमारी- साथे अमोयें युद्ध करेलुं ढे, माटे ते तमो क्षमा करो? वली तमारो हु- कम पण मुकुटनी पेठे अमारा मस्तकपर ढे, तेम जंडार, शरीर, तथा ढोकरांउं सर्वे तमारांज ढे. एवी रीतें जक्तिनां वचनो कहीने जरतने विनमिए स्त्रीरत्न, तथा नमिए रत्नोनो समूह आप्यो. पढी राजाए तेउंने रजा आपवाबाद विरक्त थइ तेउंए, पोताना पुत्रोने राज्य आपी, ऋष- जदेवें प्रजुपासे जइ दीक्षा लीधी. पढी त्यांथी चक्रनी पाढल चालतो ते राजा गंगाना कांठापासे आव्यो, तथा तथा त्यां सुषेणें गंगानो उत्तर प्रदेश जीत्यो, कारण के, महात्माउंने शुं असाध्य ढे? वली त्यां राजाए पण अठम करीने गंगा देवीनी साधना करी, तेथी तेपण त्यां आवीने, देवने लायक एवी जेटोथी राजाने खुशी करवा लागी. पढी राजाए क- मलोना सुगंधथी मनोहर थएला गंगाना कांठापर पोतानो पडाव नाख्यो. त्यां रूप अने लावण्यथी जेणें कामदेवने दासरूप करेल ढे एवा जरतने जोइ गंगानुं मन क्षोज पाम्युं. जाणे, तेणिना मुखरूपी चंद्रमानी पाढल, ताराउंज आवेला होय नहीं, एवा मोतीउंनां आजूषणोथी सघले अंगें शो- जती वली केलना गर्जनी त्वचा सरखां निर्मल अने कोमल वस्त्रोने धा- रण करती, तथा रोमांचित थयेला अने पुष्ट उपडेला स्तनोथी जेणीनो कसकसतो कंचुउं जाणे फाटीजतो होय नहि एवी गंगा कटाक्षो मारती थकी त्यां जरतपासे आवी पहोंची तथा ते, ए जरतनी साथे विलास करवानी इछाथी, प्रेम सहित वचनो बोली; तेने पोताना स्थानमां तेडी गइ. ते- णीनी साथे, जोग जोगवतां थकां राजाए एक दिवसनी पेठे हजार वर्षो गाल्यां. पढी त्यांथी अखंड पराक्रमी राजा, हाथी जेम एक वनमांथी बीजा

वनमां जाय, तेम, ते खंडप्रतापनामें गुफाप्रत्ये पहोच्यो. त्यां तेणें अक्रम करीने कृतमालनी पेठे नाट्यमालने साध्यो, तथा तेने निमित्तें तेणें त्यां अगाइ महोत्सव कर्यो. पछी सुषेणें उघाड्यां छे, द्वार जेनां एवी ते गुफामां ते पेठो, तथा तेनुं दक्षिण द्वार तो पोतानी मेळेज उघडी गयुं. पछी तेमांथी जेम गुफामांथी सिंह, तेम राजा बार निकळ्यो, तथा त्यां गंगाना पश्चिम किनारापर तेणें पडाव नाख्यो. तथा त्यां नागकुमारोथी अधिष्ठित थयेला नवे निधियो तेनी पासे हाजर थइ, तेने कहेवा लाग्या के अमो गंगाना मुखपर रहेला मागधमां रहेनारा छियें; तथा तमारा जाग्योथी वश थइने, तमारी पासे आवेला छियें, तथा तमारि इछा प्रमाणे अमारो तमो उपयोग करो? अने दान दीउं? वळी कदाच समुद्रक्षय पामे, पण अमो तो क्षय पामीयेंज नहीं, हे देव; तमारा चाकर सरखा नव हजार यक्षोथी हमेशां संपूर्ण थतां, आठ चक्रोथी प्रतिष्ठित थयेला, तथा बार योजन लांबा अने नव योजन विस्तारवाला, एवा अमो, तमारी हजुर रहीने जमीननी अंदर चाल्या करशुं. पछी ते सुषेण सेनापति पण, प्रचंड पवन जेम मोटा वनने तेम गंगाना दक्षिण प्रदेशने नाश करीने त्यां आवी पहोंच्यो. एवी रीतें साठ हजार वर्षोमां छ खंड पृथ्वीने जीतीने ते जरत चक्रवर्त्ती अयोध्यामां आव्या. पछी त्यां राजाउए बार वर्षसूधि तेनो चक्रवर्त्तिपणानो अजिषेक कर्यो. पछी पोताना कुटुंबनी सालसंजाल करतां तेणे सुंदरीने डुबली जोइ, अने तेथी ते गुस्से थयो अने रसोइयाउने कहेवा लाग्यो के, अरे! शुं मारा घरमां खावा मलतुं नथी? के, जेथी आ सुंदरी फक्त हाडपिंजर सरखीज केम रही छे? त्यारे तेउए कह्युं के, हे, स्वामि, ज्यारथी आप दिग्यात्रा करवा गया छो, त्यारथी तेणीए आंबेल तप आदर्युं छे.

एटलामां ऋषजदेव प्रजु पण पृथ्वीपर विहार करता थका अष्टापद पर्वतपर समोसर्या हता; तेमने वांदवावास्ते जरत त्यां आव्या, अने तेज वखते देशना सांजली सुंदरीए दीक्षा लीधी. हवे ते महोत्सवमां (अजिषेकनामोत्सवमां) नहीं आवेला जाइउं प्रत्ये जरत राजाए एकेको दूत मोकल्यो हतो. ते दूतोए तेमने कह्युं के, जो आपने राज्यनी इछा होय तो, जरतने आवी सेवो? ते सांजली तेउए विचार करी कह्युं के,

पिताजीए अमोने अने जरतने पण राज्य वेंहेंची आप्युं छे, माटे हवे अमो जो जरतनी सेवा करीयें, तो ते अमोने वधारे शुं करी आपशे? वली शुं ?!! ते अवसरें आवता कालने रोकी राखशे? अथवा शरीरने नाश करनारी जरा रूपी राक्षसीने शुं ते मारी हठावशे? अथवा दुःख देनारा रोगो रूपी पाराधिनो शुं ते नाश करशे? अथवा अनुक्रमें वृद्धि पामती तृष्णानो ते शुं नाश करशे? एवी रीतनुं सेवानुं फल जो, ते जरत अमोने देवा समर्थ न होय, तो सर्व सामान्य माणसोमां कोण कोनी सेवा करे? वली ते मोटा राज्यवालो छे, छतां पण असंतोष राखी अमारां राज्य लेवाने इछे छे, तो जेम ते जे तातनो छे, तेज तातना अमो पण पुत्रो छियें. वली हे दूत पिताजीनी अवज्ञा करीने, आ मोटा जाइनी साथे लडवाने पण अमो राजी नथी. एम दूतने कही तेउंए ऋषजस्वामिपासे आवी तेमने जरतें कहेवरावेला संदेशानुं वृत्तांत कही संजलाव्युं. त्यारे निर्मल केवलज्ञानरूपी आरिसामां संक्रमण करेल छे जगत् जेणें, एवा दयालु प्रजु पण तेमने कहेवा लाग्या के, अनेक योनियोमां पाडनारी तथा अनंत बाधाना कारणरूप एवी आ राज्यलक्ष्मी अजिमानरूपी फलवाली छे, अने अंतें ते पण नाश थवावाली छे. वली देवलोकनां सुखोथी पण तमारी तृष्णा पूर्वे जवोमां मटी नथी, माटे ते तृष्णा अंगारकारकनी पेठे मनुष्य संबंधि जोगोथी ते केम त्रुटी शके? कोइएक अंगारा (कोलसा) करनारो माणस, पाणी विनाना जंगलमां कोलसा करवामाटे पाणीनी मशक लइने गयो. ते त्यां अंगाराना अग्निना तापथी, तथा सूर्यना तापथी, अत्यंत तृषातुर थवाथी मशक माहेलुं सघलुं पाणी पी गयो. तेथी पण तेनी तृषा नहीं मटवाथी, ते त्यां उंघी गयो, अने स्वप्नामां घेर जइ, त्यां रहेला वासणोमांथी पाणी पी गयो. ते पाणीथी पण ज्यारे तेनी तृषा गइ नहीं, त्यारें तेणें पाणी पी पीनें वाव, कुवा, तथा तलावो सूकावी नाख्यां. तेथी पण नहीं धराइने तेणें नदीउं तथा समुद्रो पण पाणी पी पीने खाली कर्या, पण नारकीनी वेदनानी पेठे तेनी तृषा मटी नहीं. पछी त्यांथी ते मारवाडना कुवापासे गयो, तथा त्यां दोरीथी घासनो पूलो बांधी, पाणीमाटे तेमां नाख्यो, कारण के, पीडित माणस शुं करतो नथी? ते कुवामां पाणी उंडु होवाथी, खेंचतां

खेंचतां ते पुलामांथी पाणी गली गयुं हतुं, तो पण तेने नीचोवी नीचो-वीने ते पीवा लाग्यो. एवी रीतें समुद्र आदिकथी पण ज्यारें तेनी तृषा छीपी नहीं, त्यारें ते पूलाना पाणीथी ते शी रीतें छीपे? अने तेवीज रीतें ज्यारें तमारी तृष्णा पण देवलोक आदिकना सुखोथी छीपी नहीं, त्यारे आ राज्यलक्ष्मीथी ते शी रीतें छीपी शके? माटे हे पुत्रो, अत्यंत आ-नंदने देनारा मोक्ष मेलववाना कारणरूप, संयमरूपी राज्य तमो विवे-कियोने मेलववुं लायक छे. एवी रीतनी प्रभुनी वाणीथी तत्काल वैराग्य पामी ते अठाणुं पुत्रोए तेमनी पासे दीक्षा लीधी. "अहो एमनी धी-रज!! सत्व, तथा वैराग्यबुद्धि केवां छे?" एम कहेता दूतोए, ते सघलो वृत्तांत राजाने जइ कह्यो. ते सांजली जरतें पण तेउनां राज्यो जप्त कर्यां; एवी रीतें लाजथी लोज वध्यो, कारण के, राज्यधर्म तेवोज होय छे.

हवे सेनापतिए राजाने आवी कह्युं के, हे स्वामि! हजु (आपणुं) चक्र आयुधशालामां प्रवेश करतुं नथी; माटे एम जणाय छे के दिग्वि-जय करतां छतां पण कोइक राजा हजु आज्ञा मान्या विनानो रह्यो छे. त्यारे जरतें कह्युं के, अहो!!! हवे खबर पडी के, लोकोत्तर परा-क्रमवालो, तथा बलवान् एवो अमारो जाइ बाहुबली जीताया विना-हजु रहेलो छे.

हवे एक बाजुथी सघला देव, दानव, तथा मनुष्यो एकठा मले, तो पण बाहुलिनी सामे तेउ आवी शके नहीं, वली एक बाजुथी जोउं छुं, तो चक्र आयुधशालामां दाखल थतुं नथी, अने बीजी बाजुथी बाहु-बली आज्ञा मानतो नथी, माटे हुं तो संकटमां पड्यो छुं. वली शुं? आ बाहुवली कोइनी पण आज्ञा माने तेम छे? कारण के, केसरी सिंह शुं कोइनुं पण वाहन खमी शके? एम विचारता ते जरत राजाने सेनापति सुषेणें आवी कह्युं के, हे स्वामि, तमारा बल आगल तो आ त्रणे लो-क एक तृण समान छे.

पछी राजाए, पोताना उरमान नाना जाइ बाहुबलि प्रत्ये, तक्षशिला नगरीमां दूतने मोकल्यो त्यां पर्वतनां शिखरपर जेम सिंहने, तेम उंचा सिंहासनपर बेठेला बाहुबलिने दूत युक्तिवालां वचन कहेवा लाग्यो के, जेनो मोटो जाइ जगतने जीतनारो, तथा अत्यंत लोकोत्तर पराक्रमी,

अने ठ खंड जरतनो धणी ठे, एवो तुं वखाणवा लायक ठे. वली तमारा जाइना चक्रवर्त्तिपणाना अजिषेक वखते, हाथमां मांगलिक जेटणां लइने कया कया राजाउं आव्या नहीं? अर्थात् सर्वे आव्या हता. वली सूर्यनो उदय जेम कमलवनप्रत्ये, तेम जरतनो उदय पण तमारी शोजा माटे ठे, तो पण तमो ते वखतें आव्या नहीं; अने तेथी आपना न आववानुं कारण जाणवामाटे मने अहीं जरतें मोकलेलो ठे. वली तमो तो त्यारे सरलपणाथी आवेला नहीं हो, पण कोइ माणस वली जरतराजाने आपना विषे कंइ खोटुं समजावशे, कारण के, खल माणसो तो ठिद्र जोनारा होय ठे. माटे तेवी चुगलखोरोनी युक्ति नाश करवामाटे आपने त्यां आववुं लायक ठे. कारण के, स्वामिनी सेवा करवामां लज्जा केवी? वली हुं तो तेनो जाइ ठुं, एम विचारि तमो न आव्या हो, ते पण ठीक नहीं, कारण के, हुकम मनावनारा राजाउं कंइ संबंधिनी परवा राखता नथी.

वली लोहचुंबकथी जेम लोखंड, तेम जरतना तेजथी खेंचाएला, देव, दानव, अने मनुष्यो पण तेनीज सेवा करे ठे. वली जेने इंद्र पण पोतानुं अरधुं आसन अपी मित्र तरिके वर्त्ते ठे, माटे तेवा जरतनी तमो सेवा करी मेहेरबानी केम मेलवता नथी? वली कदाच वीरपणाना मानथी, तुं तेनी अवगणना करतो होइश, तो तेना सैन्य आगल तुं पोते सैन्यसहित समुद्रमां साथवानी (थुलांनी) मूठी बराबर ठे. वली तेनी पासे ऐरावणसरखा चोराशी लाख हाथीउंठे, तेउंने जंगम पर्वतोनी पेठे कोण अटकावी शके तेम ठे? वली तेना तेटलीज संख्याना घोडाउं अने रथो ठे, तो ते सघलाउंने कल्पांत कालना समुद्रना मोजाउंनी पेठे अटकाववाने कोण समर्थ ठे? वली ते क्रोड गामोना स्वामिना ठन्नु क्रोड पालाउं सिंहोनी पेठे कोने त्रास आपी शके तेम नथी? वली हाथमां दंड धरनारा तेना एकज सुषेण नामना सेनापतिने यमनी पेठे देव दानवोमांथी पण कोण अटकावी शके तेम ठे? वली अमोघ चक्रने धारण करता तेवा चक्रिनी आगल, आ त्रण जगत् पण, सूर्यनी आगल अंधकारनी पेठे, कंइ हिसाबमां नथी. वली हे बाहुबली, ते उत्तम राजा, तेज अने उमर, बन्नेथी मोटो ठे, माटे जो तारे जीवितनी इछा होय, तो तेने सेववो जोइयें हवे बाहुना बलथी दूर करेल ठे जगतनुं बल जेणें, एवो

बाहुबली ज्रृकुटी चडावी समुद्र सरखा शब्दथी बोलवा लाग्यो के, हे दूत, तें अमोने क्षोजावनारां युक्त वचनो कहेलां छे, कारण के, दूतो तो स्वामिना कहेवा प्रमाणेज बोलनाराउं होय छे. हे दूत, सुर असुर तथा नरोथी पूजनीय महापराक्रमी एवा पिताजी मारी प्रशंसाना हेतु नहीं, अने तेनो हेतु तें आ जरतने तो नवोज जणाव्यो!!! वली जेनो आ बलवान् बाहुबली जाइ न होत, तो तेनी पासे राजाउं आवीने सेवा करत नहि वली अमो बन्ने वच्चे, सूर्य अने कमलनी पेठे छेटेथी पण अत्यंत प्रीति छे. वली ते जाइना मनमां अमो हमेशां वसियेज छियें, माटे त्यां जवाथी वधारे शुं छे? कारणके अमो बन्ने वच्चे स्वाजाविकज प्रीतिछे. वली अमो सरलपणाथी त्यां नहीं आव्या, ते पण सत्य छे, पण तेमां जरतनी साथे कुटिलता शानी छे? वली विचारिने काम करनारा सत्पुरुषो खल पुरुषोनां वचनोथी कंइ जंजेराता नथी. वली अमारा बन्नेना एकज जयवंता क्रुषजदेव प्रज्ञु स्वामी छे, अने ते स्वामी छतां वली मारो बीजो स्वामी शीरीतें थइ शके? वली देव दानवोनी सेवाथी ते खुशी थयो छे, तोपण मारे अने एने शुं लागे वलगे छे? वली इंद्र पण पिताजीनो जक्त होवाथी तेमना मोटा पुत्रने पोताना अरधा आसनपर बेसाडे छे, अने तेथी शुं तेने अहंकार आवेलो छे? वली समुद्रसरखा तेना सैन्यमां थुलांनी मुठि सरखा सैन्यवालाउं तो बीजा राजा, हुं तो तेमां वडवानल सरखो छुं. वली जेम सूर्यना तेजमां बीजां तेजो, तेम तेना (जरतना) पाला, घोडा, रथ तथा हाथी अने सेनापति सघला मारा आववाथी क्षय पामशे. माटे हे दूत, तुं जा अने जरतने कहे के, जो तमारे राज्य जीवितनी इछा होय,तो तमो लडवा आवो? में तो पिताए दीधेला जागथी संतुष्ट थइने तेनी पृथ्वीनी उपेक्षा करी छे. पछी तत्क्षण दूतें आवी ते समाचार कह्याथी जरत राजा बाहुबली साथे लडवाने चाल्यो. पछी वर्षा क्रुतु वादलांउथी जेम आकाशने, तेम सैन्यथी पृथ्वीने ढांकतो बाहुबली पण तेनी सामा आव्यो. पछी महासुजटोरूपी छे जलचरो जेमां,एवां ते बन्ने लश्करनो, एक बीजाना अफलाता हथियारोरूपी मोजावालो जयानक जेटो थयो. ते वखतें लश्करीउनो, आमंत्रित छे, यम जेमां, एवो जाले जालांथी, तथा बाणे बाणोथी मोटो रणसंग्राम

थयो. पढी महाबलवान् बाहुबलि, लश्करीठंने रूना पुंजडांनी पेठे दूर करी. अगाडी आवीने जरतने कहेवा लग्यो के, फोकट पापो देनारा, हाथी घोडा अने पायदलना नाशथी शुं थावानुं ठे? माटे जो तुं समर्थ होय, तो एकलो मारी पोतानी साथे तुं लड? एवी रीतें बन्नेये द्वंद्व युद्धनी प्रतिज्ञा करी, लश्करीठंने लडता अटकाववाथी, तेठं (लश्करीठं) सा, क्षिनी पेठे जोता ठजा. पढी तेठंए दृष्टि युद्धनो प्रारंज करवाथी, निमेष रहित लोचनवाला थावाथी देवोए पण तेमने पोतातुल्य जाण्या. पढी देवोनी साक्षीए बाहुबलिए जरतने जीतवाथी, तेठंए वाग्युद्ध (संवादरूप संग्राम) नो प्रारंज कर्यो. तेमां पण जरतनी हार थवाथी, तेठंए जुजा युद्धनो प्रारंज कर्यो. ते युद्धमां बाहुबलिना स्थिर हाथपर ज्यारे जरत लटकता वांदरासरखो देखावा लाग्यो. पढी महाबलवान् जरतना बाहुने बाहुबलिए तो पोताना एक हाथथीज नमावी नाखी पढी मुष्टियुद्ध करता जरतनी मुष्टिठं, कांठापर रहेला पर्वतपर जेम समुद्रना मोजा तेम बाहुबलिपर पडवा लागी. पढी पोतानी वज्रसरखी मुष्टि जरतने मारवाथी, ते, तेनां लश्करीठंनां आंसुनी साथेज पृथ्वीपर पड्यो. पढी मूर्छा उतर्याबाद जरतें अहंकार लावी दंडघातथी बाहुबलीने, हाथी जेम दांतोथी पर्वतने, तेम मार्यो. पढी बाहुबलीए जरतने दंडघात करवाथी, जरत खोडेला खीलानी पेठे, घुंटणसुधि जमीनमां पेसी गयो. त्यारे जरतें विचार्युं के, शुं आ चक्रवर्ती ठे? एम विचार करी, जेवुं चक्रनुं स्मरण कर्युं के, तुरत चक्र तेना हाथमां आव्युं. पढी जरतें जमीनमांथी निकली, क्रोधथी लश्करनो हाहाकार थते ठते, ते चलकता चक्रने फेंक्युं. ते चक्र बाहुबलीने प्रदक्षिणा दई पाढुं फर्युं, कारण के, देवताधिष्ठित शस्त्रो स्वगोत्रीपर चाली शकतां नथी. एवी रीतें जरतने शरतथी विपरीत चालतो जोइ क्रोधथी लाल आंखोवाला थइ, बाहुबलिए, "जरतने चक्रसहित चूर्ण करी नाखुं" एवुं विचारि पोतानी मूठी ठंची करी पण पाढुं मनमां विचार्युं, के, जे कषायें करी आ जाइनो पण वध करवाने हुं तत्पर थयो ढुं, तेज कषायोने हुं, इंद्रियोना समूहने जीती नाश करूं एवी रीतें वैराग्य थवाथी, तेज मुष्टिथी पोताना केशनो लोच करी तेणें सामायिक अंगीकार कर्युं. (ते जोइ) "साधु," साधु," एम शब्द करता देवोए बाहुबलिपर

पुष्पवृष्टि करी. पछी बाहुबलिए विचार्युं के, आ वखते प्रजुपासे जइने, ज्ञानना अतिशयोथी युक्त एवा मारा नाना जाइउने केम वंदन करूं? माटे ज्यारे केवलज्ञान थशे, त्यारे प्रजुनी सजामां जइश, एम विचारि त्यांज मौनयुक्त प्रतिमाथी रह्या. पछी जरतें तेवी रीतना बाहुबलिने जोइने, तथा पोताना कुकर्मनो विचार करीने, जाणे पृथ्वीमां समाइ जवानीज इछा करता होय नहीं तेम नीचुं मुखकरी रह्या. पछी देहधारी शांत रस सरखा पोताना जाइने तेणें नमस्कार कर्यो, अने जाणे बाकी रहेला क्रोध नेज तजतो होय नहीं, तेम तेणें अश्रुजल पाडवा मांड्युं. पछी नमस्कार करतो जरत तेना (बाहुबलिना) नखरूपी आरिसामां प्रतिबिंबित थवाथी, तेनी सेवावास्ते जाणे बहुरूपी थयो होय नहीं, तेम शोजतो हतो. पछी ते बाहुबलि मुनिना गुणोनी स्तवनापूर्वक, पोताना अपवादरूपी रोगने औषधिसमान आत्मनिंदा करवा लाग्यो, हे मुनि, तुं धन्य छे, के जेणें मारी अनुकंपाथी राज्यनो त्याग कर्यो, अने हुं तो पापी छुं के जेणें असंतोषी तथा अहंकारी थइ, तने दुःख दीधुं. वली जेउ पोतानी शक्ति जाणता नथी, तथा जेउ अन्याय करे छे, तथा जेउ लोजथी जीताएला छे, तेउनो पण हुं सरदार छुं. जेउ राज्यने जवरूपी वृक्षना बीजसरखुं जाणता नथी, तेउ अधम छे, पण हुं तो तेउनाथी पण अधम छुं, के जे जाणतां छतां पण तेने छोडतो नथी. वली तुंज खरेखरो तातनो पुत्र छे, के जे पिताने रस्तेज चाल्यो, अने हुं पण ज्यारे ताराजेवोथउं त्यारेज तातनो खरो पुत्र कहेवाउं. एवी रीतें पश्चात्तापरूपी जलथी विषादरूपी कादवने धोइ नाखी जरतें तेना पुत्र सोमयशाने, तेनी गादीपर बेसाड्यो. त्यारथी सो शाखावालो सोमवंश चालु थयो, तथा तेमां अनेक पुरुषरत्नो थयां. पछी जरत राजा बाहुबलिने नमस्कार करी परिवार सहित, पोतानी राज्यलक्ष्मीनी बेनपणी सरखी अयोध्या नगरीमां गयो. पछी दुस्तप तप तपतां थकां बाहुबलिने एक वर्ष वीती गयुं. पछी महाज्ञानी श्री ऋषजदेव प्रजुए अनुज्ञा आपवाथी ब्राह्मी अने सुंदरी तेनी पासे गइ; तथा तेने कहेवा लागी के, हे महासत्व; सुवर्ण तथा पत्थर जेने सरखां छे, तथा संगरहित एवा तमोने हस्तिस्कंधपर चडवुं लायक नथी अने आवी रीतें रहेवाथी आपने ज्ञान शी रीतें थइ शके? कारण के, जे वृक्षना मूलमां करीषनो (छाणनो)

अग्नि रहेलो छे, ते वृक्ष शी रीतें नवपल्लव थइ शके? माटे तमो पोतेज विचार करी, लोखंडना नाव सरखा आ हस्तिस्कंधथी उतरी जवसमुद्रने तरवाने इछो? (ते सांजली) बाहुबलि मुनीश्वरें विचार्युं के, वृक्षपर चडेली वल्लीनी पेठे मारा शरीरने वली हस्तिनो संगम शी रीतें छे? वली कदाच समुद्र पोतानी मर्यादा छोडे, पर्वतो चलायमान थाय, तोपण, आ प्रजुनी शिष्य एवी ब्राह्मी तथा सुंदरी कोइ वखते पण जूठुं बोले नहीं.!!! अरे!!! हवे याद आव्युं! मारीपासे मानरूपी मदोन्मत्त तो खडोज रह्यो छे, अने तेणेज ज्ञानरूपी फलवाला विनयरूपी मारा वृक्षने जांगी नाख्युंछे. धिक्कार छे, मारा आ विचारने!!! के हुं नानाजाइउने केम वंदन करूं? तपथी मोटा एवा तेउप्रत्ये हु मिथ्यादुःकृत दउं छुं. माटे हवे सुर असुरोथी, नमाएला प्रजुपासे जइ, ते नाना जाइउने तेउना शिष्यना पण परमाणु सरखो थइ, तेमने वंदन करूं!!! पछी जेटलामां ते महामुनि पगलुं उपाडी चालवा जाय छे, के तुरत तेमने मोक्षरूपी मेहेलना द्वारसरखुं "केवलज्ञान" उत्पन्नथयुं. एवी रीतें केवलज्ञाननी लक्ष्मीथी हाथमां रहेला आमलांनी पेठे जगत्‌ने जोता, ते बाहुबली महामुनि, प्रजुनिपासे केवलीउनी सजामां जइ बेठा.

हवे जरत राजा पण, चौद महारत्नोथी आश्रित थया थका, तथा चोसठ हजार स्त्रियोवाला, अने नव निधानना स्वामी थयाथका, संपत्तिरूपी वेलना फल सरखा धर्म, अर्थ, काम अने राज्यने परस्पर विरोधविना जोगवता थका कालनिर्गमन करवा लाग्या. हवे एक रुषजदेव प्रजुपण विहार करता थका अष्टापदपर्वतपर गया, तथा त्यां प्रजुने वांदवाने जरतराजा पण गया त्यां सुरअसुरोथी पूजनीय, तथा समवसरणमां बेठेला प्रजुने त्रण प्रदक्षिणा दइने, नमस्कार करीने स्तुति करवा लाग्या के, हे प्रजो, मूर्त्तिमान् विश्वास सरखा, पिंडरूप थएला सद्वृत्त (सदाचरण) सरखा, सघलां जगतना प्रसाद सरखा, मूर्त्तिमान् ज्ञानना राशि सरखा, पुण्यना ढगला सरखा, सघला लोकना सर्वस्व सरखा, देहधारी संयम सरखा, रूपवाला उपकार सरखा, पगें चालता शील सरखा, देहधारि क्षमा सरखा, योगनां रहस्य सरखा, एकठा थएला जगत्‌ना वीर्य सरखा, निष्फल सिद्धिना उपाय सरखा, मूर्त्तिमान् मैत्री सरखा, देहधारी करुणा स-

रखा, पिंडरूप थयला हर्षसरखा, रूपवाला उदासीनपणा सरखा, तप शांतता, सद्ज्ञान विगेरेना एकठा थवा सरखा, साक्षात् विनय सरखा, साधारण सिद्धि सरखा, सघलि शास्त्रसंपत्ति प्रत्ये व्यापी रहेला हृदय-सरखा, तथा नमः, स्वस्ति, स्वधा, स्वाहा अने वषट्कार आदि मंत्रोना अर्थरूप, तेमज केवल विशुद्ध धर्मनिर्माणना अतिशय सरखा तथा समस्त तपना एकठा थयेला समग्र फलरूप, सघला गुणसमूहना अविनाशी परमजागरूप, परमनिः श्रेयस (कैवल्य) नी लक्ष्मीना निर्विघ्न आश्रय (अधिष्ठान) रूप, महिमाना एक धामरूप, मोक्षनी मूर्त्तिरूप एवा सर्व विद्याउनां कुलमंदिर होय नहि शुं एवा, तथा सर्व मनोरथोना फलरूप आर्यवर्यनां चरित्रोना निर्मल आदर्श (दर्पण) रूप तथा जेमणे जगत्ने दर्शन आपेलां छे एवा मूर्त्तिमान् प्रशमरूप तथा दुःखोनी शांतिनुं द्वार होय नहि शुं एवा तेमज उज्वल ब्रह्मचर्यरूप, पुण्यवडे प्राप्त थयेला जीवलोकना एक जीवितरूप मृत्युरूप वाघना मुखमांथी आ सघला जगत्ने खेंची लेवा माटे अर्थात् बचाववा माटे जाणे कृपालु निर्माणे हाथ पसारेलो होय नहि एवा, तथा प्राणीउना मृत्युना नाशमाटे (अथवा जन्म मरणना नाशरूप मोक्ष माटे) वली ज्ञान रूरूपी मंदराचलथी क्षुब्ध थयेला संतोषरूपी समुद्रमांथी निकलेला अमृत सरखा, वली जगतने अजयदान देवाथी, शांत करनारा, एवा तमोने, हे प्रजो ? हुं शरणे आवेलो छुं, माटे आप मारापर कृपा करो ? पछी त्यां ऋषभ देव प्रभुनी एकाग्रचित्तथी तेणें घणा कालसुधि सेवा करी. पछी प्रभु पण ते पर्वतपर, दीक्षा लीधा पछी एक लाख पूर्व गया बाद दश हजार साधुउ साथे मोक्ष पधार्या. ते वखते इंद्र आदिक देवोए प्रभुनो निर्वाणमहोत्सव कर्यो, तथा (प्रभुना निर्वाणथी) दिलगिर थता जरतने इंद्रे शांत कर्यो. पछी जरतें त्यां अष्टापद पर बीजा अष्टापद सरखो एक रत्नमय प्रासाद बंधाव्यो, तथा तेमां प्रभुना जेटलाज प्रमाणवाली तेमनी रत्नमय मूर्त्ति स्थापन करी. वली तेणें प्रभु शिवायना हवे थनारा त्रेवीश तीर्थंकरोनी पण, तेमनां परिमाण जेवडी प्रतिमाउ बनावी; तथा नवाणु महात्मा जाइउनां पण रत्नमय अनुपम रूपो तेणे बनाव्यां; वली पाछो ते राजा पोतानी नगरीमां आवी प्रजाना रक्षण

पूर्वक राज्य पालवा लाग्यो; तथा त्यां जोगववी कर्मोना उदयथी प्रेरातो थको साक्षात् इंद्रनी पेठे विविध प्रकारना जोगो जोगववा लाग्यो. हवे एक दहाडो कपडां पेहेरवाने, तारा प्रत्ये जेम चंद्र, तेम अंतःपुरमां ते आव्यो. त्यां पोतानां रत्नोनां आजूषणोमां प्रतिबिंबित थयेली स्त्रीउंथी, जाणे एकी वखते प्रेमपूर्वक सघली स्त्रीउंथी आलिंगन करायेलो होय नहि, तेम ते शोजवा लाग्यो. पछी आरिसामां जोवाथी पोतानी आंगलीने विंटी विनानी, दिवसे रहेली चंद्रकला सरखी तेज विनानी तेणें जोइ. पछी वैराग्यथी सघला अंगोपरथी आजूषणो कहाडी नाखवाथी, पादडां विनाना वृक्ष सरखा पोताना शरीरने तेणें शोजाविनानुं जोयुं; अने तेथी विचारवा लाग्यो के, धिक्कार छे ! ! ! आ शरीरनी शोजा तो फक्त जूषण आदिकथीज छे. अंदर विष्टा आदिकथी मलीन थयेलां, तथा द्वारो वाटे निकलता मेल आदिकथी आ शरीरनो तो कोइ पण जाग शोजावालो नथी. वली आ शरीर तो, ऊषर जूमि (खारीपृथ्वी) जेम वरसादना पाणीने तेम कपूर कस्तूरी आदिकने पण दूषण युक्त करे छे. माटे जेउं विषयोथी विरक्त थइ, मोक्षफलवाला तपने तपे छे, एवा तत्ववेत्ताउंएज आ शरीरनुं फल ग्रहण कर्युं छे. एम विचारतां शुक्लध्यानपर चडवाथी तेने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. माटे अहो !!! योगनुं विलसित केवुं छे ? तेज वखते इंद्रें रजोहरण आदिक मुनिनां चिह्नो तेनी पासे लावी, नमस्कार कर्यो; तथा तेना पुत्र सूर्ययशाने तेना राज्यपर बेसाड्यो, अने त्यारथी राजाउंनो आज दिनसुधि " सूर्यवंश " चाल्या करे छे.

हवे पूर्वजन्ममां मेलवेली योगसमृद्धिना बलथी खपावेल छे, अशुज कर्मो जेणे, एवा जरतराजावास्ते कर्मोनो क्लेश नाश करवामाटे योगना प्रजावनुं वर्णन करवुं, तो युक्त छे. पण जेने जन्मांतरमां रत्नत्रय (सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र) नथी मल्यां, अने तेथी कर्म नहीं खपवाथी मनुष्यपणुं पण जेने मलतुं नथी, ते माणस अनंतकालमां एकठां करेलां शुजाशुज कर्मोनो नाश शीरीतें अनुजवी शके ? तेने माटे कहे छे.

पूर्वमप्राप्तधर्माऽपि परमानंदनंदिता ॥
योगप्रज्ञावतः प्राप मरुदेवा परं पदं ॥ ११ ॥

अर्थः–पहेलां जेणीने धर्म प्राप्त थयेलो नथी तोपण योगना प्रजावथी परमपदमां आनंदित थएलां मरुदेवा माता मोक्षपदने पाम्यां.

मरुदेवा माताने संसारमां त्रसजीवपणुं पण मळ्युं नहोतुं, त्यारे मनुष्यपणानी तो वातज शी करवी? तोपण योगबलनी समृद्धिथी, शुक्लध्यानरूपी अग्निथी, घणा कालथी एकठां करेलां कर्मोरूपी काष्टोने तेणीए बालीने जस्म कर्यां. अने ते मरुदेवा मातानुं चरित्र घणुं खरुं (उपर) कहेवाइ गयुं छे. हवे अहीं शंका करे के, जन्मांतरोमां क्रूर कर्मो नहीं करनारां मरुदेवादिकने योगबलथी कर्मोनो क्षय थवो युक्त छे, पण अत्यंत क्रूर कर्मो करनारने योग फलवान् थाय नहीं!!! तेने माटे हवे कहे छे.

ब्रह्मस्त्रीभ्रूणगोघातपातकान्नरकातिथेः ॥
दृढप्रहारिप्रभृते र्योगो हस्तावलंबनं ॥ १२ ॥

अर्थः–नरकना अधिकारी एवा दृढप्रहारि आदिकने ब्रह्महत्या, बालहत्या तथा गौहत्याना पापथी बचावनार योगज छे.

टीका–अहीं जो के ब्राह्मण अथवा कोइ बीजी जातिनो माणस स्त्री अथवा पुरुष, बालक अथवा गमे ते प्राणीनी हिंसा करवाथी सरखुंज पाप थाय छे, तोपण लोकोमां प्रसिद्ध होवाथी ते चार हत्याउनुं ग्रहण कर्युं छे; कारण के जे माणसो सघली हिंसाने पापनां फलोवाली नथी मानता, तेउ पण ब्राह्मणआदिकनी हिंसा करनार महापापीने हिंसानुं पाप थयेलुं माने छे. वली तेवा दृढप्रहारी आदिकने योग अवलंबनरूप थयेल छे, कारण के, तेउ तेज जवें मोक्षे गयेल; छे. अहिं आदि शब्दथी बीजा पण पापियो जिनवचनने जाण्या बाद योगसंपत्तिने मेलवीने, नरकमां लइ जनारा कर्मोनो नाश करीने मोक्षे गयेला छे, तेउने पण जाणी लेवा हवे दृढप्रहारिनी कथा कहे छे.

कोइएक नगरमां एक उद्धत ब्राह्मण हतो ते पापबुद्धि प्रजाउमां अन्याय करवा लाग्यो. तेथी आरक्ष माणसो (राजपुरुषो) ये तेने नगरमांथी हांकी कहाड्यो, अने तेथी बाजपक्षी जेम पाराधिना हाथमां

जाय, तेम ते एक चोरोनी पल्ली (वास)मां गयो. त्यां चोरोना उपरीयें तेने तेनां चरित्रोथी पोतासरखो जाणी, पुत्र करीने राख्यो. पछी ज्यारे ते चोरोनो स्वामी गुजरी गयो, त्यारे आ महाबलवान्, तेनो पुत्रतरीके होवाथी तेने स्थानकें आव्यो. ते दया लाव्याविना सघला प्राणिउने प्रहार करतो हतो, तेथी लोकोयें तेनुं "दृढप्रहारी" नाम पाड्युं हतुं. एक दहाडे ते आखा जगत्ने लुंटी शके, एवा सुभटोना टोलांसहित कुशस्थल नामे गाम लुंटवाने चाल्यो. ते गाममां महादरिद्री एवो एक देवशर्मा नामें ब्राह्मण हतो, तेनां छोकरांउए, एक दहाडो तेनी पासे, फलविनानां वृक्षपासे जेम फल, तेम दूधपाक माग्यो. त्यारे ते ब्राह्मणे आखा शेहेरमां रखडी रखडी क्यांकथी चोखा तथा क्यांकथी दूध मागी लावी, दूधपाक पकाव्यो. पछी जेटलामां ते नदीये नावा गयो, तेटलामां ते क्रूर चोरो तेना घरमां तूटी पड्या, कारण के दैव दुर्बलनेज मारे छे. ते मांहेला एक चोरें ते दूधपाकने त्यां जोयो, अने तेथी भुख्या प्रेतनी पेठे ते लइ त्यांथी नाशी गयो. जीवित सरखो ते दूधपाक ते चोर लइ जवाथी ते ब्राह्मणनां छोकरांउ रडतां थकां पितापासे जइ कहेवा लाग्यां के, आंख खुल्ली करी बेठेलाउनां आंजणने जेम पवन, तेम मोहोडुं फाडीने बेठेला एवा जे अमो, तेउनो दूधपाक चोर लइ गया. ते सांजली अत्यंत गुस्से थयेलो ते ब्राह्मण यमदूतनी पेठे परिघ लइने त्यांथी दोड्यो. तथा रोषवाला राक्षस सरखा आवेशथी, घणा जोरथी, पशुनी पेठे ते चोरोने परिघथी ते मारवा लाग्यो. एवी रीतें ते ब्राह्मणथी कचरानी पेठे चोरोने फेंकाता जोइ, बीकणोनो तिरस्कार करतो थको ते चोरपति तेनी सामे आव्यो. ते ज्यारे जोरथी दोडतो आव्यो, त्यारे दैवयोगें, जाणे तेने दुर्गतिमांथी अटकावनारीज होय नहीं, एवी एक गाय विघ्नरूप थइ मार्गमां आडी आवी. ते गाइनें तेणे दयाविनाना कसाइनी पेठे विकराल तलवारना एकज फटकाथी कापी नाखी. पछी एकदम दोडी जइ, तेणे खड्गथी, ते गरीब ब्राह्मणनुं मस्तक, फनस वृक्षना फलनी पेठे पृथ्वीपर तोडी पाड्युं. (एटलामां) "अरे दयाविनाना पापी, आ तें शुं कर्युं !!" एम बोलती ते ब्राह्मणनी गर्भिणी स्त्री त्यां आवी, त्यारे नार जेम बकरीने, तेम तेणीना कोठा

सरखा पेटने, ते डुष्टे फाडी नांख्युं. ते वखते जरायुमां (पडदामां) रहेला तेणीना गर्भने, बे कटका थयेलुं, तथा वेलडीना पल्लवनी पेठे लटकतुं तेणे जोयुं. एवी रीतना गर्भने जोइने, दयाविनाना एवा तेने पण, दया आवी. एटलामां हा तात !! हा मात !! एम विलाप करतां, ते ब्राह्मणनां बालको त्यां आव्यां. ते छोकराउने, नागां तथा जुखथी डुबलां थइ गएलां, तथा मेलथी कालां थयेलां जोइने, दृढप्रहारी पश्चात्ताप सहित विचारवा लाग्यो के, अरेरे !!! में पापियें दरिद्र एवां ब्राह्मण स्त्रीजरतारोने मारी नाख्यां, अने हवे आ बालको पण मुआंज समजवां, कारणके, थोडा पाणीमां मत्स्यो केमजीवी शके ? माटे डुर्गतिमां लइ जनारा आ क्रूर कर्मोथी, बीनो एवो जे हुं पापी तेनुं आजे शरणुं कोण थशे ? एवी रीते वैराग्यथी ते जेटलामां विचार करतो हतो, तेटलामां पापरूपी रोगोने औषध समान, एवा केटलाक मुनिउने आकाशमार्गे जता तेणे जोया, त्यारे तेउने नमस्कार करी ते कहेवा लाग्यो के, हुं पापी बीजाना पण पापोने अर्थे थउंछुं, तथा हुं पोते कादवयुक्त थइ, बीजाने पण कादवयुक्त करुं छुं. जे पापोमांथी एकज पाप पण नरकमां लइ जाय छे, एवा ब्रह्महत्या, स्त्रीहत्या, बालहत्या, तथा गोहत्यानां पापो में कर्यां छे. एवो हुं छुं, तोपण आप साधुउ मारुं रक्षण करवा समर्थ छो, कारण के, वरसतो मेघ कंइ सुस्थान कुस्थान जोतो नथी. त्यारे साधुउए तेने यतिधर्मनो उपदेश कर्यो, अने जेम तापथी तपेलो माणस छत्रने, तेम तेणे पण पापोथी जय पामीने ते अंगीकार कर्यो. जे दिवसे आ पाप मने याद थशे, ते दिवसे हुं जोजन करीश नहीं, तथा सर्वथा प्रकारे हुं क्षमा अंगीकार करीश, एवो तेणे अजिग्रह लीधो. पछी ते महात्मा आगल नाश करेला तेज कुशस्थल गाममां, कर्मोनो क्षय करवा माटे विहार करतो करतो आव्यो. तेज आ धूर्त्त महापापी छे, एम जाणी लोको ते महात्माने रात दहाडे रंजाडवा लाग्या. पछी ज्यारे जिक्षावास्ते ते लोकोना घरमां जतो त्यारे, “ गौ, बाल, स्त्री, तथा ब्रह्महत्या करनारो आ माणस छे, ” एम कही तेने कुतरानी पेठे लाकडीयोथी मारता एवी रीते हमेशां तेने ते पाप याद करवानुं होवाथी, शांत मन राखी ते जुख्यो रहेवा लाग्यो, अथवा सत्वने

शुं दुष्कर छे ? ! कोइ दहाडे सवारमां, के बपोरें तो कोइ दहाडे सांजरे, एवी रीतें ते पाप तेने याद करावतुं होवाथी, कोइ पण दिवसें ते जोजन करी शक्यो नहीं. लोको तेने ढेफांथी, लाकडीथी, धूलनी मूठिथी, तथा मूठीथी मारता, तो पण ते सघलुं ते सहन करी, एम विचारतो के हे आत्मा, तें जेवुं कर्म करेलुं छे, तेवुं फल जोगव्य ? कारण के, जेवुं बीज वावीयें, तेवुं फल मले छे. वली आ लोको आक्रोशथी जे माराप्रत्ये क्लेश विस्तारे छे, तेथी वगर मेहेनतें मारा कर्मोनी निर्जरा थाय छे. मारा प्रत्येनो आक्रोश, जेम तेउने हर्ष आपे छे, तेवी रीतें प्रीतिथी सहन करता, मने पण, ते कर्मक्षय करनारो होवाथी, प्रीति उपजावे छे. वली मारी जर्त्सनाथी तेउने जे सुख थाय छे. ते पण जले थाउ ? कारण के, जवमां सुखनो संगम दुर्लज छे. वली मारा दुष्कर्मरूपी मेलने, खार सरखा कडवा वचनोथी धोनारा, आ लोको मारा परम मित्रो छे. वली आ लोको जले मने मारो ? कारण के, अग्निनो ताप सोनानी मलीनतानो नाश करे छे. वली जेउ मने दुर्गतिमांथी खेंची लइ, पोतेज तेमां पडे छे, एवा मार मारता तेउपर पण हुं शा माटे गुस्से थउं ? वली पोताना पुण्योनो नाश करी, जेउ मारां पापोनो क्षय करे छे, एवा आ माणसो करता बीजा परम बंधुउ कोण छे ? आ वधबंधनथी, संसारथी मारुं मुक्त थवुं, ते तो मने हर्ष आपे छे, पण तेज आ लोकोने अनंत संसारना हेतुरूप थाय छे, तेथी मारुं चित्त दुजाय छे. वली केटलाको परने खुशी करवा माटे धन तथा शरीरने पण तजे छे, तेम आ लोकोने पण मारा प्रत्येना आक्रोश तथा मार आदिक प्रीति करनार छे. मारी तेउए तर्जना करी छे, पण मने हण्यो नथी, अथवा हण्यो छे, तो पण मने मार्यो नथी, कदाच मार्यो छे, तो पण बांधवनी पेठे, तेउए मारो धर्म हरी लीधो नथी. वली कल्याणना अर्थि माणसें आक्रोश वचनोनो मार, बंधन, ताडन, तथा मृत्यु पण सहन करवुं जोइयें, कारण के, श्रेयवस्तुउ बहु विघ्नोवाली होय छे. एवी रीतें जावना जावता, तथा पोताना दुष्कृतनी निंदा करता एवा ते मुनिए, अग्निथी काष्टनी पेठे, कर्मोना समूहनो नाश कर्यो. पछी तेणे दुर्लज, अने निर्मल केवलज्ञान मेलव्युं, तथा अयोगी केवली नामें गुणस्थानपर रह्यां थकां तेणे मोक्ष

मेळव्यो. एवी रीतें योगना प्रभावथी दृढप्रहारी, नरकना अतिथिपणाने छोडीने, मोक्षपदने पाम्या, माटे एवी रीते बीजाए पण शंका राख्याविना योगमां प्रयत्न करवो. वळी पण बीजा उदाहरणथी योगनी श्रद्धानेज वधारे छे.

तत्कालकृतदुष्कर्म कर्मठस्य दुरात्मनः ॥
गोप्त्रेचिलातिपुत्रस्य योगाय स्पृहयेन्न कः॥१३॥

अर्थः—तत्काल करेल छे, दुष्कर्म जेणे, एवा दुरात्मा चिलातिपुत्रने (दुर्गतिथी) रक्षण करनार योगप्रत्ये कोण स्पृहा न करे?

टीकाः—अहीं "दुरात्मा" एवुं जे विशेषण आप्युं छे, ते पाप करती वखतना कालनी अपेक्षाथी छे. ते उदाहरण कहे छे.

क्षितिप्रतिष्ठ नामे नगरमां यज्ञदेव नामें ब्राह्मण रहेतो हतो, ते हमेशां पोताने पंडित मानी जैनशासननी निंदा करतो हतो. ते निंदाने नहीं सहन करीने, कोइएक चेले गुरुयें वार्या छतां पण, तेने जीतवा माटे वाद करवाने तेने कह्युं. तेउना वादमां एवी प्रतिज्ञा थइ के, जेने जे जीते, तेनो ते शिष्य थइने रहे. पछी ते बुद्धिमान् चेलाए वादविवादमां यज्ञदेवने हराव्यो; पछी ते चेले पूर्वनी प्रतिज्ञाप्रमाणे, जीतवाथी यज्ञदेवने दीक्षा अपावी.

पछी शासनदेवीए यज्ञदेवने कह्युं के, तें हवे चारित्र लीधेलुं छे, माटे ज्ञानथी श्रद्धावान् था? पछी त्यारथी ते व्रतने सारी रीतें पालतो हतो, पण वस्त्र अने अंगना मेलनी निंदा करतो हतो, कारण के, आगलनो संस्कार न तजाय एवो होय छे. हवे तेनी परणेली स्त्रीए, गली थी रंगेला साल्लानी पेठे, तेनापरना रागनो त्याग कर्यो नहीं; "आ मारे वश थाय तो सारुं" एम विचारि, तेणीए पारणामां कामण कर्युं कारण के खरोखर स्त्रीउ रक्त तथा विरक्त थइ थकी मारे छे. कृष्ण पक्ष सरखा ते कामणथी क्षय पामतो, ते मुनिरूपी चंद्र, सूर्यमंडल सरखा स्वर्गमां गयो. तेना मृत्युथी थयेल छे, खेद जेने, एवी ते स्त्रीए मनुष्य भवरूपी वृक्षना फल सरखी दीक्षा लीधी. पछी पतिने दुःख दीधाथी थयला पापने आलोव्या विना, ते मरीने देवलोकें गइ. कारण के, त-

यथी शुं दुष्प्राप्य (दुर्लभ) छे ? हवे ते यज्ञदेवनो जीव पण, देवलोकथी चवीने राजगृही नगरीमां धनसार्थवाहनी चिलाती नामें स्त्रीनी कुखें पुत्र पणे उत्पन्न थयो. चिलातीनो पुत्र होवाथी लोको तेने " चिलातीपुत्र " कहेवा लाग्या, अने तेथी तेनुं बीजुं नाम पड्युं नहीं. हवे ते यज्ञदेवनी स्त्रीनो जीव त्यांथी चवीने, धन शेठनी जद्रा नामें स्त्रीनी कुखें पांच पुत्रोपर सुसमा नामें पुत्रीपणे उपन्यो. पछी ते धनसार्थवाहें चिलातीपुत्रसाथे सुसमाने बालक्रीडामां जोडी दीधी. आ कुमार लोकोमां अपराधो करवा लाग्यो, अने तेथी शेठ राजाथी बीवा लाग्यो, कारण के चाकरना अपराधथी शेठनो दंड थाय छे. पछी विचारवान्, एवा ते धन श्रेष्ठिए, हमेशां उपद्रव करनारा, एवा तेने, सर्पनी पेठे घरमांथी कहाडी मेल्यो. पछी प्रिय छे अपराध जेने, एवो ते मोटा अपराधोनी वेली समान, एवी एक सिंहगुहा नामनी चोरोनी पल्लीमां गयो; कारण के, सरखा सोबतीउने परस्पर प्रीति थाय छे. पछी ते पापी, चोरोनी साथे मली गयो, तथा तेथी, वायुथी जेम अग्नि, तेम ते अत्यंत जयंकर थयो. पछी ते सिंहगुहानो स्वामि चोर मरी गया बाद, जाणे तेने माटेज करी राखी होय नहीं, तेम तेनी गादीपर ते आव्यो. हवे ते सुसमा पण यौवनवाली थइ, रूप आदिक गुणोथी शोजती थकी, कलाउना समूहने जाणती थकी पृथ्वीपर चालनारी खेचरी सरखी देखावा लागी. हवे एक दहाडो ते चिलातीपुत्र पोताना सोबतीउने कहेवा लाग्यो के, राजगृह नगरमां अति धनवालो धन नामें शेठ छे, तथा तेने सुसमा नामें दीकरी छे, माटे आपणे त्यां जइयें, अने त्यांथी जे धन मले, ते तमारुं, अने ते सुषुमा मारी, एम व्यवस्था करीने, ते, रात्रियें धनशेठने घेर गयो. त्यां रहेला लोकोने अवस्वापिनी विद्याथी निद्रामां नाखीनें, तेणे चोरोपासे धन लुंटाव्युं, तथा पोते सुसमाने ग्रहण करी. पछी ते चिलातीपुत्र सुषुमाने जीवनी पेठे लइने, ते लुंटाराउ साथे त्यांथी निकली गयो. पछी धनशेठें रक्षक राजपुरुषने बोलावी कह्युं के, चोरोए चोरेलुं धन तमो लेजो, पण ते सुसमाने पाछी, लावी आपो ? पछी ते शेठ पण आरक्षक माणसो, तथा हथियार बंध थयेला पुत्रोसाथे मननी स्पर्धाथीज होय नहि जेम, तेम

उतावलथी अगाडी अगाडी चालवा लाग्यो. पछी चालतां चालतां र-स्तामां, जल, स्थल, वेल्यो, वृक्षो तथा जे कंइ जुए, ते सर्वने ते कम-लावालो जेम सघलुं सोनामय तेम सुषुमामय जोवा लाग्यो.

पछी अहीं तेउए पाणी पीधुं, अहीं खाधुं, अहीं रह्या तथा अहीं गया, एम बोलता पगीउं साथे ते चोरोनी समीप जइ पहोच्यो. पकडो! प-कडो! एम बोलता आरक्षपुरुषो ते चोरो पासे आवी पहोंच्या (ते जोइ) ते चोरो तो धनने छोडीने दिशा दिशाउमां नाशी गया, पण चिलाति पुत्रें, वाघ जेम हरणीने, तेम सुषुमाने छोडी नहीं. पछी ते आरक्षना माणसो तो घणुं धन मलवाथी त्यांथी पाछा वल्यां, कारण के, स्वार्थ सर्या पछी सघला लोको फरी जाय छे. पछी ते चिलातिपुत्र तो हाथी जेम वेलडीने, तेम सुषुमाने खन्ने चडावीने महाटवीमां नाशी गयो. पछी धन पण राहुपासेथी चंद्रनी कलाने जेम ते चोर पासेथी पोतानी पुत्री लेवामाटे सिंह सरखा पोताना पांच पुत्रो सहित तेनी पछाडी दोड्यो. पछी चिलातीपुत्रें जाण्युं के, धन मारी पाछल आवी, आने लइ जशे, माटे तेना हाथमां न जाय तो सारुं, एम विचारि तेणे तेणीनुं माथुं कापी नाख्युं; ते वखते एक हाथमां खेंचेली छे तलवार जेणे, त-था बीजा हाथमां राखेल छे (सुषुमानुं) मस्तक जेणे, एवो ते यमपु-रीना द्वारमां रहेला क्षेत्रपाल सरखो शोभवा लाग्यो.

पछी धन सुषुमाना धडआगल रहीने, रडतो थको, नयनरूपी अंज-लीथी जाणे तेणीने पाणीज आपतो होय नहीं, तेम अश्रुउ पाडवा लाग्यो. पछी तेणीना धडने त्यांज मुकीने, ते धन पाछो वल्यो, तथा शोकरूपी शल्यथी दुःखित थइ, कोइ महावनमां निकली पड्यो. लला-टपर तपता सूर्यना तापना जयथीज होय नहीं जेम, तेम चारे बाजुथी संकोचेल छे छाया जेणे, एवो मध्याह्नकाल ते वखते थयो. ते वखते जा-णे पंचाग्नि साधता होय नहीं, तेम धनना पांचे पुत्रो, शोक, थाक, क्षु-ध, तृषा तथा मध्याह्नकालना तापथी तपवा लाग्या. त्यां पाणी फल अथवा जीवनने औषधसमान कंइ पण तेउए जोयुं नहीं, पण उलटां मोत देनारां हिंसक जंगली प्राणीउने तेउए जोयां. एवी रीतनी पोता-ना पुत्रोनी ते माठी दशाने जोइने, धन शेठ मार्गमां विचार करवा ला-

थयो के, मारुं सघळुं नाश पाम्युं, मारी प्राणप्रिय पुत्री मृत्यु पामी तथा अमो पण मोतनी अणिपर आवी पहोंच्या छियें, माटे देवना विलसितने धिक्कार छे. जे दैवने बळवान् बळथी अने संपदावाळो संपदाथी पण साधी शकतो नथी, एवुं दैव तो बळवानमां पण बळवान् छे.

वळी जे दानथी पण साधि शकातुं नथी, वळी विनयथी पण ग्रहण करातुं नथी, तेम सेवाथी पण जेने छोडी शकातुं नथी, एवा कर्मनी अहो ! ! केवी दुःसाध्यता छे. वळी जेने देवो पण जाणी शकता नथी, बळवान् रोकी शकता नथी, तपस्वीउ पण साधी शकता नथी, एवा दैवनी बरोबरीउ कोण छे ?

वळी अरे ! तेज दैव कोइ वखते मित्रनी पेठे मेहेरबानी करे छे. तो कोइ वखते शत्रुनी पेठे शंका राख्याविना मारी नाखे छे. वळी तेज दैव पितानी पेठे कोइ वखते रक्षण करे छे, तो कोइ वखते दुष्ट पितराइनी पेठे दुःख आपे छे. वळी ते खोटे मार्गे जनारने कोइ वखते खरे मार्गे चडावे छे, तथा खरे मार्गे जनारने कोइ वखते खोटे मार्गे पण चडावे छे. वळी ते दूर रहेली वस्तुउ लावी आपे छे, तथा हाथमां रहेली वस्तुउनो नाश करे छे, माटे एवी रीतें कर्मनी गति इंद्रजाल सरखी विचित्र छे. वळी ज्यारे कर्मो अनुकूल होय त्यारे माणसोने झेर पण अमृतरूप थाय छे, तथा ज्यारे प्रतिकूल होय त्यारे अमृत पण झेर थाय छे. एम विचारतो ते राजगृही नगरीए गयो, तथा शोक सहित सुषुमानी तेणे उत्तरक्रिया करी. पछी वैराग्यथी श्री वीरप्रभु प्रत्ये आवी दीक्षा लइ, आकरुं तप तपी, आयुष्य पूर्ण थवाथी ते देवलोकमां गयो. हवे चिलातीपुत्र पण अनुरागथी वारंवार सुषुमानुं मुख जोतो, थको, थाकने नहीं गणकारी दक्षिण दिशातरफ चालवा लाग्यो. पछी मार्गमां तेणें छायावृक्ष सरखा संतापने हरनारा, तथा कायोत्सर्गमां रहेला एक साधुने तेणे जोया. पछी पोताना आ अकार्यथी कंइक उद्विग्न मनवाळा थइ, तेणे साधुने कह्युं के, मने संक्षेपथी धर्म संभळावो ? नहितर आज तलवारथी क्षणवारमां सुसमानी पेठे, तमारा मस्तकने, केळने जेम तेम कापी नाखीश. पछी मुनिए ज्ञानथी जाण्युं के, आनामां रोपेलुं बोधिबीज क्यारामां रोपेली डांगरनी पेठे खरेखर फळद्रूप थशे. पछी

मुनिए कह्युं के, "सारी रीतें उपशम, विवेक अने संवर अंगीकार करवुं" एम कही ते चारण मुनि पक्षीनी पेठे आकाशमां उडी गया.

पछी ते पदोने मंत्रनी पेठे विचारवाथी चिलातीपुत्रने तेनो जावार्थ एम समजावा लाग्यो के, डाह्या माणसें क्रोधादिक कषायोनो उपशम करवो जोइयें, अने हुं तो, सर्पोथी जेम चंदनवृक्ष, तेम तेउनाथी घेराएलो छुं. माटे आजेज तेउने मारा महारोगोनी पेठे क्षमा, कोमलता, सरलता अने संतोषरूपी औषधिउथी दूर करीश. वली धन, धान्य, तथा कांचन आदिकना त्यागना लक्षणरूप, तथा ज्ञानरूपी वृक्षना बीज सरखा एक विवेकनेज हुं अंगीकार करीश. माटे पाप संपदानी धजा सरखा आ हाथमां रहेला सुषुमाना मस्तकने तथा तलवारने हुं छोडी वउं. अने संवर एटले इंद्रिय अने मनना विषयोथी पाछा हठवुं ते, अने संयमरूपी लक्ष्मीना मुकुट सरखा ते विचारने पण मारे ग्रहण करवो छे. एवी रीतें पदोना अर्थोने विचारतो, तथा रोकेल छे सघली इंद्रियो जेणे, एवो ते चिलातिपुत्र समाधिमां रह्यो. पछी रुधिरनी श्रेणिथी लिप्त थयेला तेना शरीरने, घुणो जेम काष्टने, तेम कीडीउए सेंकडो छिद्रोवालुं करी नाख्युं. एवी रीतना कीडीउना उपसर्गथी पण स्तंजनी पेठे निश्चल रही, अढी दिवसमां तेणें देवलोक मेलव्यो.

वली पण योगनीज स्तुति करे छे.

तस्या जननिरेवास्तु नृपशोर्मोघजन्मनः॥
अविध्दकर्णो यो योग इत्यक्षरशलाकया ॥ १४ ॥

अर्थः–जे माणसना कान "योग" एवा अक्षरोरूपी शलाकाथी (कान विंधवाना हथियारथी) विंधाएलो नथी, एवा फोकट जन्मवाला पशु सरखा मनुष्यनो जन्म न थवो, तेज श्रेष्ठ छे. अर्थात् एवा माणसनो विडंबनारूप (दुःख पीडा क्लेशने संतापमय) जन्म कंइ कामनो नथी.

वली पण पूर्वार्धथी (पेहेलां बे पदोथी) योगनी स्तुति करीने, उत्तरार्धथी (छेल्लां बे पदोथी) तेनुं स्वरूप कहे छे.

चतुर्वर्गेऽग्रणीर्मोक्षो योगस्तस्य च कारणं ॥
ज्ञानश्रध्दानचारित्र रूपं रत्नत्रयं च सः ॥ १५ ॥

चारे वर्गोमां मोक्ष अग्रेसर छे, अने ते मोक्षनुं कारण योग छे, अने ते योग ज्ञान, श्रद्धान अने चारित्र ए त्रण रत्नोवाळुं छे.

टीकाः—चार वर्गो, एटले अर्थ, काम, धर्म अने मोक्ष. तेमां मुख्य मोक्ष छे; कारण के अर्थ तो, कमावुं, रक्षण करवुं, नाश, खरच इत्यादि दुःखनो हेतु होवाथी तेने चार वर्गोमां अग्रेसर कही शकाय नहीं. काममां कंइक सुखनो भाग होवाथी, जो के अर्थथी तेनो दरज्जो उंचो छे, तोपण छेवटे नीरस तथा दुर्गति देनार होवाथी ते पण अग्रेसर थइ शके नहीं. अने धर्म तो जो के, आ लोक अने परलोकमां सुखनो हेतु होवाथी अर्थ अने कामथी, तेनो दरज्जो चडे छे, तो पण सोनानी बेडीसरखा पुण्यबंधननो हेतु होवाथी, भवोमां भमावे छे, तेथी तेने पण अग्रेसर कही शकाय नहीं. अने मोक्ष तो पुण्य पापना क्षयना लक्षणवाळो छे, अने तेथी, ते बहु क्लेशवालो पण नथी, तेम झेरवाळा अन्ननी पेठे परिणामें दुःखदायी नथी; तेम ते आ लोक तथा परलोक संबंधि सुखनी आशाना दोषथी दूषित नथी; तेथी परम आनंदमय मोक्ष. चारे वर्गोमां अग्रेसर छे. तथा तेनुं साधक कारण योग छे. हवे ते योगनुं स्वरूप शुं छे? ते कहे छे. ते योग ज्ञान, श्रद्धान अने चारित्ररूप छे. ते त्रणे रत्नोमां पेहेलां ज्ञाननुं स्वरूप कहे छे.

यथावस्थिततत्वानां संक्षेपाद्विस्तरेण वा ॥
योऽवबोधस्तमत्राहुः सम्यग्ज्ञानं मनीषिणः ॥१७॥

अर्थः— खरेखरां तत्वोनो संक्षेप अथवा विस्तारथी जे बोध, तेने पंडितो "सम्यग्ज्ञान" कहे छे.

टीकाः—यथावस्थित एटले नय अने प्रमाण सहित स्वरूपवाळा, जे जीव, अजीव, आश्रव, संवर निर्जरा, बंध तथा मोक्ष नामनां तत्वोनुं जे ज्ञान, ते "सम्यग्ज्ञान" कहेवाय. अने ते ज्ञान कोइने क्षयोपशम प्रमाणे संक्षेपथी अने कोइने विस्तारथी होय छे. हवे तेमां जीवोना बे भेद छे, मुक्तिना अने संसारी तेउ सघला अनादिनिधन ज्ञान, दर्शनना लक्षणवाळा छे. मोक्षना जीवो, एक स्वभाववाळा, जन्मादिकना क्लेशरहित, तथा अनंतज्ञान, दर्शन तथा वीर्यानंदमय छे. संसारी

जीवो बे प्रकारना छे, त्रस अने थावर. तेउं बन्नेना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता नामें बे भेदो छे. आहार, शरीर, इंद्रिय, प्राण, भाषा, तथा मन, छ पर्याप्तियो छे. तेमांथी एकेंद्रि, विकलेंद्री, तथा सन्नीपंचेंद्रीने अनुक्रमें, चार, पांच, अने छ, पर्याप्तिउं होय छे. हवे स्थावर एकेंद्रियोना पृथ्वी, अप्, तेउ, वाउ, अने वनस्पतिकाय नामना पांच भेदो छे. तेमांथी पेहेला चारना बे भेदो छे, सूक्ष्म अने बादर वनस्पतिकायना बे भेदो छे, प्रत्येक अने साधारण वनस्पतिना, सूक्ष्म अने बादर बे भेदो होय. त्रस जीवोना बेइंद्रि, त्रेइंद्रि, चतुरिंद्रिय तथा पंचेंद्री नामें चार भेदो छे;तेमां पण पंचेंद्रीना सन्नी पंचेंद्री अने असन्नी पंचेंद्री नामें बे भेदो छे. तेमांथी शिखामण, उपदेश तथा वचनोने जे जाणे ते सन्नी पंचेंद्रि कहेवाय, अने मनःप्राण विनाना ते असन्नि पंचेंद्रिय कहेवाय.

त्वचा, जिह्वा, नासिका, आंख तथा कान, ए पांचे इंद्रियो छे, तथा तेउंना अनुक्रमें स्पर्श, रस, गंध, रूप तथा शब्द ए विषयो छे. शंख, कोडां, छीप आदिक विविध आकृतिवाला बे इंद्रिय जीवो छे. जु, मांकड, मंकोडा तथा लीख आदिक त्रेंद्रिय जीवो छे, तथा पतंगीआ माखी, तथा भमरा, डांस आदिक चोरिंद्रिय जीवो छे. तिर्यंच योनिमां उत्पन्न थयेला, जलचर, थलचर, अने खेचर, तथा नारक, मनुष्य अने देव, ए पंचेंद्रिय जीवो छे. मनबल, वचनबल, कायबल, तथा पांचे इंद्रियो, तथा आयुष्य, अने श्वासोच्छ्वास ए दशे प्राणो छे. तेमांथी कायबल, आयुष्य, श्वासोच्छ्वास, तथा इंद्रिय सघला जीवोने होय, अने विकलेंद्रिय तथा असन्नी पंचेंद्रियने वचनबल वधारे अने सन्नीपंचेंद्रियने मनबल सहित संपूर्ण दशे प्राणो होय. देवो तथा नारकीना जीवो पोतानी मेले उत्पन्न थनारा छे अने गर्भजो, जरायुज तथा अंडज (उर तथा इंडाथी थनारा) छे, अने बाकीना संमूर्छिमो छे. तेउंमां संमूर्छिम अने नारकीना जीवो पापी, अने नपुंसक वेदवाला छे; अने देवताउं, स्त्री तथा पुरुषवेदी होय छे, अने बाकीना त्रणे वेदवालाउं होय छे. हवे ते सघला जीवोना व्यवहारी अने अव्यवहारी नामे बे भेदो छे, तेमांथी सूक्ष्मनिगोदमां उत्पन्न थनारा अव्यवहारी कहेवाय, तेथी बाकीना ते अव्यवहारी कहेवाय. सचित्त, अचित्त, अने मिश्र, संवृत्त, विवृत्त अने मिश्र,

तथा शीत, उष्ण अने मिश्र, ए नव प्रकारनी प्राणीउंनी योनियो छे. हवे पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, तथा वाउकाय ए चारे अनुक्रमें सात सात लाख योनिवाला छे, अने प्रत्येक वनस्पतिकायनी दशलाख योनि, तथा साधारण वनस्पतिकायनी चौद लाख योनियो छे, बेइंद्रियो, तेइंद्रियो, तथा चउरिंद्रियोनी अनुक्रमे बबे लाख योनियो छे. मनुष्योनी चौद लाख योनियो छे, तथा नारकी, तिर्यंच अने देवोनी दरेकनी चार लाख योनियो छे. एवी रीतें सघला प्राणीउंनी सर्वज्ञ प्रभुए चोराशी लाख योनियो कहेली छे. जीवोनां चौद जेदो नीचे प्रमाणे छे. सूक्ष्म एकेंद्रि, तथा बादर एकेंद्रि, बेइंद्रि, त्रेइंद्रि, चौरिंद्र, असन्नी पंचेंद्रि, तथा सन्नी पंचेंद्री, ए सातेना पर्यांसा अने अपर्यांसा, एम बे प्रकारथी, चौद जेदो थाय छे. तथा चौद मार्गणा पण नीचे प्रमाणे छे. गति. इंद्रिय, काय, जोग, वेद, ज्ञान, कषाय, संयम, आहार, दृष्टि, लेश्या, जव, सम्यक्त्व, तथा संज्ञी ए चौद मार्गणा छे, गुणठाणां चौद छे, तेउंना नाम नीचे प्रमाणे छे. मिथ्यात्व, सास्वादन, मिश्र, अविरति सम्यग्दृष्टि देशविरति, प्रमत्त, अप्रमत्त, निवृत्तिबादर, अनिवृत्तिबादर, सूक्ष्मसंपराय, प्रशांतमोह, क्षीणमोह, सयोगी, तथा अयोगी, ए चौद गुणठाणांउं छे. हवे मिथ्यात्वनो उदय होवाथी पहेलुं मिथ्यात्व गुणठाणुं होय छे. तेने जद्रकपणानी अपेक्षाथी गुणठाणानी संज्ञा आपेली छे. मिथ्यात्वनो उदय न होय, अने अनंतानुबंधिनी चोकडीनो उदय होते छते, सम्यग् दृष्टिवालुं सास्वादन नामनुं बीजुं गुणठाणुं होय छे, तथा तेनी उत्कृष्टी स्थिति छ आवलीउंनी छे. सम्यक्त्व अने मिथ्यात्वना योगथी त्रीजुं मिश्रगुणठाणुं थाय छे, तथा तेनी उत्कृष्टी स्थिति अंतरमुहूर्त्तनी छे, तथा पञ्चखाणनो उदय न थवाथी चोथुं अविरति सम्यग्दृष्टि नामें गुणठाणुं थाय छे. वली पञ्चखाणनो उदय होते छते पांचमुं देशविरति नामें गुणठाणुं थाय छे. तथा संयम लइ ज्यारे प्रमादमां रहे, त्यारे तेने प्रमत्त नामें छठुं गुणठाणुं होय. ज्यारे संयम लइ प्रमाद न करे, त्यारे तेने अप्रमत्त नामे सातमुं गुणठाणुं होय; ते बन्ने गुणठाणानुं परावर्त्त अंतर्मुहूर्त्तें थया करे छे. पेहेलां कर्मोनी स्थिति घातने नहीं करतो हतो, ते करतो तेथी, ते "अपूर्वकरण" नामें आठमुं गुणठाणुं के जेनुं बीजुं नाम

"नियतबादर" पण छे. अने त्यांथी क्षपक तथा उपशम नामें बे श्रेणिउ मंडाय छे. जेमां बादरकषायोना परिणामो निवर्त्ते, ते "निवृत्तिबादर" नामनुं आठमुं गुणठाणुं जाणवुं.

अने ज्यां परिणामो न निवर्त्ते ते "अनिवृत्तिबादर" नामे नवमुं गुणठाणुं जाणवुं. अने तेमां पण क्षपक तथा उपशम श्रेणि वर्त्ते छे. जेमां सूक्ष्म कीटीमात्र लोभ रहे छे, ते दशमुं क्षपक तथा उपशम श्रेणिवालुं दशमुं "सूक्ष्मसंपराय" नामनुं गुणठाणुं जाणवुं. मोहनो उपशम थये छते "उपशांतमोह" नामनुं अग्यारमुं गुणठाणुं थाय छे; अने मोहनो ज्यारे सत्तामांथी पण क्षय थाय, त्यारे बारमुं "क्षीणमोह" नामें गुणठाणुं थाय छे. घाती कर्मोना क्षयथी ज्यारे केवलज्ञान थाय त्यारे "सयोगी केवली" नामनुं तेरमुं गुणठाणुं थाय छे. अने ज्यारे मन, वचन, तथा कायाना योगो रुंधाइ जाय त्यारे चौदमुं "अयोगी केवली" नामनुं गुणठाणुं कहेवाय. एवीरीतें जीवतत्वनुं स्वरूप कह्युं.

हवे अजीवना पांच भेदो छे, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल, अने पुद्गलास्तिकाय; आ पांचे पण जीवनी साथे द्रव्यतरिके लेखाय छे. तेमांथी कालद्रव्यविना बाकीनां पांचे द्रव्यो प्रदेशनां समूहवालां छे; अने एक जीव द्रव्यविना पांचे द्रव्य, अचेतन तथा अकर्त्ता छे. वली काल द्रव्यविना पांचे द्रव्यो "अस्तिकाय" रूप छे; अने पुद्गलविना सर्वे द्रव्य अरूपी छे; वली तेउ सघला उत्पाद, व्यय, अने ध्रौवात्मक छे. वली तेमां पुद्गलद्रव्य, वर्ण, गंध, रस तथा स्पर्शमय छे; ते पुद्गलना परमाणु अने स्कंध नामें बे भेदोछे तेउमां छुटा रहेला ते परमाणुउ अने मलेला ते स्कंध कहेवाय. वली, गंध, शब्द तथा सूक्ष्मपणाथी स्थूल आकृतिवाला छे, अने अंधकार, आतप, उद्योतना भेद, अने छायात्मक पण समजवा. वली तेउ कार्मण शरीर, मन, भाषा तथा श्वासोछ्वासने देनार छे, तेम सुख, दुःख, जीवित, तथा मृत्युने पण करनारा छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय तथा आकाशास्तिकाय, ए त्रणे, एकेक, तथा अरूपी, निःक्रिय, तथा स्थिर छे. वली तेउ जीवना परिणाम जेटला असंख्याता प्रदेशवाला लोकाकाशने व्यापीने रहेला छे. जेम जलचर जीवोने पाणी सहायकारक छे, तेम जीव अने पु-

लने हलन चलनमां धर्मास्तिकाय मददगार छे. वली जीव अने पुद्गलने स्थिर थवामां, जेम वटेमार्गने वृक्षनी छाया तेम, अधर्मास्तिकाय सहायकारी छे. आकाशद्रव्य, अनंत प्रदेशवालुं होतुं थकुं, लोकालोकने व्यापीने अवकाश देतुं थकुं रह्युं छे. कालना अणुउं छुटा थइने लोकाकाशमां व्यापी रहेला छे; अने मुख्य काल पदार्थोनुं बदलावापणुं तेज छे. ज्योतिःशास्त्रमां जे कालनुं (समय आदिकनुं) परिमाण कहेलुं छे. तेने ज्ञानीउंए व्यावहारिक काल कहेलो छे. आ पृथ्वीमां जे नवी जुनी वस्तुउं थया करे छे, ते सर्व कालनुं माहात्म्य छे. कालक्रीडाथी विडंबित थएला पदार्थो, वर्त्तमानमांथी अतीतमां जाय छे. तथा भावी होय ते वर्त्तमानरूपें थाय छे.

एवी रीतें अजीव तत्वनुं स्वरूप कह्युं.

मन, वचन, अने कायानुं जे कार्य, ते आश्रव कहेवाय, तेना बे भेदो शुभ अने अशुभ. शुभनो हेतु ते शुभ, अने अशुभनो हेतु ते अशुभ.

एवी रीतें आश्रवतत्व कह्युं.

सघला आश्रवोनुं जे रोकावुं ते संवर तथा भवना हेतुरूप कर्मोनुं जे झरी जवुं ते निर्जरा कहेवाय.

एवी रीतें संवर तथा निर्जरा तत्व जाणवां आश्रव संवर अने निर्जरानुं स्वरूप भावनाउंमां आगल विस्तारथी कहेवाशे, तेथी पुनरुक्तिना भयथी अहीं विस्तार कर्यो नथी. कषायपणाथी कर्मयोग्य पुद्गलोने जीव ग्रहण करे छे, तेने, जीवने अस्वतंत्रताना (परतंत्रपणाना) कारणरूप, बंध तत्व जाणवुं ते बंध, प्रकृति, स्थिति अनुभाग अने प्रदेश नामें चार प्रकारनो छे, तेमां प्रकृतिबंध ज्ञानावरणादिक भेदोथी आठ प्रकारनो छे. ते आठ भेदो नीचे प्रमाणे छे. ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र अने अंतराय, नामना छे. कर्मोनो नानो मोटो जे काल, ते स्थितिबंध कहेवाय, अने विपाकमां जे रस आपे ते अनुभाग, बंध कहेवाय, अने कर्मोना भागनी जे कल्पना ते प्रदेशबंध कहेवाय. मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, अने योग. ए पांचे बंधना हेतुउं छे, एवी रीतें बंधतत्वनुं स्वरूप कह्युं. हवे बंधहेतुनो अभाव थवाथी, अने चार घातिकर्मोनो क्षय थवाथी, केवलज्ञान थाय छे, तथा बाकीनां चार

अघाती कर्मोनो क्षय थवाथी मोक्ष थाय छे. त्रणे जुवनोमां देव, दानव, तथा राजाउने जे सुख मले छे, ते सुख, मोक्षसुख आगल अनंतमे जागे पण नथी, ते मोक्षमां आत्मस्वजावथी उत्पन्न थएलुं अतींद्रिय, तथा शाश्वतुं सुख छे, तेथी तेने (मोक्षने) चार वर्गोमां अग्रेसर कहेलो छे.

एवी रीतें मोक्षतत्वनुं स्वरूप कह्युं.

हवे ज्ञान पांच प्रकारनां. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, अने केवलज्ञान अवग्रह तथा बह्वादि जेदोवालुं तथा इंड्रिय अने मनथी उत्पन्न थतुं मतिज्ञान कहेलुं छे. पूर्व, अंगोपांग, तथा प्रकरणोथी विस्तार पामेलुं तथा स्याद्वादवालुं घणा प्रकारनुं श्रुतज्ञान कहेलुं छे. देव अने नारकीउने जव प्रत्येनुं अवधिज्ञान होय छे, अने बाकीनी गतिउमां क्षयोपशमना लक्षणवालुं छ प्रकारनुं अवधिज्ञान होय छे. ऋजुमति विपुलमति ए बे प्रकारनुं मनःपर्यवज्ञान छे, तेमां ऋजुमति अविशुद्ध अने पडी जाय तेवुं छे, अने विपुलमति ते विशुद्ध अने न पडे तेवुं छे. तथा सघला द्रव्य पर्यायने जाणनारुं,*विश्वमां लोचनसमान, अनंत, एक तथा अतींड्रिय, एवुं केवलज्ञान छे. एवी रीतें पांच ज्ञानथी जाणेलो छे तत्वोनो समूह जेणें ते, मोक्षना हेतुरूप जे रत्नत्रय, तेना पेहेला जेदने जाणनारो कहेवाय.जवरूपी वृक्षने उखेडी नाखवामां मदोन्मत्त हाथी समान, तथा मूर्खतारूपी अंधकारने हणवामां सूर्यसमान, तथा जगत्नां तत्वने प्रकाशवामां बीजां नेत्र समान, तथा इंड्रियरूपी हरिणने बांधवामां जाल सरखुं ज्ञान छे.

रुचिर्जिनोक्ततत्वेषु, सम्यक्श्रद्धानमुच्यते ॥
जायते तन्निसर्गेण गुरोरधिगमेन वा ॥ १७ ॥

अर्थः हवे बीजा रत्ननुं स्वरूप कहे छे, जिनेश्वरें कहेला तत्वोमां जे रुचि थवी, ते सम्यग्दर्शन कहेवाय, ते स्वाजाविक रीतें अथवा, गुरुनी सहायताथी थाय छे,

टीका- उपर कहेलां जिनेश्वरें जाषेलां जीवादिक तत्वोमां जे रुचि थवी ते श्रद्धान कहेवाय ते रुचिविना ज्ञान,फलनी सिद्धिवालुं थतुं नथी; कारण के शाक अन्न आदिकना स्वरूपने जाणनारने पण रुचिविना तेना

स्वादना फलनी प्राप्ति थती नथी श्रुतज्ञानवाला अंगारमर्दकाचार्य आदि-
क अजवी तथा डुजवीने पण जिनेश्वरें कहेला तत्वोमां रुचि नही हो-
वाथी, कहेलुं फल मली शक्युं नथी, ते श्रद्धा उत्पन्न थवाना बे जेदो ठे,
एक स्वाजाविकरीतें, अने बीजो, गुरु आदिकथी. स्वाजाविक एटले गुरु
आदिकना उपदेशविना सम्यक् श्रद्धानुं जे कारण थाय ते. ते जे रीतें उ-
त्पन्न थाय ठे , ते बतावे ठे. अनादि अनंत संसारमां ज्रमण करता प्रा-
णिउने ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय तथा अंतराय, ए चार
कर्मोनी उत्कृष्टी त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति ठे, तथा नामकर्म
अने गोत्रकर्मनी उत्कृष्टी वीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति ठे. अ-
ने मोहनीयनी सीतेर कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति ठे. तेमांथी पर्वतप-
रथी पडती नदीमां रहेला पथरना घोलावाना न्यायें, जेम प्रवाहमां अथ-
डाय गोलाकार थाय तेप्रमाणे पोतानी मेले एक कोडाकोडी सागरोपममां
पल्योपमने असंख्यातमें जागे उणी स्थिति राखी, बाकीनी स्थिति नाश
पामते ठते, यथा प्रवृत्तिकरण थवाथी ग्रंथि देशनी समीपें प्राणी आवे
ठे. डुर्जेदएवो जे राग द्वेषनो परिणाम ते ग्रंथि कहेवाय ठे. तथा ते का-
ष्टादिकनी पेठे अत्यंत दृढ ठे. ग्रंथीदेशसुधि आवेला प्राणीउ पण राग-
द्वेषथी प्रेराया थका, कर्मोनी उत्कृष्टी स्थितिने बांधता थका चारे गतिमां
ज्रमण करनारा थाय ठे. तेउमांथी पण जेउ जव्य, तथा जाविजद्रो ठे,
तेउ पोतानुं वीर्य फोरवीनें, अपूर्वकरण करते ठते, जेम पंथीउ केटलोक
मार्ग वटावीने उंची जूमिने उलंघे ठे, तेम तेउ ते आकरी ग्रंथीने उलंघी
जाय ठे. (तेनुं नाम अपूर्व करण कहेवाय ठे.) त्रीजा अनिवृत्ति करण-
थी अंतरकरण करते ठते, वेदवा लायक मिथ्यात्वनां दलीआंने दूर क-
रीने, जे अंतरमुहूर्त्तवालुं उपशम सम्यक्त्व पामे ठे, ते निसर्गहेतुवालुं
(स्वाजाविक) सम्यक्श्रद्धान कहेवाय ठे. गुरुना उपदेशना आलंबनथी
सघला प्राणीउने जे सम्यक्श्रद्धान थाय ठे, तेनुं नाम अधिगमश्रद्धान क-
हेवाय ठे. ते सम्यग् दर्शन, यम, अने शांतताना औषध समान, ज्ञान
अने चारित्रना बीजरूप, तथा तप अने श्रुतनो हेतु ठे. चारित्र अने ज्ञान
विनानुं पण दर्शन वखाणवा लायक ठे, पण मिथ्यात्वरूपि फेरथी दूषित
थयेलां ज्ञान अने चारित्र वखाणवालायक नथी. ज्ञान अने चारित्रवि-

नाना, श्रेणिक राजा सम्यग् दर्शनना माहात्म्यथी तीर्थंकरपणाने पा-मशे. जे दर्शनना प्रभावथी, चारित्र अने ज्ञानविनाना माणसो पण, अ-त्यंत सुखवाला मोक्षने मेलवे छे, तथा जे भवरूपी समुद्रमां वहाण समा-न छे, तथा वली जे दुःख रूपी वनने बालवाने दावानल समान छे, एवा सम्यग्दर्शन नामना रत्नो तमो आश्रय करो? हवे त्रीजा रत्ननुं स्वरूपकहे छे.

सर्वसावद्ययोगानां, त्यागश्चारित्रमिष्यते ॥
कीर्त्तितं तदहिंसादि, व्रतभेदेन पंचधा ॥ १८ ॥

अर्थः– सघला सावद्य योगोनो जे त्याग, ते चारित्र कहेवाय, अने ते अहिंसादिकना भेदोथी पांच प्रकारनुं कहेलुं छे.

टीकाः– थोडा नहि पण सघला सावद्य योगोनो, ज्ञान अने श्रद्धा-पूर्वक त्याग करवो, ते सम्यक्चारित्र कहेवाय. कारण के, ज्ञान दर्शनविना सम्यक् चारित्रनी प्राप्ति दुर्लभ छे. अहीं सर्व शब्द देश-विरति चारित्रने जुदुं, पाडवामाटे छे. आ चारित्र मूलगुण, अने उत्तर-गुणथी बे प्रकानुं छे. हवे पेहेला मूलगुणवाला चारित्रनुं स्वरूप कहे छे. तेना पांच प्रकारो छे. ते मूलगुणो देखाडे छे.

अहिंसा सत्यमस्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहाः ॥
पंचभिः पंचभिर्युक्ता भावनाभिर्विमुक्तये ॥ १९ ॥

अर्थः– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, तेओ पांचे पांच पांच भावनाओथी युक्त थया थका मोक्षमाटे थाय छे.

हवे पहेला मूलगुणनुं स्वरूप कहे छे.

न यत्प्रमादयोगेन, जीवितव्यपरोपणं ॥
त्रसानां स्थावराणां च, तदहिंसाव्रतं मतं ॥ २० ॥

अर्थः– प्रमादना योगथी त्रस अथवा थावर जीवोनो जे, नाश न करवो, तेने अहिंसा व्रत मानेलुं छे.

टीकाः– अर्थात्, संशय, विपर्यय, राग, द्वेष, यादचुक, मनादिकना योगनुं प्रतिकूलपणुं, अने धर्मनो अनादर, ए आठ प्रकारनो प्रमाद छे, अने ते प्रमादना योगथी त्रस अथवा थावर जीवोनो जे नाश करवो ते हिंसा, अने तेनाथी निवर्त्तवुं ते अहिंसा कहेवाय. हवे बीजो मूलगुण.

प्रियं पथ्यं वचस्तथ्यं सूनृतव्रतमुच्यते ॥
तत्तथ्यमपि नो तथ्यमप्रियं चाहितं च यत् ॥ २१ ॥

अर्थः— प्रिय, हितकारि, तथा जे सत्य वचन बोलवुं, ते व्रतनुं नाम सूनृतव्रत कहेवाय, पण जे अप्रिय अने अहितकारि एवुं सत्य पण सत्य न कहेवाय.

टीकाः— प्रिय वचन एटले सांजलतां थकांज जे प्रिय लागे ते, अने पथ्य एटले आगामी कालमां हितकारी. हवे अहीं प्रिय अने पथ्य कहेवानु शुं प्रयोजन छे. ? ते कहे छे. व्यवहारनी अपेक्षाथी जे सत्य होय, ते पण जो अप्रिय होय तो बोलवुं नहीं, जेम चोरने कहेवुं के, तुं " चोर " छे; कुष्टीने कहेवुं के तुं " कुष्टी " छे; इत्यादि अप्रिय होवाथी सत्य पण सत्य न कहेवाय. वली जे सत्य छतां, अहित होय, ते पण सत्य न कहेवाय, जेम शिकारी पुछे के, वनमां हरिणो छे ? तेने कहेवुं के, में हरणो त्यां जोयां छे, एम कहेवाथी ते प्राणीउनी घात थवाथी ते पण सत्य न कहेवाय. हवे त्रीजो मूलगुण कहे छे.

अनादान मदत्तस्या स्तेयव्रतमुदीरितं ॥
बाह्याः प्राणा नृणामर्थो हरता तं हताहि ते ॥ २२ ॥

अर्थः— अदत्त वस्तुनुं जे नहीं लेवुं, तेने अस्तेयव्रत कहेलुं छे, वली धन छे ते, माणसोनां बहारनां प्राणो छे, माटे ते धनने हरनारा माणसें, ते प्राणोनो नाशज कर्यो समजवो.

टीकाः— धनना स्वामिए नहीं दीधेला धननुं जे नहीं ग्रहण करवुं, ते अस्तेयव्रत कहेवाय तेना चार भेदो छे, स्वामि अदत्त, जीव अदत्त, तीर्थंकर अदत्त, तथा गुरु अदत्त नामेछे. तेम पत्थर, तृण, काष्ट आदिकना स्वामिए नहीं दीधेलुं ते " स्वामिअदत्त " कहेवाय, वली जे स्वामिए दीधेलुं, पण जीवें पोते नहीं दीधेलुं ते, " जीवादत्त " कहेवाय; जेम दीक्षाना परिणाम विनाना पुत्र आदिकने, मातपिता गुरुने आपे छे, तेमां गुरुए " जीवादत्त " लीधुं कहेवाय. वली जेनी तीर्थंकरोए मना करेली छे, एवा आधाकर्मिक दिकनुं जे ग्रहण करवुं ते " तीर्थंकरादत्त " कहेवाय वली स्वामिए दीधेलुं तथा आधाकर्मिकादिक दोषरहित, जे

गुरुनी आज्ञाविना ग्रहण करवुं ते " गुर्वदत्त " कहेवाय. वली जे चोरी करवी, ते बाह्य प्राण लीधा बरोबर छे.

हवे चोथो मूलगुण कहे छे.

दिव्यौदारिक कामानां कृतानुमतिकारितैः ॥
मनोवाकायतस्त्यागो ब्रह्माष्टादशधा मतं ॥ २३ ॥

अर्थः—देवसंबंधि, तथा औदारिक कामने, मन, वचन, अने कायाथी, न करवुं न कराववुं, अने जे न अनुमोदवुं, एवी रीतें अढार भेदें ब्रह्मव्रत कहेलुं छे.

दिव्य एटले वैक्रीय शरीर संबंधि, एटले देवोना, अने औदारिक एटले मनुष्य, तथा तिर्यंच संबंधि, तेओना कामोनो जे त्याग, ते ब्रह्मचर्य व्रत कहेवाय. ते अढार प्रकारनुं, एटले मन, वचन अने कायाथी, करुं नहीं, करावुं नहि, अने करताने अनुमोदुं नहीं, एवी रीतें दिव्य तथा औदारिकना मली अढार भेदो थया.

हवे पांचमा मूलगुणनुं स्वरूप कहे छे.

सर्वभावेषु मूर्छायास्त्यागः स्यादपरिग्रहः ॥
यदसत्स्वपि जायेत मूर्छया चित्तविप्लवः ॥

अर्थः— सघला भावोमां जे मूर्छानो मोह त्याग करवो, ते अपरिग्रह व्रत कहेवाय. कारण के, पदार्थो न होय, तो पण मूर्छाने लीधे चित्तनी अस्थिरता रह्या करे छे.

सघला भावो, एटले द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव विगेरेमां मूर्छानो जे त्याग, ते अपरिग्रह व्रत कहेवाय, केवल धननो त्याग करवाथी न कहेवाय अहीं शंका करे छे के, परिग्रहना त्यागथीज "अपरिग्रह" व्रत कही शकाय, त्यारे मूर्छानो त्याग कहेवानी शी जरुर छे ? तेने माटे कहे छे. द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, न होय तो पण मूर्छाथी समता सुखनो नाश थाय छे. धन न होय तो पण मूर्छाथी, राजगृहीनगरीना द्रमकनी पेठे, मननो क्लेश दुर्गतिमां पाडवाने कारणरूप थइ पडे छे. वली जो के द्रव्य, क्षेत्र काल, भाव आदिकनी सामग्री होते छते पण, तृष्णाविनाना मनवालाओने शांतसुखनी प्राप्ति होवाथी, चित्तना विप्लवनो अ-

नाव होय छे. अने तेथी करीनेज, धर्मोपकरणोने धारनारा, तथा शरीर अने ते उपकरणोमां पण ममतारहित एवा साधुओने अपरिग्रहपणुं कहेलुं छे. जेम घोडाने घणां आज्रूषणो पेहेरावेलां होय, तो पण तेमां जेम तेनुं निःस्पृहीपणुं छे, तेम मुनिने पण धर्मोपकरण आदिकमां पण निःस्पृहीपणुं छे. वली पण जेम धर्मोपकरणवाला, तथा मूर्छारहित मुनिओने परिग्रहपणानो दोष नथी, तेमज, गुरुए कहेला धर्मोपकरण धारनारी तथा त्रण रत्नोसहित, एवी साधवीओने पण धर्मोपकरणना परिग्रहमात्रथीज मोक्षनो अपवाद (जे दिगंबरीओ) कहे छे, ते केवल तेमनो बकवादज छे. हवे आगल कह्युं छे के, पांच पांच जावनाओथी युक्त, आ व्रतो जोइयें, तेने माटे कहे छे.

जावनाजिर्जावितानि पंचजिः पंचजिः क्रमात् ॥
महाव्रतानि नो कस्य साधयंत्यव्ययं पदं ॥ २५ ॥

अर्थः—अनुक्रमें पांच पांच जावनाओथी जावित थएलां महाव्रतो कोने मोक्षपद साधी आपतां नथी.

टीकाः—जेओ वडे करी महाव्रतोमां गुणोनो आरोप करी शकाय, ते जावनाओ कहेवाय.

हवे पेहेला व्रतनी जावना कहे छे.

मनोगुप्त्येषणादाने याजिः समितिजिः सदा ॥
दृष्टान्नपानग्रहणे नाहिंसां जावयेत्सुधीः॥ २६ ॥

अर्थः—बुद्धिमान् माणसें मनोगुप्ति, एषणासमिति, आदान जंडनिखेपणा समिति, इर्यासमिति, तथा अन्नपाणीने जोइने लेवावडे करीने, हमेशां अहिंसा (दया) जाववी जोइयें.

टीकाः—पेहेली मनोगुप्तिनी जावना, एषणा एटले शुद्ध आहार ग्रहण करवारूप समिति, आदान जंडनिक्षेपण समिति एटले पाट पाटला जांड आदिक लेवा मुकावा संबंधि समिति, इर्यासमिति एटले जवा आववामां रखाती समिति, तथा जोइने अन्नपाणी लेवुं, अने जमवुं, ते पांचे जावनाओए करीने अहिंसा जाववी. अहीं गुप्ति तथा समिति महाव्रतोनी जावनाए करी मतार्थ छे, तो पण "पंचसमिति" इत्यादि ग्रंथे क-

रीनें जे फरीने कहेवाएलुं छे, ते गुप्ति अने समितिने उत्तर गुण कहेवा माटे छे. अही मनोगुप्तिने जे जावनापणुं कहेलुं छे, ते हिंसामां मनोव्यापारनुं प्राधान्यपणुं होवाथी कहेलुं छे, कारण के शास्त्रमां पण संजलाय छे के, मनोगुप्तिथी नथी जावेल अहिंसाव्रत जेणें एवा प्रसन्नचंद्र राजर्षिए हिंसा न करता थका पण, सातमी नरकने योग्य कर्म उपार्जन कर्युं अने एषणा समिति तो अतीशे अहिंसा माटे उपकारी छे, तेथी तेने जावनापणुं कहेलुं छे, दृष्टिपूर्वक अन्नपाणीनुं जे ग्रहण करवुं अने दूषितनो त्याग करवो, ते पण अहिंसाव्रतना उपकार माटे छे. तेने पण पांचमी जावनामां गण्युं छे, हवे बीजा व्रतनी जावना कहे छे,

हास्यलोजजयक्रोध प्रत्याख्यानैर्निरंतरं ॥
आलोच्य जाषणेनादि जावयेत्सूनृतं व्रतं ॥ २७ ॥

अर्थः— हास्य, लोज, जय, अने क्रोधनां पचखाणपूर्वक, अने विचार पूर्वक, बोलवावडे करीनें सत्यव्रतने जाववुं.

टीकाः— हांसी करतां थकां लोजने वश थइ, धननी इछाथी, जयने वश थइ, प्राणादिकना रक्षणनी इछाथी, तथा क्रोधसहित मनपणाथी जूठुं बोलाय छे. ए हास्यादिक चार जावनाउ जाणवी, तथा सम्यग्ज्ञानपूर्वक विचारिने बोलवुं, एटले " माराथी जुठुं मा बोलाउं " एवी रीतें मोहने दूर करवाथी, जे सत्य) बोलवुं, ते पांचमी जावना जाणवी. कारण के मोह छे ते मृषावादनो प्रसिद्ध हेतु छे. कारण के, कह्युं छे के राग, द्वेष अथवा मोहथी जे वाक्य बोलाय छे, ते जूठुंज छे. हवे त्रीजा व्रतनी जावना कहे छे.

आलोच्यावग्रहं याञ्चाऽजीक्ष्णावग्रहयाचनं ॥
एतावन्मात्रमेवैतदित्यवग्रहधारणं ॥ २८ ॥
समानधार्मिकेज्यश्च तथावग्रहयाचनं ॥
अनुज्ञापितपानान्नासनमस्तेयजावना ॥ २९ ॥

अर्थः—विचारपूर्वक अवग्रह वारंवार अवग्रह " आटलीज जगो मारे जोश्यें " एवो अवग्रह साधर्मी पासेथी, तथा गुरुनी अनुज्ञाथी अन्नपाणी आदिकनुं ग्रहण करवुं, ते पांचे अस्तेयव्रतनी जावनाउ जाणवी.

टीकाः— आलोच्य एटले मनथी विचारिनें अवग्रहनी याचना करवी ते अवग्रह; इंद्र, राजा, मंडलाधीश, शय्यातर, तथा साधर्मिक, ए पांच प्रकारनो छे. तेउमांथी पूर्वोत्तर एक बीजाने बाधाकारक छे. तेमां इंद्रनो अवग्रह एटले, दक्षिण लोकार्ध माटे सौधर्मेंद्रनी याचना तथा उत्तर लोकार्धमाटे ईशानेंद्रनी याचना करवी. राजा एटले चक्रवर्ती एवा भरत आदिकनो अवग्रह जाणवो ग्रहपति एटले मंडलाधीशनी याचना करवी ते, शय्यातर एटले घरना मालेकनी याचना करवी ते. साधर्मिक एटले साधुउ, तेउनी जग्यामाटे याचना करवी ते. एवी रीतें अवग्रहोनी याचना करवी; कारण के, मालिकनी याचना विना आ लोकमां पण कजीआ आदिक क्लेश थाय, अने परलोकमां पण अदत्तादाननुं पाप लागे. एवी रीतें पेहेली जावना जाणवी. मालीकनी एकवार याचना कर्याबाद वारंवार पण याचना करवी कारण के पेहेलां रजा लीधी होय तोपण, मांदगी आदिकनी अवस्थामां, मूत्र विष्टा, चरणधोवा आदिकथी गृहना मालिकने पीडा न थाय, माटे वारंवार पण तेनी याचना करवी. एवी रीतें बीजी जावना जाणवी. आटलीज जगोनो मारे खप छे, एम विचारि, तेटलीज जगो वापरवानी रजा लेवाथी देनारनुं चित्त खेदाय नहीं अने पोताने पण अदत्तादानथी उत्पन्न थता कर्मनो बंध न थाय. एवी रीतें त्रीजी जावना जाणवी. साधर्मिक एटले ग्रहण करेल छे, तुल्यशासन जेउये, एवा पासेथी तेउये पूर्वे ग्रहण करेला क्षेत्रनी याचना करवी, अने तेउनी रजा मल्याबाद तेमां रहेवुं; एम न करे तो चोरी करी कहेवाय. एवी रीतें चोथी जावना जाणवी. गुरुनी रजा लइ ग्रहण करेला निर्जीव, निर्दोष अने कल्पे एवां, अन्न पाणी लइनें आलोयणापूर्वक, गुरुने देखाडीनें, तेमनी रजा मलवाथी, मंडलीमां बेसीने, अथवा एकलां आहार करवो; अने उपलक्षणथी गुरुनी अनुज्ञा लइ वस्त्र पात्र आदिकने पण ग्रहण करवां; अने तेम करवाथी अस्तेयव्रतनुं उल्लंघन थतुं नथी. एवी रीतें पांचमी जावना जाणवी. हवे चोथा व्रतनी जावना कहेछे.

स्त्रीषंढपशुमद्वेश्मासनकुड्यांतरोज्झनात् ॥
सरागस्त्रीकथात्यागात् प्राग्रतस्मृतिवर्जनात् ॥ ३० ॥

स्त्रीरम्यांगेक्षणस्वांगसंस्कारपरिवर्जनात् ॥
प्रणीतात्यशनत्यागागात् ब्रह्मचर्यं तु भावयेत्॥ ३१ ॥

अर्थः— स्त्री, नपुंसक, तथा पशुवालां घर तेओनां आसन तथा, भींतांतरना त्याग करवाथी तथा रागसहित स्त्रीकथाना त्यागथी तथा पेहेलां भोगवेला विलासने न याद लाववाथी तथा स्त्रीना मनोहर अंगोनुं जोवुं अने पोताना शरीरने शणगारवुं ते बन्नेना वर्जवाथी तथा वह्लालां अने वधारे भोजनना त्यागथी ब्रह्मचर्यव्रतने भाववुं.

टीकाः—देव अने मनुष्यना भेदथी स्त्रीओना बे भेदो छे. तेओ सचित्त, तथा चित्र आदिकथी बनावेली अचित्त होय छे. अने नपुंसको त्रीजा वेदना उदयवालां होतां थकां, महामोह कर्मवालां, स्त्री तथा पुरुष बन्नेने सेववामां रक्त होय छे. तिर्यंच योनिमां उत्पन्न थएलां, गाय, भेंस, घोडी बकरी, गाडर आदिक जाणवां. तेओनां जोडलांओ, के जेओ वच्चे मैथुननो संभव छे, तेओथी भरेलां घर आसन विगेरे, तथा भित्यंतरमां पण रहेलां जोडलांओनो विकार उपजावनारो शब्द सांभलवाथी पण ब्रह्मचर्य व्रतनो भंग थाय, माटे तेओनो सघलानो त्याग करवो. एवी रीतें पेहेली भावना जाणवी. मोहना उदयवाला माणसनी स्त्रीनी साथे कथा, अथवा रागवाली स्त्रीओनी अथवा स्त्रीओ साथे कथा, तेनो त्याग अथवा रागवाली स्त्रीनी कथा, एटले, देश जाति, कुल, शणगार, वचन, गति, विलास, चेष्टा, हास्य, लीला, कटाक्ष, प्रेम, क्लेश, विगेरे स्त्रीओना वर्णनवाली कथा, खरेखर चित्तरूपी समुद्रने क्षोभावे छे.एवी रीतें बीजी भावना जाणवी. दीक्षा लीधा पेहेलां गृहस्थपणामां स्त्रीओ साथे जे भोगविलासो भोगव्या होय तेनुं जे स्मरण करवुं, तेरूपी काष्टोथी कामरूपी अग्नि जाज्वल्यमान थाय छे. (माटे तेनो त्याग करवो.) ए त्रीजी भावना जाणवी. अविवेकी माणसनी अपेक्षाथी स्त्रीओनां मुख, नयन, स्तन, जघन, आदिक मनोहर अंगोनुं, जे आश्चर्य रसथी, अत्यंत आंखो फाडीने जोवुं; तेनो त्याग करवो कारण के फक्त रागरहितने ते जोवुं ते तो निर्दोषज छे. कह्युं छे के, चक्षुगोचर थएलाने न जोवुं, ते तो अशक्य छे, पण तेमां जे राग द्वेष राखवा ते डाह्या माणसे छोडवुं. वली पोताना शरीरनां स्नान,

विलेपन, धूप, तथा नख, दांत केश आदिकनो शणगार तेनो पण त्याग करवो. स्त्रीनां मनोहर अंगोपांग जोवामां जेनी आंखो तरलित चपल वाताकी रहेली थएली छे, ते माणस दीवानी शिखामां पतंगीआंनी पेठे नाश पामे छे. तेम अशुचिथी भरेला शरीरने शणगारवामां मूढ थएलो माणस, तेथी उत्पन्न थता विकल्पोए करीनें फोकट पोताने क्लेशमां नाखे छे. एवी रीतें चोथी भावना जाणवी. हवे पुष्ट तथा मधुरआधिक अति आहार करवाथी प्रधान धातुउनुं परिपोषण थवावडे करीने अब्रह्म सेववानी इछा थाय, तेथी पण तेने केवल वर्जवुं एटलुंज नहीं, पण तेम करवाथी शरीरने पण पीडा थाय छे, माटे पण ते वर्जवुं एवी रीतें पांचमी भावना जाणवी. एवी रीतें नव प्रकारें ब्रह्मचर्यनी गुप्ति ग्रहण करवाथी ब्रह्मचर्यव्रतनी पांच भावनाउ थाय छे.

हवे पांचमा व्रतनी भावना कहे छे.

स्पर्शे रसे च गंधे च रूपे शब्दे च हारिणि ॥
पंचस्वितींद्रियार्थेषु गाढं गार्ध्यस्य वर्जनं ॥ ३१ ॥
एतेष्वेवामनोज्ञेषु सर्वथा द्वेषवर्जनं ॥
आकिंचन्यव्रतस्यैवं भावनाः पंच कीर्त्तिताः ॥ ३२ ॥युग्मं॥

अर्थः—मनोहर एवा, स्पर्श रस, गंध, रूप तथा शब्द ए पांचे इंद्रियार्थोमां अति आसक्तिपणानो जे त्याग, तथा न गमे एवा तेउमां सर्वथा द्वेषनो जे त्याग ते पांचे आकिंचन्यव्रतनी भावनाउ जाणवी.

एवी रीतें मूलगुणरूप चारित्रने कहीने उत्तर गुणरूप चारित्रनुं वर्णन करे छे.

अथवा पंचसमिति गुप्तित्रयपवित्रितं ॥
चरित्रं सम्यक् चारित्रमित्याहुर्मुनिपुंगवाः ॥ ३४ ॥

अर्थः—पांच समिति, तथा त्रण गुप्तिउथी पवित्र थयेला चरित्रने मुनिराजोए "चारित्र" कहेलुं छे.

टीका- अरिहंत प्रभुना सिद्धांतोने अनुसारें जे इष्ट, ते समिति कहेवाय, अने मुमुक्षुए आत्माना रक्षणमाटे जे योगनो निग्रह करवो ते "गुप्ति" कहेवाय.

हवे ते समिति अने गुप्तिनां नामो कहे छे.

ईर्याभाषेषणादान निक्षेपोत्सर्गसंज्ञिकाः ॥
पंचाहुः समितीस्तिस्रोगुप्तीस्त्रियोगनिग्रहात् ॥ ३५ ॥

अर्थः—ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदानभंडनिखेपणा समिति, अने उत्सर्गसमिति, एटले पारिठावणिका समिति, ए पांचेने (तीर्थंकरोए) समितिओ कहेली छे. तथा मन, वचन, अने कायानो जोग तेओनो निरोध एटले सिद्धांतने अनुसारें मार्गनुं स्थापवुं, अने उन्मार्गनुं निवारवुं ते, त्रणे गुप्तिओ कहेली छे. हवे इर्या समितिनुं लक्षण कहे छे.

लोकातिवाहिते मार्गे चुंबिते भास्वदंशुभिः ॥
जंतुरक्षार्थमालोक्य गतिरीर्या मता सतां ॥ ३६ ॥

अर्थः—लोकोना पगरवावाला तथा सूर्यना किरणोथी चुंबित थएला मार्गमां प्राणीओनी रक्षा माटे जे जोइने चालवुं तेने संत पुरुषोए " ईर्या समिति " कहेली छे.

टीकाः—त्रस तथा थावर जीवोना अभय दानमां तत्पर एवा मुनिने, जरुरीआत काम माटे ज्यारे रस्ते चालवुं पडे त्यारे प्राणीनी तथा पोतानी रक्षा माटे, पगथी मांडीनें गाडांनां धोंसरासुधी लांबे नजर करी जे चालवुं ते " ईर्या समिति " कहेवाय. केवा मार्गे चालवुं ? ते कहेछे. ज्यां लोकोनो पगरवो घणो होय, तेवा मार्गमां तथा ज्यां सूर्यना किरणो पडता होय, तेवा मार्गमां पण चालवुं पगरवावाला मार्गमां चालवाथी मुनिने छ काय जीवनी विराधना थती नथी. अने रात्रिए चालवाथी पण मार्गमां रहेला प्राणीओनी विराधना थाय; अने एवी रीतें विधिपूर्वक चालवाथी, कदाच जीवहिंसा थाय, तो पण तेनुं ते मुनिने पाप लागतुं नथी.

हवे भाषासमितिनुं स्वरूप कहे छे.

अवद्यत्यागतः सर्वजनीनं मितभाषणं ॥
प्रिया वाचंयमानां सा भाषासमितिरुच्यते ॥ ३७ ॥

अर्थः—अवद्य (दोष) ना त्यागथी, सर्वने प्रियकर तथा परिमाणवालुं जे वचन, ते मुनिउने प्रिय एवी " ज्ञाषासमिति " कहेवाय छे.

" अवद्य " एटले ज्ञाषादोषविनानी वचनशुद्धिवाली, तथा सारी रीतें अज्यास करेली, तेम धूर्त्त, कामी, मांसाहारी, चोर, तथा चार्वाक (नास्तिक) आदिकनी ज्ञाषानो कपटरहित त्याग करवो; अने वली सघलाउने हितकारी, तथा थोडुं अने घणुं कार्य करनारुं मितवचन बोलवुं; ते "ज्ञाषा समिति" कहेवाय अने ते ज्ञाषासमिति मुनिउने प्रियछे.

हवे एषणा समितिनुं स्वरूप कहे छे.

द्विचत्वारिंशता ज्निक्षा, दोषै र्नित्यमदूषितं ॥
मुनिर्यदन्नमादत्ते, सैषणासमितिर्मता ॥ ३८ ॥

अर्थः—हमेशां ज्निक्षाना बेंतालीश दोषोथी दूषित न थयेला एवा जे अन्नने मुनि ग्रहण करे छे, तेने " एषणा समिति " मानेली छे.

टीकाः—बेंतालीश दोषोना त्रण ज्ञेदो छे; उद्गम, उत्पादन, तथा एषणा तेमां उद्गमना शोल ज्ञेदो नीचे प्रमाणे छे.

यतिने मनमां लावी सचित्तनुं अचित्त करवुं, अथवा अचित्तने पकाववुं, ए पेहेलो " आधाकर्मी " नामे दोष जाणवो. पूर्वे तैयार करेला ज्ञात लाडु आदिकने यतिने उद्देशीने दहीं गोल आदिकथी स्वादिष्ट करवा ते बीजो " उद्देश " नामनो दोष जाणवो. जे शुद्ध होय, तेने आधाकर्मीथी मिश्रित करवुं, ते त्रीजो " पूतिकर्म " नामें दोष जाणवो. जे पोतानेमाटे तथा साधुमाटे प्रथमथीज कल्पीने बनाववुं ते चोथा " मिश्र " नामें दोष जाणवो. साधुए मागेलां जे क्षीर आदिक तेने जुदां करी पोताना ज्ञाजनमां स्थापी राखवां ते " स्थापित " नामे पांचमो दोष जाणवो. विवाहादिक करवाने हजी वखत होय, तो पण साधुने त्यां रहेला जाणी, तेउना लाज्ञने अर्थे तेज वखते जे विवाहादिक करवा ते छठो " पाहुडी " दोष जाणवो. अंधकारमां रहेली वस्तुने दीवा आदिकथी शोधी लावी साधुने आपवी ते सातमो " प्रादुःकरण " नामें दोष जाणवो. साधुनेमाटे किंमत आपी जे खरीद करवुं ते आठमो " क्रीत " दोष जाणवो.

साधुने माटे उधार अन्नादिक लइने जे आपवुं ते नवमो प्रामित्यक दोष जाणवो. पोतानी वस्तुने परसाथे अदला बदली करीने जे मुनिने आपवुं ते दशमो "परिवर्त्तित" दोष कहेवाय. मागी लावीने जे साधुने आपवुं ते अग्यारमो "अभ्याहृत" नामें दोष कहेवाय. कुडला आदिकमां भरेलुं घी आदिक देवामाटे ते कुडलाना मुखपरथी जे माटी आदिकने दूर करवी ते बारमो "उद्भिन्न" दोष कहेवाय. उपली भूमिथी, शिकेथी, अथवा भोंयरामांथी कहाडीने जे साधुने आपवुं, ते "मालापहृत" नामें तेरमो दोष जाणवो. राजा अथवा चोर जोरावरीथी कोइनी पासेथी उचकावी, जे साधुने आपे ते चौदमो "आछेद्य" दोष जाणवो. आखी मंडलीए नहीं दीधेलुं अथवा नहीं रजा आपेलुं, एवुं जे साधुने ते मांहेलो एक जण आपे, तेने "अनिसृष्ट" नामें पंदरमो दोष जाणवो. स्वार्थ होते छते साधुउनुं आववुं सांभलीने, तेने माटे जे धान्य आदिकनुं वाववुं, ते "अध्यवपूरक" नामनो सोलमो दोष जाणवो.

उत्पादनाना पण साधुथी थता सोल दोषो नीचे प्रमाणे छे. गृहस्थनां बालकने, दूध पावुं, नवराववुं, शणगारवुं, रमाडवुं, तथा खोलामां बेसासाडवुं, इत्यादि कर्म करवाथी मुनिने "धात्री पिंड" नामें पेहेलो दोष लागे छे. दूतनी पेठे संदेशो लइ जवाथी साधुने बीजो "दूतीपिंड नामें" दोष लागे छे. त्रणे काल संबंधि, लाभालाभने कहेवाथी त्रीजो "निमित्तपिंड" नामें दोष साधुने लागे छे. भिक्षा माटे पोताना कुल, जाति, कर्म, शिल्प आदिकनां वखाण करवां, तेने चोथो "आजीवपिंड" नामें दोष जाणवो. ब्राह्मण श्रमण आदिकना भक्तोपासे, पोताने पण तेउनो भक्त जणावी, तेमनी पासेथी जे भिक्षा लेवी, तेने पांचमो "अवनीपिंड" नामें दोष जाणवो. औषध आदिकने, भिक्षामाटे देखाडवाथी साधुने "चिकित्सापिंड" नामे छठो दोष जाणवो. वली भिक्षामाटे, पोताना विद्या तप आदिकना प्रभावने देखाडवा तथा पोतानुं राज्यमानितापणुं जणाववुं, तथा क्रोधना फलोनुं देखाडवुं, तेथी "क्रोधपिंड" नामें सातमो दोष साधुने लागे. लब्धिनी प्रशंसाथी उत्तान थएला तथा परें अवगणना करेला, गृहस्थाभिमानने उत्पन्न करता मुनिने आठमो "मानपिंड" नामें दोष लागे छे. भिक्षामाटे जुदा जुदा वेष, तथा भाषानुं बदलवुं; तेने "माया-

पिंड" नामे नवमो दोष जाणवो. अति लोजथी जिक्षामाटे घणुं जटकवुं तेने "लोजपिंड" नामें दशमो दोष जाणवो. पेहेलां गृहस्थोना मा बापनी, तथा पाछलथी सासुससरानी स्तुतिपूर्वक, तेमनी साथे पोतानो परिचय जणावी जे जिक्षा लेवी, तेने "पूर्वपश्चात्संस्तव" नामें अगीआरमो दोष जाणवो. जिक्षामाटे विद्या, मंत्र, चूर्ण, तथा योगनो उपयोग करवो, तेने "विद्यादिपिंड" नामे बारमो, तेरमो, चौदमो तथा पंदरमो एम चार दोषो जाणवा. तेनुं स्वरूप नीचे प्रमाणे छे. "विद्या" एटले मंत्र, जप तथा होमादिकथी सधाय एवी देवताधिष्टित विद्याउं जाणवी.

"मंत्र" एटले पाठमात्रथी सिद्ध थतो पुरुषने आधीन मंत्र जाणवो. "चूर्ण" एटले अंजन आदिक, के जेथी अंतर्ध्यान थइ शकाय. "योग" एटले पगना लेपआदिक, के जेउं सुजाग्य, अथवा दुर्जाग्यने करनारा छे. ए चारे विद्यादिपिंडो जाणवा. जिक्षामाटे गर्जनुं स्तंजन, गर्जनुं धारण करावबुं, प्रसव करावबो, रक्षाबंधन करावबुं, इत्यादिकथी साधुने "मूलकर्मपिंड" नामनो सोलमो दोष लागे छे. हवे गृहस्थ तथा साधु बन्नेना मलवाथी उत्पन्न थता दश एषणाना दोषो देखाडे छे. आधाकर्मादिक, दोषनी शंकासहित जे पिंड ग्रहण करवो, तेथी पेहेलो "शंकित" नामें दोष लागे. सचित्त अथवा अचित्त एवा मधुआदिक निंदनीय पदार्थोना संघट्टवालुं जे पिंड ग्रहण करवुं, तेने "प्रक्षित" नामें बीजो दोष जाणवो. छ कायमां स्थापेलुं जे अचित्त पण अन्न लेवुं, तेने "निक्षित" नामें त्रीजो दोष जाणवो. सचित्त फलादिकथी जे ढंकाएलुं ग्रहण करवुं, तेने पिहित नामें चोथो दोष जाणवो.

देवाना पात्रमां रहेला पदार्थमां नाखीने, ते वासणथी जे देवुं, तेने "संदूत" नामे पांचमो दोष जाणवो. बालक, वृद्ध, नपुंसक, ध्रुजतो, आंधलो, मदोन्मत्त, हाथ पगविनानो बेडीवालो, पादुकावालो, खांसीवालो अथवा तोडनार फाडनार कंडक दलनार, जुंजनार कातरनार पिंजनार, आदिक छ कायना विराधक, तेम गर्जिणी, तेडेल छोकरांवाली, विगेरे पासेथी साधुने आहार लेवो कल्पे नहीं, ए छठ्ठो दोष जाणवो. देवा लायक जे खांडआदिक वस्तु, तेने अचित्त अनाज आदिकथी मिश्र थएलुं देवुं तेने सातमो "उन्मिश्र" नामें दोष जाणवो. अचित्तपणाने पाम्या विनानुं जे

देवुं, तेने अपरिणत नामें आठमो दोष जाणवो. श्लेष्म आदिकथी लेपायला हाथ अथवा वासणथी अन्नादिक देवाथी "लिप्त" नामे नवमो दोष जाणवो. घी आदिकना जमीनपर छांटा पाडीनें बोराववाथी "छर्दित" दोष जाणवो; कारण के, घी आदिक त्यां ढोलावाथी त्यां रहेला प्राणीउने मधुबिंदुना दृष्टांतथी विराधनानो संजव छे. एवी रीतें उद्गम, उत्पादन, तथा एषणाना सघला दोषो मलवाथी बेंतालीश दोषो थाय छे. तेउ सघला भिक्षाना दोषो छे. ते दोषोयें करीनें रहित जे अशन, खादिम, अने स्वादिम, अने उपलक्षणथी पाणी, रजोहरण, मुहपत्ति, चोलपट्टो, पात्रां आदिक स्थविरकल्पीने लायकनां चौद उपकरणो, तथा जिकल्पीनी बार उपधीउ, तथा साधवीनी पचीस उपधीउ तथा उपलक्षणथी शय्या, पाट, पाटला, दंडा आदिक पण ग्रहण करवुं, कारण के वर्षा, हेमंत, ग्रीष्म ऋतुमां रजोहरण, पाट, पाटला आदिकविना पाणीना कणीआथी जरेली जमीनपर महाव्रतनुं रक्षण थइ शके नहीं उपर कहेली सघली वस्तुउने उपर कहेला दोषरहित जे मुनि ग्रहण करे तेने "एषणा समिति" जाणवी.

उपर कहेली एषणा समिति गवेषणामात्र कहेली छे, अने उपलक्षणथी ग्रासैषणा पण जाणवी. तेमां पांच दोषो लागे छे तेउनां नाम नीचे प्रमाणे छे. संयोजना, प्रमाणातिरिक्तता, अंगार, धूम, तथा करणाजाव नामें छे. रसना लोजथी पुडला आदिकने अंदर तथा उपरथी घी खांड आदिकमां जे ऊबोलवां, तेने "संयोजना" दोष जाणवो. जेटलो आहार करवाथी धीरज, बल, संयम, तथा मन, वचन, कायाना योगने बाधा न आवे, तेटलो आहार करवो, कारण के, अधिक आहार करवाथी वमन, मृत्यु तथा व्याधि थाय छे, तेने तजवो. ते दोषने "प्रमाणातिरिक्तता" नामें दोष जाणवो. स्वादिष्ट अन्ननें अथवा तेना देनारने वखाणतो थको जे जोजन करे, ते रागरूपी अग्निथी चारित्ररूपी काष्टोने बालीने कोलसारूप करवाथी "अंगार" दोषने उत्पन्न करे; अने तेउनी निंदा करतो थको, चारित्ररूपी लाकडांने बालतो थको "धूम" दोषने उत्पन्न करे. मुनिने जोजन करवानां छ कारणो छे, ते नीचे प्रमाणे छे. जूखनी वेदना सहन न थवाथी क्षीण साधुनी वैयावच्च माटे, ईर्यासमितिनी शुद्धिमाटे, संयम पालवामाटे, जीविलव्यमाटे, तथा ध्यानने स्थिर क-

रक्षामाटे जोजन करवानी जरूरीआत डे. तेउना अजावे जोजन करे तो "कारणाजाव" नामें दोष लागे.

हवे आदानजंडनिक्षेपणा समितिनुं स्वरूप कहे डे.

आसनादीनि संवीक्ष्य प्रतिलिख्य च यत्नतः ॥
गृह्णीयान्निक्षिपेद्वा यत् सादानसमितिः स्मृता ॥ ३ए ॥

अर्थः— आसनादिकने, जोइने, तथा जतना पूर्वक पडिलेहीनें, ग्रहण करवां तथा मूकवां, तेनुं नाम "आदानजंडनिक्षेपणा" समिति कहेलुं डे.

टीकाः— आसन अने आदि शब्दथी, वस्त्र, पात्र, पाटीयां, दंडादिकनुं पण ग्रहण करवुं तेउने आंखेथी सारी रीतें जोवां, तथा उपयोग पूर्वक रजोहरणादिकथी पडिलेहवां, कारण के, उपयोगपूर्वक पडिलेहणा न करावाथी डकायनो विराधक थाय डे.

हवे उत्सर्गसमिति एटले पारिष्ठापणिका समितिनुं स्वरूप कहे डे.

कफमूत्रमलप्रायं निर्जंतुजगतीतले ॥
यत्नाद्यदुत्सृजेत्साधुः सोत्सर्गसमितिर्जवेत् ॥ ४० ॥

अर्थः—साधु, जे कफ, मूत्र, मल आदिकने जंतुविनानी पृथ्वीपर नाखे, तेनुं नाम "उत्सर्ग समिति," एटले "पारिठावणिका" नामनी समिति जाणवी.

टीकाः— अहीं आदि शब्दथी परठववा लायक, वस्त्र, पात्र, अन्न, पाणी आदिकनुं पण ग्रहण करवुं.

हवे गुप्तियोमांहेनी मनोगुप्तिनुं स्वरूप कहे डे.

विमुक्तकल्पनाजालं समत्वे सुप्रतिष्ठितं ॥
आत्मारामं मनस्तज्ज्ञैर्मनोगुप्तिरुदाहृता ॥ ४१ ॥

अर्थः— आर्त्त, रौद्र ध्यानवाली कल्पनाथी रहित, ए पेहेली तथा शास्त्रानुसारें परलोक साधवामाटे धर्मध्यानवाली माध्यस्थ परिणति नामें बीजी, तथा सारुं, मारुं जे चिंतवन, तेथी रहित, अने योगनिरोधावस्थावाली आत्मारामता नामनी त्रीजी, एम त्रण प्रकारनी मनोगुप्ति जाणवी. अथवा ते त्रणे जेदो मनोगुप्तिनां विशेषण तरिके समजवां.

हवे वचनगुप्तिनुं स्वरूप कहे छे.

संज्ञादिपरिहारेण यन्मौनस्यावलंबनं ॥
वाग्वृत्तेः संवृतिर्वा या सा वाग्गुप्तिरिहोच्यते ॥ ४२ ॥

अर्थः– संज्ञा आदिकने पण तजीने जे मौन धारण करवुं, अथवा वाचावृत्तिनो निरोध करवो, ते "वाग्गुप्ति" कहेवाय छे.

टीकाः संज्ञा एटले, मोहोडुं, आंख, भ्रुकुटी आदिकना विकारथी, तथा आंगलीना आछोटन आदिकथी, कार्य साधवावाली चेष्टाउं, तथा आदि शब्दथी, ढेफुं फेकवुं, खांसी करवी, हुंकारो जणवो, इत्यादिकनुं पण ग्रहण करवुं; इत्यादि संज्ञाउने छोडीने जे मौन रहेवुं ते वचनगुप्ति कहेवाय, कारण के, संज्ञादिकथी जो प्रयोजनने सूचवे, तो तेनुं मौन निष्फल छे; ते पेहेली "वचनगुप्ति" जाणवी. तथा वांचवा पूछवामां व्याकरणना नियमोना विरोधरहित, मुख आगल वस्त्र राखीने जे बोलवुं, तेने बीजी "वचनगुप्ति" जाणवी. उपला बन्ने प्रकारोथी वचनगुप्तिनुं सर्वथा निरोधपणुं, तथा शुद्ध बोलवा रूप स्वरूप अंगीकार कर्युं अने तेथी भाषासमिति, अने वाग्गुप्तिनो तफावत जणाइ आवे छे, कारण के भाषासमिति तो फक्त शुद्ध बोलवा रूपेंज छे.

हवे कायगुप्तिनुं स्वरूप कहेछे. ते कायगुप्तिना बे भेदो छे.

एक चेष्टा विनानी, तथा बीजी नियमित चेष्टावाली. तेमांथी पेहेलीनुं स्वरूप कहेछे.

उपसर्गप्रसंगेपि कायोत्सर्गजुषो मुनेः ॥
स्थिरीभावः शरीरस्य कायगुप्तिर्निगद्यते ॥ ४३ ॥

उपसर्ग एटले, देव, माणस अथवा तिर्यंचथी थता उपद्रवो, तथा उपलक्षणथी क्षुधा तृषाआदिक परिसहो वखतें पण, कायोत्सर्गमां रहेला मुनिने जे शरीरनुं निश्चल रहेवुं, ते पेहेली कायगुप्ति जाणवी. हवे बीजीनुं स्वरूप केहे छे.

शयनासननिक्षेपा दानचंक्रमणेषु च ॥
स्थानेषु चेष्टानियमः कायगुप्तिस्तु सा परा ॥ ४४ ॥

अर्थः– शयन, आसन, मेलवुं ते, तथा उपाडवुं ते, तथा गमन करवुं ते, बधामां स्वछंदीपणानो जे परिहार, तेनुं नाम बीजी कायगुप्ति जाणवी.

टीकाः– शयन, एटले शास्त्रमां कहेलो निद्रानो वखत, अने ते पण रात्रिए, पण दिवसे नहीं, वली रोगी, मार्गमां चालवाथी थाकेलो, तथा वृद्ध, एटलाने, गुरुनी रजा लइ रात्रिने पेहेले पोहरे, उचित स्थानकमां जोइनें, प्रमार्जना करीने, भूमि शोधीने बे कपडां बीछावीने तथा मुहप-ती अने रजोहरणथी, शरीरने प्रमार्जन करीनें, तथा संथारा वास्ते गुरु-नी रजा लइनें, तथा नवकारमंत्र भणीने, डाबा हाथनुं उसिकुं करीने, तथा घुंटण वालीने, अथवा कुकडीनी पेठे आकाश प्रदेशमां जंघा प्रसा-रीने, अथवा प्रमार्जन करेली जमीनपर पग राखीने, संकोचती वखते पण पाछुं प्रमार्जन करीनें तथा पडखुं फेरवती वखते मुहपत्तिथी कायाने प्र-मार्जिने, अत्यंत निद्रा न करतां थकां सुवुं. वली ज्यां मंडलना सघला साधुओनो समास थाय, तेवा स्थानकमां त्रण हाथवाली जगोपर बेसवानुं होय, ते जगोने दृष्टिगोचर करीने, तथा रजोहरणथी प्रमार्जिने आसन पाथरी बेसवुं, अने बेठां थकां पण, अंगनुं विशेष हलाववुं चलाववुं प्र-मार्जनपूर्वक करवुं अने चोमासा आदिमां पाट पाटलापर रहिने उपला विधि प्रमाणे वर्त्तवुं. अने निक्षेपादान एटले दंडा आदिकने जोइ पोंजीने लेवा तथा मूकवा चंक्रमण एटले, अवश्य कार्य माटे आगल गाडीनां धों-सरा प्रमाण भूमिपर दृष्टि राखी, प्रमादरहित, त्रस थावर जीवनी रक्षा करतां थकां, उतावले पगे नहीं चालतां, तथा उंची भूमि आदिकपर च-डतां प्रमार्जन करतां थकां, जे चालवुं ते चंक्रमण कहेवाय. एटला बधा-मां जे स्वछंदी चेष्टाने छोडवुं, तेनुं नाम बीजी "कायगुप्ति" जाणवी.

हवे आ सघली आठेनें सिद्धांतोमां प्रसिद्ध, एवुं मातापणुं देखाडे छे.

एताश्चारित्रगात्रस्य जननात्परिपालनात् ॥
संशोधनाच्च साधूनां मातरोऽष्टौ प्रकीर्त्तिताः॥ ४५ ॥

अर्थः– आ आठेने मुनियोनां चारित्ररूपी अंगनें जन्म आपवाथी, उपद्रवो निवारिने पालन करवाथी, तथा अतिचाररूपी दोषोने निवारि निर्मल करवाथी, माताओ कहेली छे.

हवे चारित्रनुं वर्णन करीने उपसंहार करे छे.

सर्वात्मना यतींद्राणामेतच्चारित्रमीरितं ॥
यतिधर्मानुरक्तानां देशतः स्यादगारिणां ॥ ४६ ॥

अर्थः— उपरनुं चारित्र सर्व विरतिउ माटेनुं छे, अने यतिधर्ममां अनुरक्त, एवा जे गृहस्थो, तेउने ते चारित्र देशविरतिरूप होय छे.

टीकाः— चारित्र बे प्रकारनुं छे. सर्वथी अने देशथी सर्वविरतिवालुं एटले सर्व सावद्ययोगरहित, तथा मूलोत्तर गुणोवालुं, एवुं चारित्र मुनिउ माटे छे, तथा तेनुं वर्णन उपर कहेवाइ गयुं छे. अने देशविरतिरूप चारित्र, यतिधर्ममां अनुरक्त एवा गृहस्थोने होय छे; कारण के ते गृहस्थो संघयण आदिकना दोषथी दीक्षा लीधा विना पण यतिधर्ममां रागी होय छे. अने सर्वविरतिना लाजनो देशविरति हेतु छे. अने यतिधर्ममां रागविनाना गृहस्थोने देशविरति पण सारी रीतें होय नहीं. हवे ते देशविरतिनो अधिकारी कयो गृहस्थ थाय तेनुं स्वरूप कहे छे.

न्यायसंपन्नविज्ञवः शिष्टाचारप्रशंसकः ॥
कुलशीलसमैः सार्द्धं कृतोद्वाहोऽन्यगोत्रजैः ॥ ४७ ॥
पापजीरुः प्रसिद्धं च देशाचारं समाचरन् ॥
अवर्णवादी न क्वापि राजादिषु विशेषतः ॥ ४८ ॥
अनतिव्यक्तगुप्ते च स्थाने सुप्रातिवेश्मके ॥
अनेकनिर्गमद्वारविवर्जितनिकेतनः ॥ ४९ ॥
कृतसंगः सदाचारै मातापित्रोश्च पूजकः ॥
त्यजन्नुपप्लुतं स्थान मप्रवृत्तश्च गर्हिते ॥ ५० ॥
व्ययमायोचितं कुर्वन् वेषं वित्तानुसारतः ॥
अष्टजि र्धीगुणैर्युक्तः शृण्वानोधर्ममन्वहं ॥ ५१ ॥
अजीर्णे जोजनत्यागी काले जोक्ता च सात्म्यतः ॥
अन्योऽन्याप्रतिबंधेन त्रिवर्गमपि साधयन् ॥ ५२ ॥

यथावदतिथौ साधौ दीने च प्रतिपत्तिकृत् ॥
सदानभिनिविष्टश्च पक्षपाती गुणेषु च ॥ ५३ ॥
अदेशाकालयोश्चर्यां त्यजन्जानन् बलाबलं ॥
वृत्तस्थज्ञानवृद्धानां पूजकः पोष्यपोषकः ॥ ५४ ॥
दीर्घदर्शी विशेषज्ञः कृतज्ञोलोकवल्लभः ॥
सलज्जः सदयः सौम्यः परोपकृतिकर्मठः ॥ ५५ ॥
अंतरंगारिषड्वर्गपरिहारपरायणः ॥
वशीकृतेंद्रियग्रामो गृही धर्माय कल्पते ॥ ५६ ॥

अर्थः– न्यायथी मेलवेल छे धन जेणे, तथा उत्तम आचारोनी प्रशंसा करनार, सरखा कुलशीलवाला अन्यगोत्रिउ साथे विवाह करनार, पापथी बीतो, प्रसिद्ध देशचालने अंगीकार करतो, कोइनो पण अवर्णवादी नहीं, तेम राजाउनो तो विशेषे करीनें नहीं, एवो, अतिगुप्त नही तथा अति प्रगट नही, एवा सारा पडोशीवाला, तथा घणां द्वारविनाना घरमां रहेनारो, सदाचारिसाथे संग करनारो, मातपिताने पूजनारो, उपद्रववाला स्थानकने तजनारो, निंदनीय काममां न प्रवर्त्तनारो, आवक प्रमाणे खरच करनारो, पैसा प्रमाणे वस्त्रादि पेहेरनारो, बुद्धिना आठ गुणोवालो, हमेशां धर्मदेशना सांजलनारो, अजीर्ण वखते जोजननो त्यागी, कवसरे शांततार्थी जोजन करनार, एक बीजाने बाधाविना त्रण वर्गोने साधतो, शक्ति प्रमाणे, अतिथि, साधु अने दीननी सेवा करनार, हमेशां सदाग्रही, गुणोमां पक्षपाती, अदेश, अने अकालना आचारने तजतो, बलाबलने जाणतो, व्रतधारी तथा ज्ञानीने पूजनारो, तथा पोषण करवालायकनुं पोषण करनारो, दीर्घदृष्टिवालो, विशेष जाणनार, कृतज्ञ, (करेलागुणउपकारनेजाणनार) लोकोने वल्लभ, लज्जावालो, दयावालो, सौम्य, परोपकार करनार, अंतरंग रूप काम क्रोधादिकषायरूप छ वैरीउने नाश करवामां तत्पर, तथा इंद्रियोने वश करनार, एवो माणस, गृहस्थ धर्मने लायक छे. स्वामिद्रोह, मित्रद्रोह, विश्वासघात, तथा चोरी आदिकथी उपार्जन कराता निंद्य धनना त्यागथी, पोतपोतानी जा-

तिने अनुकूल जे धंधो ते न्याय कहेवाय. तेथी धनने उपार्जन करनार. न्यायथी उपार्जन करेलुं धन आ लोकमां हितकारी छे, कारण के, ते धनथी शंकारहित पोताना शरीरने पण पोषाय छे, तेम स्वजनमित्रोने पण वेहेंची शकाय छे. कारण के, पवित्र एवा धीरपुरुषो हिंमतथी कार्य करी शके छे, अने कुकर्ममां जोडाएला पापिठ सर्व जगोए शंकावाळाउ होय छे. वली ते न्यायोपार्जित द्रव्य सत्पात्रमां देवाथी, दीन माणसोनो तेथी उद्धार करवाथी परलोकमां पण हितकारी छे; अने अन्यायथी उपार्जन करेलुं द्रव्य, बन्ने लोकमां अहितकारी छे, कारण के लोकविरुद्ध करवाथी आ लोकमां वधबंधन आदिक दोषो थाय छे, तथा परलोकमां नरकादिकमां जवुं पडे छे. जो के पापानुबंधिपुण्यना योगथी अन्यायें करी धन उपार्जन करनारने आ लोकनी पीडा नथी जणाती, तोपण तेने आगामि कालमां ते दुःखदायी छे. कारण के, धनांध माणस पापो करी जे फलने मेलवे छे, ते फल तेनो (बडिश) मांसनी पेठे नाश कर्या विना रहेतुं नथी. माटे न्यायज परमार्थथी धन मेलववानुं साधन छे. कारण के, जेम कुवा प्रत्ये देडकाउ, तथा जरेला तलावप्रत्ये पक्षिउ जाय छे, तेम शुज कर्मो करनारप्रत्ये संपदाउ पण वश थइ थकी जाय छे. धन गृहस्थपणानुं मुख्य कारण होवाथी तेनुं पेहेलुं ग्रहण कर्युं छे. "शिष्टाचारप्रशंसक" एटले लोकापवादनी बीकवाला, दीन आदिकनो उद्धार करनारा तथा कृतज्ञतामां दाक्षिण्यतावाला एवा व्रतधारी तथा ज्ञानी पुरुषोना आचारोने वखाणनार, ते "शिष्टाचारप्रशंसक" कहेवाय. पोताना तुल्य वंशवाला, तथा मद्य, मांस अने रात्रिजोजनना परिहारथी समान शीलवाला अन्यगोत्रीउ साथे अग्निनी साक्षिए विवाह करनार—ते विवाह लोकमां आठ प्रकारनो छे. तेमां कन्याने शणगारीने जे आपवी, ते "ब्राह्म" नामनो विवाह कहेवाय. विजवसहित कन्या आपवी, ते "प्राजापत्य" विवाह कहेवाय. गायनां जोडलांना दानपूर्वक कन्या आपवी ते "आर्ष" विवाह कहेवाय. यज्ञने अर्थे ऋत्विजने जे कन्या आपवी ते देव विवाह कहेवाय. ए चारे धर्मविवाह कहेवाय. मात पिता अथवा बंधुउनी मरजीपूर्वक, अथवा वरकन्याना परस्पर अनुरागथी जे विवाह थाय ते "गांधर्व" विवाह कहेवाय. पण बंधथी जे कन्या आपवी ते "आ

सुर" विवाह कहेवाय. बलात्कारे कन्यानुं जे हरण करवुं ते "राक्षस" विवाह कहेवाय. सूतेली अथवा प्रमत्त थएली कन्यानुं जे हरण करवुं ते "पैशाच" विवाह कहेवाय. ए चारे विवाहो "अधर्म" विवाह कहेवाय. वली वरवहुनी जो परस्पर रुचि होय, तो अधर्मविवाहो पण धर्मविवाहो कहेवाय. शुद्ध स्त्रीना लाभरूपी फलवालो विवाह कहेवाय. अने अशुद्ध स्त्रीना योगथी नरकज मले छे. शुद्ध स्त्री साथे विवाह करवाथी, उत्तम संततिनी उत्पत्ति, चित्तनी शांतता, घरनां कार्योनुं नियमितपणुं, नात जातना आचारनी शुद्धता, तथा देव, अतिथि, बांधव आदिकनो सत्कार थइ शके छे. स्त्रीनुं रक्षण करवाना उपायो नीचे प्रमाणे छे. घरना काममां जोडवी; परिमाण सहित धन आपवुं, स्वतंत्रतामां न रहेवा देवी; तथा परस्त्रीने मातृतुल्य जाणवी; ए चारे उपायो स्त्रीनुं रक्षण करवाना छे. हवे पापभीरु एटले देखाता अने अणदेखाता नुकशानने करनारां जे पापो तेथी बीनार ते "पापभीरु" कहेवाय. देखातां नुकशान एटले, आ लोकमां चोरी, परस्त्रीसेवन, तथा जुगार इत्यादिकथी उत्पन्न थतां नुकशानो; तथा अणदेखातां नुकशानो एटले, मद्य, मांसादिकना सेववाथी शास्त्रोमां कहेलां नरक आदिकनां दुःखो जाणवां. प्रसिद्ध एटले घणा कालथी रुढिथी चाल्या आवता, भोजन वस्त्र आदिक देशाचारने जे पाले ते प्रसिद्ध देशाचार पालनारो कहेवाय. अने ते देशाचारने उलंघीने जो वर्ते, तो त्यांना लोको साथे विरोध थवाथी, तेनुं श्रेय थाय नहीं. हवे अवर्णवाद न बोलनारो एटले कोइनी अप्रशंसा न करनारो कारण के, जघन्य, उत्तम तथा मध्यम प्राणीओमां कोइनो जे अवर्णवाद बोलवो, ते महादोषवालुं छे. वली ते परना अवर्णवादथी तथा आत्मप्रशंसाथी, क्रोडो भवमां पण न छुटे एवुं नीचगोत्रनुं कर्म बंधाय छे. एवी रीतें ज्यारे साधारण माणसनो पण अवर्णवाद निषेध छे त्यारे राजा, अमात्य, पुरोहित आदिक, जे बहु लोकोने मान्य छे तेनी तो वातज शी? कारणके, तेओना अवर्णवादथी तो धन तथा प्राण आदिकनो पण नाश थाय छे. हवे घणा द्वारवाला घरमां न वसवुं, कारणके, तेवा घरोमां रहेवाथी अणजाणतां दुष्ट लोकोनुं आवागमन थवाथी स्त्री धन आदिकनो नाश थाय, अने अनेक द्वार नहीं राखवाथी निरोधिने अटकावी शकाय छे; माटे घ-

हने अमुक नियमित वा चोकस दरवाजावालुं घर राखवुं. एवुं घर, श-ल्यादिक दोष रहित, तथा घणी ओखड, प्रवाल, डाज, वर्ण, गंध, माटी, स्वादिष्ट पाणी निधान आदिक गुण दोषनी परीक्षापूर्वक, स्वप्न, शकुन आदिक जोइने जे स्थानक होय, तेवा स्थानकें करवुं. तेम अति गुप्त तथा अति प्रकट घर न करवुं कारणके, अति प्रगट स्थानके घर करवाथी आसपास आधार न होवाथी तेमां चोरादिकना प्रवेशनो जय रहे, तेम अतिगुप्त स्थानकें घर करवाथी, अग्नि आदिकना उपद्रव वखते तेमांथी जवुं आववुं पण मुश्केल पडे. वली पडोशीउं पण शीलादिक गुणोवाला शोधवा, कारणके, डुराचारि पाडोशीउंथी तेउंनां वचन आदिक सांजलवाथी, तथा तेउंनी चेष्टाउं जोवाथी, पोताना गुणोनो नाश थाय छे. वली आ लोकमां तथा परलोकमां हितकारी छे प्रवृत्ति जेनी, एवा सदाचारिउं साथे संग करनार, पण खल, ठगारा, विट जार वा व्यजिचारी जांड, नटआदिक साथे संग नहीं करनार, ते सत्संगी कहेवाय. मातपिताने पूजनार, एटले तेमने त्रण काल प्रणाम करनार, तथा तेउंने परलोकमां हितकारी, एवी क्रियाउंमां जोडनार, वली सघला कार्योमां तेमनी आज्ञाप्रमाणे चालनार, माणस मात पिताने पूजनार कहेवाय. कारण के, मनुयें पण कह्युं छे के, एक आचार्य दश उपाध्यायनी बरोबर छे, पिता सो आचार्यनी बरोबर छे, तथा माता, पिताथी हजार गणी पूजनीय छे. वली उपद्रववालां स्थानकनें तजनार; एटले ज्यां स्वचक्र, परचक्र वैरी, डुकाल, तथा मरकीनो जय होय, तेवां स्थानो गाम नगरादिकने तजनार, कारण के जो तेवां स्थानने न तजे, तो पूर्वें उपार्जन करेला धर्म, अर्थ तथा कामनो विनाश थाय छे, अने नवा न मेलवी शकवाथी बन्ने जवो बगडे छे. तेम निंद्य कार्योमां न प्रवर्त्तनारो, एटले देश, जाति, तथा कुलनी अपेक्षाए निंद्य काम नहि करनारो. जेमके देशनी अपेक्षायें सौवीर देशमां खेती, अने लाट देशमां मद्यसंधान, जातिनी अपेक्षाये ब्राह्मण थइने मद्यपान करवुं, तथा तल, लूणआदिक वेंचवुं तथा कुलनी अपेक्षाए चौलुक्यादि सोलंकी विगेरे वंशमां उत्पन्न थइ मद्यपान करवुं, इत्यादिक निंद्यकार्यो छे, तेमां नहीं प्रवर्त्तनारो, कारण के निंद्य काम करनारनुं बाकीनुं पण धर्मकार्य हांसीने पात्र थाय छे. हवे आवोचित व्यय

करनार एटले स्वजोगमां तथा देवतातिथिना पूजनमां खेती, वेपार, चाकरी आदिकथी पेदा करेला ड्रव्यने अनुसारें खरच करनार, कह्युं छे, के कमाणीथी चोथो जाग, जंडारमां, चोथो जाग वेपारमां, चोथो जाग धर्म तथा उपजोगमां, तथा चोथो जाग परना पोषणमां वापरवो अने आवक उपरांत खरच तो, रोग जेम शरीरने तेम माणसने वेपारथी अशक्त करे छे. हवे धनने अनुसारें वेष करनार, एटले धन अने उपलक्षणथी, उमर, अवस्था, देश, काल, जाति, आदिकने अनुसारें वेष करवाथी, लोको तरफनी हांसी, हलकापणुं अन्यायपणा आदिक दोषोनो संजव थतो नथी. अने जे माणस आवक छतां कृपणपणाथी खरच करतो नथी ते लोकमां निंद्य थइने धर्मनो पण अधिकारी थतो नथी. हवे बुद्धिना आठगुणो वालो, एटले, शुश्रुषा, श्रवण, ग्रहण, धारण, उह, अपोह, अर्थविज्ञान, तथा तत्वज्ञान. शुश्रुषा एटले सांजलवानी इछा, श्रवण एटले सांजलवुं, ग्रहण एटले शास्त्रोना अर्थोनुं ग्रहण करवुं ते, धारण एटले जुलवुं नहीं ते, उह एटले जाणेला अर्थनुं अवलंबन लइ तेवाज बीजा अर्थोमां तर्क करवा ते; अपोह एटले उक्ति युक्तिथी, विरुद्ध एवा जे हिंसादिक, तेथी नुकशाननी बुद्धियें पाछा हठवुं ते, अथवा उह एटले सामान्य ज्ञान, अने अपोह एटले विशेषज्ञान, अर्थविज्ञान एटले उहापोहना योगथी, मोह अने संदेहनो नाश थइ, जे ज्ञान थाय ते, अने तत्वज्ञान एटले, उहापोहना ज्ञानथी शुद्ध थएलुं आ आमज छे, एवो जे निश्चय थवो ते. एवी रीतना शुश्रुषादिक गुणोवाला डाह्या माणसोने कोइ दिवसें पण अकल्याण थइ शकतुं नथी. हवे हमेशां धर्म सांजलनार एटले हमेशां धर्म सांजलवामां तत्पर, कारण के हमेशां धर्म सांजलवाथी मननो खेद नाश पामे छे, अने उत्तरोत्तर गुणोनी प्राप्ति थाय छे. हवे अजीर्ण होते छते जोजन तजनार एटले, पेहेलां जमेलुं अनाज पच्युं न होय, तो नवुं जोजन न करनार कारण के अजीर्ण होते छते पण जोजन करवाथी तो रोगोनी वृद्धि थाय छे. अजीर्णनां छ चिह्नो छे, मल तथा पवननो दुष्ट गंध, विष्टानो जेद, गात्रनुं गौरवपणुं, अरुचि तथा अशुद्ध उडकार, ए छ अजीर्णनां चिह्नो जाणवां, तथा अवसरें जोजन करनार, एटले ज्यारे जठराग्नि प्रदीप्त थाय त्यारे जोजन करवुं, अने तेथी विपरीत रीतें जोजन

करवाथी, वमन जुलाब तथा मरण आदिक कष्ट आवे छे. क्षुधाविना अमृत सरखुं जोजन पण विषरूप थाय छे. अने क्षुधाकालने उलंघी जोजन करवाथी, अन्नपर द्वेष तथा देहने पीडा थाय छे, कारण के अग्नि ठर्या पछी काष्टो शुं उपयोगनां छे? वली जेनां आहारपाणी विरुद्ध छे, तेउनी प्रकृति पण सारी रहेती नथी.

हवे धर्म, अर्थ अने काम, ए त्रण पुरुषार्थो छे; तेउमां अन्युदय अने कल्याणनी सिद्धिरूप ते धर्म; सर्व प्रयोजननी सिद्धिरूप अर्थ; तथा रसपूर्वक सर्व इंद्रियोनी जे प्रीति ते काम. ते त्रणेमां एकेकने बाधाविना, त्रणे साधवा. पण एकज साधवो तेम नही कारण के कह्युं छे के; जेना दिवसो ते त्रणे वर्गोथी शून्य जाय छे, ते माणस लुहारनी धमणनी पेठे श्वास लेतो थको पण मृतकतुल्य छे. वली धर्म अने अर्थना उपघातथी विषयसुखमां लुब्ध थइने वनना हाथीनी पेठे कयो माणस आपदानुं स्थानकरूप न थाय. वली जेने काममां अत्यंत आसक्ति छे, तेनुं धन धर्म अथवा शरीर पण कंइ कामनां नथी. वली धर्म अने कामने विराधिने उपार्जन करेला धनने बीजाउ जोगवे छे, अने पोते तो हाथीना वधथी जेम सिंह, तेम पापोनो जोगवनार छे. अने अर्थ तथा कामने उलंघीने धर्म सेववो, ते तो मुनिउनेज लायक छे, पण गृहस्थने लायक नथी. तेम धर्मने बाधा करीने पण गृहस्थें अर्थ, काम सेववा नहीं, कारण के, तेम करवाथी तो बीजनुं जक्षण करनार कुटुंबीनी पेठे तेने आगामी कालमां कल्याण थतुं नथी. वली खरेखरो सुखी पण तेनेज जाणवो, के, जे, परलोकना सुखने बाधा कर्या विना आ लोकना सुखने अनुजवे छे. एवी रीतें अर्थने बाधा करी धर्म अने काम सेवनारने करज थाय, तथा कामने बाधा करी धर्मार्थने सेवनारने गृहस्थपणानो अजाव छे; एवी रीतें तादात्विक, मूलहर, तथा कदर्य (लोजी ए त्रणेमां धर्म, अर्थ कामनी अन्योन्य बाधा आवे छे.

हवे "तादात्विक" एटले कंइ पण बिचार विना उपार्जन करेला धनने खरचवुं ते वली जे पिता तथा दादायें उपार्जन करेला धनने अन्यायवडे खाइ जाय, ते "मूलहर" कहेवाय. अने जे चाकरोने तथा पोताने पण पीडा उपजावीने धनने एकठुं करे, तथा क्यांय पण खरचे नहीं, ते कदर्य (लोजी) कहेवाय. हवे तेउमां तादात्विक तथा मूलहरने तो पैसा-

ना नाशथी, धर्म अने कामनो नाश थवावडे करीनें कल्याण थतुं नथी. अने लोजीनुं धन, राजा, पित्राइ, अथवा चोरोने उपन्नोगमां आवे ले; धर्म के काम निमित्तें खरचातुं नथी माटे तेथी गृहस्थने त्रणे वर्गोने बाधा करवी अनुचित ले. वली कदाच दैवयोगें बाधानो संजव थाय, तोपण उत्तरोत्तरनी बाधाथी पूर्वेनी बाधानुं रक्षण करवुं जेम के कामने बाधा आवे त्यारे धर्म अने अर्थने थती बाधानुं रक्षण करवुं; कारण के, तेउं बन्ने होवाथी कामनी प्राप्ति सुलज ले. अने काम तथा अर्थने बन्नेने ज्यारे बाधा आवे त्यारे धर्मनुं रक्षण करवुं; कारणके धर्म तेउं बंन्नेनुं मूल ले.

हवे जेने पर्वादिक तिथिनो प्रतिबंध नथी ते अतिथि; उत्तम आचारमां रक्त, तथा सघला लोकोमां प्रसिद्ध; ते साधु कहेवाय; तथा धर्म, अर्थ अने काम आराधवानी जेनी शक्ति क्षीण थएली होय ले, ते दीन कहेवाय. ते त्रणेनी पोतानी शक्ति प्रमाणे अन्नपानादिकथी उचित जक्ति करनार. कारण के, एक बाजुये क्रोडो गुणो, तथा बीजी बाजुये उचितता; तेउं बन्ने सरखां ले; केमके उचितता विनानो गुणोनो समूह फेर तुल्य ले. हवे अन्निनिवेशरहित; एटले; नीति विनानां फुःखदायि कार्योनो करनार. कह्युं ले के, अहंकार ले ते, अन्याय फुर्गुण आदिकना आरंजथी नीच लोकोने उपद्रव करे ले; जेम सामे पूरे तरनार मालांउने पण नदीनो प्रवाह उपद्रव करे ले. वली नीच माणसने पण कोइ वखते (खलताथी) कदाग्रहरहितपणुं होय ले. हवे गुणपक्षपाति एटले, सज्जनता, उदारता, डाहापण, स्थिरता, प्रिय वचनपणुं, इत्यादि पर तथा पोताने उपकार करनारा गुणोमां पक्षपात राखनार पक्षपात एटले तेवाउंनुं बहुमान, प्रसंग, सहायता विगेरे अनुकूल प्रवृत्ति करवी ते. अने तेवागुणोना पक्षपाती जीवो अवंध्य एवां पुण्यबीजवडे करीने, आ लोक अने परलोकमां गुणनी संपदाने पामे ले. वली जे प्रतिषिद्ध (निषिद्ध) देश ते अदेश अने निषेध करेलो काल होय ते अकाल कहेवाय ते संबंधी प्रवृत्तिने करनारो ते "अदेशकालचारी" कहेवाय. कारण के अदेशकालचारीने चोरी आदिकनो उपद्रव थाय ले. हवे परनी तथा पोतानी बल शक्ति जाणीने कार्य करनार, ते बलाबलने जाणनारो कहेवाय; कारण के, तेम करवाथी सघलुं कार्य सिद्ध थाय ले. कह्युं ले के, शक्ति प्रमाणे करातुं

करवाथी शरीरनी वृद्धि थाय छे, अने शक्ति उपरांत करवाथी क्षय थायछे. हवे व्रतधारी एटले अनाचारने तजीने सदाचारमां प्रवर्त्तनार. अने ज्ञानवृद्ध एटले छोडवालायक तथा ग्रहण करवालायक वस्तुउने जाणनार; तेउनी सेवा करवी, बोलाववुं, आसन आपवुं, तथा तेउ आवे त्यारे सामा आवी उन्ना थवुं, इत्यादि करनार, ते व्रतधारी तथा ज्ञानीने पूजनार कहेवाय. कारण के तेउनी सेवा करवाथी, तेउ कल्पवृक्षनी पेठे उपदेश द्वारा फलदायक थाय छे. तथा पोष्यपोषक एटले, मा बाप, स्त्री, छोकरां आदिक अवश्य पोषवा लायकनुं पोषण करनार. तथा लांबा कालसुधिना अर्थ अनर्थनो विचार करनार, ते दीर्घदर्शी कहेवाय. हवे विशेषज्ञ एटले स्वपरनां कार्य अने अकार्यना अंतरने जाणनार; अथवा पोताना गुणदोषने जाणनार. कह्युं छे के, माणसें हमेशां, मारामां पशुतुल्य शुं छे? तथा सत्पुरुषनी तुल्य शुं छे? एम पोताना गुणदोषनो विचार करवो. तथा परना करेला उपकारने जाणनार ते कृतज्ञ कहेवाय. तथा "लोकवल्लज" एटले लोकोने विनयादिक उत्तम गुणोथी प्रिय थइ पडेलो. कारण के, गुणवान् प्रत्ये कोण प्रीतिवालो थतो नथी? कारण के, जे लोकवल्लज न होय, ते केवल पोतानेज नुकशानकारक थाय छे, तेम नहीं, पण तेना धर्मानुष्ठानने पण बीजाउं दूषण लगाडे छे, अने तेथी परप्रत्ये पण बोधि लाजना नाशनो हेतु ते थाय छे. तथा "सलज्ज" एटले लज्जा सहित. कारण के, लज्जावान् माणस प्राणोनो नाश थाय, तो पण पोतानी प्रतिज्ञाने तजता नथी. कह्युं छे के, गुणोना समूहने उत्पन्न करनारी लज्जा प्रत्ये अत्यंत शुद्ध हृदयथी, अनुवर्त्तन करनारा लोको, कदाच प्राण जाय, तोपण पोतानी प्रतिज्ञाने तजता नथी. तथा "सदय" एटले दुःखी प्राणिउने दुःखमांथी छोडाववानी इछाथी वर्त्तनारा ते "सदय" कहेवाय. कारण के धर्मनुं मूल दया कहेली छे. माटे अवश्य दया करवी जोइयें. कह्युं छे के, जेवा पोताना प्राण वहाला छे, तेवा सघला प्राणिउने पण छे, माटे माणसें पोतानी पेठेज परनी दया चिंतववी जोइयें तथा "सौम्य" एटले निर्जय आकृतिवालो; कारण के क्रूर माणस लोकोने उद्वेगनुं कारण थइ पडे छे. वली परोपकारी पण थवुं; कारण के, परोपकारी माणस, सर्वनां नेत्रो प्रत्ये अमृतांजनतुल्य थाय छे. तथा अंतरंग छ वैरीउने जी-

तनार एटले, काम, क्रोध, लोज, मान, मद अने हर्षने जीतनार. काम एटले परने परणेली अथवा कुमारिकाउ प्रत्ये विषय सेववानी इछा ते काम कहेवाय. परनां अथवा पोतानां नुकशानने नहीं विचारतां जे कोप करवो ते क्रोध कहेवाय. दानने योग्य एवा माणसो प्रत्ये न देवुं, तथा कारणविना परना धनने ग्रहण करवुं, ते लोज कहेवाय. कदाग्रही थवुं, अथवा युक्तियुक्त वचननुं न ग्रहण करवुं ते मान कहेवाय. कुल, बल, ऐश्वर्य, रूप तथा विद्यानो जे अहंकार, अथवा बीजाने तुरुकारवुं ते मद कहेवाय; अथवा कारण विना परने दुःख देवुं, तथा पोते, जुगार मृगया इत्यादि अनर्थनो आश्रय करवो, ते पण मद कहेवाय. तथा प्रमोद एटले हर्ष. ए ठए अंतरंग शत्रुउनो नाश करनार. कारण के ठए नुकशानीनां हेतुउ ठे. तथा तेउथी रावण आदिक दुःखो पाम्या ठे. तथा इंद्रियोने वश करनार एटले अत्यंत आसक्ति पणाना त्यागथी स्पर्शादिक इंद्रियोने वश करनार. कारण के इंद्रियोनो जय पुरुषोने संपदामाटे थाय ठे. कह्युं ठे के, इंद्रियोने जे वशमां न राखवी, ते दुःखनो मार्ग ठे, अने तेउने जे जीतवी, ते सुखनो मार्ग ठे, माटे जे इष्ट लागे ते मार्गे जवुं, वली जे इंद्रियोने वश राखवी ते स्वर्गरूप ठे, अने जे ढुटी मुकवी, ते नरकरूप ठे, हवे सर्वथा प्रकारे जे इंद्रियोनो निरोध करवो, ते तो मुनियोनोज धर्म ठे. अने अहीं तो श्रावक धर्मने उचित एवा गृहस्थनुंज व्याख्यान ठे, माटे अहीं अत्यंत सक्तिनो परिहार कहेलो ठे. एवी रीतें उपर कहेला गुणोना समूहवालो माणस गृहस्थ धर्मने माटे योग्य थाय ठे अर्थात् अधिकारी गणाय ठे.

एवी रीतें परमार्हतश्रीकुमारपाल राजाए सेवायेला आचार्य श्रीहेमचंद्रे रचेला अध्यात्मोपनिषद् नामना संजातपट्टबंधरूप श्री योगशास्त्रना बार प्रकाशमांहेना प्रथमप्रकाशनुं पोते रचेलुं विवरण संपूर्ण थयुं.

द्वितीयप्रकाशः प्रारभ्यते.

गोडी पार्श्वप्रत्ये नमस्कार थाओ. गृहिधर्म एटले श्रावकधर्म, अने ते सम्यक्त्व छे, मूल जेनुं एवां बार व्रतो सहित छे.

सम्यक्त्वमूलानि पंचाणुव्रतानि गुणास्त्रयः ॥
शिक्षापदानि चत्वारि व्रतानि गृहमेधिनां ॥ १ ॥

अर्थः— सम्यक्त्व छे मूल जेनुं, एवां पांच अणुव्रतो, त्रण गुणो, तथा चार शिक्षाव्रतो मली श्रावकनां बार व्रतो छे.

टीकाः— अहिंसादिक पांच अणुव्रतो जाणवां, तथा दिग्व्रतादिक त्रण गुणव्रतो जाणवां, तथा सामायिक आदिक चार शिक्षाव्रतो जाणवां, ते चार शिक्षाव्रतो अमुक दिवसें करवानां छे, अने गुणव्रतो प्रायः करीने आवजीवसुधि पालवानां छे. एवी रीतें सम्यक्त्व छे मूल जेनुं एवां श्रावकोनां ते बार व्रतो छे.

हवे तेओमांथी सम्यक्त्वनुं स्वरूप कहे छे.

या देवे देवताबुद्धिर्गुरौ च गुरुतामतिः ॥
धर्मे च धर्मधीःशुद्धा सम्यक्त्वमिदमुच्यते ॥ २ ॥

अर्थः— देवमां देवबुद्धि, गुरुमां गुरुपणानी बुद्धि, तथा धर्ममां शुद्ध एवी धर्मनी बुद्धि तेनुं नाम सम्यक्त्व कहेवाय.

टीकाः— जेनुं लक्षण आगल कहेवामां आवशे एवा, देव, गुरु तथा धर्ममां अज्ञान अने संशय रहित, जे निर्मल श्रद्धा, एटले आ अमुकज देव, गुरु तथा धर्म मारे मानवा लायक छे, एवी रुचि ते "सम्यक्त्व" कहेवाय. वली जिनेश्वरें कहेला तत्वोमां जे रुचि ते पण सम्यक्त्व कहेवाय. हवे ते सम्यक्त्व यति, अने श्रावको बन्नेने साधारण तरिके कहेलुं छे, तोपण श्रावकोने, देव, गुरु धर्ममां, अनुक्रमें पूज्यपणुं, उपासकपणुं, तथा अनुष्ठानपणुं, कहेलुं छे, अने तेथी तेओने ते लक्षणवालुं सम्यक्त्व कहेलुं छे. अहीं शंका करे छे के, ज्यारे जिनेश्वरनां कहेलां तत्वोमां थती रुचिने सम्यक्त्व कह्युं, त्यारे तेमां देव, गुरु तथा धर्मनो अंतर्भाव शी रीतें थाय छे? तो तेने वास्ते कहे छे. देव अने गुरु जीवतत्वमां आवी

जाय छे, तथा धर्म, शुजाश्रव अने संवरमां आवी जाय छे. हवे ते सम्यक्त्व त्रण प्रकारनुं छे; औपशमिक, क्षायोपशमिक तथा क्षायक. तेमां उपशम सम्यक्त्व एटले, अनंतानुबंधिनी चोकडी, तथा मिथ्यात्व मोहनीने, राखमां ढांकेला अग्निनी पेठे उपशमावी राखवुं ते. अने ते उपशम सम्यक्त्व, अनादि मिथ्यादृष्टि जीवने; यथाप्रवृत्ति आदि त्रण करण करवा पूर्वक, अंतर्मुहूर्त्त सुधि, चारे गतिमां होय छे. अथवा उपशमश्रेणियें चडेलाउने पण होय छे, हवे क्षायोपशमिक एटले उदय आवता एवा मिथ्यात्व मोहनी, तथा अनंताबंधिनी चोकडीने क्षय करवारूप उदय न आवता एवा मिथ्यात्व तथा अनंतानुबंधिनी चोकडीने उपशमाववारूप, ते क्षायोपशमिक सम्यक्त्व कहेवाय. अने ते सत्कर्मोनु वेदवारूप छे, तथा उपशमसम्यक्त्व सत्कर्मने वेदनारुं नथी, तेथी तेउ बन्नेमां तफावत छे. अने ते क्षायोपशमिक सम्यक्त्वनी उत्कृष्टि स्थिति छासठ सागरोपमथी कंइंक अधिक छे. तथा त्रीजुं क्षायक सम्यक्त्व एटले मिथ्यात्वमोहनीय तथा अनंतानुबंधिनी चोकडीनो मूलमांथी जे नाश, ते क्षायक सम्यक्त्व कहेवाय. अने ते सादि अनंत जांगे छे, ने सम्यक्त्व बोधिरूपी वृक्षनुं मूल छे. पुण्यरूपी नगरनो दरवाजो छे, मोक्षरूपी मेहेलनो पायो छे, तथा सर्वसंपत्तिनो जंडार छे. वली ते रत्नोनो जेम समुद्र, तेम गुणोनो ते आधार छे, वली चारित्र रूपी धननुं ते जाजन छे, माटे ते सम्यक्त्वनी कोण प्रशंसा न करे? सम्यक्त्वथी वासित थएला प्राणीमां ज्ञान रही शके छे, केमके सूर्यथी तेजयुक्त थयेला जुवनमां अंधकारनो प्रचार शी रीतें थइ शके? वली ते सम्यक्त्व नरक तथा तिर्यंच गतिमां जवाने आडी जोगल समान छे, तथा देव, मनुष्य अने मोक्ष गतिना द्वारनी चावी छे. वली ते सम्यक्त्वथी वासित थएलो प्राणी ज्यांसुधि समकितने न वमी नाखे, अने पूर्वे आयुबंध पडेलो न होय तो, खरेखर वैमानिक देव थाय. माटे जे माणस एक अंतर्मुहूर्त्त सुधि पण सम्यक्त्व रूपी रत्नने फरसीने तजी दीए छे, ते माणस लांबा वखतसुधि जवमां जटकतो नथी, (अर्थात् तेने अर्ध पुद्गल परावर्त्तन उपरांत जटकवुं पडे नहिं) सारांश के जो तेटला स्वल्प समयसुधी सम्यक्त्व धारिने महोटुं फल मलेछे. तो पछी घणा वखत सूधी धरनारने फल थाय तेमां शुं कहेवुं.

हवे विपक्षने (मिथ्यात्वने) जाणवाथी विवक्षित पदार्थ सारी रीतें समजाय, तेटला माटे सम्यक्त्वना विपक्षी मिथ्यात्वनुं स्वरूप कहे छे.

अदेवे देवबुद्धिर्या गुरुधीरगुरौ च या ॥
अधर्मे धर्मबुद्धिश्च मिथ्यात्वं तद्विपर्ययात् ॥ ३ ॥

अर्थः– कुदेवमां देवबुद्धि, कुगुरुमां गुरुबुद्धि, तथा कुधर्ममां धर्मबुद्धि तेने सम्यक्त्वथी उलटुं एवुं मिथ्यात्व जाणवुं.

टीकाः– मिथ्यात्व पांच प्रकारनुं छे, आभिग्रहिक, आभिनिवेशिक, सांशयिक, अने अनाभोगिक तेउमांथी आभिग्रहिक मिथ्यात्व, पोत पोताना शास्त्रना ज्ञानने जाणनारा, तथा परपक्षने तोडवामां समर्थ, एवा पाखंडीउने होय.अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व,"सघला देव, गुरु, धर्मने वांदवा, पण कोइनी निंदा करवी नहि एवुं बोलनार साधारण माणसोने होय." अने आभिनिवेशिक मिथ्यात्व सत्य वस्तुने जाणतां थकां पण, कदाग्रहयुक्त बुद्धिवाला जमालि आदिकने होय. सांशयिक मिथ्यात्व देव, गुरु तथा धर्ममां संशयवालाने होय; अने अनाभोगिक मिथ्यात्व, विचारविनाना एकेंद्रिय जीवोने, तथा विशेषज्ञानविनाना बीजा प्राणिउने पण होय. हवे ते मिथ्यात्व, मोहोटा रोगरूप छे, मोटा अंधकार रूप छे, परमशत्रुरूप छे, तथा महाविषरूप छे. रोग, अंधकार, शत्रु अने झेर तो एकज भवमां दुःखदायी छे पण अणशोधेलुं मिथ्यात्व तो हजारो जन्मोमां पण दुःखने माटे थाय छे. मिथ्यात्वयुक्त चित्तवाला प्राणीउ तत्व अतत्वने जाणताज नथी, कारण के, जे प्राणिउ जन्मथीज आंधला छे, तेउ वस्तुउनुं सारा नरसापणुं शी रीतें जाणी शके.?

हवे देव, कुदेव, गुरु, कुगुरु, तथा धर्म अधर्ममांथी देवनुं लक्षण कहेछे,

सर्वज्ञो जितरागादि दोषस्त्रैलोक्यपूजितः ॥
यथास्थितार्थवादी च देवोर्हन् परमेश्वरः ॥ ४ ॥

अर्थः– सर्वज्ञ, जितेला छे रागादिक दोषो जेणे एवा, त्रणे लोकथी पूजाएला तथा यथास्थित अर्थने कहेनारा एवा परम ईश्वर अर्हन् देव छे.

टीकाः– देवना देवपणामां, विचक्षणो चार अतिशयोने कहे छे. तेउनां नाम, ज्ञानातिशय, पूजातिशय, अपायापगमातिशय, तथा वागति-

शय, तेमां "सर्वज्ञ" कहेवावडे करीने सघला जीव अजीव आदि तत्वोना जाणपणाथी (प्रजुनो) ज्ञानातिशय कहेलो छे. पण जेम अन्यदर्शनियो माने छे, तेम नहिं; कारण के, तेउ एम माने छे के, बधुं जुउ, अथवा न जुउ, पण तत्वने जुउ? कारण के, कीडाउनी संख्याना ज्ञाननी शी जरुर छे? वली छेटेनुं देखो अथवा न देखो पण इष्ट तत्वने जुउ? कारण के जो दूर देखनारनेज प्रमाणरूप मानीयें तो गीध पक्षिउ पण पूजनीय थाय, हवे अन्यदर्शनियोना तेम मानवाने खोटुं ठरावे छे. केमके सघली वस्तुउना ज्ञान विना, विवक्षित एवा एक इष्ट अर्थनुं ज्ञान थतुं नथी. वली सघला पदार्थो, बीजा पदार्थोनी साथे, साधारण अने असाधारण रूपवाला छे. माटे सघला ज्ञानविना वस्तुनां लक्षण विलक्षणत्वनुं ज्ञान थइ शकतुं नथी. कह्युं छे के, एक जाव जेणे सर्वथा जोयो, तेणे तत्वथी, सघला जावो जोया जाण्या, अने सघला जावो सर्वथा जेणे जाण्या, तेणे एक जाव पण तत्वथी, जाण्यो समजवो. हवे "जितरागादिदोष." कहीने प्रजुनो "अपायापगम" नामनो अतिशय कहे छे. कारण के, रागद्वेषरूपी अपायनो नाश करवाथी ते विशेषण सार्थक छे कारण के, जेणें रागद्वेष जितेला नथी, तेने आपणनी पोतानी पेठे देवपणुं नथी. हवे "त्रैलोक्यपूजित" कहीने प्रजुनो पूजातिशय कहे छे. जेनी केटलाक ठगारा, अने जोला लोको पूजा करे छे, तेमां देवपणुं नथी. पण चलित आसनवाला सुर असुरोथी नाना प्रकारनी देशनी जाषाना व्यवहारने जाणनारा मनुष्योथी परस्पर वैरविनानी अने मित्रताने प्राप्त थयेला तिर्यंचोथी, समवसरणमां अवाइने, एक बीजाने स्पर्धाथी जे प्रजुनी पूजा आदिक थाय छे, ते प्रजुने देवपणुं जाणवुं. अने "यथास्थितार्थवादी" एम कहीने प्रजुनो वचनातिशय कहे छे. यथास्थित एटले खरेखरा अर्थने कहेनारा. हवे "देव" एटले जेनी स्तुति कराय ते देव, अने एवा देव "अर्हन्" छे, बीजा नथी. हवे ते चार अतिशयवाला देवनुं ध्यान, उपासना शरणनो अंगीकार, तथा शासनना अंगीकारने अभिक्षेप सहित कहे छे.

ध्यातव्योऽयमुपास्योयमयं शरणमिष्यतां ॥
अस्यैव प्रतिपत्तव्यं शासनं चेतनास्ति चेत् ॥ ५ ॥

अर्थः– जो चेतना होय, तो, तेज अर्हन् देवनुं ध्यान धरवुं, तेनीज उपासना करवी, तेनुंज शरणुं लेवुं, तेनाज शासनने अंगीकार करवुं.

टीकाः– आज देवने, पिंडस्थ, पदस्थ, रूपातीत अने रूपस्थ ध्यानथी श्रेणिक राजानी पेठे ध्याववो. कारण के, श्रेणिक राजायें, वर्ण, प्रमाण, संस्थान, संघयण, तथा चोत्रीश अतिशयवाला महावीर प्रजुनुं ध्यान धरेलुं छे, तेथी ते पण तेवीज रीतना लक्षणोवाला पद्मनाज नामें आवती चोवीशीमां तीर्थंकर थशे. हवे तेमनी उपासना करवी, एटले तेमनी सेवा करवी, तेमनी सामा हाथ जोडवा, इत्यादि हवे तेमनुं शरण लेवुं, एटले डुःकृतनी निंदा, तथा सुकृतनी अनुमोदनापूर्वक, आज देव जवरूपी जयनां डुःखने हरनार छे, एम मानी तेमनुं शरणुं लेवुं. वली तेज देवनी आज्ञाने पण स्वीकारवी. कारण के अतिशय विनाना पुरुषोयें करेली आज्ञाउ अंगीकार करवा लायक नथी. जो चेतना होय तो उपर प्रमाणे करवुं. कारण के, चेतनावालानेज उपदेश देवो सफल छे, अने अचेतन प्रति जे उपदेश देवो ते फोकटनो प्रयास छे. कह्युं छे के, वनमां जइ रोवुं अने शबना शरीरने मर्दन करवुं कुतरानी पुंछडीने नमाववी, बेहराने कानमां जइ कहेवुं, जमीनपर कमल वाववुं; उषर जूमिपर लांबा कालसुधि वरसादनुं पडवुं, अंध पासे मुखमंडन करवुं, अने मूर्खने कहेवुं, ते सघलुं निरर्थक छे. हवे कुदेवनुं लक्षण कहे छे.

ये स्त्रीशस्त्राक्षसूत्रादि रागाद्यंककलंकिताः ॥
निग्रहानुग्रहपरास्ते देवाः स्युर्न मुक्तये ॥ ६ ॥

अर्थः–जे देवो, स्त्री, हथियार, तथा मालाआदिकथी, राग, द्वेष अने मोहरूपी कलंकवाला छे, तथा वली जेउ, निग्रह (नाश) अने अनुग्रह (कृपा)मां तत्पर छे, ते देवो मोक्ष माटे थता नथी.

टीकाः– स्त्री एटले कामिनी, शस्त्र एटले त्रिशूल आदिक, तथा जपमाला अने आदि शब्दथी, नाटक, अट्टहास (खडखड हसवुं ते) विगेरे ग्रहण करवां; ते चिह्नोना कलंकथी दूषित थएला देवो; कारण के,

स्त्री रागनुं चिह्न छे. अने जे वीतराग होय, ते स्त्रीनो संगी न होय, द्वेषविनानो जे होय, ते शस्त्रने धारण न करे, तेम मोहविनानो माणस विस्मरणना चिह्नरूप जपमालाने शा माटे ग्रहण करे? एवी रीतें राग, द्वेष, अने मोहथी सर्वे दोषो आवी जाय छे, कारण के सघला दोषोना तेउं मूलरूप छे. अने निग्रह एटले वधबंधन, अने अनुग्रह एटले वरदान आदिक; अने ते बन्ने रागद्वेषनां चिह्नो छे; माटे एवा दोषोवाला देवो मुक्ति देनारा थता नथी; अने जो एवा देवोने मोक्ष देनारा मानियें, तो क्रीडा आदिक करनार प्रेत पिशाचोने पण मुक्तिदायकपणुं कोण अटकावी शकशे.? हवे मुक्तिना निमित्तपणांना अभावनेज देखाडे छे.

नाट्याट्टहाससंगीता द्युपप्लवविसंस्थुलाः ॥
लंभयेयुः पदं शांतं प्रपन्नान् प्राणिनः कथं ॥ ७ ॥

अर्थः– नाट्य, अट्टहास, संगीत आदिक पराभवोथी विसंस्थुल (अस्थिर) थएलाउं, पोताने आश्रित थयेला प्राणिउंने शी रीतें मोक्ष पदमां प्राप्त करी शके.?

टीकाः– अहीं "शांतपद" एटले मोक्षपद जाणवुं कारण के ते संसारना उपद्रवो विनानुं छे. माटे तेने शांत पद कहेलुं छे. एवा मोक्ष प्रत्ये, नाट्य, अट्टहास, गायन इत्यादि दोषोथी, पोते हालहवाल थएला देवो, पोताने आश्रित, एवा बीजा माणसोने शी रीतें प्राप्त करी शके? कारण के, एरंडनुं वृक्ष, कंइ कल्पवृक्षनी तोले आवी शके नहीं. माटे, राग, द्वेष, तथा मोह आदिक दोषोथी रहित एवा एक जिनेश्वर प्रभुज मोक्ष देनारा छे. कारण के, शंकर ब्रह्मा तथा विष्णु, सर्वज्ञ अने नीरागी नथी कारण के, तेउंनी वृत्ति एक प्राकृत माणसथी पण असमंजस छे कारण के स्त्रीनो संग, कामीपणुं जणावे छे, हथीयारनो संग्रह द्वेषीपणुं जणावे छे, जपमाला मोहपणुं जणावे छे, तथा कमंडल अपवित्रपणुं जणावे छे. वली महादेवने पार्वती, ब्रह्माने सावित्री, विष्णुने लक्ष्मी, इंद्रने इंद्राणी, सूर्यने रत्नादेवी, चंद्रने दक्षात्मजा (रोहिणी) बृहस्पतिने तारा, अग्निने स्वाहा, कामने रति, तथा यमने धूमोर्णा नामें स्त्री छे; एवी रीतें सघला देवो स्त्रीओवाला छे. वली ते सघलाउंने शस्त्रोनो संबंध छे, ते मो-

हनुं विलसित (चेष्टित) छे, माटे एवा देवो देवपणाने केम पामे? मोहथी शून्य कहेनारा बुद्धने पण देवपणुं घटे नहिं. एवी रीतें प्रमाण सिद्धिनुं शून्यपणुं होते छते शून्यवादिनी कथा पण वृथा छे. वली प्रमाणनुं छतापणुं होते छते, प्रमाणविना परनी पण शून्यसिद्धि थइ शके नहिं, त्यारे पोताना पक्षनी तो सिद्धिज शी रीयें थाय.? वली सर्व भावमां तेऊ (बुद्धलोको) क्षणिकपणुं माने छे, त्यारे साधक प्राणीने फलनी साथे समागम शी रीते थाय? वली एम क्षणिवादथी हिंसा करनारने हिंसकपणुं पण केम घटी शके? तेम स्मृति पण प्रत्यभिज्ञातना व्यवहारनी करनारी केम थाय ? वली कृमिथी भरेलां पोतानां शरीरने वाघणप्रत्ये आपी देता, एवा देयादेयना विवेकविनाना बुद्धनी दया पण केवी विचित्र भातनी छे ! ! ! वली पोताना जन्म वखते, पोतानीज मातानां उदरने फाडनारा, तथा मांस खावानो उपदेश देनारा बुद्धने दया शानी कहेवाय? जे कपिलदेव प्रकृतिना धर्मने निरर्थक रीतें ज्ञान कहे छे, एवी रीतना निर्गुणी, क्रियाविनाना, तथा मूढने देव शी रीतें कही शकाय ? वली गणपति, स्कंद, कार्त्तिकस्वामी, पवन, आदिक दोषोयुक्त छे, तो तेमने पण शी रीतें देव कही शकाय? वली जे गाय, पशु छे, विष्ठा खाय छे, पोतानाज पुत्रने भरतार तरिके ग्रहण करे छे तथा प्राणिउने शिंगडां आदिकथी मारे छे, ते गाय पण केम वंदनीय, कहेवाय? वली तेणीने दूध आपनारी मानीनें जो वंदनीय ठरावीयें, तो भेंसने शा माटे वंदनीय न मानियें ? कारण के, गायमां कंइ भेंस करतां विशेष देखातुं नथी. वली ते गायने जो सघला तीर्थ देव, अने ऋषिउनां स्थानक रूप मानो, तो ते गायनुं वेंचाण, नाश आदिक केम थाय छे? वली जेउये, मुशल, उखूखल, चुलो, देहली, पीपलो, पाणी, लींबडो, आकडो इत्यादिने देवरूप कहेला छे, ते माणसोमांथी कोणे तेउने तज्या छे.? हवे गुरुनुं लक्षण कहे छे.

महाव्रतधरा धीरा भैक्ष्यमात्रोपजीविनः ॥
सामायिकस्था धर्मोपदेशका गुरवोमताः ॥ ८ ॥

अर्थः—महाव्रतने धरनारा, धीर, भिक्षामात्रपर आजीविका चलावनारा, सामायिकमां रहेला, तथा धर्मनो उपदेश करनाराउने गुरु मानेला छे.

टीकाः– अहिंसादिक महाव्रतोने धरनारा; अने धीर, एटले आपत्तिउमां विकलता विनाना, कारण के धैर्यपणाथी अखंडित महाव्रतने धारण करी शके छे. एवी रीतें मूलगुणोनुं धारवापणुं कहीने हवे उत्तर गुणोनुं धारवापणुं कहे छे. लोकोपासेथी अन्न, पाणी, तथा धर्मोनां उपकरण लइने ते पर आजीविका चलावनार; पण धन, धान्य, सोनुं, गाम, के नगरने ग्रहण करे नहीं; हवे मूलगुण अने उत्तर गुणनां धारण करवानां कारणभूत गुणने कहे छे. सामायिकमां रहेनारा, "सम," एटले रागद्वेष रहित आत्मा, अने तेने ज्ञानादिक गुणोनी जे प्राप्ति ते सामायिक कहेवाय, तेमां रहेनारा; अने एवी सामायिकमां रहेनार मुनि मूलोत्तरगुणवाला चारित्रने पालवाने समर्थ छे. हवे उपरनां लक्षणो तो सघला साधुउने सरखां होय छे, अने गुरुनुं असाधारण लक्षण तो तेउनुं धर्मोपदेशकपणुं छे. संवर अने निर्जरारूप, यति अने श्रावक संबंधि धर्मनो जे उपदेश करे, ते धर्मोपदेशक कहेवाय. वली सद्भूत (सत्य तत्वोवालां) शास्त्रोनो जे अभ्यास करे, ते "गुरु" कहेवाय.

हवे कुगुरुनुं लक्षण कहे छे.

सर्वाभिलाषिणः सर्वभोजिनः सपरिग्रहाः ॥
अब्रह्मचारिणो मिथ्योपदेशा गुरवो न तु ॥ ९ ॥

अर्थः– सर्व इछाउ राखनारा, सघलुं खानारा, परिग्रहधारी, ब्रह्मचर्य नहि पालनार, तथा मिथ्या उपदेश करनाराउने गुरु नहिं जाणवा.

टीकाः– स्त्री, धन, धान्य, सुवर्ण, खेतर, घर, ढोर इत्यादि राखनाराउ सर्वाभिलाषिउ कहेवाय; तथा मद्य, मांस, अनंतकाय आदिकनुं भक्षण करनारा "सर्वभोजी" कहेवाय. तथा पुत्र, स्त्री आदिकनी साथे रहेनारा सपरिग्रह कहेवाय. अने तेथीज तेउने अब्रह्मचारीपणुं आवी जायछे. तो पण अब्रह्मनुं महादोषपणुं देखाडवा माटे जुदुं "अब्रह्मचारिनुं" विशेषण आपेलुं छे. हवे कुगुरुपणानुं असाधारण कारण कहे छे; ते ए के तेउ "मिथ्योपदेशी" छे; एटले प्रमाणपुरुषना उपदेश रहित, तेउनुं धर्मकथन छे. माटे एवाउने गुरु कहेवाय नहीं; अहीं शंका करे छे के, जो

कदाच तेउंमां धर्मोपदेशनुं देवापणुं होय, तो पछी परिग्रहना रहितपणाना दोषोने जोवानी शी जरुर छे? तेने माटे कहे छे.

परिग्रहारंभमग्ना स्तारयेयुः कथं परान् ॥
स्वयं दरिद्रोन परमीश्वरीकर्त्तुमीश्वरः ॥ १० ॥

अर्थः— परिग्रहना आरंभमां मग्न थएलाउं परने शी रीतें तारी शके? कारण के, जे माणस, पोतेज दरिद्री होय, ते बीजाने शी रीतें श्रीमंत करी शके?

हवे धर्मनुं लक्षण कहे छे.

दुर्गतिप्रपतत्प्राणि धारणाद्धर्म उच्यते ॥
संयमादिर्दशविधः सर्वज्ञोक्तोविमुक्तये ॥ ११ ॥

अर्थः— दुर्गतिमां पडता प्राणिउंने धारण करे, ते धर्म कहेवाय; अने ते संयमादिक दश प्रकारनो, सर्वज्ञ प्रभुए कहेलो धर्म, मोक्ष माटे थाय.

टीकाः— दुर्गति एटले नरक अने तिर्यंच रूप, गतिमां पडनारा प्राणिउंने जे धारी राखे, एटले त्यां जतां अटकावे ते "धर्म" कहेवाय. वली जे नर, देव, तथा मोक्षगतिमां जंतुउंने धारण करे, ते पण "धर्म" कहेवाय. अने ते धर्म हवे जेनुं वर्णन करवामां आवशे, एवा संयम आदिक दश प्रकारनो छे; अने ते पण सर्वज्ञ प्रभुए कहेवाथी मोक्ष माटे थाय छे. अने बीजा देवोयें तो सर्वज्ञपणा विना चलावेलो धर्म प्रमाण रूप नथी; हवे अहीं वादी शंका करे छे के, सर्वज्ञनां वचनोनो अभाव होवाथी पण, पुरुषविना कहेला धर्मनुं (वेदवाक्योनुं) तो प्रामाणिकपणुं घटी शके छे. कारण के प्रेरणा (एटले वेदोनुं प्रेरकवाक्य) छे ते, भूत, भविष्य, वर्त्तमान, स्थूल, सूक्ष्म, व्यवहित, विप्रकृष्ट विगेरे अर्थोने जणाववाने समर्थ छे; पण इंद्रियो कंइ जणाववाने समर्थ नथी. वली ते वैदिक धर्म, अपौरुषेय होवाथी पुरुष संबंधि दोषोनो तेमां प्रवेश नहि थवाथी पण प्रमाणरूप छे, कह्युं छे के, शब्द, ज्यां सुधि बोलनारने आधीन छे, त्यांसुधीज ते दूषित थइ शके छे, अने ते दोषनो अभाव गुणवानना मुखथी पण क्वचित् थइ शके छे. अने तेवां वचनोमां दोषनी संक्रांति (असर) नो पण अभाव छे, अथवा कहेनारनो अभाव मानते छते, आश्रय-

रहित दोषो रही शकता नथी. वली पुरुषसंबंधि बनावटमां दोष, अदोषनो विचार थाय, पण वेदमां तो कर्त्तानोज अजाव होवाथी अमोने दोषनी शंकाज नथी. आ सघलुं वादिनुं कहेवुं छे. हवे तेनो उत्तर आपे छे.

अपौरुषेयं वचन, मसंजवं जवेद्यदि ॥
न प्रमाणं जवेद्वाचां, ह्याप्ताधीना प्रमाणता ॥ १२ ॥

अर्थः– पुरुषविनानुं वचनज असंजवित छे, अने कदाच होय, तो पण ते प्रमाण नथी; कारण के, वचनोनी प्रमाणता आप्तने (यथार्थ वक्ताने) आधीन छे,

टीकाः–पुरुषें स्थान, करण (इन्द्रिय) आदिकना अजिघातथी बोलेलुं वचन पौरुषेय कहेवाय. अने स्थान करण विनानुं जे वचन ते अपौरुषेय, ते परस्परविरुद्ध छे. अने तेथी ते आकाशना परमाणुनी पेठे असंजवित छे. तेम छतां अमूर्त्तनुं अदर्शन कहेवुं ते पण प्रमाण न होवाने लीधे युक्त नथी. ताली आदिकथी थता शब्दना श्रवणने जो प्रमाण गणियें, तो ते पण युक्त नथी; कारण के, तेम मानवामां पण तेनी कोइथी पण उत्पत्ति सिद्ध थाय छे; माटे एम ताली आदिकथी शब्दनी उत्पत्ति मानवामां तो उलटो अपौरुषेयपणाने दोष आवे छे. कारण के, जेम एक शब्द माटे ज्यारे स्थान करणनी जरुर पडी, त्यारे तेना जेवा बीजा शब्दो माटे पण तेनी जरुरीयात छे. वली गृहस्थें दहींनी मटकी जोवा माटे करेलो दीवो, त्यां रहेला पुडलाने पण देखाडी आपे छे. माटे एवी रीतें वचनने अपौरुषेयपणुं घटतुं नथी. वली जो अप्रामाणिकपणानी टेवना बलथी आकाशादिकनी पेठे शब्दने अपौरुषेय पणुं मानियें, तो पण ते प्रमाण न थाय. कारणके यथार्थ वक्तानांज वचनो प्रमाण छे. कारण के शब्दो ज्यां सुधि कहेनारने आधीन होय, त्यां सुधि गुणवाला होय; पण दोषयुक्त बोलनारने तो गुणोनो अजाव छे; माटे एवा अपौरुषेय वचनमां तो गुणोने दाखल थवानो पण अजाव छे. अथवा कहेनारविना गुणो आश्रयविना रही शक्ता नथी. वली आ वचनोमां गुणो छे के, नहि ? ते पण पौरुषेय वचनमां जोवानुं छे, पण वेदमां तो कर्त्तानोज अजाव छे, तो तेमां गुणो होय, एवी अमोने शंका पण थती नथी.

एवी रीतें असंजव पणाथी अपौरुषेय वचननो अजाव कहीने, अस-र्वज्ञे रचेला धर्मनुं अप्रामाणिकपणुं कहे छे.

मिथ्यादृष्टिनिराम्नातो, हिंसाद्यैः कलुषीकृतः ॥
स धर्म इति वित्तोपि, जवभ्रमणकारणं ॥ १३ ॥

अर्थः– मिथ्यादृष्टि एटले हरि, हर, ब्रह्मा, कपिल, बुद्ध, आदिकें प्ररूपेलो धर्म, जो के मुग्धबुद्धिउं प्रति प्रसिद्ध छे, तो पण, ते हिंसादिकथी कलुषित होवाथी जवमां जमाववानो हेतुजूत छे, कारण के, तेउंना बनावेला आगमो हिंसादिकथी दूषित थयेला छे. हवे, कुदेव, कुगुरु तथा कुधर्मनो आक्षेप सहित प्रतिक्षेप करे छे.

सरागोऽपिहि देवश्चेत्, गुरुरब्रह्मचार्यपि ॥
कृपाहीनोपि धर्मः स्यात्, कष्टं नष्टं हहा जगत् ॥ १४ ॥

अर्थः–जो देव, राग, द्वेष अने मोहसहित होय, गुरु, अब्रह्म सेवनार, तथा उपलक्षणथी मूलोत्तरगुणरहित होय, तो अरेरे !!! तेवा देव, गुरु अने धर्में जगत्‌ने दुर्गति आपवाथी तेनो नाशज कर्यो छे. (एम समजवुं)

हवे एवी रीतें, कुदेव, कुगुरु, तथा कुधर्मने छोडवाथी सुदेव, सुगुरु, अने सुधर्मने अंगीकार ते करवारूप जे सम्यक्त्व ते, आत्मपरिणामरूप छे, ते आपणा छद्मस्थ आदिकने प्रत्यक्ष नथी. पण केवल लिंगथीज जणाय छे, हवे ते लिंगो देखाडे छे.

शमसंवेगनिर्वेदा, नुकंपास्तिक्यलक्षणैः ॥
लक्षणैः पंचजिः सम्यक्, सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते ॥ १५ ॥

अर्थः– समता, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा, अने आस्ता, ए पांच लक्षणोवालुं समकित सारी रीतें उलखी शकाय.

टीकाः– शम, एटले समता अनंतानुबंधि कषायना अनुदयथी स्वाजाविक रीतें थाय छे, अथवा कषायनां परिणामरूप कडवां फलोने जोवाथी थाय छे, वली केटलाको क्रोधनी खरजनो, तथा विषयनी तृष्णानो जे उपशम तेने पण समता कहे छे. कारण के, समकिती अने साधुनी उपासना करनार माणसो, क्रोधनी खरजथी तथा विषयनी तृष्णाथी शी रीतें चपल थइ शके. हवे अहीं शंका करे छे के, जो क्रोधनी खरज

तथा विषयनी तृष्णाना उपशमने समता मानियें तो अपराधी अने निरपराधि उपर क्रोध करता एवा, तथा विषयतृष्णामां आसक्त रहेला, एवा कृष्ण अने श्रेणिक आदिकने समता केम संभवे? अने जो समता न होय तो सम्यक्त्वनो पण संभव नहिं थाय. हवे ते शंकानुं समाधान करे छे के, लिंगी समकित होते छते तेमां लिंगोनुं अवश्य होवुं जोइयें, एवो कांइ नियम नथी कारण के, लुहारना घरमां धुंवाडा विनानो पण अग्नि देखाय छे; तेमज राखथी ढांकेला अग्निमां धुंवाडानो लेशमात्र पण होतो नथी. पण आटलो तो नियम छे के, सुपरीक्षित लिंगो होय; माटे एवी रीतें कृष्णादिकने, संज्वलन कषायना उदयथी क्रोधनी खरज, तथा विषयनी तृष्णा हती; कारण के केटलाक संज्वलन कषायो पण तीव्रपणाथी अनंतानुबंधी सरखा विपाकवाला होय छे; हवे संवेग एटले मोक्षनो अभिलाष. कारण के समकितवंत प्राणी चक्रवर्त्ति इंद्र आदिकनां वीषयसुखने दुःखरूप मानतो थको मोक्षसुखनेज सुखरूप मानेछे. हवे निर्वेद एटले भवथी वैराग्य. कारण के समकिती प्राणी दुःखदायी एवा भवरूपी केदखानामां कर्मरूपी कोटवालथी दुःखित थयो थको, तेमांथी छुटवाना उपायने करवाने असमर्थ थयो थको, ममतारहित दुःखथी खेदित थयो थको रहेछे. केटलाको तेउ बन्नेनो (संवेग निर्वेदनो) उलटासुलटो पण अर्थ करे छे. हवे अनुकंपा एटले दुःखीने स्वार्थ विना दुःखमांथी छोडाववानी इछा. कारण के स्वार्थनी करुणा तो वाघ आदिकने पण पोतानां बच्चांउनी रक्षामाटे होय छे. ते अनुकंपाना बे भेदो छे. द्रव्यथी अने भावथी. द्रव्यथी एटले शक्ति प्रमाणे दुःखीने दुःखथी छोडाववुं ते; अने भावथी हृदयमां कोमलता लाववी ते. (अथवा प्रकारांतरें जीवने धर्म पमाडवानी बुद्धि ते भाव अनुकंपा) हवे आस्तिकपणुं एटले, जिनेश्वरनां कहेलां तत्वमां शंका कंखारहित करवानी बुद्धि. कारण के, आस्तिकपणुं ते सम्यक्त्वनुं लिंग छे.

शम एटले सुपरीक्षित बोलनारनां करेलां आगमोनां तत्वोमां आग्रह राखी, मिथ्यात्विनां तत्वोना आग्रहनो उपशम करवो ते. कारण के जे अतत्वने तजीने तत्वने ग्रहण करे ते समकीती कहेवाय. संवेग एटले चारे गतिउमां थतां दुःखोथी भय पामीने, तेनी शांतिमाटे जे, धर्मने अ-

दुखरवुं ते. अने निर्वेद एटले कामभोगोने आ लोक तथा परलोकमां पण दुःखना हेतु जाणी, तेनो त्याग करवो ते. अने अनुकंपा एटले सघला जीवो सुखना अर्थी, अने दुःखनो त्याग करवानी इछावाला छे, एम जाणी तेमनापर दया करवी ते अनुकंपा. आस्तिकता एटले जिनेश्वरें कहेला, जीव तथा परलोक आदिक अतींद्रिय पदार्थो खरा छे, एम मानवुं ते. माटे ते पांचे लक्षणोथी सम्यग्दर्शन ओलखी शकाय छे.

हवे समकितनां लिंगो कहीने, (पांच) भूषणो कहेछे.

स्थैर्यं प्रभावना भक्तिः कौशलं जिनशासने ॥
तीर्थसेवा च पंचास्य भूषणानि प्रचक्षते ॥ १६ ॥

अर्थः– जिनशासनमां स्थिरता, प्रभावना, भक्ति, विचक्षणता, तथा तीर्थनी सेवा ए पांच समकीतनां भूषणो छे.

टीकाः– स्थैर्य एटले जिनशासनथी चलित थएला पर जीवने स्थिर करवो, तथा पोते अन्य दर्शनीनी ऋद्धि जोइने चलायमान न थवुं ते. प्रभावना आठ प्रकारनी छे; तेना स्वामि नीचे प्रमाणे. पेहेलो "प्रावचनिक" एटले अंगोपांगादिक शास्त्रोनो जाणनार. बीजो धर्मकथा कहेनार एटले "धर्मकथी" त्रीजो "वादी" एटले, वादी प्रतिवादी, सभ्य अने सभापाली चतुरंगी सभामां, प्रतिपक्षिने हरावीने पोताना पक्षने स्थापन करनार. चोथो "नैमित्तिक" एटले त्रैकालिक ज्ञानवालां शास्त्रोने जाणनार अथवा भणनार. पांचमो "तपस्वी" एटले अठम आदिक तप करनार. छठो "विद्यावान्" एटले प्रज्ञप्ति आदिक विद्यादेवियो जेने सहाय छे ते. सातमो "सिद्ध" एटले अंजन, पादलेप, तिलक, गोली, तथा वैक्रिय आदिक लब्धिवालो ते सिद्ध कहेवाय. आठमो "कवि" एटले गद्यपद्यात्मक ग्रंथ रचनार. ते आठे देश कालने उचित जिनशासननी प्रभावना करनारा छे. तेओनुं कार्य ते प्रभावना नामनुं बीजुं भूषण जाणवुं. हवे भक्ति एटले अधिक गुणीनो विनय करवो ते. एटले ते आवते छते उभा थवुं, हाथ जोडवा; आसन आपवुं, वंदना करवी, पछवाडे मुकवा जवुं इत्यादि आठ प्रकारनो विनय करवो; तथा वैयावच करवी, एटले आचार्योपाध्याय आदिक दशेनी अन्न, पाणी, वस्त्र, पात्र, औषध आदिकथी जे वैयाव-

छ करवी ते; ते भक्ति नामें त्रीजुं भूषण जाणवुं. हवे कौशल एटले जेम अनार्यदेशमां रहेला आर्द्रकुमारने श्रेणिक राजाना पुत्र अभयकुमारें विचक्षणताथी प्रतिबोध्यो; तेवी कौशलता ते चोथुं कौशल नामें भूषण जाणवुं. हवे तीर्थ बे प्रकारनुं. एक द्रव्य तीर्थ अने बीजुं भाव तीर्थ. ज्यां तीर्थंकरनां जन्मादिक कल्याणक थयां होय, ते क्षेत्रने द्रव्यतीर्थ जाणवुं; तथा चतुर्विध संघ, अने प्रथम गणधर ते भावतीर्थ जाणवां. तेनी सेवा ते तीर्थसेवा नामें पांचमुं भूषण जाणवुं.

हवे समकीतनां पांच दूषणो कहे छे.

शंकाकांक्षा विचिकित्सा, मिथ्यादृष्टिप्रशंसनम् ॥
तत्संस्तवश्च पंचापि, सम्यक्त्वं दूषयंत्यलं ॥ १७ ॥

अर्थः– शंका, कंखा, दुगंछा, अथवा फलसंदेह, मिथ्यादृष्टिनी प्रशंसा, तथा मिथ्यादृष्टिनो परिचय ए पांचे दोषो समकीतने दूषित करे छे.

टीकाः– शंका बे प्रकारनी; देशथी अने सर्वथी, सर्वथी, एटले धर्म छे, के नहीं ? एवी जे शंका, ते सर्वथी शंका जाणवी. अने धर्म मान्ये छते पण, जीवादिक पदार्थो सर्वव्यापक छे के देशव्यापक छे, इत्यादि जे शंका ते देशथी शंका जाणवी. आ बन्ने प्रकारनी शंका सम्यक्त्वने दूषण लगाडे छे. कारण के, सघला पदार्थो केवलीगम्य छे; आपणे छद्मस्थ होवाथी तेमने जाणी शकता नथी, अने ते आप्तनां वचनो होवाथी संदेह करवा लायक नथी. तो पण मोहना वशथी थयेली शंकाने अटकाववी ते मुश्केल छे. सूत्रना एक अक्षरनी अरुचि करनारने पण मिथ्यादृष्टि कहेलो छे. माटे शंका न करवी. हवे कंखा एटले कुदर्शननी वांछा. ते पण देशथी अने सर्वथी, एम बे प्रकारनी छे; सघला पाखंडि धर्मनी वांछारूप, सर्वथी कंखा जाणवी. अने एकेक अन्य दर्शननी वांछारूप, देशकंखा जाणवी. जेम बुद्धे स्नान, पान, आछादन, शयनीय इत्यादिनां सुखवालो धर्म कहेलो छे, एम कहेवुं ते देशकंखा जाणवी. माटे एवी रीतनी देशथी अने सर्वथी जे कंखा करवी ते सम्यक्त्वने दूषण करनारी छे. हवे विचिकित्सा एटले चित्तनो विप्लव, जेमके तप आदिक करवां ते वेलुना कोलीआ जेवां, अने तेनुं फल तो मले के, न मले, इत्यादि जे विचारवुं, ते विचि-

कित्सा कहेवाय, अने ते पण सम्यक्त्वने दूषित करे छे. शंका अने विचिकित्सामां जोके तफावत जेवुं नथी जणातुं, तोपण शंका छे ते, ड्रव्यगुणना विषयवाली छे, अने विचिकित्सा ते क्रिया विषयवाली जाणवी. अथवा विचिकित्सा एटले मुनिनां मलमलिन गात्रो देखी डुगंछा करवी ते. हवे चोथो दोष मिथ्यात्वीनी प्रशंसा, एटले जिनागमथी विपरीत दर्शनीउंनी प्रशंसा करवी ते. तेना बे ज्ञेदो. सर्वथी तथा देशथी. सर्वथी, एटले सघलां दर्शनोने युक्तिवालां कहेवां ते. अने देशथी, एटले अन्यएवा एकनां दर्शनने तत्ववालुं मानवुं ते. बन्ने जातनी मिथ्यात्विनी प्रशंसा सम्यक्त्वने दूषण लगाडनारी छे. हवे पांचमो दोष मिथ्यात्विउंनुं संस्तव एटले तेउंनो परिचय करवो ते, कारण के मिथ्यात्विउंना परिचयथी, तेउंनी क्रिया देखवाथी, तथा प्रक्रिया सांजलवाथी, समकीतीउंने पण दृष्टि विपर्यास थाय छे; त्यारे मंदबुद्धिनी तो वातज शी करवी ? माटे ते मिथ्यात्विउंनो परिचय पण सम्यक्त्वने दोषित करनारो छे. एवी रीतें उपर कहेला गुणोवाला, तथा दूषणरहित सम्यक्त्वने, ड्रव्य क्षेत्र, काल तथा जावनी सामग्रीपूर्वक, गुरुनी पासे विधिपूर्वक अंगीकार करीने श्रावको पाले छे.

हवे मिथ्यात्व मोहनीमां रहेलो प्राणी, एक कोडाकोडी सागरोपममां पल्योपमनो असंख्यातमो जाग उणी, एवी आयुवर्जित साते कर्मनी स्थिति ज्यारे राखे, त्यारे तेने सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय, अने तेमांथी पृथक्त्व, पल्योपम, (एटले बेथी नव पल्योपम सुधिनी) स्थिति ज्यारे उंछी थाय त्यारे जीवने देशविरति प्राप्त थाय, एवी रीतें अणुव्रतना मूलरूप सम्यक्त्वनुं वर्णन कर्युं.

हवे पांच अणुव्रतोनुं स्वरूप कहेछे.

विरतिं स्थूलहिंसादे, र्द्विविधत्रिविधादिना ॥
अहिंसादीनि पंचाणु, व्रतानि जगदुर्जिनाः ॥ १८ ॥

अर्थः— मन, वचन, अने कायाथी, करवुं नहीं, कराववुं नहीं; एवी छ ज्ञेदें, स्थूल हिंसादिकथी जे विरमवुं, तेने जिनेश्वरोये, पांच अणुव्रतो कहेलां छे.

टीकाः—स्थूल हिंसा, एटले मिथ्यात्विउए मानेली अथवा, त्रस जी-

वोनी हिंसा अने उपलक्षणथी निरपराधि जीवोने संकल्पपूर्वक मारवा ते. अने आदि शब्दना ग्रहणथी स्थूल एवुं अनृत (जूठुं बोलवुं ते) चोरी, अब्रह्मचर्य, तथा परिग्रहोनुं पण ग्रहण करवुं. ते पांचेथी जे विरमवुं; तेने जिनेश्वरोए पांच अणुव्रतो कहेलां छे. ते विरति मन, वचन, अने कायाथी कराववा, तथा करवारूप ग्रहण करवी. अहीं अनुमोदनानो भांगो दाखल कर्यो नथी; तेनुं कारण ए के, गृहस्थोने पुत्रादिक संबंधि परिग्रहनी अनुमोदना होय, तेथी तेनो अत्र निषेध कर्यो छे. अन्यथा गृहस्थो तथा साधुओ एक सरखा थइ जाय, हवे अहीं शंका करेछे के, भगवानें आगममां गृहस्थने त्रिविधें त्रिविधें पण पच्चखाण कहेलुं छे, ते छतां अहीं अनुमोदनानो भांगो केम ग्रहण नथी करता? तेने माटे कहेछे के, जे गृहस्थ दीक्षा लेवाने तत्पर थयेलो, पडिमाधारी होय, ते त्रिविधें त्रिविधें पचखाण करी शके छे, अथवा स्वयंभूरमण समुद्रमां रहेला मत्स्यआदिकना मांसनुं पण त्रिविधें त्रिविधें पच्चखाण करी शकाय छे, (कारण के ते मांस मलवानो असंभव छे.) माटे ते त्रिविध त्रिविधनो पाठ अल्पविषयवालो छे, पण द्विविध त्रिविधनो पाठ तो बाहुल्यविषयवालो जाणवो.

हवे त्रिविध त्रिविध, एटले मन, वचन, कायाथी करवा, कराववा तथा अनुमोदवारूपें लेखतां तेना उगणपचास भांगा थाय छे, अने तेना त्रणे कालने लेखे एकसोने सडतालीश भांगा प्राप्त छे. तेमां अतीत कालना निंदारूपने, वर्त्तमान कालना संवररूपें, अने अनागत कालना पच्चखाण रूपें छे. एवी रीतें सामान्यपणाथी हिंसादिकने गोचर एवी विरतिने देखाडीने, हवे तेनुं विशेष स्वरूप देखाडता थका कहे छे.

पंगुकुष्टिकुणित्वादि, दृष्ट्वा हिंसाफलं सुधीः ॥
निरागस्त्रसजंतूनां, हिंसां संकल्पतस्त्यजेत् ॥ १९ ॥

अर्थः— बुद्धिमान् माणसें, पांगलापणुं, कुष्टिपणुं, तथा हाथ आदिकनुं ठुंठापणुं, ते सघलाने हिंसानां फलरूपें जोइने, निरपराधी एवा त्रस जीवोनी संकल्पपूर्वक हिंसाने तजवी जोइयें.

टीकाः— पांगलो एटले, पग होय छतां जे चालवाने असमर्थ होय ते

अने उपलक्षणथी नीचली कायना तमाम दोषोवालो. कुष्टी एटले कांसडीनां रोगवालो, अने उपलक्षणथी अनेक प्रकारना रोगोवालो, अने कुणि एटले खंडित हाथवालो, अने उपलक्षणथी शरीरना उपला जागोमां दूषणोवालो, ते सघलाउने शास्त्रथी हिंसानां फलरूप जाणीने, बुद्धिमान् माणसें ते हिंसाने तजवी. हिंसा कोनी तजवी ? ते हवे देखाडे छे. बेइंद्रियादिक निरपराधी त्रस जीवोनी संकल्पपूर्वक हिंसा तजवी. पण अपराधीयोनी हिंसा तजवानो नियम नथी. त्रस शब्दथी एकेंद्रिय जीवनी हिंसा तजवानो पण नियम थइ शकतो नथी. संकल्प एटले, "आ प्राणीने हुं मांस आदिक मेलववा माटे मारी नाखुं" एवी बुद्धिथी हिंसा न करवी. पण आरंजमां थती हिंसानुं पच्चखाण पाली शकातुं नथी. माटे त्यां जतना राखवी.

हवे जेउ जीव तथा शरीरने एकांत जिन्न माने छे, तेना मते शरीरनो नाश थवाथी पण जीवनो नाश थतो नथी. वली जीव तथा शरीरने एकांत अजिन्न मानवाथी, शरीरना नाशनी साथेज जीवनो पण नाश थाय छे, त्यारे परलोकज ठरतो नथी. माटे देहथी जीवने जिन्न अजिन्न, एम स्याद्वादथी मानते छते, देहनो नाश थतां जे पीडा थाय छे, तेने हिंसा कहे छे. माटे जे हिंसामां मरनारने दुःख उपजे, मनने क्लेश थाय, अने तेना शरीरना जागोनो जेमां नाश थाय, एवी हिंसाने विद्वान् माणसें तजवी. प्राणी, प्रमादथी जे कोइना प्राणनो नाश करे छे, ते हिंसा संसाररूपी वृक्षनां बीज समान छे. मरनार मरे अथवा न मरे, तो पण प्रमादीने हिंसा लागेज छे, अने अप्रमादीने हिंसा थतां पण हिंसा लागती नथी. वली जीवने नित्य तथा अपरिणामी मानवाथी हिंसा थतीज नथी, अने क्षणिकवादीना मत प्रमाणे तो जीव, क्षणे क्षणेज नाश पामी रह्यो छे, त्यारे हिंसा शानी थाय ? माटे जीवने नित्यानित्य तथा परिणामी मान्ये छते कायना वियोगें करीने हिंसा घटी शके छे, कारण के, पीडा छे, ते, पापनुं कारण छे. वली केटलाको एम कहे छे के, घातकी प्राणीउने मारी नाखवां, कारण के, तेवा घातकी एक जीवने मारवाथी घणा जीवोनुं रक्षण थाय छे, ते कहेवुं पण अयुक्त छे, कारण के, सघला प्राणीउ बीजाउना नाशथी पोतानुं पोषण कर-

नाश छे, अने तेथी सघलाउने मारी नाखवा जोइयें, अने एम करवाथी तो, वधावनी इछा करतां थकां, मूलपुंजी खोवाजेवुं थयुं. अने धर्म तो अहिंसामय छे, ते हिंसाथी केम थाय ? कारण के, पाणीमां उत्पन्न थतां कमलो, अग्निमांथी उत्पन्न थतां नथी. वली पापोना हेतुरूप जे हिंसा, ते पापोनो शी रीतें नाश करे ? कारण के, मृत्युना हेतुरूप जे झेर, ते जीवितमाटे शी रीतें थाय ? वली केटलाको एम कहे छे के, दुःखी जीवोनें दुःखमांथी छोडाववामाटे मारी नाखवा, ते कहेवुं पण अयुक्त छे, कारण के, तेवा जीवो मरायाबाद जो नरकगामी थाय, तो तेमने स्वल्प दुःखमांथी छोडावी अधिक दुःखमां घालवा जेवुं थाय; माटे एवी रीतनां कुतीर्थिउनां वचनोने तजवां. वली नास्तिक वादीउ कहे छे के, आत्माज नथी, अने तेनाविना हिंसाज कोनी थाय ? अने हिंसानुं फल पण कोने मले ? जेम पीठां (पिष्ट) आदिकथी मदिरानी उत्पत्ति थाय छे, तेम पंचभूतथी चैतन्यशक्ति थाय छे, अने ज्यारे ते भूतोनो नाश थाय छे, त्यारे जीवनुं मृत्यु थयुं, एम कहेवाय छे; आत्मानो अभाव होते छते, तेना मूलरूप जे परलोक, ते पण घटे नहीं; अने एवी रीतें परलोकनो पण अभाव थवाथी पुण्य पापनी वात करवी, तेज वृथा छे. वली तप, संयम आदिक तो भोगोनी वंचनारूप छे. हवे तेनो उत्तर कहे छे. देहमां रहेलो जीव, स्वसंवेदनताथीज सिद्ध थाय छे; वली हुं सुखी छुं, दुःखी छुं, इत्यादि तेनी प्रतीति छे; " हुं घडाने जाणुं छुं " एम कहेवामांज कर्म, कर्त्ता, अने क्रिया ए त्रणे जणाय छे; ते छतां कर्त्ताने शा माटे निषेधवो पडे छे ? वली जो शरीरने कर्त्ता माने, तो ते अचेतन होवाथी, कर्त्ता ठरी शके नहीं, अने भूत अने चैतन्यना संयोगथी जो माने, तो चेतनने असंगतपणुं आवे छे; वली तेमने एक कर्त्तापणानो अभाव होवाथी, में आ सांभल्युं, में दीठुं, में स्पर्श कर्युं, में सुंघ्युं, में चाख्युं, इत्यादि बोलवुं तेमने घटी शके नहीं. माटे एवी रीतें जेम स्वसंवेदनथी पोतानां देहमां आत्माने अस्तिरूपें मान्यो, तेम परना देहमां पण अनुमानथी जाणवो. वली पोताना देहमां बुद्धिपूर्वक थती क्रियाने जोइने, बीजाउमां पण तेवीज रीतें जाणवी; एम प्रमाणथी सिद्ध थएली वातने कोण निवारी शके छे ? माटे एवी रीतें जीवनी सिद्धि होते छते, परलोकने मानवो ते दुर्घट नथी; अने

पछी पुण्य पाप तो पोतानी मेळेज घटी जाय छे. वली तप, संयम आदि-क जोगोथी ठगावारूप छे; एम कहेवुं, ते पण उन्मादरूप छे; एवी वात कया सचेतन माणसने हसवारूप थती नथी? माटे, जीव, बाधारहित पणे स्थिति, उत्पत्ति, अने व्ययरूप छे; वली ते, ज्ञाता, जोनार, गुणी, भोक्ता, कर्त्ता तथा शरीर जेटला प्रमाणवालो छे. माटे एवी रीतें आत्मा-नी सिद्धि थवाथी, हिंसा शा माटे अंगीकार न कराय? अने ते हिंसा-नो परिहार करवाथी अहिंसाव्रत थाय छे.

हवे हिंसाना नियममां स्पष्ट दृष्टांत कहे छे.

आत्मवत्सर्वभूतेषु, सुखदुःखे प्रियाप्रिये ॥
चिंतयन्नात्मनोनिष्टां, हिंसामन्यस्य नाचरेत् ॥ २० ॥

अर्थः— अन्न, पाणी, चंदन विलेपन इत्यादिक साधनोथी उत्पन्न थ-तां सुखमां, अने वध, बंधन आदिकथी उत्पन्न थतां दुःखमां, पोताने जेम सुखनां साधनो प्रिय छे, अने दुःखनां साधनो अप्रिय छे, तेमज पर जीवोने माटे पण विचार करीने हिंसा करवी नहीं.

हवे अहीं कोइ शंका करे के, निषिद्ध आचरणो सेववामां दोष छे, तेथी त्रस जीवनी हिंसानो प्रतिषेध कर्यो, पण नहीं निषेध करेली ए-वी जे स्थावरोनी हिंसा, तेमां तो गृहस्थो गमे तेम वर्ते!!! तेने मा-टे उत्तर कहे छे.

निरर्थकां न कुर्वीत, जीवेषु स्थावरेष्वपि ॥
हिंसामहिंसाधर्मज्ञः, कांक्षन् मोक्षमुपासकः ॥ २१ ॥

अर्थः—अहिंसा धर्मने जाणनारा तथा मोक्षने इछता श्रावकें, स्था-वर जीवोनेविषेपण कारणविना हिंसा करवी नहीं.

टीकाः— स्थावर एटले पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, त-था वनस्पतिकाय, एटलानी कारणविना हिंसा करवी नहीं. कारण के, गृहस्थथी, पोताना शरीरमाटे तथा कुटुंबना निर्वाहमाटे स्थावरोनी हिं-सा पाली शकाती नथी; पण उपर जणावेला कारणोविना स्थावरोनी हिं-सा श्रावकें करवी नहीं. हवे ते श्रावक केवो? तोके अहिंसा नामना ध-र्मने जाणनारो,एटले प्रतिषेध करेली अहिंसाना धर्मनेज जाणनारो एम

नहीं, पण नहीं प्रतिषेध करेली एवी हिंसामां पण यतनाने जाण-नार. हवे अहीं कोइ शंका करे के, प्रतिषेध करेली हिंसा तो श्रावक पाले, पण नहीं प्रतिषेध करेली एवी हिंसा पालवानी तेने शी जरूर छे? तेने माटे कहेछे के, ते श्रावक पण यतिनी पेठे मोक्षने इछनारो छे, माटे ते पण शा माटे निरर्थक हिंसा करे. वली पण कोइ एवी शंका करे के, हमेशां हिंसा तो जले करे, पण पछी धन आदिकनुं दान दइने ते पापोनो नाश करशे, माटे ते अहिंसाव्रत पालवाना क्लेशनी शी जरूर छे? तेने माटे हवे कहे छे.

प्राणी प्राणितलोभेन योराज्यमपि मुंचति ॥
तद्वधोत्थमघं सर्वोर्वीदानेऽपि न शाम्यति ॥ २३ ॥

अर्थः– जो प्राणी, जीववाना लोभथी राज्यने पण तजी दीये छे, तेवा प्राणीना वधथी उत्पन्न थतुं पाप पृथ्वीनुं दान देवाथी पण शांत थतुं नथी (कारण के श्रुतिमां पृथ्वीदानने सर्वदानमां अधिक दान कहेलुं छे.)

हवे चार श्लोकोथी हिंसा करनारनी निंदा कहे छे.

वने निरापराधानां वायुतोयतृणाशिनां ॥
निघ्नन् मृगाणां मांसार्थी विशिष्येत कथं शुनः ॥ २४ ॥

अर्थः– निरपराधी, तथा वायु, पाणी, अने घांस खानारा, एवा वनमां रहेला मृगोने, मांसने माटे, मारनार माणस कुतराथी केम वधी जाय? अर्थात् तेने कुतरा सरखोज जाणवो.

टीकाः– हवे अहीं कोइ शंका करे के, परनी भूमिमां रहेनार एवा मृगादिकोने निरपराधी केम कहेवाय? तेने माटे कहे छे; अहीं निरपराधी, एटले परनां धनने नहीं हरनारा, परनां घरने नही भांगनारा, तथा परनो वध नहीं करनारा; अने वली वायु, पाणी, तथा घांस खानारा, छे, तेउ निरपराधीज छे. अहीं मृगोना ग्रहणथी उपलक्षणें करी बीजां पण वनवासी प्राणीउ जाणवां, माटे एवा प्राणीउने मारनार जे शिकारीउ तेउने कुतरा समानज जाणवा.

दीर्यमाणः कुशेनापि यः स्वांगे हंत दूयते ॥
निर्मंतून् सकथं जंतूनंतयेन्निशितायुधैः ॥ २५ ॥

अर्थः— जे माणस, एक डाजथी पण पोताना अंगे हणायो छतो दुःखाय छे, ते माणस तीक्ष्ण हथीयारोथी बीचारा निरपराधी प्राणीओने शा माटे मारे छे.?

निर्मातुं क्रूरकर्माणः क्षणिकामात्मनोधृतिं ॥
समापयंति सकलं जन्मान्यस्य शरीरिणः ॥ २६ ॥

अर्थः— क्रूर कर्मो करनारा (शिकारिओ) पोतानी क्षणमात्रनी तृप्ति करवा माटे, बीजाप्राणीनो समस्त जन्मनाश करेछे.

म्रियस्वेत्युच्यमानोऽपि देही भवति दुःखितः ॥
मार्यमाणः प्रहरणैर्दारुणैः सकथं भवेत् ॥ २७ ॥

अर्थः—तुं मरी जा ? एम कोइने कहेवाथी पण ते बिचारो दुःखित थाय छे; त्यारे तेने भयंकर हथीयारोथी मारवाथी तो केटलुं बधुं दुःख थाय.

श्रूयते प्राणिघातेन रौद्रध्यानपरायणौ ॥
सुभूमोब्रह्मदत्तश्च सप्तमं नरकं गतौ ॥ २८ ॥

अर्थः— आगमोमां संभलाय छे के, रौद्रध्यानमां तत्पर एवा, सुभूम अने ब्रह्मदत्त नामें चक्रवर्त्तियो प्राणीयोना घातथी सातमे नरके गयेला छे, (अहीं तेमने नरकें जवामां रौद्रध्यान हेतुरूप छे, नहींतर सिंहनो वध करनार तपस्विने पण नरक मलत,) तेओनी कथा कहे छे.

वसंतपुर नामें नगरमां एक अग्निक नामें छोकरो हतो. एक दहाडो ते नगरथी देशांतर जवा निकल्यो, पण सार्थ (संघ)थी छुटो पडी जवाथी ते भमतो थको तापसोने आश्रमे जइ पहोच्यो, त्यांना जम नामना कुलपतियें, तेने पुत्र करी राख्यो, अने त्यारथी ते जमदग्नि नामथी पृथ्वीमां प्रसिद्ध थयो. त्यां ते प्रत्यक्ष ते अग्नि सरखो थइने अत्यंत तप तपतो हतो, अने तेथी तेनुं तेज पण घणुं वध्युं. एटलामां वैश्वानर नामें जेनी देव, तथा धन्वंतरी नामें तापसोनो भक्त देव, मांहों माहें विवाद करवा लाग्या. एक कहे के जैन धर्म प्रमाणरूप छे, अने बीजो कहे के, तापस धर्म प्रमाणरूप छे, एम वाद करतां तेओ एवा निर्णयपर आव्या के, आपणे जेनीओमां जे जघन्य होय, तेनी, अने तापसोमां जे उत्कृष्ट होय तेनी परीक्षा करवी, के गुणोमां कोण चडीयातुं छे ? एटलामां मिथिला नाम-

नी नगरीमां, धारण करेल डे नवो धर्म जेणें एवो पद्मरथ नामें राजा हतो;
ते जावयति थइने वासुपूज्य जगवान् पासे दीक्षा लेवा माटे चंपा नगरीयें
जतो हतो, ते वखते आ बन्ने देवोए तेने रस्तामां जोयो. पडी तेउये तेनी
परीक्षानी इछाथी, तेने अन्नपाणी आपवा मांड्यां; ते वखते ते राजा नू-
ख्यो तथा तरस्यो हतो, तोपण तेणें ते लीधां नही; कारण के, धीर पुरु-
षो पोताना सत्व (धैर्यवासत्यथी) चलायमान थता नथी. वली ते देवोए
रस्तामां करवत सरखा कांटा अने कांकरा विखेरीने तेनां कोमल चरणक-
मलोने पण दुःख आप्युं. एवी रीतना मार्गमां पण, पगमांथी रुधिर व-
हेतां डतां पण. ते रुवाला मार्गमां जेम तेम चालवा लाग्यो. वली तेउयें
तेने क्षोजाववामाटे गायन, नाच आदिक कर्यु तेपण गोत्रीउपर दिव्य
अस्त्रनी पेठे निरर्थक गयुं. तेउ सिद्धपुत्रनुं रूप लेइ, तेने कहेवा लाग्या के,
हे महाजागी! हजु तारुं आयुष्य मोटुं डे; माटे तारी इछा प्रमाणे तुं जोग
जोगव्य ? आ यौवनावस्थामां तप करवुं लायक नहीं, वली कयो उद्योगी
माणस मध्यरात्रिना कार्यने प्रजातमां करे? वली तारी युवावस्था ज्यारे
चाली जाय, त्यारे वृद्धावस्थामां तुं तप करजे ? त्यारे राजायें कह्युं के, क-
दाच मारुं बहु आयुष्य हशे, तो बहु पुण्य थशे, कारण के कमलिनीनुं नाल
पण जलना प्रमाण प्रमाणे वृद्धि पामे डे. वली इंडियोना विकारवालां यौ-
वनमांज जे तप करवुं, ते तप डे, कारणके, जयंकर हथियारवाला रणमां
जे शूरा थवुं तेज शूरापणुं डे. एवी रीतें तेने अचलित जाणीने ते देवो
तेनी प्रशंसा करीने जमदग्नि नामें उत्कृष्ट तापसपासे परीक्षामाटे गया.
त्यां तेउये तेने वडनी पेठे विस्तारवाली जटावालो, तथा राफडाउथी न-
राइ गएलापगवालो जोयो. हवे ते देवो तेनी दाढीमां मालो करीने,
कपटथी चकलानां जोडांनुं रूप करी तेमां रह्या. पडी एक दिवसे चकलो
चकलीने कहेवा लाग्यो के, मारे हिमवंत पर्वतपर जवुं डे, त्यारे चकली-
यें कह्युं के, तुं पाडो अहीं आव नहीं, तेथी तने नहीं जवा देउं, त्यारे
चकलें कह्युं के, जो हुं पाडो न आवुं, तो मने गोहत्यानुं पाप, त्यारे च-
कलीए कह्युं के, हे प्रिय! जो तुं आ ऋषिना पापना सोगंद खा, तो हुं
तने रजा आपुं, ते वचन सांजलीने जमदग्नि तापसें क्रोधातुर थइ, बन्ने
पक्षीउने बन्ने हाथमां पकड्यां; अने कहेवा लाग्यो के, सूर्यमां जेम अंध-

कार, तेम दुष्कर तपवालो, एवो जे हुं, तेमां पाप शी रीतें आव्युं? त्यारे चकली ऋषिने कहेवा लागी के तुं कोप कर मा? तारूं तप नकामुं छे, "अपुत्रीआनी गति नथी," एवी श्रुति तें शुं नथी सांजली? ते ऋषि विचारवा लाग्यो के, हुं स्त्रीपुत्ररहित होवाथी मारूं तप पाणीमां गयुं एवी रीते तेने खोज पामेलो जोइने, धन्वंतरी जैन धर्मनी प्रतीति थवाथी जैनी थयो. पछी ते बन्ने देवो अदृश्य थया, अने जमदग्नि नेमिककोष्ट नामें नगरमां गयो. त्यां दक्षप्रत्ये जेम महादेव तेम घणी कन्यावाला जितशत्रु राजापासे ते गयो. त्यारे राजा पण उनो थइ हाथ जोडी तेने कहेवा लाग्यो के, आप अहीं शुं प्रयोजने आव्या छो? ते कहो? त्यारे ऋषियें कह्युं के, हुं कन्यामाटे आव्यो छुं, त्यारे राजाए कह्युं के मारी सो कन्यामांथी तमारी इछा आवे तेने लेइ जाउ? पछी तेणे राजकन्याना अंतःपुरमां जइ कन्याउने कह्युं के, तमारामांथी कोइ पण मारी धर्मपत्नी थाउ? त्यारे तेउ पोकार करीने कहेवा लागीयो के, जटावालो, घरडो, दुबलो, तथा जिक्षुक थइने आम बोलतां तुं शरमातो नथी? त्यारे पवननी पेठे क्रोधित थइने ते ऋषियें चडावेला धनुष् सरखी, सघली कन्याउने कुबडी करी दीधी. पछी तेणे आंगणामां धुलथी रमती एक राजानी कन्याने जोइ; त्यारे तेणें कह्युं के, तुं मने इछे छे? एम कही तेने एक बीजोरुं देखाड्युं; त्यारे ते कन्यायें पण लग्नने सूचवनार एवो पोतानो हाथ लांबो कर्यो. पछी दरिद्रि जेम धनने, तेम तेणें ते कन्याने ग्रहण करी अने राजाए पण विधिपूर्वक गोदान आदिक सहित तेने सोंपी दीधी. पछी तेणें शालीना स्नेह संबंधथी ते सघली कन्याउने तपशक्तिथी पाछी सारी करी; माटे धिक्कार छे एवा मूढोने के, जे पोताना तपने फोगट गुमावे छे; पछी जमदग्निए तेणीने पोताना आश्रमपदमां लइ जइने हरिणीनी पेठे उछेरवा मांडी पछी ते आंगलीउथी दिवसोने गणते छते कन्या पण कामदेवना क्रीडावन सरखा यौवनने प्राप्त थई. पछी शिवें जेम पार्वतीसाथे, तेम जमदग्निए अग्निनी साक्षिए विधिपूर्वक तेणीसाथे लग्न कर्युं. पछी ऋतुकालें ते ऋषिए तेणीने कह्युं के तारे माटे चरु साधुं छुं के, जेथी, तने उत्तम ब्राह्मण जातिनो पुत्र थाय; त्यारे तेणीयें कह्युं के, हस्तिनापुरमां मारी एक बहेन अनंतवीर्य राजानी राणी छे; माटे तेणीने अर्थे

पण एक क्षत्रियसंबंधि चरु सिद्ध करजो. पछी ते ऋषियें पुत्रने अर्थे, पोतानी स्त्री माटे ब्राह्मण संबंधि, तथा शालीमाटे क्षत्रियसंबंधि चरु साध्यो. पछी ते स्त्रीयें विचार्युं के, मारा जेवो जंगली पुत्र न थाय तो सारुं, एम विचारि तेणीयें क्षत्रियसंबंधी चरुनुं जक्षण कर्युं; अने ब्राह्मणसंबंधि चरु पोतानी बेहेनने मोकलाव्युं तेथी तेउं बन्नेने पुत्रो थया; तेमां रेणुकाना पुत्रनुं नाम राम पाड्युं, तथा तेणीना बेहेनना पुत्रनुं कृतवीर्य नाम पाड्युं. पछी अनुक्रमें ते राम मोटो थयो, अने तेनो पिता ऋषि छतां पण ते, पाणीमां जेम वडवानल, तेम पोतानुं क्षत्रिय तेज देखाडवा लाग्यो. हवे त्यां कोइ अतिसारनो रोगवालो विद्याधर आव्यो; तथा ते रोगथी तेने आकाशगामिनी विद्या विसरी गइ.

त्यां ते रामें तेनी जाइनीपेठे औषधआदिकथी सेवा करी, त्यारे ते विद्याधरें तेने परवश करवानी विद्या आपी. पछी ते शरवणमां जइने ते विद्याने साधवा लाग्यो, अने त्यारथी ते जगतमां परशुराम नामथी प्रसिद्ध थयो. हवे एक दहाडो ते रेणुका पतिनी रजा लइने हस्तिनापुरें पोतानी बेहेनने मलवा गइ. "आ शाली छे," एम विचारि चपलनेत्रवाली ते रेणुका साथे अनंतवीर्यें जोगविलास कर्यो; कारण के, कामदेव अति अंकुशरहित छे. एवी रीतें इंद्रें जेम अहल्याप्रत्ये, तेम आ राजायें पण इच्छा प्रमाणे तेणीनीसाथे विलास कर्यो. एवी रीतें रेणुकाने अनंतवीर्यथी पुत्र थयो, अने ते पुत्रनी साथेज ऋषि पण रेणुकाने लेइ गयो, कारण के, स्त्रीमां लुब्ध माणस प्रायः दोषतरफ दृष्टि करतो नथी. हवे अकाले फलेली वेलडी सरखी, पुत्रसहित रेणुकाने जोइने, परशुरामें गुस्से थइ, तेणीने कुहाडीथी छेदी नाखी. पछी तेणीनी बेहेनें ते वात अनंतवीर्यने कह्याथी, अने तेथी पवनथी जेम अग्नि तेम, अनंतवीर्य गुस्से थयो; पछी महाबलवान् एवा ते अनंतवीर्य राजाए जमदग्निने आश्रमें जइने, मदोन्मत्त हाथीनी पेठे तेना आश्रमने जांगी नाख्यो. एवी रीतें तापसोने दुःख आपीने, तथा तेउंनी गायो आदिक लेइने, सिंहनी पेठे ते धीरें धीरें चालतो थको पाछो वल्यो. ते वात जाणीने परशुराम, साक्षात् यमनी पेठे तेनी पाछल दोड्यो; तथा संग्राममां कौतुकी थइने, तेणें काष्ठनी पेठे अनंतवीर्यना कुहाडीथी टुकडेटुकडा करी नाख्या. प्रधानोए ते-

ना राज्यपर महाबलवान् एवा तेना छोकरा कृतवीर्यने बेसाड्यो, पण ते उमरें नानो हतो. पछी अनुक्रमें तेणे माताने मोहोडेथी पोताना पिताना मृत्युनो वृत्तांत सांजळ्यो; त्यारे तेणें सर्पनी पेठे जइने जमदग्निने मारी नाख्यो; त्यारे परशुरामें पण पिताना वधथी गुस्से थइ, हस्तिनापुर जइ कृतवीर्यने मारी नाख्यो, कारण के, यमने शुं दूर छे ? तथा तेना राज्यपर पोते बेठो; कारण के, राज्य तो पराक्रमने आधीन छे. एवी रीतें परशुरामें नगरने दबाववाथी कृतवीर्यनी गर्भिणी स्त्री, वाघवाला वनमांथी जेम हरिणी, तेम नासीने तापसोना आश्रममां गइ. त्यां तपस्वीओए निधाननी पेठे तेणीने, क्रूर परशुरामथी बचाववामाटे जोंयरामां राखी. तेणीने चौद महास्वप्नोथी सूचित पुत्र थयो, तथा जोंयरामां जन्मवाथी तेनुं सुजूम नाम पाड्युं. पछी ज्यां ज्यां क्षत्रियपुत्र हतो, त्यां त्यां देहधारी कोपाग्निसरखो परशुरामनो कुठार पोहोची वळ्यो; अर्थात् सघला क्षत्रियोने तेणे मारी नाख्या. पछी एक दहाडो ते परशुराम ते आश्रममां गयो, तथा त्यां तेनो परशु (कुहाडो) जाज्वल्यमान थयो थको, धुंवाडो जेम अग्निने तेम क्षत्रियने सूचववा लाग्यो. त्यारे तेणे तपस्वियोने पुछ्युं के, शुं अहीं कोइ क्षत्रिय छे ? त्यारे तेओ कहेवा लाग्या के, तापस थएला अमो क्षत्रिय छियें. पछी दावानल जेम पर्वतना तटने तृणरहित करे, तेम ते परशुरामें सातवार पृथ्वीने क्षत्रियरहित करी. एवी रीतें मारी नाखेला क्षत्रियोनी दाढोथी परशुरामें एक आखो थाल जर्यो. पछी ते परशुरामें एक दहाडो नित्तिआओने बोलावी पूछ्युं के, मारुं मृत्यु कोनाथी थशे ? कारण के घणासाथे वैर करनाराओने परथी पोतानुं मृत्यु थवानी शंका होय; त्यारे तेओए कह्युं के, जे माणस सिंहासनपर बेसीने, दुधपाकरूप थएली आ दाढोने पी जशे, ते माणसथी तारुं मृत्यु थशे. ते सांजली परशुरामें एक दानशाला मंडावी, तथा त्यां अगाडीमां सिंहासन राखी, तेपर ते दाढोनो थाल रखाव्यो. हवे ते सुजूम पण आंगणामां रहेला वृक्षनी पेठे, हमेशां ऋषियोथी लालन करातो थको वृद्धि पामवा लाग्यो. हवे एक दहाडो मेघनाद नामना विद्याधरें निमित्तिआओने पुछ्युं के, मारी पद्मश्री नामनी कन्या हुं कोने परणावुं ? त्यारे तेओए पण ते कन्या सुजूमने देवा कह्युं त्यारे ते विद्याधरें सुजूमने ते क-

न्या आपी; अने तेनो ते सेवक थयो. कुंवाना देडकानी पेठे बीजी ज-
गोए नहीं जनार, एवा ते सुजूमें एक दहाडो पोतानी माताने पुब्युं के,
शुं आ आवडीज पृथ्वी छे? के कंइ अधिक छे? त्यारे तेनी माताए क-
ह्युं, के, हे वत्स! पृथ्वी तो अनंती छे; आ आश्रम तो तेमां एक मांखीना
पग जेटलो छे. वली आ पृथ्वीमां हस्तिनापुर नामें एक प्रख्यात नगर
छे; तथा त्यां कृतवीर्य नामें महा बलवान् तारो पिता राजा हतो. ते ता-
रा पिताने परशुराम मारीने, पोते राज्यपर बेठो छे, वली तेणें तमाम
पृथ्वी क्षत्रियविनानी करी छे, अने तेना जयथी आपणे अहीं रहीयें
छीयें. ते सांजली तत्काल क्रोधातुर थइने, सुजूम हस्तिनापुर गयो, का-
रण के, क्षत्रियतेज डुर्धर होय छे; त्यां एकदम ते दानशालामां गयो, त-
था त्यां रहेला सिंहासनपर चडीने, डुधपाकरूप थएली ते दाढोने ते
खाइ गयो. त्यारे ब्राह्मण आरक्षको युद्ध करवामाटे उठ्या, त्यारे सुजूमें
मेघसरखा नादवालो वाघ जेम हरिणने, तेम तेउने मार्या; ते सांजली
परशुराम पण गुस्से थइने, जाणे कालना पासथीज खेंचायो होय नहीं,
तेम त्यां आवी लाग्यो; तथा तेणें सुजूमउपर पोतानी परशु मुकी, पण
अग्निनो तणखो जेम पाणीमां तेम ते परशु नष्ट थयो ते वखते सुजूमें पण
पोतापासे हथीयार न होवाथी, ते दाढोवालो थाल उपाड्यो, तथा ते
थाल पण तुरत चक्ररूपें थयो. कारण के, पुण्य संपदाथी शुं नथी थतुं?
एवी रीतें ते आठमा चक्रीए ते चक्रथी परशुरामनुं मस्तक कमलनी पेठे
छेदी नाख्युं. जेम परशुरामें सातवार पृथ्वीने क्षत्रियरहित करी हती,
तेम आणे एकवीश वार पृथ्वीने ब्राह्मणविनानी करी. तथा पाछलथी ते-
णे छखंड पृथ्वी साधी. वली वैताढ्यनी गुफाउ खोलीने जरतना उत्तर-
खंडमां दाखल थइ म्लेछोने तेणे जीत्या. एवीरीतें चारे दिशामां जमी-
ने, घंटी जेम चणाने, तेम तेणें सुजटोने मारीने पृथ्वीने जीती. एवी री-
तें हमेशां रौद्रध्यानथी अंतर आत्माने ज्वलित करतो थको, मृत्यु पा-
मीने ते सातमे नरकें गयो. एवी रीतें सुजूमचक्रवर्त्तिनी कथा कही.

हवे ब्रह्मदत्त चक्रीनी कथा कहे छे.

पेहेलां साकेत नामना नगरमां चंद्रसरखी मनोहर आकृतिवालो
चंद्रावतंसनो पुत्र मुनिचंद्र नामें माणस हतो; बोलाथी जेम मधुर, तेम

कामजोगथी खेदित थइने तेणें सागरचंद्र नामना मुनिनी पासे दीक्षा लीधी. पछी ते जगत्पूज्य दीक्षाने पालतो थको गुरुनी साथे विहारमाटे देशांतर चाल्यो. रस्तामां जिक्षामाटे ते एक गाममां पेठो, अने तेथी सार्थथी ज्रष्ट थइने, टोलाथी बुटा पडेला हरिणनी पेठे अटवीमां जटकवा लाग्यो. त्यां ते जूख अने तरसथी पीडित थइ जमतो हतो, एटलामां तेने चार वल्लवो (गोवाल) साथे प्रीति थइ, त्यां तेणे तेउने धर्मदेशना संजलावी, तेथी तेउए समतापूर्वक तेनीपासे दीक्षा लीधी, तेथी तेउ चार प्रकारना धर्मनी चार मूर्त्तिउनी पेठे शोजवा लाग्या. ते चारे जणो व्रत पालता हता, पण तेउमांथी बे जणो जुगुप्सा (चीड) करता हता, कारण के, जीवोनी चित्तनी वृत्ति विचित्र होय ढे; तेउ जुगुप्सा करता हता, तोपण तपना प्रजावथी तेउ बन्ने देवलोकें गया, कारण के, एक दिवस पालेलुं व्रत पण स्वर्गमाटे थाय ढे; त्यांथी चवीने तेउ दशपुर नामें नगरमां, जयवती दासीने पेटे जोडलांपणे बन्ने पुत्रो थया. पढी ज्यारे तेउ बन्नें यौवनने प्राप्त थया, त्यारे पितायें हुकम करवाथी तेउ क्षेत्रनी रक्षा करवामाटे गया. पढी रात्रियें ज्यारें तेउ त्यां निद्रामां हता त्यारें यमना जाइतुल्य, एवा एक काला सर्पं बिलमांथी निकली तेउमानां एकने डंख मार्यो. पढी ते सर्पने मारवामाटे बीजो पण जमवा लाग्यो, त्यारे ते दुष्ट नागें जाणे वैरथीज होय नहीं, तेम तेने पण डंख मार्यो. पढी तेनो इलाज नहीं मलवाथी तेउ बन्ने मृत्यु पाम्या, माटे एवी रीतें जेवा तेउ आव्या, तेवा चाल्या गया. पढी कालिंजर नामना पर्वतना मेदानमां तेउ एक हरणीने पेटे बे मृगपणे उपन्या, तथा त्यां वृद्धि पाम्या. त्यां वनमां तेउ प्रीतिपूर्वक चरता हता, एटलामां एक शिकारीयें तेउ बन्नेने एकी वखते एक बाणथी हण्या. त्यांथी मृत्युपामी तेउ बन्ने आगलनी पेठेज गंगानदीमां युग्मरूपें हंस थया. त्यां पण एक दहाडो ज्यारे तेउ क्रीडा करता हता, त्यारे एक मछीमारे तेमने जालमां पकडीने, डोकी मरडी मारी नाख्या, माटे धर्महीननी एवीजगति थाय ढे. त्यांथी तेउ वाणारसी नगरीमां धनवाला जूतदत्त नामें मातंगाधिपतिना बे पुत्रो थया. तेउना चित्र अने संजूत नाम पाड्यां तथा प्रेमें करीने नख अने मांसनी पेठे तेउ कोइ दहाडो पण वियोग

पामता न होता. ते वखते त्यां शंख नामें राजा हतो, तेने नमुची नामें प्रधान हतो. एक दहाडो तेनो कंइ मोटो अपराध थवाथी राजाये तेने गुप्तरीते मारवामाटे जूतदत्तने सोंप्यो. त्यारे ते जूतदते नमुचिने कह्युं के, जो जोंयरामां रहीने तुं मारा ठोकराउने जणाव, तो हुं तने जीवतो राखुं. ते वचन नमुचियें पण ग्रहण कर्युं; कारण के, जीवितनो अर्थी माणस शुं करतो नथी? ते त्यां रही तेउने विचित्र कला जणाववा तथा पोते ते मातंगनी स्त्री साथे जोगविलास जोगववा लाग्यो; ते वातनी खबर पडवाथी जूतदत्ते तेने मारी नाखवा मांड्यो; पण ते बन्ने पुत्रोने तेनी खबर पडवाथी, तेउए तेने ठोडाव्यो. त्यांथी ते नमुचि निकलीने हस्तीनापुर गयो, त्यां सनत्कुमार चक्रिए तेने पोतानो प्रधान कर्यो. हवे ते चित्र अने संजुत यौवन पामवाथी जाणे कंइ काममाटे पृथ्वीपर आवेला एवा अश्विनीकुमारोनी पेठे शोजवा, लाग्या. तेउ देव गांधर्वोने हांसी कराव एवुं गायन करवा लाग्या, तथा तुंबरु अने जरतथी पण सरस वीणा वगाडवा लाग्या. तेउना सत्य स्वरथी थतां गायन आगल किन्नरो तो किंकररूप थता; तेउ गंजीर मुरज वगाडता थका मुरकंकालवाला कृष्णनी तुलना करता हता. वली उर्वशी रंजा आदिक पण, जे नाटकने नहोती जाणती, ते नाटक तेउ करी जाणता. एवी रीते पोतानां विश्वने कामणरूप अपूर्व गांधर्वपणाथी तेउये कोनां मन नहोतां हर्यां? पण सर्वनां मन हर्यां हतां. एक वखते नगरमां मदनोत्सव आववाथी चारे बाजु गीतगान थइ रह्यां, ते वखते आ चित्र तथा संजूत पण गावा लाग्या; तेउनां गीतोथी खेंचाइने लोको पण हरिणोनी पेठे तेमनीज पासे गया; त्यारे राजाने कोइये जइ जराव्युं के, आ बन्ने मातंगो आखा शेहेरने गायनथी वश करीने लोकोने अजडावे छे; त्यारे राजाए कोटवालने बोलावी हुकम कर्यो के ते बन्नेने नगरमां पेसवा देवा नहीं. त्यारथी तेउ बन्ने नगरथी दूर रहेता; एटलामां कौमुदी महोत्सव आव्यो. ते वखते तेउ राजाना हुकमनुं अपमान करीने नगरमां आव्या; त्यां उत्सव जोवामाटे अंगने ढांकीने तेउ चोरनी पेठे जमवा लाग्या. त्यारे एक शीयालनो शब्द सांजलीने, तथा नगरनां लोकोनां गायनो सांजली तेउ गावा लाग्या; कारण के, जवितव्यता मटती नथी. तेउनां मधुर गायनने सांजलीने म-

धनी आसपास जेम मांखो, तेम तेउनी आसपास लोको एकठा थया. "कोण छे?" एम जोवा माटे लोकोए तेउनां ढांकेला अंगपरथी लुगडुं खेसव्युं, अने तेउने उलखी कहेवा लाग्या के अहो! आ तो तेज मातंगो छे. पछी नगरनां लोको तेने लाकडीउ अने ढेफांथी मारवा लाग्या,तेथी तेउ कुतरानी पेठे मोहोडुं नीचुं राखीने नगरमांथी निकली गया. एवी रीतें मराता थका तेउ एक गंजीर वनमां आव्या. पछी तेउये विचार्युं के, आपणा आ दूषितकुलने धिक्कार छे, आपणां कलाकौशल्य पण सर्वे बोटेलां दूध सरखां छे. आपणा गुणोना उपकारने बदले आपणने तो अपकार थाय छे, माटे आ तो शांति करतां उलटो वैताल गुस्से थवा सरखुं छे. माटे आ देहसाथे रहेलां कला आदिक नकामां छे, अने तेथी आ देहनो आपणे तृणनी पेठे त्याग करवो. एम विचारि प्राणत्यागनी इछावाला तेउ दक्षिणदिशा तरफ चाल्या. त्यांथी चालतां तेउये एक उंचां पर्वतने जोयो,के जे पर चडवाथी नीचे रहेलो हाथी पण एक जुंडना बच्चां सरखो जणाय. तेपरथी ऊंपापात करवामाटे जेवा तेउ उपर चडे छे,के तुरत तेउये एक मुनिने जोया. पर्वतनां शिखरपर वरसादनां वादलां सरखा ते मुनिने जोइ, तेउनो संताप दूर गयो. तेउ हर्षनां मिशथी दुःखने तजीने,मुनिना चरणकमल प्रत्ये जमरानी पेठे रह्या. पछी मुनिये पण ध्यान पूर्ण थयाबाद, तेमने पुछवाथी, तेउये पोतानुं वृत्तांत कह्युं; त्यारे मुनिये कह्युं के, ऊंपापातथी शरीरनो नाश थाय छे,पण पूर्वनां कर्मोनो नाश थतो नथी. माटे जो तमारे शरीर तजवुं होय, तो स्वर्गादिक फल देनार तमो तप करो. एवुं मुनिनुं वचन सांजली तेउये तेमनी पासेथी दीक्षा लीधी. पछी अनुक्रमें जणतां थकां तेउ गीतार्थ थया. वली छठ अठम आदिक तपथी तेउये पूर्वनां कर्मो साथे शरीरने पण कृश कर्युं. पछी त्यांथी विहार करता थका तेउ अनुक्रमें हस्तिनापुर आव्या. त्यां तेउ मनोहर बगीचामां तप तपवा लाग्या; कारण के, महात्माउने तो मनोहर जूमिमां पण विकार थतो नथी. एक दहाडो संजूतमुनि एक मासनां उपवासने पारणे जिक्षा माटे नगरमां गया. त्यां ईर्यासमितिपूर्वक घरोघर जमतां राजमार्गें आववाथी नमुचि प्रधाने तेमने जोया; त्यारे मंत्रिये विचार्युं के, मातंगनां पुत्रो मारुं वृत्तांत जाहेर करी देशे, कारणके पापीउने शंका प-

व्याज करे छे. माटे ज्यांसुधिमां मारुं मर्म ते कोइने प्रकाशे नहीं, त्यांसुधिमां हुं तेउने अहींथी कहाडी मेलुं. एम विचारि ते दुष्ट पोताना उपकारीने पण पालाउ पासे मरावचा लाग्यो, कारणके, नीचने उपकार करवो, ते सर्पने दूध पावा बरोबर छे. एवी रीतें लाकडीउ उथी मराता ते मुनि त्यांथी तुरत तुरत चालवा लाग्या. एवी रीतना मारथी अग्निथी जेम पाणी तेम ते शांत मुनिने पण क्रोध चड्यो. तेना मुखमांथी अकाले वादलां सरखी वरालो निकलवा लागी, तथा पछी जाज्वल्यमान एवी तेजोलेश्या निकली, अने विजलीनी पेठे आकाशमां फेलावा लागी. पछी विष्णुकुमारथी पण अधिक तेजोलेश्याने धरनारा एवा ते मुनिने शांत पाडवामाटे, भय अने कौतुकथी नगरना लोको आव्या. ते वातनी खबर पडवाथी सनत्कुमार राजा पण त्यां आव्यो, तथा कहेवा लाग्यो के, हे भगवन्, आपने आम करवुं कंइ लायक छे!! सूर्यथी तपतां छतां पण चंद्रकांत मणिमांथी कंइ बलतुं निकलतुं नथी. वली आवा लोकोना अपराधथी आपे कोप करवो, ते क्षीरसमुद्रने मथतां तेमांथी ऊेर निकलवा सरखुं शुं न कहेवाय? माटे हे नाथ, आप कोपने तजो? कारण के, आपजेवा तो उपकारी अने अपकारी बन्नेपर तुल्य दृष्टिवाला होय छे; हवे एटलामां चित्रमुनि पण तेमानी पासे मिष्ट वचनोथी तेमने शांत करवाने आव्या, तथा तेमनां शास्त्रानुसार वाक्योथी, वरसादथी जेम पर्वतपरनो दवानल तेम संभूतमुनिनो गुस्सो शांत थयो. एवी रीतें तीव्र कोपथी मुकाएला ते मुनि पूर्णिमाना चंद्रनी पेठे क्षणवारमां शांत थया. पछी लोको पण खमावीने तथा वांदीने पाछा गया, अने चित्रमुनि संभूत मुनिने ते उद्यानमां लेइ गया; त्यां जइ तेउ पश्चाताप करवा लाग्या के, आहारने माटे घरोघर भटकवाथी बहु कष्ट पडे छे. वली आ शरीर तो विनश्वर छे, माटे तेने आहारथी पोषवानी शी जरूर छे? अथवा योगियोने आहार अने शरीरनी पण शी जरूर छे? एम विचारि तेउए संलेखनापूर्वक चतुर्विध आहारनुं पच्चखाण कर्युं.

हवे राजाए तपास करी के, साधुने कोणे पराभव कर्यो, त्यारे कोइए मंत्रिनी वात जणावी दीधी. त्यारे राजाए विचार्युं के, ते पापीए पूजनीयने पण शामाटे ताडना करावी? एम विचारि तेणे मंत्रीने चोरनी पेठे

बांधीने मगाव्यो. बीजो पण कोइ माणस आवी रीतें साधुने पराभव करे नहीं, एटलामाटे ते राजा, (मंत्रीने) बंधनसहित नगरमां फेरवी, साधुपासे लेइ गयो. त्यां जइ राजाए नमस्कार करवाथी मुनिउंए तेने आशिर्वाद आप्यो. त्यारे राजाए कह्युं के, जेणे आपनो आपराध कर्यो छे, ते माणस आ रह्यो, एम कही नमुचिने राजाए देखाड्यो; पछी तेउंए मृत्यु तुल्य दशाने प्राप्त थयेला नमुचिने राजापासेथी, गरुडपासेथी जेम सर्पने तेम छोडाव्यो. पछी राजाए गुरुनुं वचन मानीने ते कर्मचंडालने नगरमांथी कहाडी मेल्यो. एक दहाडो राजानी सुनंदा नामे पटराणी पोतानी चोसठ हजार शोक्यो सहित ते मुनिउंने वांदवा आवी. ते राणी पोतानां मुखथी पृथ्वीने पण चंद्रवाली करती थकी संभूतमुनिने नमी. ते वखते तेणीना ललाटनो मुनिने स्पर्श थवाथी, ते मुनि रोमांचित थयो, कारण के, कामदेव छलनेज जोतो फरे छे. पछी ते राणी तेमनी रजा लेइ अंतःपुरमां गइ, अने संभूतमुनिए रागथी नियाणुं कर्युं के, आ मारा दुष्कर तपनुं जो फल होय, तो आवता जन्ममां हुं पण स्त्रीरत्ननो पति थउं. त्यारे चित्रमुनियें कह्युं के, मोक्ष देनार तपथी आ फलने मागीने, तुं मुकुटलायक रत्नोनो आसन तरिके शा माटे उपयोग करे छे? वली मोहथी करेला आ नियाणानो हजु पण तुं त्याग कर ? कारण के तमारा जेवाए मोहमां न पडवुं जोइयें; एवी रीतें वारतां छतां पण तेणें नियाणुं तज्युं नहीं; अहो ! विषयनी इच्छा बलवती छे ! ! ! पछी एवी रीतें, अनशन करी, आयुःकर्मनो क्षय थवाथी मृत्यु पामी तेउ सौधर्मा देवलोकमां सुंदर विमानमां देवो थया. हवे चित्रनो जीव त्यांथी चवीने पुरीमताल नगरमां एक शेठनां पुत्रपणे थयो. संभूतनो जीव पण त्यांथी चवीने कांपिल्य नगरमां ब्रह्म राजानी चुलनी राणीनी कुंखे उपनो. तेणीए चौद महा स्वप्नो जोइने, पूर्व दिशा जेम सूर्यने, तेम पुत्रने जन्म आप्यो. राजाए पण तेनुं ब्रह्मदत्त नाम पाड्युं. ते चंद्रनी पेठे कलाने धारण करतो थको, तथा जगतनां नेत्ररूपी कुमुदने आनंद देतो थको वृद्धि पामवा लाग्यो. ब्रह्माना चार मुखोनी पेठे ते ब्रह्म राजाने पण, काशीनो राजा कटक, हस्तिनापुरनो राजा करेणुदत्त, कोशलानो राजा दीर्घ, तथा चंपानो राजा पुष्पचूल, एम चार मित्रो हता. तेउं पांचे, संवत्

वनमां जेम कल्पवृक्षो, तेम साथेज एकेकना नगरमां रहेता. एक व-
खतो तेओ ब्रह्मदत्तना नगरमां आव्या, तथा त्यां केटलाक कालसुधी क्री-
डा करवा लाग्या. हवे ज्यारे ब्रह्मदत्त बार वर्षनो थयो, त्यारे ब्रह्मराजा म-
स्तकनी व्याधिथी मृत्यु पाम्यो. त्यारे ते कटकादिक चार राजाओए तेनुं
मृत्युकार्य करीने मांहोमांहें विचार कर्यो के, ज्यांसुधि ब्रह्मदत्त बालक
छे, त्यांसुधि आपणामांथी अकेक जणे अकेक वर्ष अहीं रही तेनी रक्षा
करवी. एम ठराव करी तेओमांथी त्रणेए तो पोताना वाराप्रमाणे मित्रनां
राज्यनी रक्षा करी. पण कोशलाना राजा दीर्घे, बलद जेम खेतरने, तेम
मित्रनां राज्यने खावा मांड्युं. वली ते मुर्खे निरंकुश थइने, दुर्जन जेम
परनां मर्मोने, तेम गुप्त खजानाओने खोलवा मांड्या. वली ते पूर्वनां परिच-
यथी अंतःपुरमां पण अटकावरहित जवा लाग्यो, कारण के, अधिकार,
माणसने प्रायें. आंधलो बनावे छे. पछी त्यां ते चुलनी राणीसाथे एकां-
तमां रही कामविलास करवा लाग्यो; कारण के, इंद्रियो दुर्वार होय छे.
एवी रीते सुखें विलास करतां तेओनां दिवसो मूहूर्त्तनी पेठे जवा लाग्या.
तेओनी आ खराब चेष्टाने ब्रह्मराजाना बीजा हृदयसरखा धनुमंत्रिये जा-
णी. त्यारे तेणे विचार्युं के, चुलनी राणीए पोताना स्त्रीस्वभावथी आ अ-
कार्य करवा मांड्युं छे, कारण के, सती स्त्रीओ तो कोइज होय छे; वली वि-
विश्वास राखी, तेने (दीर्घने) भंडारसहित अंतःपुर सोंपवाथी आ अ-
कार्य थाय छे, माटे कोइ दहाडो ते दुष्ट, कुमारनुं पण मादुं करशे, का-
रण के, दुर्जन माणस बिलाडानीपेठे पोतानां पोषकनुं पण सारुं कर-
नार थतो नथी. एम विचारि तेणें पोताना वरधनु नामें पुत्रने ब्रह्मदत्तने
आ वात जणाववाने तथा तेने सेववानुं फरमाव्युं. पछी ते मंत्रीपुत्रें ते
वात ब्रह्मदत्तने जणाववाथी, धीरे रही नवा हाथीनी पेठे कोपने प्रका-
शतो थको, मातानां खराब आचरणने नहीं सहन करीने, कागडो अने
कोयल लेइ ते अंतःपुरमां गयो. तथा त्यां जइ मोटेथी बोल्यो के, आ ब-
न्ने पक्षिओ वर्णसंकर होवाथी वधने लायक छे, अने एवी रीतनां बीजाने
पण हुं मारीश. ते सांभली दीर्घ राजाए चुलनीने कह्युं के, "कागडो हुं,
अने कोयल तुं," एम तेणें जणाव्युं; माटे ते खरेखर आपणने मार-
शे, त्यारे राणीए कह्युं के, एवी रीतनां बालकनां बोलवाथी तारे डरवुं

नहीं. वली एक दहाडो तेणें हंसीनी साथे बगलाने बांधीने कह्युं के, आनी साथे आ क्रीडा करे छे, हुं एवी रीतें कोइनुं पण सहन करुं तेम नथी, ते सांजली दीर्घ राजाए कह्युं के, हे राणी, आ बालक छे, तो पण तेनी आ वाणी, अंदर उत्पन्न थयेला क्रोधरूपी अग्निना धुंवाडा-सरखी छे. माटे आ कुमार मोटो होते छते, हाथीउ प्रत्ये जेम सिंह तेम आपण बन्नेने मारनार थशे. माटे ज्यांसुधिमां ते समर्थ न थाय त्यां सुधिमां, विषमवृक्षनी पेठे तेने मारी नाखवो जोइयें. त्यारे राणीए कह्युं के, पाटवी कुमारने केम मराय? कारण के, तिर्यंचो पण पोताना पुत्रोनुं प्राणनी पेठे रक्षण करे छे. त्यारे दीर्घे कह्युं के, पुत्ररूपें आ तो तारो काल छे, माटे तुं मुंझा मा? हुं होते छते पुत्रो कंइं दुर्लज नथी. त्यारे कामने वश थयेली ते चुलनीये पण शाकिनीनी पेठे पुत्रस्नेहने तजीने तेनुं वचन अंगीकार कर्युं. पछी तेउ बन्नेये विचार्युं के, आपणे ब्रह्मदत्तनां लग्न करवां, तथा तेना वासगृहनां मिशथी लाखनुं एक घर बनाववुं. पछी विवाह बाद ज्यारे ते तेमां सुवे, त्यारे वहुसहित तेने रात्रिये आ घर सलगावीने मारी नाखवो. एमा विचारि, तेउये पुष्पचूलनी कन्या साथे तेनुं वेशवाल कर्युं; तथा विवाहमाटे सघली सामग्री करी राखी. पछी धनुमंत्रिये तेउना ते क्रूर वृत्तांतने जाणीने, दीर्घराजाने हाथ जोडीने कह्युं के, मारो कलावान्, नीतिवान्, कुशल, अने जुवान एवो वरधनु पुत्र हवेथी तमारी आज्ञामां रही मंत्रिपणुं करशे; करण के, हुं तो हवे घरडा बेलनी पेठे कार्य करी शकुं तेम नथी, माटे तमारी अनुज्ञाथी हवे हुं कोइ जगोये जइ धर्मध्यान करीश. त्यारे दीर्घ राजायें विचार्युं के, आ कपटी क्यांक बीजे जइ कंइंक अनर्थ करशे, तेथी तेणे पण कपटथी तेने कह्युं के, चंद्रविना जेम रात्रि, तेम तमाराविना राज्य शोजशे नहीं, माटे दानआदिकथी अहींज तमो धर्मध्यान करो? केमके, उत्तम वृक्षोथी जेम वन, तेम तमारा जेवाथी राज्य शोजे छे. त्यारे धनुमंत्रीये पण गंगाने कांठे धर्मनां छत्र सरखी दानशाला मांडी; अने पंथिउने ते गंगाना प्रवाहनी पेठे अन्नपाणीनुं दान देवा लाग्यो.

त्यां तेणे दान आदिकना उपकारथी वश करेला, प्रतीतिवाला माणसो पासे, ते लाखना घरसुधी बे कोशनी सुरंग खोदावी. पछी तेणें मि-

ब्राह्मरूपी वृक्षने पाणीसरखा, एवा, एक गुप्त कागलथी ते वृत्तांत पुष्पचूलने जणाव्यो. तेथी पुष्पचूलें पण पोतानी दीकरीनी जगोये, हंसीनी जगाये, जेम बगलीने तेम एक दासीने मोकलावी. पछी सोनानी जगोये पीतलनी पेठे ते दासीये आजषणयुक्त थइ दिशाउ प्रकाशित करतां थकां नगरीमां प्रवेश कर्यो. पछी त्यां वाजीत्रो वागते छते चुलनी राणीये ब्रह्मदत्तने तेणीनी साथे परणाव्यो. पछी तेणीये सघला लोकोने विखेरीने वहु सहित ब्रह्मदत्तने ते लाखना घरमां सुवावास्ते मोकल्यो. त्यारे कुमार पण पोताना परिवारने रजा आपी वहु सहित, पोतानी छाया सरखा वरधनुंनी साथे ते मेहेलमां गयो. त्यां ते मंत्रिपुत्रे मधरातसुधी वार्ताविनोदथी राजकुमारने जागतो राख्यो. पछी त्यां चूलनीये ते मेहेलने सलगाव्यो; ते वखते चूलनी तथा दीर्घना दुष्कृतनी अपकीर्त्तिना समूह संरखो धुंवाडो तेमांथी निकलवा लाग्यो. ते वखत अग्नि पण सप्तजीही छतां क्षुधातुरनी पेठे क्रोडो शिखाउरूपी जीजोथी जाणे सघलुं खाइ जवा माटेज होयनही, तेम बलवा लाग्यो. "आ शुं थयुं?" एम कुमारे पुछवाथी मंत्रिपुत्रे टुंकामां चुलनीनी दुष्ट चेष्टा जणावी दीधी. हवे अहींथी तमोने बचाववामाटे पिताजीये दानशालासुधी एक सुरंग खोदावी छे. माटे अहीं पाटुं मारीने, योगीनी पेठे तेनुं द्वार खोली तेमां तमे प्रवेश करो? पछी कुमार पण तेने फोडीने मित्रसहित तेमां दाखल थयो. पछी तेउ बन्ने सुरंगने छेडेथी धनुष्य धारण करीने बे घोडाउ पर स्वार थया. त्यांथी ते घोडाउ पण पंचम धाराथी श्वासज्जेर दोडीने पांचसो योजन जइ मृत्यु पाम्या. पछी तेउ त्यांथी जीव बचाववामाटे पगें चालीने नजदीकमां क्रोष्टक नामें गाममां गया. त्यां राजकुमारे "मंत्रीकुमारने" कह्युं के, हे मित्र हवे तो क्षुधा अने तृषा बन्ने पीडा करे छे. हीमत राख? एम कही मंत्रीकुमारे हजामत कराववामाटे गाममांथी नापिकने बोलाव्यो. त्यां तेनी अनुमतिथी राजपुत्रें फक्त एक चोटी रखावीने तमाम हजामत करावी; तथा जगवां वस्त्रो पेहेर्यां, तथा कंठमां वरधनुये पहेरावेली जनोइ पेहेरीने खरेखर ब्राह्मणरूपें राजकुमार थयो. वली ते मंत्रीपुत्रे तेनुं छातीपर रहेलुं श्रीवत्सनुं लांछन पण ढांकी दीधुं. एवी रीते राजपुत्रनी पेठे मंत्रीपुत्रें पण पोतानो वेष पालटी नाख्यो. पछी तेउ गाममां दाखल थया,

त्यारे कोइक ब्राह्मणें तेमने जमवाने नोतरुं आप्युं. ते ब्राह्मणे तेउने सारी रीते जमाड्या. पछी त्यां ते ब्राह्मणनी स्त्री कुमारनां मस्तकपर चोखा व-धावीने, श्वेत वस्त्रोवाली एक कन्याने लावी. त्यारे वरधनुये कह्युं के, आ कलाविनाना बालकने कंठे तुं तोप क्यां वलगाडे छे? त्यारे ब्राह्मणे कह्युं के, मारी बंधुमती कन्यानो आशिवाय कोइ वर थशे नहीं. कारणके निमित्तिये कह्युं छे के, आ कन्यानो जरतार छ खंड पृथ्वीनो राजा थशे, अने ख-रेखर ते आज छे; कारण के, ते निमित्तिये कह्युं छे के, जे माणस पोता नुं श्रीवत्स लांछन कपडांथी ढांकीने तारे घेर जमशे, तेने तारे आ कन्या आपवी. पछी त्यां ब्रह्मदत्ते तेणीनी साथे लग्न कर्युं. पछी रात्रिये तेणीने शांत करीने, कुमार बीजी तरफ चालतो थयो. चालतां थकां प्रजाते एक गाम पासे पहोंच्या, त्यां तेउये सांजल्युं के, सघला मार्गो दीर्घरा-जाये रोक्या छे. तेथी तेउ मार्ग छोडी चालवा लाग्या, अने तेथी वनप-शुउथी जरेली एक महा अटवीमां जइ पड्या. त्यां कुमारने तृषा लाग-वाथी, तेने वडना वृक्षनीचे मुकीने मंत्रीपुत्र एकदम पाणी लेवा दोड्यो. त्यां दीर्घनां माणसोये तेने उलखी कहाडी पकडी लीधो. तथा तेउये तेने माठा शब्दो कही बांध्यो. पछी तेणें ब्रह्मदत्त तरफ संज्ञा करवाथी ते पण नाशी गयो; तथा त्यां वनमां एक आश्रमथी बीजे आश्रम एम जटकवा लाग्यो. तेणे त्यां खाटां खारां फलो खातां थकां त्रीजे दिवसे एक तपस्वीने जोयो. त्यारे ते तपस्वी दया लावी तेने पोताने आश्रमें लेइ गयो. त्यां तेणे कुलपतिने नमस्कार कर्यो. त्यारे कुलपतिये तेने पुछ्युं के, मारवाडमां कल्पवृक्षनी पेठे उत्तम आकृतिवालो एवो जे तुं, तेनुं अत्रे आववुं केम थयुं? त्यारे राजकुमारे पण विश्वास राखीने पो-तानुं वृत्तांत ते महात्माने कही संजलाव्युं. त्यारे कुलपतिये हर्षित थइ कह्युं के, तारो पिता मारो महोटो जाइ छे, माटे अहीं तुं सुखेथी रहे? एवी रीते ते त्यां आश्रममां रह्यो; एटलामां वर्षा ऋतु आवी; ते वखते ते कुलपतिये तेने शस्त्रशास्त्रनी विद्या शिखवी. पछी वर्षाऋतु वीत्याबाद ता-पसो वनमां फलो लेवा माटे जवा लाग्या. त्यारे ब्रह्मदत्त पण कुलपतिये वार्या छतां तेउनी साथे जवा लाग्यो. त्यां तेणे हाथीनी विष्टा तथा मूत्र जोवाथी विचार्युं के, आटलामां कोइ हाथी लागे छे. पछी तापसोये वार्या

त्यां पण तेना शोधमां पांचसो योजन गया बाद, तेणे पर्वतसरखा एक हाथीने जोयो. ते हाथीने जोइ, तेणें गर्जारव करी तेने बोलाव्यो. त्यारे ते हाथी पण सुंढ उंची करीने, तथा लाल आंखो करी ते कुमारप्रत्ये दोड्यो; तथा जेटलामां ते नजदीक आवे छे, तेटलामां कुमारें तेने उप-हासमाटे वच्चे पोतानो दुपट्टो नाख्यो. त्यारे हाथी पण ते कपडांप्रत्ये पो-ताना दंतघातो करवा लाग्यो. एवी रीतें कुमार तेने गारुडी जेम सर्पने, तेम खेलववा लाग्यो. एटलामां वरसादें ते हाथीने उपद्रव करवा मांड्यो. त्यारें ते हाथी त्यांथी नाशी गयो, तथा कुमार पण एक नदीपासे पहो-च्यो. पछी ते नदी उतरीने तेणें एक पुराणुं शेहेर जोयुं; त्यारें तेमां प्र-वेश करतां तेणें एक वांसनी जाली जोइ; तथा त्यां एक तलवार अने वसुनंद पण तेणें जोयो. पछी तेणें ते तलवारथी वंश जालीने छेदी नाखी. त्यारे तेनी अंदर तेणें स्फुरायमान होठोवालुं एक मस्तक पडेलुं जोयुं. ते जोइ तेणें विचार्युं के, अरे ! ! में कोइ निरपराधी विद्या साधवावालाने मारी नाख्यो; पछी एवी रीतें निंदा करतो थको जेवो ते अगाडी गयो के तुरत तेणें नंदनवन सरखुं एक उद्यान त्यां जोयुं. तेमां प्रवेश करतां तेणें अगाडी एक सात भूमिनो मेहेल जोयो. तेपर चडतां तेणें हाथ-पर मुख राखीने बेठेली एक स्त्रीने जोइ. तेनी पासे जइ कुमारें पुछ्युं के, तुं कोण छे ? तथा एकली अने शोकमां शामाटे छे ? त्यारे तेणीए पण भयथी कह्युं के, मारो वृत्तांत लांबो छे; माटे तुं कोण छे ? अने अहीं केम आव्यो छे ? त्यारें तेणें कह्युं के, हुं पांचालना राजा ब्रह्मनो ब्रह्मदत्त नामें पुत्र छुं; ते सांभलतांज ते हर्षपूर्वक उभी थइ. अने आंखोमांथी हर्षाश्रु लावीने तेने पगे पडी; अने बोली के, हे कुमार, अशरण एवी जे हुं, तेने शरणरूप तुं आव्यो छे, एम कही ते रडवा लागी. पछी कुमारें पुछ-वाथी तेणीए कह्युं के, हुं तारा मामा अंग देशना राजा पुष्पचूलनी पु-ष्पवती नामें पुत्री छुं, अने ताराप्रत्ये देवाएली छुं; पछी एक दहाडो हुं विवाहनी वाट जोती थकी, हंसीनीपेठे बगीचामां रहेली वावडीमां र-मती हती. ते वखते नाट्योन्मत्त नामना विद्याधरें रावणें जेम सीताने तेम मने हरीने अहीं आणी छे. ते मारी दृष्टिने नहीं सहन करवाथी विद्या साधवामाटे वंशजालीमां बेठो छे. अने आजे तेनी विद्या सिद्ध थवाथी

ते मने परणवानो छे. त्यारे कुमारें तेना वधनी वात तेणीने कहेवाथी, ते अत्यंत हर्षित थइ. त्यां तेउना परस्पर अनुरक्तपणाथी तेउनो गांधर्वविवाह थयो. त्यां तेणीनी साथे रमतां एक पोहोरनी पेठे आखी रात तेणें निर्गमन करी. पछी प्रजातमां ब्रह्मदत्तें आकाशमां खेचरीउनो शब्द सांजलवाथी, तेणीने पुछवाथी ते पण संभ्रांत थइ कहेवा लागी के, आ बन्ने तमारा वैरी विद्याधरनी खंडा अने विशाला नामनी बेहेनो छे. माटे हमणां क्षणवारसुधि तमो जरा छुपाइ रहो, के जेथी, तेउनो तमारा प्रत्येनो राग विराग हुं जोइ शकुं; वली जो तेउ राग बतावशे तो हुं. लाल धजा हलावीश, नहींतर श्वेत धजा हलावीश, तेथी तमो बीजी जगोए जजो ? ते सांजली ब्रह्मदत्तें कह्युं के, हुं कंइ तेनाथी डरुं तेम नथी; त्यारे पुष्पवतीयें कह्युं के, हुं ते माटे नथी कहेती, पण, तेम कर्याथी तेना संबंधी एवा विद्याधरो तमारी साथे वैरवाला थशे. पछी तेणीनी मरजी माटे ते छुपाइ रह्यो, एटलामां तेणीए पण श्वेत धजा हलाववाथी, स्त्रीना उपरोधथी धीरे रहीने बीजीतरफ चाल्यो, पण तेवा माणसने कंइ बीक होती नथी. पछी ते जंगल वटावीने संध्याकालें एक तलावपासे पहोंच्यो. ते तलावमां जइ स्नान करी तेणें पाणी पीधुं, पछी त्यांथी ते उत्तरपश्चिमना कांठातरफ जवा लाग्यो, त्यां तेणें लताउना कुंजमां वनदेवी सरखी एक स्त्रीने पुष्पो वीणती जोइ. तेणीने जोइ ब्रह्मदत्तें विचार्युं के, जन्मथी मांडी रूपनो अभ्यास करतां करतां छेवटे ब्रह्माए आने बनावी लागे छे. ते स्त्री दासिसाथे बोलती थकी, तथा डोलर सरखा कटाक्षो ब्रह्मदत्तने मारती थकी, ते जाणे वरमालाज नाखती होय नहीं, तेम करीने चाली गइ. पछी कुमार पण तेणीने जोतो थको, जेवो बीजी जगोतरफ चाल्यो, तेटलामां ते दासी, वस्त्र, भूषण अने तांबूल सहित त्यां आवी लागी. तथा ते वस्त्रादिक कुमारने आपी कहेवा लागी के, जे स्त्रीने तें हमणां जोइ, तेणीए स्वार्थसिद्धिमाटे आ तने बानुं आप्युं छे; तथा मने कह्युं छे के, आ पुरुषने तारे पिताजीना मंत्रिने घेर लाववो. त्यारें ते ब्रह्मदत्त पण तेणीनी साथे नागदेव मंत्रिने घेर गयो; ते वखते ते मंत्री पण तेना गुणोथी जाणे खेंचायो होय नहीं, तेम सामो उजो थयो. पछी दासीए मंत्रीने कह्युं के राजपुत्री श्रीकांताए आमने तमारे घेर मो-

कन्या छे, एम कही ते चालती थइ. एवी रीतें मंत्रिथी सेवा करातां थ-कां तेणें एक क्षणनी पेठे रात्रि व्यतीत करी. पछी प्रजातमां मंत्री तेने राजदरबारमां लेइ गयो, त्यारें राजाए पण तेने आदरमान आप्युं. पछी राजाए कुल आदिकनी तपास कर्याविनाज तेने ते कन्या परणावी. कुमारें पण हर्थीवालो मेलवीने ते कन्यासाथे लग्न कर्युं. पछी एक दहाडो कुमारें ते कन्याने छानी रीतें पुछ्युं के, तारा बापें मारुं कुलशील जा-ण्याविना मने तने केम परणावी ? त्यारे श्रीकांता कहेवा लागी के व-संतपुर नामें नगरमां शबरसेन नामें राजा हतो. तेना पुत्रने क्रूर गोत्री-उंए मारा पिताना राज्यपर बेसाड्यो,अने तेथी मारो पिता अहींआं प-ल्लीमां पोताना सैन्यसहित रह्यो छे. अहीं जीलोने नमावीने, तथा धा-डां पाडीने पोताना परिवारनुं ते रक्षण करे छे. ते पिताने हुं अत्यंत व-ल्लज एवी पुत्री छुं; हुं जुवान थइ त्यारे तेणें मने कह्युं के, सघला रा-जाउं मारा वैरी छे,तेथी तारे इहां रहीनेज कोइ वरने पसंद करवो. पछी त्यारथी तलावने कांठे चक्रवाकीनी पेठे रहीने हुं सघला पंथीउंने जो-ती फरुं छुं. एटलामां में तमोने जोया. हवे एक दहाडो ते पल्लीपति धा-ड पाडवा गयो,तेनी साथे कुमार पण गयो. ते गाम लुंटाते छते तलावना कांठापर रहेला कुमारने चरणे वरधनु आवीने पड्यो. तथा कुमारने कं-ठें वलगीने रडवा लाग्यो; कारण के, इष्टनो मेलाप थतां दुःखो उजराइ आवे छे. पछी कुमारें मिठां वचनोयें पूछ्याथी मंत्रिपुत्र पोतानुं वृत्तांत कहेवा लाग्यो के, हे नाथ, तमोने वडनी नीचे मुकीने ज्यारे हुं पा-णी लेवा माटे गयो, त्यारे में आगल अमृतकुंडसरखुं एक तलाव जोयुं. पछी जेटलामां पाणी लेइने हुं आवतो हतो, तेटलामां मने सु-जटोए पकड्यो, अने पूछ्युं के, ब्रह्मदत्त क्यां छे ? त्यारे में कह्युं के, मने खबर नथी. पछी ज्यारे मने तेउं मारवा लाग्या, त्यारे में कह्युं के, ब्रह्मदत्तने तो वाघ खाइ गयो. त्यारे तेउंए कह्युं के ते जगो अमोने ब-ताव ? त्यारे कपटथी आम तेम जमीने तमोने नासी जवानी संज्ञा में करी. पछी में "परिव्राट्व्रतनी" गोली मढोडामां नाखी, तेथी हुं मड-दानी पेठे पडवाथी तेउंए मने तजी दीधो. पछी तेउं दूर गयाबाद, हुं ते गुटिका मुखमांथी कहाडीने, तमारी शोधमाटे गामोगाम जमवा लाग्यो.

त्यां एक परिव्राजक मने मळ्यो, अने में तेने नमस्कार कर्यो. त्यारें तेणें मने कह्युं के, हुं धनुमंत्रीनो मित्र छुं, माटे मने कहे के, ब्रह्मदत्त क्यां छे ? त्यारे में पण तेने सघलुं वृत्तांत यथास्थित कही संभळाव्युं. पछी तेणें मने कह्युं, के ते लाखनुं घर बळ्याबाद प्रभातें दीर्घ राजाए तेनी तपास करी, तो अंदरथी एकज मुडदुं निकळ्युं पण त्रण निकळ्यां नहीं; तथा त्यां सुरंग अने घोडानां पगलां जोइ तेणें विचार्युं के, धनुनी बुद्धिथी तमो बन्ने नाशी गया छो, तेथी ते धनुपर कोपायमान थयो. पछी तेणें तमारी शोध माटे चारे बाजु माणसो मोकल्यां, धनुमंत्री पण त्यांथी नाशी गयो, अने तमारी माताने दीर्घ राजायें मातंगना पाडामां राखी छे. एवी रीतें दुःखपर दुःखनी वात सांभळी हुं कांपिल्य नगरमां गयो. पछी त्यां कपटथी कापडीनो वेष लेइ मातंगोना पाडामां भटकवा लाग्यो. पछी एवी रीतें भटकतां त्यां मने कोटवाळ साथे मित्राइ थइ. पछी मारी माताने तेनी मारफतें त्यां शोधीने, में तेणीने एक गोळी आपवाथी मडदानी पेठे ते बेभान थइ गइ. ते वात कोटवाळें राजाने जणाववाथी तेना संस्कार माटे राजायें पोताना माणसोने हुकम कर्यो. ते माणसोने में कह्युं के आ डोशीनो जो अत्यारें संस्कार करशो, तो राजाने मोटो अनर्थ थशे; ते सांभळी तेओ पोताने स्थानकें गया. पछी में कोटवाळने कह्युं के, जो तुं मने सहाय करे, तो आना शबथी हुं एक मंत्र साधुं. कोटवाळें ते कबुल करवाथी संध्याकाळें हुं तेणीना शबने दूरना स्मशानमां लेइ गयो. पछी त्यां में कपटथी मांडलां करीने कोटवाळने पुरदेवीने बलि देवा मोकल्यो. तेना गयाबाद में मारी माने बीजी गोळी आपी, तेथी ते आळस मरडी बेठी थइ. पछी हुं तेणीने कछ गाममां देवशर्मा नामें मित्रने घेर लेइ गयो; तथा तने शोधतो थको अहीं आव्यो छुं; माटे हे नाथ! हवे तमो पण तमारुं वृत्तांत कहो ? त्यारे कुमारें पण पोतानुं वृत्तांत तेने कही संभळाव्युं; एटलामां कोइ माणसें त्यां आवी तेओने कह्युं के, दीर्घराजाना सुभटो तमारा सरखा आकारवाळी छबि लेइने गाममां भमता थका कहे छे के, आवा आकारनां माणसो अहीं आव्यां छे ? तेथी में तमोने एवा जोया छे, माटे हवे तमोने जे रुचे ते करो ? पछी त्यांथी तेओ नाशीने कौशांबी नगरीए आव्या. त्यां तेओए

उद्यानमां सागरदत्त शेठ तथा बुद्धिल शेठना एक लाखनी शरतवाळा कुकडाउंने लडता जोया. ते कुकडाउं कुदी कुदीने एक बीजाने चांचोथी मारता हता. त्यां सागरदत्तना कुकडाने बुद्धिलना कुकडाए हराव्यो. त्यारे वरधनुए सागरदत्तने कह्युं के, तारो कुकडो उत्तम छतां केम हार्यो? माटे जो तारी आज्ञा होय तो तेनी तपास करुं. पछी सागरें हा पाड-वाथी तेणे तपास्युं तो बुद्धिलना कुकडाने पगे लोखंडनी सोयो जोइ. पछी बुद्धिलने पण मालम पड्युं के, कुकडाना पगें रहेली सोइ आणें जोइ छे, तेथी गुप्तरीतें तेने अरधो लाख दाम आपवानुं कह्युं; पछी आ वृत्तांत व-रधनुए कुंवरने जणाववाथी कुंवरें सोइ खेंची लेइने, फरीथी सागरद-त्तना कुकडासाथे लडावतां ते बुद्धिलनो कुकडो हारीगयो. तेथी सागर-दत्त खुशी थइ तेउंने पोताना रथमां बेसाडी पोताने घेर तेडी गयो. तेउं बन्ने त्यां सुखे रहेता हता, एटलामां बुद्धिलनो एक चाकर आवी, गुप्त रीतें वरधनुने अरधो लाख दाम देइ गयो. पछी तेणें निर्मल मोतीउंनो हार देखाड्यो, ते हारमां पोताना नामनो एक कागल ब्रह्मदत्तें जोयो. एटलामां वत्सा नामनी एक तापसी आवी; तथा तेउंपर अक्षत नाखी आशीर्वाद देइ, वरधनुने तेणीए कंइक कह्युं, अने पछी चाली गइ; पछी मंत्रिपुत्रें ब्रह्मदत्तने कह्युं के, हारपर बांधेला कागलनो आ उत्तर मागे छे. वली तेणीए कह्युं के, कागल ब्रह्मदत्तनो छे; त्यारे में पुछ्युं के, ब्रह्म-दत्त कोण? त्यारे तेणीए कह्युं के, आ नगरमां रती सरखी रत्नवती नामें एक शेठनी पुत्री छे; तेणीए ते कुकडाना युद्धमां ब्रह्मदत्तने जोयो हतो. त्यारथी कामातुर थइने ते हमेशां ब्रह्मदत्तनेज संभाल्या करे छे, एक दहाडो तेणीए पोते कागल लखीने आ हारसाथे मारी मारफत अहीं मोकलाव्यो; एम कही ते चाली गइ, अने में तेणीने आ उत्तरनो कागल आप्यो. पछी त्यारथी कुमार पण कामथी पीडावा लाग्यो. हवे एक दहाडो दीर्घ राजाए शोधवामाटे मोकलेलां माणसो त्यां आव्यां. तेउं राजाना हुकमथी ज्यारे शोध करवा लाग्या, त्यारे सागरदत्तें तेमने भोंयरामां राख्या. पछी रात्रिए तेमने रथमां बेसाडी केटलेक दूर मुकी आवीने सागरदत्त पाछो वळ्यो. तेउंयें आगळ जतां एक स्त्रीने रथपर श-स्त्रसहित बेठेली जोइ. पछी तेणीए पुछ्युं के, तमोने आटलो वखो व-

खल केम लाग्यो? त्यारे तेउंए कह्युं के, अमोने तुं उंलखे छे? त्यारे ते कहेवा लागी के, आज नगरमां महाधनवान् धनप्रवर नामें शेठ हतो. ते शेठने आठ पुत्रोपर हुं एक दीकरी छुं. में आ उद्यानमां आवी, उत्तम वरमाटे यक्षनुं आराधन कर्युं; त्यारें यक्षें तुष्टमान थइ मने कह्युं, के ब्रह्मदत्त चक्री तारो स्वामी थशे. अने ते ब्रह्मदत्त, सागरदत्त अने बुद्धिलना कुकडाना रणसंग्राममां आवशे; वली मारा देवलआगल तेनो मेलाप थशे, एम ते यक्षें कह्युं छे, माटे तमो तुरत आवीने आ रथपर चडी बेसो? त्यारें ब्रह्मदत्तें पण ते अंगीकार कर्युं, अने तेउ बन्ने तेमां चडी बेठा, अने पुछ्युं के, क्यां जवुं छे? त्यारे तेणीयें कह्युं के, मगधपुरमां धनावह नामें मारो काको छे, ते आपणने आदरमान देशे. पछी ब्रह्मदत्तें पण मंत्रिपुत्रने सारथीनी जगोए राखीने ते तरफ रथने हंकराव्यो. पछी एवी रीतें कोशांबी देशने उलंघीने तेउं एक भयंकर अटवीमां आव्या. त्यां सुकंटक अने कंटक नामना चोरें तेउंने घेर्या. तेउंये बाणोयें करीने आकाशने छाइ मुक्युं. त्यारे कुमारें पण धनुष् लेइने बाणोथी चोरनी सेनाने ढांकी दीधी. तेथी ते चोरो त्यांथी नाशी गया. पछी मंत्रिपुत्रें कुमारने कह्युं के, तुं रणसंग्राम करीने हवे थाकी गयो होइश, माटे आ रथमांज उंघी जा. पछी ब्रह्मदत्त पण रत्नवतीनी साथे ते रथमां सुइ गयो. पछी प्रभातें एक नदी आगल घोडाउ पण थाकीने उभा रह्या, तथा ब्रह्मदत्त पण जाग्यो. पण तेणें मंत्रीपुत्रने रथपर जोयो नहीं, त्यारे तेणें विचार्युं के,ते पाणी पीवा माटे गयो हशे, एम विचारि तेने ते बोलाववा लाग्यो. पण तेनो जवाब नहीं मलवाथी तथा रथना अग्रभागने रुधिरवालो जोइ, खेदथी मूर्छा खाइने कुमार रथपर पड्यो. पछी चेतना आव्याबाद उठीने ते रडवा लाग्यो; त्यारे रत्नवती तेने कहेवा लागी के, ते मृत्यु पाम्यो माटे पाछो आववानो नहीं, माटे वचनथी पण तेनुं अमंगल तमारे करवुं न जोइयें. वली कदाच ते तमारा कार्यमाटे पण क्यांक गयो होय; माटे स्थानकें पहोंच्या बाद तेनी तपास करशुं; आ भयंकर वनमां थोभवुं ठीक नहीं. पछी कुमारें पण घोडाउने हांकवाथी, तेउं मगधदेशना सीम नामें गाममां आव्या. त्यांना राजायें तेउंने आदरसत्कार आप्यो. पछी ते राजा-

यें कुमारने शोकातुर जोइ पुछवाथी तेणें कह्युं के, मारा मित्रने कोइ चोरें मार्यो छे, तेथी ते पाछो आव्यो नथी. त्यारें ते राजाए कह्युं के, हुं तेनी शोध कहाडी लावीश, एम कही ते वनमां गयो; त्यांथी आवी तेणें कुमारने कह्युं के, वनमां कोइ माणस तो मल्यो नथी, पण आ एक बाण मल्युं छे. पछी कुमारें वरधनुने मराएलो जाणी शोक कर्यो. पछी रात्रिना चोथा पहोरे त्यां चोरो आव्या, पण कुमारने जोइ नाशी गया. पछी ते अनुक्रमें राजगृही नगरीए गयो, अने त्यां रत्नवतीने बहार तापसोना आश्रममां मेली. पछी नगरमां प्रवेश करतां एक मेहेलनी बारीमां बे नवयौवन स्त्रियोने तेणे जोइ. त्यारें स्त्रियो तेने कहेवा लागी के, अमो प्रेमालने तुं तजीने ते वखते चाल्यो गयो, ते तुंने लायक छे? त्यारें कुमारें कह्युं के, आ वात हुं कंइ पण जाणतो नथी. त्यारें ते स्त्रियोए तेने बोलाववाथी, ते तेउना घरमां गयो. पछी तेने स्नानजोजन कराव्याबाद, ते स्त्रियो पातानी कथा कहेवा लागीयो के, विद्याधरोना आवासवालो, तथा सुवर्णनी शिलावालो वैताढ्य नामें पर्वत छे. तेनी दक्षिण श्रेणिमां शिवमंदिर नामना नगरमां ज्वलनशिख नामें राजा छे तेने विद्युत्‌शिखा नामनी स्त्री छे. तेनी अमो खंडा अने विशाखा नामनी बन्ने पुत्रियो छियें. एक दहाडो अमारा पिताए पोताना मित्र अग्निशिखनी साथे मेहेलमां बेठां थकां अष्टापद पर्वत तरफ देवताउने जता जोया. पछी ते तीर्थयात्रा माटे अमोने अने ते मित्रने लइने ते चाल्या. त्यां अष्टापद पर अमोयें तुल्यमान तथा वर्णोवाली तीर्थंकरनी प्रतिमाउ जोइ. तेउनी पूजा करीने, तथा त्रण प्रदक्षिणा दइने अमोयें वंदन कर्युं. पछी ते मंदिरमांथी निकल्याबाद अमोयें लाल अशोकनी नीचे बे चारणमुनिउने जोया. तेने नमस्कार करीने, अमो धर्मदेशना सांजलवामाटे त्यां बेठीयो. पछी तेने अमारा पितायें पुछ्युं के, आनो पति कोण थशे.? त्यारे तेउए कह्युं के, जे माणस तेउना जाइने मारशे, ते तेउनो पति थशे. ते सांजली अमारा पिताजीने दिलगिरि थइ, त्यारें अमोयें तेने कह्युं के, तें हमणांज संसारना असारपणानी देशना सांजली छे, अने शामाटे तुं खेद करे छे.? अमोने विषयसुखवांछा नथी, एम कही अमो अमारा जाइनुं रक्षण करवा लागीउं, एक दहाडो जमतां थकां अमारो जाइ तमारा मामा

पुष्पचूलनी दीकरी पुष्पवतीने हरी गयो. तथा तेनी दृष्टिने सहन न करवाथी ते विद्या साधवा गयो, ते पछीनुं वृत्तांत तमो जाणो छो; हवे पुष्पवतीयें अमारा जाइना मृत्युनुं वृत्तांत अमोने जणाव्याथी, अमोयें तमोने परणवाने इच्छ्युं पण तेणीयें संभ्रममां श्वेत पताका हलाववाथी तमो चाल्या गया पछी अमो तमोने शोधतीयो थकी अहीं आवीयो. माटे हवे तमो अमोने परणो? पछी कुमार पण तेउने परण्यो; एवी रीतें ब्रह्मदत्तें तेउनी साथे क्रीडामां ते रात्रि निर्गमन करी; तथा प्रजातें तेमने कह्युं के, मने राज्य मळे त्यांसुधि, तमारे पुष्पवती साथे रहेवुं. पछी ते, आश्रममां रत्नवतीने शोधवा गयो, त्यां तेणीने नहीं जोवाथी एक पुरुषने तेणें पुछयुं के, मनोहर वस्त्रवाळी कोइ स्त्रीने तें आजे अथवा गइ काले अहीं जोइ छे.? त्यारें तेणें कह्युं के, गइ कालें, नाथ नाथ करीने, एक स्त्री अहीं रडती हती, तेणीने उलखवाथी में तेना काकाने सोंपी छे. पछी ब्रह्मदत्तने तेणीनो वर जाणीने, ते तेणीना काकाने घेर तेने तेडी गयो, त्यां ते काकायें रत्नवतीने ब्रह्मदत्तनी साथे परणावी. त्यां तेनी साथे सुख जोगवीने बीजे दहाडे तेणें वरधनुनुं मृतकार्य कर्युं, त्यां साक्षात् प्रेतनी पेठे ब्राह्मणो जमवा बेठा हता, तेनी अंदर ब्राह्मण वेषधारी वरधनु आवीने कहेवा लाग्यो के मने जोजन आपो. तेना साद उपरथी ब्रह्मदत्तें तेने उलखी कहाड्यो; अने तेने आलिंगन देइ, हर्षाश्रुथी नवरावीने, पोताना घरमां लेइ गयो. पछी कुमारें वृत्तांत पूछवाथी तेणें कह्युं के तमो ज्यारे रथमां उंघी गया, त्यारे चोरोयें आवी मने घेरी लीधो, त्यां एक चोरें मने बाण मारवाथी हुं पृथ्वीपर पड्यो, अने तेथी लताउमां हुं ढंकाइ गयो. पछी ते चोरो गयाबाद हुं एक गाममां गयो; त्यांना राजा पासेथी तमारी खबर सांजलीने हुं अहीं आव्यो छुं. पछी ब्रह्मदत्तें तेने कह्युं के, आवीने आवी रीतें हवे आपणे केटलोक वखत रहीशुं? एटलामां त्यां वसंतऋतुनो महोत्सव आव्यो. ते वखतें राजानो मदोन्मत्त हाथी सांकल तोडावीने नासवा लाग्यो; अने रस्तामांथी एक युवान कन्याने तेणें कमलिनीनी पेठे सुंढमां उपाडी. तेथी ते आक्रंद करवा लागी, अने लोको पण ते जोइ हाहाकार करवा लाग्या. ते जोइ कुमारें हाथीने तरछोडवाथी, तेणीने छोडी ते हाथी कुमारतरफ दोड्यो. तेज वखते कुमार पण तेना दांतोपर पग मुकी तेनी उपर चडी बेठो.

पछी योगी योगथी जेम आत्माने, तेम ते कुमारें तेने अंकुशथी वश कर्यो. पछी लोकोथी शाबाशी अपाता ते कुमारें ते हाथीने स्तंभपासे लइ जइ बांध्यो. पछी राजा त्यां आवी तेने जोइ आश्चर्य पाम्यो, तथा कहेवा लाग्यो के, शुं आ ते सूर्य छे.? अथवा इंद्र छे? त्यारे रत्नवतीना काकायें तेने सघलुं वृत्तांत कह्युं. पछी राजायें पण खुशी थइने तेने पोतानी कन्याओ परणावी. हवे कुमार ते कन्याओ साथे सुख भोगवे छे, एटलामां एक घरडी डोशी त्यां आवीने कहेवा लागी के, आ नगरमां वैश्रमण नामें शेठ छे, तेने श्रीमती नामें पुत्री छे. तेणीने तें हाथीथकी मुकावी छे, त्यारथी ते तारामां अनुरक्त थइ थकी खेद पाम्या करे छे. हवे जेम तें तेणीने हाथीथकी बचावी छे, तेम लग्न करीने कामथी पण बचाव? पछी कुमार ते कन्याने परण्यो, अने वरधनु पण सुबुद्धि मंत्रीनी कन्याने परण्यो. पछी त्यांथी तेओ बन्ने वाराणसी नगरीमां गया. त्यांनो राजा गौरवथी तेओ सामो आवी, तेओने घेर लेइ गयो. त्यां ते कटक राजायें पोतानी कटकवती नामनी कन्या तेने आपी तथा चतुरंगी सेना आपी वली त्यां तेमने आवेला जाणी, चंपानो राजा करेणुदत्त, धनुमंत्री तथा भगदत्त आदिक राजाओ पण आव्या. पछी वरधनुने सेनापति करीने ब्रह्मदत्त दीर्घने जीतवा चाल्यो, एटलामां दीर्घनो दूत आवी कटक राजाने कहेवा लाग्यो के, तमारे अमारा साथेनी बालमित्राइ तजवी न जोइयें. त्यारे कटक राजायें कह्युं के, ब्रह्म राजानां जीवतां थकां अमो पांचे मित्रो हता; पण तेना मृत्युबाद दीर्घें जे अकार्य कर्युं छे, तेवुं कसाइ पण करे नहीं, माटे दीर्घने जइ कहे के, ब्रह्मदत्त तारी साथे लडवा आवे छे, माटे कांतो तेनी साथे लड? नहींतर नाशी जा? एम कही कटकें दूतने विसर्जन कर्यो. पछी ब्रह्मदत्तें पण अनुक्रमें कांपिल्यपुर जइने दीर्घसहित तेने घेरी लीधुं. पछी दीर्घ ते नगरमांथी सैन्यसहित बहार निकल्यो तथा चुलनीए पूर्णा नामनी साध्वीपासे वैराग्यथी दीक्षा लीधी अने मोक्षे पण गइ. हवे ब्रह्मदत्तना सैन्यें दीर्घना सैन्यने पाछुं हठाव्युं; पछी दीर्घें पोते नदीना पूरनी पेठे आवीने ब्रह्मदत्तना सैन्यने दूर हठावी दीधुं, त्यारें ब्रह्मदत्त पण क्रोधायमान थइ, हाथीनी पेठे तेनी साथे लडवा लाग्यो तेओ बन्ने, कालना समुद्रो जेम, मोजाओथी तेम हथीयारोथी लडवा लाग्या, तेज

वखते ब्रह्मदत्त पासे चक्र आवीने हाजर थयुं, ते चक्रथी तेणें दीर्घना प्राणोनो नाश कर्यो. ते वखतें देवोए जय जय शब्द करीने ब्रह्मदत्तपर पुष्पनी वृष्टि करी, नगरना लोकोयें पण तेने मात, पिता, तथा देवतानी पेठे पूज्यो, पछी ते नगरमां दाखल थयो. पछी तेणे छखंड पृथ्वीने जीती. पछी राजाउंये आवीने बार वर्षो सुधि तेनो अभिषेक कर्यो, एवी रीतें चोसठ हजार स्त्रीउं साथे ते, पूर्वेनां तपरूपि वृक्षनां बीज सरखुं राज्यसुख भोगववा लाग्यो.

हवे एक दहाडो नाटक तथा संगीत चाली रह्युं हतुं एटलामां एक दासीयें आवीने तेने एक पुष्पनो गुंथेलो दडो आप्यो. ते दडाने जोइ, ते मनमां ऊहापोह करवा लाग्यो के, आवो दडो में क्यांक पण जोयो छे; एम करतां तेने मूर्छा आवी, तथा पछी जातिस्मरण ज्ञान थवाथी, तेने मालम पड्युं के, आवो दडो, में सुधर्मा देवलोकमां जोयो हतो, माटे हवे ते मारो पूर्वजन्मनो भाइ मने शीरीते मलशे? पछी तेणें पोताना भाइने शोधवा माटे एक अरधा श्लोकनी समस्या लखी, ते समस्या नीचे प्रमाणे.

"आस्व दासौ मृगौ हंसौ, मातंगावमरौ तथा"

अर्थः– आपणे बन्ने दास, मृगो, हंसो, मातंगो, तथा देवो हता. पछी तेणें नगरमां पडो वजडाव्यो के, आ अर्धा श्लोकनी जे समस्या पुरशे तेने अरधुं राज्य आपीश. ते अरधो श्लोक नगरमां सर्वे लोकोयें कंठें कर्यो, पण कोइ तेने संपूर्ण करी शक्युं नहीं. एटलामां पुरीमताल नगरना चित्रजीव नामें कोइ शेठना पुत्रें जातिस्मरण ज्ञान थवाथी दीक्षा लीधी हती ते त्यां आव्यो. तेणें एक अरघट्ट (रेंट) वालाने ते अरधो श्लोक बोलतो सांभल्यो. ते सांभली तेणें (साधुयें) ते समस्या पुरी के,

"एषा नौ षष्ठिका जाति, रन्योऽन्याभ्यां वियुक्तयोः"

अर्थः– एक बीजाथी जुदा पडेला एवा आपणनो आ छठो भव छे. पछी ते अरघट्टवाले ते समस्या राजाने संभलावी, तेथी राजाए पुछ्युं के, कोणे पुरी? त्यारे तेणे पण ते मुनिनुं नाम कह्युं पछी राजा तेने इनाम आपी, ते मुनिने जोवा माटे उद्यानमां गयो. तथा मुनिने हर्षाश्रुपूर्वक वांदीने तेनी पासे स्नेहथी ते बेठो. त्यारे मुनिएं पण आशीर्वाद दइने तेने प्रतिबोधवामाटे धर्मदेशना देवा मांडी के, हे राजा! आ असार संसारमां धर्मशिवाय कंइ पण सार नथी. वली, शरीर, यौवन, धन, बांधव

विगेरे सघळुं, पवनथी चलायमान थती पताका (ध्वजा) सरखुं चंचळ छे. जेम पृथ्वीने मेळववाने तें बहारना वेरीउंने जीत्या, तेम मोक्ष मेळववामाटे अंतरंग वेरीउंने पण तुं जीत्य? अने तेमाटे तुं यतिधर्मने अंगीकार कस्यः? कारण के, हंस पण पाणीमांथी दूधने खेंचे छे. त्यारे ब्रह्मदत्तें कह्युं के, हे न्नाइ, सारुं थयुं के तारो मेलाप थयो, हवे तुं यथेछरीतें राज्यने जोगव्य? वळी तपोनुं फल जोगो छे, तो शामाटे हवे तुं तप करे छे? त्यारे मुनियें कह्युं के, मारी पासे पण घणी दोलत हती, पण में जवभ्रमणथी डरीने तेने तृणनी पेठे तजी छे. माटे हे राजन्, पुण्यना क्षयथी सौधर्मा देवलोकथी तुं अहीं आवेल छुं, माटे पाछो क्षीणपुण्यवालो थइने तुं नीची गतिमां जवानुं नहिं कर? वळी आर्यदेशमां, श्रेष्ट कुलमां मोक्ष देनारा आ मनुष्यजन्मने पामीने तुं तेने फोगट गुमाव्य नहीं? वळी स्वर्गथी च्यवीने क्षीणपुण्यवाला थइ आपणे नीची योनियोमां जटक्या छियें, ते याद छतां बालकनी पेठे तुं केम मुंफाइ रह्या छे? एवी रीतें कहेतां पण राजाने बोध लाग्यो नहीं, कारण के, नियाणुं करनारने बोधिबीज क्यांथी मळे? पछी मुनि पण त्यांथी विहार करी गया, तथा अनुक्रमें घाति कर्मना क्षयथी केवलज्ञान पामी, जवोपग्राहि कर्मोनो क्षय करी मोक्षे गया. पछी ब्रह्मदत्तें पण संसारसुखमां निमग्न थइने सातसो वर्षो व्यतीत कर्यां. एक दहाडो कोइ उंलखता ब्राह्मणें तेनी पासेथी तेनुं जोजन माग्युं. त्यारे ब्रह्मदत्तें तेने कह्युं के, मारुं जोजन तने पचे नहीं, अने कदाच घणे काले पचे तोपण तुं तेमांथी गांडो बनी जशे. पण ते ब्राह्मणें नहीं मान्याथी, राजाए तेने तेना पुत्रसहित जमाड्यो; पछी रात्रियें ते ब्राह्मण अनहद कामातुर थवाथी, पुत्रसहित, माता, बेहेन दीकरीविगेरेनी साथे तेणे दुष्टाचरण सेव्युं, पछी प्रजातमां तो ते पोताना घरनां माणसोने मोहोडुं पण देखाडी शक्यो नहीं. त्यारे ते ब्राह्मणें विचार्युं के, आ दुष्ट राजाए मारा कुटुंबनो घाण कढाव्यो, एम विचारि ते नगरमांथी निकली गयो. त्यां तेणें एक बकरां चरावनारने दूरथी वेधुए करी पीपलानां पानोने छेदतो जोयो, तेने जोइ ब्राह्मणें विचार्युं के, मारुं वेर आ माणस वाळी शकशे, एम विचारि तेणे तेनो बहु आदरसत्कार कर्यो; अने पछी कह्युं के, आ राजमार्गेथी, हा-

थीपर चडीने, श्वेत चामरछत्रो सहित जे जाय छे, तेनी आंखमां तारे गोळीओ मारवी. पछी तेणें पण ते वात कबुल करी, कारण के, तेवा लोको पशुनी पेठे बुद्धिविनाना होय छे; पछी तेणें भींत पाछल छुपाइने राजानी आंखोमां गोळी मारवाथी, आंखो फुटी गइ, तथा चोकीदारोए पण ते मारनारने पकडी लीधो, तथा तेने ज्यारे मारवा मांड्यो, त्यारे तेणें ब्राह्मणनो वृत्तांत कह्यो. त्यारे राजाए कह्युं के, धिक्कार छे, ब्राह्मणनी जातिने, के जेओ खाय छे, तेनुंज खोदे छे. वली कुतरांने देवुं सारुं, पण कृतघ्न ब्राह्मणने देवुं सारुं नहीं; माटे ते खल, पापी, मांसभक्षीनेज पेहेलां मारवो ? एम कहेतां थकां राजाए ते ब्राह्मणने कुटुंब सहित मरावी नाख्यो; तथा क्रोधने वश थइने तेणें पुरोहित आदिक सर्वे ब्राह्मणोने मरावी नाख्या; तथा मंत्रिने कह्युं के, ते सघला ब्राह्मणोनी आंखो कहाडी तेनो थाल भरी तमो मारी पासे लावो ? पछी मंत्रिए पण राजाने रौद्रध्यानने वश थयेलो जोइने, "श्लेश्मातक नामनां फलोथी" (चक्षुजेवा आकारवालां फलोथी) थाल भरीने राजानी पासे मेल्यो. ते स्थालने स्पर्श करवाथी राजाने जे सुख मलतुं हतुं ते सुख स्त्रीरत्न पुष्पवतीने स्पर्श करवाथी पण तेने मलतुं नहोतुं. पछी जेम दुर्बुद्धि माणस मदिराना पात्रने, तेम तेणें कोइ दहाडो पण, ते थाल पोतानी पासेथी खेसव्यो नहीं. एवी रीतें तेनुं रौद्रध्यान वृद्धि पामवा लाग्युं. अने तेम करतां थकां सोल वर्षो वीती गयां, एवी रीतनां रौद्रध्यानमांज, आयुष्य पूर्ण थवाथी, मरण पामीने ते ब्रह्मदत्त चक्री हिंसाना अनुबंधनां फलरूप एवा सातमा नरकने पाम्यो. एवी रीतें ब्रह्मदत्त चक्रीनी कथा जाणवी.

वली पण हिंसकोने निंदता थका कहे छे.

कुणिर्वरं वरं पंगु, रशरीरी वरं पुमान् ॥
अपि संपूर्णसर्वांगो, न तु हिंसापरायणः ॥ २८ ॥

अर्थः— हाथ विनानो, पांगलो, तथा कुत्सित शरीरवालो माणस पण (हिंसा नहीं करी शकवाथी) सारो, पण हिंसामां तत्पर एवो, संपूर्ण अंगवालो माणस पण सारो नहीं.

हवे अहीं कोइ शंका करे के, रौद्रध्यानपूर्वक हिंसा करवी, ते तो नरकना हेतुरूप छे, पण शांतिमाटे, अथवा कुलक्रमथी चालती आवती, एवी मछीमार आदिक धंधाना निमित्तनी हिंसा रौद्रध्यान विनानी होवाथी दोषमाटे न थाय; ते वातने पण निषेध करता थका कहे छे.

हिंसा विघ्नाय जायेत, विघ्नशांत्यै कृताऽपि हि ॥
कुलाचारधियाप्येषा, कृता कुलविनाशिनी ॥ २९ ॥

अर्थः– विघ्ननी शांतिने माटे करेली हिंसा पण, यशोधरना जीव, सुरेंद्रदत्तनी पेठे, उलटी विघ्नने माटे थाय छे, तेम कुलाचारनी बुद्धिथी करेली हिंसा पण कुलनो नाश करनारी थाय छे.

हवे कुलक्रमथी आवती हिंसाने पण, छोडनारो माणस वखाणवालायक छे, एम कहेता थका कहे छे.

अपि वंशक्रमायातां, यस्तु हिंसां परित्यजेत् ॥
स श्रेष्ठः सुलस इव, कालसौकरिकात्मजः ॥ ३० ॥

अर्थः– कुलक्रमथी आवती हिंसाने पण, जे कोइ तजे, ते माणस कालसौकरिकना पुत्र सुलसनी पेठे उत्तम कहेवाय. ते सुलसनी कथा कहे छे.

मगध देशमां महा ऋद्धिवालुं राजगृह नामें नगर छे. त्यां वीरप्रभुनां चरणकमलो प्रत्ये भमरा समान श्रेणिक नामें राजा हतो. वसुदेवने जेम देवकी अने रोहिणी, तेम तेने नंदा अने चेलणा नामे बे स्त्रियो हती. तेमांथी नंदाने, जगतने आनंद करनारो अभयकुमार नामें पुत्र हतो; राजाए तेने महाबुद्धिमान् जाणीने सघलो राज्याधिकार सोंप्यो हतो. एक दहाडो ते नगरमां श्री वीरप्रभु आवीने समोसर्या. तेमने समोसर्या जाणीने श्रेणिक राजा अत्यंत हर्षथी त्यां आव्यो. पछी त्यां देवता आदिक स्थानकें बेठाबाद प्रभु धर्मदेशना देवा लाग्या. ते वखते कोइ गलत कोढीउं माणस आवी प्रभुनी पासे बेठो; तथा पोताना शरीरमांथी निकलती रसीथी ते प्रभुना चरणने लेपन करवा लाग्यो. ते जोइ श्रेणिकें क्रोधथी विचार्युं के, आ माणस प्रभुनी आम आशातना करे छे, माटे ज्यारे ते अहींथी उठे, त्यारे मारे एने मारी नाखवो. एटलामां प्रभुने छींक आववाथी, तेणें तेमने कह्युं के तमो मरो? अने श्रेणिकने छींक आववा-

थी तेणें कह्युं के, जीव? अजयकुंमारे छींक खावाथी तेने कह्युं के, तुं जीव अथवा मर? अने कालसौकरिकें छींक खावाथी कह्युं के, तुं जीव नहीं? तेम मर पण नही? हवे प्रजुने मरवानुं कहेवाथी राजायें गुस्से थइ, पोताना सुजटोने हुकम कर्योंके अहींथी उठे त्यारे एने पकडवो. पछी देशनाने अंते ते कुष्टी प्रजुने नमस्कार करी उठ्यो, के, तुरत श्रेणिकना सुजटोए तेने घेरी लीधो. एटलामां ते दिव्यरूपने धारण करीने आकाशमां उडी गयो. त्यारे राजायें प्रजुने तेविषे पुछवाथी, तेमणें कह्युं के, ए देव हतो. त्यारे राजाए फरीने प्रजुने पुछ्युं के, हे जगवन्! ए देव केम थयो? तथा कुष्टी पण केम थयो? त्यारे प्रजुए कह्युं के, वत्सदेशमां कोशांबी नामें नगरी छे, त्यां शतानीक नामें राजा हतो. ते नगरमां महादरिद्र अने मूर्ख, एवो सेडुक नामें ब्राह्मण हतो. एक दहाडो तेनी गर्जिणी स्त्रीए घी आदिक लाववानुं कह्युं. त्यारें तेणें कह्युं के, मारामां कंइ पण कुशलता नथी, के हुं ते लावी शकुं. त्यारे तेनी स्त्रीए कह्युं के, तुं राजानी सेवा कर? त्यांथी तने प्राप्ति थशे ते वात अंगीकार करीने पुष्प आदिकथी ते राजाने सेववा लाग्यो. एटलामां एक दहाडो चंपाना राजाए, कोशांबी नगरीने घेरो घाल्यो. ते वखते कोशांबीनो राजा लश्करसहित अंदर रह्यो हतो, तथा लडवावास्ते अवसर जोतो हतो पछी वर्षाऋतु आवी त्यारे चंपानो राजा पण त्यांथी पाछो पोतानी नगरी तरफ जवाने उपड्यो. ते वखते सेडुक ब्राह्मण पुष्पो माटे बगीचामां गयो हतो, त्यारे तेणे चंपाना राजाने लश्कररहित जोयो. तेज वखतें तेणें शतानीकने आवी कह्युं के, तारो शत्रु क्षीण लश्करवालो थइ जपडी जवानी तैयारी करे छे. माटे अत्यारे जो तुं तेनापर हल्लो करीश तो जीतीश. त्यारे राजाए पण लश्करसहित बहार नीकलीने तेनापर हल्लो कर्यो; ते वखते चंपानो राजा पण लश्कर दूर निकली जवाथी लड्याविना नाशवा लाग्यो, त्यारे तेना हाथी, घोडा, जंडार आदिक जे बाकी रह्युं हतुं, ते कोशांबीना राजाए ग्रहण कर्युं. पछी तेणें सेडुकप्रत्ये तुष्टमान थइ कह्युं के तारे जे जोइए ते माग्य त्यारे तेणें कह्युं के, हुं मारी स्त्रीने पुछीने मागीश. पछी तेणें ते सघली बीना स्त्रीने जणावी, त्यारें ते बुद्धिमती स्त्रीए विचार्युं के, आ राजापासेथी गाम आदिक मेलवशे, तो धनवान् थइ बीजी स्त्रीउ परणशे; एम विचारि

तेणीयें कह्युं के, त्यारे राजापासे एम मागवुं के, हमेशां एकेक घरे नगरमां जोजन मळे तथा दक्षिणामाटे एकेक सोना मोहोर मळे तेम करवुं. पछी राजापासे जइ सेडुकें पण तेवी रीतनी मागणी करी, त्यारे राजाए पण विचार्युं के, समुद्रमां पडीने पण घडो फक्त पोतामां माए एटलुंज पाणी लेइ शके छे, एम विचारि तेणें तेम करी आप्युं. पछी ते दरेक घेर जमवा लाग्यो, तथा एकेक सोनामोहोर मेळववा लाग्यो. पछी एम करतां थकां ते हमेशां सोनामोहोरनी लालचें, एकवार जमेलुं वमीने वारंवार एक दिवसमां जोजन करवा लाग्यो. एवी रीतें तेणें घणुं धन एकठुं कर्युं, तथा पुत्रपौत्रादिक परिवार पण तेनो घणो वध्यो; हवे तेनें अजीर्ण अन्नना वमनथी त्वचानो रोग थयो. पछी अनुक्रमें तेने कुष्टनो रोग थवाथी, तेना हाथ पग सडी गया. पछी एक दहाडो मंत्रीए राजाने कह्युं के, आने कुष्टनो रोग थयो छे, अने ते चेपी रोग छे, माटे तेनी साथे घणो संघट्ट करवो नहीं. माटे तेने बदले तेना पुत्रोने जमवा कहेवुं. पछी राजाना हुकमथी मंत्रिए ते वात सेडुकने कहेवाथी, पोताना पुत्रोने मुकी पोते घेर रहेवा लाग्यो. पछी पुत्रोए पण, तेने एक जुदी कोटडीमां राख्यो, तथा तेउ तेनी आज्ञा पण मानवा न लाग्या, अने छेटेथी लाकडांना वासणमां तेने जोजन देवा लाग्या. छोकराउनी वहुउ पण, नाक आडा डुचा दइ, तेने जोजन दूरथी फेंकवा लागीयो. त्यारें सेडुकें विचार्युं के, आ लोको माराथीज पैसादार थया अने हवे मनेज तरछोडे छे. माटे हवे जेम हुं डुःखी छुं, तेवा तेमने पण डुःखी करुं एम विचारि तेणें पुत्रोने कह्युं के, हे पुत्रो! हुं हवे जीवितथी कंटालेलो छुं, माटे आपणा कुलनो आचार छे, के, मरवानी इछा करनार माणसें कुटुंबने मंत्रीने एक पशु आपवो. माटे तमो एक पशु लावो? त्यारे मंदबुद्धिवाळा तेउ पण एक पशु लाव्या. पछी तेणें पोताना शरीरपरथी मेल उखेडीने, ते पशुने तेना जोजनमां खवराव्यो, के जेथी ते पण कुष्टी थयो. पछी तेणें ते पशुने मारीने पोताना छोकराउने आप्यो, त्यारे तेउये पण तेनो आशय नहीं जाणीने तेनुं जक्षण कर्युं. पछी ते सेडुक पुत्रोनी रजा लइ तीर्थें जवा निकळ्यो. पछी मार्गमां तृषातुर थवाथी पाणीनो शोध करतां तेने एक झाडीमां पाणीनो जरेलो खाडो मळ्यो. तेमां विविध प्रकारनां वृक्षोनां पान तथा फळो पडेलां होवाथी,

कडवुं थएलुं ते पाणी तेणें क्वाथनी पेठे पीधुं. ते तृषातुर होवाथी जेम वारंवार पाणी पीतो गयो, तेम तेम तेना रोगना जंतुर्ज खरवा लाग्या. एम घणा दहाडा ते पाणी पिधाथी ते तमाम नीरोगी थयो. पठी ते पाछो घेर जवा निकल्यो. तथा त्यां लोकोयें पण तेने आश्चर्य सहित जोयो अने तेर्जयें तेने पुछ्युं के, तारो रोग केम गयो? त्यारे तेणें कह्युं के, देवना आराधनथी गयो. पठी घेर जइ पुत्रोने कुष्टी जोइने तेणें कह्युं के, मारी अवज्ञानुं तमोने ठीक फल मल्युं छे. पठी त्यां लोको तेने तरछोडता होवाथी हे राजा, तारा नगरमां आवी, ते द्वारपालनी चाकरी करवा लाग्यो. पठी एटलामां अमो अहीं आव्या त्यारे ते द्वारपाल तेने (सेडुकने) पोतानुं कार्य सोंपी धर्मदेशना सांजलवा आव्यो. हवे ते सेडुकने त्यां क्षुधा लागवाथी दरवाजापरनी देवीने धरेलुं बलिदान ते खाइ गयो. पठी तेने तृषा लागवाथी ते व्याकुल थवा लाग्यो. पठी ते जलचर जीवने धन्य मानतो थको, द्वारपालनी बीकथी पाणी पीवा गयो नहीं पठी पाणी पाणी करतो थको मृत्यु पामीने ते आज नगरना द्वारपासे रहेली वावमां देडको थयो. पठी एटलामां अमो पाछा अहीं आव्या, ते वखते लोको अमोने वांदवामाटे आववा लाग्या. हवे पाणी जरनारीर्जनां मुखथी अमारा आववानो वृत्तांत सांजलीने, तेणें विचार्युं के में आगल कंइक आवुं सांजल्युं छे. एम ऊहापोह करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. तेथी विचार्युं के, मने द्वारपाल मुकीने जे जगवानने वांदवा गयो हतो, ते जगवान् अहीं आव्या छे. माटे जेम सघला लोको जाय छे, तेम हुं पण तेमने जोवा जउं कारण के गंगा सर्वेने सरखी छे, कंइ कोइना बापनी नथी. पठी ते कुदीने अमारी पासे आववा लाग्यो, पण रस्तामां घोडानी खरी नीचे आवी जवाथी मृत्यु पाम्यो. पठी ते शुजध्यानथी आ दर्डुरांक देवता थयो छे. हवे इंद्रे सजामां कह्युं के सघला जैन धर्मीर्ज श्रेणिकथी नीचे छे, तेपर श्रद्धा नही करतां तारी परीक्षामाटे ते अहीं आव्यो हतो. अमारा चरणोनी गोशीर्ष चंदनथी पूजा करी छे; पण तमोने तेणें वैक्रीय पणांथी विपरीत देखाड्युं छे. त्यारे श्रेणिकें फरीने पुछ्युं के, हे जगवन्! आपें छींक खाधाथी ते अमंगलिक बोल्यो, तथा बीजार्जनी छीकथी पण मंगलिक अने अमंगलिक बोल्यो, तेनुं कारण शुं? त्यारे प्रजुयें कह्युं के,

मने तेणे मरवानुं कहेवाथी तुरत मोक्षें जवा कह्युं. तने अहीं सुख होवाथी, तथा मृत्युबाद नरक मलवाथी, जीववानुं कह्युं. वली अजयकुमार जीवतां थकां धर्म करे ठे, अने मृत्युबाद अनुत्तर विमानमां जशे, तेथी तेने तेणें जीववानुं अथवा मरवानुं कह्युं. अने कालकसौरिक जीवतां थकां पाप करे ठे, अने मृत्युबाद ते सातमे नरके जशे, माटे तेने तेणें जीववा अने मरवानो बन्नेनो निषेध कर्यो. त्यारे वली श्रेणीकें प्रजुने नमीने कह्युं के, आप मारा स्वामी ठतां मारी नरकनी गति शी रीतें? त्यारे जगवानें कह्युं के, पेहेलां तें नरकनुं आयुष्य बांध्युं ठे, माटे तारे त्यां जवुं पडशे. कारण के जीवने शुजाशुज कर्मो तो जोगववांज पडेठे. वली हे राजा! तुं खेद नहीं कर? तुं पद्मनाज नामें पेहेलो तीर्थंकर थइश. त्यारे श्रेणिकें कह्युं के, नरकथकी मारा रक्षणनो कोइ पण उपाय ठे? त्यारे जगवानें कह्युं के, जो तुं जक्तिपूर्वक कपिला ब्राह्मणीने हाथे साधुउने दान अपावे, अने आ कालकसौरिकने हिंसा करतां अटकावे तो तारुं नरकथी रक्षण थाय; बीजो कोइ उपाय नथी. ते सांजल्याबाद श्रेणिकराजा प्रजुने नमस्कार करी, पोताने घेर गयो, एटलामां ते दर्दुरांक देवें राजानी परीक्षामाटे एक साधुने माठलां मारतो देखाड्यो. ते जोइ राजाए शासननी मलीनतानी बिकथी, ते साधुने मिष्ट वचनोथी तेम करतो अटकाव्यो. वली तेणें एक साधवीने गर्जिणी देखाडी, त्यारे राजाए तेणीने पण पोताना घरमां ढुपी राखी. पठी देवें प्रत्यक्ष थइ श्रेणिक राजाने घणीज शाबाशी आपी, अने कह्युं के, इंद्रें सजामां जेवां वखाण कर्यां हतां, तेवाज तमो ठो. एम कही ते देवें तेने एक हार तथा बे गोला आप्या. आ त्रुटेला हारने जे कोइ सांधशे ते मृत्यु पामशे, एम कही ते देव चाल्यो गयो. पठी राजाए ते हार चेलणाने, तथा ते बन्ने गोला नंदाने आप्या. त्यारे नंदाए ईर्ष्या लावीने ते बन्ने गोलाने स्तंजमां पठाड्या, त्यारे, एकमांथी बे उत्तम कुंडल तथा बीजामांथी बे सुंदर वस्त्रो निकल्यां. पठी नंदाए तेउने हर्षथी लीधां. पठी राजाए कपिलाने कह्युं के, तुं श्रद्धासहित जो साधुने दान आपे, तो तने हुं घणुं धन आपुं. त्यारे कपिलाए कह्युं के, तमो मने आखी सोनानी मढावो तो पण हुं ते काम करुं तेम नथी. पठी राजाए कालसौरिकने पण

धनथी ललचावीने कसाइखानुं तजवानुं कहेवाथी, तेणें पण ना पाडी. त्यारे राजाए तेने एक अंधारा कुवामां नखाव्यो; एवुं धारीने के, त्यां ते शी रीतें कसाइपणुं करी शकशे ? पछी राजाए जगवानने जइ कह्युं के, में कालसौकरिकने तो कसाइखानुं तजाव्युं छे. त्यारे जगवानें कह्युं के ते अंध कुवामां पण हमेशां माटीना पांचसे पाडाउ करीने मारे छे. त्यारे श्रेणिकें त्यां जइ ते प्रमाणे जोवाथी, विचार्युं के, मारुं ते कर्म छुटवानुं नहीं, कारण के, प्रजुनी वाणी अन्यथा थाय नहीं. हवे एवी रीतें हिंसा करतां कालसौकरिकनो पापनो राशि वधतो गयो. पछी तेने बहु रोगो उत्पन्न थया; तेनी पीडाथी, अरे!! बापलीया! अरे!! मा!! एम कही पोकार करवा लाग्यो. तथा तेने स्त्री, शय्या आदिक झेर तुल्य लागवा मांड्यां. पछी ते सघलुं स्वरूप तेना पुत्र सुलसें, अजयकुमारने कह्युं त्यारे अजयकुमारें कह्युं के, तारा पिताने तेना डुष्ट कार्यनुं फल अहींज मव्युं छे. तो पण हवे तुं तेनी प्रीतिमाटे इंद्रियोथी उलटां जोजन आदिक तेने आप? पछी सुलस पण, तेने कडवां अने तीखां जोजनो आपवा लाग्यो; तथा खूब गरम पाणी पावा लाग्यो. तथा केटलीक विष्टानुं तेने अंगे विलेपन करवा लाग्यो, अने अणीदार कांटावाली शय्यापर तेने सुवाड्यो. वली तेने राक्षस, वेताल आदिकनां जयंकर रूपो देखाडवा लाग्यो. तेथी ते खुशी थयो. पछी त्यांथी ते मृत्यु पामी सातमे नरकें गयो. पछी तेनुं मृतकार्य कर्याबाद, सुलसनां सगांउए, तेने तेना पितानुं स्थानक संजालवा कह्युं, त्यारे सुलसें कह्युं के, हुं ते कार्य कदी करवानो नथी, कारण के, जेवा मने मारा प्राण वहाला छे, तेवाज बीजाउने पण होय; माटे जीववधथी हुं आजीविका चलावी शकीश नहीं. त्यारे तेउ कहेवा लाग्या के, तेथी थता पापोने आपणे सघला वेहेंची लइशुं वली तुं एकज पाडो मारजे, अमो बीजा पाडा मारशुं, तेथी तने अल्प पाप थशे. पछी सुलसें पोताना पिताना कुहाडाने उपाडीने पोतानी जंघामां मार्यो, तथा तेथी मूर्छा खाइ नीचे पड्यो; पछी संज्ञा आव्याबाद, ते रुदन करवा लाग्यो के, अरे हुं आ प्रहारथी बहु पीडित थयो छुं पछी तेणें सगांउने कह्युं के, तमो मारुं डुःख हवे वेहेची लीउ? त्यारे तेउ खेदसहित कहेवा लाग्या के, कोइनी पीडा शुं कोइ लेइ शके छे? त्यारे सु-

खसें कह्युं के, ज्यारे तमो मारी आटली पीडा पण नथी लेइ शकता त्या-रे नरकनी पीडा शीरीतें लेइ शकशो ? माटे कुटुंब वास्ते पाप करीने हुतो एकलोज नरकनी वेदना सहन करीश, अने बांधवो तो अहींज र-हेशे. माटे एवी रीतनो, नीच एवो पितानो धंधो पण हुं करीश नहीं, कारण के, जो पिता अंध होय तो शुं पुत्रें पण अंध थवुं ? एटलामां त्यां अजयकुमार आव्यो, तथा तेने कहेवा लाग्यो के, आ पापथी तुं दूर था-य छे, तेथी अमो बहु खुशी थइयें छीयें. एवी रीतें तेनी प्रशंसा करीने ते पोताने स्थानकें गयो. पछी सुलस पण सगाउने अवगणीने, बारव्रत-धारी श्रावक थयो.

एवी रीतें कुलपरंपरानी हिंसाने पण तजीने जे माणस सुलसनी पे-ठे गुणवान् थाय छे, तेने स्वर्गसंपदा दूर थती नथी. एवी रीतें सुलसनी कथा जाणवी.

हवे जो हिंसाने न तजे, तो तेनुं दान आदिक पण निष्फल छे. एम देखाडता थका कहे छे.

दमोदेवगुरूपास्ति, र्दानमध्ययनं तपः ॥
सर्वमप्येतदफलं हिंसां चेन्न परित्यजेत् ॥ ३१ ॥

अर्थः– इंद्रियोनुं जीतवुं, देवगुरुनी सेवा, सुपात्र प्रत्ये दान, शास्त्रोनो अभ्यास, तथा चांद्रायणादिक तप, पण, जो हिंसाने तजे नहीं, तो ते सर्व निष्फल जाणवुं.

हवे हिंसावालां शास्त्रोना उपदेशकोने आक्षेप करे छे.

विश्वस्तोमुग्धधीर्लोके, पात्यते नरकावनौ ॥
अहो नृशंसैर्लोभांधे, र्हिंसाशास्त्रोपदेशकैः ॥ ३२ ॥

अर्थः– अरे ! ! ! पापी अने लोभांध, एवा हिंसामय शास्त्रना उप-देश देनारा जे मनु आदिक, तेउयें विश्वासी, अने मुग्धबुद्धिवाला लोको नरकमां लेइ जवाय छे.

तेउना शास्त्रोमांज हिंसा कहेली छे ते देखाडेछे.

यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः, स्वयमेव स्वयंभुवा ॥
यज्ञोऽस्य भूत्यै सर्वस्य, तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ ३३ ॥

अर्थः—ब्रह्माए पोतेज यज्ञमाटे पशुउं सरजेला छे, अने ते यज्ञ जगतनां कल्याणमाटे छे, तेथी यज्ञमां वध करवो, अने ते हिंसाथी पाप थतुं नथी, एम तेउ कहे छे.

हवे तेउ माने छे के, " यज्ञमां हणाता पशुउंनो तो अमो उपकार करीए छीए, कारण के, तेथी तेउंने नरक आदिक मलतां नथी " एम देखाडता थका कहे छे.

औषध्यः पशवो वृक्षा स्तिर्यंचः पक्षिणस्तथा ॥
यज्ञार्थं निधनं प्राप्ताः प्राप्नुवंत्युच्छ्रितं पुनः ॥ ३४ ॥

अर्थः— यज्ञने माटे दर्भादिक औषधिउं; बकरा आदिक पशुउं, यूप आदिक वृक्षो; गाय, घोडा आदिक तिर्यंचो, तथा कपिंजल आदिक पक्षिउं, विगेरे जे नाश पामे छे, तेउ देव, गांधर्व आदिक उंच गतिमां जाय छे, अने लांबुं आयुष्य जोगवे छे.

हवे तेउंना शास्त्रोमां जे कंइ हिंसाउं कहेली छे, ते देखाडे छे.

मधुपर्के च यज्ञे च पितृदैवतकर्मणि ॥
अत्रैव पशवो हिंस्या नान्यत्रेत्यब्रवीन्मनुः ॥ ३५ ॥

अर्थः— मनुए कह्युं छे के, मधुपर्कमां गायने मारवी, यज्ञमां पशुने मारवा, तथा माता अने पितृ श्राद्ध आदिकमां पण पशुउंने मारवां, पण बीजी जगोए नहीं.

एष्वर्थेषु पशून् हिंसन् वेदतत्वार्थविद्द्विजः ॥
आत्मानं च पशूंश्चैव गमयत्युत्तमां गतिम् ॥ ३६ ॥

अर्थः— वेदोनां तत्वने जाणनारो ब्राह्मण, उपर कहेलां कार्योमां पशुनी हिंसा करतो थको, पोताने अने पशुउंने उत्तम गतिए पहोचाडे छे.

हवे ते हिंसक शास्त्रोना उपदेशकोने पाछा आक्षेप करे छे.

ये चक्रुः क्रूरकर्माणः शास्त्रं हिंसोपदेशकं ॥
क्व ते यास्यंति नरके नास्तिकेभ्योपि नास्तिकाः ॥ ३७ ॥

अर्थः— जे क्रूर कर्मो करनारा मनु आदिकें, हिंसाना उपदेशवालां स्मृतिआदिकशास्त्रो रच्यां छे ते अत्यंत नास्तिको कया नरकमां जशे? ! !

हवे ते संबंधि संवादनो श्लोक कहे छे.

वरं वराकश्चार्वाको योसौ प्रकटनास्तिकः ॥
वेदोक्तितापसच्छद्म छन्नं रक्षोन जैमिनिः ॥ ३८ ॥

अर्थः— बीचारो चार्वाक, जे प्रगटरीतें नास्तिक छे, ते हजु सारो छे, पण वेदोनां वचननो मुखपाठ करी सघला प्राणीउंने ठगनार कपटी राक्षस तुल्य, जैमिनि ऋषि तो निंदाने पात्र छे. कारण के, ज्यारे ते यज्ञोने माटे मारेला पशुउंने, स्वर्गमां पहोंचाडे छे, त्यारे पोतानां मा बाप आदिकनुं पण हित इछिने, तेउं तेमने यज्ञमां शामाटे होमता नथी.

हवे हिंसा प्रकरणने उपसंहरता थका कहे छे.

देवोपहारव्याजेन यज्ञव्याजेन येऽथवा ॥
घ्नन्ति जन्तून् गतघृणा घोरां ते यांति दुर्गतिं ॥ ३९ ॥

अर्थः—देवो एटले, भैरव, चंडिका आदिक; तेउंप्रत्ये माघाष्टमी चैत्राष्टमी, आदिक दिवसोए अपाता बलिदानना मिशथी, तथा यज्ञना मिशथी, जेउं निर्दय थइने, प्राणीउंने हणे छे, तेउं भयंकर दुर्गतिमां जाय छे.

शमशीलदयामूलं हित्वा धर्मं जगद्धितं ॥
अहो हिंसापि धर्माय जगदे मंदबुद्धिभिः ॥ ४० ॥

अर्थः—कषाय, इंद्रियोनो जय, शम, शील, आदिक समता, तथा अनुकंपा(दया) छे मूल जेनुं, एवा जगतने हितकारी धर्मने तजीने, अरेरे! मंदबुद्धिउंए हिंसाने धर्मवास्ते कहेली छे.

एवी रीतें कुलक्रमनी तथा यज्ञनी हिंसानो प्रतिषेध करीने हवे, पितृनिमित्तनी हिंसानो निषेध करवामाटे, अन्यदर्शनीउंना शास्त्रोना छ श्लोको कहेछे.

हविर्यच्चिररात्राय यच्चानंत्याय कल्पते ॥
पितृभ्योविधिवद्दत्तं तत्प्रवक्ष्याम्यशेषतः ॥ ४१ ॥

अर्थः— पितृउं प्रत्ये जे श्राद्ध आदिकमां देवाय छे, तेमांनु एक तो लांबा कालनी तृप्ति माटे, अने बीजुं अनंतकालनी तृप्तिमाटे देवाय छे, ते बन्नेनुं स्वरूप कहे छे.

तिलैर्व्रीहियवैर्माषै रद्भि मूलफलेन वा ॥
दत्तेन मासं प्रीयंते विधिवत्पितरोन्नृणां ॥ ४२ ॥

अर्थः– विधिपूर्वक दीधेलां तल, डांगर, जव, अडद पाणी, कंदमूल, तथा फलोथी पितृओ एक मास सुधि तृप्त थाय छे.

द्वौ मासौ मत्स्यमांसेन त्रीन्मासान् हारिणेन तु ॥
औरभ्रेणाथ चतुरः शाकुनेनेह पंच तु ॥ ४३ ॥

अर्थः– मत्स्यना मांसथी बे माससुधि, हरिणना मांसथी त्रण मासो सुधी, घेटाना मांसथी चारमाससुधि, तथा पक्षिना मांसथी पांच माससुधी पितृओ तृप्त थाय छे.

षण्मासांछागमांसेन पार्षतेनेह सप्त वै ॥
अष्टावेणस्य मांसेन रौरवेण नवैव तु ॥ ४४ ॥

अर्थः–बकराना मांसथी छ माससुधि पृषत जातिना हरिणना मांसथी सात माससुधि,एण जातिना मांसथी नव माससुधिपितृओने तृप्ति थायछे.

दशमासांस्तु तृप्यंति वाराहमहिषामिषैः ॥
शशकूर्मयोर्मांसेन मासानेकादशैव तु ॥ ४५ ॥

डुक्कर अने पाडाना मांसथी दश माससुधि, तथा ससला अने काचबाना मांसथी, अग्यार माससुधि पितृओ तृप्ति पामे छे.

संवत्सरं तु गव्येन पयसा पायसेन तु ॥
वाध्रीणसस्य मांसेन तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ॥ ४६ ॥

अर्थः–गायनुं मांस, दूध, तथा दही आदिकथी, एक वर्षसुधि, तथा घरडा बकराना मांसथी बार वर्षोसुधि पितृओ तृप्त थाय छे.

हवे एवी रीतनी हिंसाने दूषण लगाडता थका कहे छे.

इति स्मृत्यनुसारेण पितृणां तर्पणाय या ॥
मूढै विंधीयते हिंसा सापि दुर्गतिहेतवे ॥ ४७ ॥

अर्थः–एवी रीतें मनुस्मृति आदिकने अनुसारें, पितृओने तृप्त करवा माटे, मूढ लोको जे हिंसा करे छे, ते हिंसा तेओने दुर्गतिमाटे थाय छे. कारणके, जो मृत्यु पामेला जीवोने मांस आदिकथी तृप्ति थाय, तो बुझा-

इ गएला दीवाना वासणमां तेल नाख्याथी स्वयमेव दीवो थवो जोइयें! वली ते हिंसा केवल डुर्गतिना हेतुरूप नथी, अहीं पण तेथी प्राणीउं साथे थता वैरनो जय रहे ले.

हवे अहिंसक जीवने बीलकुल जय नथी ते कहे ले.

योन्नूतेष्वन्नयं दद्याद्, न्नूतेभ्यस्तस्य नो न्नयं ॥
यादृग्वितीर्यते दानं, तादृगासाद्यते फलं ॥ ४९ ॥

अर्थः– जे माणस प्राणीउंने अन्नयदान आपे ले, तेने तेउं तरफथी जय रहेतो नथी, कारण के, जेवुं दान दइयें, तेवुं फल मले ले.

हवे हिंसक देवोनी पूजाने पण निंदता थका कहे ले.

कोदंडदंडचक्रासि, शूलशक्तिधराः सुराः ॥
हिंसका अपि हा कष्टं, पूज्यंते देवताधिया ॥ ५० ॥

अर्थः– धनुष्, दंड, चक्र, तलवार, त्रिशूल, जालां आदिकने धरनारा हरिहरादिक हिंसक देवो पण, अरेरे!! (मूढ माणसोथी) देवबुद्धिए करीने पूजाय ले.!!!

हवे बे श्लोकोथी अहिंसा व्रतनी स्तुति करे ले.

मातेव सर्वन्नूताना, मर्हिसा हितकारिणी ॥
अहिंसैव हि संसार, मरावमृतसारणिः ॥ ५१ ॥
अहिंसा दुःखदावाग्नि, प्रावृषेण्यघनावली ॥
न्नवभ्रमिरुगार्ताना, मर्हिसा परमौषधीः ॥ ५२ ॥

अर्थः– अहिंसा व्रत, मातानी पेठे सर्व प्राणीउंने हितकारी ले, संसाररूपी मारवाड देशमां अमृतनी नदी सरखुं ले, डुःखरूपी दावानलप्रत्ये वर्षाकालना वरसादसरखुं ले, तथा न्नवज्रमणरूपी रोगथी पीडाता माणसोने परम औषधिसरखुं ले.

हवे अहिंसाव्रतनुं फल कहे ले.

दीर्घमायुः परं रूप, मारोग्यंश्लाघनीयता ॥
अहिंसायाः फलं सर्वं, किमन्यत्कामदेवसा ॥ ५३ ॥

अर्थः– लांबु आयुष्य, उत्कृष्टुं रूप, आरोग्यपणुं, तथा कीर्त्ति, ए स-

घणुं अहिंसानुं (दयानुं) फल छे; वधारे शुं कहेवुं, दया तो इछित व-स्तु देनारी छे.

एवी रीतें अहिंसाव्रतनुं स्वरूप कहीने, हवे सत्यव्रतनो अधिकार कहे छे, ते व्रत जुगपणाथी दूर रह्याविना थइ शकतुं; वली ते जूठुं बोलवानुं फल देखाड्या विना, तेमांथी विरति कराववी मुश्केल छे, माटे पेहेलां तेनुं फल देखाडीने, तेनी विरतिने देखाडे छे.

मन्मनत्वं काहलत्वं, मूकत्वं मुखरोगिता ॥
वीक्ष्याऽसत्यफलं कन्या, लीकाद्यसत्यमुत्सृजेत् ॥ ५४ ॥

अर्थः— गुंगणापणाने काहलपणाने (प्रगटरीतें शब्दो न बोलाय ते.) मुंगापणाने तथा मुखना रोगने पण, असत्यनां फलतरिके जाणीने, क-न्यालीकादिक असत्यनो त्याग करवो.

हवे ते कन्यालीकादि असत्यनुं वर्णन करे छे.

कन्यागोभूम्यलीकानि, न्यासापहरणं तथा ॥
कूटसाक्ष्यं च पंचेति, स्थूलासत्यान्यकीर्तयन् ॥ ५५ ॥

अर्थः— कन्यासंबंधि जूठुं बोलवुं ते, उपलक्षणथी तमाम मनुष्यजा-ति संबंधि जूठुं बोलवुं ते; वली गायसंबंधि जूठुं बोलवुं ते, अने उपल-क्षणथी सघलां चोपगां प्राणीसंबंधि जूठुं बोलवुं ते; वली भूमिसंबंधि, अने उपलक्षणथीवृक्ष आदि संबंधी जूठुं बोलवुं ते; तथा कोइनी था-पणने उलववी ते; अने जूठी साक्षी करवी. ए पांचे स्थूल असत्यो जि-नेश्वर प्रभुए कहेलां छे.

हवे ते पांचे प्रकारना जूठमां, विशेषण द्वारथी हेतु मुकीने, तेनो प्रतिषेध कहे छे.

सर्वलोकविरुद्धं य, द्यद्विश्वसितघातकं ॥
यद्विपक्षश्च पुण्यस्य; न वदेत्तदसूनृतं ॥ ५६ ॥

अर्थः— सर्व लोकमां विरुद्ध एवुं, कन्या, गाय, तथा भूमिसंबंधि जू-ठापणुं, तथा थापण उलववारूप विश्वासघात, तथा पुण्यना विपक्षरूप जूठी साक्षी, एटला संबंधि जूठुं बोलवुं नहीं.

हवे असत्यना फलने देखाडता थका, तेनो परिहार देखाडे छे,

असत्यतोलघीयस्त्व, मसत्याद्वचनीयता ॥
अधोगतिरसत्याच्च, तदसत्यं परित्यजेत् ॥ ५७ ॥

अर्थः– आ लोकमां असत्यथी लघुता, अने वचनीयपणुं थाय छे, तथा परलोकमां नीच गति मले छे; माटे असत्यनो त्याग करवो.

हवे जे प्रमादथी पण असत्य बोले, तेने माटे कहे छे.

असत्यवचनं प्राज्ञः प्रमादेनापि नो वदेत् ॥
श्रेयांसि येन भज्यंते, वात्ययेव महाद्रुमाः ॥ ५८ ॥

अर्थः– डाह्या माणसें प्रमादथी पण असत्य बोलवुं नहिं; कारण के, तेथी तो, प्रचंड वायुथी जेम वृक्षो, तेम श्रेयो (कल्याणो) नाश पामे छे.

वली पण असत्यथी थता आ लोकसंबंधि दोषो देखाय छे.

असत्यवचनाद्वैर; विषादाप्रत्ययादयः ॥
प्रादुःषंति न के दोषाः कुपथ्याद्व्याधयो यथा ॥ ५९ ॥

अर्थः–कुपथ्यथी जेम रोगो, तेम असत्य वचनथी, वैर, पश्चात्ताप, अप्रतीति, तथा आदि शब्दथी राजा आदिकनुं अवमान, इत्यादि दोषो, उत्पन्न थाय छे.

हवे मृषावादनुं परलोकसंबंधि फल कहे छे.

निगोदेष्वथतिर्यक्षु, तथा नरकवासिषु ॥
उत्पद्यंते मृषावाद, प्रसादेन शरीरिणः ॥ ६० ॥

अर्थः– मृषावाद बोलवाथी प्राणीओ, अनंतकायमां, तिर्यंचमां, तथा नरकमां उत्पन्न थाय छे.

हवे ते मृषावादना त्यागमां, उलटुं सुलटुं, कालिकाचार्य, तथा वसुराजनुं, दृष्टांत कहे छे.

ब्रूयाद् भियोपरोधाद्वा, नासत्यं कालिकार्यवत् ॥
यस्तु ब्रूते सनरकं, प्रयाति वसुराजवत् ॥ ६१ ॥

अर्थः– मरण आदिकनी बीकथी अथवा उपरोधथी कोइनी दाक्षिणताथी पण कालिकाचार्यनी पेठे जूठुं बोलवुं नहीं, अने जे बोले,

ते वसुराजानी पेठे नरकमां जाय ढे. कालिकाचार्यनी कथा कहे ढे.
आ पृथ्वीमां एक रमणीपुरी नामें शेहेर ढे, त्यां यथार्थ नामवालो जितशत्रु नामें राजा हतो. त्यां सुद्रा नामें एक ब्राह्मणी हती, तथा तेणीने दत्त नामें पुत्र हतो. ते जुगारी तथा दारुडीउं हतो; अने पोतानी आजीविकामाटे ते राजाने सेववा लाग्यो. पढी राजायें तेने पोतानो प्रधान कर्यो. तेणें बीजा सामंतो आदिकने फोडीने राजाने कहाडी मेल्यो; अने पोते राज्यपर बेठो, तथा धर्मबुद्धिथी हिंसावाला यज्ञो करवा लाग्यो. एक दहाडो, तेनो कालिकाचार्य नामें मामो साधु थयाबाद विहार करतो त्यां आव्यो. ते मिथ्यात्वी दत्तने जवानी इछा नहीं ढतां माताना उपरोधथी ते तेमनी पासे गयो, तथा उन्नट थइने पुढवा लाग्यो के, हे आचार्य, जो तमो जाणता हो, तो यज्ञनुं फल कहो? त्यारे आचार्यें कह्युं के, तुं धर्मनी पुढा करे ढे, माटे सांजल? जे पोताने अप्रिय लागे ते परने पण करवुं नही. त्यारे दत्तें कह्युं के, हुं तो यज्ञनुं फल पुढुं ढुं, त्यारे आचार्यें कह्युं के, हिंसाआदिक कल्याणकारी थतां नथी, पण उलटां पापोमाटे थाय ढे. वली ते दुर्बुद्धियें आक्षेप सहित पुढवाथी आचार्यें कह्युं के, यज्ञोनुं फल तो नरक ढे. त्यारे दत्तें कह्युं के, तेनी प्रतीति शुं? त्यारे आचार्यें कह्युं के, तुं आजथी सातमे दहाडो “श्वकुंजीमां” पकावाइश. त्यारे क्रोधायमान थइने दत्तें कह्युं के, तेनी पण खातरी शुं? त्यारे आचार्यें कह्युं के. ते कुंजिपाकमां पड्या पेहेलां तारा मुखमां विष्ठा पडशे. त्यारे दत्तें कह्युं के, तमारुं मृत्यु कोनाथी अने क्यारे थशे? त्यारे आचार्यें कह्युं के, आवती काले स्वयमेव मृत्यु पामी हुं देवलोक जइश. पढी दत्तें आचार्यने केद कराव्या. हवे दत्तथी खेद पामेला सामंतोयें पेहेलांना राजाने बोलाव्यो. तेथी दत्त पण जय पामीने पोताना घरमां ढुपाइ रह्यो. हवे कर्मयोगें तेपण दिवस गणवामां जुली जवाथी सातमे दिवसे बहार निकल्यो, अने ते राजमार्गेने चोकीदारो पासे रक्षण कराव्यो. एटलामां रस्तामां एक मालीयें विष्ठा करीने तेपर फुल ढांक्यां. आजे हुं ते लुच्चा मुनिने मारीश, एम विचारि घोडेस्वारोथी विटायो थको ते चालवा लाग्यो. एटलामां एक घोडानी खरीथी ते विष्ठा उडीने दत्तना मुखमां पडी, कारण के मुनिउंनी वाणी अन्यथा थाय नहीं. हवे

दत्त पण खेद पामीने पोतानां घर तरफ पाछो फर्यो. एटलामां ते सामंतोयें तेने पकडीने बांध्यो तथा पेहेलाना राजाने गादीपर बेसाड्यो. ते राजायें वैर वालवानी बुद्धिथी तेने कुंजिपाकमां नाख्यो. तथा त्यां ते मृत्यु पाम्यो.

एवी रीतें कालिकाचार्यनी पेठे सत्यव्रतने बुद्धिमानें तजवुं नहीं. एवी रीतें कालिकाचार्यनी कथा कही.

हवे वसुराजानी कथा कहे छे.

चेदी नामना देशमां शुक्तिमती नामें नगरी छे; ते नगरीमां अजि- चंद्र नामें राजा हतो. तेने सत्य बोलनारो तथा महाबुद्धिमान् युधिष्ठिर जेवो वसु नामें पुत्र हतो. क्षीरकदंब नामना गुरुनी पासे, पर्वतक, नारद, तथा आ वसु नामें राजकुमार ए त्रणे शिष्यो जणता हता. तेउ एक दहाडो रात्रियें मेहेलनी उपर सुता हता, एटलामां आकाशमां जता बे चारण मुनिउं परस्पर कहेवा लाग्या के, आ शिष्योमांथी एक स्वर्गें जशे, अने बीजा बे नरकें जशे; आ वचन क्षीरकदंबें सांजल्युं. तेथी ते खेद पामवा लाग्यो के, अरे !! हुं तेमनो अध्यापक छतां तेउ नरकें जशे ? पछी तेउंनी नरक स्वर्गनी परीक्षामाटे, तेणें ते त्रणेने एक वखतें पोतानी पासे बोलाव्या; तथा तेउंने पीठाना त्रण कुकडा आपीने कह्युं के, ज्यां कोइ न देखे, त्यां आ कुकडाने तमारे मारवा. हवे तेउंमांथी नारदें नगरनी बहार ते कुकडाने लइ जइ विचार्युं के, आनें गुरुयें कोइ न देखे तेम मारवानुं कह्युं छे; माटे अहीं हुं अने ते मने, वली खेचरो, लोकपालो तथा ज्ञानीउं पण देखी रह्या छे; माटे गुरुनो अजिप्राय आने न मारवानो छे. वली गुरु हमेशां दयालु छे, माटे अमारी बुद्धिनी परी- क्षामाटे तेमणें आम कर्युं छे, एम विचारि तेने मार्याविनाज गुरुपासे ते आव्यो, अने न मारवानुं कारण पण तेमने तेणें जणाव्युं. त्यारे गुरुयें जाण्युं के, आ स्वर्गगामी छे, एम विचारि गुरुयें तेने स्नेहथी आलिंगन कर्युं. पछी वसु अने पर्वतें पण आवीने कह्युं के, कोइ न देखे तेम अ- मोयें आमने मार्या छे. त्यारे गुरुयें गुस्से थइ कह्युं के, अरे पापियो ! पे- हेलां तो तमोयें तेने जोया, वली खेचरादिकें पण जोया माटे तमोये तेने केवी रीतें हण्या ? पछी तेणें विचार्युं के, आ बन्नेने जणाववुं फोकट छे. वली मारो प्रिय पुत्र, तथा पुत्रथी अधिक एवो आ वसुकुमार पण ज्यारे

नरकमां जशे, त्यारे मारे हवे गृहस्थावासथी सर्युं. एम विचारि तेणें दीक्षा लीधी, अने तेने स्थानकें पर्वत आव्यो. हवे नारद पण जणी गणीने हुशीयार थइ पोताने स्थानकें गयो. हवे अभिचंद्र राजायें पण समय आवते छते दीक्षा लीधी, अने तेथी वसुकुमार राजा थयो. तथा ते सत्य वादी होवाथी जगतमां प्रसिद्ध थयो. एक दहाडो एक शिकारीयें, हरणने मारवामाटे फेंकेलुं पोतानुं बाण अटकेलुं जोयुं तेनुं कारण तपासवा माटे त्यां जतां तेणें एक स्फटिकनी शिला जोइ; ते जोइ तेणें विचार्युं के, में भ्रमथी आमां प्रतिबिंब पडेला हरिणने जोयुं वली आ शिला वसुराजाने लायक छे, पछी तेणें राजाने गुप्तरीतें ते वात करवाथी राजायें ते शिला ग्रहण करीने घणुं धन आप्युं. पछी राजायें गुप्तरीतें कारीगरोपासे तेनुं आसन घडावीने, ते कारिगरोने तेणें मारी नखाव्या. हवे ते आसनपर बेसवाथी, लोको तेने सत्यना प्रभावथी आकाशमां अधर बेठेलो जाणवा लाग्या. तथा लोकोमां एवी प्रसिद्धि थइ के, सत्यना प्रभावथी, तेने देवताओ सहाय थया छे. ते प्रसिद्धिथी सघला राजाओ पण भयथी तेने वश थया. हवे एक दहाडो नारद त्यां आव्यो, त्यारे तेणें पर्वतने शिष्योप्रत्ये ऋग्वेद जणावतो जोयो. तेमां पर्वतें "अजाथी यज्ञ करवो" एवो पाठ आवतां अजनो अर्थ घेटो कर्यो. त्यारे नारदें कह्युं के, हे भाइ, भ्रमथी तुं आम केम बोले छे. गुरुयें तो "अजा" नो अर्थ त्रण वर्षनुं जुनुं धान्य. के जेने वाव्याथी उगे नहीं एवो कर्यो हतो. त्यारे पर्वतें कह्युं के, पितायें पण तेनो अर्थ घेटो कह्यो छे, अने वली नाममालामां (कोशमां) पण तेज अर्थ जे. त्यारे नारदें कह्युं के शब्दोनी अर्थ कल्पना मुख्य अने गौण एम बे प्रकारनी छे, तेमांथी गुरुयें गौण कल्पना कहेली छे. वली गुरु धर्मनो उपदेश देनारा छे अने श्रुति पण धर्मात्मक छे, माटे ते बन्नेने जूठा पाडी तुं पापनो बंध पाड नही? त्यारे पर्वतें गुस्से थइ कह्युं के, तेनो अर्थ घेटोज थाय छे, अने आपणे तेनी परीक्षा करावीयें, तेमां जे जूठो पडे तेनी जीभ छेदवी. पछी तेओये सम्मतिपूर्वक वसुराजाने परीक्षक नीम्यो. एटलामां पर्वतनी मा आवीने गुप्त रीतें पर्वतने कहेवा लागी के, तारा पितायें "अजनो" अर्थ नारदना कहेवा प्रमाणे कर्यो छे, एम में पण घरनुं कार्य करतां करतां सांभल्यो हतो; मा-

टे आ जिह्वाछेदननी शरत तें ठीक करी नही. त्यारे पर्वतें कह्युं के जे थवानुं हतुं ते थयुं. पछी तेनी मातायें राजापासे जइ पुत्रनी भिक्षा मागी. त्यारे राजायें पण गुरुनी स्त्रीने आदरमान देइने ते वात कबुल करी, तथा कह्युं के, मारा बेठां ते मारा पर्वत भाइने कोण नुकशान करे तेम छे? पछी तेणीयें सघलुं वृत्तांत राजाने कह्युं. त्यारें राजायें कह्युं के, प्राण जाय, तोपण हुं जूठुं केम बोली शकुं? पण तेणीयें घणोज आग्रह करवाथी तेणें ते वात कबुल करी. तेथी ते पण खुशी थइने घेर गइ. एटलामां ते उं बन्ने त्यां आव्या. त्यां सभामां केटलाक मध्यस्थ माणसो पण आवी बेठा. राजा पण ते स्फटिकशिलापर बेठो. पछी बन्नेये पोतपोतानो पक्ष कही संभलावीने, तेमांथी सत्यासत्य कहेवामाटे राजाने विनति करी. त्यारे राजायें पोतानी सत्यप्रसिद्धिने नहीं गणकारतां "अज" नो अर्थ घेटो कर्यो. ते वखते देवोयें गुस्से थइ तेने ते शिलापरथी नीचे फेंकी दीधो. त्यारें नारदें पण तेने कह्युं के, जूठी साक्षी पुरनार एवो जे तुं, तेनुं हवे चंडालनी पेठे मुख पण कोण जोशे? एम कही ते पोताने स्थानकें गयो. पछी तेनी आठ पेढेडीसुधिना राजाउने देवोयें मारी नाख्या.

एवी रीतनी वसुराजानी कथा सांभलीने जिनवचनोने माननारो, एवो कयो माणस जूठुं बोले.?

एवी रीतें नारदपर्वतनी तथा वसुराजानी कथा जाणवी. परने पीडा करनारां सत्य वचनने पण असत्य तरिके लेखीने न बोलवुं, तेने माटे कहे छे.

न सत्यमपि भाषेत, परपीडाकरं वचः ॥
लोकेपि श्रूयते यस्मात्, कौशिकोनरकं गतः ॥ ६१ ॥

अर्थः—परने पीडा करनारुं सत्य वचन पण बोलवुं नहीं, कारणके, तेम करवाथी कौशिक तापस नरकमां गयो छे, एम अन्यदर्शनीउना शास्त्रमां पण संभलाय छे.

हवे कौशिक तापसनी कथा कहे छे.

कौशिक नामें कोइएक शांत तापस, गामने तजीने गंगाने कांठे वसतो हतो; ते त्यां ममता, तथा परिग्रहरहित थइने कंदमूलनो आहार करीने रहेतो हतो, तथा सत्यवादी होवाथी ते दूनियामां प्रसिद्धि पाम्यो

हतो. एक दहाडो केटलाक चोरो गाम लुंटीने आश्रमपासे आव्या. त्यारे गामना लोको आवीने, तेने पुछवा लाग्या के, तमो सत्यवादी छो, माटे कहो के, चोरो केमना गया? त्यारे धर्मतत्वने नहीं जाणनारा ते तापसें कह्युं के, चोरो आ पडखेनी झाडीमां पेठा छे.तेथी लोकोयें त्यां जइ तेमने मारी नाख्या. एवी रीतनां परने पीडाकारी एवां सत्य वचनथी पण, ते तापस नरकमां गयो. एवी रीतें कौशिक तापसनी कथा जाणवी.

हवे अल्प असत्यने प्रतिषेधवामाटे, मोटा असत्य बोलनारने निंदता थका कहे छे.

अल्पादपि मृषावादाद्रौरवादिषु संभवः ॥
अन्यथा वदतां जैनीं वाचं त्वहह का गतिः ॥ ६३ ॥

अर्थः—स्वल्प मृषावादथी पण ज्यारें रौरवादिक नरकोमां उत्पत्ति थाय छे त्यारे जैन वचनोने विपरीत बोलनारनी तो, अरेरे!!! शी गति थशे?

हवे असत्यवादीनी निंदा करीने सत्यवादीनी स्तुति करे छे.

ज्ञानचारित्रयो मूलं सत्यमेव वदंति ये ॥
धात्री पवित्री क्रियते तेषां चरणरेणुभिः ॥ ६४ ॥

अर्थः— ज्ञान अने चारित्रना मूलरूप एवुं जे सत्य, तेनेज जेओ बोले छे, तेओना चरणोनी रजथी आ पृथ्वी पण पवित्र करायेली छे.

टीकाः— अहीं ज्ञान चारित्रनुं ग्रहण "नाणकिरियाहिंमुखो" एवी रीतनां, भगवतनां भाष्यकारनां वचनने अनुसारें छे; अने तेना ग्रहणथी दर्शन आवीज जाय छे, कारणके, सम्यग् दर्शनविनानुं ज्ञान ते अज्ञानज छे;

हवे वली सत्यवादिना आ लोकसंबंधि प्रभावने पण देखाडे छे.

अलीकं ये न भाषंते, सत्यव्रतमहाधनाः ॥
नापराद्धमलं तेभ्यो, भूतप्रेतोरगादयः ॥ ६५ ॥

अर्थः—जे सत्यव्रतरूपी महाधनवालाओ जूठुं नथी बोलता, तेओने भूत, प्रेत, सर्प आदिक पण पीडा करी शकता नथी.

टीकाः—डाह्या माणसें सर्व प्राणीओने उपकार करनारुं सत्य बोलवुं, अथवा तो मौन रहेवुं. वली वैर करावनारुं वचन कोइयें पुछतां पण बोलवुं नहीं. वली जो धर्मनो नाश थतो होय, अथवा सिद्धांतनो विपरीत अर्थ

कोइ कहेतो होय, तेमाटे कोइयें पुछ्याविना पण सत्य बोलवुं. वली चार्वाक, कौलिक, ब्राह्मण, बौद्ध विगेरेए, असत्य वचनो बोलीने जगतनो नाश कर्यो छे; तेओनां मुखो नगरनी गटरो जेवां छे, के जेमांथी पंकयुक्त वाणीओ निकले छे. वली बलता दावानलथी दाझेलुं वृक्ष तो नवपल्लव थइ शके छे, पण दुर्वचनरूपी अग्निथी बलेला लोकोने शांति थती नथी. वली माणसोने सत्य वाणी, जेटलो आनंद आपे छे, तेटलो आनंद, चंदन, चांदनी, चंद्रकांतमणि तथा मोतीओनी माला पण आपती नथी. वली असत्य बोलनारो साधु पण निंदाने पात्र छे. वली त्राजवामां जो असत्यनां पापने अने बीजां सघलां पापने तोलियें तोपण असत्यनुं पाप वधे छे. वली परस्त्रीलंपट तथा चोरने पण छुटवानो उपाय छे, पण जूठुं बोलनारने छुटवानो उपाय नथी. वली जे देवो पण सहाय थाय छे, राजाओ हुकम उठावे छे, तथा अग्नि आदिक पण शीतल थाय छे, ते सघलां सत्य वचननां फलो छे. एवी रीतें बीजा व्रतनुं स्वरूप कह्युं.

हवे त्रीजा अस्तेयव्रतनुं स्वरूप कहे छे.

पेहेलां तेनां फलने देखाडवापूर्वक, तेनो निषेध करे छे.

दौर्भाग्यं प्रेष्यतां दास्य, मंगच्छेदं दरिद्रतां ॥
अदत्तात्तफलं ज्ञात्वा, स्थूलस्तेयं विवर्जयेत् ॥ ६६ ॥

अर्थः—दुर्भाग्यपणुं, नोकरपणुं, परस्वाधीनपणुं, अंगनुं छेदन, तथा दरिद्रिपणाने, अदत्तादाननां फलरूप जाणीने, स्थूलथकी स्तेयने(चोरीने)तजवुं,

पतितं विस्मृतं नष्टं, स्थितं स्थापितमाहितं ॥
अदत्तं नाददीत स्वं, परकीयं क्वचित्सुधीः ॥ ६७ ॥

अर्थः—पडेलुं, भुलेलुं, नाश पामेलुं, स्थिर पडेलुं, थापण पडेलुं, दाटेलुं एवुं, परनुं नही दिधेलुं धन बुद्धिमानें ग्रहण करवुं नही.

हवे चोरी करनारनी निंदा करे छे.

अयं लोकः परलोको, धर्मो धैर्यं धृतिर्मतिः ॥
मुष्णता परकीयं स्वं, मुषितं सर्वमप्यदः ॥ ६८ ॥

अर्थः— परनुं धन हरनार माणसें, आ लोक, परलोक, धर्म, धीरज-

ता, शांतता तथा कृत्याकृत्यनो विवेक, ए सघलुं नष्ट करेलुं जाणवुं. हवे हिंसकथी पण चोरी करनारनुं बहु दोषपणुं कहे छे,

एकस्यैकं क्षणं दुःखं, मार्यमाणस्य जायते॥
सपुत्रपौत्रस्य पुन, र्यावज्जीवं हृते धने ॥ ६९ ॥

अर्थः– प्राणीने मारवाथी तो, तेने एकने, अने ते पण क्षणवार सुधीज दुःख थाय छे, पण धन लेइ लेवाथी तो, तेना पुत्र पौत्रोने पण जीवितपर्यंत दुःख थाय छे. हवे तेनुं फल कहे छे.

चौर्यपापद्रुमस्येह, वधबंधादिकं फलं ॥
जायते परलोके तु, फलं नरकवेदना ॥ ७० ॥

अर्थः– चोरीनां पाप रूपी वृक्षनां, वध, बंधन आदिक आ लोकनां फलो छे, अने नरकनी वेदनारूप परलोकसंबंधि फल छे.

दिवसे वा रजन्यां वा, स्वप्ने वा जागरेऽपि वा ॥
सशल्यइव चौर्येण, नैति स्वास्थ्यं नरःक्वचित् ॥ ७१ ॥

अर्थः– वली चोरी करवाथी, माणस जाणे शल्यवालो थयो होय नहीं, तेम, दिवसें, अथवा रात्रियें स्वप्नामां अथवा जागते छते पण शांतता पामतो नथी.

मित्रपुत्रकलत्राणि, भ्रातरःपितरोऽपि हि ॥
संसर्जंति क्षणमपि, न म्लेच्छैरिव तस्करैः ॥ ७२ ॥

अर्थः– वली मित्र, पुत्र, स्त्री भाइ, तथा पिता पण, म्लेच्छोनी पेठे चोरनो क्षणवार पण संसर्ग करता नथी.

हवे चोरी करनार तथा नहिं करनार, बन्नेना दोष तथा गुणोने दृष्टांतो द्वारायें कहेछे.

संबंध्यपि निगृह्येत, चौर्यान्मंडकवन्नृपैः ॥
चौरोऽपि त्यक्तचौर्यः स्या, त्स्वर्गभाग् रौहिणेयवत् ॥ ७३॥

अर्थः– चोरीथी मंडकनी पेठे संबंधी पण राजाउथी मराय छे, अने चोरीने तजवाथी चोर पण रौहिणेयनी पेठे स्वर्गने भजनारो थाय छे. ते बन्ने दृष्टांतो कहे छे.

गौड देशमां पाटलीपुत्र नामें एक सुंदर नगर छे; त्यां महाकलावान् मूलदेव नामें एक राजपुत्र हतो. ते धूर्तविद्याने जाणनार, तथा रूप अने लावण्यथी कामदेव सरखो हतो. ते चोर प्रत्ये चोर जेवो, उत्तम प्रत्ये उत्तम जेवो, जुगारीप्रत्ये जुगारी जेवो, विगेरे ते अनेकरूप पोतानां करी शकतो हतो. ते विद्याधरनी पेठे विचित्र प्रकारनां कौतुकोथी लोकोने विस्मय करतो हतो. तेने जुगारनुं व्यसन पडवाथी पिताना उपकार्यें करीने नाशीने उज्जयनी नगरीमां गयो. ते त्यां कोय गोलीना प्रभावथी कुबडो थइ, लोकोने कलाथी आश्चर्य करीने प्रख्याति पाम्यो. हवे त्यां रूप अने लावण्यथी रतिने पण जीतनारी, एवी देवदत्ता नामें एक उत्तम गणिका हती. तेणीने वश करवाने कोइ पण समर्थ थयो नहीं. एक दहाडो मूलदेव तेणीना घर आगल, तेने क्षोभाववामाटे प्रभातमां गावा लाग्यो. देवदत्तायें पण ते मधुरस्वर सांभलीने दासीने तेनी तपास करवा मोकली. ते दासीयें तपास करीने आव्याबाद वेश्याने कह्युं के, कोइ महागुणवान् एवो कुबडो माणस गाय छे. पछी तेणीयें पोतानी एक माधवी नामनी कुबडी दासीने तेने बोलाववा मोकली. ते पण त्यां जइ तेने कहेवा लागी के, हे महाभाग, मारी देवदत्ता नामनी शेठाणी तमोने बोलावे छे. त्यारें मूलदेवें कह्युं के, अरे! कूबडी!! चाली जा? हुं तो आवतो नथी कुटणीउने वश, एवी वेश्याने घेरकोण जाय? पछी ज्यारे ते पाछी वली, त्यारे विनोदमाटे तेणीने कलाकौशल्यथी कमलना नालनी पेठे सिद्धि करी. ते दासी पण पोताना शरीरने सुधरेलुं जोती थकी आनंद पामीने, वेश्या पासे जइ, ते सघलुं वृत्तांत कहेती हवी. देवदत्ता पण तेणीने कुब्जपणां रहित जोइने आश्चर्य पामी; अने फरीने कह्युं के, आवा उपकारीने तो पोतानी आंगली छेदीने पण तुं लाव? पछी ते दासी पण मूलदेवपासे आवी, तेने मीठां वचनोथी समजावीने त्यां लइ गइ. तथा त्यां तेणें पण प्रवेश कर्यो. ते वामनने पण कांति अने लावण्ययुक्त जाणीने, तेणीयें आसनपर बेसाड्यो. तथा मांहोमांहें तेउ आनंदनी वातो करवा लाग्यां. एटलामां कोइएक वीणावालो त्यां आव्यो, तेनी पासे देवदत्तायें कौतुकथी वीणा वगडावी. तेनी उत्तम नादवाली वीणाने सांभलीने देवदत्तायें मस्तक धुणावी, तेनां वखाण कर्यां. पछी मूलदेव पण जरा हसीने कहेवा लाग्यो,

के, उज्जयनीनां लोको गुण अवगुणनी परीक्षामां तो बहु निपुण लागे छे. त्यारें तेणीयें पण शंकासहित कह्युं के, आमां कंइंक जूल पडी छे, के जेथी तमो उपहास करो छो. त्यारें तेणें कह्युं के, शुं आप जेवानी क्यांय पण जूल पडे? पण आ तंत्री गर्जसहित छे, तेम तेनो वंश पण शल्यवालो छे. "केम जाण्यो?" एम तेणीयें ज्यारे पुछ्युं, त्यारे तेणें ते वीणा लेइने, वंशमांहेंथी पत्थर कहाडीने, तथा तांतमांथी वाल कहाडीने देखाड्यो. एवी रीतें वीणाने शुद्ध करीने पोते वगाडवा लाग्यो, के जेथी सांजलनारने ते अमृतसरखुं लागवा मांड्युं. ते सांजली देवदत्तायें कह्युं के, तुं कंइ सामान्य कलावान् नथी, खरेखर मनुष्यरूपधारी सरस्वती छुं, पछी वीणावाले पण तेना चरणें पडी कह्युं के, मारे तमारी पासेथी वीणा शीखवी छे. त्यारे मूलदेवें कह्युं के, हुं हजु बरोबर वगाडी जाणतो नथी, पण जे माणस सारी रीतें वगाडी जाणे छे, तेने हुं जाणुं छुं. त्यारे देवदत्तायें कह्युं के, ते कोण अने क्यां छे? त्यारे मूलदेवें कह्युं के, पूर्वदिशामां पाटलीपुत्र नामें नगर छे. त्यां विक्रमसेन नामें महागुणवान् कलाचार्य छे, तेनो हुं मूलदेव नामें हमेशनो सेवक छुं. हवे एटलामां त्यां विश्वजूति नामें एक नाटकाचार्य आव्यो, त्यारे देवदत्तायें कह्युं के, आ साक्षात् जरततुल्य छे. त्यारे मूलदेवें पण ते वात कबुल करी. पछी ते विश्वजूति तो जरतनां शास्त्रोमां जूलो कहाडवा लाग्यो. त्यारे मूलदेवें जाण्युं के, आ उपर उपरनो जाणकार छे, माटे तेनी जूल हुं देखाडी आपुं. तेना व्याख्यानमां पूर्वापरविरोध नामनी जूल कहाडी. त्यारे विश्वजूति गुस्से थइने संबंधविनानुं बकवा मांड्यो, कारण के, तेवा लोको पोतानां अज्ञानने क्रोधथी ढांके छे. पछी ते नाट्याचार्य पण विलखो थइने चुप रह्यो. पछी ते देवदत्ता पण तेनां विलखापणाने दूर करवाने बोली के, आप अत्यारे उत्सुक जणाउ छो, माटे आ विषेनी चरचा वली कोइ बीजे प्रसंगे कहाडजो? पछी विश्वजूतियें कह्युं के, हे देवदत्ता, हवे आपणो नाटकनो अवसर थयो छे, माटे अमो जइशुं, अने तुं पण तैयार थइ रहे? एम कही विश्वजूति त्यांथी चाल्यो गयो. पछी देवदत्तायें मूलदेवने कह्युं के, आपणना स्नानमाटे कोइ शरीरमर्दन करनारने बोलावीयें. त्यारे ते धूर्त्तराजें कह्युं के, तारे ते मर्दन करनारने बोलाववानी जरूर नथी, जो तारी मरजी हशे, तो

हुं ते करी आपीश. त्यारे वेश्यायें कह्युं के, शुं ते काम पण तुं जाणे छे ? त्यारे तेणें कह्युं के, हुं ते जाणतो नथी, पण तेवुं जाणनारनी पासे हुं रहेलो छुं. पछी वेश्याये तेल मगाव्याबाद ते तेणीने मर्दन करवा लाग्यो, पछी शरीरनां स्थानो प्रमाणे उचित हाथथी, मर्दन करवाथी, मूलदेव तेणीनां अंगने अपूर्व सुख आपवा लाग्यो, पछी तेणीयें विचार्युं के, आ कंइ सामान्य माणस नथी, तेथी तेने पगे पडीने कह्युं के, तारा गुणोथीज तुं कोइ उत्तम माणस लागे छे, माटे तुं तारा आत्माने शा माटे कपटथी गोपवे-छे ? माटे कृपा करीने हवे मने मुंझाव मा ? कारणके जक्तोना उपरोधथी देवो पण प्रगट थाय छे. पछी तेणें मुखमांथी गोली कहाडी नाखीने पोतानुं स्वाजाविक रूप कर्युं. तेने कामदेव सरखो रूपवंत जोइ वेश्यायें कह्युं के, आपे हवे मारा पर कृपा करी. पछी देवदत्तायें अत्यंत अनुरागवाली थइने, तेनुं मर्दन कर्युं. पछी तेउ बन्नेए गरम पाणीथी स्नान कर्युं. पछी देवदत्तायें दीधेलां सुंदर वस्त्रो तेणें पहेर्यां, तथा तेउए साथे बेसीने उत्तम जोजन कर्युं. पछी तेउ मांहोमांहे बुपी कलानां रहस्यनी वातो करवा लाग्यां. पछी तेणीए कह्युं के, तें मारुं हृदय हरी लीधुं छे, माटे हवे हमेशां तारे मारे घेर आववुं. त्यारे मूलदेवें कह्युं के. निर्धन तथा परदेशी एवा जे अमो, तेउमां तमारो अनुबंध योग्य न थाय; कारण के, वेश्या जो गुणोना पक्षपातथी निर्धनमां रागी थाय, तो तेनुं कार्य चाले नहीं. त्यारे देवदत्ताए कह्युं के, तमारा जेवाने वली परदेश केवो ? वली मूर्खोना धनथी पण अमो उपर उपरथीज तेउ प्रत्ये स्नेहवाली थइयें छीयें, पण तमारा जेवा गुणी तो अमारां अंतःकरणमां पण प्रवेश करेछे. माटे तमारे मारुं वचन मानवुंज पडशे, त्यारे मूलदेवें पण हा पाडी पछी तेउ विविध विनोदथी क्रीडा करवा लाग्या, एटलामां राजानो पोलीउ आवी कहेवा लाग्यो के, नाटकनो वखत थयो छे, माटे हमणांज चालो ? पछी ते वेश्या गुप्त वेशथी मूलदेवने राजदरबारमां लइ जइने, राजानी पासे रंजानी पेठे नाचवा लागी. त्यां महाचतुर एवो मूलदेव पण पटह वगाडवा लाग्यो. पछी राजाए ते वेश्याना नाचथी खुशी थइने, तेणीने कंइक मागवानुं कहेतां, तेणीए कह्युं के, पाछलथी मागीश. पछी तेणीए मूलदेव सहित गायुं, तथा नाच कर्यो, त्यारे राजाए खुशी थ-

हवे तेने पोतानां अंगपरनां घरेणां आपी दीधां ते वखते पाटलीपुत्रना राजानो विमलसिंह नामनो द्वारपाल खुशी थइने राजाने कहेवा लाग्यो के, आ माणसें पाटलीपुत्रना मूलदेवनी कलाउं चोरी लीधी छे. माटे आप एने कलावानोमां मूलदेवथी बीजा दरज्जानुं प्रीतिदानपत्र (प्रशंशा पत्र) आपो, अने आ वेश्याने नाचनारीउंमां आधिकपणानुं सर्टिफिकेट आपो? त्यारे राजाए तेम देवा मांडतां वेश्याए कह्युं के, हे स्वामि, हुं आमनी मरजी प्रमाणे आपपासेथी इनाम लेइश. त्यारे राजाए कह्युं के, तेनी अनुमति लेइ जो? त्यारे मूलदेवें पण कह्युं के, जेम राजाजी कहे तेम कर? पछी तेणें अति उत्तम नादथी वीणा वगाडी. त्यारे विमलसिंहें कह्युं के, हे देव, गुप्तवेषधारी खरेखर आ मूलदेवज छे. त्यारे राजाए तेने कह्युं के, एम होय, तो हे मूलदेव, तुं तारुं रूप प्रकट कर? मने तने जोवानी घणी होंश छे. त्यारे मूलदेवें पण मुखमांथी गोली कहाडी नाखीने, पोतानुं स्वरूप प्रकट कर्युं. पछी राजाए तेने हर्षपूर्वक आलिंगन कर्युं. पछी मूलदेव पण राजाने चरणे पड्यो, त्यारे राजाए पण तेनो घणो आदरसत्कार कर्यो, हवे एवी रीतें देवदत्ता पण अनुरागवाली थइ थकी, तेनी साथे हमेशां विषयसुख जोगववा लागी. हवे मूलदेवें पोते जुगारनुं व्यसन तज्युं नहीं, कारण के गुणवानोमां पण कंइंक दोष तो होयछेज. देवदत्ताए ते तजवाने घणुं कहेतां पण तेणें ते तज्युं नहीं;

हवे ते नगरीमां महाधनवान्, तथा रूपवान् अचल नामनो सार्थवाह हतो. ते सार्थवाह मूलदेवनां पहेलांज ते वेश्यामां आसक्त थइने तेणीने जोगवतो हतो. तेने मूलदेवपर ईर्ष्या थवाथी तेनां छिद्रो ते जोवा लाग्यो. हवे देवदत्ताने तेणीनी माए कह्युं के, आ निर्धन, धूर्त्त, तथा जुगारी मूलदेवने तुं तजी दे? अने हमेशां धन आपनार अचलनेज तुं सेव? त्यारे देवदत्तायें कह्युं के, हुं एकांत धनमांज अनुरागी नथी, पण तेनामां गुणोए करीने पण अनुरागी थयेली छुं. त्यारे तेनी माताए गुस्से थइ कह्युं के, ते लुच्चा जुगारीमां वली गुणो केवा? त्यारे देवदत्ताए कह्युं के, ते धीर, विद्वान्, तथा गुणोनो रागी छे, माटे हुं तेने बिलकुल छोडीश नहिं. त्यारे कुट्टणी क्रोधित थइने, तेणीने तेनापर अप्रीति थवाना

उपायो शोधवा लागी, पछी ते कुट्टणी देवदत्ताने पुष्पने बदले करमाएलां पुष्पो, शरबतने बदले पाणी, सेलडीने बदले वांसनो टुकडो, एम आपवा लागी. त्यारे देवदत्ता गुस्से थवाथी, कुट्टणी तेणीने कहेवा लागी के, तुं कोप कर नहीं ? एतो जेवो जक्ष तेवुं बलिदान होय. माटे कुपात्र आ निर्धन मूलदेवने तुं तजी दे ? त्यारे देवदत्ताए कह्युं के, हे माता, पुरुषने परीक्षा कर्याविना पात्र कुपात्र केम कहेवाय ? त्यारे तेणीए कह्युं के, तेनी तुं परीक्षा कर ? त्यारे देवदत्ताए पण खुशी थइने पोतानी दासीने कह्युं के, अचलसार्थवाहने जइने कहे के, आजे देवत्ताने सेलडी खावानी इछा थइ छे, माटे ते मोकलावजो ? दासीए जइ तेने तेम कहेवाथी तेणे खुशी थइने तुरतज शेलडीनां गाडांउ जरीने मोकलाव्यां, ते जोइ कुट्टणीए कह्युं के, जो, अचलनुं केवुं उदारपणुं छे ? त्यारे देवदत्ताए खेद पामीने कह्युं के, हे माता, शुं हुं कंइ उंटणी छुं ? के जेथी तेणें मूलीआं अने पांदडां शिखे आटलीबधी सेलडी मोकली ! ! पछी तेणीए माताने कहीने, तेवीज रीतें मूलदेवने पण दासी मारफतें कहेवराव्युं. त्यारे मूलदेवें सेलडीनां पांच छ सांठा लइने, तेनां पींछां तथा मूलीआं कहाडी नाखी, तथा न चवाय तेवा गांठा पण कहाडीने बबे आंगलनी गंडेरीउ करीने तथा तेने चप्पुथी छोलीने, अने कपुरथी सुगंधियुक्त करीने मोकलावी. ते जोइने देवदत्ताए कुट्टणीने कह्युं के, मूलदेव तथा अचलमां रहेलो सोनां अने कथीर सरखो तफावत तुं जो ? त्यारे कुट्टणीए विचार्युं के, निर्बुद्धि हरिणी जेम झांझवानां पाणीप्रत्ये तेम आ पण आ धूर्तप्रत्येज अभिलाषा राखे छे. माटे हवे कोइ एवो इलाज शोधवो, के जेथी मूलदेवने नगरमांथी कहाडी मुकाय. पछी तेणे अचलने कह्युं के, तारे देवदत्ताने महोडे कोइ गाम जवानुं खोटुं बानुं कहाडवुं पछी ज्यारे तुं तेम करीश; त्यारे तने परगाम गएलो जाणी, मूलदेव शंकारहित तेणीनी पासे आवशे. पछी ज्यारे ते देवदत्तासाथे जुगार रमतो होशे, त्यारें हुं तने संकेत करीश, एटले तुं सघली सामग्रीसहित त्यां आवजे ? अने ते वखते तुं तेनुं कंइक एवुं अपमान करजे, के जेथी ते देवदत्ताने इछे नहीं. पछी तेणें पण देवदत्ताने घणुं धन आपीने तेम कर्युं. पछी ज्यारे जयरहित मूलदेव त्यां आव्यो, त्यारे ते कुट्टणीए छुपीरीतें

अचलने बोलाव्यो. त्यारे देवदत्ताए पण तेने आवतो जोइने मूलदेवने खाटला नीचे संताड्यो. हवे ते कुट्टणीए छुपी रीतें अचलने खाटला-नीचे रहेलो मूलदेव देखाडी दीधो. हवे अचल पण आवीने देवद-त्ताने कहेवा लाग्यो के हुं थाकेलो छुं, माटे मारे स्नान करवुं छे, ते-नी तुं तैयारी कर? त्यारे देवदत्तायें कह्युं के, आप त्यारे बाजोठप-र बेसो? एवी रीतें देवदत्ताए तेने आदरपूर्वक उठाडवा मांड्यो, प-ण ते उठ्यो नहीं; पण कह्युं के हे देवदत्ता! में आजे स्वप्नजोयुं छे के, आ पलंगमां में मर्दन करावीने कपडा सहित स्नान कर्युं. माटे ते स्व-प्न सत्य करवा माटे हुं अहीं आव्यो छुं कारण के, सत्य करेलुं स्वप्न क-ल्याणमाटे थाय छे. त्यारे कुट्टणी बोली के, हे पुत्रि, तारे स्वामिनो हुकुम माथे उठाववो जोइयें, माटे तेम कर? त्यारे देवदत्ताए कह्युं के, तेम कर्याथी आ उत्तम शय्या बगडे माटे तेम करवुं शुं उचित छे? त्यारे अचलें कह्युं के, तुं लोज शामाटे करे छे? जेनो पति आ अचल छे, तेने शुं आवी बीजी शय्या नहीं मली शके? पछी जाडाने वश थ-येली देवदत्ताए, तेने पलंग परज मर्दन कर्युं. पछी तेपर पाणीथी स्नान करावavाथी मूलदेवनुं शरीर ते पाणीथी जराइ गयुं. पछी ते कुट्टणीए अचलना सुजटोने बोलावीने मूलदेवने खेंची कहाडवानुं कह्युं. पछी अ-चलें पण क्रोधायमान थइने मूलदेवने चोटलो जाली खेंचवा मांड्यो, अने तेने कह्युं के, तुं विद्वान् अने बुद्धिमान् छो माटे कहे के, आवा कार्यनो शुं दंड होय? ते सांजली मूलदेव पण दिंग थइ गयो. पछी ते अचल सार्थवाहें पण विचार्युं के, कर्मयोगें आवी दशाने आ प्राप्त थयो छे माटे तेने मारवो नहीं. एम विचारि तेणें कह्युं के आज तो तने आ अपराधथी हुं छोडुं छुं पण कृतज्ञ थइने तारे पण अवसरे मारापर उप-कार करवो? पछी त्यांथी मूलदेव पण तुरत निकली गयो, तथा नगर बहार जइ तेणे तलावमां स्नान कर्युं, तथा कपडां पण धोइ नाख्यां. पछी ते अचल प्रत्ये वैर वालवाना मनोरथरूपी रथपर चडीने वेणातट प्रत्ये चाल्यो. तथा बार योजनना विस्तारवाली एक जयंकर अटवीमां जइ पड्यो. ते अटवी उलंगवा माटे ते कोइना सहायने इछवा लाग्यो. एट-लामां अकस्मात् त्यां कोइ, एक जातानुं पोटलुं लइ कापडी ब्राह्मण आ-

वी चल्यो. तेने आवेलो जाणी मूलदेव अत्यंत हर्षित थयो; अने तेने कह्युं के, मारे आ अटवीमांथी जवुं छे, माटे सारुं थयुं के, तारो साथ थयो, वली आपणे वातो करतां चाल्या जइशुं के, जेथी मार्गनो थाक पण लागशे नहीं. वली हे महाभागी, तारे अहींथी केटलेक दूर अने क्यां जवुं छे? त्यारे ब्राह्मणें कह्युं के, मारे तो आ अटवीने छेडे आवेला वीरनिधान नामना स्थानक प्रत्ये जवुं छे, हवे तुं पण कहे के, तारे क्यां जवुं छे? त्यारे मूलदेवें कह्युं के, मारे वेणातट नामना गामप्रत्ये जवुं छे, त्यारे ब्राह्मणें कह्युं के, त्यारे तो आपण बन्नेनो लांबे सुधि एकज मार्ग छे. पछी तेउ चालतां थकां मध्याह्नकालें एक तलाव पासे पहोंच्या तेमां हाथपग धोइने मूलदेव एक वृक्षनी छायातले बेठो. पछी ब्राह्मणें तो पोटली छोडीने, मांहेथी साथवो कहाडी तेमां पाणी मेलवी खाधुं. त्यारे मूलदेवें विचार्युं के, आ बहु भुख्यो हशे, तेथी पहेलां पोते खाइने मने देशे; पण ते ब्राह्मणेंतो खाइ रह्याबाद पोटलीनुं मुख बांधवा मांड्युं, त्यारे मूलदेवें जाण्युं के, मने आवती काले ते जरूर आपशे. एवी रीतें आशामां ने आशामां त्रण दिवसो चाल्या गया. पछी ते अटवी तजीने ब्राह्मणें तेने कह्युं के, जाइ, तारुं कल्याण थाउ! हवे मारे आ बीजे मार्गें जवानुं छे. त्यारे मूलदेवें कह्युं के, तारा सहायथी हुं आ बारयोजननी अटवी उलंगी गयो छुं; तथा हवे हुं वेणातटे जइश, मारुं नाम मूलदेव छे, माटे माराजेवुं जो काम होय तो कहेजे! त्यारे ते ब्राह्मणें कह्युं के, लोको मने निर्घृणशर्मा कही बोलावे छे, तथा मारुं मूलनाम हंसछड छे, एम कही ते ब्राह्मण पण चालतो थयो पछी ते मूलदेव पण चालतां थकां एक गाममां पहोंच्यो, तथा त्यां क्षुधाथी भिक्षामाटे भमतां थकां तेने कोइने घेरथी बाकला मल्या. ते लेइ जेवो गाममांथी निकलतो हतो, तेवामां पोतानी सामे कोइ मासोपवासी साधुने आवता तेणें जोया. तेने जोइ ते हर्षथी विचारवा लाग्यो के, अहो! आजे तो मारां पुण्योनो उदय थयो, के जेथी भवरूपी समुद्रमां नावसमान आ मुनि मने मल्या. माटे आजे आ बाकुलानुं साधुप्रत्ये दान दइने मारा विवेकरूपी वृक्षनुं हुं फल मेलवुं. पछी ते बाकुला साधुउने वोराव्या, तेणें कह्युं के, ते माणसोने धन्य जाणवा, के जेउना बा-

कुंवा साधुनां पारणामां उपयोगी थाय छे. एवी रीतनी तेनी जावनाथी देवता खुशी थइ कहेवा लाग्या के, हे जड! तुं तारी इच्छाप्रमाणे अरधा श्लोकमां मागी ले? त्यारे मूलदेवें पण माग्युं के-

" गणिकादेवदत्तेज, सहस्रं राज्यमस्तु मे ॥ "

अर्थः—देवदत्ता गणिका; तथा एक हजार हाथीउंवालुं राज्य मने मले.

त्यारे देवताए कह्युं के, " एमज तने थशे," पछी मूलदेव पण मुनिने वांदीने, गाममा गयो, तथा त्यां जिक्षा मागीने तेणें जोजन कर्युं. पछी अनुक्रमें तेणें वेणातट नामना गाम प्रत्ये जइ, एक धर्मशालामां उतारो लीधो, तथा त्यां निद्रासुख पाम्यो. त्यां रात्रिने छेल्ले पहोरे तेणें स्वप्नमां संपूर्ण चंद्रने पोताना मुखमां पेसतो जोयो. तेज स्वप्न त्यां कोइ कापडी बावाने पण आव्युं, अने तेणें जागीने बीजा कापडीउंने ते पोतानुं स्वप्न कही बताव्युं, त्यारें एक कापडीयें तेने कह्युं के, आजे तने घी तथा खांडवाला पुडला मलशे. ते सांजली ते कापडी तो बहुज खुशी थइ गयो, कारण के, शियालने तो एक बोर मल्याथी पण खुशी थाय छे. पण ते मूर्खोने मूलदेवें पोतानुं स्वप्न कह्युं नहीं. हवे ते कापडीने तो कोइनां वास्तुनां पर्वमां घीखांडवाला पुडला मल्या, कारण के, स्वप्नुं फल विचारने अनुसारें थाय छे. हवे ते मूलदेव तो प्रजातमां बगीचामां गयो, तथा त्यां मालीउंने खुशी करीने तेणें पुष्पो तथा फलो लीधां, तथा पछी पवित्र थइ ते स्वप्नशास्त्रना जाणकार पासे गयो. तथा त्यां तेणें पुष्प फलो मुकीने पोतानुं स्वप्न तेने कही संजलाव्युं. त्यारें ते विद्वानें हर्षथी कह्युं के, हे वत्स, तने स्वप्ननुं फल हुं शुज मुहूर्त्ते कही संजलावीश, माटे आज तो तुं अमारो परोणो थइने रहे? पछी ते उपाध्यायें तेने नवरावी, तथा जोजन करावीने, पोतानी कन्या परणाववा मांडी. त्यारें मूलदेवें कह्युं के, मने अजाण्याने कन्या देवामां तमोए कंइ विचार कर्यो के केम? त्यारें उपाध्यायें कह्युं के, तारीआकृतिथीज तारा कुल अने गुणो जणाइ जाय छे, माटे तुं आ कन्याने परण्य? पछी तेनां वचनथी मूलदेवें पण ते कन्याने परणी. पछी उपाध्यायें स्वप्ननुं फलकह्युं के सात दिवसमां तुं अहीं राजा थइश. पछी ते मूलदेव त्यां केटलाक दिवस रहीने पांचमे दिवसे नगरनी बहार एक चंपाना वृक्षतले जइ

सुतो. हवे एटलामां तो नगरनो राजा पुत्ररहित मृत्यु पाम्यो. त्यारें मंत्रिर्उए पांच दिव्योने राजा वास्ते नगरमां फरतां कर्यां, पण त्यां कोइ राज्यने लायक माणस तेर्उए जोयो नहीं. पछी बहार जमतां तेर्उए चंपानीचे सुतेला मूलदेवने राज्योचित जोयो. त्यारें घोडे हेषारव कर्यो, हाथीए गर्जना करी, कलशें अन्निषेक कर्यो, चामर विंजावा लाग्यां, तथा छत्र खुल्लुं थयुं. पछी हाथीए तेने पोताना स्कंधपर चडाव्यो, अने लोको पण पोतानो स्वामि मलवाथी जयजय शब्द करवा लाग्या. पछी तेणे वाजां वागते छते नगरमां प्रवेश कर्यो. पछी ते हाथी परथी उतरीने मेहेलमां सिंहासनपर बेठो, त्यारे सामंतोए तेनो राज्यान्निषेक कर्यो. ते वखते आकाशमां रही देवोयें कह्युं के, देवनी कृपाथी आ कलावान् विक्रमराज नामें राजा थयो छे. अने जेर्उ आनी आज्ञा मानशे नहीं, तेर्उने अमो मारी नाखशुं. ते वचनथी सघलुं प्रधानमंडल डरीने तेने वश थयुं. पछी एवी रीतें विषयसुखने न्नोगवतां थकां, तेणें उज्जयनीना राजासाथे व्यवहार करीने तेनी प्रीति मेलवी.

हवे ते वखते देवदत्ता पण मूलदेवनी तेवी विडंबनाने जोइने अचलने आक्रोपथी कहेवा लागी के, दुष्ट, आजथी तारे मारे घेर आववुं नहीं, एम कही तेने तेणीए घरमांथी कहाडी मेल्यो, अने पोते राजापासे गइ. अने कह्युं के, ते दिवसनुं वरदान हुं आजे तमारीपासे मागुं बुं; त्यारें राजाए पण कह्युं के, तारी इछाप्रमाणें तुं मागी ले? त्यारे तेणीयें कह्युं के, मारे कोइ मूलदेव शिवाय न्नरतार नही, तथा अचलने मारे घेर आवतो अटकाववो? राजायें कह्युं के, तेमज करीश. पण आनो हेतु शुं? त्यारे देवदत्तायें इशारत करवाथी माधवी दासीयें सघलुं वृत्तांत राजाने कही संन्नलाव्युं. तेथी राजायें क्रोधायमान थइने, ते अचलने बोलावी आक्रोपथी कह्युं के, अरे दुष्ट!!! तें तारा धनना मदथी मारी नगरीनां आ बन्ने रत्नोने पत्थरनी पेठे रगदोल्यां? माटे तारा आ अपराधमाटे हुं तने मोतनी सजा करीश; पण पछी देवदत्तायें तेने छोडाव्यो. पछी राजायें कह्युं के, जो तुं मूलदेवने शोधी लावीश, तोज तने मुक्त करीश. पछी ते अचल राजाने नमीने मूलदेवने शोधवा चाल्यो. हवे मूलदेव पण पोतानी इछाकाइथी डरीने लबाचा उपाडी पारसकुलमां गयो.

हवे अहीं मूलदेवें विचार्युं के, देवदत्ताविना मारी आ राज्यलक्ष्मी नकामी छे. तेथी तेणें एक चतुर दूतने भेटणुं दइने देवदत्ता तथा राजापासे मोकल्यो. पछी ते दूतें पण उज्जयनीयें जइ; राजाने कह्युं के, देवें दीधेली छे, राज्यलक्ष्मी जेने एवो मूलदेव तमोने कहेवरावेछे के, आपने पण ध्यान छे के मारे अने देवदत्ताने घणो स्नेह छे, माटे जो आपनी अने तेणीनी मरजी होय तो तेने अत्रे मोकलावशो. त्यारे राजायें कह्युं के, ते तेयें शुं माग्युं? अमारे अने तेने शुं कंई जुदाइ छे, पछी राजायें देवदत्ताने बोलावी कह्युं के, हे भद्रे, सारुं थयुं के घणे काले तारा मनोरथो संपूर्ण थया छे. मूलदेव देवना प्रसादथी राजा थयो छे, अने तेने बोलाववामाटे तेणें पोताना माणसने मोकल्यो छे. पछी देवदत्ता पण राजानी आज्ञाथी वेणातट नगरे गइ. राजायें पण महोत्सव पूर्वक तेणीने पोताना मेहेलमां प्रवेश कराव्यो. पछी जिनेश्वर प्रभुनी पूजा करतां तथा प्रजाने पालतां थकां तथा देवदत्तासाथे क्रीडा करतां थकां तेणें त्रणे वर्गोने बाधारहित साध्या.

हवे एटलामां अचल पण केटलीक वेंचवानी चीजो लइने पारसकुलथी त्यां आव्यो. तथा केटलीक मणी, मोती विगेरे भेटोथी थाल भरी ते राजापासे गयो. मूलदेवें तेने तुरत पीछानी लीधो; पण अचलें तेने ओलख्यो नहीं. पछी राजायें कह्युं के, तमो क्यांथी आवो छो? त्यारें तेणें कह्युं के, अमो पारसकुलथी आवीये छीयें; एम कही तेणें माल तपासवामाटे (जगातसारु) पंचनी मागणी करी. त्यारें राजायें कौतुकथी कह्युं के, हुंज आवीश. पछी राजा पोते पंचने लइने गयो, त्यारे तेणें मजीठ, कापड, सुतर विगेरें माल देखाड्यो. त्यारे राजायें पुछ्युं के, शुं आटलोज छे. त्यारे राजायें फरीने पुछ्युं के, बरोबर तपास करीने कहेजे? कारण के, अमारा राज्यमां दाणचोरीनी देहांत शिक्षा छे. त्यारे अचलें कह्युं के, अमो कोइनी पासे जुठुं बोलता नथी, त्यारे वली आपनी पासे तो शुं बोलीयें खरा? त्यारे राजायें कह्युं के, आ सत्यवादी शेठनुं अरधुं दाण माफ करवुं, पण तेनो माल बराबर तपासवो. पछी त्यां पंचने हलकी वस्तुओना दागीनामां नीचे बहु मूल्यवाली चीजोनो वेहेम पडवाथी ते सघला दागीना फोडाव्या. पछी ते फोड्या तो तेमांथी तेमना धा-

खाप्रमाणेज निकल्युं. त्यारे राजायें गुस्से थइ तेने बंधाव्यो. पछी तेने मेहेलमां लइ जइ, तेनां बंधनो छोडावीने राजायें तेने पुछ्युं के, तुं मने ओलखे छे? त्यारें शेठें कह्युं के, आपने राजाने कोण नहीं पिछाने? त्यारे मूलदेवें कह्युं के, एम मिठुं बोलवानी कशी जरूर नथी, खरोखर पिछाणतो होय तो बोल? त्यारे अचलें कह्युं के, हुं आपने बरोबर पिछानी शकतो नथी. त्यारें राजाये देवदत्ताने बोलावी, तेने देखाडी. त्यारे तो ते लज्जातुर थइ खेद पामवा लाग्यो, पछी देवदत्तायें कह्युं के, आ मूलदेव छे, के जेने तें प्रत्युपकार करवानुं कह्युं हतुं. माटे आजे तने तेणें जीवतो मेल्यो छे, कारण के, तेवा माणसो ताराजेवा क्षुद्रनी घात करनारा होता नथी. पछी अचल विलखो थइने तेउने पगे पड्यो; अने कह्युं के, मारापर क्षमा करो? त्यारे राजायें कह्युं के, देवदत्तायें ज्यारें तने क्षमा करी, त्यारथीज में पण तने क्षमा करी छे. पछी अचलें कह्युं के, मारा ते दिवसना अपराधथी तो जितशत्रु राजायें मने उज्जयनीथी कहाडी मेल्यो छे; पछी राजायें तेने इनाम आपी एक दूतसाथे उज्जयनी प्रत्ये मोकलाव्यो. त्यां जितशत्रु राजायें पण मूलदेवनां वचनथी तेने शेहेरमां आववा दीधो.

हवे एक दहाडो सघला वेपारीयो एकठा थइने मूलदेवने कहेवा लाग्या के, हे राजा, आ तमारा नगरने चोरो पराजव करे छे. तेउ अंजनथी अदृश्य थइने अमारा घरोमां फर्या करेछे. त्यारे मूलदेवें कह्युं के, हुं ते चोरोनो थोडाज कालमां नाश करीश, एम कही तेणें वेपारीउने रजा आपी. पछी तेणें कोटवालने हुकम कर्यो के, सघला चोरोने पकडीने मारी नाखो? त्यारे कोटवालें कह्युं के, एक चोर पिशाचनी पेठे पकडी शकातो नथी. पछी राजा पोते एक दहाडो नील वस्त्रो पेहेरीने रात्रियें फरवा निकल्यो; तथा शंकायुक्त एवां सघलां स्थानकोमां ते जम्यो, पण त्यां तेणें चोरने जोयो नहीं. एवी रीतें समस्त नगरमां जमीने ते क्यांक देवलमां सुइ रह्यो; त्यां अकस्मात् राक्षसनी पेठे मंडिक नामें चोरनो अधिपति आव्यो. "अहीं कोण छे?" एम उंचे स्वरे बोली तेणें सुतेला राजाने पाटु मारी. त्यारे राजायें तेनी चेष्टा आदिक जोवामाटे कह्युं के, हुं तो एक कापडी छुं. त्यारे चोरें कह्युं के, अरे! कापडी! तुं मारी

पासे आव? हुं तने धनवान् करी देउं. पठी राजा पण स्वार्थने माटे चा-करनी पेठे तेनी पछाडी चालवा लाग्यो; कारण के, कारण पडवाथी श्रीकृ-ष्णें गधेडाना पग पण चांप्या ठे. पठी राजाने ओलख्याविना तेनी साथे-ज ते कोइ शेठने घेर गयो. त्यां तेणें खातर दइने केटलोक मूल्यवान् माल लीधो. पठी तेणें ते मालने राजापासे उपडाव्यो. पठी ते एक जी-र्ण उद्यानमां जइने तथा त्यां गुफा उघाडीने राजासहित अंदर गयो. त्यां नागकुमारी सरखी तेनी एक नवयौवन बेहेन हती तेणीने ते चोरें कह्युं के, आपणा अतिथिना तुं पग धोइ नाख? एवी रीतना नाइना क-हेवाथी, ते राजाने कुवाना कांठापासे रहेला एक आसनपर तेडी गइ. त्यां तेना पग धोतां तेणीयें तेनो कोमल स्पर्श अनुभव्यो; तेथी विचारवा लागी के, आ कोइक कामदेव सरखोज माणस लागे ठे, एम विचारि अनुरागथी तथा दयाथी तेणीयें राजाने कह्युं के, पग धोवाना मिशथी आ चोर, लोकोने आ कुवामां फेंकी देवरावे ठे, कारण के, तेवा चोरोने दया क्यांथी होय? पण तारा प्रभावथी वश थएली हुं, तने कुवामां फें-कीश नहीं. माटे हवे तुं दूर चाल्यो जा? कारण के नहींतर आपण ब-न्नेनो नाश थशे. पठी राजा पण त्यांथी तुरत नासी गयो, कारण के, बु-द्धिमान् लोको पोतामां पराक्रम ठतां पण, वेरीउने बुद्धिथी मारे ठे. पठी ज्यारे राजा गयो, त्यारे तेणीयें चोरने कह्युं के, आ तो चाल्यो जाय ठे; कारण के पोताना नाशनां रक्षणमाटे पण बुद्धिमानो तेवोज प्रपंच करे ठे; ते सांभली मंडिक पण हाथमां तलवार लइने वेतालनी पेठे तेनी पाठल दोड्यो. पठी राजा पण तेने नजदीक आवतो जोइने, चोवटामां उभा करेला एक पत्थरना स्तंभनी पाठल भराइ गयो. पठी ते क्रोधांध मंडि-कें ते स्तंभनेज माणस जाणीने ते पर तलवार मारी तेने पाडीने पोता-ना स्थानकप्रत्ये चालतो थयो. पठी राजा पण चोरना मलवाथी खुशी थइ-ने पोताने स्थानकें गयो. पठी राजा पण प्रभाते रयवाडीना मिशथी, ते चोरने सारी रीतें उलखवामाटे त्यां गयो त्यां कापडनी दुकानपर, वस्त्रो-ने तुणता, तथा थोडुंज खुल्लुं राखेल ठे, मोहोडुं जेणें, एवा ते चोरने तेणें सारी रीतें उलखी कहाड्यो. पठी राजाए मेहेलप्रत्ये आवी, एंधाण आपीने केटलाक माणसोने ते चोरने बोलाववा मोकल्या. ते माणसोने

जोइ चोरें विचार्युं के, खरेखर ते माणस मरायो नथी; अने तेणें आ सघलुं जोपालुं फोड्युं छे. पछी ज्यारे ते राजापासे गयो, त्यारे राजाए ते-ने आदरमानपूर्वक आसनपर बेसाड्यो. तथा पछी तेने मिष्ट वचनोथी कह्युं के, तमो तमारी बेहेन मने परणावो ? त्यारे चोरें निश्चय कर्यो के, मारी बेहेनने जोइने कोइ पाछो गयो नथी, माटे खरेखर ते राजा ह-तो. पछी तेणें कह्युं के, आप खुशीथी ते कन्या ग्रहण करो ? तेम बीजी पण मारी वस्तु ग्रहण करो ? पछी राजा ते महारूपवंत कन्याने पर-ण्यो; तथा ते चोरने पोताना मोटा मंत्रीनी जगो पण तेणें आपी. पछी तेनी बेहेन मारफते राजाए तेनां वस्त्रभूषणो विगेरे मगावी लीधां. पछी ज्यारे घणुं खरुं धन आदिक आवी गयुं, त्यारे राजाए पोतानी स्त्रीने पुछ्युं के, हजु तारा भाइनुं केटलुंक द्रव्य छे ? त्यारे तेणीए पण कह्युं के, एटलुंज धन तेनी पासे हतुं. पछी राजाए ते मंडिकने घणी विडंबनापूर्वक मारी नखाव्यो. एवी रीतें विक्रमराज नामना राजाए (मूलदेवें) चो-रीना अपराधथी पोताना ससराने पण मारी नखाव्यो, माटे बुद्धिमान् माणसें, आ जन्ममां पण विरुद्ध फल देनारी चोरी करवी नहीं. एवी रीतें मूलदेव अने मंडिकनी कथा जाणवी.

हवे रौहिणेयनी कथा कहे छे.

अत्यंत ऋद्धिवालां एवा राजगृह नामें नगरमां महाबलवान् श्रेणि-क नामें राजा हतो. ते राजाने महासत्ववालो तथा न्यायी अभयकु-मार नामें पुत्र हतो. हवे तेज नगरनी पासे रहेला वैभार नामे पर्वतनी गुफामां लोहखुर नामें अत्यंत क्रूर चोर रहेतो हतो. ते चोर राजगृह-मां विवाह आदिक महोत्सवमां, लोकोने बहु हेरान करतो हतो. ते लोकोनुं द्रव्य चोरी जतो, तथा परस्त्रियोने लइ जइ भोगवतो. तेने चो-रीज खुशकारक लागवा मांडी, कारण के मांस खानाराओ मांसशिवाय बीजां भोजनोथी तृप्त थता नथी. हवे तेनी रोहिणीनामें स्त्रीने पेटे ते-ना जेवीज चेष्टावालो " रौहिणेय " नामें तेने पुत्र थयो. हवे एक दहा-डो लोहखुरें पोते मृत्युनी अणीपर आववाथी पोताना पुत्रने बोलावी कह्युं के, जो तुं माने तो तने एक शिखामण आपुं त्यारे रौहिणेयें कह्युं के, आप जे कहेशो ते करवाने हुं खुशी छुं. ते सांभली लोहखुरें खुशी

बइ पोताना पुत्रपर हाथ फेरव्यो, अने कह्युं के, जे आ देवोए करेला समोसरणमां वीरप्रज्ञु देशना दीए छे, ते तारे कोइ दिवसें पण सांजळवी नहीं. बाकी तारी मरजीमां आवे तेम करजे? एम कही ते मृत्यु पाम्यो. पछी पितानुं मृत्युकार्य करीने, ते पण लोहखुरनी पेठेज रात्रिए चोरी करवाने निकळी पड्यो. अने एवी रीतें पितानी आज्ञा पाळतो थको ते समस्त राजगृहने लुंटवा लाग्यो. एटलामां श्री वीरप्रज्ञु विहार करता थका, चौदहजार साधुउंना परिवार सहित, देवोए मुकेलां स्वर्ण कमळपर पगलां मुकता थका त्यां आव्या. त्यारे वैमानिक, ज्योतिषी, व्यंतर, तथा असुरोए त्यां समवसरण बनाव्युं. पछी वीरप्रज्ञु पण तेमां बेसीने, योजनसुधि फेलाती, तथा सघला प्राणीउं समजी शके, एवी जाषाथी देशना देवा लाग्या. एटलामां रौहिणेय पण राजगृही नगरीप्रत्ये जतो थको, ते समवसरणनी नजदीकमां आव्यो. त्यारें तेणें विचार्युं के, आ रस्ते जतां जो हुं वीरप्रज्ञुनुं वचन सांजळीश, तो मारा पितानी आज्ञानुं उल्लंघन थशे. पण बीजो रस्तो नहीं मळवाथी, कानआडा हाथो दइने ते त्यांथी तुरत तुरत चाली गयो. एवी रीतें हमेशां त्यांथी जावआव करतां एक दहाडो समोसरणनी नजदीकमां तेना पगमां कांटो वाग्यो. तेथी तेने कह्राडवा जतां, कानपासेथी हाथ खसी जवाथी तेणें प्रज्ञुनी नीचे प्रमाणेनी वाणी सांजळी, "देवो, हमेशां, पृथ्वीतळपर पण नहीं मुकनारा निमेषरहित लोचनोवाळा, वगर करमाएलां पुष्पोवाळा, पसिनारहित, तथा नीरोगी अंगवाळा होय छे." ते सांजळवाथी तेणें विचार्युं के अरेरे!!! बहु सांजळाइ गयुं!!! एम विचारि तेणें तुरत कांटो कहाडी कानो ढांकी मेल्या, अने तुरत त्यांथी दोडी गयो. हवे एवी रीतें ते हमेशां नगरने उपद्रव करते छते, शेठ साहुकारो राजापासे आवी कहेवा लाग्या के, हे राजा, तमो राज्य करते छते अमोने बीजो तो कोइ जय नथी, पण चोर लोको अमारुं द्रव्य चोरी जाय छे. ते सांजळी राजाए कोटवाळने बोलावीने आक्षेपथी कह्युं के, आ लोकोनुं धन, तारी उपेक्षाथी चोरो केम चोरी जाय छे? त्यारे कोटवाळें कह्युं के, कोइ रौहिणेय नामनो दुष्ट चोर लोकोने लुटे छे, पण तेने अमो जोइ के, पकडी शकता नथी. माटे आपनी मरजी होय तो, आ आ-

पनी कोटवाली संभाली ल्यो ? पछी राजाए इशारत करवाथी अजयकुमारें कोटवालने कह्युं के, चतुरंग सेनाने तैयार करीने नगरनी बहार राखो ? अने चोर जेवो गाममां दाखल थाय के, तुरत तेथी नगरने घेरी लेवुं अने तेथी अंदरथी त्रास पामीने जेवो ते बहार कुदशे, के, तुरत जालमां जेम हरिण, तेम सैन्यमां आवीने पडशे. ते सांभली कोटवाल त्यांथी निकलीने गुप्त रीतें सैन्य तैयार करवा लाग्यो. पछी ते दिवसें ते शेहेरमां दाखल थयो, अने अजाणतां ते एवी रीतथी पकडाइ गयो. तेथी कोटवाल तेने बांधीने राजापासे लाव्यो. त्यारें राजाए तेने मारी नाखवानो हुकम कर्यो. त्यारें अभयकुमारें कह्युं के, आ मुद्दामाल सहित पकडायो नथी, माटे मोतनी सजाने लायक नथी, पछी जेम आपनी मरजी. पछी राजाए तेने पुछ्युं के, तुं क्यांनो रहेवाशी छुं तथा तारो धंधो शुं छे ? शामाटे अहीं आव्यो हतो ? तथा ते रौहिणेय तुं छे ? के केम ? ते सघलुं कहे ? त्यारें तेणें कह्युं के, हुं तो शाल नामे गाममां रहेनारो दुर्गचंड नामें कुटुंबी छुं, अने कामप्रसंगे अहीं आवी, एक देवलमां रात रह्यो हतो पछी ज्यारे हुं मारे स्थानके जतो हतो, त्यारें पोलीस मने पकडवा आवतां बीकथी हुं कील्लो ठेकीने जवा लाग्यो, त्यारें शेहेर बहारनी पोलीसें मने पकड्यो माटे हुं निरपराधी छतां, तेउ मने बांधीने अहीं लाव्या छे, माटे हवे जेम आपनी इच्छा होय तेम करो ? पछी राजाए-तेनी तपास माटे, तेने केदखाने मोकलाव्यो, अने तेणें बतावेला गाममां तपासमाटे माणस मोकल्युं. हवे ते गामना लोकोने तेणें (रौहिणेयें) संकेत करी राखवाथी, तेउ कहेवा लाग्या के, दुर्गचंड अहींनो रहेवासी छे, तथा ते कामप्रसंगे गाम गयो छे. ते माणसें आवीने राजाने तेम कह्याथी, अभयकुमारें विचार्युं के, आ चोर बहु हुशीयार छे. पछी अभयकुमारें मणिमाणिकोथी एक देवविमान सरखो सात मजलानो महेल बनाव्यो तेमां अप्सराउ सरखी सुंदर स्त्रियोने राखी; तथा अद्भुत गायन करनारा गंधर्वोने तेमां राख्या; पछी ते चोरने मद्यपानथी बेभान करीने, उत्तम कपडां पेहेरावीने, तेणें ते मेहेलमां शय्यापर सुवाड्यो. पछी नीसो उतर्याबाद ज्यारे ते जाग्रत थयो, त्यारे तो तेणें अपूर्व संपदा त्यां जोइ. एटलामां अभयकुमारना संकेतथी त्यां रहेला स्त्रीपुरु-

को जय, जय, शब्द करवा लाग्या; तथा कहेवा लाग्या के, आ महाविमानमां तुं हमणांज देवतरिके उत्पन्न थयो छुं; तुं अमारो स्वामि छे, तथा अमो तारा चाकरो छीयें. वली आ अप्सराउ साथे तुं क्रीडा कर? एवी रीतनां मिष्टवचनो तेउ तेने कहेवा लाग्या. त्यारे रौहिणेयें विचार्युं के, शुं हुं देव थयो छुं? एटलामां तेउ गायन करवानी तैयारी करवा लाग्या. एटले स्वर्णदंडधारी कोइ पुरुषें त्यां आवी कह्युं के, अरे! तमोये आ अचानक शुं करवा मांड्युं छे? त्यारे तेउ सघला कहेवा लाग्या के, हे प्रतिहार, अमो अमारा स्वामिने अमारुं कलाकौशल्य देखाडीयें छीयें. त्यारे तेणें कह्युं के, तमो देवलोकनो आचार शुं विसरी गया? पेहेलां, अहीं उपजेलो स्वामि पोतानुं पूर्वनुं सुकृत, दुःकृत कही देखाडे अने पछी अहीं संबंधि जोगो जोगवे. त्यारे तेउ कहेवा लाग्या के, अमो तो नवा स्वामिना लाजथी ते विसरी गया, माटे देवलोकना क्रमप्रमाणे जले पेहेलां तेम करो? पछी तेणें रौहिणेयने कह्युं के, पेहेलां तमारां पूर्वनां पुण्यपापो कही संजलावो? तथा पछी सुखेथी जोगो जोगवो? त्यारे तेणें विचार्युं के खरेखर अजयकुमारें मने पकडवामाटे आ प्रपंच रच्यो छे माटे हवे आनी शी रीतें परीक्षा करवी एम विचारतां तेने कांटो कहाडती वखतनो समय याद आव्यो. अने विचार्युं के, वीर प्रजुयें जे देवनुं स्वरूप कह्युं छे, ते प्रमाणे मेलवी जोउं. पछी तेणें तीक्ष्ण नजरथी तपास्युं तो ते लोकोने जमीनपर चालता, पसीनावाला, तथा निमेषवाली आंखोवाला जोया. एवी रीतनुं कपट जोइने तेणें उत्तर आप्यो के, में पूर्वजन्ममां सुपात्रें दान दीधुं छे, देवलो चणाव्यां छे, बिंबोनी प्रतिष्ठा करावी छे, तथा तेमनी अष्टप्रकारी पूजाउ करी छे, तीर्थयात्राउ करी छे, तथा गुरुनी सेवा पण करी छे. एवी रीतें में उत्तम कार्यो कर्यां छे. त्यारें दंडधरें कह्युं के, हवे पापोनां कार्यो पण कहो. त्यारें रौहिणेयें कह्युं के, साधुउनी सोबत करनार, एवा में कंइ पण अकार्य कर्युं नथी. त्यारें ते दंडधरें कह्युं के, माणसने स्वजावथीज जन्मनी साथे चोरी, परस्त्रीसेवन आदिक पण होय छे, माटे तेमांहेनुं जे कर्युं होय, ते कहो? त्यारे रौहिणेयें कह्युं के, अरे! एवा आचरणवालो माणस देवलोकें जइ शके? पछी ते लोकोयें ते सघली वात अजयकुमारने जइने कही, अने अज-

यकुमारें श्रेणिक राजाने कही संजलावी. पछी राजायें तेनापर साबिति नहीं यतां, नीतिने अनुसारें अजयकुमारनी सलाह लइ तेने छोडी मेल्यो. पछी ते चोर विचारवा लाग्यो के, मारा पितानी आज्ञाने धिक्कार छे; में आटला दिवससुधि छगाइने प्रजुनुं वचन सांजल्युं नहीं. आटलुं पण प्रजुनुं वचन जो में सांजल्युं न होत तो हुं क्यारनोयें यम-ने घेर पहोच्यो होत; माटे नहीं इछतां पण, जो में, ते वचन सांजल्युं तो मारुं जीवित रह्युं. माटे जेनो जरा पण उपदेश आवो फलदायक थाय छे, त्यारें तेनो समस्त उपदेश तो कोण जाणे केटलुंये फल मेलवी आपे तेवो हशे. एम विचारि प्रजुपासे जइ तेमनां चरणकमलने वांदी, ते विनति करवा लाग्यो के, आपनी वाणी प्राणीउने आ जयंकर जवरू-पी समुद्रमां नाव समान छे. आटला दिवसो तो हुं पिताना वचनोथी छ-गायो. माटे ते लोकोने धन्य छे, जेउ आपनी वाणीरूपी अमृतने कर्णरू-पी अंजलीयें करीने पीयेछे. में पापियें तो कानो ढांकीने पण जो तमारी वाणी सांजली, तो आ कष्टथी उगर्यो. माटे जेम आपें मने मरणथी ब-चाव्यो, तेम हवे आ संसाररूपी समुद्रथी पण बचावो? त्यारें प्रजुए पण दया लावीने, तेने मोक्ष देनारी साधुधर्मनी देशना आपी. त्यारें प्रबोध पामीने तेणें कह्युं के, हे जगवन्! हुं यतिधर्मने योग्य छुं के नहीं? त्यारें प्रजुए तेने योग्य कहेवाथी, तेणें कह्युं के, हे विजो, हुं दीक्षा ल-इश, पण मारे कंइक श्रेणिक राजासाथे वात करवी छे. त्यारें श्रेणिकें कह्युं के, शंकारहित तारे जे बोलवुं होय, ते बोल? त्यारें तेणें कह्युं के, हे राजन्, तारा नगरने लुटनार हुंज रौहिणेय चोर छुं; वली आ प्रजुना वचनथी हुं अजयकुमारनी बुद्धिने पण जीती गयो छुं. माटे हवे तमारे कोइ बीजा चोरमाटे तपास करवी नहीं माटे हवे कोइ माणसने मोक-लो, के जेथी हुं तेने सघलो चोरीनो माल देखाडुं, अने पछी दीक्षा लइ ने हुं मारो जन्म सफल करुं. पछी श्रेणिकना हुकमथी अजयकुमार तथा नगरना लोको पण कौतुकथी तेनीसाथे गया. पछी तेणे अजयकुमारने पोतानुं स्थानक बताव्युं; अजयकुमारें पण, सर्वेनो माल धणीधणीने सों-पी दीधो. पछी तेणें पोतानां माणसोने पण समजावीने, पोते प्रजुपासे आव्यो. पछी श्रेणिक राजायें करेला महोत्सवपूर्वक तेणें प्रजुपासे दीक्षा

लीधी. त्यां तेणे कर्मोना नाशमाटे चोथथी मांडी छ माससुधीना उपवासनुं तप कर्युं. एवी रीतें तपथी जावसंलेखना करीने, तेणें वीरप्रभुनी आज्ञाथी पर्वतपर जइ पादपोपगम नामनुं अनशन कर्युं; तथा त्यां शुभ ध्यानमां रहीने, पंच परमेष्टिने नमस्कार करतां थकां, काल करी ते स्वर्गे गयो. माटे एवी रीतें चोरीथी निवृत्त थएलो माणस रौहिणेयनी पेठे तुरत स्वर्गे जाय छे, माटे बुद्धिमानें उजय लोकमां विरुद्ध एवी चोरी करवी नहीं. एवी रीतें रौहिणेयनी कथा जाणवी.

हवे चोरीना अति परिहारने कहे छे.

दूरे परस्य सर्वस्व, मपहर्त्तुमुपक्रमः ॥
उपाददीत नादत्तं, तृणमात्रपि क्वचित् ॥ ७४ ॥

अर्थः– बीजानां धनने हरवानो यत्न करवो, ते तो दूर रह्युं, पण तृणमात्र पण कोइनुं वगर दिधेलुं न लेवुं.

हवे बे श्लोकथी चोरी नहीं करनारने फल बतावे छे.

परार्थग्रहणे येषां, नियमः शुद्धचेतसां ॥
अन्यायांति श्रियस्तेषां, स्वयमेव स्वयंवराः ॥ ७५ ॥
अनर्था दूरतो यांत्ति, साधुवादः प्रवर्त्तते ॥
स्वर्गसौख्यानि ढौकंते, स्फुटमस्तेयचारिणां ॥ ७६ ॥

अर्थः– जे शुद्ध चित्तवालाउने परधन लेवामां नियम छे, तेउने संपदाउ पोतानी मेले प्राप्त थाय छे. वली आपदाउ तो तेनाथी दूर जाय छे, तथा तेनी कीर्त्ति फेलाय छे. तेम परलोकमां तेउने स्वर्गनुं सुख मले छे.

माटे अग्निनुं पान करवुं सारुं, सर्पना मुखनुं चुंबन करवुं सारुं, झेर पीवुं सारुं, पण परनुं धन हरवुं नहीं. धननो लोजी माणस, जाइ, पिता, स्त्री, दीकरो, तथा गुरुने पण मारी नाखे छे.

हवे आ लोकसंबंधि तथा परलोकसंबंधि अब्रह्मना फलने देखाडता थका, गृहस्थने उचित ब्रह्मचर्य व्रतनुं स्वरूप कहे छे.

षंढत्वमिंद्रियछेदं, वीक्ष्याब्रह्मफलं सुधीः ॥
नवेत्स्वदारसंतुष्टो, ऽन्यदारान् वा विवर्जयेत् ॥ ७७ ॥

अर्थः– बुद्धिमान् माणसे नपुंसकपणाने, तथा इंद्रियना छेदने (राजादिकें करेला) अब्रह्मनुं फल जाणीने, पोतानी स्त्रीथी संतुष्ट थइने, परस्त्रीओनो त्याग करवो.

हवे सामान्यपणाथी अब्रह्मनां दूषणो कहे छे.

रम्यमापातमात्रे यत्, परिणामेऽति दारुणं ॥
किंपाकफलसंकाशं, तत्कः सेवेत मैथुनं ॥ ७८ ॥

अर्थः– प्रारंभमां मनोहर, अने परिणामें भयंकर, एवा किंपाक नामना वृक्षनां फलसरखा मैथुनने कोण सेवे?

हवे मैथुननुं परिणामें भयंकरपणुं देखाडे छे.

कंपः स्वेदः श्रमो मूर्छा, भ्रमिर्ग्लानिर्बलक्षयः ॥
राजयक्ष्मादिरोगाश्च, भवेयुर्मैथुनोत्थिताः ॥ ७९ ॥

अर्थः– कंप, पसीनो, थाक, मूर्छा, भ्रम, शरीरनी पीडा, तथा शक्तिनो नाश, अने क्षय, श्वास आदिक रोगो पण मैथुनथी थाय छे. हवे मैथुनमां अहिंसानो (दयानो) पण अभाव छे, एम देखाडे छे.

योनियंत्रसमुत्पन्नाः, सुसूक्ष्मा जंतुराशयः ॥
पीड्यमाना विपद्यंते, यत्र तन्मैथुनं त्यजेत् ॥ ८० ॥

अर्थः–योनिरूपी यंत्रमां उत्पन्न थता सूक्ष्म जंतुओना समूहो पीडाता थका नाश पामे छे. माटे एवा मैथुननो त्याग करवो.

टीकाः–स्त्रीनी योनिमां दृष्टिने गोचर न थाय, एवा सूक्ष्म जंतुओ उत्पन्न थाय छे, मैथुन वखते, रुनी बनावेली नलीमां, तपावेला लोखंडना सलीयाने नाखवाथी जेम रुनो नाश थाय छे, तेम ते जंतुओ पण नाश थवाथी हिंसा लागे छे.

हवे योनिमां जंतुओनो सद्भाव, संवादथी दृढ करे छे. अने तेवो सद्भाव वात्स्यायन ऋषि, के जेणें कामशास्त्र बनावेलुं छे, ते पण कहे छे; हवे अहीं कंइ ते शास्त्रनुं प्रमाण नथी ग्रहण करता, कारण के, जैनसिद्धांतो कंइ अन्यना प्रमाणने आधीन नथी. पण जेओ कामने पण प्रधान गणे छे, एवा वात्स्यायन आदिक ऋषिओयें पण योनिमां जंतुओनी प्राप्ति कहेली छे. ते वात्स्यायननो कहेलो श्लोक पण नीचे प्रमाणे छे.

रक्तजाः कृमयः सूक्ष्मा मृदुमध्याधिशक्तयः ॥
जन्मवर्त्मसु कंडूतिं, जनयंति तथाविधां ॥ ८१ ॥

अर्थः—स्त्रीउंनी योनिउंमां रुधिरथी उत्पन्न थता, थोडी, मध्यम तथा अधिक शक्तिवाला सूक्ष्म जंतुउं, तेउंनी शक्ति प्रमाणे अंदर खरज उत्पन्न करेछे.

हवे जे माणस, कामज्वरनां औषधरूप मैथुनने कहे छे, तेने माटे कहे छे.

स्त्रीसंजोगेन यः काम, ज्वरं प्रतिचिकीर्षति ॥
स हुताशं घृताहुत्या, विध्यापयितुमिच्छति ॥ ८२ ॥

अर्थः— जे माणस स्त्रीना संजोगथी कामज्वरनो इलाज करवानी इच्छा करे छे, ते माणस अग्निमां घी होमीने तेने ठारवानी इछा करे छे. कारण के, कामज्वरनी शांतिमाटे तो वैराग्यजावना, अने धर्मशास्त्रोनुं श्रवण उपयोगी छे. अने मैथुन तो जव ज्रमणनुं कारण छे.

हवे तेज देखाडे छे.

वरं ज्वलदयःस्तंज, परिरंजो विधीयते ॥
न पुनर्नरकद्वारं, रामाजघनसेवनं ॥ ८३ ॥

अर्थः— बलता (तपावेला) लोखंडना स्तंजने आलिंगन करवुं, ते उत्तम छे, पण नरकनां द्वाररूप स्त्रीनुं जघन सेववुं ए उत्तम नथी.

हवे स्त्रीउं सघला गुणोने नाश करनारी छे, ते कहे छे.

सतामपि हि वामभ्रू, र्ददाना हृदये पदं ॥
अजिरामं गुणग्रामं, निर्वासयति निश्चितं ॥ ८४ ॥

अर्थः— हृदयमां धारण करेली स्त्री, उत्तम माणसोना मनोहर गुणोना समूहने खरेखर नाश करे छे. (वली आ श्लोकमां श्लेषित दृष्टांत ए छे, के, कोइ दुष्ट अधिकारी गाममां आव्याबाद लोजादिकथी ते गामनो नाश करे छे.) एम टीकामां कहेलुं छे.

हवे ते स्त्रीउंना स्वाजाविक दोषो देखाडी, मैथुननुं दूषण देखाडे छे.

वंचकत्वं नृशंसत्वं, चंचलत्वं कुशीलता ॥
इति नैसर्गिका दोषा, यासां तासु रमेत कः ॥ ८५ ॥

अर्थः— स्त्रीउंमां, ठगाइ, निर्दयता, चपलता, तथा दुःशीलता, एट-

ला तो स्वाजाविक दोषो ढे, माटे तेउं साथे कोण क्रीडा करे? हवे तेउं-नां असंख्यात दूषणो कहे ढे.

प्राप्तुं पारमपारस्य, पारावारस्य पार्यते ॥
स्त्रीणां प्रकृतिवक्राणां, डुश्चरित्रस्य नो पुनः ॥ ८६ ॥

अर्थः– अपार एवा समुद्रनो पार तो मेलवी शकाय, पण स्वजाव-थीज वक्र एवी स्त्रीउंनां डुराचरणोनो पार पामी शकाय नहीं. तेउंनुं डुराचरण हवे देखाडे ढे.

नितंबिन्यः पतिं पुत्रं, पितरं भ्रातरं क्षणात् ॥
आरोपयंत्यकार्येऽपि, डुर्वृत्ताः प्राणसंशये ॥ ८७ ॥

अर्थः– नितंबिनीउं एटले यौवनना मदवाली, डुःशील स्त्रीउं, सूर्य-कांताए जेम प्रदेशी राजाने, तेम पतिने, चुलनीयें जेम ब्रह्मदत्तने, तेम पुत्रने, पिताने, तथा जीवयशाए जेम जरासंधने तेम जाइने पण, क्षण-वारमां प्रयोजनविना, अथवा अल्प प्रयोजन माटे पण प्राणना संदेहपर चडावे ढे; उपलक्षणथी मृत्युपर्यंत कष्ट आपे ढे,

वली पण तेनां दूषणो देखाडे ढे.

जवस्य बीजं नरक, द्वारमार्गस्य दीपिका ॥
शुचां कंदः कलेर्मूलं, डुःखानां खनिरंगना ॥ ८८ ॥

अर्थः– स्त्री, जव एटले संसाररूपी अंकुरानां बीज सरखी, नरक-द्वारना मार्गमां दीवा सरखी, शोकनुं तथा क्लेशनुं मूल, अने डुःखोनी खाणरूप ढे. एवी रीतें यतिधर्ममां अनुरक्त एवा गृहस्थप्रत्यें अब्रह्मना सामान्य दोषो कह्या; हवे पोतानीज स्त्रीमां रक्त एवा गृहस्थोने आ-श्रीने, पांच श्लोकोथी स्त्रीना साधारण दोषो कहेढे.

मनस्यन्यद्वचस्यन्य, त्क्रियायामन्यदेव हि ॥
यासां साधारणस्त्रीणां, ताः कथं सुखहेतवः ॥ ८९ ॥

अर्थः– जेउंने मनमां बीजो, वचनमां बीजो, तथा क्रियामां पण वली कोइ बीजो पुरुष होय ढे, एवी वेश्याउं सुखना हेतुरूप शी रीतें थइ शके?

मांसमिश्रं सुरामिश्र, मनेकविटचुंबितं ॥
को वेश्यावदनं चुंबे, दुच्छिष्टमिव भोजनं ॥ ९० ॥

अर्थः– जलचर स्थलचर आदिक जीवोनां मांस खाधाथी दुर्गंध मारतुं, तेम मदिराथी व्याप्त थयेलुं, घणा विट एटले नीच पुरुषोए पण चुंबन करेलुं, एवुं जे वेश्यानुं मुख, तेने उच्छिष्ट (एठां) भोजननी पेठे कोण चुंबन करे ? ! ! (वली मांसयुक्त तथा मदिरायुक्त, ए बन्ने विशेषणो उच्छिष्ट भोजनने पण जोडी शकाय.)

अपि प्रदत्तसर्वस्वात्, कामुकात्क्षीणसंपदः ॥
वासोऽप्याछेत्तुमिछंति, गछतः पण्ययोषितः ॥ ९१ ॥

अर्थः– धनाढ्य अवस्थामां सर्वस्व आपी देनार, तथा पछी पण्यना (भाडाना) क्षयथी धनरहित थनार, एवा पोताने घेर जता कामुक पासेथी, तेनां कपडां खुंचवी लेवाने वेश्याओ इछे छे.

न देवान्नगुरूनापि, सुहृदोन च बांधवान् ॥
असत्संगरतिर्नित्यं, वेश्यावश्यो हि मन्यते ॥ ९२ ॥

अर्थः– लुच्चा, जुगारी, रंडीबाज विगेरेनी सोबतमां रहेलो, वेश्याने वश थएलो माणस, खरेखर देव, गुरु, मित्र के बांधव कोइने पण गणकारतो नथी.

कुष्टिनोपि स्मरसमान्, पश्यंतीं धनकांक्षया ॥
तन्वतीं कृत्रिमस्नेहां निःस्नेहां गणिकां त्यजेत् ॥ ९३ ॥

अर्थः– कुष्टिओने (कोढिआओने) पण (केवल) धननी इछाथी, कामदेवसरखा गणती, अने कृत्रिम (उपर उपरथी) स्नेहने धारण करती एटले परमार्थथी प्रीतिविनानी, एवी गणिकाने तजवी.

एवी रीतें स्वस्त्रीसंतोषी गृहस्थने वेश्यापासे जवाना दोषो देखाड्या; हवे परस्त्रीगमनना दोषो देखाडे छे.

नासक्त्या सेवनीया हि, स्वदारा अप्युपासकैः ॥
आकरः सर्वपापानां, किं पुनः परयोषितः ॥ ९४ ॥

अर्थः– सर्व विरतिनी लालसावाला, अने देशविरतिना परिणाम-

वाला) श्रावकोए, आसक्तपणाथी स्वस्त्रीने (पोतानी स्त्रीने) पण नहीं सेववी जोइयें, त्यारें (कपट, मृषावाद आदिक) सर्व पापोनी खाणसमान परस्त्रीनी तो वातज शी करवी ? अर्थात् परस्त्रीनो तो सर्वथा त्याग करवो जोइयें.

हवे परस्त्रीउंनुं पापकारीपणुंज देखाडे छे.

स्वपतिं या परित्यज्य, निस्त्रपोपपतिं नजेत् ॥
तस्यां क्षणिकचित्तायां, विश्रंनः कोऽन्ययोषिति ॥ ए५ ॥

अर्थ.— जे लज्जारहित थइने, पोताना पतिने तजी दइने, बीजा पुरुषने सेवे, एवी चलचित्तवाली परस्त्रीमां विश्वास शानो राखवो ? (अर्थात् नहींज राखवो.)

हवे परस्त्रीमां आसक्त थएलाने शिखामण आपे छे.

नीरोराकुलचित्तस्य, दुःस्थितस्य परस्त्रियां ॥
रतिर्नयुज्यते कर्त्तु, मुपशूनं पशोरिव ॥ ए६ ॥

अर्थः— परस्त्रीमां रति करवी लायक नथी, कारण के, तेथी तेणीना पति अने राजानी बीक लागे छे, वली " आ, मने जोइ गयो, आणे मने जाण्यो " इत्यादिक बीकथी चित्त पण आकुल थाय छे; वली ते कामनाटे देवकुलादिकमां शय्या आसन विगेरे विना सुवुं बेसवुं पडे छे. अने तेथी ते कुतरानी नजदीकमां वध करवालायक पशु सरखो थाय छे.

प्राणसंदेहजननं, परमं वैरकारणं ॥
लोकद्वयविरुद्धं च, परस्त्रीगमनं त्यजेत् ॥ ए७ ॥

अर्थः— माटे, प्राणना संशयने उत्पन्न करनारुं, तथा वैरना उत्कृष्ट कारणसरखुं, अने तेथी आ लोक अने परलोक, बन्नेमां विरुद्ध, एवुं जे परस्त्रीगमन, तेने तजवुं.

हवे परस्त्रीगमनना आ लोक अने परलोकनां पण दुःखदायिपणाने प्रगट रीतें देखाडे छे.

सर्वस्वहरणं बंधं, शरीरावयवछिदां ॥
मृतश्च नरकं घोरं, लनते पारदारिकः ॥ ए८ ॥

अर्थः— परस्त्री सेवनारने (आ लोकमां) तेना धननुं हरण थाय छे. दोरडां आदिकथी बंधन थाय छे, तथा शरीरना अवयवोनो (हाथ, नाक, कान विगेरेनो) छेद थाय छे. अने मृत्युबाद परलोकमां भयंकर नरक मले छे.

हवे उपपत्तिपूर्वक परस्त्रीगमननो प्रतिषेध करे छे.

स्वदाररक्षणे यत्नं, विदधानो निरंतरं ॥
जानन्नपि जनो दुःखं, परदारान् कथं व्रजेत् ॥ ९९ ॥

अर्थः— पोतानी स्त्रीसाथे कोइ चालतो होय, ते जोइने पोताने थतां दुःखने जाणतां छतां पण, पोतानी स्त्रीना रक्षणमाटे भींत, वंडी, कील्लो, चोकीदार विगेरे राखवामां यत्न करतो थको, ते परस्त्रीगमन केम करी शके ?

हवे परस्त्रीगमन तो एक बाजु रह्युं, पण तेम करवानी इछा पण फायदाकारक नथी, तेने माटे कहे छे.

विक्रमाक्रांतविश्वोऽपि, परस्त्रीषु रिरंसया ॥
कृत्वा कुलक्षयं प्राप, नरकं दशकंधरः ॥ १०० ॥

अर्थः— पराक्रमथी दबावेलुं छे जगत् जेणें एवो पण रावण, परस्त्रीगमननी इछाथी पोताना कुलनो क्षय करीने नरकें गयो छे.

टीकाः— रावणें फक्त हजु तो परस्त्री जे सीता, तेनीसाथे विलास करवानी इछा करी, तेमां पण तेने नरकरूपी परलोकसंबंधि फल मल्युं; अने आ लोकमां तेणें कुलनो क्षय कर्यो. हवे ते क्षय जो के रामआदिकें कर्यो छे, तो पण तेमां कारणरूप ते रावण होवाथी, तेणेंज कर्यो मनाय. अहीं कोइ शंका करे के, परस्त्रीसेववाथी परलोकसंबंधि फलना विचार करवानी कंइ जरुर नथी, पण बलवानोने आलोकमां तो तेनुं कंइ फल मलतुं नथी. तेने माटे कहे छे. जे आ रावणे पोताना पराक्रमथी आखा जगतने पण दबाव्युं हतुं, तेने पण अनर्थ भोगववो पड्यो छे, त्यारें बीजा बलवाननी तो वातज शी करवी? ते रावणनुं दृष्टांत कहे छे.

आ पृथ्वीमां रहेला राक्षसद्वीपमां सुवर्णमय लंका नामनी एक प्रसिद्ध नगरी छे. त्यां पुलस्त्यकुलमां मणिसमान, महाबलवान्, रावण नामें

विद्याधर राजा थयो. तेने महापराक्रमी, एवा कुंजकर्ण अने विजीषण नामें बे जाइयो हता. एक दहाडो पूर्वपुरुषोए मेलवेली नवरत्नोनी माला तेणें घरमां जोइ. ते तेणें कंठमां पेहेरी तेथी तेमां तेना प्रतिबिंबो पड-वाथी, ते जगतमां दशमुखवालो प्रसिद्ध थयो. तेनी पासे प्रज्ञप्ति प्रमुख विद्याउं, तेनी सेनानी पेठे वसती हती. पछी तेणें एक लीलामात्रमां जरता-र्धने जीत्युं, तो पण तेना हाथनी खरज हजु मटी नही. हवे वैताढ्य ना-में पर्वतपर, जेणें पूर्वजवमां इंद्रनी पदवी जोगवेली छे. एवो इंद्र नामें विद्याधर हतो, ते पोताना पराक्रमना वशथी पोतानेज इंद्र मानतो हतो. तेणें पोतानी राणीनुं नाम इंद्राणी, हथीयारनुं नाम वज्र, हाथीनुं नाम ऐरावण, घोडानुं नाम उच्चैःश्रवा, सारथिनुं नाम मातलि, तथा सोम, यम, वरुण, अने कुबेर एवी रीतें चार सुजटोनां पण नामो पाड्यां. तेणें सघ-ला राजाउंने तृण समान गणी रावणने पण गणकार्यो नहीं. तेथी रावण कोपायमान थइने लश्करसहित तेनी सामे लडवा चाल्यो. ते विद्याना बलथी सैन्यसहित समुद्रने पण उलंगी गयो; तथा तुरत वैताढ्य पासे पहोंच्यो, रावणने आवतो जोइ, इंद्र पण तुरत तेनी, सामे लडवा आव्यो. रावणें दूरथीज मोकलेलो एक दूत इंद्रपासे आवीने तेने कहेवा लाग्यो के, जे केटलाक राजाउं विद्या विगेरेना बलथी शोजता हता तेउंए पण रावणनी सेवा करी छे. हवे आटलो काल तो तेनी विस्मृतिमां, अने तमारा आर्जवपणाथी गयो, पण हवे तमारे तेनी जक्ति करवानो अव-सर छे. माटे कां जक्ति देखाडो, अने कांतो शक्ति देखाडो ? अने ते ब-न्नेमांथी कंइ नहीं देखाडो तो, तुरत तमारो नाश थशे. त्यारें इंद्रें कह्युं के, तेने सेवनारा तो बिचारा गरिबडा राजाउं जाणवा, अने हवे शुं तेने मारी पासेथी पण सेवा लेवी छे ? अने आ जेटलो काल गयो, तेटलो तो रावणें जाणवो के, पोतानां सुखमां गयो, पण आ हवेनो वखत तो तेने कालरूप आवेलो छे. माटे जइने तारा स्वामीने कहे के, ते माराप्रत्ये ज-क्ति अथवा शक्ति देखाडे, नहींतर तुरत तेनो नाश थशे. ते वात दूतें जइ रावणने कहाथी ते पण क्रोधांध थइने लश्करसहित वेगथी चाल-वा लाग्यो. पछी बन्नेनां लश्करो मलवाथी पुष्करावर्त मेघनी पेठे बाणो आदिक हथियारोनो वर्षाद वरसवा लाग्यो. पछी रावणनापुत्रें पिताने

नमस्कार करी इंद्रने लडवामाटे पोतानी सामे बोलाव्यो. पछी इंद्र अने रावणनो पुत्र मेघनाद बन्ने मदांध थइ हाथीनी पेठे द्वंद्वयुद्धथी लडवा लाग्या. पछी एटलामां मेघनादें इंद्रने जीतीने नीचे पाड्यो, अने तेने बांधी लीधो, अने तेने तुरत पोताना पिताने सोंप्यो. पछी रावणें तेने बलवान् चोकीदारोथी रक्षण कराएला केदखानामां नाख्यो, पछी, सोम, वरुण, यम, अने कुबेरें, गुस्से थइने रावणने घेर्यो. त्यारें बलवान् एवो रावण पण तेउनी साथे लडवा लाग्यो. तेणें यमना दंडनो, कुबेरनी गदानो, वरुणना पाशनो, तथा सोमना धनुष्यनो नाश कर्यो. पछी तेउने तेणें पाडीने बांधी लीधा. एवी रीतें इंद्रने जीतीने ते पाताललंका जीतवा चाल्यो. त्यांना चंद्रोदर राजाने जीतीने तेणें खरदूषणप्रत्ये पोतानी बेहेन तथा राज्य आप्युं. ते खरदूषणोयें चंद्रोदरनुं सर्वस्व लइ लीधुं, पण तेनी एक गर्भिणी राणी त्यांथी नासीने क्यांक चाली गइ हती. पछी त्यांथी ते लंकामां जइ सुखें समाधें राज्य करवा लाग्यो. हवे एक दहाडो ते विमानमां बेसीने आमतेम भमतो थको मरुत् राजाए प्रारंभ करेला महायज्ञने जोइने ते विमानथी नीचे उतर्यो, त्यारें ते राजाए पण तेने आदरसत्कार दीधो. त्यारें रावणें कह्युं के, अरे आ, नरक आपनारो यज्ञ शामाटे कराय छे, सर्वनो प्रभुए धर्म तो अहिंसामय कहेलो छे, अने ते आवी रीतें पशुहिंसाथी शुं थाय छे? माटे बन्ने लोकमां अहितकारी एवो यज्ञ तुं कर नहीं; अने जो करीश, तो अहीं मारा केदखानानुं अने परलोकमां नरकनुं दुःख तारे सहन करवुं पडशे. ते सांभली मरुत राजाए यज्ञ करवो मांडी वाल्यो, कारण के, रावणनी आज्ञा नउलंघी शकाय, तेवी हती. पछी ते रावण त्यांथी मेरु तथा अष्टापद पर्वतपर जात्रा करवामाटे गयो. त्यां शाश्वता अने अशाश्वता मंदिरोनी जात्रा करी, ते पाछो पोताने स्थानकें आव्यो.

हवे अयोध्या नगरीमां महासंपदावालो दशरथ नामें राजा हतो. तेने कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा, अने सुप्रभा नामें चार राणीउ हती. तेमांथी कौशल्याने राम, कैकेयीने भरत, सुमित्राने लक्ष्मण, तथा सुप्रभाने शत्रुघ्न नामें पुत्रो हता. ते चारे पुत्रो जाणे ऐरावणना चार दांतो होय नहीं तेम शोभता हता. तेउमांथी राम, जनकनी पुत्री, तथा भामंडल-

भी बेहेन सीताने परण्या हता. एक दहाडो राजाए चारे राणीउने जिनेश्वर प्रजुना स्नात्रनुं पाणी मंगलमाटे मोकल्युं. ते पाणी सुमित्राने पाछलथी पहोंच्युं, तेथी ते रीसाइ गइ, त्यारें राजा पोते तेणीने मनाववा गयो. त्यां तेणें एक ध्रुजता, दांतविनाना, श्वेत केशोवाला, पगले पगले स्खलना पामता, तथा मृत्युनी मागणी करता, एक घरडा कंचुकिने तेथें जोयो. तेने जोइ राजाए विचार्युं के, मारी पण जेटलामां आवी अवस्था न थाय, तेटलामां मारे चोथा पुरुषार्थमाटे (मोक्षमाटे) यत्न करवो जोइयें. एम विचारि तेणें तुरत राम अने लक्ष्मणने बोलाव्या. त्यारें कैकेयी राणीए राजा पासेथी पेहेलां मेलवेलां बे वरदानमांथी एकें करीने जरतमाटे राज्य, तथा बीजाए करीने, राम, लक्ष्मण अने सीतानो चौद वर्षसुधि वनवास माग्यो. त्यारें राजाए पण पोतानुं वचन पालवामाटे, तेम कर्याथी, सीता अने लक्ष्मण सहित राम, दंडका वनमां गया, अने दशरथ पंचवटीमां रह्या. एटलामां त्यां बे चारण ऋषि आववाथी राम, लक्ष्मण तथा सीताए तेमनी सत्कारपूर्वक सेवा करी तेथी त्यां देवोए गंधोदकनी वृष्टि करी; अने ते वृष्टिना लोजथी जटायु नामें गीधोनो राजा त्यां आव्यो. त्यां ते मुनिउए दीधेली देशना सांजलवाथी ते जटायुने जातिस्मरण ज्ञान थयुं, अने तेथी ते सीता पासे आवीने बेठो. हवे लक्ष्मण फल आदिक लेवा माटे बहार गया, त्यारें तेमणे त्यां एक तलवार जोवाथी, कौतुकथी जोवा माटे उपाडी. तेनी तीक्ष्णतानी परीक्षामाटे तेणें पासेनी वांसनी जालीमां मारी जोइ. तेथी तेनी अंदर रहेला कोइ माणसनुं माथुं कपाइ जइ नीचे पड्युं. ते जोइ लक्ष्मणें विचार्युं के, धिक्कार छे मने के, में कोइ निरपराधी माणसने मारी नाख्यो. पछी तेणें रामपासे जइने, ते सघलुं वृत्तांत कह्युं, तथा ते तलवार पण देखाडी. त्यारें रामें कह्युं के, आ सूर्यहास खड्ग छे, माटे आने साधनार माणसने तें हण्यो छे, अने तेथी त्यां खरेखर तेनो कोइ उत्तरसाधक पण होवो जोइयें.

हवे एटलामां रावणनी बेहेन अने खरदूषणनी स्त्री चंद्रनखाए त्यां आवी, पुत्रने मृत्यु पामेलो जोयो. ते जोइ हे शंबुकपुत्र ! तुं क्यां गयो ? एम रडवा लागी; एटलामां तेणें लक्ष्मणनां पगलां जोयां तेथी तेणीए

अनुमान कर्युं के, जेनां आ पगलां छे ते माणसें मारा पुत्रने मार्यो छे; एम विचारि ते पगलांने मार्गे जवा लागी. एटलामां तेणें सीता अने लक्ष्मण सहित रामने एक वृक्षतले बेठेला जोया. मनोहर रामने जोइ तेणीने काम व्याप्यो. तेथी तेणीए मनोहर रूप करी, रामने विलास-माटे मागणी करी; त्यारें रामें हसीने कह्युं के, हुं तो स्त्रीसहित छुं, माटे स्त्रीविनाना लक्ष्मणने तुं भज ? त्यारें तेणीए लक्ष्मणनी प्रार्थना करवाथी लक्ष्मणें कह्युं के, तें पेहेलां मोटा भाइनी मागणी करी छे, तेथी हवे तुं माता समान छे, माटे ते वात बनशे नहीं. तेथी तेणीए अत्यंत गुस्से थइने, खर आदिकने पुत्रना मृत्युनो वृत्तांत कह्यो. तेथी ते चौद हजार विद्याधरोनी साथे रामने उपद्रव करवाने आव्यो. त्यारे तेउनी साथे लक्ष्मणें लडवाने रामनी रजा मागी; त्यारे रामें पण कह्युं के, हे वत्स तुं, जा? अने फतेह कर? वली तने जो कंइ संकट पडे, तो मने बोलाववामाटे सिंहनाद करजे? पछी लक्ष्मण पण त्यां जइ तेमने बाणोथी मारवा लाग्यो. एवी रीतें लडाइ चालती वखतें चंद्रनखायें रावणपासे जइ सघलुं वृत्तांत कही पोताना भरतारने मदद करवा कह्युं. अने वली कह्युं के, रामनी स्त्री सीता जेवी में आ दुनीयामां कोइ मनोहर स्त्री जोइ नथी; माटे तेणीने तुं ग्रहण कर? ते सांभली रावण पण पुष्पक विमानमां बेसी त्यां आव्यो. पण अत्यंत तेजस्वी रामने जोइ, तेनाथी डरीने ते दूर उभो; तथा रामना बेठां सीताना हरणने अशक्य जाणी, तेणें अवलोकनी विद्यानुं स्मरण कर्युं. त्यारें ते विद्या पण हाथ जोडी तेनी सामे आवी उभी. त्यारें रावणें तेणीने कह्युं के, मने सीताना हरणमां तुं मदद कर? त्यारे तेणीए कह्युं के, वासुकीना मस्तकपरथी रत्न लेवुं सारुं, पण रामपासेथी सीता लेवी देवोने पण मुश्केल छे. पण एक उपाय छे के, जो संकेत करेला लक्ष्मणना सिंहनादथी राम त्यां जाय, तो तुं सीताने लेइ शके; त्यारे रावणें तेम करवानुं केहेवाथी तेणीयें दूर जइ लक्ष्मणने मलतोज सिंहनाद कर्यो. ते सांभलतांज राम सीताने छोडी त्यां गयो. एटले रावणें सीताने उपाडी विमानमां बेसाडी कह्युं के, तने हरनार हुं रावण छुं. एम कही ते आकाशमार्गे चालवा लाग्यो. त्यारे सीता तो हे राम, हे लक्ष्मण, हे भाइ, मने आ हरी जाय छे, एम कही पोकार करवा लागी. ते जोइ जटायुध

कह्युं के, हे पुत्री, तुं डर नहीं, एम कही ते दोड्यो, अने पोताना नखो रावणनी छातीमां मारवा लाग्यो. त्यारे रावणें गुस्से थइ तेने तलवारथी मारी नाख्यो, अने, तेथी ते नीचे पड्यो. पछी रावणें लंकामां जइ, सीताने बगीचामां राखी; तथा तेणीने लोभाववामाटे तेणें त्रिजटाने हुकम कर्यो.

हवे रामने तो रस्तामांज लक्ष्मण सामा मळ्या, त्यारें लक्ष्मणें कह्युं के सीताजीने एकलां मुकी, तमो अहीं केम आव्या? त्यारे रामें कह्युं के, तमारा सिंहनादथीज हुं अहीं आव्यो छुं. त्यारे लक्ष्मणें कह्युं के, में सिंहनाद कर्यो नथी, माटे खरेखर आपणने कोइयें ठग्या छे. तमोने दूर करवानेज कोइयें छलथी सिंहनाद कर्यो छे. पछी तेउ स्थानकें आव्याबाद सीताने नही जोवाथी राम मूर्छा खाइ पड्या. पछी ज्यारे तेने संज्ञा आवी, त्यारें लक्ष्मणें कह्युं के, हवे आपणे ते बाबत प्रयत्न करवो. एटलामां कोइ एक माणसें आवी तेमने नमस्कार कर्यो, त्यारें तेउये तेने पुछ्याथी ते पोतानुं वृत्तांत कहेवा लाग्यो, के, पाताललंकाना राजा मारा पिता चंद्रोदरने मारीने रावणें खरने गादीयें बेसाड्यो छे. ते वखते मारी माता गर्भिणी होवाथी त्यांथी नासी गइ. अने तेणीयें मने जन्म आपी, मारुं विराध नाम पाड्युं छे. हवे एक दहाडो कोइ मुनियें मारी माने कह्युं के, ज्यारे दशरथना पुत्र खरादिकने मारशे, त्यारे ते तने पाताललंकानो राजा करशे. माटे सेवकनोआजे हवे ते अवसर आव्यो छे. ते सांभळी रामें तेने पाताललंकानुं राज्य आप्युं. त्यां तेने बेसाडवाने ज्यारें लक्ष्मणसहित राम जता हता, त्यारे रस्तामां विद्याविनाना भामंडलना एक चाकरने तेणें जोयो. तेणें रामने नमस्कार करी सीता रावण अने जटायुनुं वृत्तांत कह्युं. पछी रामें पाताललंकामां जइ, विराधने गादीये बेसाड्यो.

हवे साहसगति नामें कोइ विद्याधरोनो राजा, आकाशमां भमतो थको किष्किंधा नगरीपासे आव्यो. ते वखते त्यांनो सुग्रीव राजा बहार क्रीडा करवाने गयो हतो. ते वखते साहसगतियें त्यां सुग्रीवनी तारा नामनी मनोहर स्त्रीने अंतःपुरमां जोइ, तेणीने जोइ कामातुर थइ साहसगति सुग्रीवनुं रूप करी ते अंतःपुरमां दाखल थयो. जेटलामां ते अंतःपुरना द्वारपासे पहोंच्यो, तेटलामां सुग्रीव पण मेहेलना दरवाजापासे आव्यो, त्यारें द्वारपाळोए तेने अटकावी कह्युं के, राजा तो क्यारनो

अंदर गयो छे, तुं तो कोइ बीजो माणस छे एवी रीतें त्यां कोलाहल थवाथी, वालिना पुत्र चंद्ररािशए, अंतःपुरमां जता खोटा सुग्रीवने पण अटकाव्यो. पछी त्यां लश्कर विगेरेए एकठा थइ, तपास करतां बन्ने एक सरखा लाग्या. पछी त्यां तेउनां बन्नेना लश्करो वच्चे जयंकर रणसंग्राम थयो. त्यां खरा सुग्रीवें जूठा सुग्रीवने पोतासाथे लडवा माटे बोलाव्यो. पछी तेउ बन्ने बहुज जोरथी लडवा लाग्या. ज्यारे तेउनां हथियारो खुट्यां त्यारें, तेउ मुकुटथी लडवा लाग्या. एम लडता खरो सुग्रीव थाकी, जवाथी नगरनी बहार निकलीने रह्यो. जूठो सुग्रीव पण त्यां अस्वस्थ चित्तथी रह्यो. पण वालीना पुत्रें तेने पण अंतःपुरमां जवा दीधो नहीं. हवे खरो सुग्रीव त्यां विचारवा लाग्यो के, आ कोइ स्त्रीलंपट मारो वेरी छे. में तो पराक्रमहीन थइने वालीना नामने कलंक लगाड्युं. धन्य छे वालीने के, जेणें तृणनी पेठे राज्य तजीने परमपद मेलव्युं. वली मारो चंद्रराशि कुमार पण महा बलवान् छे, पण बन्नेना जेदने जाण्याविना ते कोने हणे? अने कोने न हणे? तोपण तेणें आटलुं सारुं कर्युं छे के, ते जूठा सुग्रीवने अंतःपुरमां पेसवा दीधो नथी. माटे हवे कोइ बलवाननो आश्रय लइने हुं तेने मारुं. माटे महाबलवान् एवा रावणनुं हुं शरणुं लेउं, पण ते तो स्त्रीलोलुपी होवाथी मारीज तारा स्त्रीनुं हरण करे माटे हवे तो खरने मारनार रामलक्ष्मणनुं शरण लेउं, कारण के, हमणांज तेणें विराधने पण राज्य आप्युं छे. वली ते हजु पण पाताललंकामांज रह्या छे. एम विचारि तेणें एक विश्वासी दूतने शिखामण आपीने मोकल्योः ते दूतें जइ विराधने नमस्कार करीने सघलो पोताना स्वामिनो वृत्तांत कही संजलाव्यो अने कह्युं के, अमारो स्वामी तारी मारफते रामलक्ष्मणनुं शरण लेवाने इच्छे छे. त्यारें तेणें कह्युं के, सुग्रीवने तुं अहीं तुरत लाव? ते सांजली दूतें आवीने ते वात सुग्रीवने कही. त्यारें ते पण तुरत पाताललंका प्रत्ये आव्यो. पछी विराधें तेने नमस्कारपूर्वक रामपासे तेडी जइ, तेनो सघलो वृत्तांत निवेदन कर्यो. पछी सुग्रीवें रामने कह्युं के, आपें मने आ दुःखमांथी मुक्त करवो. पछी रामें पण तेने मदद करवानुं कह्युं. पछी विराधें पण सुग्रीवने सीताना हरणनी वात जणाववाथी, तेणें पण रामने विनयथी कह्युं के, ज-

गलनुं रक्षण करता एवा तमोने जो के कोइनी मददनी अपेक्षा नथी, तो पण हुं कहुं छुं के, आपना प्रसादथी ज्यारे मारा शत्रुउनो नाश थशे, त्यारें हुं गमे तेम करीने पण सीतानी खबर लावीश. पछी तेउ सुग्रीवनी साथे किष्किंधा नगरीतरफ चाल्या. अने त्यां पहोंच्या बाद सुग्रीवें खोटा सुग्रीवने लडवामाटे बोलाव्यो. तेज वखते ते जूठो सुग्रीव पण तुरत लडवामाटे आव्यो, कारण के, ब्राह्मणो जेम भोजनमाटे, तेम शूरा लोको लडवामाटे आलसु थता नथी. पछी ज्यारे तेउ बन्ने लडवा लाग्या, त्यारें रामचंद्रजी तो क्षणवार सुधि चुप रह्या. पछी तेमणे धनुष्नो टंकार कर्यो, के तुरत जूठा सुग्रीवनी विद्या नाशी गइ. पछी रामें ते साहसगतिने तरछोड्यो के, लुच्चा, परस्त्री साथे विलास करवानी तुं इच्छा करे छे? एम कही रामें तेने एकज बाणथी मारी नाख्यो. पछी रामें तेने पण तेनी गादीपर बेसाड्यो.

हवे विराध पण लश्कर लइने सीताने शोधवा माटे त्यां आव्यो; भामंडल पण विद्याधरोना लश्कर सहित ते काममाटे त्यां आव्यो. अहीं सुग्रीवें पण जांबुवत् हनूमान्, तथा नील आदिक पोताना सामंतोने बोलाव्या. पछी विद्याधरोनी ते सेना पण त्यां आवते छते सुग्रीवें रामने कह्युं के, आपनी आज्ञा होय तो आ हनूमान् सीतानी खबर माटे लंकामां जाय. पछी रामें अनुज्ञापूर्वक एंधाण दाखल पोतानी वींटी तेने आपवाथी, ते पण पवननी पेठे आकाशमार्गे लंकातरफ दोड्यो. त्यां उद्यानमां जइ जुवे छे, तो रामनुं नाम जपती सीताने तेणें वृक्ष तले बेठेली जोइ. पछी तेणें वृक्षनी डालिउमां छपाइने सीताना खोलामां ते वींटी नाखी, ते जोइ सीता पण अत्यंत आनंद पामी. तेथी त्रिजटाए रावणने जइ कह्युं के, आटलो वखत तो सीता दिलगिरिमां हती, पण आज तो आनंदमां छे. त्यारें रावणें मंदोदरीने जइने कह्युं के, सीता हवे मारामां अनुरक्त थइ होय तेम लागे छे, माटे तेणीने जइ तुं समजाव? त्यारें ते पण सीतापासे जइ मिष्टवचनो बोलवा लागी के, रावण पण महापराक्रमी छे, अने तुं पण रूप अने लावण्यनो भंडार छे, माटे हवे तुं तेने परण? तेम हुं अने बीजी तेनी सघली स्त्रियो तारी दासीरूप थइने रहीशुं. त्यारें सीताए कह्युं के, अरे दुष्ट! कुट्टणी! तारा पतिनी पेठे ता-

छे, श्रथ मुख कोण जुए छे ? हमणां रामसहित लक्ष्मण अहीं आवशे अने खरादिकनी पेठे तारा जर्तारनो पण जाइउ सहित नाश थशे. माटे डुष्ट अहींथी चाली जा ? एवी रीतें तर्जना पामेली ते मंदोदरी पण गुस्से थइने त्यांथी चाली गइ. पछी हनुमानें वृक्षपरथी उतरी हाथ जोडीने, सीताने कह्युं के, लक्ष्मणसहित रामचंद्रजी कुशलक्षेममें वर्त्ते छे. तमारी तपासमाटे मने अहीं मोकलेल छे, अने हुं त्यां पाछो जइश, त्यारें ते पण शत्रुनो नाश करवामाटे अहीं आवशे. एवी रीतें जर्तारना समाचारने लावनार हनुमानने सीताए आशिष आपी. पछी हनुमानना उपरोधथी तथा रामचंद्रजीना समाचारनी खुशालीथी तेणीए उंगणीश उपवासनुं पारणुं कर्युं. पछी हनुमानें रावणनां ते उद्यानने जांगवा मांड्युं, त्यारें मालीउए ते वात रावणने जइने कही. पछी रावणें हुकम करेला माणसो तेने मारवामाटे आव्या, पण हनुमानें एकले तेउने मार्या. त्यारें रावणे गुस्से थइने इंद्रजितने तेने पकडवानो हुकम कर्यो. त्यारें इंद्रजित आवीने तेने पाशथी बांधीने रावणपासे लइ गयो. त्यारें हनुमानें त्यां पासने तोडी नाख्यो, तथा पगेथी रावणना मुकुटने हणीने ते उडी गयो. पछी ते त्यां लंकामां केटलोक उपद्रव करी, तुरत रामपासे आव्यो, तथा सघलो वृत्तांत कही संजलाव्यो. रामें पण तेने पुत्रनी पेठे छाती सरसो दाबीने आलिंगन दीधुं; तथा पछी सुग्रीव आदिकनी साथे लंकातरफ प्रयाण कर्युं, त्यां समुद्रपर पुल बांधीने तेउ सघला लंकापासे पहोच्या. तथा त्यां लंकाने घेरो घाल्यो.

हवे एटलामां बिजीषणें रावणने नमस्कार करी कह्युं के, आ रामचंद्र आवेला छे, माटे तेने तुं सीता पाछी आपी दे ? त्यारें रावणें कह्युं के, तुं तो कायर छे, माटे डरे छे. त्यारें बिजीषणे कह्युं के, राम अने लक्ष्मण तो एक बाजु रह्या, पण तेना एक योद्धा हनुमाननुं पण तें शुं पराक्रम जोयुं नहीं ? त्यारें रावणें तेने कह्युं के, तुं तो अमारो शत्रु छे, अने वेरीने मली गयो छुं; माटे निकल अहींथी ? एवी रीतें रावणें तरछोड्याथी ते रामपासे आव्यो, त्यारें रामें पण तेने कह्युं के, हुं तने लंकानुं राज्य आपीश. हवे रावणनी सेना पण शेहेर बहार नीकलवाथी बन्ने सेनाउं एकठी थइ. पछी रामनी आज्ञाथी हनुमान् आदिक योद्धाउं ल-

डवा लाग्या. अने तेथी केटलाक राक्षसो मराया, केटलाक पकडाया, तथा केटलाक नासी गया. तेथी कुंजकर्ण अने मेघनाद क्रोधायमान थइ अगाडी आव्या. त्यारें सुग्रीवें क्रोधायमान थइ, एक पर्वतने उपाडी कुंजकर्णपर फेंक्यो, त्यारें कुंजकर्णे तेने गदाथी चूर्ण कर्यो; तथा बीजा प्रहारथी कपीश्वरने, पाडीने तथा तेने काखमां घाली ते लंकाप्रत्यें चालतो थयो. मेघनादें पण बाणनी वृष्टिथी वांदरोने नसाडी मेल्या. त्यारें रामचंद्र क्रोधायमान थइ कुंजकर्णप्रत्ये दोड्या, तथा लक्ष्मण मेघनादप्रत्ये दोड्यो. ते वखते सुग्रीव पण बल करीने कुंजकर्ण पासेथी बुटी गयो; हवे कुंजकर्ण रामनी साथे, तथा मेघनाद लक्ष्मणनी साथे लडवा लाग्या. पछी रामें कुंजकर्णने तथा लक्ष्मणें मेघनादने पकड्यो. त्यारें रावण पोते क्रोधायमान थइ रणसंग्रामपर आव्यो. ते वखते रामने निवारीने लक्ष्मण तेनी सामे गयो. लडतां हथीयारो खलास थयाथी रावणें लक्ष्मणपर अमोघ शक्ति मुकी. अने तेथी लक्ष्मण जमीनपर पड्या, ते जोइ राम अत्यंत शोकातुर थया. ते वखते सुग्रीव आदिक योधाउंए कोटनी पेठे राम अने लक्ष्मणने घेरी लीधा. पछी रावणें विचार्युं के, आजे लक्ष्मण मृत्यु पामशे, अने त्यार बाद तेना शोकथी राम पण मृत्यु पामशे, माटे हवे शामाटे लडवुं? एम विचारि रावण लंकाप्रत्ये पाछो गयो. हवे एटलामां कोइ मित्र विद्याधरें आवी नामंडलने कह्युं के, अयोध्याथी बार योजन कौतुकमंगल नामें नगर छे, त्यां द्रोणघन नामें राजा छे; अने ते कैकयीनो नाइ छे. तेने विशल्या नामें कन्या छे, तेनां स्नाननां पाणीना स्पर्शथी लक्ष्मणनी व्याधि नाश पामे तेम छे. अने तेपण प्रनात थया पेहेलां जो आवे, तो लक्ष्मण जीवता रहे, नहींतर जीवे नहीं. पछी ते वात नामंडलें रामने जणाववाथी रामें पण ते कार्यमाटे हनुमान सहित तेनेज आज्ञा आपी. पछी तेउ तुरत अयोध्यामां आव्या, अने त्यां मेहेलमां नरतराजाने तेउए जोया. तेउए नरतने जगाडवामाटे गायन करवा मांड्युं. त्यारें नरत जागवाथी नामंडलें पासे आवी नमस्कारपूर्वक सघलो वृत्तांत कही संनलाव्यो. त्यारें नरतें कह्युं के, ते कार्य हुं त्यां आववाथी थशे, तेथी ते पण विमानपर चडी तेउनी साथें कौतुकमंगलें आव्यो. तथा द्रोणघननी पासे विशल्यानी मागणी करी, त्यारें तेणें एक ह-

जार छीउं सहित विशल्याने तेनी साथे परणावीने मोकली. पछी जामंड-ल पण जरतने अयोध्यामां मुकीने विशल्यासहित रामचंद्रजीपासे आ-वी पहोंच्यो. तथा त्यां विशल्याए लक्ष्मणजीने हाथ अडकाडतांज ते विद्या चाली गइ. वली तेणीना स्नानना पाणीथी रामना घायल थएला सै-निको पण तत्क्षण साजा थया. पछी रामें कह्युं के, कुंजकर्णादिकने पण आ पाणीथी साजा करवामाटे अहीं लावो? त्यारें आरक्षोए आवीने क-ह्युं के, तेउंयें तो तेज वखते दीक्षा लीधी छे. त्यारें रामें कह्युं के, मुक्ति-मार्गमां रहेला तेउं हवे वंदनीय छे, माटे तेमने छोडी मुको? त्यारें आ-रक्षकोए पण तेमने छोडी मेल्या. पछी लक्ष्मण विशल्या तथा ते बीजी कन्याउंने परण्या. हवे प्रजातें रावण पण पाछो रणसंग्राममाटे आव्यो. त्यारें लक्ष्मण पण रामने नमस्कार करी तेनी सामे लडवाने चाल्या. हवे रावण जे जे हथियारोने मुकतो हतो, ते ते हथियारोनेलक्ष्मण छेदी नाख-ता हता; तेथी रावणें क्रोधायमान थइने पोतानुं चक्र फेक्युं, पण ते लक्ष्म-णनी छातीमां बलोखांनी पेठे जरा वाग्युं. पछी तेज चक्रथी लक्ष्मणजीयें रावणनुं मस्तक छेदी नाख्युं. पछी सोनानी सलीनी पेठे शियलथी निर्मल रहेली सीताने रामें ग्रहण करी, अने विजीषणने लंकानां राज्यपर स्था-पन कर्यो. एवी रीतें राम, शत्रुनो नाश करी जाइ, स्त्री तथा मित्रो सहित अयोध्यामां गया, अने परस्त्रीने जोगववानी इछाथी रावण मृत्यु पामी तथा कुलनो क्षय करी नरकें गयो. एवी रीतें सीता अने रावणनी कथा कही

लावण्यपुण्यावयवां, पदं सौंदर्यसंपदः ॥
कलाकलापकुशला, मपि जह्यात् परस्त्रियं ॥ १०१ ॥

अर्थः—लावण्यपणाथी मनोहर अंगोपांगवाली, तथा सुंदरतानी संपदाना स्थानकसरखी, अने कलाउंना समूहमां प्रवीण, एवी परस्त्रीने छोडवी.

हवे परस्त्रीथी विरक्त रहेनारनी स्तुति कहे छे.

अकलंकमनोवृत्तेः, परस्त्रीसंनिधावपि ॥
सुदर्शनस्य किं ब्रूमः सुदर्शनसमुन्नतेः ॥ १०२ ॥

अर्थः— परस्त्रीनी नजदीकमां पण कलंकरहित मनोवृत्तिवाला, तथा शासनना प्रजावक एवा सुदर्शन शेठनी अमो केटलीक स्तुति करियें.

ते सुदर्शन शेठनी कथा कहे छे.

अंग नामना देशमां चंपा नामें मनोहर नगरी छे, त्यां दधिवाहन नामे राजा हतो. तेने महाकलावान्, तथा देवांगना सरखी रूपवाळी अजया नामें राणी हती. तेज नगरमां एक वृषजदास नामें मोटो शाहुकार हतो. तेने यथार्थ नामवाळी जैनधर्मने सेवनारी अर्हद्दासी नामें स्त्री हती. ते शेठने त्यां सुजग नामें एक जेंसोनो चरावनार हतो; ते हमेशां जेंसोने वनमां चारवामाटे लेइ जतो. एक दहाडो महा महिनामां सांजने वखते वनमांथी पाछा फरतां तेणें एक मुनिने वस्त्ररहित कायोत्सर्ग ध्यानमां उन्नेला जोया. तेने जोइ तेणें विचार्युं के, आवी ठंडीनी रात्रिमां आ आवी रीतें स्थिर उन्ना रहेशे, माटे तेने धन्य छे. एवी रीतनाज ध्यानमां ते रात्रिए तो उंघी गयो; पछी प्रन्नातमां ते जेंसोने लइ तेज जगोए आव्यो, त्यां तेणें तेज मुनिने ध्यानमां रहेला जोया. पछी तेणें तेमने नमस्कार करी, तेमनी जक्ति करी. एटलामां सूर्य पण उग्यो, तेजाणे श्रद्धापूर्वक मुनिने जोवामाटेज उग्यो होय नहीं, तेम शोजवा लाग्यो. पछी ते मुनि पण “नमो अरिहंताणं” एम कही आकाशमार्गें उडी गया. आ खरेखर आकाशगामिनी विद्या हती. एम विचारि, तेणें ते नमस्कारनुं पद हृदयमां धारी राख्युं. पछी ते हमेशां, उठतां, बेसतां, जागतां, उंघतां, तेज पद बोल्या करतो. त्यारें शेठें पुछ्युं के, उत्कृष्ट प्रन्नाववाळुं आ पंच परमेष्टिना नमस्काररूप पद तने क्यांथी मळ्युं? त्यारें तेणें सघळो वृत्तांत शेठने कही संजळाव्यो; त्यारें शेठें पण तेनी प्रशंसा करीने, तेने कह्युं के, आ कंइ फक्त आकाशगामिनी विद्याज नथी, पण ते तो स्वर्ग अने मोक्षमां पण लइ जइ शके तेम छे. वळी आ जगतमां जे जे सुंदर वस्तुओ मळे छे, ते सघळी आना प्रन्नावथी छे. माटे आना प्रन्नावनुं वर्णन माराथी थइ शके तेवुं नथी. पछी शेठें तेने कह्युं के, हवे तुं आखो नवकार मंत्र शीख? तारुं आ लोक अने परलोक बन्नेमां कल्याण थाय. पछी सुजग तो समस्त नवकारने शिखिने आखो दिवस तेनो पाठ करवा लाग्यो. अने तेथी ते पाठ तेनी क्षुधा अने तृषाने पण नाश करनारो थयो. एवी रीतें तेनो पाठ करतां थकां केटलोक काळ गये छते वर्षाकाळ आव्यो मूशळधाराए वरसाद पडवा लाग्यो. ते वखते सुजग घेरथी

भैंसोने लइ बहार आव्यो; तथा पछी ज्यारे पाछो वळ्यो. त्यारे तेणें अगाडी नदीमां पूर आवेलुं जोयुं. ते जोइ ते बीकथी जरा विचारमां पड्यो, एटलामां भैंसो तो तरीने सामे पहोंची पछी तेणें आकाशगामिनी विद्यानी बुद्धिथी, नमस्कार जणीने नदीमां ठेक मारी. पण नदीना कादवमां खुंचेलो एक खीलो तेना हृदयमां वाग्यो. अने ते मर्मस्थानना घाथी, पंचपरमेष्टिनुंज स्मरण करतो ते मृत्यु पाम्यो. त्यांथी ते आ शेठनी स्त्री अर्हद्दासीनी कुक्षिये उत्पन्न थयो. ते गर्भमां आव्या पछी त्रीजो महिनो गयाबाद शेठाणीने डोहलो थयो के, हुं जिनेश्वर प्रभुनी प्रतिमाने सुगंधि पाणीथी स्नान करावुं चंदननुं विलेपन करुं, तथा पुष्पोथी पूजुं; वली साधुउने प्रतिलाभुं, संघनी भक्ति करुं तथा गरिबोने हुं दान आपुं. पछी शेठें पण चिंतामणि रत्ननी पेठे तेना ते सघला डोहला संपूर्ण कर्या. पछी एवी रीतें नवमास अने साडाआठ दिवसो जाते छते, तेणीयें उत्तम लक्षणोवाला एक पुत्रने जन्म आप्यो. त्यारे शेठें पण हर्षथी महोत्सवपूर्वक सारे दिवसे तेनुं "सुदर्शन" नाम पाड्युं. पछी अनुक्रमें तेणें सघली कलाउ ग्रहण करी पछी शेठें पण तेने उत्तम कुलनी, एक सुंदर मनोरमा नामनी कन्या परणावी. हवे ते सुदर्शन केवल तेनां मात पिताने ज नहीं, पण राजा अने सघली प्रजाने पण आनंददायक थयो.

हवे तेज नगरमां, राजाने वहालो, अने विद्वान्, कपिल नामें पुरोहित हतो. तेनी साथे सुदर्शनने मित्राइ थइ. ते पुरोहित प्रायः करीने सुदर्शननीज पासे वसतो हतो. एक दहाडो तेनी कपिला नामनी स्त्रीए पुछ्युं के, तुं आटलो बधो वखत नित्य कर्मोने छोडी क्यां रोकाय छे? त्यारें तेणें कह्युं के, हुं सुदर्शननी पासे रहुं छुं; त्यारें स्त्रीए वली पुछ्युं के, ते सुदर्शन कोण छे? त्यारें कपिलें कह्युं के, उत्तम अने धैर्यवान्, एवा मारा मित्र सुदर्शनने ज्यारें तुं नथी जाणती, त्यारें तुं कंइ पण नथी जाणती एम समजवुं. त्यारें कपिलाए कह्युं के. तुं मने हमणांज तेने उलखाव? त्यारें कपिलें कह्युं के, ते वृषभदास शेठनो पुत्र छे. ते रूपें तो कामदेव सरखो, गंभीरताथी समुद्र सरखो अने क्षमाथी मुनि सरखो छे. वली ते दानेश्वरी, गुणी अने प्रिय बोलनारो छे. ते सांभली कपिला अत्यंत कामातुर थइ. पछी तो ते हमेशां सुदर्शनना मेलापने इछवा लागी.

एक दहाडे कपिल गाम गयो, त्यारें कपिला सुदर्शनने घेर गइ. अने कह्युं के, आजे तमारा मित्रनी तबीयत सारी नथी, तेथी अहीं आवेल नथी. वली तमारा विरहथी तेने बेवडुं डुःख थाय छे, माटे तमोने बोलाववा तेणें मने मोकली छे, पछी तेणीनुं वचन मानीने ते कपिलने घेर आव्यो. त्यां प्रवेश करतांज तेणें पुछ्युं के, मारो मित्र क्यां छे? त्यारें तेणें कह्युं के, ते अंदरना जागमां सुतेलो छे. त्यारें सुदर्शनें जरा अगाडी जइने कह्युं के, अहीं पण नथी तेथी शुं ते बहार गयो छे? त्यारें तेणीए कह्युं के हजु ते अंदर छे, तेथी ते अंदर गयो, पण त्यांए तेने नहीं जोवाथी, कह्युं के, अरे! कपिला! कपिल क्यां छे? त्यारें तेणीए बारणां बंध कर्यां अने पोतानां थोडां अंगोपांग देखाडीने, तथा तेने आडां वस्त्रोथी ढांकीने, तथा एवी रीतना विविध विलासपूर्वक, ते सुदर्शनने कहेवा लागी के, कपिल तो अहीं नथी, माटे आ कपिलाने तुं ग्रहण कर? तारा मित्रें ज्यारथी तारा रूप विगेरेनी मने वात करी छे, त्यारथी मने कामदेव पीड्या करे छे. अने आजे आ तमारो मेलाप थयो छे. माटे मने विरहातुरने आलिंगन दइने तमो बचावो? त्यारें सुदर्शनें समयसूचकता वापरीने कह्युं के, तें जे वात करी, ते जुवानोने लायकज छे, पण हुं तो नपुंसक छुं, माटे तुं तो मारा पुरुषवेषथी ठगाइ छुं. त्यारें तेणीए विरक्त थइ कह्युं के, चाल्यो जा? त्यारें, एम कही तेणीए द्वार उघाड्युं, अने तेथी सुदर्शन पण त्यांथी निकली गयो; तथा उतावले पगे पोताने घेर गयो. तथा जइने विचार्युं के, हवेथी एकला परघरे जवुं नहीं. पछी ते हमेशां धर्मनांज कार्योमां रक्त थयो. हवे एक दहाडो ते नगरनी अंदर इंद्रमहोत्सव चालु थयो. ते वखते राजा ते पुरोहित अने सुदर्शननी साथे उद्यानमां गयो. ते वखते अजया राणी पण कपिलानी साथे उत्तम वाहनमां बेसीने त्यां गइ. ते वखते छ पुत्रो सहित सुदर्शननी स्त्री पण वाहनमां बेसीने त्यां आवी. तेने जोइ कपिलाए राणीने पुछ्युं के, हे स्वामिनि, आ अत्यंत लावण्यवाली स्त्री कोण छे? त्यारें अजयायें कह्युं के, शुं हजु तने खबर नथी? आ तो सुदर्शननी स्त्री छे. ते सांजलीने कपिला आश्चर्य पामीने बोली के, जो आ सुदर्शननी स्त्री होय, तो ते उस्ताद होवी जोइयें. त्यारे राणीए पुछ्युं के, उस्ताद केम? त्यारें कपि-

आ बोली के, तेणीने आटलां बधां छोकरां छे तेथी. त्यारें राणीए कह्युं के. जर्तारवाली स्त्रीने छोकरां थाय तेमां उस्तादी शुं ? त्यारें कपिलाए कह्युं के, हे देवी, जो जर्तार पुरुषपणामां होय तो तो तेम थाय, पण आ सुदर्शन तो नपुंसक छे. त्यारें राणीए पुछ्युं के, तें ते केवी रीतें जाण्युं ? त्यारें कपिलाए पोतानो अनुजवेलो वृत्तांत कही संजलाव्यो. त्यारें अजयायें कह्युं के, हे मुग्धे! तने तो तेणें ठगी छे; ते परस्त्रीप्रत्ये नपुंसक छे. कंइ पोतानी स्त्रीप्रत्ये नपुंसक नथी. त्यारें कपिला बोली के, ज्यारें हुं ठगाइ छुं, त्यारें तारामां वली कंइ वधारे चतुराइ छे ? त्यारें राणीए कह्युं के, मारा हाथना स्पर्शथी तो पत्थर पण गली जाय तेम छे. त्यारें कपिलाए असूयासहित कह्युं के, जो एवो तने गर्व छे, तो तुं सुददर्शन साथे विलास करे तो मानुं; त्यारें राणीए अहंकार लावी कह्युं के, हे सखि, जो हुं खरी तो सुदर्शन साथे विलास करुं. अने तेम न थाय, तो अग्निमां प्रवेश करुं. वली चतुर स्त्रीउए मोटा वनवासी रुषिउने पण चलाव्या छे, त्यारें आ गृहस्थ ते शुं हिसाबमां छे ? पछी त्यां क्रीडा करीने तेउ पोतपोताने स्थानकें गयां. पछी राणीए पोतानी महाचतुर, पंडिता नामनी धावने पोतानी प्रतिज्ञानी वात कही संजलावी. त्यारें पंडिताए कह्युं के, हे पुत्रि, तें आ ठीक न कर्युं, कारण के, तुं हजु महात्माउनी धैर्यशक्तिने जाणती नथी. वली आ सुदर्शन तो जैन धर्मना मुनिउना सहवासथी दृढ मनवालो छे, माटे धिक्कार छे, तारी आ प्रतिज्ञाने ! वली बीजा साधारण जैनीउ पण परस्त्रीप्रत्ये तो सहोदरतुल्य होय छे, त्यारे आ शिरोमणि श्रावकनी तो वातज शी करवी. वली ब्रह्मचर्यज छे धन जेउनुं एवा साधुउ तो तेना गुरुउ छे. माटे ते काम ते शी रीतें करशे ? वली ते हमेशां उपाश्रयमां ध्यानमां रहे छे, तो तेने अहीं लावी पण केम शकाशे ? त्यारे अजया बोली के, गमे तेम करीने पण तु तेने एकवार अहीं लाव्य? त्यारे पंडिताए कह्युं के, एक उपाय छे; अने ते ए के पर्वने दिवसे ते कोइ शून्य घरमां कायोत्सर्ग ध्यानें रहे छे, माटे ते ध्यानमां ने ध्यानमां अहीं उपाडी लावुं. त्यारें राणीए कह्युं के तेमज करजे ? पछी केटलाक दिवसो गयाबाद त्यां नगरमां कौमुदी महोत्सव आव्यो, त्यारे राजाए ढंढेरो पिटाव्यो के, सर्व लोकोए आगार ल-

बीने कौमुदीनो महोत्सव जोवामाटे उद्यानमां आववुं ? ते सांभली सुदर्शनें विचार्युं के, प्रजातमां तो चोमासी पर्व छे, माटे मारे शुं करवुं ? एम ते खेद पामवा लाग्यो, पछी राजा पासे जइ नेटणुं मुकी कह्युं के, आपनी आज्ञा होय तो, प्रजातमां चोमासी पर्व होवाथी हुं देवगुरुनी पूजा जक्ति करुं; त्यारे राजाए पण तेने तेम करवाने हा पाडी तेथी तेणें पूजा सेवा चैत्ययात्रा विगेरेमां आखो दिवस कहाडी, रात्रियें पौषध व्रत लइ, कोइक चोतरापर कायोत्सर्ग ध्यानमां रह्यो. त्यारे पंडिताए अजयाने कह्युं के, जो तुं आजे उद्यानमां न जाय, तो तारो मनोरथ सिद्ध थाय तेम छे. त्यारें राणीयें राजाने कह्युं के, आज तो मारुं माथुं दुखे छे, तेथी हुं तो उद्यानमां आवी शकीश नहीं,एम कही ते घेर रही, कारण के स्त्रीउ प्रपंचशास्त्रमां बहुज निपुण होय छे. पछी पंडिता एक वाहनमां कामदेवनी पछरनी मूर्त्ति बेसाडीने मेहेलमां जवा लागी, त्यारे चोकीदारोए रोक्याथी तेणीए कह्युं के, राणीना शरीरने मजा न होवाथी ते उद्यानमां गइ नथी, माटे तेने पूजवावास्ते आ कामदेवनी मूर्त्ति हुं लइ जउं छुं, तथा बीजी देवोनी मूर्त्तिउ पण लेइ जवानी छे; एम कही तेणें ते मूर्त्तिपरथी कपडां आदिक खेसवीने चोकीदारोने देखाडी. तेथी तेउए पण अंदर लेइ जवानी परवानगी आपी. एवी रीतें तेउने विश्वास बेसाडवा माटे ते, दिवसमां पांच सात वार एवी पत्थरनी मूर्त्तिउ अंदर लावी. पछी एक वखत सुदर्शनने उपाडीने कपडेथी ढांकीने ते वाहनमां बेसाडी लावी अने अजयाने सोंप्यो. पछी अजया राणी तेने विकार उपजाववाने बोलवा लागी के, आ कामदेव मने पोताना तीक्ष्ण हथीयारोथी मार्या करे छे, माटे तेना उपाय अर्थे में तारुं शरणुं लीधेलुं छे. माटे तेथी मने बचाव ? कारण के, महान् पुरुषो परने माटे अकार्य पण करे छे. वली तमोने कपटथी लाव्या छीयें, तेथी तमारे गुस्से पण थवुं नहीं. त्यारे सुदर्शन तो देवतानी प्रतिमानी पेठे कायोत्सर्ग ध्यानमां रह्यो. त्यारे अजया फरीने बोली के, पोतानी मेले खोलामां आवी पडेलां रत्नने तुं केम ग्रहण करतो नथी ? एम कही तेणीए तेना हाथो पोताना हाथोथी पकड्या. पछी तेणीयें तेने पोताना कोमल हाथोथी आलिंगन कर्युं. तो पण सुदर्शन तो पोताना ध्यानमांज

निश्चल रह्यो. अने विचार्युं के, जो आ मने अहींथी मुक्त करे, तोज मारे कायोत्सर्ग पालवो, नहींतर अनशन करवुं. पछीअजयाये ज्रुकुटी चडावीने कह्युं के, अरे मूर्ख, जो तुं मने अंगीकार नहीं कर, तो हमणांज तारुं मृत्यु थशे. एवी रीतें जेम जेम ते बोलवा लागी, तेम तेम सुदर्शन तो धर्मध्यानपर चडवा लाग्यो. एवी रीतें आखी रात कदर्थना कर्या छतां पण, ते ध्यानथी चलायमान थयो नहि. पछी प्रज्ञात थये छते, तेणीये पोताना शरीरपर नखोरीओं करीने, पोकार कर्यो के, आ माणसें मारापर बलात्कार गुजार्यो छे ते वखते चोकीदारो दोडी आव्या, तो तेउंए सुदर्शनने कायोत्सर्गमां रहेलो जोयो. पछी तेउंए राजाने खबर आपवाथी, राजाये त्यां आवी अज्रयाने पुछवाथी ते कहेवा लागी के, आ कोइ माणसें अही आवीने, मने मिष्ट वचनोथी पोतासाथे विलास करवाने कह्युं. पण में ना पाडवाथी, तेणें बलात्कार करवानी कोशेश करतां, में बूम पाडी, कारण के अबलामां बल ते केटलुंक होय? त्यारे राजाए विचार्युं के सुदर्शनमाटे आ वात असंज्ञवित छे, एम विचारि राजायें तेने घणुं पूछ्युं, तो पण ते सुदर्शन कंइ बोल्यो नही. कारण के, चंदनने घस्या छतां पण, ते परनो ताप शांत करे छे. त्यारे राजाने पण तेनो दोष संज्ञववा लाग्यो. पछी तेणें चोकीदारोने, हुकम कर्यो के, आने पकडीने चोरनी पेठे गाममां फेरवो? त्यारे तेउंए तेना मुखपर मशी चोपडी शरीरे लाल चंदन चोपड्युं, मस्तकपर कणेरनी माला, तथा कंठमां शरावलांनी माला तेणें पहेरावि तथा गधेडापर बेसाडीने, उपर सुपडानुं छत्र धरीने, तेने समस्त शेहेरमां फेरव्यो. तथा तेउंए कह्युं के, आ माणसें राजाना अंतःपुरमां गरीने अपराध कर्यो छे, माटे आमां राजानो कंइ दोष नथी. त्यारे लोकोयें कह्युं के, आ वात बिलकुल असंज्ञवित छे. एम करतां ते पोताना घरना द्वार पासे पहोच्यो, त्यारें तेनी महासती एवी मनोरमा स्त्रीयें तेने जोयो. त्यारे तेणीयें विचार्युं के, मारो पति तो सदाचारी छे, राजा स्त्री कहे तेम करनारो छे, तथा दैव दुराचारी छे. अथवा तेनां कोइ पूर्वनां अशुज्ञ कर्मनो उदय आवेलो छे. माटे आनो हवे कोइ पण इलाज नथी; तोपण आम करीश, तो कंइक हित थवा संज्ञव छे, एम विचारि ते घरमां जइने जि-

नेश्वर प्रजुनी पूजा करवा लागी. तथा पछी कायोत्सर्गमां रहीने ते शासनदेवीने कहेवा लागी के, हे जगवति, ! मारा पतिने जो तमो सहाय करशो, तोज हुं काउसग पारीश नहींतर आमज रहीने हुं अनशन करीश कारण के, धर्म अने पति बन्नेनो नाश होते छते कुलवती स्त्रीउ शुं जीवी शके छे? हवे ते चोकीदारो सुदर्शनने शूलीपर लइ गया, त्यारे ते शूली पण सोनेरी कमलवाला आसन सरखी थइ, कारण के, देवताना प्रजावथी यमनी दाढा पण अटकी जाय छे. पछी तेउए मारवामाटे तेना कंठपर तीक्ष्ण कुहाडो मेल्यो, ते पण पुष्पनी मालारूप थयो. ते जोइ आश्चर्य पामीने तेउयें राजाने ते वात कही, त्यारे राजा पण हाथणीपर बेसीने त्यां आव्यो. तथा तेने आलिंगन दइ तेणें पश्चात्तापपूर्वक पोताना अपराधनी माफी मागी. पछी ते तेने हाथणीपर बेसाडीने पोताने घेर लाव्यो. तथा स्नान विलेपन करावीने, उत्तम वस्त्रालंकारो पहेरावीने तेणें तेने रात्रिनो वृत्तांत पुछ्यो, त्यारे सुदर्शनें पण यथार्थ कही संजलाव्यो. त्यारे राजा क्रोधायमान थइने राणीने मारवा दोड्यो, पण सुदर्शनें वच्चे पडीने तेणीने छोडावी. पछी राजायें तेने हाथीपर बेसाडी महोत्सवपूर्वक नगरमां फेरवी तेने घेर मोकल्यो. पछी अजयायें पण गले फांसो खाइ आपघात कर्यो. पंडिता पण त्यांथी नाशीने पाटलीपुत्र नगरे जइने, देवदत्ता गणिकानी पासे रही; त्यां तेणीयें सुदर्शननी घणी प्रशंसा करवाथी देवदत्ता तेने जोवामाटे उत्सुक थइ. पछी सुदर्शनें तो संसारथी विरक्त थइने दीक्षा लीधी. पछी ते तपथी कृश थयो थको विहार करतां अनुक्रमें पाटलीपुत्र नगरें आव्यो. त्यां जिक्षामाटे फरतां पंडितायें तेने जोवाथी देवदत्ताने कह्युं, त्यारे देवदत्तायें पण तेणीनीज मारफते तेने बोलाव्यो. तेथी ते पण विचार कर्याविनाज जिक्षामाटे त्यां गया. त्यां देवदत्तायें तेने संध्याकाल सुधि कदर्थना करी पण ते डग्या नहीं, त्यारें सायंकाले तेने छोडी मुकवाथी ते उद्यानमां गया, त्यां पण व्यंतर थएली अजयाए तेमने जोया. त्यारे ते पण पूर्वनां कर्मने याद करीने तेने कदर्थना करवा लागी. पछी तेणी जेम जेम तेने कदर्थना करवा लागी, तेम तेम ते तो क्षपकश्रेणीपर चडवा लाग्या. तथा अनुक्रमें केवलज्ञान पाम्या, अने तेनो देवोए महोत्सव कर्यो. पछी ते जव्य जीवोनो उद्धार करवामाटे धर्मदेशना

देवा लाग्या. एवी रीतें परस्त्रीनी पासे रहिने पण जे क्षोजने न पाम्या, एवा ते सुदर्शन मुनि अनुक्रमें मोक्षें गया; कारण के जैनधर्म पालनाराउंने मुक्ति कंइ डुर्लज्ञ नथी. एवी रीतें सुदर्शन मुनिनी कथा कही.

हवे धर्मकार्योमां केवल पुरुषोनेज अधिकार ठे, तेम नहीं, पण स्त्रीउंने पण अधिकार ठे, कारण के चतुर्विध संघमां ते (स्त्री) पण आवी जाय ठे; तेथी पुरुषने जेम परस्त्रीनो निषेध ठे, तेम स्त्रीने पण परपुरुषनो निषेध देखाडे ठे.

ऐश्वर्यराजराजोऽपि, रूपमीनध्वजोऽपि च ॥
सीतया रावण इव, त्याज्यो नार्या नरः परः ॥ १०३ ॥

अर्थः– रावणने जेम सीताये, तेम स्त्रीए, ऐश्वर्यपणाथी धनदसरखो, तथा रूपें करीने कामदेव सरखो पण, परपुरुष तजवो. हवे स्त्री अने पुरुषने परपुरुष अने परस्त्रीमां आसक्तपणानुं फल कहे ठे.

नपुंसकत्वं तिर्यक्त्वं, दौर्जाग्यं च जवे जवे ॥
जवेन्नराणां स्त्रीणां चा, ऽन्यकांतासक्तचेतसां ॥ १०४ ॥

अर्थः– अन्य स्त्रीपुरुषोमां आसक्त ठे, चित्त जेउंनां, एवा पुरुष अने स्त्रीउंने जवोजवमां नपुंसकपणुं, तिर्यंचपणुं, तथा डुर्जागीपणुं थाय ठे.

हवे ब्रह्मचर्यनो आ लोकसंबंधि गुण कहे ठे.

प्राणजूतं चरित्रस्य, परब्रह्मैककारणं ॥
समाचरन् ब्रह्मचर्यं पूजितैरपि पूज्यते ॥ १०५ ॥

अर्थः–देश चारित्र, अने सर्व चारित्रना प्राणजूत, तथा मोक्षना अद्वितीय कारण सरखा ब्रह्मचर्यने आचरनारमाणस, पूजाएलाउंथी पण पूजाय ठे.

चिरायुषः सुसंस्थाना, दृढसंहनना नराः ॥
तेजस्विनो महावीर्या, जवेयुर्ब्रह्मचर्यतः ॥ १०६ ॥

अर्थः– ब्रह्मचर्य पालवाथी प्राणीउं, लांबा आयुष्यवाला, उत्तम संस्थानवाला, दृढ संघयणवाला, तेजस्वी तथा महावीर्यवाला थाय ठे.

टीकाः– लांबा आयुष्यवाला एटले अनुत्तर विमान आदिकमां देवरूपें उपजे, उत्तम संस्थान एटले "समचतुरस्र" लक्षणवालुं दृढ संघय-

यवाला, एटले "वज्रऋषभनाराच" नामें संघयणवाला; अने ते संघयण मनुष्यनी अपेक्षायें छे. अने देवोने संघयणनो अभाव होवाथी, तेमने कांतिनो प्रभाव होय छे. महावीर्यवाला एटले, तीर्थंकर चक्रवर्त्ति आदिकना जन्मवाला जाणवा. हवे अब्रह्मनां दूषणो देखाडे छे.

सिंदूरथी पुरेला स्त्रीना सेंथाने, सिमंतक नामना नरकना मार्ग तरिके जाणो. वली तेउंनी भमरने तो मोक्षमार्गमां आडी पडेली नागणी जाणवी. माणसो स्त्रीना भंगुर कटाक्षोने जुवे छे, पण, तेथी पोतानां भंगुर थतां जीवितने तो जोताज नथी. वली तेना सरल एवा नाशिकावंशने जुवे छे, पण तेथी पडता, एवा पोताना वंशने तो जोता नथी. वली स्त्रीना कपोलमां संक्रांत थएला पोताने जुवे छे, पण पोताने संसाररूपी तलावना कादवमां घुंचेला तो जोता नथी. वली तेउ स्त्रीना होठनुं तो पान करे छे, पण पोतानां आयुष्यने कृतांतथी पान करातुं जोता नथी. वली तेउंना डोलरनी कली सरखा दांतोने तो जुए छे, पण जराए (घडपणे) भांगी नाखेला पोताना दांतोने तो जोता नथी. वली तेउंना कामदेवनेहिंचकवाना हिंडोला सरखा कर्णपाशोने तो जुए छे, पण गलामां पडता कालना पाशने तो जोता नथी. वली हमेशां स्त्रीनुं महोडुं तो जोया करे छे, पण ते जाणतो नथी के, कालनुं मुख जोवाने हवे तेने वधारे बखत नथी. वली कामदेवने आधीन थएलो माणस स्त्रीना कंठमां हाथ नाखे छे, पण आजकालमां पोताना प्राणो कंठोकंठ थशे, ते तो ते जाणतो नथी. वली ते स्त्रीउंना हाथोरूपी लताउंथी बंधाएला पोताने आनंद माने छे, पण तेथी कर्मरूपी बंधनोथी बंधाता एवा पोताना आत्माने तो ते जोतोज नथी. वली स्त्रीना हाथोना स्पर्शथी माणस रोमांचित थाय छे, पण तेथी तेने नरकमां लागनारा कांटा केम सांभलता नथी? वली माणस स्त्रीना कुचकुंभने (स्तनोने) आलंबीने सुवे छे, तेथी जणाय छे, के ते कुंभिपाकनी वेदनाने विसरी गयो छे. वली ते स्त्रीउंना मध्यभागने वारंवार अंगीकार करे छे, पण ते एम नथी विचारतो के, आ तो भवरूपी समुद्रनो मध्यभाग छे. वली धिक्कार छे माणसने के, जे स्त्रीउंना उदरपर रहेली त्रण वलीउंने जोइ खुशी थाय छे, कारण के, ते तो त्रणे वैतरणी सरखी छे. वली कामथी पीडित थएलुं पुरुषनुं मन स्त्रीनी नाभिरूपी

कादवमां डुबे छे, पण समतारूपी पाणीमां तो बुडे चुके पण पडतुं नथी. वळी स्त्रीनी रुंवाडानी पंक्तिने कामदेवने चडवानी निसरणीतुल्य माणस जाणे छे, पण ते तो संसाररूपी केदखानानी लोखंडनी सांकल छे, एम तो तेउं जाणता पण नथी. वळी विपुल (विस्तीर्ण) एवां स्त्रीनां जघनस्थल-ने तो लोको भजे छे, पण ते संसाररूपी समुद्रना (पुलिन) कांठा सरखुं छे, तेम तो तेउंजाणता नथी. वळी अल्पबुद्धिवालो माणस स्त्रीना सुंदर साथलोने तो भजे छे, पण तेथी पोताने स्वर्ग दूर जाय छे ते तो ते जाण-तो नथी. वळी स्त्रीना पगथी हणाता, एवा पोताने जोइने माणस आनंद पामे छे, पण तेथी पोते नीची गतिउंमां फेंकाय छे, एम तो तेउं जाणताज नथी. वळी जे दर्शनथी स्पर्शथी तथा आलिंगनथी माणसनां समतारूपी जीवितने हणे छे, एवी स्त्रीने झेरयुक्त जाणीने विवेकीउंयें तजवी. स्त्री का-मांध थइ थकी, आबरुने, सज्जनताने, दानने, गौरवताने, तेम पोतानां अने परनां हितने पण जोती नथी. वळी जे क्रोध पामेला सिंह आदिक पण नथी करता, ते काम पण स्त्री निरंकुश थइ थकी करे छे. माटे कोइ एवा मंत्रनुं स्मरण करवुं, अथवा कोइ एवा देवनी उपासना करवी के, जेथी स्त्रीरूपी पिशाचणी शियलरूपी जीवितने गळी जाय नहीं. वळी क्रूर ब्रह्मायें जाणे जगतने मारवामाटे, सर्पनी दाढा, अग्नि, तथा यमनी जीभने पीलीने तेना रसथीज जाणे स्त्रीउं बनावी होय नही, तेम लागे छे. वळी जो वीजळी अने वायु स्थिर थाय, तो पण स्त्रियोनुं मन स्थिर न थाय, वळी आवुं इंद्रजाल स्त्रीउं क्यांथी शिखी लावीयो छे? के जेथी मंत्रतंत्रविना चतुर लोको पण ठगाय छे वळी तेउंमां जूठुं बोलवानी पंडि-ताइ तो कोइक अपूर्व छे, कारण के तेउं क्षणवारमांज प्रत्यक्ष वातने पण जूठी पाडी आपे छे. वळी कमळानो रोगी, ढेफाने पण जेम सोनुं माने छे, तेम मोहांध माणस स्त्रीना संगथी उत्पन्न थता दुःखने पण सुख मानेछे. वळी स्त्रीनुं जे अंग निंदनीय अने गोपववालायक छे, ते अंगमां माणस ज्यारे रागी थाय छे, त्यारे वैराग्यवालो शाथी थइ शके? वळी मूढ बु-द्धिवाला माणसो रतिने माटे नितंब जघन, अने स्तनना अत्यंत भारवाळी स्त्रीने पोताना हृदयपर स्थापन करे छे, पण ते भवरूपी समुद्रमां बुडवा-माटे गळे वळगेली पत्थरनी शिलासरखी छे; एम तेउं जाणता नथी.

हवे मूर्छानां फलने देखाडता थका, तेने दबाववारूप पांचमुं अणुव्रत कहेछे.

असंतोषमविश्वास, मारंभं दुःखकारणं ॥
मत्वा मूर्छाफलं कुर्यात् परिग्रहनियंत्रणं ॥ १०७ ॥

अर्थः– मूर्छानां फलरूप एवा, असंतोष, अविश्वास तथा आरंभने दुःखनां कारणरूप मानीने, (श्रावकें) परिग्रहणनुं प्रमाण करवुं.

टीकाः– असंतोष दुःखनुं कारण छे, कारण के, मूर्छावालो माणस, घणा धनथी पण संतोष पामतो नथी, पण उत्तरोत्तरनी आशाथी उलटो कदर्थना पामे छे, वली परनी घणी संपदा, हीन संपदावाला असंतोषीने दुःख उपजावे छे. कह्युं छे के असंतोषी माणसनुं पगले पगले अपमान थाय छे, पण संतोषियोथी तो दुर्जन पण दूरज रह्या करे छे. अविश्वास पण दुःखनुंज कारण छे, कारण के, अविश्वासी माणस, नहि शंका राखवा लायक माणसथी पण शंकातो थको, पोताना धनमाटे कोइनो विश्वास करतो नथी; वली मूर्छालु माणस प्राणातिपातादिक आरंभ पण करे छे; केम के लोभने वश थइ, पुत्र पिताने, पिता पुत्रने, भाइ भाइने हणे छे, वली लांचीउं माणस जूठी साक्षी, जूठुं बोलवुं, इत्यादिक पण अंगीकार करे छे. वली जो बलवान् होय, तो लोभना वशथी रस्ते जता पंथिउने लुंटे छे, खातर पाडे छे, कोइने केदी करे छे, अने परस्त्री पण सेवे छे, तेम खेती आदिक आरंभ पण लोभी माणस करे छे, वली मम्मण शेठनी पेठे नदी आदिकमां प्रवेश करीने काष्ट आदिक एकठां करे छे. अहीं कोइ शंका करे के, मूर्छानां फलने दुःखनुं कारण जाणीने, परिग्रहनी नियंत्रणा शामाटे करवी ? तेने माटे कहे छे. परिग्रह पण मूर्छानुंज कारण होवाथी, ते मूर्छाज छे. अथवा सूत्रकारोए मूर्छानेज परिग्रह कहेलो छे. केम के तेउ कहे छे के, ममकारविनानो माणस, वस्त्राभूषणोथी भूषित होय, तो पण ते परिग्रहविनानो छे, अने ममकार वालो माणस नग्न होय, तो पण ते परिग्रहधारी छे. वली पण कह्युं छे के,

न सो परिगहो वुत्तो, नाइपुत्तेण ताइणा ॥
मुछा परिगहो वुत्तो, इइवुत्तं महेसिणा ॥ १०८ ॥

अर्थः– महर्षिउं कहे ले के, ज्ञातपुत्रें (वीरप्रजुए) कह्युं ले के, मूर्छा ले ते परिग्रहले मूर्छाविना परिग्रह नथी.

हवे प्रकारांतरथी परिग्रहनी नियंत्रणा कहे ले.

परिग्रहममत्वाद्धि, मज्जत्येव जवांबुधौ ॥
महापोत इव प्राणी, त्यजेत्तस्मात्परिग्रहं ॥ १०ए ॥

अर्थः– प्राणी ले ते, परिग्रहनी ममताथी जवरूपी समुद्रमां महापोतनीपेठे (हद उपरांत मालथी जरेला वहाणनी पेठे) बुडी जाय ले. माटे परिग्रहनो त्याग करवो.

हवे सामान्यपणाथी परिग्रहना दोषो कहे ले.

त्रसरेणुसमोऽप्यत्र, न गुणः कोपि विद्यते ॥
दोषास्तु पर्वतस्थूलाः, प्राङःषंति परिग्रहे ॥ ११० ॥

अर्थः–परिग्रहमां एक त्रसरेणुसरखो पण गुण नथी, अने तेथी उलटा दोषो तो पर्वतजेवडा निपजे ले.

टीकाः–त्रसरेणु एटले घरना जालीआमांथी सूर्यना किरणो आवता, होय तेमां जे सूक्ष्म रज उडती जणाय ले ते तेटलो पण गुण परिग्रहमां नथी. वली कदाच तेमां जोगोपजोगादिकने गुण मानीयें, तो ते पण गुण नथी. कारणके तेमां गृध्रीपणाथी उलटो दोषनो संजव ले. वली शास्त्रोमां जे जिनजुवनआदिक चणाववां, विगेरेने परिग्रहनो गुण कह्यो ले, ते पण गुण नथी वर्णव्यो, ते तो परिग्रहना सडुपयोगनुं वर्णन ले; पण जिनजुवनादिक बनाववामाटे परिग्रह राखवो ते कइं कल्याणकारी नथी कह्युं ले के, धर्मने माटे धननी जे इछा करवी, तेना करतां बिलकुल इछा न करवी तेज सारी ले. कारण के धोइ नाखवानी बुद्धिथी कादवने लेवा करतां, ते कादवने न अडकवुं तेज उत्तम ले. वली पण सिद्धांतोमां कह्युंले के,

कंचणमणिसोवाणं, थंजसहस्सोसियं जुवणतलं ॥
जोकारिज्जइ जिणहरं, तउवि तवसंयमो अहिउ. ॥ १११ ॥

अर्थः–कांचन, मणि विगेरेना हजारो स्तंजोथी शोजतुं ले तलीउं जेनुं, एवुं जिनप्रासाद बंधाववुं, तेना करतां पण तपसंयम अधिक फलदायक ले.

एवी रीतें परिग्रहमां गुणनी तो प्राप्ति छेज नहीं, त्यां उलटा दोषो तो पर्वतजेटला छे; के जेनुं आगल वर्णन करवामां आवशे. हवे ते दोषो देखाडेछे.

संगाद्भवंत्यसंतोऽपि, रागद्वेषादयो द्विषः ॥
मुनेरपि चलच्चेतो, यत्तेनांदोलितात्मनः ॥ ११२ ॥

अर्थ;– संग एटले परिग्रहथी, उदय अवस्थाने नहीं पामेला, एवा पण रागद्वेषादिक अने उपलक्षणथी मोह, भय, वध, बंधन, नरकपतन, इत्यादि पर्वत जेटला दोषो उत्पन्न थाय छे; कारण के, ते परिग्रहथी चलायमान थएला आत्मावाला, मुनिनुं पण चित्त चलित थाय छे.

हवे ते दोषोने श्रावकधर्मनी साथे जोडी देखाडे छे.

संसारमूलमारंभा, स्तेषां हेतुः परिग्रहः ॥
तस्मादुपासकः कुर्या, दल्पमल्पं परिग्रहं ॥ ११३ ॥

अर्थः– आरंभो, संसारनां मूलरूप छे, अने ते आरंभोनो हेतु परिग्रह छे, माटे श्रावकें अल्प अल्प एटले नियमित परिग्रह राखवो. वली पण परिग्रहना दोषो कहे छे.

मुष्णंति विषयस्तेना, दहति स्मरपावकः ॥
रुंधंति वनिताव्याधाः, संगैरंगीकृतं नरं ॥ ११४ ॥

अर्थः– परिग्रहधारी पुरुषने विषयरूपी चोरो लुंटे छे, कामदेवरूपी अग्नि बाले छे, तथा स्त्रीरूपी पाराधिउ रूंधे छे.

टीकाः– जेम वनमां जनार धनवान् माणसने चोरो लुंटे छे, तेम संसाररूपी वनमां भटकनार माणसने शब्द आदिक इंद्रियोना त्रेवीश विषयो संयमरूपी धनने लुंटी ले छे; अथवा वनमां गएलो बहु परिग्रहवालो माणस, नासी जवाने अशक्त थइ पडवाथी, जेम तेने त्यां लागेलो दावानल बाली नाखे छे, तेम संसाररूपी वनमां रहेला प्राणीने, कामदेवरूपी अग्नि, चिंता आदिक दश अवस्थाए करीने बाले छे; अथवा वनमां गएला धनाढ्यने शिकारियो जेम, धन अने तेना शरीरना मांसना लोभथी रुंधे छे, अने नासवा पण देता नथी, तेम आ संसाररूपी वनमां भटकता प्राणीने धन, अने शरीरभोगना स्वार्थवाली स्त्रीउ परतंत्र करीने रो-

क्षी राखे छे. वळी घणा परिग्रहणथी तृप्ति थतीज नथी, पण उलटो असंतोष वध्या करे छे. कारण के कविउं पण कहे छे के, तृष्णारूपी उंडी खाडने कोण पूरी शके छे ? कारण के, तेमां जेम जेम पुरणी नाखीयें, तेम तेम ते उलटी खोदाती जाय छे.

हवे तेनाज दृष्टांतो कहे छे.

तृप्तोन पुत्रैः सगरः, कुचिकर्णो न गोधनैः ॥
न धान्यैस्तिलकश्रेष्ठी, न नंदः कनकोत्करैः ॥ ११५ ॥

अर्थः— सागर नामें बीजो चक्रवर्त्ती साठहजार पुत्रोथी, कुचिकर्ण, गायोनां टोळांउथी, तिलकशेठ धान्योथी, तथा नंदराजा सुवर्णना समूहोथी पण तृप्ति पाम्यो नथी. माटे परिग्रह असंतोषनोज हेतु छे.

तेओनी कथाउं कहे छे.

अयोध्या नामें नगरीमां जितशत्रु नामें राजा हतो, तथा सुमित्र नामें तेनो युवराज हतो, जितशत्रु राजाने श्री अजितस्वामी नामें तीर्थंकर पुत्र हता; तथा सुमित्रने सगर नामें चक्रवर्त्ती पुत्र हतो. पछी जितशत्रु तथा सुमित्रें दीक्षा लेवाथी अजितस्वामी राजा थया, तथा सागर युवराज थया. पछी केटलेक कालें अजितस्वामी प्रभुए पण दीक्षा लीधी, त्यारें सागर चक्रवर्त्ती राजा थया. तेने साठ हजार पुत्रो थया तेउंमां सर्वथी मोटो जह्नुकुमार हतो. तेने एक दहाडो पिताए तुष्टमान थइ वरदान आप्युं. ते वरदानमां तेणें माग्युं के, हुं तमारी कृपा होय, तो दंडादिक रत्नो सहित भाइउंनी साथे पृथ्वीपर मुसाफरी करुं, त्यारें सगरें तेम करवानी हा पाडवाथी ते रस्तामां जगो जगोए जैन चैत्योने वांदतो थको, अनुक्रमें अष्टापद पर्वत प्रत्ये पहोच्यो. त्या आठ जोजन उंचा तथा चार जोजन विस्तारवाला ते पर्वतपर भाइउंसहित थोडा परिवारथी चड्यो. त्यां एक जोजन लांबा, अर्ध जोजन पोहोला तथा त्रण गाउ उंचा, अने चार द्वारवाला एवा जिनमंदिरमां ते दाखल थयो. त्यां तेणें ऋषभ आदिक जिनेश्वरोनां बिंबोनी पूजा करी. वळी त्यां तेणें भरत आदि सो भाइउंनां रूपोने पण नमस्कार कर्यो. पछी तेने विचार थयो के, आ अष्टापद सरखुं स्थानक क्यांए पण नथी; माटे आ मं-

दिर सरखुं आपणे पण एक मंदिर अहीं करावबुं. वली जरतचक्री जो-
के मोक्षे गया बे, तो पण आ चैत्यना मिशथी अत्रे रहीनेज हजु पण
जरतखंडने जोगवे बे. वली तेणें विचार्युं के, हवे थनारा राजाउंथी थता
आ चैत्यना नाशनेज जो हुं अटकावुं, तोपण में चैत्यज बंधाव्युं कहेवा-
य, एम विचारि तेणें हजार देवोथी प्रतिष्ठित थएला दंडरत्नने हाथमां
लइने अष्टापदनी आसपास फेरव्युं. तेथी एक हजार जोजन उंडी जमी-
न खोदाइ गइ; अने तेथी नागकुमारोनां जुवनो जेदाइ गयां. त्यारे तेउंये
पोताना स्वामि ज्वलनप्रजने ते वात जणावी, तेथी ते क्रोधायमान थइने
जह्नुपासे आवीने कहेवा लाग्यो के, अरे! अनंता जंतुउंने नाश करनारुं
आ पृथ्वीनुं दारण तमोए शामाटे आरंज्युं बे? वली अरे! कुलकलंकीउं
तमोए अजितनाथ प्रजुना जत्रिजा, तथा सगर चक्रिना दिकराउं थइने
आ पापकार्य शामाटे करवा मांड्युं बे? त्यारे जह्नुये कह्युं के, में तो आ
चैत्यनी रक्षामाटे आम कर्युं अने तेमां अजाणपणे तमारां जुवनोनो नाश
थयो, ते क्षमा करो? त्यारे ज्वलनप्रजें कह्युं के, अणजाणतां तें करेलो
आ तारो अपराध, आजे तो माफ करुं बुं; पण हवे फरीने तेवुं कार्य क-
रीश नहीं. एम कही तेना गयाबाद जाइउं सहित जह्नुयें विचार्युं के, आ
खाइ तो काले करीने पाठी धूलथी पूराइ जशे. तेथी तेणें दंडरत्नथी गं-
गाने खेंची लावीने ते खाइ जरी दीधी अने तेथी पाठां ते पाणीथी जु-
वनो नाश पाम्यां. तेथी ज्वलनप्रजें गुस्से थइ, त्यां आवीने, तेउंने जस्म-
सात् कर्या त्यारें सैन्यनां माणसो विलखां थइने विचारवा लाग्यां के, हवे
आपणे राजाने मुख पण शी रीतें देखाडी शकीशुं? एम विचारि तेउं
अयोध्यानी नजदीकमां आवी बहारज रह्यां. एटलामां कोइ ब्राह्मणें आवी
तेउंने कह्युं के, हुं कंइक एवो उपाय करीश के, जेथी राजाने मोह थशे नहीं.
पठी ते ब्राह्मण एक मडडुं लइ, राजद्वारपासे रडवा लाग्यो. त्यारें राजाए
पूठवाथी तेणें कह्युं के, मारो आ एकज पुत्र सर्पें करडवाथी मृत्यु पाम्यो बे,
माटे तेने जीवाडो? त्यारें राजाए मांत्रिकोने बोलावी तेने जीवतो करवा
कह्युं. त्यारे मांत्रिकोये तेने मृत्यु पामेलो जोइ राजाने कह्युं के, जे घरमां
कोइ पण मृत्यु पाम्युं न होय, ते घरमांथी जो राख लावे, तो आ जीव-

तो थाय; त्यारे राजाना हुकमथी चाकरोए घणी शोध करी, पण तेवी रा-ख क्यांएथी पण मली नहीं. त्यारे राजायें विचार्युं के, मारा घरमां पण मारा घणा पूर्वजो अगाउ मृत्यु पामी कोइ मोक्षे तो कोइ स्वर्गे गया छे. त्यारे तेणें ब्राह्मणने कह्युं के, मृत्यु तो सर्वने साधारण छे, माटे तुं केम सहन करी शकतो नथी? वली तारे आ मृत्युथी तो उलटो वैराग्य पामवो जोइयें. त्यारे ब्राह्मणें कह्युं के जो तुं एम जाणे छे, तो तारा साठ हजार पुत्रोनां मरणथी पण तुं शोकमां पडीश नहीं. ते सांभली जेवो ते विचारमां पड्यो, के तुरतज लश्करनां माणसोये आवी सघलो वृत्तांत कही संभलाव्या. ते सांभली ते मूर्छा पामी पृथ्वीपर पड्यो. पछी संज्ञा आव्याबाद थोडीवार रुदन करी ते वैराग्य पाम्यो. अने विचार्युं के, धिक्कार छे मने के आटला दिवसो सुधि आटला बधा पुत्रोथी पण हुं तृप्ति पाम्यो नहीं. एम विचारि जह्नुना पुत्र भगीरथने गादीयें बेसाडी, अजितनाथजी प्रभुपासे दीक्षा लेइ ते मोक्षे गया. एवी रीतें सगर चक्रीनी कथा जाणवी.

हवे कुचिकर्णनी कथा कहे छे.

मगध देशमां सुघोष नामें गाममां एक कुचिकर्ण नामें पटेल हतो. तेनी पासे अनुक्रमें एक लाख गायो थइ. पछी तेणें ते गायो रक्षणमाटे जुदा जुदा गोवालोने सोंपी. त्यारें तेओ मांहोमांहे लडी पड्या के, कोइ कहे के, मारी गायो सारी छे, अने कोइ कहे के, मारी गाइओ सारी छे. पछी कुचिकर्णें तेओने सघलाओने जुदी जुदी, काली, राती, धोली, पीली एम भाग करी आप्या. अने तेओने जुदा जुदा अरण्योमां राखी, पोते तेओनुं दूध, दहीं, घी माखण विगेरे खावा लाग्यो. एम करतां तेने अजीर्ण थयुं. पछी तो ते बकवा लाग्यो के, अरे! मारी गायो! नवुं घांस! अरे सघलां गव्यो! हुं क्यारें पाछां मेलवीश? एम दुर्ध्यानमांज ते मृत्यु पाम्यो; अने तिर्यंच गतिमां उत्पन्न थयो. एवी रीतें कुचिकर्णनी कथा जाणवी.

हवे तिलकशेठनी कथा कहे छे.

अचलपुर नामें नगरमां एक तिलक नामें शेठ हतो, हमेशां गाम अने नगरोमां धान्य एकठुं करतो ते कोइने धान्य आपीने पण पाछुं धान्यज लेतो, धनलुं पण धान्यज खरीद करतो अने एवी रीतें तेनां भव-

मां धान्यज रमी रह्युं हतुं. वली डुकाल वखते मोटी किंमत लइ ते धान्य वेंचतो, अने सुकाल वखते पाछुं ते सघला धननुं धान्य लेइ कोठारो भरतो. वली ते तेमां पडता कोडो गमे जीवातोनी पण दरकार करतो नहीं, तेम अत्यंत भार भरीने बेल, गधेडां आदिकपर पण दया करतो नहीं. एटलामां कोइ निमित्तिए आवीने तेने कह्युं के, हवे मोटो डुकाल पडशे. तेथी तेणें पोतानां तमाम धननुं, अने वली बीजुं व्याजें धन लइने पण तेणें जुदी जुदी जातनुं धान्य एकठुं कर्युं; पण एटलामां तो वर्षाद घणो सारो थयो; तेथी ते खेद पामवा लाग्यो के, अरे! मारा अडद, मारा चणा, मारा घउं, मारा मग विगेरेनो नाश थशे! एम छाती कुटी मरण पामीने ते नरकें गयो. एवी रीतें तिलक शेठनी कथा जाणवी.

हवे नंदराजानी कथा कहे छे.

पूर्व दिशामां अत्यंत सुंदर पाटलीपुत्र नामें नगर छे; त्यां अत्यंत पराक्रमी त्रणखंडनो राजा नंद नामें हतो. तेणें लोभथी लोको पर अत्यंत कर नाख्यो, वली ते धनवानो प्रत्ये कंइक अपराध मुकी तेउनुं धन लेइ लेतो. एवी रीतें ते उपायोये करीने लोको पासेथी धन कढावतो. अने तेथी लोको निर्धन थया, वली तेणें सोनाना सिक्का कह्हाडीने चांबडाना सिक्का कर्या. आ वातनी अयोध्याना राजाने जाण थवाथी तेणें तेने (नंदने) शिखामण आपवाने पोतानो एक दूत मोकल्यो ते दूतें जइ नंदने कह्युं के, राजा अन्यायथी जो प्रजानुं धन लेइ ले तो तेनो यश नाश पामे छे. वली पोतानीज प्रजानुं राजायें अहित नहीं इछवुं जोइयें; कारण के, मांस भक्षीउ पण कंइ पोतानुं मांस खाता नथी. वली प्रजा धनवान् होवाथीज राजा पण धनवान् थाय छे, कारण के, गायने जो सारी रीतें खवरावशुं, तोज ते पण दूध आपशे. माटे मारा स्वामियें तमारुं हित इछिने मारा मुखथी कहेवराव्युं छे के सर्व दोषना मूलरूप लोभने तमारे तजवो. ते सांभली नंदने गुस्सो चडवाथी ते उठी गयो; अने दूत जाणीने तेणें तेने मराव्यो नहीं. दूतें पण जइ ते वृत्तांत पोताना स्वामिने कह्यो. हवे अहीं नंदने पण अन्यायनां पापोथी अत्यंत व्याधिउ थइ, अने तेनी पीडाथी जेम जेम ते आक्रंद करवा लाग्यो, तेम तेम प्रजाने आनंद थवा

जाग्यो. पछी ते एवी रीतनां धननांज डुर्ध्यानमां मृत्यु पामी डुर्गतिए गयो. एवी रीतें नंदराजानी कथा जाणवी.

हवे लाजने इछता योगीउं पण जो परिग्रह राखे तो तेउंने पण उलटो मूलनो पण नाश थायछे ते कहे छे.

तपःश्रुतपरिवारां, शमसाम्राज्यसंपदं ॥
परिग्रहग्रहग्रस्ता, स्त्यजेयुर्योगिनोपिहि ॥ ११५ ॥

अर्थः— परिग्रहरूपी ग्रहथी छलित थएला योगियो पण तप एटले चारित्र अने ज्ञानना परिवारवाली समतारूपी साम्राज्यनी संपदाने तजी दे छे, एटले तेउ मूल रकमनो नाश करी लाज लेवानी इछा करवा जेवुं करे छे.

हवे असंतोषनुं फल देखाडवापूर्वक संतोषनुं फल कहे छे.

असंतोषवतः सौख्यं, न शक्रस्य न चक्रिणः ॥
जंतोः संतोषजाजोय, दजयस्येव जायते ॥ ११६ ॥

अर्थः— असंतोषवाला इंद्र अथवा चक्रिने पण एवुं सुख होतुं नथी, के जेवुं संतोषवाला अजयकुमारने थयुं छे. तेनी कथा कहे छे.

जरतक्षेत्रमां एक अति सुंदर राजगृह नामें नगर छे त्यां एक महाबलवान् प्रसेनजित् नामें राजा हतो. ते श्रीपार्श्वप्रजुनां शासनरूपी कमलप्रत्ये जमरसमान हतो, तथा अणुव्रतने धरनारो हतो. तेने महाकांतिवाला तथा बलवाला श्रेणिक आदि घणा राजकुमारो हता. पछी एक दहाडो राज्यने लायक, एवा कुमारनी परीक्षामाटे तेउं सघलाने एकी वखते थालोमां दूधपाक जमवाने बेसाड्या. अने तेउ जमवा लाग्या के, तुरत राजाये तेउंपर कुतरा छोड्या. ते कुतरा आव्या के, तुरत सघला कुमारो उठी गया, पण एक बुद्धिमान् एवो श्रेणिक बेसी रह्यो. अने तेणें बीजा थालोमांथी थोडो थोडो दूधपाक कुतराउंने देवा मांड्यो अने जेटलामां तेउ ते चाटी रह्या, तेटलामां ते श्रेणिक पोते पण जमी रह्यो. त्यारें राजाए विचार्युं के, आ कुमार, गमें ते उपायथी वेरीउंने जीतीने पण पोतानुं राज्य जोगवशे. वली एक दहाडो राजाए परीक्षामाटे कुमारोने बंध करेला लाडुना करंडीआ तथा पाणीना घडाउ आप्या. अने कह्युं के, आनां सीलो तोड्याविना तमारे लाडु खावा, अने पाणी पीवुं. पण श्रेणिकशि-

वाय कोइ तेम करी शक्युं नहीं. कारण के तेणें करंडीआने हलावी हलावीने, तेमांथी खरतो लाडुनो भुको खाधो, अने घडामांथी गली जतुं पाणी, एक रूपानां वासणमां बिंदु बिंदुथी एकठुं करीने पीधुं. पढी एक दहाडो घरमां आग लागवाथी राजाए कह्युं के, आमांथी जे वस्तुउ जेउ लेशे, ते तेने स्वाधीन जाणवी. त्यारें सघला कुमारोए तुरत रत्नो ग्रहण कर्यां, पण श्रेणिकें तो भंभा नामनुं वाजित्र लीधुं. त्यारें राजाए पुढ्युं के, तें आ भंभा केम लीधी? त्यारें श्रेणिकें कह्युं के, हे स्वामि! आ राजाउना जयनुं चिह्न ढे, माटे तेने तो जीवनी पेठे सांचववी जोइयें. पढी राजाए खुशी थइ तेनुं (श्रेणिकनुं) "भंभासार," एवुं बीजुं नाम पाड्युं. पढी राजाए तो जुदा जुदा कुमारोने सघलुं राज्य वेहेंची आप्युं, पण श्रेणिकने कंइ आप्युं नहीं; त्यारें श्रेणिक तो त्यांथी निकलीने वेणातट नामना नगरप्रत्ये गयो. तथा त्यां एक भद्र नामना शेठनी डुकानें जइ बेठो. ते वखते नगरमां कोइ मोटो महोत्सव चाली रह्यो हतो. ते वखते शेठ घराघोमां व्याकुल हतो, त्यारें आ कुमार पण तेने पडिकां आदिक बांधवामां मदद करवा लाग्यो. अने एवी रीतें कुमारना माहात्म्यथी ते घणुं डव्य कमायो. पढी तेणें श्रेणिकने पुढ्युं के, आजे तमो कोना अतिथि ढो, त्यारे तेणें कह्युं कें, हुं तमारोज अतिथि ढुं. त्यारें शेठें विचार्युं के, मारी दीकरी नंदाने योग्य जे में आजे स्वप्नमां वर जोयो ढे, ते आज ढे. पढी शेठें कह्युं के, तमारा जेवा अतिथिथी हुं आजे धन्य थयो ढुं. पढी शेठें, डुकान बंध करी, तेने घेर लइ जइ, स्नान करावीने भोजन कराव्युं. एवी रीतें रहेतां थकां, एक दहाडो शेठें तेने कह्युं के, तमो मारी आ नंदा नामनी कन्याने परणो? त्यारें श्रेणिकें कह्युं के मने अजाण्याने तमो कन्या केम आपो ढो? त्यारें तेणें कह्युं के, तमारा गुणोथी तमे कुलीन देखाउ ढो. पढी तेना घणा आग्रहथी श्रेणिक ते कन्यासाथे परण्यो. पढी त्यां विविध प्रकारना भोगो भोगवतो थको श्रेणिक रह्यो. ते वातनी अनुक्रमें प्रसेनजितने खबर पडी. हवे प्रसेनजितने एक दिवसें बहु रोग थइ आववाथी तेणें श्रेणिकने तुरत बोलाववामाटे उंटवालाउने मोकल्या. तेउ पासेथी श्रेणिक, पितानी मांदगी सांजलीने, नंदाने समजावी तुरत राजग्रहप्रत्ये रवाना

थयो. ते त्यां पहोच्याबाद राजाए आनंदपूर्वक तेनो राज्याभिषेक कर्यो. राजा पण पार्श्वप्रभुना ध्यानमांज, पंचपरमेष्टिनमस्कारपूर्वक अनशन करी, मृत्यु पामी देवलोकें गयो. अहीं श्रेणिक राजा राज्य पालवा लाग्या; हवे त्यां रहेली गर्भवंती नंदाने डोहलो उपज्यो के, हुं हाथीपर चडीने प्राणीओने अभयदान आपुं. पछी तेना बापें पण त्यांना राजानी आज्ञाथी तेणीनो ते डोहलो संपूर्ण कर्यो; अने तेथी संपूर्ण समये तेणीए सूर्यसमान पुत्रने जन्म आप्यो. दोहलाने अनुसारें तेनुं अभयकुमार नाम पाड्युं. ते अनुक्रमें आठ वर्षमा तो बहोतेर कलामां कुशल थयो. एक दहाडो सरखी उमरना छोकराउ साथे कजीउं थतां कोइए तेने कह्युं के, तुं शुं बोल्या करे छे? तारो बाप तो कोइ देखातो नथी. त्यारे अभयकुमारें कह्युं के मारो पिता तो भद्र छे, त्यारें ते छोकरे कह्युं के, ते तो तारी मातानो पिता छे. पछी अभयकुमारें नंदाने जइ पुछ्युं के, हे माता, मारो पिता कोण छे? त्यारें नंदाए कह्युं के, तारो पिता भद्र छे; त्यारें अभये फरीथी पुछ्युं के, ते भद्र तो तमारो पिता छे, माटे मारो पिता कोण छे? ते खरेखरुं कहो? त्यारे नंदाए पण खेदसहित कह्युं के, कोइ परदेशी माणस मने आवी परण्यो हतो, अने तुं ज्यारें गर्भमां हतो, त्यारें अहीं केटलाक उंटवालाउ आव्या, तेउनी साथे गुप्त वात करी, ते कंइक चाल्यो गयो छे, माटे ते कोण अने क्यांनो रहिश छे? तेनी मने खबर नथी. पण आटला अक्षरो एक पत्रमां लखी आपी गएल छे, एम कही, तेणीए ते पत्र तेने आप्यो. ते वांचीने अभयकुमारें खुशी थइने कह्युं के, खरेखर मारो पिता राजगृही नगरीनो राजा छे, माटे हुं हमणांज त्यां जइश. पछी भद्र शेठनी रजा लेइने अभयकुमार सामग्री सहित नंदानी साथे राजगृही नगरीए गयो. त्यां माताने बहार उद्यानमां मुकीने, थोडा परिवार सहित ते शेहरमां दाखल थयो.

हवे श्रेणिक राजाए त्यां चारसो नवाणु मंत्रिउने एकठा कर्या हता. अने पांचसोनी संख्या पुरी करवामाटे ते नगरमां कोइ एक पुरुषने शोधतो हतो. तेनी परीक्षामाटे तेणें पोतानी एक वीटी खाली कुवामां नाखीने लोकोने कह्युं के, आ वीटीं कांठापर बेसी जे कोइ हाथथी

लेइ शकशे, तेने हुं मारो अग्रेसर मंत्री करीश. त्यारें लोकोए कह्युं के, ते कार्य अमाराथी तो थइ शके तेम नथी. एटलामां त्यां अजयकुमारें आवी कह्युं के, अरे! आ कार्य कंइ कठिन नथी. ते सांजली लोकोए विचार्युं के, आ कोइ महाबुद्धिमान् माणस लागे छे. पछी लोकोए तेने कह्युं के, हे महाजाग, आ वींटी तुं ग्रहण कर? अने राजानो अग्रेसर मंत्री था? पछी अजयकुमारें ते वींटीपर लीधुं छाण नाख्युं. तथा तेनापर घांसना पुलाने सलगावीने तेणें नाख्यो, अने तेथी ते छाण सुकाइ गयुं. पछी तेणें तुरत एक नेहेर बंधावीने ते मारफतें ते कुवामां पाणी लीधुं. तेथी ते छाण वींटी सहित उपर उपर तरी आव्युं अने तेथी अजयकुमारें हाथवती ते वींटी उपाडी लीधी. आरक्षकोयें ते वात राजाने जणाववाथी, राजायें पण आश्चर्य पामीने अजयकुमारने तेडाव्यो. तथा तेने आलिंगन दइने तेणें पुछ्युं के, तुं क्यांथी आव्यो छे? त्यारें अजयें कह्युं के, हुं वेणातट नगरथी आव्यो छुं. त्यारे राजायें कह्युं के, त्यां जद्र नामना शेठने अने तेनी पुत्री नंदाने तुं जाणे छे? अजयकुमारें कह्युं के, हा. त्यारे वली राजायें पुछ्युं के, ते गर्जवंती हती, तेथी तेणीने शुं छोकरुं थयुं छे? त्यारे कुमारें कह्युं के, तेणीने अजयकुमार नामें पुत्र थयो छे. त्यारे राजायें पुछ्युं के, ते केवा रूपवालो, तथा केवा गुणोवालो, छे? त्यारे अजयें कह्युं के, हे स्वामि, तेज आ हुं, त्यारे राजायें तुरत तेने खोलामां बेसाडी हर्षाश्रुथी नवराव्यो. पछी राजाये पुछ्युं के, तारी माता तो कुशल छे ने? त्यारे अजयें कह्युं के, हे स्वामि, आपनां चरण कमलप्रत्ये जमरीनी पेठे स्मरण करती थकी, ते बहारनां उद्यानमां रहेली छे. पछी राजा अजयकुमारने तेडीने नंदाने बोलाववामाटे सामो गयो. ते वखते तेणें, शिथिल थयां छे, वलयो जेनां, कपोलपर लटकता छे, वालो जेना, अंजन रहित छे, आंखो जेणीनी, वगर गुंथेलो छे चोटलो जेणीनो, मेलां छे कपडां जेणीनां बीजना चंद्रनी पेठे दुबलां शरीरवाली, एवी नंदाने तेणें उद्यानमां रहेली जोइ. पछी राजाए तेणीने तेडी जइने पोतानी पटराणी करी. अजयकुमार पण जक्तिपूर्वक पितानां कार्यो साधवा लाग्यो. एक दहाडो उज्जयनीनो चंडप्रद्योत राजा, राजगृहीने घेरो घालवा चाल्यो. अने तेनी साथे बीजा चौद राजाओ

पण चाल्या. ते वातनी श्रेणिक राजाने खबर पडी त्यारे श्रेणिक विचारमां पडवाथी अजयकुमारें कह्युं के, हुं तेने बुद्धिबलथी जीती शकीश. पछी तेणें तेनी साथे आवेला राजाउना तंबुनी नीचे जमीनमां लोखंडना डाबलाउमां केटलीक सोनामोहोरो मुकी; अने चंडप्रद्योतने एक गुप्त कागल लखीने कहेवराव्युं के, शिवादेवी अने चिल्लणाने कंइ अंतर नथी. माटे शिवादेवीना संबंधथी तमो माननीय छो, माटे तमारा हितनी वात हुं कहुं छुं के, तमारा सघला राजाउने श्रेणिकें फोडेला छे, अने तेउने लांच दाखल सोना मोहोरो आपेली छे, तेथी तेउ तने बांधीने श्रेणिकने सोंपी देशे. तेनी तारे खातरी करवी होय, तो तेउना तंबुमां खोदीश, तो सोनामोहोरो निकलशे. पछी राजायें तेम करवाथी ते वातनी खातरी थवाथी, त्यांथी एकदम पोताना शेहेर तरफ ते चाल्यो. त्यारें श्रेणिकें तेनी पाछल हुमलो करीने, तेना हाथी, घोडा, जंडार विगेरे लुंटी लीधा; अने त्यांथी घोडापर बेसीने केटलीक मुश्केलीथी चंडप्रद्योत उज्जयनी पहोंच्यो. एक दहाडो अवंतीना राजाए सजामां कह्युं के, जे कोइ अजयकुमारने बांधीने मारी पासे लावे तेने हुं घणुं धन आपुं. त्यारें एक गणिकाए ते वात कबुल करी. पछी तेणीए विचार्युं के अजयकुमार धर्मने बाने ठगाशे; एम विचारि तेणें राजापासे बीजी जमरनी बे स्त्रीउ तथा थोडुं धन मागवाथी राजाए ते आप्युं. पछी तेणीए ते बन्ने स्त्रीउने बहुश्रुत अने हुशियार करी. पछी ते त्रणे एकठीयो थइने राजगृह नगरे गइयो. त्यां बहारना उद्यानमां रहीने ते गणिका शेहेरमां जिनमंदिरोनां दर्शन करवाने चाली. त्यां तेउ राजाए करावेला मंदिरमां निसही करीने दाखल थइयो. त्यां तेउ उत्तम रागरागिणीयोथी चैत्यवंदन करवा लागीयो. ते वखते अजयकुमार पण त्यां दर्शन करवा आव्यो, तथा तेउने रंगमंडपमां जोइ, ते द्वारपासे उजो रह्यो. पछी तेउनी जावना जोइ तेमनी पासे जइ अजयकुमारें कह्युं के, तमो कोण छो? तथा क्यांथी आवो छो? त्यारे गणिका बोली के, अमो अवंतीमां रहीयें छीयें, हुं विधवा छुं, अने आ बन्ने मारा छोकरानी वहुउ छे, अने जाग्ययोगें तेउ पण विधवा थयलीयो छे. पछी आ वहुउयें दीक्षा लेवानुं मने कहेवाथी, में तेउने कह्युं के, प्रथम तीर्थयात्रा करीने पछी दीक्षा लेजो? अने तेथी

द्रव्यपूजामाटे तेउने तीर्थयात्रा करावता लावी छुं. त्यारे अजयें कह्युं के, आजे तो तमो अमारा अतिथि थजो, कारण के, अतिथिनी बरदास्त करवी, ते तीर्थथी पण अधिक छे. त्यारे तेणीयें कह्युं के, आजे तो अमारे उपवास छे, माटे ते केम बनशे? त्यारे अजयकुमारें तेउनी निष्ठाथी खुशी थइ कह्युं के, तमारे आवती काले सवारमां मारे घेर जरुर पधारवुं. त्यारे तेणीयें कह्युं के, आ जीवनो एक क्षण पण जरुसो ज्यारे नथी, त्यारे आवती काले आपने त्यां आववाने हुं शी रीतें बंधाउं? त्यारे अजयकुमारें विचार्युं के, कंइ नहीं, आपणे आवती कालेज तेउने निमंत्रण करशुं, एम विचारि तेउने विसर्जन करी, तथा पोते पण चैत्यवंदन करी घेर गयो. पछी बीजे दहाडे सवारमां तेउने बोलावी, घरदेरासरमां वंदन करावी, सारी रीतें जमाडी, तेणें वस्त्र आदिक पण आप्यां. पछी बीजे दहाडे तेणीयें पण अजयकुमारने निमंत्रण कर्याथी, ते पण तेउने स्थानकें गयो. तेउये तेने विविध प्रकारनां जोजनो जमाड्यां, तथा मदिरामिश्रित पिवाना पदार्थो पण पाया. जम्याबाद तुरतज अजयकुमार त्यां निद्रावश थयो, कारण के निद्रा मद्यपाननी पेहेली सहचरी छे. पछी तेउये जगोजगोये राखेला रथमां टपानी पेठे नाखीने तेने अवंती पहोंचाडीदीधो.

हवे अहीं श्रेणिकें अजयकुमारने शोधवामाटे मोकलेलां माणस शोधतां थकां ते वेश्यानां स्थानकें आव्यां, अने पुछ्युं के अहीं. अजयकुमार आवेल छे? तो तेणीयें कह्युं के, आव्या हता, पण पाछा चाल्या गया छे. तेणीनां वचनपर जरुसो राखी, तेउ त्यांथी निकली बीजी जगोपर शोधवा गया; अने गणिका पण तुरत अवंतीये आवी पहोंची. तथा अजयकुमारने राजाने सोंप्यो; अने सघलो वृत्तांत कही संजलाव्यो. त्यारें राजायें कह्युं के, तें आने धर्मना बहानाथी ठग्यो, ते काम सारुं कर्युं नहि. पछी अजयें राजाने कह्युं के, तुं महामहाबुद्धिमान् छे के, जेनी आवी रीतनी बुद्धिथी राजधर्म वृद्धि पामे छे!! ते सांजली चंडप्रद्योतें लज्जित तथा क्रोधित थइने, तेने काष्टना पांजरामां पुर्यो. हवे तेनां अग्निजिरु नामें रथ, शिवा नामे देवी, नलगिरि नामे हाथी तथा लोहजंघ नामें खेपीउ, एटलां रत्नो हतां. हवे तेउमांथी लोहजंघने राजा वारंवार जृगुकछ नगरे मोकलतो हतो, तेना आववा जवाथी खेद पामीने त्यानां

लोकोए विचार्युं के, आ एक दहाडामां पचीस जोजन जाय छे, अने आपणा व्यापार आदिकनी खबर अंतर लइ जाय छे, माटे तेने मारी नाखवो. एम विचारि तेउंए तेने जातांदाखल झेरना लाडु आप्या. पछी ज्यारे ते थोडे दूर जइ खावा माटे तैयारी करवा लाग्यो, त्यारे माठां शुकन थयां. तेथी नहीं खातां, ते थोडुक अगाडी चाल्यो, अने खावा लाग्यो, तो पण त्यां तेने माठां शुकन थयां, एम बे चारवार खावा बेसतां पण माठां शुकन थवाथी, तेणे नहीं खातां ते लाडु अवंती जइ राजाने देखाडी सर्व हकीकत कही, तेथी राजायें अभयकुमारने ते लाडुनी कोथली देखाडीने कह्युं के, आ सुंघीने कहो के, आमां शुं छे? त्यारे अभयकुमारें कह्युं के, तेमां द्रव्यना संयोगथी दृष्टिविषसर्प थयेलो छे; माटे तेने पीठ दइने वनमां छोडी मेलवो, तेथी राजाए तेम कर्याथी पासे रहेलुं वृक्ष बली गयुं, तथा ते सर्प पण मृत्यु पाम्यो; त्यारे राजायें खुशी थइ, अभयकुमारने कह्युं के, तुं आ बंधनमोक्ष शिवाय मारी पासेथी वरदान मागी ले त्यारे अभयें कह्युं के, हाल तो ते वरदान हुं आपनी पासे थापण तरिके राखु छुं. एक दहाडो राजानो नलगिरि हाथी आलान स्तंभने उखेडी नाखीने, तथा मावतने पण फेंकी दइने, लोकोने क्षोभ पमाडवा लाग्यो. त्यारे राजाए अभयकुमारने तेने वश करवानो उपाय पुछतां तेणें कह्युं के, जो उदयन राजा वासवदत्ता पुत्रीनी साथे गायन करे, तो ते वश थाय. त्यारे राजाए तेम करी तेने वश कर्यो. अने अभयकुमारने वरदान लेवानुं कहेतां, तेणें ते वर पण थापण तरिके राख्यो. पछी एक दहाडो त्यां जबरी आग लागवाथी राजाए तेनो उपाय पुछतां अभयकुमारें कह्युं के, तेनी सांमे अग्नि सलगावो. राजाए तेम कर्याथी अग्नि ठरी जवाथी त्रीजो वर आपवाने कहेतां ते पण तेणें थापण राख्यो. पछी राजाए तेने खुशी थइ छोडी दीधो. पछी अभयकुमारें तेने कह्युं के, तुं मने कपटथी लाव्यो छुं, पण हुं खरो तो तने तारा नगरमांथी धोले दिवसे पोकार करतो उपाडी जइश. पछी अभयकुमार राजगृह नगरें गयो, अने त्यां केटलोक काल रह्यो, पछी केटलेक दिवसे गणिकानी बे पुत्रीउं लइ ते, वणिकनो वेष लइ अवंती आवीने राजमार्गपर घर लेई रह्यो. एक दहाडो ते रस्तेथी जता चंडप्रद्योतें ते छोकरीउंने जो-

इ, तथा तेउंए पण तेने जोयो. पठी चंडप्रद्योतें तेनापर अनुरागी थइने तेने बोलाववामाटे दूती मोकली, पण तेणीउंए तो गुस्से थई ते दूतीने कह्राडी मेली. बीजे दिवसे पण राजाए दासीने मोकलवाथी तेउंए थोडो गुस्सो कर्यो. पठी त्रीजे दहाडे पण ज्यारे दासी आवी, त्यारे तेउंए कह्युं के, अमारो जाइ आजथी सातमे दिवसे बहार जवानो ठे, तेथी ते दिवसें राजाए अत्रे गुप्त रीतें आववुं. हवे अहीं अजयकुमारें राजाना सरखा आकारवालो एक उन्मत्त पुरुषने पोताना वशमां लइ तेनुं नाम प्रद्योत राख्युं. पठी तेने रस्तामां लइ जइ, लोकोने कहेवा लाग्यो के, आ मारो प्रद्योत जाइ, गांडो बनी गयो ठे, अने आम तेम रखड्या करे ठे, हवे मारे तो तेनुं शी रीतें रक्षण करवुं ? वली तेने ते हमेशां वैद्यने घेर मांचीमां बेसाडी लेइ जतो, अने शिखवी मुकवाथी ते माणस पण हमेशां रस्तामां पोकार करतो. अने बोलतो के, मने प्रद्योतने आ लइ जाय ठे. हवे सातमे दहाडे राजा पण एकाकी (एकलो) त्यां आव्यो, अने अजयकुमारनां माणसोए तेने बांध्यो. पठी ते खाटला साथे उपाड्यो, अने रस्ते पोकार करवाथी, अजयकुमारें लोकोने कह्युं के, आ मारा जाइने वैद्यने त्यां लेइ जवो ठे. पठी तेने जगो जगोए राखेला रथपर चडावीने अजयकुमार राजगृही नगरीप्रत्ये लेइ गयो. अने श्रेणिकने जइ सोंप्यो, त्यारे श्रेणिक राजा तलवार लेइ तेने मारवा दोड्यो. पण अजयकुमारें समजाव्याथी, तेने श्रेणिकें सन्मानपूर्वक वस्त्राजरण दइ, जवानी रजा आपी.

हवे एक दहाडो कोइ कठीआरे वैराग्यथी सुधर्मा स्वामि पासे दीक्षा लीधी. पण लोको तेनी आगलना धंधाने अनुसारे हांसी करवा लाग्या, तेथी तेणे सुधर्मास्वामिने विनति करी के, हुं अत्रेथी बीजी जगोए विहार करीश. ते वात सुधर्मा स्वामिए अजयकुमारने जणाववाथी, तेणे लोकोमां ढंढेरो पिटाव्यो के, मारे त्रण क्रोड सोनामोहोरो देवि ठे, माटे तमो सघला आवजो ? पठी ज्यारे लोको एकठा थया, त्यारे तेणें कह्युं के, जे माणस, पाणी, अग्नि अने स्त्रीने तजे, तेने मारे आ सोना मोहोरो आपवी ठे; त्यारे लोकोए कह्युं के, हे स्वामि ! आवुं लोकोत्तर कार्य कोण करी शके? त्यारे अजयकुमारें कह्युं के, ज्यारे तमो कोइ लेइ शको तेम नथी, त्यारें ते कठीयारा मुनिने आपवी लायक ठे,

कारण के, तेणें ते त्रणे वस्तुओ तजी छे. त्यारे लोकोए पण वात कबुल राखी; अने कह्युं के, ते दानने तेज लायक छे, आटला दहाडा अमोए तेनी फोकट हांसी करी. त्यारे अभयें कह्युं के, हवे तमारे तेनी कोइए हांसी करवी नहि, त्यारे लोको पण ते वात अंगीकार करीने चाल्या गया. एवी रीतें ते महाबुद्धिमान् अभयकुमार राज्य चलाववा लाग्यो. वली तें बार व्रतधारी थइने वहारना वेरीनी पेठे अंतरंग वेरीओने पण जीतवा लाग्यो; अने एवी रीतें बन्ने लोकनुं कार्य ते साधवा लाग्यो. एक दहाडो श्रेणिकें अभयने कह्युं के, हवे तुं राज्य चलाव्य अने हुं श्री वीरप्रभुपासे जइ तेमनी सेवा करीश. त्यारे अभयकुमारें कह्युं के, आपनुं कहेवुं वाजबी छे, पण तमो थोडा दिवस राह जुओ. एटलामां वीर प्रभु पण उदायिन राजाने दीक्षा आपी मारवाडथी त्यां आवी समोसर्या. त्यारे अभय कुमारें प्रभुने आवी पूछ्युं के, छेल्ला राजर्षि कोण थया छे? त्यारे प्रभुए पण उदायिननुं नाम आप्युं. त्यारे अभयें श्रेणिक राजाने जइ कह्युं के, जो राजा ऋषि न थता होत तो, हुं पण राज्य ग्रहण करत, पण उदायिन राजायें हमणांज दीक्षा लीधी छे, माटे हुं पण वीरप्रभु जेवा स्वामि, अने आपना जेवा पिताने पामीने दीक्षाज लेइश, माटे मारे राज्यनी जरुर नथी. पछी घणी खेंच करतां पण ज्यारे अभय कुमारे मान्युं नहि, त्यारे राजायें तेमने दीक्षामाटे अनुज्ञा आपी. पछी तेमणे पण वीरप्रभुपासे जइ दीक्षा लीधी. एवी रीतें संतोष राखीने अभयकुमार दीक्षा लइ, काल करीने सर्वार्थसिद्धि प्रत्ये पहोंच्या. माटे संतोषने धारण करता माणसने उत्तरोत्तर सुखनी प्राप्ति थाय छे. एवी रीतें अभयकुमारनी कथा कही.

वली पण संतोषनीज स्तुति करे छे.

संनिधौ निधयस्तस्य, कामगव्यनुगामिनी॥
अमराः किंकरायंते, संतोषोयस्य भूषणं॥ ११७॥

अर्थः— जेने संतोषरूपी भूषण छे, ते माणसने महापद्म आदिक निधानो नजदिक आवे छे. कामधेनु तो तेनी अनुचरी थाय छे, तथा देवो तो चाकर रूप थाय छे.

धन, धान्य, सोनुं, रुपुं, कुवा, क्षेत्र, घर, बे पगवालां प्राणी, अने

चोपगमां पशु आदिक, ए नव प्रकारनो बाह्य परिग्रह छे. राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ, शोक, हास्य, रति, अरति, भय, जुगुप्सा, वेद, (स्त्री, पुरुष, नपुंसक,) तथा मिथ्यात्व, ए चौद अंतर परिग्रह छे. बाह्य परिग्रहोथी अंतरपरिग्रहो वृद्धि पामे छे. वृद्धि पामेला वैराग्यरूपी महावृक्षोने पण परिग्रहरूपी पवन उखेडी नाखे. वली जे माणस परिग्रहसहित मोक्षने इच्छे छे, ते माणस लोखंडनी नावमां बेसी समुद्र तरवानी इच्छा राखवा जेवुं करे छे. वली ते बाह्य परिग्रहो धर्मनो नाश करनारा छे. वली जे बाह्य परिग्रहोने जीतवाने समर्थ नथी, ते अंतरपरिग्रहने शी रीतें जीती शकशे? वली ते परिग्रह अज्ञानने तो क्रीडा करवानुं वन छे, दुःखरूपी पाणीनो महासागर छे, तथा तृष्णा रूपी वेलडीनो कंद छे; वली धननी रक्षामां तत्पर एवा लोभी माणसो, परिग्रह रहित मुनिने पण धनना अर्थि जाणी तेउंथी दूर भागता फरे छे. वली धनवान् लोको, राजा, चोर, कुटुंबी, अग्नि, पाणी आदिकना भयथी रात्रिए उंघता पण नथी. तेउना करता निर्धन लोको उलटा सुखें जीवी शके छे. वली धनवान मृत्यु पर्यंत पण धननी आशा तजतो नथी. माटे जो मोक्षनी इच्छा होय, तो आशानो त्याग करवो; कारण के ते आशा मोक्ष अने स्वर्गनां द्वारप्रत्ये भोगल समान छे. ते आशा राक्षसी सरखी, विषमंजरी सरखी, तथा जीर्णमदिरा सरखी छे- माटे एवी रीतनी आशाने जे दूर करशे, ते माणस सुखें जीवी शकशे. आशारूपी अग्नि एवो तो आश्चर्यजनक छे के, ते समतारूपी मेघनो पण नाश करे छे, आशारूपी पिशाचणीने वश थएला माणसो धनवाननी पासे दीनताथी लाचारी करे छे, गाय छे, नाचे छे, अने नमे छे. ज्यां पवन के सूर्यना किरणो पण पहोंची शकता नथी, त्यां पण माणसोना आशारूपी मोजाउं पहोंची वले छे. वली जो माणसने पुण्यनो उदय होशे, तो आशारूपी पिशाचणी वृथा छे; अने पुण्यनो उदय नहीं होय, तो पण ते वृथा छे. वली जेणे आशा तजी छे, तेज पंडित अने मुनि कहेवाय छे. माटे टुंकामां मतलब एज के, जेनी आशा शांत थएली छे, तेणें मोक्षज मेलव्यो छे, माटे आशाने तजीने, परिग्रहनुं प्रमाण करीने, यतिधर्ममां अनुरक्त रही, भावसाधुपणुं अंगीकार करवुं. मिथ्यात्विउंथी सम्य-

सिवउं उत्तम छे, अने तेउंथी पण, परिग्रहना प्रमाणवाला देशविरतिउं श्रेष्ट छे. अति अद्भुत तपवालो तामली तापस पण श्रावकोचित गतिथी पण हलकी गतिए गएलो छे. माटे आशाने तजीने यतिधर्ममां अनुरक्त थवाथी आठ जवमां मोक्ष मले छे.

एवी रीतें परम जैनी एवा श्रीकुमारपाल राजायें सेवाएला आचार्य महाराज श्री हेमचंद्रजीए बनावेला अध्यात्मोपनिषद् नामना संजातपट्टबंधमां श्रीयोगशास्त्रना बार प्रकाशमांना बीजा प्रकाशनुं विवरण संपूर्ण थयुं.

श्री जिनाय नमः

तृतीयः प्रकाशः प्रारभ्यते.

हवे अणुव्रतना वर्णन पछी गुणव्रतोनो अवसर छे. तेथी पेहेलां हवे गुणव्रतोनुं वर्णन करे छे.

दशस्वपि कृता दिक्षु, यत्र सीमा न लंघ्यते ॥
ख्यातं दिग्विरतिरिति, प्रथमं तद्गुणव्रतं ॥ १ ॥

अर्थः— जेमां दशे दिशाउंमां करेली सीमा उल्लंघन न थइ शके, तेने पेहेलुं दिग्विरति नामनुं गुणव्रत कहेलुं छे.

टीकाः— दश दिशाउं एटले, ऐंद्री (पूर्व) आग्नेयी. (अग्निकोण) याम्या, (दक्षिण) नैऋती, वारूणी, पश्चिम, वायव्या, कौबेरी (उत्तर) ऐशानी, नागी, तथा ब्राह्मी. तेउंने विषे, अथवा तेउंमांथी एक दिशाने विषे पण करेली सीमा, जे व्रत होते छते उल्लंघाती नथी, तेने पेहेलुं गुणव्रत कहे छे. अने ते व्रत अणुव्रतना उपकारमाटे छे. वली तेने दिग्विरतिव्रत पण कहे छे. हवे अहीं कोइ शंका करे के, अणुव्रत तो पापस्थानोनी विरतिरूप छे, पण आ दिग्व्रतमां कया पापस्थानकनी निवृत्ति थाय छे? तेने माटे कहे छे, आ व्रतमां पण पापस्थानकोनी निवृत्ति छे. अने तेज हवे कहे छे

चराचराणां जीवानां, विमर्द्दननिवर्त्तनात् ॥
तप्तायोगोलकल्पस्य, सद्वृत्तं गृहिणोऽप्यदः ॥ २ ॥

अर्थः— तपेला लोखंडना गोला सरखा (कारण के,) गृहस्थ खावा-

पीवामां सुवामां, तथा व्यापार आदिकमां जीवोनुं उपमर्दन अत्यंत कर्या करे छे, एवा पण गृहस्थने आ दिग्व्रत करवुं कह्युं छे; केमके ते नियमथी, नियम बहार रहेली जगोपरना त्रस, थावर जीवोनी हिंसानी निवृत्ति थाय छे; एवी रीतें आ व्रतमां पण हिंसादिक पापस्थानोनी निवृत्ति थाय छे.

हवे आ व्रतमां लोजनी पण विरति आवी जाय छे, ते देखाडे छे.

जगदाक्रममाणस्य, प्रसरल्लोजवारिधेः ॥
स्खलनं विदधे तेन, येन दिग्विरतिः कृता ॥ ३ ॥

अर्थः– जे माणसें दिग्विरति व्रत अंगीकार कर्युं छे, तेणें अनेक विकल्पो रूपी कल्लोलोयें (मोजाउये) करीने फेलावो पामता, तथा समस्त जगतने आक्रमण करता, एवा लोजरूपी समुद्रने पण अटकाव्यो छे. कारण के ते व्रतथी, पोते लीधेलां पच्चखाण उपरांतनी जूमिमां जइ, त्यांना धन धान्यादिक लेवानो तेने प्रायः करीने लोज नहीं थइ शके.

माटे गृहस्थोयें ते व्रत जावजीवथी मांडीने चतुर्मास अथवा तेथी पण स्वल्प कालसुधि करवुं. वली चारणमुनिउ के, जेउने दिग्विरतिव्रत नथी, तेथी तेउ उंचे मेरुना मस्तक सुधि, तथा तिरछा रुचक पर्वतसुधि पण जइ शके छे. माटे जेउ सघली दिशाउमां जवानुं अमुक हदसुधिनुं नियम ले छे, तेउने स्वर्ग आदिकनी संपदाउ मले छे.

हवे बीजा गुणव्रतनुं स्वरूप कहे छे.

जोगोपजोगयोः संख्या, शक्त्या यत्र विधीयते ॥
जोगोपजोगमानं त, द्वैतीयीकं गुणव्रतं ॥ ४ ॥

अर्थः–शक्ति केहेतां शरीर अने मनने जेथी बाधा न उपजे, एवी रीतें जे जोगोपजोगनुं परिमाण करवुं, तेने बीजुं गुणव्रत कहेलुं छे.

हवे जोगोपजोगनुं लक्षण कहे छे.

सकृदेव जुज्यते यः, स जोगोऽन्नस्रगादिकः ॥
पुनः पुनः पुनर्जोग्य, उपजोगोंगनादिकः ॥ ५ ॥

अर्थः–अन्न तथा पुष्पमाला आदिक,जे एकजवार जोगवाय छे, ते जोग कहेवाय तथा स्त्री आदिक जे वारंवार जोगवाय छे, ते उपजोग कहेवाय.

टीका जोगमां आदि शब्दथी तांबूल, विलेपन, धूप विगेरेनुं ग्रहण क-

रवुं, तथा उपभोगमां आदि शब्दथी वस्त्र, अलंकार, घर, शय्या, आसन, वाहन आदिकनुं ग्रहण करवुं.

हवे कइ कइ वस्तु खावापीवामां वर्जवी, तेनुं स्वरूप कहे छे.

मद्यं मांसं नवनीतं, मधूदुंबरपंचकं ॥
अनंतकायमज्ञात, फलं रात्रौ च भोजनं ॥ ६ ॥
आमगोरससंपृक्तं, द्विदलं पुष्पितोदनं ॥
दध्यहर्द्वितीयातीतं, कुथितान्नं विवर्जयेत् ॥ ७ ॥

हवे मदिराथी थता दोषोने दश श्लोको वडे करीने कहे छे.

मदिरापानमात्रेण, बुद्धिर्नश्यति दूरतः ॥
वैदग्धिबंधुरस्यापि, दौर्भाग्येणेव कामिनी ॥ ८ ॥

अर्थः—मदिरापानथी बुद्धि दूर जाय छे, कोनी पेठे, तो के, दुर्भाग्यपणाना दोषथी विद्वाननी पण स्त्री जेम, तेम.

पापाः कादंबरीपान, विवशीकृतचेतसः ॥
जननीं हा प्रियीयंति, जननीयंति च प्रियां ॥ ए ॥

अर्थः— अरे! मदिरापानथी पराधीन थएलां छे चित्त जेमनां, एवा दुष्ट माणसो, माताने स्त्री तरिके गणे छे, तथा स्त्रीने माता तरिके गणे छे.

न जानाति परं स्वं वा, मद्याच्चलितचेतनः ॥
स्वामीयति वराकः स्वं, स्वामिनं किंकरीयति ॥ १० ॥

अर्थः—मद्यथी चलायमान थएलुं छे, चित्त जेनुं एवो ते अनुकंपा करवालायक माणस,पोताने शेठ तरीके लेखे छे तथा शेठने चाकरतरिके लेखेछे.

मद्यपस्य शबस्येव, लुठितस्य चतुष्पथे ॥
मूत्रयंति मुखे श्वानो, व्यात्ते विवरशंकया ॥ ११ ॥

अर्थः— मुडदांनी पेठे चोवटामां लोटता, एवा मदिरापान करनारना खुल्ला रहेला मुखमां विवरनी बुद्धिथी कुतराओ पण मुतरे छे.

मद्यपानरसे मग्नो नग्नः स्वपिति चत्वरे ॥
गूढं च स्वमभिप्रायं, प्रकाशयति लीलया ॥ १२ ॥

अर्थः— मद्यपानमां आसक्त थएलो माणस, चोवटामां पण नग्न थइने पडे छे, तथा पोताना राज्यद्रोहादिक गूढ अभिप्रायोने पण लीलामात्रमां प्रगट करी दे छे.

वारुणीपानतो यांति, कांतिकीर्तिमतिश्रियः ॥
विचित्राश्चित्ररचना, विलुठत्कज्जलादिव ॥ १३ ॥

अर्थः— मदिरापानथी कांति, कीर्त्ति, मति (बुद्धि) तथा लक्ष्मी पण चाली जाय छे, कोनी पेठे, तो के, काजल चोपड्याथी जेम विचित्र प्रकारनी चित्ररचना तेम.

भूतार्त्तवन्नरीनर्ति, रारटीति सशोकवत् ॥
दाहज्वरार्त्तवद् भूमौ, सुरापो लोलुठीति च ॥ १४ ॥

अर्थः— मदिरापान करनारो माणस, भूत वलगेलानी पेठे नाचे छे, शोकवालानी पेठे अत्यंत रडे छे, तथा दाहज्वरथी पीडित थएलानी पेठे पृथ्वीपर लोट्या करे छे.

विदधत्यंगशैथिल्यं, ग्लापयंतींद्रियाणि च ॥
मूर्छामतुच्छां यच्छंती, हाला हालाहलोपमा ॥ १५ ॥

अर्थः— झेरतुल्य एवी मदिरा, अंगने शिथिल करे छे, इंद्रियोने निर्बल करे छे, तथा अत्यंत मूर्छा आपे छे.

विवेकः संयमो ज्ञानं, सत्यं शौचं दया क्षमा ॥
मद्यात्प्रलीयते सर्वं, तृण्या वह्निकणादिव ॥ १६ ॥

अर्थः— मद्यपानथी विवेक, संयम, ज्ञान, सत्य, पवित्रता, दया तथा क्षमा पण, अग्निना कणीआथी जेम घांसनो समूह तेम नाश पामे छे.

दोषाणां कारणं मद्यं, मद्यं कारणमापदां ॥
रोगातुर इवापथ्यं, तस्मान्मद्यं विवर्जयेत् ॥ १७ ॥

अर्थः— मद्य छे ते चोरी, पारदारिक आदिक दोषोना कारणरूप छे; तेम वधबंधनादिक आपदाओनुं पण कारण छे; माटे रोगी जेम कुपथ्यने तेम, मद्यनो त्याग करवो.

वली ते मद्यमां केटलाक जंतुउं पण पेदा थाय छे, माटे जीवहिंसा थकी बीता प्रणीयें कदी पण ते पीवुं नहीं. वली मद्यपान करनारो माणस दीधेलाने नहीं दीधेलुं इत्यादि हमेशां विपरीतज जाषण कस्या करे छे; वली ते वधबंधन आदिकनो जय नहीं राखतां घरमांथी, बहारथी, अथवा मार्गमां पण शंकारहित चोरी करे छे, वली तेवो माणस बालिका, युवान, वृद्ध, चंडालणी विगेरे परस्त्रीने पण जोगवे छे. वली शास्त्रोमां पण संजलाय छे के मद्यांध थयेला सांबकुमारें कुलनो नाश करावी पितानी नगरीने पण बाली नखावी. वली तेवा माणसने मदिराथी पण कदी संतोष वलतोज नथी. वली अन्य दर्शनीउंए पण पुराण आदिकमां मद्यनो निषेध कर्यो छे.

हवे मांसना दोषो देखाडे छे.

चिखादिषति यो मांसं, प्राणिप्राणापहारतः ॥
उन्मूलयत्यसौ मूलं, दयाख्यं धर्मशाखिनः ॥ १८ ॥

अर्थः— प्राणीउंना प्राणोनो नाश करीने जे माणस मांसनुं जक्षण करवाने इछे छे, ते माणस, धर्मरूपी वृक्षना दया नामनां मूलने, मूलमांथी उखेडी नाखे छे.

अशनीयन् सदा मांसं, दयां यो हि चिकीर्षति ॥
ज्वलति ज्वलने वल्लीं, सरोपयितुमिछति ॥ १९ ॥

अर्थः— जे माणस हमेशां मांस खातो थको, दया करवाने इछे छे, ते माणस बलता अग्निमां वेलडीने रोपवाने इछे छे.

हवे अहीं कोइ शंका करे के, प्राणीउंनो घात करनार कोइ बीजा होय, अने मांस खानार कोइ बीजो होय, माटे तेमां हिंसा कोने लागे ? तेने माटे कहे छे.

हंता पलस्य विक्रेता, संस्कर्त्ता जक्षकस्तथा ॥
क्रेताऽनुमंता दाता च, घातका एव यन्मनुः ॥ २० ॥

अर्थः— प्राणीउंनी हिंसा करनार, मांसनो वेचनार, संस्कार करनार, जक्षण करनार, वेंचातुं लेनार, अनुमोदना करनार, तथा मांसनुं दान

देनार ए सघला हिंसको छे, केम के मनु (मनुस्मृतिना करनार) पण कहे छे के.

अनुमंता विशसिता, निहंता क्रयविक्रयी ॥
संस्कर्त्ता चोपहर्त्ता च, खादकश्चेति घातकाः ॥ २१ ॥

अर्थः— हिंसानी अथवा मांसनी अनुमोदना करनार, हणेला प्राणीना अंगना जागो करनार, हणनार, मांसनो वेपार करनार, मांसने पकावनार, मांसने पीरसनार, तथा खानार ए सघलाउने हिंसक जाणवा.

वली बीजो पण मुनुए कहेलो श्लोक कहे छे.

नाकृत्वा प्राणिनां हिंसां, मांसमुत्पद्यते क्वचित् ॥
न च प्राणिवधः स्वर्ग्यं, स्तस्मान्मांसं विवर्जयेत् ॥ २२ ॥

अर्थः— प्राणिउनी हिंसा कर्याविना मांस, कोइ पण रीतें मली शकतुं नथी, अने प्रणिउनी जे हिंसा. ते स्वर्ग आपनारी नथी, माटे मांसनो त्याग करवो.

हवे अन्यना परिहारें करीने मांसन्नक्षकनेज हिंसक पणुं देखाडता थका कहे छे.

ये न्नक्षयंत्यन्यपलं, स्वकीयपलपुष्टये ॥
त एव घातका यन्न, वधको न्नक्षकं विना ॥ २३ ॥

अर्थः— जे माणसो, पोतानां मांसनी पुष्टि माटे, परनां मांसनुं न्नक्षण करे छे, ते माणसोज खरेखरा तो हिंसको छे, कारण के, मांस खानारविना वध करनार तो होयज क्यांथी? वली सिद्धांतमां पण कह्युं छे के,

हंतूणं परपाणे, अप्पाणं जे कुणंति सप्पाणं ॥
अप्पाणं दिवसाणं, कएण नासंति अप्पाणं ॥ १ ॥

हवे तेज शरीरनी जुगुप्सा देखाडे छे.

मिष्टान्नान्यपि विष्टासा, दमृतान्यपि मूत्रसात् ॥
स्युर्यस्मिन्नंगकस्यास्य, कृते कः पापमाचरेत् ॥ २४ ॥

अर्थः— जे शरीरनी अंदर, मिष्ट मिष्ट एवां अन्न आदिक पण विष्टा-

रूप थाय छे, तथा अमृत केतां पाणी आदिक पण मूत्ररूप थाय छे. ए-वा आ शरीरने माटे कोण पाप करी शके?

हवे "मांस जक्षणमां दोष नथी" एवुं जेउ कहे छे, तेउने निंद-ता थका कहे छे.

मांसाशने न दोषोऽस्ती, त्युच्यते यैर्डुरात्मजिः ॥
व्याधगृध्रवृकव्याघ्र, शृगालास्तैर्गुरूकृताः ॥ २५ ॥

अर्थः— "मांसजक्षणमां दोष नथी" एम जे डुरात्माउं कहे छे, ते-उंए, शिकारि, गीध, शियाल, वाघ विगेरेने पोताना गुरुरूप कर्या छे; का-रण के, तेउविना बिजा कोण तेउने तेम करवानो उपदेश करे?

हवे निरुक्तबलें करीने मांसनुं परिहारपणुं कहे छे.

मांसजक्षयिताऽमुत्र, यस्य मांसमिहाद्म्यहं ॥
एतन्मांसस्य मांसत्वे, निरुक्तिं मनुरब्रवीत् ॥ २६ ॥

अर्थः— जेना मांसने हुं आ लोकमां जक्षण करुं छुं ते परलोकमां मने जक्षण करशे एवी रीतनो मांस शब्दनो निरुक्तिपूर्वक अर्थ मनुए पण कहेलो छे. अर्थात् "मां स जयक्षयिता" मने ते खाशे.

हवे मांसजक्षणना महादोषने कहे छे,

मांसास्वादनलुब्धस्य, देहिनं देहिनंप्रति ॥
हंतुं प्रवर्त्तते बुद्धिः, शाकिन्या इव डुर्धियः ॥ २७ ॥

अर्थः— मांसना स्वादमां लुब्ध थएला डुर्बुद्धिनी बुद्धि शाकणीनी पे-ठे, दरेक प्राणीने मारवानो प्रयत्न करे छे.

हवे मांसजक्षणनो दोष देखाडे छे.

ये जक्षयंति पिशितं, दिव्यजोज्येषु सत्स्वपि ॥
सुधारसं परित्यज्य, जुंजते ते हलाहलं ॥ २८ ॥

अर्थ जे माणसो, दूधपाक, शीखंड, दहीं, लाडु, घेवर, पुरणपोली, व-डां, गोल, खांड, साकर, डाख, आंबा, केलां, दाडिम, नारंगी, खजुर, वि-गेरे दिव्य जोजनो होते बते पण, तेउने तजीने, महाडुर्गंधवाला मां-सनुं जक्षण करे छे, ते माणसो अमृतरसने तजीने फेरनुं जोजन करे छे.

केम के, एक बालक पण पत्थर छोडीने सुवर्णने अंगीकार करशे; माटे मांसभक्षकोने तो बालकोथी पण मूर्ख जाणवा.

हवे वली बीजा प्रकारथी पण, मांसभक्षणना दोषो कहे छे.

न धर्मो निर्दयस्यास्ति, पलादस्य कुतो दया ॥
पललुब्धो न तद्वेत्ति, विद्याद्वोपदिशेन्नहि ॥ २९ ॥

अर्थः– निर्दय माणसने धर्म होतो नथी, अने मांसभक्षकने दया क्यांथी होय ? (कारण के, मांसभक्षक पण हिंसकज छे) वली मांसनो लुब्ध माणस धर्म अथवा दयाने जाणतो पण नथी; अने कदाच जाणे, तो पण ते कोइने पण तेनो उपदेश देइ शकतो नथी. (केम के, पोते ज्यारे मांसमां लुब्ध होय, त्यारे ते एमज धारे के, सघला माणसो माराजेवाज थाय तो सारुं, एवोज ते विचार कर्या करे; अने तेथी जाणतां छतां पण, तेना त्यागमाटे ते कोइने पण उपदेश करी शकतो नथी.)

हवे मांसभक्षकोनी मूढताने देखाडे छे.

केचिन्मांसं महामोहा, दश्नंति न परं स्वयं ॥
देवपित्रतिथिभ्योऽपि, कल्पयंति यदूचिरे ॥ ३० ॥

अर्थः– कुशास्त्रोथी ठगाएला केटलाक माणसो, महामोहथी, पोतेज मांस खाय छे, एटलुंज नही, पण देव, पितृ अने अतिथिउप्रत्ये पण मांसने कल्पे छे. कारण के, ते अन्य धर्मना पण शास्त्रकारो कहे छे के,

क्रीत्वा स्वयं वाप्युत्पाद्य, परोपहृतमेव वा ॥
देवान् पितृन् समभ्यर्च्य, खादन् मांसं न दुष्यति ॥ ३१ ॥

अर्थः– वेचातुं लेइने, अथवा पोते पेदा करीने, अथवा कोइये आपेला मांसथी, देव, अने पितृने पूजीने, ते मांस खातां थकां दोष नथी. एम अन्य दर्शनीउनो मत छे.

टीकाः—वेचातुं लेवुं, एटले पाराधी अथवा पक्षिउ पालनारा पासेथी लेवुं ते. पण कसाइने त्यांथी लेवुं नहीं. कारण के तेवुं मांस देवपूजा आदिकमां खप लागतुं नथी. हवे पोते पेदा करवुं, एटले ब्राह्मण भिक्षा मागीने लावे, अने क्षत्रिय शिकार करीने लावे; अथवा कोइयें आपेला मांसथी देव, पितृ, अने अतिथिनी भक्ति करीने खावामां दोष नथी; एम

मनु कहे छे. पण ते केवुं मोहनुं विजृंजित छे. कारण के, ज्यारे माणसें पोतेज मांस खावुं अनुचित छे, तो देवादिकोने ते आपवुं, ते तो सर्वथा ज अनुचित छे. वली ते देवो तो धातुरहित शरीरवाला, अने कवलआहारविनाना छे, त्यारें तेउ मांसजक्षण शी रीतें करी शकशे? वली पितृउ पण पोतेज करेलां कर्मोने अनुसारें फलादिक जोगवे छे, अने तेथी करीने तेउ कंइ पुत्रादिकें करेला शुज्ज कार्योनुं पण फल ज्यारे जोगवी शकता नथी, त्यारे मांसादिक आपवारूप डुष्कर्म तेने ते शी रीतें जोगवी शकशे? वली सत्कार करवाने लायक एवा अतिथिउ प्रत्ये जे मांस आपवुं, ते पण महा अनर्थनेमाटे थाय छे. वली कोइ शंका करे के, तेम करवुं श्रुतिने आधारे छे. माटे तेमां कंइ दोष नथी. तो तेने माटे कहे छे के, ते श्रुतिना करनाराउ कंइ प्रमाणिक गणाय तेवा नथी. केमके, तेउये तो गायनो स्पर्श, वृक्षोनी पूजा, बकरा आदिकनो वध स्वर्गने देनारो छे, एम कह्युं छे. अने ते वात तो असंजवित छे. माटे एवी रीतना श्रुतिकारकोपर शी रीतें श्रद्धा करी शकाय?

हवे अहीं कोइ शंका करे के, मनुना कहेवा प्रमाणे मंत्रथी संस्कार करेलो अग्नि, जेम बालतो नथी. तेम मंत्रथी संस्कार करेलुं मांस खावाथी पण कंइ दोष नथी, तेने माटे हवे कहे छे.

मंत्रसंस्कृतमप्यद्या, द्यवाल्पमपि नो पलं ॥
भवेज्जीवितनाशाय, हालाहललवोऽपि हि ॥ ३१ ॥

अर्थः— यवना दाणा जेटलुं अल्प मांस, पण मंत्रथी संस्कार, करेलुं खावुं नही; कारण के, तेथी नरकादिक डुर्गति मले छे. वली ते झेरतुल्य छे, कारण के, झेरनो पण एक लवमात्र खावाथी मृत्यु थाय छे.

हवे मांसना अत्यंत दोषने, उपसंहार करता थका कहे छे.

सद्यः संमूर्छितानंत, जंतुसंतानदूषितं ॥
नरकाध्वनि पाथेयं, कोऽश्नीयात् पिशितं सुधीः॥ ३३ ॥

अर्थः— प्राणीउने मार्याबाद तुरतज तेमां उत्पन्न थता जे निगोदना अनंता जंतुउ, तेउनो जे संतान केतां, फरीफरीने उपजवुं, तेणें करीने दूषित थयलुं, तथा नरकना मार्गमां पाथेय केतां जातांसमान, एवा मांस-

ने, कयो बुद्धिमान् माणस जक्षण करे? कारण के सिद्धांतमां पण कह्युंछे के,

आमासुअपक्कासुअ, विपच्चमणासु मंसपेसीसु ॥
सययं वियउववाउ, नणिउ, निगोयजीवाणं ॥ ३४ ॥

माटे मांसलुब्धक, नास्तिक, अने कुशास्त्रकारोयें फक्त पोतानी मूर्खता बतावबा माटे मांसजक्षण कहेलुं छे. माटे परना मांसथी जे पोताना मांसनी पुष्टि करवाने इछे छे, तेना जेवो निर्दय कोइ पण नथी. मांसजक्षको करतां तो, पोताना शरीरपर माणसनी विष्टानुं लेपन करतो, एवो डुक्कर पण सारो. अरे! अधम एवा ब्राह्मणो, पोतानो धर्म शौच गणे छे, छतां सात धातुवाला शरीरमां उत्पन्न थएलुं मांस तो जक्षण करे छे. वली जे जडो, मांसने प्राणीनुं अंग कहीने जात आदिकनी पेठे खावानुं कहे छे, त्यारें तेउ तेनां मूत्र आदिकने पण प्राणीउनुं अंग मानीने, शा माटे जक्षण करता नथी? माटे प्राणीउना अंगरूप जे शंखादिक तेने पवित्र मानेला छे; पण हाडकांने कंइ पवित्र मान्यां नथी; अने तेथी जात आदिकने जक्ष्यमां गण्यां छे, अने मांसने तो अजक्ष्य गण्युं छे. माटे जे माणस मांस अने जात बन्नेने प्राणीउनां अंगरूप देखीने तुल्य गणे छे, ते माणस स्त्रीपणां तरिके, माता अने पोतानी स्त्रीने सरखी रीतें केम अंगीकार करतो नथी?

हवे माखणना जक्षणना दोषो कहे छे.

अंतर्मुहूर्त्तात्परतः सुसूक्ष्मा जंतुराशयः ॥
यत्र मूर्छंति तन्नाद्यं, नवनीतं विवेकिनिः ॥ ३५ ॥

अर्थः— माखणमां अंतर्मुहूर्त्तना काल पछी अत्यंत सूक्ष्म जंतुउनी उत्पत्ति थाय छे, माटे विवेकी माणसोये ते माखण खावुं लायक नथी.

वली तेज अर्थ देखाडे छे.

एकस्यापि हि जीवस्य, हिंसने किमघं नवेत् ॥
जंतुजातमयं तत्को, नवनीतं निषेवते ॥ ३६ ॥

अर्थः— एक जीवनी हिंसामां पण, जेनुं वर्णन न थइ शके, तेटलुं पाप ज्यारें थाय छे, त्यारें, जेमां असंख्याता जंतुउ जरेला छे, एवुं माखण कोण जक्षण करे?

हवे मद्यनां दूषणो देखाडे छे.

अनेकजंतुसंघात, निघातनसमुद्भवं ॥

जुगुप्सनीयं लालावत् कः स्वादयति माक्षिकं ॥ ३७ ॥

अर्थः— अनेक जंतुओना समूहना नाशथी उत्पन्न थएलुं, (ए परलोकसंबंधि दोष जाणवो.) तथा लालनी पेठे निंदनीय, (ए आ लोकसंबंधि दोष जाणवो) एवा मधनुं कोण भक्षण करे ?

हवे मध भक्षण करनारना पापीपणाने देखाडे छे.

भक्षयन् माक्षिकं क्षुद्रजंतुलक्षक्षयोद्भवं ॥

स्तोकजंतुनिहंतृभ्यः, सौनिकेभ्योऽतिरिच्यते ॥ ३८ ॥

अर्थः— लाखो क्षुद्र जंतुओ जेनी अंदर उत्पन्न थाय छे, एवा मधने खानारो माणस, थोडा जंतुओने मारनार एवा खाटकीथी पण वधारे पापिष्ठछे.

हवे उच्छिष्ट (एठा) भोजनने तजनारा, एवा जे अन्य दर्शनीओ, तेओने पण मधभक्षण नहीं करवुं जोइयें, ते युक्तिथी देखाडे छे.

एकैककुसुमक्रोडा, द्रसमापीय मक्षिकाः ॥

यद्वमंति मधूच्छिष्टं, तदश्नंति न धार्मिकाः ॥ ३९ ॥

अर्थः—एक पुष्पना मध्यभागमांथी मकरंदने पीने, माखीओ, तेने पाछुं वमीने, मध बनावे छे, ते मधने धार्मिक एवा जे अन्य दर्शनीओ, तेओये पण खावुं न जोइयें कारण के तेओनो धर्म पण एठुं भोजन नहीं खावानो छे.

हवे रोग आदिकना कारणमाटे पण मध नहीं खावुं तेने माटे कहे छे.

अप्यौषधकृते जग्धं, मधु श्वभ्रनिबंधनं ॥

भक्षितः प्राणनाशाय, कालकूटकणोऽपि हि ॥ ३९ ॥

अर्थः— औषधमाटे खाधेलुं मध पण, नरकना कारणरूप छे. केम के, झेरनुं एक बिंदु पण खाधाथी प्राणनो नाश थाय छे.

हवे अहीं कोइ कहे के, खजुर, धाख विगेरेनी पेठे मध पण मीठुं छे, माटे ते शामाटे न खावुं ? तेने माटे कहे छे.

मधुनोऽपिहि माधुर्य, मबोधै रहहोच्यते ॥

आसाद्यंते यदास्वादा, च्चिरं नरकवेदनाः ॥ ४० ॥

अर्थः—"ते मधमां पण मिठाश छे," एम मूर्ख होय, ते बोले छे, कारण के ते मिठाश, फक्त व्यवहारथी छे, परमार्थथी नथी; कारण के, मधना स्वादथी तो लांबा कालसुधि नरकनी वेदनाउं सेववी पडे छे, माटे परिणामें ते कडवुंज छे.

हवे पवित्रपणाथी अर्थात् मधने पवित्र लेखीने, जेउं तेने देवस्नानमां उपयोगी माने छे, तेनी हांसी करता थका कहे छे.

मक्षिकामुखनिष्ठ्यूतं, जंतुघातोद्भवं मधु ॥
अहो पवित्रं मन्वाना, देवस्नाने प्रयुंजते ॥ ४१ ॥

अर्थः— माखियोना मुखमांथी थुंकाएलुं, तथा प्राणीउंना घातथी उत्पन्न थएला मधने, पवित्र मानता थका महादेव आदिक देवोना स्नानमां, तेनो उपयोग करे छे, ते केवुं हास्यजनक छे. जेम.

करभाणां विवाहे तु, रासभास्तत्र गायकाः ॥
परस्परं प्रशंसंति, अहो रूपमहो ध्वनिः ॥ १ ॥

उंटोनो विवाह होते छते, गधेडाउं गावा मांडे छे; अने तेमां पछी परस्पर एक बीजानां वखाण करे छे, त्यारें गधेडाउं उंटोने कहे छे के, अहो! शुं तमारुं लावण्यमय रूप छे!!! तथा उंटो गधेडाउंने कहे छे के! अहो! शुं तमारो मधुर स्वर छे! तेना जेवुं आ पण हास्यजनक छे केम के निंद्य एवुं जे माखियोनुं थुंक, तेणें करीने देवोनुं स्नान करवुं!!! ए केवुं हास्यजनक छे!!!

हवे पांचे उडुंबरना दोषो कहे छे.

उडुंबरवटप्लक्ष, काकोदुंबरशाखिनां ॥
पिप्पलस्य च नाश्नीया, त्फलं कृमिकुलाकुलं ॥ ४२ ॥

अर्थः— उडुंबर, वड, प्लक्ष, काकोडुंबरिका, तथा पिपल, ए पांचे उडुंबरनां फलो, नहीं खावां, केमके तेमां असंख्याता जीवो होय छे. (अन्यदर्शनीउंयें पण तेउंमां जीवो मानेला छे.)

हवे ते पांचे उडुंबरनो जेउंये त्याग कर्यो छे, तेउंनी स्तुति करे छे.

अप्राप्नुवन्नन्यभक्ष्य, मपि क्षामोबुभुक्षया ॥
न भक्ष्यति पुण्यात्मा, पंचोदुंबरजं फलं ॥ ४३ ॥

अर्थः— डुकाल आदिकना सबबथी मुख्यो माणस पण जे, उपर कहेलां पांचे उडुंबरोनां फलने खातो नथी तेने पवित्र आत्मावालो जाणवो.

हवे अनंतकायना नियमने त्रण श्लोकोथी देखाडे छे.

आर्द्रः कंदः समग्रोऽपि, सर्वः किशलयोऽपि च ॥
स्नुही लवणवृक्षत्वक्, कुमारी गिरिकर्णिका ॥ ४४ ॥
शतावरी विरूढानि, गडूची कोमलाम्लिका ॥
पल्लयंकोऽमृतवल्ली च, वल्लःशूकरसंज्ञितः ॥ ४५ ॥
अनंतकायाः सूत्रोक्ता, अपरेपि कृपापरैः ॥
मिथ्यादृशामविज्ञाता, वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥ ४६ ॥

अर्थः— लीली एवी कंदनी सघली जातिउ; एटले लीलुं आडु, सूरण, बटेटां विगेरे. तथा सघली वनस्पतिउना किसलय. स्नुही एटले वज्रानुं वृक्ष. लवण नामना वृक्षनी छाल. कुमारी एटले कुंवार. गिरिकर्णिका एटले एक जातनी वेलडी. शतावरी एटले पण एक जातनी वेलडी. विरुढ एटले उगेला शणगा वा अंकुरोवाला मग, अडद, चणा उला वटाणा वाल विगेरे द्विदलना अंकुराउ. गडुची एटले लीलीगलो वा एक जातनी वेलडी. कोमल आंबली एटले ज्यांसुधि अंदर छलीउ न थयो होय, त्यांसुधीनुं आंबलीनुं फल. पल्यंक एटले शाकनी जाति छे. अमृतवल्ली केतां एक जातनी वेलडी. शूकरवल्ली नामनी वनस्पति. ए सघला अनंतकायो, आर्यप्रसिद्ध छे. तथा म्लेछप्रसिद्ध बीजां पण अनंतकायो, जीवाभिगम सूत्रमां कहेलां छे; ते अनंतकायोने दयालु श्रावकोए तजवां आ सघला अनंतकायो मिथ्यात्विउ मानता नथी, केम के तेउ वनस्पतिने पण जीवतरिके मानता नथी, त्यारें अनंतकायनी तो वातज शुं करवी?

हवे अजाण्यां फलो पण न खावां तेने माटे कहे छे.

स्वयं परेण वा ज्ञातं, फलमद्याद्विशारदः ॥
निषिद्धे विषफले वा, माऽभूदस्य प्रवर्त्तनं ॥ ४७ ॥

अर्थः— पोते अथवा परें जाणेलां, एवां फलनुं पंडितें भक्षण करवुं; पण तेणें अजाण्युं फल खावुं नहीं; केमके, तेम कर्याथी, निषिद्ध करेलां, अथवा झेरी फलमां तेनी खावारूपें प्रवृत्ति थइ शकशे नहीं.

हवे रात्रिजोजनना निषेधमाटे कहे छे.

अन्नं प्रेतपिशाचाद्यैः, संचरद्भिर्निरंकुशैः ॥
उच्छिष्टं क्रियते यत्र, तत्र नाद्या द्दिनात्यये ॥ ४७ ॥

अर्थः— रात्रिवखते, प्रेत, पिशाच राक्षसो विगेरे, निशाचरो स्वछंद रीतें जमीने, जोजनने पोताना स्पर्श आदिकथी उच्छिष्ट करेछे एवा रात्रिना समये, जोजन नही करवुं.

घोरांधकाररुग्धाक्षैः; पतंतो यत्र जंतवः ॥
नैव जोज्ये निरीक्ष्यंते, तत्र भुंजीत कोनिशि ॥ ४९ ॥

अर्थः— घोर अंधकारथी रुंधाएलुं छे, जोवापणुं जेउनुं, एवा माणसोए जोजनमां पडता जंतुउ पण जोइ शकाता नथी; माटे एवी रात्रिनेविषे कोण जोजन करे?

हवे रात्रिजोजनथी उत्पन्न थता दोषोने त्रण श्लोकोये करीने देखाडे छे.

मेधां पिपीलिका हंति, यूका कुर्याज्जलोदरं ॥
कुरुते मक्षिका वांतिं कुष्टं रोगं च कोलिकः ॥ ५० ॥
कंटकोदारुखंडं च, वितनोति गलव्यथां ॥
व्यंजनांतर्निपतित, स्तालु विध्यति वृश्चिकः ॥ ५१ ॥
विलग्नश्च गले वालः, स्वरजंगाय जायते ॥
इत्यादयो दृष्टदोषाः, सर्वेषां निशि जोजने ॥ ५२ ॥

अर्थः— जोजननी अंदर कीडी आवे, तो बुद्धि नाश पामे, जुं, जलोदर करे; माखी, वमन करे, करोलीउ, कुष्टरोग करे, कांटो अथवा लाकडानो कटको, गलामां डुखावो करे, शाक आदिकमां आवेलो वींछी तालवुं वींधे (वींछीना आकारनी शाकजाजी थाय छे, अने तेनी अंदर वींछी आवी जवाथी मालुम पडतो नथी.) वली गलामां वाल आवी जवाथी स्वरजंग थाय छे, एवी रीतना रात्रिजोजनना दोषो मिथ्यात्विउने पण नजरे देखाय छे. वली रात्रिजोजनथी पाणी आदिक ढोलावाने सबबे छकाय जीवनी पण हत्या थाय छे.

हवे अहीं कोइ शंका करे के, जेमां कंइ भाजन आदिक धोवां न पडे अथवा रात्रिए रसोइ पण करवी न पडे, एवा तैयार लाडु, तथा खजुर आदिक मेवो खावामां रात्रिए शुं दोष छे? तेने माटे कहे छे.

नाप्रेक्ष्य सूक्ष्मजंतूनि, निश्यद्यात्प्राशुकान्यपि ॥
अप्युद्यत्केवलज्ञानै, र्नादृतं यन्निशाशनं ॥ ५३ ॥

अर्थः– रात्रियें, जोवाने अशक्य एवा कंथुआ आदिक छे सूक्ष्म जंतुओ जेनी अंदर एवां, प्राशुक लाडु, फल आदिक पण नहीं खावां, कारण के, उत्पन्न थयुं छे, केवलज्ञान जेने, एवाओयें पण रात्रिभोजन अंगीकार कर्युं नथी. (केमके तेओ तेमां जंतुओना संभवने जोइ रह्या छे.) निशीथभाष्यमां पण तेमज कह्युं छे.

हवे अन्य दर्शनीओना मत प्रमाणे पण रात्रिभोजननो निषेध करे छे.

धर्मविन्नैव भुंजीत, कदाचन दिनात्यये ॥
बाह्या अपि निशाभोज्यं यदभोज्यं प्रचक्षते ॥ ५४ ॥

अर्थः– श्रुतधर्मने जाणनारा माणसें, कोइ वखते पण रात्रिए भोजन करवुं नही, कारण के, अन्य दर्शनीओ पण रात्रिभोजननो निषेध करे छे. ते नीचे प्रमाणे.

त्रयीतेजोमयो भानुरितिवेदविदो विदुः ॥
तत्करैः पूतमखिलं, शुभं कर्म समाचरेत् ॥ ५५ ॥

अर्थः– ऋग्वेज, यजुर्वेद, तथा सामवेदनां लक्षणरूप छे तेज जेनी अंदर, एवी रीतना सूर्यने, वेदजाणनारोओए जाण्यो छे, माटे तेना (सूर्यना) किरणोथी पवित्र थएलुं एवुं सघलुं शुभ कार्य करवुं.

वली पण तेज कहे छे.

नैवाहुतिर्नच स्नानं, न श्राद्धं देवतार्चनं ॥
दानं वा विहितं रात्रौ, भोजनं तु विशेषतः ॥ ५६ ॥

अर्थः– रात्रिए यज्ञनी आहुति, स्नान, श्राद्ध, देवपूजन, तथा दान, एटलां वानां करवां नहीं, अने भोजन तो सर्वथा प्रकारें नज करवुं.

अहीं कोइ शंका करे के, "नक्तभोजन" तो कल्याणकारी छे, अने तेतो रात्रिशिवाय थइ शके नहीं; तेने माटे कहे छे के, "नक्त" शब्दनो अर्थ जाण्याविना एम कहे छे. तेने माटेज नीचेनो श्लोक कहे छे.

दिवसस्याष्टमे भागे, मंदीभूते दिवाकरे ॥
नक्तं तद्धिविजानीया, न्न नक्तं निशि भोजनं ॥ ५७ ॥

अर्थः— दिवसनो आठमो भाग के, जे वखते सूर्यनुं तेज थोडुं घटी गयुं होय, ते वखते जे भोजन करवुं, ते "नक्तभोजन" कहेवाय; पण कंइ "रात्रिभोजनने" नक्तभोजन न कहेवाय. नक्त शब्दनो अहीं गौण अर्थ करवो; केम के तेम नहीं करवाथी मुख्य अर्थने बाधा आवे छे. कारण के, रात्रिभोजननो निषेध अन्यदर्शनीउना शास्त्रोमां पण कहेलो छे.

अने ते निषेध हवे बे श्लोकोए करीने देखाडे छे.

देवैस्तु भुक्तं पूर्वाह्णे मध्याह्ने ऋषिभिस्तथा ॥
अपराह्णे तु पितृभिः, सायाह्ने दैत्यदानवैः ॥ ५८ ॥
संध्यायां यक्षरक्षोभिः, सदा भुक्तं कुलोद्वह ॥
सर्ववेलां व्यतिक्रम्य, रात्रौ भुक्तमभोजनं ॥ युग्मं ॥ ५९ ॥

अर्थः—हे कुलोद्वह, केतां हेयुधिष्टिर, दिवसना पूर्व भागमां, देवोए, मध्याह्ने ऋषिउए, पाछले पोहोरें पितृउए, विकाले (सांजरे) दैत्योए, तथा संध्यावखते यक्ष अने राक्षसोए, खाधेलुं होय छे, माटे एवी रीतें सर्व वेलाओने उलंघीने रात्रियें करेलुं भोजन, "अभोजनज" छे.

एवी रीतें पुराणप्रमाणे रात्रिभोजननो निषेध करीने, हवे आयुर्वेदप्रमाणे पण तेनो निषेध कहे छे.

हृन्नाभिपद्मसंकोच, श्चंडरोचिरपायतः ॥
अतो नक्तं न भोक्तव्यं, सूक्ष्मजीवादनादपि ॥ ६० ॥

अर्थः— सूर्यास्तपछी हृदयपद्म, तथा नाभिपद्म बन्नेनो संकोच थाय छे, तथा सूक्ष्म जीवोनुं पण अंदर भक्षण थाय छे, माटे रात्रिए भोजन करवुं नहीं.

एवी रीतें अन्य दर्शनीउंनो संवाद कह्याबाद आचार्य महाराज पोताना दर्शननुं समर्थन करता थका कहे छे.

संससक्जीवसंघातं, भुंजाना निशिभोजनं ॥
राक्षसेभ्यो विशिष्यंते, मूढात्मानः कथं नु ते ॥ ६१ ॥

अर्थः— एकठा मलता छे, जीवोना समूह जेमां, एवां रात्रिभोजनने खानारा, एवा जे मूढ माणसो तेउंनाथी राक्षसोने शी रीतें जुदा पाडी शकाय? अर्थात् तेउं राक्षसोसरखाज छे. माटे आ मनुष्यपणुं तेम जिनधर्मने पामीने रात्रिभोजननां तो पच्चखाणज करवां जोइयें; अने तेम जो न करे, तो ते, शिंगडां अने पुंछडां विनानो पशुज छे.

तेज देखाडे छे.

वासरे च रजन्यांच, यः खादन्नेव तिष्ठति ॥
शृंगपुछपरिभ्रष्टः, स्पष्टं स पशुरेव हि ॥ ६२ ॥

अर्थः— दिवसें अने रात्रिए पण जे खाखा कर्या करे छे, ते खरेखर शिंगडां पुंछडां विनानो पशुज छे.

हवे रात्रिभोजनना प्रत्याख्यानवालाउंमां पण वधारे पुण्यशालिउं कया? ते देखाडे छे.

अह्नोमुखेऽवसाने च, यो द्वे द्वे घटिके त्यजन् ॥
निशाभोजनदोषज्ञोऽ,श्नात्यसौ पुण्यभाजनं ॥ ६३ ॥

अर्थः— रात्रिभोजनना दोषोने जाणनारो एवो जे माणस, दिवसना प्रारंभमां, अने दिवसने अंते पण बबे घडीउंने तजे छे, तेने पुण्यशाली जाणवो. अने तेटलामाटेज, जघन्यथी नोकारसीनुं पच्चखाण पण दिवस उग्यापछीथी एक मुहूर्त्तवारनुं आगममां कह्युं छे.

हवे अहीं कोइ एम शंका करे के, हमेशां जे दिवसनुंज भोजन करे छे, तेने रात्रिभोजनना पच्चखाणथी वली शुं वधारे फल थाय? तेने माटे कहे छे.

अकृत्वा नियमं दोषा, भोजनाद्दिनभोज्यपि ॥
फलं भजेन्न निर्व्याजं, न वृद्धिर्भाषितं विना ॥ ६४ ॥

अर्थः—रात्रिभोजननो नियम कर्याविना, दिवसे जमनारने पण फल मलतुं नथी, कारण के पेहेलेथी वात कर्याविना (लौकिकमां पण) पोतानी रकमतुं व्याज मलतुं नथी.

ये वासरं परित्यज्य, रजन्यामेव भुंजते ॥
ते परित्यज्य माणिक्यं, काचमाददते जडाः ॥ ६५ ॥

अर्थः— जे माणसो दिवसने तजीने, फक्त रात्रिएज भोजन करे छे, ते जड माणसो, माणिकने तजीने काचने ग्रहण करे छे.

वली अहीं कोइ शंका करे के, सघली जातनो नियम तो फलवान् छे, त्यारें कोइ एवुंज नियम करे, के, मारे रात्रिएज जमवुं, अने दिवसे जमवुं नहीं, ते माणसनी शी गति थाय ? तेने माटे कहे छे.

वासरे सति ये श्रेय, स्काम्यया निशि भुंजते ॥
ते वपंत्यूषरे क्षेत्रे, शालीन् सत्यपि पल्वले ॥ ६६ ॥

अर्थः— दिवस होते छते पण, कल्याणनी इच्छाथी जे माणसो रात्रियें भोजन करे छे, तेओ डांगर वाववाना क्यारा होते छते, पण तेओने तजीने, उखर (खार) भूमिवाला खेतरमां, ते डांगर वावे छे कारण के जेथी अधर्मनी निवृत्ति थाय, एवो नियम फलवान् छे; अने आवो नियम तो तेथी विपरीत छे.

हवे रात्रिभोजननुं फल कहे छे.

उलूककाकमार्जार, गृध्रशंबरशूकराः ॥
अहिवृश्चिकगोधाश्च, जायंते रात्रिभोजनात् ॥ ६७ ॥

अर्थः— रात्रिभोजन करवाथी, घुवड, कागडा बिलाडा, गीध, शंबर, भुंड, सर्प, विंछु, तथा चंदनघो, विगेरेनो अवतार आवे छे.

हवे वनमालाना उदाहरणथी रात्रिभोजनना दोषनी महत्ताने देखाडे छे.

श्रूयते ह्यन्यशपथा, ननाहत्यैव लक्ष्मणः ॥
निशाभोजनशपथं, कारितो वनमालया ॥ ६८ ॥

अर्थः— रामायणमां पण कह्युं छे के, वनमालाए लक्ष्मणने, बीजा सोगनो छोडीने, रात्रिभोजनना सोगन कराव्या छे. तेनी कथा आ प्रमाणे छे.

एक दहाडो दशरथनो पुत्र लक्ष्मण, पिताना हुकमथी राम अने सीतानी साथे दक्षिण देशतरफ चाल्यो. वच्चे कबुर नामना नगरमां महीधर राजानी वनमाला नामनी कन्याने परण्यो. पढी ज्यारे रामनी साथे पाढो ते देशांतर जवा निकळ्यो, त्यारे वनमाला अत्यंत विरहातुर थइ, तेथी तेणें तेणीने कह्युं के, हुं रामने तेना इछित स्थानकें मुकी, जो हुं अहीं पाढो न आवुं, तो मने, प्राणातिपातादिक पापो करनारना जेवी गति मळो ? त्यारे तेणीए तेना ते सोगंद कबुल नहीं करीने, कह्युं के, जो तमो रात्रिजोजननां पच्चखाण करो, तो हुं तमोने जवानी रजा आपुं. पढी लक्ष्मण पण ते वात कबुल करीने देशांतर प्रत्ये चाल्या. एवी रीते बीजा सोगंदोने पडता मुकीने वनमालाए लक्ष्मणने रात्रिजोजनना सोगंद खवराव्या. ते बाबतनुं विशेष चरित्र ग्रंथ वधी जवाना सबबथी अहीं लख्युं नथी.

हवे सघला लोकोने अनुजवथी सिद्ध थाय एवुं रात्रिजोजननी विरतिनुं फल कहे ढे.

करोति विरतिं धन्यो, यः सदा निशिजोजनात् ॥
सोऽर्धं पुरुषायुषश्च, स्यादवश्यमुपोषितः ॥ ६ए ॥

अर्थः—जे धन्य माणस हमेशां रात्रिजोजनथी विरति करे ढे, ते माणस अवश्य, अरधा आयुष्यनो उपवासी थाय ढे.

हवे रात्रिजोजन तजवामां जे गुणो रहेला ढे, ते कहेवाने तो अमारी शक्ति पण नथी; एम कहे ढे.

रजनीजोजनत्यागे, ये गुणाः परितोऽपि तान् ॥
न सर्वज्ञादृते कश्चि, दपरो वक्तुमीश्वरः ७० ॥

अर्थः— रात्रिजोजनने तजवामां जे गुणो रहेला ढे, तेउने सर्वज्ञ प्रजु शिवाय, कोइ पण बीजो कहेवाने समर्थ नथी.

हवे काचा गोरस साथे जेलवेला द्विदल (बेदालवाला कठोल) नहीं खावा, तेने माटे कहे ढे.

आमगोरससंपृक्त, द्विदलादिषु जंतवः ॥
दृष्टाः केवलिजिःसूक्ष्मा, स्तस्मात्तानि विवर्जयेत् ॥ ७१ ॥

अर्थः— काचा गोरसनी साथे जेळवेला द्विदलादिकमां सूक्ष्म जंतुउंनी उत्पत्ति, केवलीउंए जोयेली छे, माटे तेने वर्जवुं. (आ दोष आगमगम्य छे.) अहीं आदि शब्दथी, पुष्पित थएला उदन (जात) बीजा दिवस पछीनुं दहिं, तथा कुथित एवा अन्ननुं पण ग्रहण करवुं. (अर्थात् तेउंने पण तजवां.)

हवे जेमां घणा जंतुउं होय, एवां फलादिकोने पण आगमानुसारें तजवां, तेने माटे कहे छे.

जंतुमिश्रं फलं पुष्पं, पत्रं चान्यदपि त्यजेत् ॥
संधानमपि संसक्तं, जिनधर्मपरायणः ॥ ७२ ॥

अर्थः—मधुक तथा बिल्वि आदिक, जंतुउंथी मिश्रित थएलां फलो छे, अरणि, शिग्रु मधुक (महुडां) विगेरे पुष्पो पण जंतुउंथी मिश्रित थएलां छे; वली वर्षा ऋतुमां तंडुलीयक आदि पत्रो पण जीवाकुल होय छे, तेउंने दयालु श्रावकें तजवां. वली बीजां पण मूल आदिकनो त्याग करवो, तथा आंबां आदिकमां (आर्द्राबाद) अथवा ज्यारे जंतुउंनी प्राप्ति थाय त्यारे तेउंने पण तजवां.

हवे जोगोपजोगनुं कारणरूप जे धननुं कमावुं, ते पण जोगोपजोगज कहेवाय छे, माटे तेनुं पण परिमाण करवुं. तेनुं वर्णन अतिचार प्रकरणमां कहेवाशे.

हवे त्रीजा गुणव्रत अनर्थदंडनुं चार श्लोकोए करीने वर्णन करेछे.

आर्त्तरौद्रमपध्यानं, पापकर्मोपदेशिता ॥
हिंसोपकारि दानं च, प्रमादाचरणं तथा ॥ ७३ ॥
शरीराद्यर्थदंडस्य, प्रतिपक्ष्यतया स्थितः ॥
योऽनर्थदंडतस्त्याग, स्तृतीयं तु गुणव्रतं ॥ ७४ ॥

अर्थः— आर्त्त रौद्र रूप डुर्ध्यान, पापकर्मोनो उपदेश, हिंसानां साधनरूप दान, तथा प्रमादनुं आचरण, तेउंनो शरीर आदिकनां प्रयोजन शिवाय, जे त्याग करवो, तेने त्रीजुं गुणव्रत जाणवुं.

टीकाः— खोटुं एवुं जे ध्यान, ते अनर्थदंडनो पेहेलो जेद छे. अने तेना बे प्रकारो छे. आर्त्तध्यान अने रौद्रध्यान. जय अथवा पीडा संबंधि

जे ध्यान ते आर्त्तध्यान जाणवुं. तेना चार भेदो छे. तेउमां मनने गमेनहीं, एवा जे शब्दादिक, तेउना संप्रयोगमां, तेउनुं जे विप्रयोग चिंतववुं अने असंप्रयोगनी जे प्रार्थना करवी, ते पेहेलुं. तथा शूल आदि रोगनो संभव होते छते, तेना विप्रयोगनुं जे प्रणिधान करवुं, अने तेना असंप्रयोगनी जे चिंता, ते बीजो भेद जाणवो. मनने गमे एवा जे शब्दादिक विषयो, तेउना संयोगनी अभिलाषा तथा तेउना वियोगथी दुःख पामवुं, ते त्रीजो भेद जाणवो. इंद्र, चक्रवर्त्ति आदिकना वैभवनी प्रार्थनाना नियाणांरूप चोथो भेद जाणवो. बीजाउने जे रोवरावे, अथवा दुःख दीए, तेने रौद्र ध्यान जाणवुं. तेना चार भेदो जाणवा. हिंसानुबंधि, मृषानुबंधि, स्तेयानुबंधि, तथा धनसंरक्षणानुबंधि, ए चार भेदो जाणवा. एवी रीतें आर्त्त अने रौद्रध्यानरूप, अनर्थ दंडनो पेहेलो भेद जाणवो. पापकर्मोना उपदेशरूप बीजो भेद जाणवो. हिंसानां साधनरूप शस्त्रादिकनुं जे दान देवुं, ए त्रीजो भेद जाणवो. गीत, नृत्य आदिक जे प्रमादो, तेउनुं जे आचरण करवुं ते चोथो भेद जाणवो. (पोताना) शरीरआदिकमाटे प्रयोजनविना जे दंड ते अनर्थ दंड कहेवाय. तेनो जे त्याग, तेनुं नाम त्रीजुं गुणव्रत जाणवुं.

हवे ते दुर्ध्याननुं स्वरूप, तथा परिमाण कहे छे.

वैरिघातो नरेंद्रत्वं, पुरघाताग्निदीपने ॥
खेचरत्वाद्यपध्यानं, मुहूर्तात्परतस्त्यजेत् ॥ ७५ ॥

अर्थः– वैरिनो घात, राजापणुं, नगरनो घात, अग्निदीपन, तथा खेचरपणा आदिकमां (मने आकाशगामिनी विद्यादिक मळे तो ठीक.) इत्यादिक संबंधि जे दुर्ध्यान, तेने मुहूर्त्तवारमां तजी देवुं.

हवे पापोपदेशनुं स्वरूप अने ते थकी विरतिनुं स्वरूप कहे छे.

वृषभान् दमय क्षेत्रं, कृष षंढय वाजिनः ॥
दाक्षिण्याविषये पापो, पदेशोयं न युज्यते ॥ ७६ ॥

अर्थः– वर्षाकाळ नजदिक आवे छे, माटे बेलोने तुं दम ? वळी तुं खेतर खेड? केम के जो वर्षाद आवी पडशे, तो वाववानो काळ चाल्यो जशे, वळी राजाने हमणां घोडानो खडाइ आदिकमाटे खप पडशे, माटे

तेउंने बंद करी राख? एवा तथा उपलक्षणथी ग्रीष्म ऋतुमां दावानल सलगाववा, आदिकनो जे पापरूप उपदेश देवो, ते श्रावकने योग्य नथी. तेमां आटलो अपवादछे के, पुत्र तथा बंधु आदिकने दाक्षिणताथी जे आदेश उपदेश देवो, ते श्रावकथी पली शके नहीं. पण एवी दाक्षिणताविना बिलकुल एवी रीतनो आदेश उपदेश श्रावकने कल्पे नही.

हवे अनर्थ दंडनां साधनोने पण तजवामाटे कहे छे.

यंत्रलांगलशस्त्राग्नि, मूशलोदूखलादिकं ॥
दाक्षिण्याविषये हिंसां, नार्पयेत् करुणापरः॥ ७७ ॥

अर्थः— उपर जणावेला पुत्र, बंधु आदिकनी दाक्षिणताविना करुणालु श्रावकें, यंत्र, हल, हथियार, अग्नि, सांबेलुं, खांडणी, तथा आदि शब्दथी, धनुष्धमण इत्यादि, कोइने आपवां नहीं.

हवे अनर्थदंडनो चोथो भेद जे, प्रमादाचरण, तेना त्यागमाटे त्रण श्लोको कहे छे.

कुतूहलाद् गीतनृत्त, नाटकादिनिरीक्षणं ॥
कामशास्त्रप्रसक्तिश्च,द्यूतमद्यादिसेवनं ॥ ७८ ॥
जलक्रीडांदोलनादि, विनोदो जंतुयोधनं ॥
रिपोःसुतादिना वैरं, भक्तस्त्रीदेशराट्कथाः ॥ ७९ ॥
रोगमार्गश्रमौ मुक्त्वा, स्वापश्च सकलां निशां ॥
एवमादि परिहरेत्, प्रमादाचरणं सुधीः ॥८० ॥

अर्थः— कौतुकथी गीत, नाटक आदिकनुं जोवुं; वात्स्यायन ऋषियें रचेला कामशास्त्रनुं वारंवार परिशीलन करवुं; जुगार, मदिरापान, शिकार विगेरेनुं सेववुं; जलक्रीडा, एटले फुवारा आदिकमां, तथा पीचकारीथी जलक्रीडा करवी; हीचका खावा, तथा आदि शब्दथी, पुष्प आदिक तोडवां; तथा कुकडा आदिक प्राणीउंनां युद्ध कराववां; शत्रु तथा पुत्रादिक साथे जे वैर राखवुं ते; अने भोजन संबंधि, स्त्रीसंबंधि, देश संबंधि, तथा राज्यसंबंधि जे कथा करवी ते, तथा रोग अने मार्गना थाकविना आखी रात निद्रा करवी ते; इत्यादि प्रमादनां आचरणो बुद्धिमानें तजवां.

हवे देशविशेषें करीने प्रमादनो परिहार कहे छे.

विलासहासनिष्ठूत, निद्राकलहदुःकथा ॥
जिनेंद्रभवनस्यांत, राहारं च चतुर्विधं ॥ ८१ ॥

अर्थः– जिनमंदिरनी अंदर, विलास, हास्य, थुंकवुं ते, निद्रा, क्लेश, तथा खराब वात, तथा चार प्रकारनो आहार तजवो.

टीकाः– विलास एटले कामसंबंधि चेष्टा, हास एटले हसवुं ते; निष्ठूत एटले थुंकवुं ते, निद्रा, क्लेश, चोरी छिनालीसंबंधि कथा, तथा अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारनो आहार. ए सघलुं जिन भुवननी अंदर तजवुं.

हवे चार शिक्षाव्रतो कहे छे.

तेउमांथी पेहेलां सामायिकव्रतनुं स्वरूप कहे छे.

त्यक्तार्त्तरौद्रध्यानस्य, त्यक्तसावद्यकर्मणः ॥
मुहूर्त्तं समता या तां, विदुः सामायिकं व्रतं॥ ८२ ॥

अर्थः– तजेलां छे, आर्त्त रौद्र ध्यान जेणे तथा तजेलां छे, सावध कर्म जेणें. ऐवा माणसने, एक मुहूर्त्त पर्यंत जे समता आवे छे तेने सामायिकव्रत कहेलुं छे.

टीकाः– "सम" एटले रागद्वेष मुकाते छते, जे "आय" केतां ज्ञानादिकनो जे लाभ, तेने "सामायिक" कहेवाय. तजेलुं छे, सावद्य कर्म जेणें, एटले, जेणें वचन अने काया संबंधि पापयुक्त व्यापार तज्यो छे, एवो श्रावक पण मुनिसरखो छे. कारण के कह्युं छे के,

सामाइयमिउकए, समणो इव सावयो हवइ जह्मा ॥
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ १ ॥

अने तेवो श्रावक साधुतुल्य होवाथीज तेने, ते वखते देवनी स्नात्रपूजादिक करवानो अधिकार नथी. त्यारें अहीं कोइ शंका करे के, देवपूजा पण स्वाध्याय आदिकनी पेठे शुभकार्य छे, तो ते कार्य सामायिकमां रहेलो माणस शामाटे न करे? तेने माटे कहे छे के ते वखते ते मुनिसमान छे, माटे भावस्तवनोज अधिकार छे; वली द्रव्यस्तवनुं उपादान भावस्तवनेज माटे छे. अने ज्यारें ते सामायकमां छे, त्यारें तेने द्रव्यस्तवनी

शी जरुर छे? हवे सामायिक करनार श्रावकना बे भेदो छे; एक ऋद्धि-वालो, अने बीजो ऋद्धिविनानो. तेउमांथी ऋद्धिविनानो चार जगोये सामायिक करे; जिनमंदिरमां, साधुनी समीपे, पौषधशालामां अथवा पोताने घेर. अथवा ज्यां थाकीने बेठो होय त्यां, अथवा ज्यां कंइ पण कार्यविना नवरो बेठो होय त्यां पण सामायिक करी शके. हवे साधु समीपे ज्यारे सामायिक करे, त्यारें नीचे प्रमाणे विधिथी करे; मने कंइ जय नथी; कोइ साथे मारे क्लेश नथी, मारे कोइनुं करज नथी, एम विचारि घेर सामायिक लइ ईर्यापथिकी शोधतो तथा सावद्य वचननोनो त्याग करतो थको, साधु पासे जइ, सापडा आदिकनो खप होय, तो तेना स्वामिनी रजा लेइ, तथा श्लेष्म आदिक नहीं करी, कदाच करवुं होय, तो पण निरवद्य जगापर, पोंजीने करे. पछी त्यां पांच समिति अने त्रण गुप्तिसहित, साधुने नमस्कार करी नीचे प्रमाणे पाठ उचरे.

" करेमि जंते सामाइ जंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चखामि, जावसाहूय पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते पडिक्कमामि, निंदामि गिरिहामि अप्पाणं वोसिरामि. "

अर्थः— हे जदंत, हुं ज्यांसुधि साधुनी पर्युपासना करुं, त्यांसुधि, मन, वचन अने कायाए करीने, सावद्य कार्य करुं नहीं, अने करावुं नहीं. (अनुमोदननुं पच्चख्काण गृहस्थथी थइ शके नहीं.) वली हे जदंत, हुं तेनां पच्चखाण करुं बुं, निंदा करुं बुं, गर्हा करुं बुं (आत्मसाक्षिए निंदा, तथा गुरुसाक्षीए गर्हा कहेवाय.) अहीं " करेमि जंते सामाइयं " एम कहीने वर्त्तमान सावद्य योगनुं पच्चखाण कर्युं; " सावज्जं जोगं पच्चखामि " एम कहीने जविष्यकाल संबंधि, तथा " पडिक्कमामि " एम कहीने जूतकाल संबंधि सावद्य योगनुं पच्चखाण कर्युं.

एम करीने साधु समीपे रहीने धर्मशास्त्रो सांजले, जणे, पुछे विगेरे करे. एवीज रीतें देरामां पण करे. घरे अथवा पौषधशालामां, सामायिक लइने, हालवा चालवाविना स्थिर रहे.

हवे जे ऋद्धिमान् होय, ते, अर्थात् राजा आदिक हाथीपर बेसीने, उपर छत्र धराते थके, चामर विंझाते थके, वाजां वागते छते, बंदि-

बिरुदावली बोलते छते, सामंत, तथा नगरना लोकोथी विंटाये छते, नमस्कार करता लोकोने मस्तक नमाववावडे करीने अनुमोदन करते छते, अन्य दर्शनीओथी पण " अहो केवो उत्तम धर्म छे " एम प्रशंसा कराते छते, घेरथी सामायिक कर्या विनाज, जिनालयप्रत्ये अथवा साधुने स्थानकें जाय. तथा त्यां जइ छत्र, चामर विगेरे तजीने, जिनार्चन अथवा साधुवंदन करे. वली जो राजा घेरथीज सामायिक करीने जाय, तो तेने हाथीपर बेसवुं योग्य न लागे, अने राजाने पगे चालीने जवुं ते पण अयुक्त छे; माटे ते घेरथीज सामायिक करे नहीं.

हवे सामायिकमां रहेलो माणस महानिर्जरावालो थाय छे. ते हवे दृष्टांतद्वारें कहे छे.

सामायिकव्रतस्थस्य, गृहिणोऽपि स्थिरात्मनः ॥
चंद्रावतंसकस्येव, क्षीयते कर्म संचितं ॥ ८३ ॥

अर्थः— सामायिक व्रतमां रहेला स्थिर आत्मावाला गृहस्थोने पण चंद्रावतंसकनी पेठे, संचयरूप थएलां कर्मनो क्षय थाय छे. चंद्रावतंसकनी कथा नीचे प्रमाणे जाणवी.

अत्यंत लक्ष्मीवान्, तथा इंद्रपुरीने पण हसनारुं, एवुं साकेत नामें नगर छे. त्यां लोकोने आनंद आपनारो चंद्रावतंस नामें राजा हतो. तेणें धर्मशास्त्रो जाणीने, शुद्ध शिक्षाव्रतो पण अंगीकार कर्यां हतां. एक दहाडो ते माघ मासमां एवुं नियम लेइ सामायिकमां बेठो, के ज्यां सुधि दीवो बले त्यां सुधि मारे सामायिक पारवुं नहीं. हवे तेना शय्यापालकोए विचार्युं के, आपणा स्वामिने अंधारुं न लागे तो ठीक, एम विचारि रात्रिनो पेहेलो पोहोर जाते थके, तेणे दीवामां नवुं तेल पुर्युं. वली बीजे पहोरे पण तेणीए भक्तिथी दीवामां तेल पुर्युं. एवी रीते त्रीजे पहोरे पण पुर्युं, पछी रात्रि जाते छते राजा पण थाकथी थएली पीडाए करीने दीपकनी साथेज मृत्यु पाम्यो. एवी रीतें सामायिक व्रतथी कर्मोने हणीने चंद्रावतंसक राजा देवलोकें गयो; एवी रीतें गृहस्थोने पण सामायिक व्रतथी कर्मोनो नाश थइने सुगति मले छे. एवी रीतें चंद्रावतंस राजर्षिनी कथा जाणवी.

हवे बीजुं शिक्षाव्रत कहे छे.

दिग्व्रते परिमाणं य, त्तस्य संक्षेपणं पुनः ॥
दिने रात्रौ च देशाव, काशिकव्रतमुच्यते ॥ ८४ ॥

अर्थः— दिग्व्रतमां जे परिमाण, अने तेनुं पण दिवसे अने रात्रिए, उपलक्षणथी प्रहरादिकमां पण, जे संक्षेपण करवुं तेने देशावकाशिक व्रत जाणवुं.

हवे त्रीजुं शिक्षाव्रत कहे छे.

चतुःपर्व्यां चतुर्थादि, कुव्यापारनिषेधनं ॥
ब्रह्मचर्यक्रियास्नाना, दित्यागः पौषधव्रतं ॥ ८५ ॥

अर्थः— चारे पर्वमां चतुर्थादिक तप, तथा सावद्य व्यापारनो त्याग, ब्रह्मचर्यव्रतनुं पालवुं, तथा स्नान आदिकनो जे त्याग, तेने पौषधव्रत जाणवुं.

टीकाः— चार पर्वो एटले, आठम, चौदश, पुनम अने अमास. स्नान आदिकनो त्याग, तेमां आदि शब्दथी अंगविलेपन, पुष्पगंध विगेरेनुं पण ग्रहण करवुं. हवे ते पौषधव्रतना बे भेदो छे. देशथी अने सर्वथी. तेमां देशथी आहारपौषध एटले आंबेल, एकवार अथवा बेवार भोजन करवुं ते, अने सर्वथी एटले चारे प्रकारना आहारनो रातदहाडो जे त्याग करवो ते. सावद्यव्यापारना त्यागनो जे पौषध, ते, देशथी एटले कोइ एक अमुक सावद्य व्यापारनो त्याग, तथा सर्वथी एटले सर्व जातना व्यापार आदिक सावद्य कार्योनो त्याग. देशथी ब्रह्मचर्य पौषध एटले दिवसेज अथवा रात्रिएज, अथवा एकवार अथवा बेवार स्त्रीसंगविना, बाकीना वखते जे ब्रह्मचर्य पालवुं ते. अने सर्वथी एटले रात अने दहाडो, एटले आखो दिवस ब्रह्मचर्य पालवुं ते, तेम देशथी शरीर आदिकनो संस्कार, अने सर्वथी पण शरीर आदिकनो संस्कार जाणवो. हवे अहीं देशथी सावद्य व्यापारना निषेधरूप पौषधने ज्यारे करे छे, त्यारें ते सामायिक करे अथवा न करे. अने ज्यारे सर्वथी करे, त्यारे तो निश्चयें सामायिक करे; कारण के, तेम न करे, तो तेनुं तेने फल मले नहीं. हवे सर्वथी पौषधव्रत, ' देवमंदिरमां, साधुपासे, घेर, अथवा पौषधशालामां, मणि सुवर्ण आदिक घरेणांडे तजीने, तथा मा-

ना विलेपन आदिकने पण ग्रहण कर्याविना, ग्रहण करे; तथा त्यां तेम करीने जणे, पुस्तको वांचे, धर्मध्यान ध्यावे, तथा विचारे के, हुं केवो मंदजागी छुं, के आ साधुउना गुणोने अंगीकार करी शकतो नथी. माटे एवी रीतें सर्वथी तो सामायिक सहित पौषध अंगीकार करवुं. (देशथी पौषधना केटलाक जांगाउ उपर कहेलाउमांथी कहाडी नाख्या छे.)

हवे पौषध व्रत करनारनी प्रशंसा करे छे,

गृहिणोऽपि हि धन्यास्ते, पुण्यं ये पौषधव्रतं ॥
दुःपालं पालयंत्येव, यथा सुचुलनीपिता ॥ ८६ ॥

अर्थः— ते गृहस्थोने पण धन्य जाणवा, के जेउ चुलनीपितानी पेठे पवित्र, अने दुःखें करीने पाली शकाय एवा, पवित्र पौषधव्रतने पाले छे. तेनुं दृष्टांत हवे कहे छे.

गंगाना किनारापर अत्यंत रमणीय एवी वाणारसी नामें नगरी छे, त्यां, जितशत्रु नामें राजा हतो. वली त्यां चुलनीपिता नामें कोइ मोटो शाहुकार गृहपति हतो. तेने अत्यंत रूपाली श्यामा नामनी स्त्री हती. तेनी पासे चोवीश क्रोड सोनामोहोरो हती, तेउमांथी आठ करोड तेणें जंडारमां, आठ करोड व्याजें, अने आठ करोड व्यापारमां जोडी हती. दश दश हजारनां आठ तो तेने गोकुलो हतां. एक दहाडो ते नगरीना कोष्टक नामें उद्यानमां श्री वीरप्रजु आवीने समोसर्या. त्यां प्रजुने नमस्कार करवामाटे इंद्र सहित देवदानवो, तथा जितशत्रुराजा पण आव्यो. ते वखते चुलनीपिता पण पगे चालीने प्रजुने वांदवामाटे निकल्यो. तथा त्यां जइ, तेणें हाथ जोडीने प्रजुनी देशना जक्तिपूर्वक सांजली. पछी सजा उठ्याबाद चुलनीपितायें प्रजुने हाथ जोडी विनति करी के, हे स्वामि! मारी यतिधर्म अंगीकार करवानी तो शक्ति नथी, मने श्रावक धर्म अंगीकार करावो? पछी प्रजुयें पण तेने कह्युं के जेम तने सुख उपजे, तेम करव? एम कहेवाथी तेणें स्थूलथकी हिंसा, मृषावाद, चोरी विगेरेनां पच्चखाण कर्यां. वली तेणें पोतानी स्त्री शिवाय, परस्त्रीनो त्याग करी, ते चोवीश क्रोड सोनामोहरो शिवाय धननो, तथा ते आठ गोकुलो शिवाय गायोनो पण त्याग कर्यो; तेम पांचसो हलोथी खेडाय एटली खेतीनी ज-

मीन शिवाय, बीजी जमीन खेडवानां पण तेणें पच्चखाण कर्यां तेम पांचसो गाडां, तथा पांचसो बेलशिवायनां तेणें पच्चखाण कर्यां. वली तेणें गंधकाषाय्य शिवाय बीजां शरीर लुंछवानां वस्त्रनो, तथा लीली मधुकनी डांखली शिवायना दांतणनां पण पच्चखाण कर्यां. तेणें क्षीरामलक शिवाय फलनां, तथा शतपाक अने सहस्रपाक तेलविना बीजां तेलथी मर्दननां पण पच्चखाण कर्यां. वली केटलाक सुगंधि पदार्थो शिवाय बीजा सुंघवानां पदार्थोनां, तथा स्नानमाटे आठ उंटो जरीने पाणीना घडाओ शिवायनां पाणीनां तेणें पच्चखाण कर्यां. वली रुमांथी बनतां कापडशिवायनां कापडनां, तथा कुंकुम, अगर अने चंदन शिवायनां विलेपननो पण तेणें त्याग कर्यो. वली कमलनी जातिनी मालाउशिवाय तेणें पुष्पोनां, तथा कर्णिका अने नामनी वींटी शिवाय आजूषणोनां पण तेणें पच्चखाण कर्यां. अगर अने तुरुष्क शिवाय धूपनां वली खंडखाद्य अने घेवर शिवायना जोजनना, तथा शालना चोखा शिवाय, बीजा चोखानां पण तेणें पच्चखाण कर्यां. वली कलाप, मग अने अडद शिवाय, बीजा कठोलनां, तथा शरद ऋतुमां थता गायनां घीशिवाय बीजां सघला प्रकारनां घीनां पण तेणें पच्चखाण कर्यां. वली पल्यंक अने मंडुकी शिवायना शाकनां, पण तेणें पच्चखाण कर्यां. वली अंतरिक्ष संबंधि पाणी शिवाय बीजां पाणीनां, तथा पंचसौगंधिक शिवाय मुखवासनां पण तेणें पच्चखाण कर्यां. वली तेणें दुर्ध्यान, हिंस्र वस्तुउनुं दान, प्रमादनुं आचरण, तथा पापकार्योनो उपदेश विगेरे संबंधि अनर्थदंडोनो पण त्याग कर्यो. एवी रीतें तेणें अतिचाररहित प्रजुपासे सम्यक्त्वपूर्वक श्रावकव्रत अंगीकार कर्युं. पछी घेर जइने सघली वात तेणें पोतानी स्त्रीने कही संजलावी. पछी ते स्त्रीए पण तुरत तेनी आज्ञाथी, रथपर चडी, प्रजुपासे जइ श्रावकव्रत अंगीकार कर्युं. पछी गौतम स्वामिए प्रजुने नमस्कार करी पुछ्युं के, आ चुलनीपिता महाव्रतधारी थइ शके, के नहीं? त्यारें प्रजुए कह्युं के, ते यतिधर्म अंगीकार करशे नहीं; पण ते अहींथी काल करीने सौधर्म नामना देवलोकें जशे; त्यां अरुणाज विमानमां चार पल्योपमनी आयुष्यस्थिति संपूर्ण करीने, महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइने मोक्षें जशे. हवे चुलनीपिता पण घरनो

कारजार मोटा पुत्रने सोंपीने पोते पौषधव्रत लेइने पौषधशालामां रह्यो. हवे एटलामां कोइ कपटी मिथ्यात्वी देव, तेनुं व्रत भंगाववामाटे मध्यरात्रिए तेनी पासे आव्यो. तथा भयंकर रूप करीने, अने हाथमां तलवार लेइने तेने कहेवा लाग्यो के, तुं आ व्रतने तजी दे? नहींतर तारीपासेज तारा मोटा पुत्रने आ खड्गथी मारी नाखीश. अने तारा देखतांज तेनुं मांस कडाइमां पकावीने हुं खाइ जइश. तथा तेनुं लोही पण हुं पी जइश, के जे जोइने तुं तुरतज मृत्यु पामीश. तेना ते कहेवाथी पण चुलनीपिता कंइ क्षोभ पाम्यो नहीं. त्यारें तेणें तेना पुत्रनुं एक रूप करीने, तेने मारी नाखी, तेना मांसने कडाइमां पकावी खावा मांड्युं. ते सघलुं तत्व जाणनारा एवा चुलनीपिताए सहन कर्युं. त्यारे ते नीच देवें फरीने कह्युं के, हजी पण जो तुं व्रतने तजीश नही, तो तारा वचला पुत्रने पण मारी नाखीश. एवी रीतें तेणें अनुक्रमें वचला तथा नाना पुत्रोनां पण रूपो विकुर्वीने तेने मार्या. पछी तेणें कह्युं के, हजी पण जो तुं व्रतने तजीश नहीं, तो तारी माताने पण मारीश. एम कही तेणें पोकार करती एवी तेनी भद्रा मातानुं रूप विकुर्व्युं. तथा तेने पण ज्यारे मारवा लाग्यो, त्यारें तेणें (चुलनीपिताए) विचार्युं के, आ दुष्टें मारा त्रण पुत्रोने मार्या, अने मारी माताने पण हवे मारे नहीं, तेटलामां हुं तेणीने बचावुं; एम विचारि, जेटलामां ते चालवा लागे छे, तेटलामां घोर नादसहित ते देव आकाशमां उडी गयो. ते कोलाहल सांभलीने भद्राए तेनी पासे आवी पुछवाथी, तेणें सघलो वृत्तांत कही संभलाव्यो. त्यारें भद्राए कह्युं के, तारा पौषधव्रतने भांगवामाटे कोइ मिथ्यात्वी देवें आ चेष्टा करी छे; माटे हवे तुं आ व्रतभंगनी आलोचना कर? कारण के, व्रतभंगनी जो आलोचना न करीयें तो उलटुं पाप लागे छे. ते सांभली चुलनीपिताए पोताना व्रतभंगनी आलोचना करी. हवे एक दहाडो तेणें श्रावकनी दश प्रतिमाउ अंगीकार करी. एवी रीतें तेणें खड्गधारा सरखुं तीव्र श्रावकव्रत पाल्युं. पछी ते संलेखनापूर्वक अनशन करीने मृत्यु पामी सौधर्मा देवलोकमां अरुणप्रभ विमानमां उपन्यो. एवी रीतें चुलनीपितानी पेठे जेउ पौषध-

व्रत पाळे छे, तेउ अंते मुक्तिगामि थाय छे. एवी रीतें चुलनीपितानी कथा जाणवी.

हवे चोथुं शिक्षाव्रत कहे छे.

दानं चतुर्विधाहार, पात्राच्छादनसद्मनां ॥
अतिथिभ्योऽतिथिसंवि, भागव्रतमुदीरितं ॥ ८८ ॥

अर्थः— अतिथिउं प्रत्ये, चार प्रकारनो आहार पात्र, वस्त्र, तथा स्थान विगेरे जे आपवुं, तेने " अतिथिसंविभाग " नामनुं व्रत कहेलुं छे.

टीकाः— जेने तिथि, पर्व आदिकउत्सव न होय, ते अतिथि कहेवाय. चार प्रकारनो आहार एटले अशन, पान, खादिम अने स्वादिम. पात्र एटले भाजन-आछादन एटले वस्त्र, कामल विगेरे. वसति एटले रहेवानुं स्थानक अने उपलक्षणथी, पाटला, शय्या, संथारो विगेरे; (पण मुनिउने कंइ सुवर्ण आदिकनुं दान होय नहीं, कारण के, ते लेवानो तेमनो अधिकार नथी.) अने एवी रीतें पश्चात्कर्मादिदोष (मुनिने वोराव्या पछी काचा पाणीथी हाथ धोवा विगेरे.) रहित जे आपवुं, तेनुं नाम " अतिथिसंविभागव्रत " जाणवुं. वळी ते दान पण न्यायार्जित धनथी बनावेलुं तथा प्राशुक अने एषणीय, अने कल्पनीय तथा देश, काल अने श्रद्धापूर्वक, पोतानी अनुग्रहबुद्धिथी आपवुं. अहीं कोइ शंका करे के, शास्त्रोमां आहार देनाराउ तो संभळाय छे. पण साधुउने वस्त्र देनाराउ, तथा तेना फलनुं विवेचन तो संभळातुं नथी; तेने माटे कहे छे के, एम नहीं; प्रभुए साक्षात् वस्त्रदान पण कहेलुं छे के;

" समणे अनिग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असणपाण खाइम साइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुछणेणं पीढफलगसजसंथारेणं पडिलाभेमाणे विहरइ "

एवी रीतें वस्त्रने पण शरीरना उपकारमाटे कहेलुं छे. वळी ते वस्त्रग्रहण ठंडी, ताप, मछर आदिकना डंखने निवारण करवावाळुं होवाथी, साधुउने धर्मशुक्लध्यान सारी रीतें थइ शके छे. कह्युं छे के,

तणगहणानलसेवा, निवारणा धम्मसुक्कझाणठा ॥
दिठं कप्पग्गहणं, गिलाणमरणठयाचेव ॥ १ ॥

एवी रीतें पात्रनो पण मुनिउंने खप पडे छे, कारण के, तेथी अशुद्ध आहार पाणी कदाच आवी जाय, तो ते परठवाने काम आवे; इत्यादि तेमां (पात्र ग्रहण करवामां) घणा गुणो समाएला छे. कह्युं छे के,

छक्कायरक्कणठा, पायग्रहणं जिणेहिं पन्नत्तं ॥
जेअगुणासंभोए, हवंति ते पायग्रहणे वि ॥ १ ॥

अहीं कोइ शंका करे के, तीर्थंकरो तो, वस्त्र पात्रादिक ग्रहण करता नथी; अने तेथी तेमना शिष्योयें पण तेज आचारग्रहण करवो जोइयें; तेने माटे कहे छे के, एम नहीं. तीर्थंकरो तो छिद्ररहित हाथोवाला, होय छे, तथा तेउंना आहारपाणीनी शिखा छेक सूर्यचंद्रसुधि पहोंचे छे, तथा तेमांथी एक बिंदु पण नीचे पडतुं नथी. तेम चतुर्विध ज्ञानना बलथी, आहारपाणीना दोषोने जाणीने दूषणयुक्त आहारपाणी लेताज नथी. वली दीक्षा वखते तो तेउ पण वस्त्र ग्रहण करे छे. अने त्यारबाद तेउ सर्व परिसहो सहन करवाने समर्थ होवाथी तेउंने वस्त्रनुं प्रयोजन रहेतुं पण नथी. माटे "तीर्थंकरो प्रमाणेज तेमना शिष्योये वर्त्तवुं," एम कहेवुं तो ऐरावणनी पेठे सघला सामान्य हाथीउंने पण वर्तवानुं केहेवा जेवुं छे, अर्थात् ते न बनी शके तेवुं छे. वली तीर्थंकरोनुं अनुकरण करनाराउंयें तो मठमां रहेवाश आधाकर्मादिकनो, परिज्रोग, तैलनुं मर्दन, अंगारानी सगडीनुं सेवन, वल्कलोनुं पहेरवुं, कमंडलुनुं धारण करवुं, बहु साधुउंनी साथे रहेवापणुं, छद्मस्थोनुं धर्मदेशनानुं करवुं, शिष्यआदिकोने दीक्षादान, इत्यादि सर्व नहीं करवुं जोइयें; पण ते तो सघलाउं करे छे- (आ वाक्य कंइक शंकाशील जेवुं लागे छे, पण टीकाकारनुं पोतानुं कहेवुं तेमज लागे छे.) कंबल राखवानुं प्रयोजन, वर्षा ऋतुमां बहार निकलतां तात्कालिक वर्षाद आववाथी, अप्काय जीवोना रक्षणमाटे छे. वली बालक वृद्ध के रोगीने माटे, वर्षाद वरसते छते पण, कामली उंढी भिक्षामाटे जतां दोष नथी. तथा उच्चार प्रश्रवण आदिकथी पीडितोने पण कामल उंढी जवामां दोष नथी. पण छत्र उंढवानी तो शास्त्रोमां मना करेली छे; अने रजोहरण तो साक्षात् जीवरक्षामाटेज छे. तेम मुहुपत्ति पण उडीने मुखमां पडता जीवो, तथा मुखना उष्णश्वासथी बाहारना

वायुकाय जीवोनी विराधना टालवामाटे छे, तेम मुखमां पडती धूळने पण अटकाववामाटे छे. तथा वर्षा ऋतुमां जमीनपर थता कंथुआ आदिकना बचाववामाटे पाटपाटलाउंनो मुनिउंने उपयोग करवो पडे छे, तथा शय्या अने संस्थारानो शियाला तथा उनालामां सुवा बेसवामाटे खप होय छे. तथा स्थानक यतिउंने रहेवामाटे अत्यंत उपकारी छे. एवी रीतनां बीजां पण उपकरणो धारण करतां थकां साधुउंने दोष लागतो नथी. अने ते देनाराउंने तो गुणोनीज प्राप्ति होय छे. ते उपकरणोनुं प्रमाण ग्रंथगौरवना जयथी अहीं लखेलुं नथी.

हवे अहीं वृद्धोनी कहेली पौषधपारणविधिनी समाचारी कहे छे. पौषधव्रतने पालता एवा श्रावकें, निश्चयें करीने साधुउंप्रत्ये दान आपीनेज जोजन करवुं. ते केवी रीतें? तो के, ज्यारें जोजननो वखत थाय, त्यारें, पोते साधुने उपाश्रये जइ, जिक्षामाटे तेमने निमंत्रणा करवी. ते वखते साधुउंये पण, आने अंतरायदोष, तथा आपणने स्थापनादोष मा थाउं, एम विचारि, झोली, पात्रां, पल्ला विगेरेनुं पडिलेहण करवुं. अने जो ते पेहेलीज पोरसीयें निमंत्रण करवाने आवेल होय ,तो, पोताने (साधुने) जो नोकारसीनुं पच्चखाण होय, तो आहार पाणी लेवां, अने जो लांबा कालनुं पच्चखाण होय, तो न लेवां. कारण के, लेइने पाछुं ते राखी मेलवुं पडे. पण जो ते पौषधव्रतवालो बहुज खेंच करे, तो ते लेवां, अने राखी मेलवां; दरम्यानमां कोइ पारणावाला साधुने तेनो खप होय, तो तेने ते आपवां अने पछी वली तेवा श्रावकनी साथे, बीजा एक साधुने साथे लेइ वोरवा जवुं; पण एकलां नहीं; श्रावकें साधुनी अगाडी अगाडी चालवुं तथा तेमने घेर लेइ जइने, आसनपर बेसवाने कहेवुं; जो साधुउं बेसे तो ठीक, अने न बेसे तो पण तेउंने बेसवामाटे विनति करवानो विनय करवो. अने पछी कां तो पोतेज साधुने वहोरावे, अथवा पोते हाथमां वस्तुउंनां जाजन धारीने उजो रहे, अथवा कंइ पण कर्याविना स्थिर पण रहे. (अर्थात् घरनां बीजां माणसो पण वोरावे, अने पोते उजो पण रहे.) वली साधुउंपण पश्चात्कर्मना दोष टालवामाटे सघली वस्तु नहीं लेतां, जाजनोमां बाकी रहेवा दइने पोताना खपजोगज वहोरे. पछी ज्यारे साधुउं पाछा जवा लागे, त्यारे नमस्कारपूर्वक केटलांक पगलां ले-

मनी पाछल जइ, पाछो आवी पोते जोजन करे. वली जो ते ग्रामादिकमां साधु न होय, त्यारें जोजन वखते बारणे आवी आसपास जुवे; तथा शुद्ध जावथी चिंतवे के, जो अहीं साधुउ होत, तो हुं खरेखर निस्तारित थात; एवी रीतें पोषधपारणनो विधि जाणवो. अने बीजे अवसरे तो, साधुउने वोरावीने पोते जमे, अथवा पोते जमीने पण साधुउने वोरावे.

धर्मोपकारीउने अन्नादिकनुं दान देवुं, पण तेउने स्वर्ण आदिकनुं कल्पे नहीं, केम के तेथी तो क्रोध लोज काम आदिकनी वृद्धि थाय छे. वली जमीननुं दान पण उत्तम नथी, केम के तेथी अनेक जीवोनी खेडवा आदिकथी हिंसा थाय छे, वली शस्त्रदान पण नहीं करवुं कारण के, तेथी पण अनेक जीवोनी हिंसा थवानो संजव छे. वली ते तलनुं दान पण नहीं देवुं, केम के तेमां अनेक त्रस जंतुउनी उत्पत्ति थाय छे. वली जड लोको, जे मुखथी अशुचि खाधा करे छे, तेवा गायना अपानमां (विष्टाद्वारमां) तीर्थोने मानता थका, पवित्र मानीने तेने धर्ममाटे दान तरिके आपे छे. वली जेणीने दोती वखते वाछडाने पीडा थाय छे, तथा जे खरी आदिकथी जीवोने हणे छे, ते गायनुं दान कोण कल्याणमाटे करे? वली जे कामने वधारनारी बंधुउना स्नेहरूपी वृक्षप्रत्ये दावानल सरखी क्लेशने वधारनारी, नरकना द्वारनी कुंची सरखी मोक्षद्वारने जोगलसरखी धर्मरूपी धनने चोरनारी, तथा आपदाने करनारी, एवी जे कन्या, तेणीनुं दान पण शीरीतें कल्याणकारी थाय? वली मूढ लोको, विवामां जे यौतकनुं(करियावर)दान आपे छे, ते पण राखमां घी ढोलवाजेवुं छे. वली संक्रांतिने दिवसे, वैधृत, व्यतीपात, अमास पुनम विगेरे दिवसें पण लोजीउये जे दाननुं प्रवर्त्तन कराव्युं छे, ते पण मूर्खताज छे. वली जे दुर्बुद्धिउ, मरण पामेलाउने दान आपे छे, (श्राद्ध आदिक करे छे, ते.) तेउ पण सांवेलाने पल्लव आववामाटे पाणीथी सींचे छे. वली ब्राह्मणोने जमाड्याथी ज्यारें पितृउ तृप्त थाय छे, त्यारें एकें जोजन करवाथी बीजानेपण तृप्ति थवी जोइयें!!! वली पुत्रें दीधेलुं दान, पिताना पापोनुं नाश करनारुं ज्यारे थाय, त्यारें पुत्रें करेला तपथी पिताने पण मोक्ष मलवो जोइयें. वली ज्यारे गंगा अने गयादिकमां दान देवाथी पितृउ तरी शके, त्यारे बलेलां वृक्षोने पण नवपल्लव करवामाटे आंगणामां रोपवां जोइयें.

माटे जेउं सुपात्रो होय तेउंने पण अन्नादिकनुं दान आपवुं; पण सुवर्णादिकनुं नहीं; हवे ते सुपात्रो कोण? ते कहे छे. ज्ञान दर्शन, अने चारित्ररूपी त्रण रत्नोवाला, तथा पांच सुमति अने त्रण गुप्तिना धरनारा पंच महाव्रतोने पण धरनारा, तथा परिसह अने उपसर्गोरूपी मोटी शत्रुसेनाने जीतवाने सुजटो सरखा शरीरमांपण ममता विनाना धर्मोपकरण शिवायना परिग्रह विनाना, फक्त शरीरने धर्मक्रियामाटे निजाववाने बेंतालीश दोषरहित आहार लेनारा, नवगुप्तिउं सहित ब्रह्मचर्य पालनारा, तथा परनी तणखलासरखी वस्तुमां पण स्पृहाविनाना, तथा मान अपमानमां, लाज अलाजमां, सुख दुःखमां, प्रशंसा अने निंदामां, तथा हर्ष अने शोकमां पण तुल्यवृत्तिवाला, तथा करवुं, कराववुं, अने अनुमोदवुं, जांगाउंथी आरंजविनानी, तथा एक मोक्षनाज तानवाला, एवा मुनिउं उत्तम पात्रतुल्य छे. वली सम्यग्दृष्टि, तथा देशविरतिवाला, अने यतिधर्मना इच्छक गृहस्थो मध्यम पात्रतुल्य छे. अने सम्यक्त्वमात्रमां संतुष्ट थयेला, व्रत तथा शीलमां स्पृहाविनाना तथा तीर्थप्रजावनामां उद्यमवंत थयेला, जघन्य पात्रतुल्य छे. हवे कुशास्त्रो सांजलवाथी वैराग्यवाला, परिग्रह विनाना, ब्रह्मचर्य पालवामां रक्त थयेला, चोरी मृषावाद अने हिंसाथी दूर रहेनारा जयंकर व्रत करनारा मौन धारण करनारा, कंदमूल अने फल खानारा, तथा जिक्षा मागी जोजन करनारा, रंगेलां (जगवां) कपडां पेहेरनारा, अथवा नग्न रहेनारा, शिखा अने जटा राखनारा, मुंडा, एकदंडी, अथवा जंगलमां रहेनारा, ग्रीष्म ऋतुमां पंचाग्निनी आतापना लेनारा, अंगे जस्म चोलनारा, तुंबडी अने हाडकांनां आजूषणो पहेरनारा, पोतानी बुद्धिथी धर्मवंत, पण मिथ्यादर्शनथी दूषित थयेला, जिन धर्मनो द्वेष करनारा, एवा मूढ कुतीर्थिउंने कुपात्रो जाणवा. जीवहिंसा करनारा जूवुं बोलनारा, पर धननी चोरी करनारा, अत्यंत कामी, परिग्रह अने आरंजमांज रक्त थएला, हमेशां संतोषविनाना, मांसाहारी, मद्यपानमां रक्त, क्रोधी क्लेश करनारा, कुशास्त्रो जणीने पोताने पंडित माननारा, तथा तत्वथी नास्तिकतुल्य, एवा माणसो अपात्र छे. एवी रीतें, कुपात्र अने अपात्रने तजीने मोक्षने इच्छनारा माणसो पात्रदान करे छे. ते पात्रदान सफ-

छ, अने धर्मने अर्थे थाय छे; अने कुपात्र अपात्रप्रत्ये दीधेलुं दान अधर्ममाटे थाय छे. सर्पने जेम दूधनुं पान, तेना झेरनी वृद्धिने माटे थाय छे, तेम कुपात्र अने अपात्रप्रत्ये दीधेलुं दान जवनी वृद्धिने माटे थाय छे. जिनेश्वरोने दान देनारा माणसो मोक्षगामी थाय छे, तथा जिनेश्वर प्रभुनां पारणाने दिवसे भिक्षा देनारना घरने आंगणे, देवताओ हर्षपूर्वक रत्नवृष्टि करे छे. एवी रीतें अतिथिसंविभाग नामना व्रतनुं स्वरूप कह्युं. माटे पात्र अपात्रने जाणीने, यथोचित दान देवुं. जो के विवेकी अने श्रद्धावान् माणसने सुपात्र दानमां साक्षात् अथवा परंपराए करीने मोक्षरूपी फल मले छे. तोपण मुग्ध माणसोना अनुग्रहमाटे सुपात्र दाननुं प्रासंगिक फल हवे कहे छे.

पश्य संगमकोनाम संपदं वत्सपालकः ॥
चमत्कारकरीं प्राप मुनिदानप्रभावतः ॥ ८९ ॥

अर्थः—संगमक नामें वत्सपाल, मुनिने दानना प्रभावथी चमत्कार करनारी संपदाने पाम्यो; (तेने परंपराये करीने मोक्षरूप फलपण जो के मल्युं छे, तो पण प्रासंगिक फल कहेवामाटे आम कह्युं छे.)

हवे ते संगमकनी कथा कहे छे.

मगध नामना देशमां महालक्ष्मीवालुं राजगृह नामनुं नगर छे. ते नगरमां श्रेणिक नामें राजा राज्य करतो हतो. ते वखतमां कोइक कुटुंबविनानी धन्या नामें बालिका संगमक नामना एक बालकने लेइने शालिग्राममां आवी ते संगमक, लोकोनां वाछरडां चरावीने, त्यां पोतानी आजीविका चलाववा लाग्यो. एक दहाडो नगरमां महोत्सव आववाथी तेणें घेर घेर दूधपाक रंधातो जोयो. तेथी तेपण घेर जइ मातापासे दूधपाक मागवा लाग्यो, त्यारे तेणीयें कह्युं के, हुं तो गरीब छुं, मारे घेर दूधपाक क्यांथी? पण ते बालकें वारंवार ते मागवाथी, तेणी पूर्वना वैभवने संभारती थकी अत्यंत रुदन करवा लागी. ते सांभली पडोशीओ तेणीने दुःखनुं कारण पुछवा लाग्या; त्यारें तेणीयें पोताना दुःखनुं कारण निवेदन करवाथी तेओये तेने दूध आपवाथी, तेणीये दूधपाक रांध्यो. तथा तेनो थाल भरी पुत्रने सोंपी, पोते कंइ काममाटे घरना अंदरना भागमां गइ एट-

त्यां कोइक मासोपवासी मुनि, पारणामाटे त्यां आव्या; ते जाणे तेने भवरूपी समुद्रथी तारवामाटेज नावनी पेठेज आव्या होय नहीं!!! त्यारे संगमकें तेने अत्यंत भाव लावी, शुद्ध हृदयथी, पोताने धन्य मानी-ने, ते दूधपाक वोराव्यो; मुनि पण ते लेइने चालता थया; पछी तेनी मातायें जाण्युं के, आ सघलो दूधपाक खाई गयो लागे छे, एम जाणी तेणीयें बीजीवार पीरस्यो; पछी तेणे ते छेक कंठसुधी खाधो, अने तेना अजीर्णथी ते संगमक रात्रियें तेज साधुनुं स्मरण करतो थको मृत्यु पाम्यो. ते दानना प्रभावथी ते राजगृह नगरमां, गोभद्र शेठनी भद्रा नामनी स्त्रीनी कुक्षियें उत्पन्न थयो; तेथी तेणीयें स्वप्नमां डांगरनुं पाकेलुं खेतर जोयुं, अने ते पोताना स्वामिने कह्याथी, तेने पुत्र थवानुं कह्युं. वली तेणीने दान, तथा धर्मकार्योना जे कंइ डोहलाउ उत्पन्न थया, ते सघला गोभद्र शेठें संपूर्ण कर्या. संपूर्ण समये तेणीयें पण एक उत्तम पुत्रने जन्म आप्यो. स्वप्नने अनुसारें मातपितायें तेनुं शालिभद्र नाम पाड्युं. ते त्यां पांच धावमाताउथी लालन करातो छतो, आठवर्षमां कंइक उंचुं हतुं त्यांज ते सघली कलाउ भण्यो. यौवनने प्राप्त थयाबाद ते पोतानी सरखी उमरना बालको साथे रमवा लाग्यो. ते नगरना केटलाक शाहुकारो, तेने पोतानी बत्रीश कन्याउ आपवामाटे, तेना पितापासे मागणी करवा लाग्या. अने तेथी शेठें पण तेने ते कन्याउ परणावी. तेउनी साथे शालिभद्र पण विलास करवा लाग्यो. एवी रीतें आनंदमां मग्न थइने, ते रात्रिदिवसोने पण जाणवा न लाग्यो, अने तेनां मातपिता पण तेना भोगनी सघली सामग्री तेने पुरवा लाग्यां. ते गोभद्र शेठ वीरप्रभुपासे दीक्षा लेइ, अनशन करी देवलोकें गयो. त्यां अवधिज्ञानथी पोताना पुत्रने जोइने, तेना (पुत्रना) पुण्यथी, ते तेनापर संतुष्ट थयो. अने तेथी कल्पवृक्षनी पेठे, ते तेने (शालिभद्रने) तेनी स्त्रिउसहित दिव्य एवां वस्त्राभरणो आपवा लाग्यो. पूर्वदानना प्रभावथी ते केवल भोगो भोगववा लाग्यो, अने भद्रा सघलो व्यवहार चलाववा लागी. एक दहाडो केटलाक वणिक लोको रत्नकंबलो लावीने, श्रेणिक राजाने वेंचातां देवा लाग्या, पण तेनी किंमत घणी होवाथी तेणें ते लीधां नहीं. पछी ते वणिको शालिभद्रने घेर गया, त्यां ते भद्रायें तेमने मोंढोंडे मागतुं द्रव्य आपी ते वेंचाथी लीधां.

पछी चेलणा राणीये श्रेणिकने कह्युं के, गमे तेवां ते मोघां होय तो पण तमो तेमांथी एक मारे माटे ल्यो ? त्यारे श्रेणिकें, फरीने वेपारीउपासे माग्याथी, तेउये कह्युं के, ते तो सघलां जद्रायें वेंचातां लेइ लीधां छे. त्यारे एक डाह्या माणसने श्रेणिकें जद्रापासे मूल्य आपी रत्नकामल लेवा मोकल्यो. त्यारे जद्रायें तेने कह्युं के, ते रत्नकंबलो शालिजद्रनी वहुउना पगो लुछवामां वपरायेलां छे, माटे एवां जरा जुनां थयेलां रत्नकंबलोनो जो खप होय, तो राजाने पुछीने सुखेथी लेइ जाउ? ते वात ते माणसें राजाने पुछीने कहेवाथी, चेलणा बोली के, वेपारी अने राजावच्चे पण, कथीर अने सोना सरखो अंतर छे!!! पछी राजायें तो आश्चर्य थइने, तेज माणसने शालिजद्रने बोलाववा मोकल्यो; त्यारे जद्रायें आवीने राजाने कह्युं के, मारो पुत्र कदी पण बहार निकलतो नथी, माटे मेहेरबानी करीने आप मारे घेर पधारो? त्यारे श्रेणिकें पण आश्चर्यथी ते अंगीकार कर्युं; पछी जद्रापण क्षणवारसुधि तेने थाजवानुं कही, पोते अगाडीथी घेर गइ; तथा तेणीयें पोताना घरथी मांडीने, छेक राजाना घरसुधि विचित्र प्रकारनां वस्त्र अने हीरा माणेकोथी बजारने शणगारी. पछी तेणीयें बोलाववाथी राजा पण, ते सघली शोजाने जोतो थको, शालिजद्रने घेर गयो. त्यां तेणें सोनाना स्तंजोपर इंद्रनीलमणिनां तोरणोवालुं, तथा मोतीउना स्वस्तिकोवालुं आंगणुं जोयुं. वली ते घर दिव्यवस्त्रोना चंदुआउथी शोजायुक्त थएलुं, तथा सुगंधि द्रव्योथी धूपित थएलुं, विमानसरखुं शोजतुं हतुं. ते घरमां प्रवेश करीने राजा आश्चर्यसहित चोथी जूमिपर चडीने सिंहासनपर बेठो. त्यारे जद्रायें सातमी जोयें जइ, शालिजद्रने कह्युं के, श्रेणिक राजा अहीं आव्या छे, माटे तेने मलवामाटे तुं थोडीवार नीचे चाल ? त्यारे शालिजद्रें कह्युं, के मारुं त्यां शुं कांम छे.? तमारी मरजी आवे तेम तमो करो? त्यारे जद्रायें कह्युं के, कंइ वस्तु वेंचाथी लेवी नथी, पण आ तो, सर्व लोकोना अने तमारा पण स्वामी आवेला छे. ते सांजली खेद सहित शालिजद्रें विचार्युं के, धिक्कार छे, संसारसंबंधि ऐश्वर्यने ? के हजु, मारापर पण स्वामी छे!!! माटे हवे मारे आ जोगोथी सर्युं, हुं तो वीरप्रजुपासे जइ दीक्षा लेइश. एवी रीतें वैराग्ययुक्त थइने पण, ते माताना उपरोधथी राजापासे स्त्रियो सहित आवीने, विन-

थयो, तेने नमतो हवो. त्यारे श्रेणिकें तेने आलिंगन करीने, पुत्रनी पेठे पोताना खोलामां बेसाड्यो, तथा स्नेहथी तेने मस्तकपर चुंबन कर्युं, ते वखते शालिजद्रनी आंखोमांथी आंसुर्ज पडवा लाग्यां; त्यारे जद्रायें राजाने कह्युं के, हे देव, तमो एने ढोडी आपो, कारण के, आ मनुष्यसंबंधिपुष्पोनी सुगंधिथी डुजाय ढे. आना पिता देवलोकें गया ढे, अने तेथी हमेशां ते, आ पुत्रने स्त्रिउंसहित दिव्य वस्त्राजूषणोविगेरे मोकलावे ढे. पढी राजायें तेने रजा आपवाथी ते सातमी जोयें गयो अने जद्रायें राजाने जोजन करवानुं कहेवाथी राजायें पण दाक्षिण्यताथी ते अंगीकार कर्युं. पढी राजानी स्नान करतां एक वींटी क्रीडा वावनी अंदर पडी गइ; तेथी राजा आम तेम जोवा लाग्यो, त्यारे जद्रायें दासीने हुकम करी, ते वावनुं पाणी खाली कराव्युं; त्यारे अत्यंत मनोहर आजूषणोनी वच्चे, अंगारानी पेठे पडेली पोतानी वींटी राजायें दीठी; अने तेथी आश्चर्य पामीने, पुढवाथी दासीयें कह्युं के, शालिजद्रनां अने तेउंनी स्त्रीउंनां निर्माल्य थयेलां आजूषणो हमेशां आमां फेंकी देवामां आवे ढे. ते सांजली राजायें विचार्युं के, खरेखर आ धन्य ढे, अने हुं पण धन्य डुं के, जेना राज्यमां आवा शाहुकारो ढे. पढी राजा त्यां परिवारसहित जोजन करीने, वस्त्राजूषणोथी सत्कार पामीने घेर गयो. शालिजद्र पण जेटलामां हवे संसारने ढोडवानी इछा करे ढे तेटलामां तेने खबर मली के, चार ज्ञानने धरनारा धर्मघोषआचार्य उद्यानमां आवेला ढे. ते सांजली शालिजद्र पण हर्षपूर्वक रथपर चडीने, त्यां जइ आचार्य तथा साधुउंने वांदीने त्यां तेमनीपासे बेठा; तथा हाथ जोडीने पुढ्युं के, हे जगवन्, कया कर्मथी कोइ बीजो आपणो स्वामी थइ शके नहीं. त्यारे आचार्य महाराजें कह्युं के, जे माणसो दीक्षा लीये ढे, तेउं सघला जगत्ना स्वामी थाय ढे. त्यारें शालिजद्रें कह्युं के, जो एम ढे, तो मारीमातानी आज्ञा लेइने हुं दीक्षा ग्रहण करीश. त्यारे आचार्यें कह्युं के, प्रमाद करवो नहीं; पढी शालिजद्र घेर जइ, माताने कहेवा लाग्या के, में आजे धर्मघोष आचार्यना मुखथी धर्म सांजल्यो ढे; त्यारे मातायें प्रशंसापूर्वक कह्युं के, तें बहुज सारुं काम कर्युं. पढी शालिजद्रें कह्युं के, हवे तो जो, तमारी आज्ञा होय, तो हुं दीक्षा लेउं. त्यारे मातायें कह्युं

के, ते तारो विचार तो उत्तम छे, पण तेथी तो तारे हमेशां लोखंडना च-
णा चाववा जेवुं छे. वली तुं स्वभावथीज कोमल छे, माटे तुं व्रतनो भा-
र केम सहन करी शकीश? त्यारे शालिभद्रें कह्युं के, जे कायर माणसो
होय, तेज व्रतनां कष्टने सहन करी शकता नथी. त्यारे मातायें कह्युं के,
तुं दिव्य भोगोने तजीने हजु मनुष्यसंबंधि भोगोनो अभ्यास करी अ-
नुक्रमें व्रत लेजे. शालिभद्रें पण ते वातने अंगीकार करीने हमेशां एकेक
स्त्री तथा शय्या तजवा लाग्यो.

हवे तेज नगरमां तेनो एक धन नामें बनेवी रहेतो हतो. तेनी स्त्री
(शालिभद्रनी बेहेन) एक दहाडो रडवा लागी, तेनुं कारण धनें पुछ-
वाथी तेणीयें कह्युं के, मारो भाइ, व्रत लेवामाटे हमेशां एकेक स्त्री तथा
शय्या तजे छे, तेथी मने रडवुं आवे छे. त्यारे धनें मश्करीमां कह्युं के,
ज्यारे तारो भाइ एम करे छे, त्यारे हजु ते बीकण छे; त्यारे बीजी स्त्रि-
उं सहित तेणीयें पण हांसीथी तेने कह्युं के, दीक्षा लेवी जो सेहेली तमो-
ने लागे छे, तो तमो केम ग्रहण करता नथी? त्यारे धनें कह्युं के, दीक्षा
लेवामां तमोज मने विघ्नकारिणी हतीयो पण हवे तमारीज अनुमति थ-
इ छे, माटे हुं तुरत दीक्षा लेइश. त्यारे तेउंयें कह्युं के, हे स्वामि, अमो-
ये तो हांसीथी कह्युं छे, माटे, तमारे अमारापर कृपा करवी जोइयें, अने
तेथी अमोने तजशो नहीं. त्यारे धनें कह्युं के, आ स्त्री, धन विगेरे अ-
नित्य छे, माटे हुं तो अवश्य दीक्षा लेइश, एम कही, ते उठी निकल्यो.
त्यारे तेउंये कह्युं के, अमो पण तेमज करीशुं, त्यारे तेणे पण हर्षपूर्वक
ते अंगीकार कर्युं. एटलामां वैभार पर्वतपर श्री वीरप्रभु आवीने समोस-
र्या. तेथी धन, शिबिकामां बेसी दान दइने स्त्रियो सहित वीरप्रभुने शरणे
गया; तथा त्यां तेणें स्त्रिउं सहित दीक्षा लीधी. पछी शालिभद्रें पण, उ-
तावलथी श्री वीरप्रभुपासे जइ दीक्षा लीधी पछी श्री वीरप्रभु पण बीजी
जगोये विहार करवा लाग्या. पछी धन अने शालिभद्र, बन्ने बहुश्रुत थ-
इ, खड्गधारा सरखुं तीव्र तप तपवा लाग्या. तेउं बन्ने शरीर पर निःस्पृही
थइने, बे मासे, चारमासे, त्रणमासे, पखवाडीये, एक मासे, विगेरे तपथी
पारणुं करवा लाग्या. अने एवा तपथी तेमनुं शरीर फक्त हाडपिंजर स-
रखुंज रह्युं. एक दहाडे ते बन्ने महामुनिउं पोतानी जन्मभूमिका पणी

राजगृही नगरीप्रत्ये वीरप्रजुनी साथे आव्या. ते वखते मासोपवासने पारणे ते बन्ने मुनियोयें वीरप्रजु पासे जिक्षा माटे जवासारु आज्ञा मागी; प्रजुयें कह्युं के, हे शालिजद्र मुनि ! आजे तमोने तमारी मातापासेथी जिक्षा मलशे; पठी तेउ बन्ने जद्राने घेर गया, पण तपथी अत्यंत दुबला थइ जवाथी, तेणीयें तेओने ओलख्या नहीं; वली ते वखते वीरप्रजु अने शालिजद्रने वांदवा जवामाटे आतुर होवाथी तेणीयें तेओ तरफ वधारे ध्यान पण आप्युं नहीं, तेथी तेउ क्षणवार थोजीने त्यांथी चाली निकल्या, अने जेवा तेउ नगरना दरवाजापासे आव्या, के तुरत तेउने शालिजद्रनी पूर्व जन्मनी जद्रा नामनी माता, नगरमां दही तथा घी वेंचवामाटे आवती हती, ते सामी मली. तेणीयें शालिजद्रने जोइ, हर्षपूर्वक नमस्कार करी, बन्नेने दहीं वोराव्युं. पठी तेउ बन्ने वीरप्रजुपासे गया, त्यारे शालिजद्रें हाथ जोडी प्रजुने पुब्युं के, हे जगवन्! मने आज मातातरफथी शी रीतें पारणुं थयुं ? त्यारे वीरप्रजुयें कह्युं के, ते तमारी पूर्वजन्मनी जद्रा नामें माता हती. पठी ते दहींथी पारणुं करीने, शालिजद्र मुनि पण धननी साथे वैजार पर्वतपर गया. त्यां तेउ बन्नेये शिलातलपर, पोंजीने पादपोपगमनामनुं अनशन कर्युं. हवे एटलामां जद्रा तथा श्रेणिक राजापण श्रीवीरप्रजु पासे आव्या. त्यां जद्राये वीर प्रजुने पुब्युं के, हे जगवन्, ते शालिजद्र तथा धन मुनि क्यां ठे.? मारे घेर जिक्षामाटे केम आव्या नथी? त्यारे सर्वज्ञ प्रजुयें कह्युं के, तेउ तारेज घेर आव्या हता, पण तुं अहीं आववामां व्यग्र हती तेथी तें एमने उलख्यानथी. तारा पुत्रनी पूर्व जन्मनी माता जद्रायें नगरमां आवतां थकां, तेउने दहीं आप्युं, अने तेथी तेउये पारणुं कर्युं ठे; अने हवे ते बन्नेये वैजार पर्वतपर जइ अनशन ग्रहण कर्युं ठे. ते सांजली जद्रा श्रेणिकराजानी साथे त्यां वैजारपर गइ, तथा त्यां तेउने तेणीयें निश्चल जोया. ते जोइ तेनां आगलनां कष्टने याद करीने ते रडवा लागी; अने कहेवा लागी के, हे वत्स! तुं मारे घेर आव्यो, पण हीनजाग्यवाली एवी में, तने प्रमादने लीधे जाण्यो नहीं; वली तुं अमोने तजी गयो पण तारा दर्शनथी हजु तुं अमने आनंद करीश, एवो अमारो मनोरथ हतो; पण

तारां आ कार्यथी तो हवे अमारो ते मनोरथ पण नाश पाम्यो; हवे आ तारा प्रारंभ करेला तपमां हुं विघ्नरूप तो थती नथी, पण आ तपेली शिलापरथी तुं दूर रहे? ते सांभली श्रेणिकें कह्युं के, हे माता; तमो हर्षनी जगोये शोक केम करो छे? जेना आवा उत्तम पुत्रो छे, एवां तमो धन्य छो. आ तमारा पुत्रें, प्रभुनां चरणोने पामी खरेखर मोक्षज मेळव्यो छे. एवी रीतें राजाये समजावेली ते भद्रा माता, तेउने वांदीने खेदयुक्त थइ थकी घेर गइ, अने श्रेणिकराजा पण पोताने स्थानकें गयो. हवे तेउ बन्ने मुनियो पण काल करीने, सर्वार्थसिद्धिप्रत्ये गया, तथा त्यां तेत्रीश सागरोपमना आयुष्यवाळा देवो थया. एवी रीतें संगमकना दृष्टांतथी, सत्पात्रदाननुं फल जाणीने, अतिथिसंविभागव्रतमां आदर करवो एवी रीतें संगमकनी कथा जाणवी.

एवी रीतें बारे व्रतोनुं स्वरूप कह्युं.

हवे अतिचारोनुं स्वरूप कहे छे.

व्रतानि सातिचाराणि, सुकृताय भवंति न ॥
अतिचारास्ततोहेयाः, पंच पंच व्रते व्रते ॥ ८९ ॥

अर्थः– अतिचार सहित, धारणकरेलां व्रतो, पुण्यमाटे थतां नथी, माटे व्रत व्रत प्रत्येना पांच पांच अतिचारो तजवा.

टीकाः– अहीं कोइ शंका करे के, अतिचारो तो सर्व विरतिमांज होय. कारण के, संज्वलनो उदयज तेमनुं अभिधान छे; अने ते संज्वलनो उदय पण सर्वविरतिनेज होय छे, अने देशविरतिउने तो प्रत्याख्यानावरणादिकज होय छे, माटे देशविरतिमां अतिचारनो संभव नथी. अने वली ते देशविरति कंथुआना शरीरमां रहेला व्रणादिकना अभाववनी पेठे अल्प छे. केम के, पेहेला अणुव्रतमां, स्थूलथी, संकल्पथी अने निरपराधि जीवोने, द्विविध त्रिविधें, मारवानां पच्चखाण होय छे, तथा एवी रीतें ते देशविरति होवाथी, अतिचारो तेने लागी शके नहीं; अने महाव्रतोमां ते लागी शके; एवी रीतनी वादीनी शंकानो हवे उत्तर दे छे के, उपासदशादिकमां दरेक व्रतमां पांच अतिचारो कहेला छे; तथा संज्वलनादिकना उदयसंबंधि जे कह्युं ते पण केवल सर्वविरति

अतिचारने आश्रीने कहेलुं छे; पण सम्यक्त्वसहित देशविरतिने आश्रिने कह्युं नथी. सर्व विरतिउने पण संज्वलनादिकना उदय वखतेज अतिचारो होय छे, अने बाकीना कषायोना उदय वखते तो, ते सर्वविरतिनो मूलमांथीज छेद थाय छे. माटे एवी रीतें देशविरतिमां अतिचार संजवी शकता नथी, एम कहेवुं मिथ्या छे.

हवे ते अतिचारो प्रथमव्रत आश्रयी कहे छे.

क्रोधाद्बंधछविछेदो,ऽधिकजाराधिरोपणं ॥
प्रहारोऽन्नादिरोधश्चा, हिंसायां परिकीर्त्तिताः ॥ ए० ॥

अर्थः– क्रोधथी बंध, छविछेद, अधिक जारनुं जरवुं, प्रहार, तथा अन्नादिकनो अटकाव, एटला अहिंसाव्रतना अतिचारो कहेला छे.

टीकाः– बंध एटले गाय अथवा जेंस आदिकने तथा शिखामणमाटे पोताना पुत्र आदिकने पण प्रबल क्रोधथीज बांधवा, ते पेहेलो अतिचार. शरीर अथवा चामडीने छेदवी ते बीजो अतिचार. बेल, उंट, खचर विगेरे पर, अधिक जार जरवो, ते त्रीजो अतिचार. लाकडी आदिकथी प्राणीउने मारवां, ते चोथो अतिचार. तथा प्राणीउप्रत्ये अन्नादिकनो रोध करवो, ते पांचमो अतिचार जाणवो. ए पांचेमां प्रबल क्रोधथी, एटलुं पद जोडी लेवुं. आवश्यकचूर्णिआदिकमां बेपगां अथवा चोपगां प्राणीउनो बंध बे प्रकारनो कह्यो छे, सार्थक अने निरर्थक तेमां निरर्थक तो करवोज नहीं, अने सार्थकना पण बे जेदो छे. सापेक्ष अने निरपेक्ष. सापेक्ष एटले, ढीली गांठथी दोरी आदिकथी बांधवां, ते, केजेथी आग आदिक वखते तेउनो सेहेलथी बचाव थइ शके, अने निरपेक्ष एटले अत्यंत मजबुताइथी बांधवुं ते. वली श्रावकें तो प्राणिउं पण प्रायः एवाज राखवा, के जेउने बांधवानी जरुरज न पडे. एवीरीतें छविछेदना पण उपर प्रमाणेज बे जेदो जाणवा; तेम जार उपाडवामां पण तेमज जाणवुं. माणस आगल जार उपडाववो नहीं; कदाच उपडाववो पडे, तो पण ते पोते पोताने माथे चडावी उतारी शके, तेटलोज जार उपडाववो; अने पशुउपर पण तेउ उपाडी शके तेथी पण उंछोज जार जरवो, अने खेतर खेडतीवेला तथा गाडांमां जोडती वेलाए पण तेने

योग्य वखते छुटां करवां; एवी रीतें प्रहार पण बे प्रकारें निरपेक्ष अने सापेक्ष छे तेमां निर्दय थइ मारवुं ते निरपेक्ष. अने सापेक्ष एटले श्रावकें, प्रथम बीक देखाडवी, ते छतां न माने, त्यारे पण मर्मस्थानको विना बीजी जग्गोए, पाटु अथवा चाबुखथी एक अथवा बे वारज ताडना करवी. तेवी रीतेंज अन्नपानादिकनो रोध जाणवो; तेमां पण सापेक्ष एटले रोग चिकित्सावास्ते, अथवा अपराधीमाटे जाणवो; तेमां पण तेने कहेवुं एम के, "आजे तने भोजन आपवामां आवशे नहीं." शांति माटे उपवास आदिक करवा ते. वधारे शुं कहेवुं? अहिंसा लक्षणवाला मूलगुणने जेम अतिचार न लागे, तेम यतनापूर्वक वर्तवुं. अहीं कोइ शंका करे के, श्रावकें तो हिंसानांज पच्चखाण कर्यां छे, तेथी बंधादिक करवामां तेने कंइ दोष नथी, केम के तेथी कंइ तेनुं अहिंसाव्रत खंडन थतुं नथी. अने कदाच जो तेणें बंधादिकनां पण पच्चखाण कर्यां होय, तो तो तेम करवामां व्रतनो भंग थाय, अने बंधादिकनां पच्चखाण करते छते, व्रतपणानोज नाश थाय छे, कारण के, ते बंधादिक अतिचारो तो व्रतथी जुदाज गणावेला छे. माटे एवी रीतें बंधादिकने अतिचारपणुं घटी शकतुं नथी. हवे ते शंकानो उत्तर आपे छे. ते वात सत्य छे के, हिंसानांज पच्चखाण कर्यां छे, पण बंधादिकनां पच्चखाण कर्यां नथी. पण ते हिंसानां पच्चखाणथी परमार्थें करीने बंधादिकनां पण पच्चखाणो करेलांज छे, केम के तेओ हिंसानां साधनो छे; तेम बंधादिकमां कंइ व्रतनो भंग थतो नथी. पण फक्त अतिचारज लागे छे. वली व्रत पण बे प्रकारनुं छे, अंतर्वृत्तिनुं अने बाह्यवृत्तिनुं, तेमां "हुं आने मारी नाखुं" एवा विकल्प विना क्रोधादिकना आवेशथी, परप्राणना नाशने गणकार्या विनाज बंधादिकमां जे प्रवृत्ति कराय छे, तेथी हिंसा थती नथी; पण तेथी अंतर्वृत्तिनो भंग थाय छे. अने हिंसाना अभावथी, बहारनांव्रतनुं पालन थाय छे. वली व्रतपणाना नाशनी जे वात कही, ते पण अयुक्तज छे, केम के विशुद्ध अहिंसा व्रत होते छते, बंधादिकनो अभावज छे. माटे बंधादिको अतिचार रूपेज छे. अहीं आदि शब्दथी, मंत्रतंत्रादिकना प्रयोगादिकने पण अतिचारमां गणवा.

हवे बीजा व्रतना अतिचारो कहे छे.

मिथ्योपदेशः सहसा, ऽभ्याख्यानं गुह्यभाषणं ॥
विश्वस्तमंत्रभेदश्च, कूटलेखश्च सूनृते ॥ ए१ ॥

अर्थः— खोटो उपदेश, सहसा कलंक मेलवुं ते, गुप्त वातने कही देवी ते, विश्वासघात, तथा जूठो लेख, ए पांचे सत्य व्रतना अतिचारो जाणवा.

टीकाः— परने पीडा थाय एवां वचनोथी जे पापोपदेश ते पेहेलो अतिचार जाणवो. विचार कर्याविनाज कोइना पर जे जूठा दोषोनो आरोप करवो, ते बीजो अतिचार जाणवो. गुप्त एवां राज्यकार्योने प्रगट करवां, अथवा कोइनी चाडी खाइ, प्रीति तोडाववी, ए त्रीजो अतिचार जाणवो. विश्वासीउंना मंत्रोनो जे भेद करवो, तेने चोथो अतीचार जाणवो. तथा जुठो लेख लखवो, तेने पांचमोऽतीचार जाणवो.

हवे त्रीजा व्रतना अतिचारो कहे छे.

स्तेनानुज्ञा तदानीता, दानं द्विड्राज्यलंघनं ॥
प्रतिरूपक्रियामाना, ऽन्यत्वं चास्तेयसंश्रिता ॥ ए२ ॥

अर्थः— चोरोने अनुज्ञा देवी, तेउए चोरी करी लावेल मालनुं ग्रहण करवुं, शत्रुराजानी सीमा उलंघवी, वस्तुउंमां भेल सेल करवी, तथा तोलां ताजवां जूठां राखवां, ए अस्तेयव्रतना पांच अतिचारो जाणवा.

टीकाः— चोरोने चोरी करवामां प्रेरणा करवी ते, अथवा चोरी करवानां साधनो रूप जे कातर आदिक हथीयारो, तेने आपवां, अथवा ते वेचवां ते, अथवा तेउंने कहेवुं के, तमो निरुद्यमी केम बेठा छो, तमारे खावानुं न होय, तो हुं आपीश, वली तमारो चोरीनो माल कोइ वेचातो नहीं ले, तो हुं लेइश. एवी रीतनी जे अनुज्ञा, ते पेहेलो अतिचार जाणवो. चोरीनो माल राखवो ते बीजो अतिचार जाणवो. वैरी राजानां राज्यो के, जेउंनी सीमा उलंघवानी मने होय, तेउंनी आज्ञाविना जे उलंघवी, ते त्रीजो अतिचार जाणवो. वस्तुउंमां भेलसेल करवी ए चोथो अतिचार जाणवो. तथा कुडां तोलां ताजवां राखवां, ए पांचमो अतिचार जाणवो.

हवे चोथा व्रतना अतिचारो कहे छे.

इत्वरात्तागमोनात्ता, गतिरन्यविवाहनं ॥
मदनात्याग्रहोनंग, क्रीडा च ब्रह्मणि स्मृता ॥ ए३ ॥

अर्थः— थोडा वखतमाटे राखेली स्त्रीनुं सेवन, वेश्यानुं सेवन, अन्यनी कन्याउंनो विवाह, कामनो अत्यंत आग्रह, तथा अनंगक्रीडा, ए पांचे ब्रह्मचर्य व्रतना अतिचारो जाणवा.

टीकाः— नाडां तरिके पैसा आपी थोडाकाल सुधि राखेली स्त्रीसाथे जे कामविलास नोगववा, ते पेहेलो अतिचार जाणवो, पोते नहीं परणेली, एवी वेश्या, छोडी दिधेल छे, नर्तार जेणीए, अथवा नर्तार विनानी एवी स्त्री साथे जे विलास करवो, ते बीजो अतिचार जाणवो. अन्य कन्यानो विवाह करवो अथवा कराववो, ए त्रीजो अतिचार जाणवो. ए त्रीजा अतिचारमां स्वकन्या परणाववानो बाध नथी. अहीं कोइ शंका करे के, अन्य कन्यानी पेठे पोतानी कन्याने परणाववामां पण सरखोज दोष छे; तेने माटे कहे छे के, जो स्वकन्यानो विवाह न करे, तो ते स्वछंदचारी थाय, अने तेथी शासननोउपघात थाय; पण जो विवाह कर्यो होय, तो एवो अनर्थ थाय नहीं. कामनेविषे अत्यंत आसक्ति एटले वारंवार स्त्रीविलास करवो, ते तथा बल क्षीण थवाथी वाजीकरण आदिकना प्रयोगो करवा, ते चोथो अतिचार जाणवो. हवे अनंगक्रीडा एटले पुरुषने, स्त्री पुरुष अथवा नपुंसकने सेववानी इछा, अथवा हस्तकर्मादिकनी इछा, अथवा वेदोदयथी स्त्रीने पण, स्त्री, नपुंसक अथवा पुरुषने सेववानी इछा, अथवा हस्तकर्मादिकनी इछा; अथवा नपुंसकने, नपुंसक स्त्री अने पुरुषने सेववानी इछा, अथवा हस्तकर्मादिकनी इछा, अथवा स्त्री साथे, केशाकर्षणादि अनेक प्रकारनी कामचेष्टा करवी ते, पांचमो अतिचार जाणवो. उपरना पांचे अतिचारो स्वदारसंतोषीने आश्रये जाणवा, तथा छेल्ला त्रण तो परस्त्री तजनारने आश्रये जाणवा. वली केटलाक आचार्योनो एम मत छे के, स्वदारसंतोषी, तथा परस्त्रीत्यागीने पण ते पांचे अतिचारो होय छे. केमके इत्वरा स्त्री पण बाकीनो काल बीजा साथे विलास करे, माटे ते परस्त्रीज छे; माटे परस्त्री तजनारने आश्रीने पण ते पांचे अतिचारो जाणवा.

हवे पांचमा व्रतना अतिचारो कहे छे.

धनधान्यस्य कुप्यस्य, गवादेः क्षेत्रवास्तुनः ॥
हिरण्यहेम्नश्च संख्या, ऽतिक्रमोत्र परिग्रहे ॥ ९४ ॥

अर्थः—धन धान्यनो, धातुओनो,बलद आदिकनो, क्षेत्रवास्तुनो, तथा सोना रूपानो, जे धारेली संख्याथी अतिक्रम, ते परिग्रह व्रतना अतिचारो जाणवा.

टीकाः— धन एटले, जेनी गणत्री, तोल अथवा माप थई शके ते; तथा धान्य एटले घउं आदिक सत्तर प्रकारनुं धान्य, कुप्य एटले सोनां रूपां विनानी, तांबु, सीसुं, कलई विगेरे धातुओ, गाय आदिक एटले बेल, भेंस, घेटा ऊंट, विगेरे चोपगां जानवरो, कुकडा, पोपट आदिक पक्षिओ, तथा दासदासी आदिक बे पगोवालां जाणवां. क्षेत्र त्रण प्रकारनां. एक तो जेमां कोस आदिकथी पाणी पावामां आवे छे ते, बीजुं जे वरसादना पाणीथी सिंचाय छे ते. अने त्रीजुं, जेमां उपर प्रमाणेनी बन्ने प्रकारनी क्रियाओ थाय छे ते. वास्तु एटले घर आदिक तेना पण त्रण भेदो, भोयरुं, मेहेल, तथा भोयरां उपरे मेहेल करवो ते. अने घडेलुं अथवा नहि घडेलु एवुं रुपुं अने सोनुं एटली वस्तुओनो, जे परिमाण उपर परिग्रहराखवो; ते परिग्रहना अतिचारो जाणवा.

अहीं कोइ शंका करे के, अंगीकार करेलां व्रतोनी संख्यानो जे व्यतिक्रम, ते तो तेनो भंगज कहेवाय, अतिचार शानो कहेवाय ? तेने माटे हवे कहे छे.

बंधनाद्भावतो गर्भा, द्योजनादानतस्तथा ॥
प्रतिपन्नव्रतस्यैष, पंचधापि न युज्यते ॥ ९५ ॥

अर्थः— अंगीकार करेलां व्रतनो बंधन, भाव, गर्भ, जोडाण, तथा आदान, ए पांच रीतें, पण अतिचार लगाडवो लायक नथी.

टीकाः— जो के साक्षात् व्रतभंग थतो नथी, पण बंधन आदिक पांच हेतुओथी, जो के पोतानी बुद्धिथी व्रतभंग नथी करतो, तो पण तेने अतिचार लागे छे. धन धान्यने बंधनथी अतिचार एम जाणवो, के, कोइ फायदाकायक वस्तु वेचाती देवा आवे, त्यारे तेने कहेवुं के, मारा व्रतनी मुदत खलास थये हुं ते तारी पासेथी लेइश एम कही जे भावथी तेनी

नियंत्रणा करी कबुलात करावी ते वस्तु पोतायकी लेने घेर रखाववी ए अतिचार जाणवो. त्रांबा पितल आदिकना जावने एकरूप करीने, संख्यामात्र पुरवाथी अतिचार लागे छे, अथवा हुं अमुक वखते तारी पासेथी ते वासणआदिक वेचातां लेइश, माटे तारे बीजा कोइने देवां नहीं; एम करवाथी पण अतिचार लागे छे. गाय, जेंस, घोडी आदिकना गर्जने आश्रीने अतिचार लागे छे. क्षेत्र अने घर आदिकमां वाड अने जीत आदिक तोडीने बे जागमांथी एकरूप करी जोडी देवाथी संख्यामात्र पूरी करवायें करीने पण अतिचार लागे छे; सोनुं रूपुं पण राजा आदिकें तुष्टमान थइने जे आपेलुं होय, ते पोताना पच्चखाणनी मुदतसुधि कोइ बीजाने घेर राखवुं, तेथी पण अतिचार लागे छे. एवी रीतना पांचे अतिचारो श्रावकें लगाडवा जोइयें नहीं.

हवे गुणव्रतोना अतिचारो कहे छे.

तेमां पेहेला दिग्विरतिव्रतना अतिचारो कहे छे.

स्मृत्यंतर्धानमूर्ध्वाध, स्तिर्यग्जागव्यतिक्रमः ॥
क्षेत्रवृद्धिश्च पंचेति, स्मृतादिग्विरतिव्रते ॥ ए६ ॥

अर्थः– याददास्तीनो जंग, ऊर्ध्वगमन, अधोगमन, तिर्यग्गमन, अने क्षेत्रनी वृद्धि, ए पांच दिग्विरति व्रतना अतिचारो जाणवा.

टीकाः– जेम कोइयें अमुक दिशामां जवाने सो गाउसुधिनुं राखीने बाकी उपरांत जवानुं पच्चखाण कर्युं होय; अने पछी व्याकुलपणाथी अथवा प्रमादथी तेने मालुम न रहे के, में सो गाउनुं के पचास गाउनुं पच्चखाण कर्युं छे; ए स्मृतिजंग नामें पेहेलो अतिचार जाणवो. उंचे, एटले पर्वतनां शिखरो, वृक्षोनी टोंचो, नीचे, एटले जोंयरां कुवा आदिक, तथा तिर्यक् एटले पूर्व आदिक दिशाउ; ए त्रणेप्रत्ये नियमित संख्यानुं उल्लंघन करी जे जवुं, ते त्रण अतिचारो जाणवा. आ सघला अनाजोगातिक्रमथी अतिचारो जाणवा, पण प्रवृत्तिमां तो तेउ व्रतजंगरूप छे. वली जेणें करुं नहीं, करावुं नहि, एवा जांगाथी पच्चखाण कर्युं होय, ते माणस नियमित सिमाने उलंघीने पोते जाय नहीं, अने बीजाने मोकले पण नहीं; पण जेणें एवा जांगाथी पच्चखाण नथी कर्युं तेने परने सीमा उल्लंघन करावबामां दोष नथी. तथा

क्षेत्रने पूर्वादिक दिशाउंमां जे वधारवुं, ते पांचमो अतिचार जाणवो. अर्थात् कोइये पूर्वादिक दिशाउंमां सो सो गाउ जवानुं परिमाण कर्युं; पण एक दिशामां वधारे दूर जवानुं कारण पडवाथी, बीजी दिशामां तेटला उंगा गाउ करवा, अने बीजीमां वधारवा ए पांचमो अतिचार जाणवो. अथवा अजाणतां वधारे दूर जवाथी पण अतिचार लागे छे. पण जाणी जोइने तो जवुंज नहीं.

हवे बीजा भोगोपभोगमान नामना गुणव्रतना अतिचारो कहे छे.

सचित्तस्तेन संबद्धः, सन्मिश्रोऽभिषवस्तथा ॥
दुःपक्काहार इत्येते, भोगोपभोगमानगाः ॥ ए७ ॥

अर्थः– सचित्त, सचित्तना संबंधवालुं, अचित्तथी मिश्रित थएलुं, अनेक द्रव्योथी मली गएलुं, तथा न पाकी शके एवा भोजनने अचित्त मानी जे खावुं, ते पांचे भोगोपभोगमानना अतिचारो जाणवा.

टीकाः– सचित्त एटले कंद, मूल, फल आदिक, अने पृथ्वी कायादिक, तेनो अनाभोगें करी जे आहार करवो, ते पेहेलो अतिचार जाणवो. हुं सचित्त एवुं बीज तजी देइश, एम विचारि खजुर आदिक जे मुखमां नाखवुं, ते सचित्त वर्जनारने बीजो अतिचार जाणवो. सचित्तथी मिश्रित थएला आहारने अचित्त जाणी जे खावुं ते त्रीजो अतिचार जाणवो. अनेक द्रव्यना एकठा मलवाथी उत्पन्न थएलुं जे मदिरा आदिक, तेने पिष्टादिकपणायें करीने जे अचेतन मानीने खावुं, ते चोथो अतिचार जाणवो. अतिकष्टथी पाके एवा जे जव आदिक, तेने पक्कपणायें करीने, अचेतन मानीने जे खावा, ते पांचमो अतिचार जाणवो. एवी रीतें रात्रिभोजन तथा मद्यादिकनी निवृत्तिमां पण, अजाणते अतिचारो जाणवा.

हवे भोगोपभोगनां लक्षणांतरथी तेमां रहेला अतिचारो कहे छे.

अमी भोजनतस्त्याज्याः, कर्मतः खरकर्म तु ॥
तस्मिन्पंचदश मलान्, कर्मादानानि संत्यजेत् ॥ ए८ ॥

अर्थः– उपर कहेला अतिचारो भोजनने आश्रीने तजवा; अने प्राणीयोने बाधा उपजे एवुं गुप्तिपालक जे कठोर कार्य, तेमां रहेलां पंदर जे मलीन कर्मादानो, एटले पापप्रकृतिनां जे कारणो, तेने तजवां.

हवे बे श्लोकोवे करीने ते पंदर कर्मादानोनां नामो कहे छे.

अंगारवनशकट, भाटकस्फोटजीविका ॥
दंतलाक्षारसकेश, विषवाणिज्यकानि च ॥ ९९ ॥
यंत्रपीडानिर्लांछन, मसतीपोषणं तथा ॥
दवदानं सरःशोष, इति पंचदश त्यजेत् ॥ १०० ॥

अर्थः— अंगारना धंधाथी, वनना धंधाथी, गाडांना धंधाथी भाडांना धंधाथी, फोडवाना (पृथ्वी आदिक) धंधाथी, दांतना वेपारथी, लाखना वेपारथी, रसना वेपारथी, वालना वेपारथी, झेरना वेपारथी, यंत्रपीलणथी, निर्लांछन कर्मथी, असतीनां पोषणथी, दावानल लगाववाथी, तथा तलावने सुकाववाथी, थता पंदर अतिचारोने तजवा.

हवे तेओमांथी अंगारक आजीविकानुं स्वरूप कहे छे.

अंगारभ्राष्ट्रकरणं, कुंभायःस्वर्णकारिता ॥
ठठारत्वेष्टकापाका, वितिह्यंगारजीविका ॥ १०१ ॥

अर्थः— कोलसा करवा, भुंजवानो धंधो, कुंभारनो धंधो, लुहारनो तथा सोनीनो अने कंसारनो धंधो, तथा ईंटो पकाववानो धंधो, ए अंगारजीविका जाणवी.

टीकाः— लाकडां बाली कोलसा करवामां छकाय जीवनी हिंसा थाय छे, एवी रीतें जेमां अग्निकायनी विराधना थाय छे, ते सघला अंगार कर्ममां आवी जाय छे, तो पण खुलासामाटे जुदा भेदो कर्या छे. चणा आदिक भुंजवुं ते भ्राष्ट्रकरण. माटीनां वासणो बनाववां वेचवां, पकाववां, विगेरे कुंभकारिता. लुहारनो धंधो ते लोहकारिता, सोनीनो धंधो, ते स्वर्णकारिता, तथा कंसारनो धंधो ते ठठारत्वकारिका, तथा ईंटो पकाववी, ते इष्टपाककारिका; ए सघलाथी जे आजीविका चलाववी, ते अंगारकाजीविका जाणवी.

हवे वनजीविकानुं स्वरूप कहे छे.

छिन्नाछिन्नवनपत्र, प्रसूनफलविक्रयः ॥
कणानां दलनात्पेषा, द्वृत्तिश्च वनजीविका ॥ १०२ ॥

अर्थः— छेदेलां, अथवा नहीं छेदेलां, एवा वनमां थतां पान, फुल, फल विगेरेनुं वेचवुं ते, तथा धान्यादिकना दाणाउने, घंटी आदिकथी दळवाथी, तथा पाणाआदिकथी वाटवाथी जे आजीविका करवी ते वनजीविका जाणवी.

हवे शकटजीविकानुं स्वरूप कहे छे.

शकटानां तदंगानां, घटनं खेटनं तथा ॥
विक्रयश्चेति शकट, जीविका परिकीर्त्तिता ॥ १०३ ॥

अर्थः— गाडां अथवा तेनां चक्र आदिक उपकरणोने घडवां, घडाववां, खेडवां, वेंचवां विगेरे समस्त प्राणीउनी हिंसारूप, तथा बेल आदिकने वधबंधननां हेतुरूप, शकटाजीविका कहेली छे.

हवे नाटक आजीविकानुं स्वरूप कहे छे.

शकटोक्षलुलायोष्ट्र, खराश्वतरवाजिनां ॥
जारस्य वाहनाद्वृत्ति, र्भवेन्नाटकजीविका ॥ १०४ ॥

अर्थः— गाडां, बेल, पाडा, उंट, गधेडां, खचर, घोडा विगेरेपर भार भरीने जे आजीविका चलाववी ते "नाटानुजीविका" जाणवी.

हवे स्फोटक जीविकानुं स्वरूप कहे छे.

सरः कूपादिखनन, शिलाकुट्टनकर्मभिः ॥
पृथिव्यारंभसंभूतै, र्जीवनं स्फोटजीविका ॥ १०५ ॥

अर्थः— तलाव, कुवा वाव आदिकना खोदवाथी, पत्थर आदिक फोडवाथी, जे पृथ्वीकाय आदिकना आरंभथी जे आजीविका चलाववी ते "स्फोटजीविका" कहेवाय.

दंतवाणिज्यनुं स्वरूप कहे छे.

दंतकेशनखास्थित्व, ग्रोम्णोग्रहणमाकरे ॥
त्रसांगस्यवणिज्यार्थं, दंतवाणिज्यमुच्यते ॥ १०६ ॥

अर्थः— हाथी दांत, अने उपलक्षणथी त्रसजीवोना बीजा पण अवयवो, चमरी आदिकना केसो, घूकादिकना नखो, शंखादिकनां हाडकां, चित्रा आदिकनां चामडां, हंसादिकनां रोम, विगेरेनुं तेउनां उत्पत्तिस्था-

थके जइ, वेपारमाटे जे वेंचातुं ग्रहण करवुं, ते दंतवाणिज्य कहेवाय; उत्पत्तिस्थानक कहेवानी मतलब एटलीज के, तेउना उत्पत्तिस्थानक विना बीजी जगोएथी लेवामां अथवा वेचवामां दोष नथी.

हवे लाखना वेपारनुं स्वरूप कहे छे.

लाक्षामनःशिलानीली, धातकीटंकणादिनः ॥
विक्रयः पापसदनं, लाक्षावाणिज्यमुच्यते ॥ १०७ ॥

अर्थः— लाख, मनशील, गली, धावडी, टंकणखार, विगेरेना वेपारमां जीवहिंसा होवाथी, ते पापना स्थानकरूप लाखआदिकनो वेपार कहेवायछे.

हवे रस अने केशना वेपारनुं स्वरूप एकज श्लोकथी कहे छे.

नवनीतवसाक्षौद्र, मद्यप्रभृतिविक्रयः ॥
द्विपाच्चतुष्पाद्विक्रेयो, वाणिज्यं रसकेशयोः ॥ १०८ ॥

अर्थः— माखण के, जेमां संमूर्छिमजंतुउ थाय छे, चरबी अने मध के, जे जंतुउना घातथी उत्पन्न थाय छे, तथा मदिरा के जे कामने उत्पन्न करे छे, ते आदिकनो वेपार रसवाणिज्य जाणवां; तथा माणस, अने पशुनो जे वेपार, के जेथी तेउने परवशपणुं, वध, बंधन, ज़ुख, तरस विगेरे पीडाउ उत्पन्न थाय छे; ते वेपार केशवाणिज्य जाणवो. जीववालां प्राणीनुं वेंचवुं ते केशवाणिज्य, अने जीवविनानां प्राणीउनुं तथा तेउनां अंगोनुं वेंचवुं ते दंतवाणिज्य जाणवुं.

हवे विषवाणिज्यनुं स्वरूप कहे छे.

विषास्त्रहलयंत्रायो, हरितालादिवस्तुनः ॥
विक्रयो जीवितघ्नस्य, विषवाणिज्यमुच्यते ॥ १०९ ॥

अर्थः— वछनाग आदिक झेरी वस्तुउ, तलवार आदिक हथीयारो, हल, अरहट आदिक यंत्र, तथा हरताल आदिक जीव लेनारी वस्तुउनो जे व्यापार ते विषवाणिज्य कहेवाय.

हवे यंत्रपीडाकर्मनुं स्वरूप कहे छे.

तिलेक्षुसर्षपैरंड, जलयंत्रादिपीडनं ॥
दलतैलस्य च कृति, यंत्रपीडा प्रकीर्तिता ॥ ११० ॥

अर्थः— तल, सर्षव, एरंडी विगेरे पीलवानी घाणी, सेलडीना चीचोडा, तथा अरघट्ट आदिक, तथा दलतैलनुं जे बनाववुं, ते यंत्रपीडा कहेवाय छे, अने तेमां घणा जीवोनी हिंसा अन्य दर्शनीउयें पण मानेली छे.

हवे निर्लांछनकर्मनुं स्वरूप कहे छे.

नासावेधोऽकनंमुष्क, छेदनंपृष्टगालनं ॥
कर्णकंबलविछेदो, निर्लांछनमुदीरितं ॥ १११ ॥

अर्थः— बेल, पाडा विगेरेनां नाक विंधवां, घोडा बेल विगेरेना अंडनो छेद करवो, अथवा आंकवा, उंटनी पीठ गालवी तथा गायोना कान कंबल विगेरेनो छेद, करवो, के जेथी तेउने प्रगट रीतें दुःख थाय छे, तेने निर्लांछन कर्म जाणवुं.

हवे असतीपोषणनुं स्वरूप कहे छे.

सारिका शुकमार्जार, श्वकुर्कुटकलापिनां ॥
पोषोदास्याश्च वित्तार्थ, मसतीपोषणं विडुः ११२ ॥

अर्थः— धनने माटे, सारिका (मेना) पोपट, बीलाडा, कुतरा, कुकडा, मयूर, दासी विगेरेने जे पालवां ते असतीपोषण कहेवाय; केम के तेउ पापनां हेतुउ छे.

हवे एक श्लोकें करीने दवदान तथा सरःशोषनुं स्वरूप कहे छे.

व्यसनात्पुण्यबुध्ध्या वा, दवादानं नवेद्द्विधा ॥
सरःशोषः सरःसिंधु, न्हदादेरंबुसंप्लवः ॥ ११३ ॥

अर्थः— व्यसनथी, एटले प्रयोजनविना अथवा पुण्यबुद्धिथी एटले, जेम हुं आ जीर्ण घांस बाली नाखीश तो गायोने चरवाने अहीं सारुं नवुं घास थशे, इत्यादि धर्मबुद्धिथी, एम बे प्रकारे दावानल देवानुं जाणवुं, पण तेथी क्रोडो जीवोनी हिंसा थाय छे. तलाव विगेरे जलाशयोनुं जे सुकाववुं, अर्थात् तेमनां पाणीने नेहेर आदिकथी खेंची लेवुं, ते सरःशोष कहेवाय, अने तेथी तेमां रहेला त्रसजीवोनो नाश थाय छे.

एवी रीतें पंदर कर्मादानोनुं स्वरूप कह्युं.

एवी रीतें टुंकामां वर्णन कर्युं छे, पण एवी रीतनां बीजां सावद्य कार्योनुं अहीं परिगणन कर्युं नथी. अहीं कोइ शंका करे के, अंगारकर्मा-

त्रिको खरकर्मोना अतिचार शा माटे, ते तो खरकर्मरूपेंज बे, तेने माटे कहे बे के, ते वात खरी बे के, तेउं खरकर्मरूप बे, पण अनाजोगें करता थका अतिचाररूप बे, पण जाणीने करवाथी तो व्रतजंगरूपज बे.

हवे अनर्थदंडना अतिचारो कहे बे.

संयुक्ताधिकरणत्व, मुपजोगातिरिक्तता ॥
मौखर्यमथकौत्कुंच्यं, कंदर्पोऽनर्थदंडगाः ॥ ११४ ॥

अर्थः— जोडेलां अधिकरणपणुं, उपजोगोनुं अतिशयपणुं, बकबकाट करवापणुं, तथा अंगनी कुचेष्टाउं, अने कामविकारनां वचनो विगेरे अनर्थदंडना अतिचारो जाणवा.

टीकाः— संयुक्त अधिकरण, एटले खांडणीसाथे सांबेलुं, हलनी साथे फाल, गाडासाथे धोसरुं, धनुष्साथे बाण एवी रीते, जोडेलां अधिकरणो श्रावकें राखवां नहीं, ए अनर्थदंडनो पेहेलो अतिचार बे तथा जोगोपजोगनां हद उपरांत साधनो राखवां, एटले स्नान, पान, जोजन, केशर, चंदन, कस्तुरी, आजरण विगेरे घणां राखवां, पण तेथी घणी जीव हिंसा थाय बे, माटे ते बीजो अतिचार जाणवो. तथा संबंधविना बहु असत्य बकबकाट करवो, ते त्रीजो अतिचार जाणवो. तथा नाक, हाथ, पग, मुखविगेरे मरडीने जे कुचेष्टा करवी, ते चोथो अतिचार जाणवो. तथा काम उपजे एवो वाणीनो प्रयोग करवो, ते पांचमो अतिचार जाणवो. बेल्ला बन्ने प्रमादाचरितना अतिचारो बे. एवी रीतें गुणव्रतना अतिचारो जाणवा; हवे शिक्षाव्रतना अतिचारो कहे बे.

तेउंमांथी पेहेला सामायिक व्रतना अतिचारो कहे बे.

कायवाङ्मनसां दुष्ट, प्रणिधानमनादरः ॥
स्मृत्यनुपस्थापनं च, स्मृताः सामायिकव्रते ॥ ११५ ॥

अर्थः— कायाथी, वचनथी, तथा मनथी डुष्ट प्रणिधान करवुं ते, अनादर, तथा स्मरणपणानो नाश, ए पांचे सामायिकव्रतना अतिचारो कहेला बे.

टीकाः— शरीरना हाथपगादिक अवयवोनुं जे डुष्टरीतें प्रणिधान करवुं, ते कायडुःप्रणिधान, तथा वर्णसंस्कारनो अजाव, अर्थनुं अनवगम, अने चपलता, ए वाग्डुःप्रणिधान, तथा क्रोध, लोज, द्रोह, अजिमान

विगेरेनो जे संभ्रम, ते मनोदुःप्रणिधान, ए त्रण अतिचारो; तथा अनादर एटले, उत्साहविना नियमित वेलाएज सामायिक न करवुं ते चोथो अतिचार जाणवो. तथा में सामायिक कर्युं के, नहीं, एवी जे यादवास्ती न रहेवी; ए पांचमो अतिचार जाणवो.

अहीं कोइ शंका करे के, ते कायदुःप्रणिधान आदिक होते छते सामायिकनुं निरर्थकपणुं, इत्यादि अंगीकार करवाए करीने, वस्तुनो अभावज कह्यो; अने अतिचार तो मालिन्यरूपें छे, तो ते सामायिकनो अभाव होते छते शी रीतें थइ शके ? माटे ते भंगज छे; पण अतिचार नथी; हवे ते शंका माटे कहे छे के, अनाभोगथी तेमां अतिचारपणुं छे.

हवे देशावकाशिक व्रतना अतिचारो कहे छे.

प्रेष्यप्रयोगानयने, पुद्गलक्षेपणं तथा ॥
शब्दरूपानुपातौ च, व्रते देशावकाशिके ॥ ११६ ॥

अर्थः– पोते पचखाण करेला, प्रदेशमां कोइने कंइ काममाटे मोकलवो, त्यांथी कंइ मगाववुं, कंइक वस्तु फेंकी, त्यांथी कोइने आववामाटे संज्ञा करवी; कंइ शब्द बोली कोइने त्यांथी बोलाववो; तथा पोतानी अंगचेष्टाथी कोइने त्यांथी बोलाववो; ए पांचे देशावकाशिक व्रतना अतिचारो जाणवा.

हवे पौषधव्रतना अतिचारो कहे छे.

उत्सर्गादानसंस्तारा, ननवेक्ष्याप्रमृज्य च ॥
अनादरः स्मृत्यनुप, स्थापनं चेति पौषधे ॥ ११७ ॥

अर्थः– मल, श्लेष्मादिकने जगो जोया तथा पोंज्याविना नाखवां, ते पेहेलो अतिचार; पाटला, सापडा आदिकने पण एवीज रीतें जोया पोंज्याविना लेवा अथवा मेलवा, ए बीजो अतिचार; तथा कामल संथारा आदिकने पण जोयापोंज्याविना मेलवा लेवा, ए त्रीजो अतिचार; पौषध व्रतनो अनादर करवो, ए चोथो अतिचार; तथा ते संबंधि यादवास्तीनी जे चूक, ते पांचमो अतिचार; एम पौषधव्रतना पांच अतिचारो जाणवा.

हवे अतिथिसंविनागव्रतना अतिचारो कहे बे.

सच्चित्ते क्षेपणं तेन, पिधानं काललंघनं ॥
मत्सरोन्यापदेशश्च, तुर्यशिक्षाव्रते स्मृताः ॥ ११८ ॥

अर्थः— साधु वोरवा आवते बते, तैयार रहेलीवस्तुउने न देवानी बुद्धिथी, सचित्त एवा अग्नि आदिकपर मुके, ए पहेलो अतिचार; तथा एवीज सचित्त वस्तुउ; जेवी के, फलफुल विगेरेथी ते देवानी वस्तुने ढांके, ए बीजो अतिचार; तथा साधुने वोरवाना वखतनुं उल्लंघन करीने, नोजन आदिक तैयार करे, ए त्रीजो अतिचार; तथा मत्सर करे, एटले अदेखाइ लावे ए चोथो अतिचार; तथा आ वस्तु बीजानी मालीकीनी बे, एम कहीने न आपे, ए पांचमो अतिचार; ए पांचे अतिथिसंविनागव्रतना अतिचारो जाणवा. तेमां पण अनानोगें अतिचारो जाणवा; अने जाणतां बतां करे, तो तेने व्रतना नंगरूपें जाणवा.

हवे श्रावकनुं महाश्रावकपणुं कहे बे.

एवं व्रतस्थितो नक्त्या, सप्तक्षेत्र्यां धनं वपन् ॥
दयया चातिदीनेषु, महाश्रावकउच्यते ॥ ११९ ॥

अर्थः— एवी रीतें व्रतमां रहीने, नक्तिपूर्वक सात क्षेत्रोमां न्यायोपार्जित धनने वावतो थको, तथा अतिदीनने पण ते धनादिक आपतो थको महाश्रावक कहेवाय बे.

टीकाः— सात क्षेत्रोमां पेहेलुं जिनबिंब, ते हीरामाणेक आदिथी मांडी पाषाण अथवा माटी प्रमुखनां पण बनाववां तेनी शास्त्रोक्त विधिथी प्रतिष्ठा करवी. अष्टप्रकारी पूजा करवी. तेनी यात्रा करवी, तथा तेने आनरण वस्त्र विगेरे पेहेराववां. अहीं कोइ शंका करे के, जिनबिंबो कंइ तुष्टमान थतां नथी, तेथी तेनी पूजा करवामां शुं फल बे? तेने माटे कहे बे के, नही तुष्टमान थतां एवां चिंतामणि आदिकथी जेम, तेम जिनबिंबथी पण फल मले बे एवी रीतें पोते करावेली तथा अन्यें करावेली, तथा शाश्वती प्रतिमादिकनुं जे पूजन आदिक करवुं ते. बीजुं जिननवन नामें क्षेत्रमां धन वाववुं ते, एटले शल्यरहित नूमिमां, बकाय जीवनां रक्षण आदिकथी जिननवन कराववुं. अने वैनव होय तो नरत

आदिकनी पेठे हीरा माणेक विगेरे जवाहीरोनी शिलाउंथी महाशो-भावाळुं जिनभवन कराववुं. वळी ते संप्रति राजानी पेठे ठेकाणे ठेकाणे कराववां अने धन न होय तो, एक घांसनी झुंपडीनुं पण जिनभवन ब-नाववुं. वळी राजादिकें तो, गाम गरास गोकुल विगेरे जिनभवनने अ-र्पण करवां; तथा तेमनो जीर्णोद्धार कराववो. अहिं कोइ शंका करे के जिनभुवन कराववामां तो छकाय जीवनी हिंसा थाय छे, माटे ते कराव वुं उचित केम कहेवाय ? तेने माटे कहे छे के, जे गृहस्थ कुटुंब आदि-क माटे आरंभपरिग्रहमां प्रसक्त छे, तेनुं धनोपार्जनपणुं निष्फल मा था-उ ? एटला माटे जिनभुवनादिकमां धन खरचवुं कल्याणकारी छे; पण धर्मने माटेज धन पेदा करवुं, ए कल्याणकारी नथी. वळी ते वाव, कुवा, आदिक कराववानी पेठे अधर्मनुं कार्य नथी; केम के, तेमां तो धर्मनां कार्यो थाय छे. वळी जे कुटुंब माटे आरंभ नथी करतो, एवो प्रतिमा-धारी श्रावक कदाच जिनबिंबादिक न करावे तो पण चाले. हवे त्रीजुं जिनागम क्षेत्रमां धन वावरवुं, एटले, जे आगमो सारासारतत्वो जणा-वे छे; तथा जे भवनो नाश करनारां छे, एवां आगमोने एटले शास्त्रोने लखाववां, तथा वस्त्र आदिकथी पूजवां. चोथुं जिनागम भणनाराउंने व-स्त्रादिकथी भक्तिपूर्वक सन्मान आपवुं. तथा तेउंनो अभ्यास करनारा सा-धु आदिकने ते आपवां, तथा तेनी हमेशां पूजा करवी, अने तेने श्रद्धा-पूर्वक सांभळवां. पांचमुं जिनवचनोने अनुसारें शुद्धचारित्र पाळता, तथा पोतानो जन्म सफल करता, पोते, तरता अने बीजाने तारता, एवा ती-र्थंकरथी मांडी सामायिक व्रतधारीप्रत्ये जे धनादिकनुं वाववुं ते अर्थात् तेम अशनादिक आहार, रोग वखते औषध, शियाळादिकमां वस्त्र, पात्र, दंडा, रजोहरण इत्यादि आपवां. छठुं रत्नत्रयने धरनारी साध्वीउंने पण यथोचित्त आहार आदिक आपवामां पोताना धनने वापरवुं. अहीं कोइ शंका करे के, स्त्रीउंने तो निःसत्वपणाये करीने, तथा दुःशीलपणायें क-रीने मोक्षनो अधिकार न होवो जोइयें, माटे तेउंने दान आपवुं ते सा-धुदानतुल्य केम लेखाय? तेने माटे कहे छे के, ब्राह्मी, सुंदरी, राजीमती, सीता विगेरे स्त्रीउं गृहस्थपणामां पण महासत्ववाळीउ प्रसिद्ध थएलीयो छे; तथा सत्यभामा आदिकें, राज्यलक्ष्मी, पति, पुत्र, भाइ, विगेरेने तजीने

पण दीक्षा लीधी छे; माटे तेउने पण मोक्षनो अधिकार छे. सातमुं साधर्मिक एवा श्रावकोने माटे पण पोतानुं धन वापरवुं. तेउने पोताना पुत्र आदिकना विवाहमहोत्सवमां निमंत्रण देइ जमाडवा, तेमने वस्त्राजरणो आपवां, दुःखमांथी पोतानुं धन खरचीने पण उगारवा; तेमने धर्मक्रिया करवामाटे पौषधशालाउ करावी आपवी विगेरे अनेक प्रकारनी तेमनी शुश्रूषा करवी; अने तेवीज रीतें श्राविकाउने माटे पण पोतानुं धन वापरवुं; ते श्राविकाउ केवी तो के, महाशीयलवाली, रत्नत्रययुक्त, तथा जैन धर्ममां अनुरक्त चित्तवाली, होय छे. अहीं कोइ शंका करे के, स्त्रीउने तो शास्त्रमां महादुःशील आदिक अनेक दुर्गुणोवाली, तथा आ लोक अने परलोक बन्नेमां दुःखदेनारी कहेली छे; तो तेने माटे कहे छे के, सघली स्त्रीउ कंइ तेवीज होती नथी; जिनेश्वर प्रजुनी माताउ आदिक अनेक, चरमशरीरी, अथवा बे त्रण जव करनारी एवी, महा गुणवती स्त्रीउ इंद्रादिकथी पण पूजाय छे, तथा मुनिउथी पण तेउनी स्तुतिउ कराय छे; माटे एवी सुशील स्त्रीउनुं तो वात्सल्य करवुं, तेज लायक छे. हवे एवी रीतें केवल सातक्षेत्रमांज धन वापरवुं तेम नहीं, पण गरिब, आंधला, पांगला, बेहेरा, विगेरेने केवल दयायें करीने आपवुं, पण जक्तिथी नहीं केम के प्रजु पण दीक्षा लेती वखते पात्रापात्रनी अपेक्षाराख्याविनाज संवत्सरीदान दयायें करीने दीये छे. माटे एवी रीतें साते क्षेत्रमां तथा दीन लोकोने दान देनारो माणस महाश्रावक कहेवाय छे. सामान्य श्रावकने पण श्रावक कहेवाय, पण आवी रीतें जे सातक्षेत्रमां अने दीन माणसो प्रत्ये जे धन वापरे ते महाश्रावक कहेवाय.

हवे व्यतिरेकद्वारें करीने सातक्षेत्रमां धनवपननुं स्वरूप कहे छे.

यः सद्बाह्यमनित्यं च क्षेत्रेषु न धनं वपेत् ॥
कथं वराकश्चारित्रं दुश्चरं ससमाचरेत् ॥ १२० ॥

अर्थः— छतुं, अने शरीरथी बाह्य रहेलुं, तथा अनित्य, एटले जेने राजा, अग्नि, पाणी विगेरेनो जय छे, एवा धनने पण जे सातक्षेत्रोमां वावतो नथी, ते माणस अत्यंत आकरुं एवुं चारित्र ते शी रीतें पाली शकशे?

हवे महाश्रावकनी दिनचर्या कहे छे.

ब्राह्मे मुहूर्ते उत्तिष्ठेत्, परमेष्ठिस्तुतिं पठन् ॥
किंधर्मा किंकुलश्चास्मि, किंव्रतोस्मीति च स्मरन् ॥१२१॥

अर्थः– मंगलिकमाटे पंच परमेष्ठिनी स्तुति जणतां थकां, रात्रिनुं चौदमुं ब्राह्म नामनुं जे मुहूर्त्त, तेनेविषे उठवुं, तथा मारो शुं धर्म छे? हुं क्या कुलनो छुं? तथा मारे शुं व्रत छे? उपलक्षणथी द्रव्यथी कोण मारा गुरु छे? क्षेत्रथी हुं क्या नगरमां वसुं छुं? कालथी आ कयो वखत छे? विगेरेनुं स्मरण करवुं. तेवार पछी

शुचिः पुष्पामिषस्तोत्रै, र्देवमभ्यर्च्य वेश्मनि ॥
प्रत्याख्यानं यथाशक्ति, कृत्वा देवगृहं व्रजेत् ॥ १२२ ॥

अर्थः– पवित्र थइ, घरमां, रहेला देवनी, पुष्प,नैवेद्य, तथा स्तुतिथी पूजा करीने यथाशक्ति पच्चखाण करीने, देवालयप्रत्ये जवुं.

टीकाः– पवित्र थवुं, एटले खरचु जइ आवी, दातण पाणी करी, मुख धोइ, कोगला करी स्नान करवुं. (आ सघलुं उपदेशरूप नहीं जाणवुं; पण ते तो लोकसिद्ध कार्य छे; केमके शास्त्रकारो कंइ एवां सावद्य कार्योनो उपदेश देता नथी;) पुष्प एटले सघलां सुगंधि द्रव्यो, धूप, वस्त्र, आभरण आदिक उपलक्षणथी जाणी लेवां; नैवेद्य एटले रांधेलां अनाज, फल, अक्षत, दीप, जल, विगेरे उपलक्षणथी जाणवां; स्तुति एटले "नमुत्थुणं" इत्यादि जिनगुणनां स्तवनो जाणवां पच्चखाण एटले नोकारसी, पोरसी, गंठसी विगेरे जाणवां. ते वार पछी देवालयें जवुं; ते माटे स्नान, विलेपन, वस्त्र, आभूषण, वाहन आदिक वापरवां विगेरे स्वयमेव सिद्ध छे, माटे तेनो अहीं उपदेश कर्यो नथी; तेमां पण राजा होय, तो पोते हाथी, घोडा, लश्कर विगेरे सहित धामधूमथी देरासरें जाय; अने सामान्य माणस उद्धताइनो त्याग करीने, अर्थात् जेथी लोकोत्तरफनी हांसीनी प्राप्ति न थाय एवी रीतें देवालयें जाय. ते वार पछी

प्रविश्य विधिना तत्र, त्रिः प्रदक्षिणयेज्जिनं ॥
पुष्पादिभिस्तमभ्यर्च्य, स्तवनैरुत्तमैःस्तुयात् ॥ १२३ ॥

अर्थः– त्यां विधिपूर्वक प्रवेश करीने, जिनेश्वर प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा

देवी; तथा प्रभुने पुष्पादिकथी पूजीने उत्तम एवां स्तवनोथी स्तुति करवी.

टीकाः— त्यां प्रवेश करवानो विधि निचे मुजब जाणवो. पुष्प तांबूल आदिक सचित्त द्रव्य, चाकु छरी आदिक हथीयार, पादुका विगेरे तजीने, उत्तरासंग करीने, जिनबिंबनां दर्शन होते छते, मस्तके अंजली करीने, मनने, तत्पर करीने, तथा एवी रीतें पंचविध अभिगमनपूर्वक त्रण निसही कहीने प्रवेश करवो. राजा आदिकें पोतानां राज्यचिह्नो तजी देवां. वळी हमेशां अथवा पर्वने दहाडे स्नात्रपूर्वक पूजा करवी. स्नात्र वखते पेहेलां सुगंधि चंदनथी जिनबिंबने तिलक करवुं. पछी धूप करवो. पछी सर्व ओषधिमय एवा पाणीथी कलश करवो. पछी कुसुमांजली नाखवापूर्वक कपूर, कुंकुम, चंदन, अगर विगेरेथी मिश्रितकरेलां, जल, घी, दूध विगेरेथी स्नात्र करवुं. पछी सुगंधि चंदनथी विलेपन करवुं. पछी चंपक, कमल विगेरेनी उत्तम पुष्पमालाथी पूजन करवुं. पछी रत्न, सोनुं मोती विगेरेनां आभूषणो प्रभुने पेहेराववां. पछी वस्त्रादिक पहेराववां. पछी सर्षव, अक्षत आदिकथी अगाडी अष्टमंगल आलेखवां. पछी अगाडी, नैवेद्य, मंगलदीवो, घी विगेरे मुकवां. प्रभुने ललाटमां गोरोचनथी तिलक करवुं. पछी आरति उतारवी एवी रीतें प्रभुने पूजीने, इर्यापथिकी प्रतिक्रमणपूर्वक शक्रस्तवादिक दंडकथी चैत्यवंदन करीने, महाकविये रचेलां स्तोत्रथी स्तुति करवी. पछी कायोत्सर्गनां प्रायश्चित्तरूप तस्सउत्तरीनो पाठ जणवो.

हवे ते इर्यापथिकीनां सूत्र तथा अर्थ कहे छे.

" इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए " इर्यापथिकी एटले गमनप्रधान जे मार्ग, तेमां थती जंतुउनी बाधा तेने प्रतिक्रमण करवाने हुं इच्छुं छुं. अथवा इर्यापथ एटले साधु आचार, तेमां थएली जे विराधना ते प्रतिक्रमण करवाने हुं इच्छुं छुं. साधुआचारनुं जे अतिक्रमण प्राणातिपात, तेनुं अत्रे मुख्यपणे ग्रहण छे; बाकीनां पापस्थानकोनो तो अंदरज समावेश थइ जाय छे; हवे ते शुं होते छते विराधना थाय? ते कहे छे, " गमणागमणे " केतां जतां आवतां; " पाणक्कमणे " केतां हिंडियादिक जे प्राणीउ, तेनां आक्रमणथी; तथा " बीयक्कमणे " केतां बीजनां आक्रमणथी; " हरियक्कमणे " केतां सघळी जातनी वनस्पतिनां

आक्रमणथी; " उसाउत्तिंग पणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे " ओस केतां पाणी, अने उत्तिंग केतां गर्दभाकृतिवाला जीवो, के जेउ जमीनमां काणां पाडे छे, अथवा कीडीउनां स्थानको; पणग केतां पांचवर्णनी लील, दक एटले अप्काय, मट्टी एटले पृथ्वीकाय, मक्कडासंताण केतां करोलीआनां जालां तेउनां आक्रमणथी; विगेरे " जे मे जीवा विराहिया " केतां जे कोइ जीवोने में सर्वथा विराध्या होय, के जे " एगिंदिया " केतां एकेंद्रिय होय, अर्थात् जेउने फक्त स्पर्शेंद्रिय होय, " बेइंदिया " केतां जेने स्पर्श अने रसेंद्रिय होय; " तेइंदिया " केतां जेउने स्पर्श, रस, तथा घ्राणेंद्रिय होय; चउरिंदिया केतां जेउने स्पर्श, रस, घ्राण अने चक्षु ए चार इंद्रियो होय; तथा " पंचेंदिया " केतां जेने स्पर्श, रस, घ्राण, चक्षु अने श्रोत्रेंद्रिय होय, एवा जीवोने सामा आवतां चरणे करीने हण्या होय, अथवा उपाडीने फेंक्या होय; " वत्तिया " केतां एकठा कर्या होय, अथवा धुड के कादवथी ढांकी दीधा होय, " लेसिया " केतां एकबीजाने श्लिष्ट कर्या होय, " संघाइ या " केतां गात्रो एकठां मेलवी दीधां होय, " संघट्टिया " केतां स्पर्श करेला होय, " परियाविया " केतां चारे बाजुथी पीडित्त कर्या होय, " किलामिया " केतां मृत्युपामे एवीरीतें ग्लानिने पमाड्या होय; " उद्दविया " केतां त्रास पमाड्यो होय, " ठाणा उठाणं संकामिया " केतां तेमने पोताने स्थानकेथी परस्थानकें लेइ जवाणा होय, " जीवीयाउ ववरोविया " केतां जीवथी मार्या होय, ते सघलुं मारुं दुःकृत मिथ्या थाउ? एवी रीतें आलोचना प्रतिक्रमणरूप द्विविध प्रायश्चित्तने अंगीकार करीने, कायोत्सर्ग प्रायश्चित्तरूप नीचे प्रमाणे पाठ जाणवो. " तस्स उत्तरीकरणेणं " केतां ते उपरना पाठ पछी तेनुं उत्तर करण, तेणें करीने, " पायछित्त करणेणं " केतां बहुलताए करी चित्तने शोधवावडे करीने, अथवा पापने छेदवावडे करीने, "विसोहि करणेणं " केतां अपराधोए करीने मलीन एवो जे आत्मा तेने निर्मल करवाए करीने, " विसल्ली करणेणं " केतां आत्माने कपट आदिक शल्यथी रहित करवावडे करीने, " पावाणं कम्माणं निग्घायणठाए " केतां संसारना निबंधनरूप जे ज्ञानावरणादिक कर्मो, तेउना उछेद केतां नाश माटे, " ठामि काउस्सग्गं " के-

तां आ कायाने तेना व्यापारमांथी त्याग करुं छुं. ते केवी रीतें करुं छुं? ते कहे छे. "अनत्थऊससिएणं" केतां अन्यत्र जे ऊर्ध्व श्वास, ते शिवायना व्यापारथी; "निससिएणं केतां नीचाश्वासशिवाय," खासिएणं" केतां उधरसशिवाय, "छिएणं" केतां छिंकशिवाय "जंजाइएणं" केतां बगासा शिवाय, "उड्डुएणं" केतां ओडकार शिवाय, "वायनिसग्गेणं" केतां अपानद्वारथी पवन निकलवा शिवाय, "जमलीए" केतां अकस्मात् थता शरीरना भ्रम शिवाय "पित्तमुछाए" केतां पित्तना उछाला शिवाय, सघला व्यापारथी निर्मुक्त करुं छुं. वली "सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं" केतां सूक्ष्मरीतें अंगना चालवाए करीने, तथा "सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं" केतां सूक्ष्मरीतें श्लेष्मना संचारथी, (पोताने वीर्ययुक्त द्रव्यपणाए करीने अंदरना भागमां सूक्ष्म श्लेष्मसंचार थाय छे, तेथी अन्यत्र पद कहेलुं छे.) "सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं" केतां सूक्ष्म एवा दृष्टिना संचारथी, केम के दृष्टिना निमेषो एकज जगोए स्थिर करी शकाता नथी. "एवमाइएहिं" आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो" एवी रीतें उपर कहेला अपवादोए करीने मारो कायोत्सर्ग अविराधित थाओ? आदिशब्दथी अग्नि, विजली आदिकनी उजइ लागते छते पण, जो हुं ओढवाआदिकमाटे उपधि विगेरे लेउं, तो पण मारो कायोत्सर्गभंग मा थाओ? अहीं कोइ शंका करे के, नमस्कारज कहीने, शामाटे तेनुं ग्रहण नथी करता? के जेथी तेनो भंगज न थाय; तेने माटे कहे छे के, कंइ नमस्कारथीज पराता नथी, पण कायोत्सर्गनुं मान कराय छे. जेटला जेटला परिमाणनो कायोत्सर्ग कहेलो छे, तेटला तेटला परिमाणनो कायोत्सर्ग कर्या पेहेलांज, नमस्कार नहीं भणीने जो पारे, तो भंग थाय, अने समाप्त थया पेहेलां पण जो कायोत्सर्ग पारे, तो पण भंग थाय. माटे जेटला परिमाणवालो कायोत्सर्ग होय, तेटलुं परिमाण पुरुं थाय, त्यारेज "नमोअरिहंताणं" एम कही कायोत्सर्ग पारवो. तेम उंदर के बीलाडी अगाडी आवते, अगाडीना भागमां खसवाथी पण भंग नथी थतो, तेम चोर अथवा राजानी बीकथी अस्थानें पण नमस्कार बोलतां भंग नथी थतो. तेम सर्पदंश वखते सहसा

उच्चारण करवाथी जंग थतो नथी. हवे ते कायोत्सर्ग क्यां सुधी ? ते कहे ठे. "जावअरिहंताणं जगवंताणं नमोकारेणं न पारेमि" केतां ज्यां सुधि हुं श्री अरिहंत जगवंतने नमस्कार न करुं त्यां सुधि. "तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणेणं अप्पाणं वोसिरामि" केतां देहने ऊर्ध्वस्थान शिवाय, बीजा प्रसरना निषेधें करीने मौनवडे करीने, शुजएवा ध्यानवडे करीने, आत्मीय कायने कुव्यापार दूर करवावडे, करीने तजुं हुं केटलाको "अप्पाणं" एवो पाठ नथी पण बोलता. एवी रीतें पचीश उच्चास प्रमाण काल सुधि, उजा रहीने, बन्ने हाथो लांबा करीने, वाचा बंध करीने, हुं उत्तम ध्यानमां रहुं बुं. अर्थात् स्थान, मौन, ध्यान, अने क्रियाना व्यतिरेकें करीने क्रियांतर ध्यानद्वारें तजुं बुं. पचीश उच्चासो लोगस्सना चंदेसु निम्मलयरा सुधिना पाठमां लागे ठे. एवी रीतें कायोत्सर्ग करीने ॥ नमो अरिहंताणं ॥ एवो पाठ कहीने, नमस्कारपूर्वक पारीने लोगस्स संपूर्ण कहेवो. एवी रीतें जो गुरु नजदीकमां होय, तो तेमनी समक्ष, अने गुरु न होय तो मनमां गुरुनी स्थापना करीने, इर्यापथ प्रतिक्रम करीने उत्कृष्ट चैत्यवंदन कराय ठे, अने जघन्य तथा मध्यम चैत्यवंदन तो इर्यापथिकी प्रतिक्रमणविना पण कराय ठे. "नमो अरिहंताणं" अथवा कोइ कवियें करेला एकादश्लोकथी पण जघन्य चैत्यवंदन थाय ठे, केटलाको प्रणाममात्रने पण जघन्य चैत्यवंदन कहे ठे ते प्रणाम पण पांच प्रकारनो ठे, शिर नमाववाथी, एकांगप्रणाम, बे हाथथी द्व्यंगप्रणाम, बे हाथ अने मस्तकथी त्र्यंगप्रणाम, बे हाथ अने बे घुंटणथी चतुरंगप्रणाम, तथा बे हाथ, बे घुंटण तथा मस्तकथी पंचांगप्रणाम कराय ठे. उत्कृष्ट चैत्यवंदना जमीन पोंजी, प्रजुनी सन्मुख चक्षु तथा मन राखी, वैराग्यथी रोमांचित थइ, हर्षाश्रुथी लोचनो पूरीने, अत्यंत जावथी योग मुद्रायें करीने चैत्यवंदन करे. पठी नमुत्थुणंनो पाठ कहे. "नमुत्थुणं" केतां नमस्कार थाउ? ते हवे कहे ठे. "अरिहंताणं" कर्मरूपी शत्रुउने हणनारा विगेरे घणा अर्थवाला, एवा प्रजुप्रत्ये, वली ते प्रजु केवा तो के, "जगवंताणं" केतां "अर्क, योनि" ए बन्ने अर्थो ठोडी बार अर्थवाला जगवाला, ते बार अर्थो नीचे प्रमाणे जाणवा जग एटले ज्ञान, प्रजुने गर्जथी मांडी दीक्षापर्यंत त्रण ज्ञानो होय ठे, मति, श्रुत, अने अवधि.

पछी मनःपर्यव, तथा घातिकर्मनो क्षय थवाबाद केवलज्ञान थाय छे. बी-जो अर्थ जगएटले माहात्म्य, एटले प्रभुना कल्याणक समये नारकियोने पण सुख थाय छे, तथा घोर अंधकारमय एवा ते नारकियोमां ते वखतें प्रकाश पण थाय छे. वली ते गर्भमां आवते छते कुलमां धनादिकनी वृद्धि थाय छे; नहीं नमता राजाउ आवीने तेमना माहात्म्यथी नमे छे, वली ते वखते मरकी. अतिवृष्टि, अनावृष्टि विगेरे उपद्रवो नाश पामे छे; इंद्रनुं आसन कंपित थवाथी, ते (इंद्र) तेमनी सेवामां हाजर थाय छे. इत्यादि तेमनुं माहात्म्य छे. त्रीजो अर्थ जग एटले यश. प्रभुयें राग द्वेषने तज्या छे, परिषह तथा उपसर्गो सहन कर्या छे, पराक्रम फोरव्युं छे, तेथी देवलोकमां देवांगनाउथी, तथा पातालमां नागकन्याउथी तथा सुरासुरोथी पण तेमनो यश गवाय छे. चोथो अर्थ जग एले वैराग्य; प्रभु दीक्षा लीधा बाद क्षीणकर्मोवाला थइने सुखदुःखमां उदासीनपणुं लावी वैराग्यमयज थाय छे. पांचमो अर्थ जग एटले मुक्ति; सकल क्लेशना नाशरूप एवी ते मुक्ति तो प्रभुने नजदीकज छे. छठो अर्थ जग एटले रूप, ते तो प्रभुने सर्वथी उत्कृष्ट छे. सातमो अर्थ जग एटले वीर्य, प्रभु मेरुने दंडरूप करी समस्त पृथ्वीने छत्ररूप करवाने समर्थ छे; केम के तत्काल उत्पन्न थएला एवा वीरप्रभुयें इंद्रनी शंका दूर करवामाटे डाबा पगना अंगुठाथी मेरुने कंपाव्यो हतो. आठमो अर्थ जग एटले प्रयत्न; प्रभुने ते समुद्घातशैलेश्यावस्थाव्यंग्य छे. नवमो जगनो अर्थ इछा छे; अने ते प्रभुने जन्मांतरमां तेम तीर्थंकररूप जन्ममां पण दुःखरूपी कादवमां मग्न थएलां आ जगत्‌ने उद्धार करवानी ते इछा तो रहेलीज छे. दशमो अर्थ जग एटले लक्ष्मी छे. ते प्रभुने घातिकर्मोनो क्षय थयाबाद केवलज्ञानमय अतिशय सुखसंपदा मले छे. अग्यारमो अर्थ जग एटले धर्म; अने ते तो प्रभुने महायोगात्मक निर्जरा फल वालो अतिश्रेय छे. बारमो अर्थ जग एटले ऐश्वर्य, अने ते तो प्रभुने समवसरण तथा प्रतिहाररूप छे. एवी रीतना जगशब्दना अर्थवाला एटले जगवंत प्रत्ये नमस्कार थाउ? "आइगराणं" केतां आदिना करनारा, एटले सकल नीतिनां निबंधनरूप श्रुतधर्मनी आदि करनारा. जो के द्वादशांगो तो नित्य छे, तो पण ते अर्थनी अपेक्षायें नित्य छे, पण शब्दनी अपेक्षायें तो

पोतपोताना तीर्थमां श्रुतधर्मादिकनुं करवुं अविरुद्ध छे. "तित्थयराणं" केतां जेनाथी संसाररूपी समुद्र तराय ते तीर्थ कहेवाय. अने ते प्रवचनना आधारभूत एवो चतुर्विध संघ अथवा पेहेला गणधर कहेवाय. तेउने करनारा. हवे "सयंसंबुद्धाणं" केतां परना उपदेशनी अपेक्षा राख्याविनाज पोतानी मेलेज बोध पामेला. वली "पुरिसुत्तमाणं" केतां पुरुषोने विषे अत्यंत उत्कृष्ट एवा, वली पुरिससिंहाणं" केतां सिंहो जेम शौर्यता आदिक गुणोयें करीने युक्त होय छे, तेम आ प्रभुपण कर्मादिक शत्रुउने हणवामां सिंह समान शूरा छे, माटे साधारण पुरुषोमां सिंह सरखा; वली "पुरिसरवरपुंडरियाणं" केतां जेम कमलो कादवमां उत्पन्न थाय छे, अने जलथी वृद्धि पामे छे, अने पछी ते बन्नेने तजीने जेम उपर आवे छे, अने स्वभावथीज सुंदर लागे छे, तेम भगवान् पण कर्मरूपी कादवोमां उत्पन्न थाय छे, भोगरूपी जलथी वृद्धि पामे छे, अने पाछलथी ते बन्नेने तजीने, अतिशयनी संपदावाला थइने, नरामर विगेरेथी सेवाय छे, अने छेवटे मोक्षना सुखना हेतुरूप थाय छे. वली "पुरिसवरगंधहत्थीणं" केतां पुरुषोनेविषे उत्तम गंधहस्ती सरखा, एटले गंधहस्तीना मदनी गंधथी, त्यां वसता क्षुद्र हाथीउ जेम बीकथी दूर नाशी जाय छे, तेम प्रभुना विहाररूपी पवननी गंधथी इति, शत्रुउनुं सैन्य, दुकाल, मरकी विगेरे पण दूर नाशी जाय छे. "लोगुत्तमाणं" केतां भव्यसत्वरूप जे लोक तेनेविषे उत्तम एवा, "लोगनाहाणं" केतां लोकना नाथ एवा, "लोगहियाणं" केतां लोकनुं हित करनार, "लोगपईवाणं" केतां लोकने विषे प्रदीपसमान, लोग पज्जोअगराणं केतां लोकने विषे प्रद्योत करनारा, "अभयदयाणं" केतां अभयदानने देनारा. "चक्खुदयाणं" केतां विशिष्ठ एवा आत्मधर्मरूप चक्षुने देनारा, मग्गदयाणं" केतां मोक्षमार्गने देनारा, "सरणदयाणं" केतां संसाररूपी वनमां भटकता प्राणीउने तत्वचिंतारूप शरणना देनारा; "बोहिदयाणं" केतां बोधिबीजना देनारा; "धम्मदयाणं" केतां सर्व विरतितिरूप साधुधर्म, अने देशविरतिरूप श्रावकधर्मना देनारा. "धम्मदेसियाणं" केतां भव्यप्रत्ये देशना देवावाला "धम्मनायगाणं" केतां धर्मना नायक "धम्मसारहिणं" केतां धर्मना सारथि एवा. "धम्मवर चाउरंतचक्कवटीणं" केतां धर्मरूपी चक्रप्रत्ये चक्र-

वर्ति सरखा. "अप्पडिहयवरनाण दंसण धराणं" कोइ पण अटकावी न शके, एवा ज्ञान दर्शनने धारण करनारा, तथा "विअट्ट छउमाणं" केतां, ज्ञानावरणादिक घातिकर्म, तथा तेना बंधना साधनरूप जवाधिकार; ते रूप जे छद्मस्थपणुं, तेने दूर करनारा. तथा "जिणाणं" केतां पोते राग आदिकने जीतनारा, तथा "जावयाणं" केतां बीजाउने पण उपदेश आदिक देइने जीतावनारा. तथा "तिणाणं" केतां सम्यग् ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूपी वहाणथी जवरूपी समुद्रने तरनारा, तथा "तारयाणं" केतां बीजाउने पण जवसमुद्रथी तारनारा तथा "बुद्धाणं" केतां जीवाजीवादि तत्वोने जाणनारा, तथा "बोहियाणं" केतां बीजाउने पण ते तत्व जणावनारा; तथा "मुत्ताणं मोअगाणं" केतां चतुर्गतिना विपाकरूप जे विचित्र कर्मो, तेउथी मुकायेला, अने बीजाउने पण तेउथी मुकावनारा. तथा "सव्वनूणं सव्वदरिसीणं" केतां सघलुं जाणनारा, अने सघलुं जोनारा. तथा "सिवमयल मरुअ मणंत मक्कय मव्वाबाह मपुणरावत्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं" शिव एटले सर्व प्रकारना उपद्रव विनानुं, मोक्ष, तथा अचल एटले स्वाजाविक तथा प्रायोगिक क्रियाउथी नहीं चलायमान थाय तेवुं, तथा अरुज एटले व्याधि वेदनाविनानुं, केम के ते व्याधिना हेतुरूप एवां शरीर अने मननो त्यां (मोक्षमां) अजाव छे; तथा अनंत केतां अनंतज्ञानें करी युक्त, तथा अक्षय केतां विनाश न थइ शके तेवुं; तथा अव्याबाध केतां बाधारहित, तथा अपुनरावृत्ति केतां फरीने ज्यांथी पाछुं संसारमां आववुं नथी थतुं तेवुं; तथा सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपत्ताणं केतां सिद्धिगति नामनां स्थानक प्रत्ये प्राप्त थएला; तथा "जिय जयाणं" केतां जीतेल छे जय जेमणें एवा, "जिणाणं" केतां जिनेश्वर प्रत्ये "नम" केतां नमस्कार थाउ.

आटलो पाठ कह्याबाद केटलाको अतीत, अनागत, तथा वर्तमान जिनेश्वरोने वंदन करवामाटे नीचेनी गाथा पण कहे छे.

जे अईया सिद्धा, जेअ जविस्संतणागए काले ॥
संपइयवट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १ ॥

अर्थः— जेउ पेहेलां सिद्ध थएला छे, तथा जेउ आगामि कालमां

सिद्ध थशे; तथा वर्त्तमान कालमां जेउ वर्त्ते बे, एवा सघला सिद्धोने हुं त्रिविधें त्रिविधें वांडुं बुं.

पबी उठीने स्थापनार्हत्‌ने वांदवामाटे जिनमुद्रायें करीने "अरिहंत चेइयाणं" इत्यादि सूत्र जणवुं. "अरिहंत चेइयाणं" केतां अरिहंत प्रतिमाने निमित्तें "करेमि काउस्सग्गं" केतां हुं कायाने अन्य व्यापारथी रोकुं बुं. शामाटे? तो के "वंदण वत्तियाये" केतां अरिहंत चैत्यने वंदन करवामाटे, तथा "पुअणवत्तियाये" केतां गंधमाल्य आदिकथी पूजा करवामाटे, तथा "सक्कारवत्तियाये" केतां उत्तम वस्त्र आजरण आदिकथी सत्कार करवामाटे, तथा "समाणवत्तियाये" केतां स्तुति आदिकथी गुणोनी उन्नति करवामाटे, तथा "बोहि लाज वत्तियाये" केतां अरिहंत प्रजुयें प्रणीत एवा धर्मनी प्राप्ति थवामाटे. तथा "निरुवसग्ग वत्तियाये" जन्म जरादिकना उपसर्गरहित एवो जे मोक्ष, तेने माटे, अहीं कोइ शंका करे के, साधु अने श्रावकने बोधि लाज तो बेज, त्यारे शामाटे तेनी तेने प्रार्थना करवी जोइयें? तेने माटे कहे बे के, कोइ क्लिष्ट एवा कर्मोना उदयथी, ते बोधिलाज जो पाबो खसी जाय, तो तेने माटे जन्मांतरमां तेनी जे प्रार्थना करवी ते कंइ अयुक्त नथी.

हवे आ कायोत्सर्ग करे, तो पण जो तेमां श्रद्धा न होय, तो ते इच्छित अर्थ देनारो थतो नथी; तेने माटे हवे कहे बे, "सद्धाये मेहाएधिईये धारणाये अणुपेहाये वड्ढमाणीये गमि काउसग्गं" श्रद्धा केहेतां मिथ्यात्व मोहनीय कर्मनी क्षयोपशमथकी उत्पन्न थएली, तथा उदकप्रसादक मणिनी पेठे चित्तना प्रसादने उत्पन्न करनारी एवी श्रद्धायें करीने, तथा "मेधया" एटले जडपणांये करीने रहित, तथा "धृत्या" केहेतां मनना समाधिपणाथी, एटले रागद्वेष विना, तथा "धारणया" केहेतां अरिहंत प्रजुना गुणोने नहीं विस्मरवावडे करीने, तथा "अनुप्रेक्षया" केहेतां वारंवार अरिहंत प्रजुना गुणोना स्मरणवडे करीने, तथा "वर्धमानया" केहेतां वृद्धि पामती, एवी श्रद्धा आदिकें करीने, "वर्धमानया" ए विशेषण श्रद्धादिक सर्व पदोने जोडी लेवुं. वली अहीं श्रद्धादिकनो अनुक्रमें उपन्यास करेलो बे, एटले श्रद्धा होय तो मेधा, मेधा होय तो

श्रुति, श्रुति होय तो धारणा, तथा धारणा होय तो अनुप्रेक्षा, एम अनुक्रम जाणवो. पछी चोवीशे तीर्थंकरोनुं स्तवन जणे, ते नीचे प्रमाणे.

" लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं चउसंपिकेवली " आ पदोमां " अरिहंते " ए विशेष्य पद छे. हवे ते अरिहंतो केवा ? तोके " लोगस्सउज्जोयगरे " केतां लोकने विषे उद्योतना करनारा; एटले पंचास्तिकायरूप जे लोक, तेने केवलालोकरूपी दीपकें करीने प्रकाश करनारा, तथा " धम्मतित्थयरे " केतां देव, मनुष्य अने दानवादिकनी पर्षदामां, सर्व कोइ समजी शके एवी वाणीए करीने धर्मतीर्थने प्रवर्त्तावनारा; तथा " जिणे " केहेतां राग द्वेषादिकने जीतनारा; एवा " अरिहंते " कहेतां कर्मरूपी शत्रुउने जीतनारा एवा जिनेश्वरोनी हुं स्तुति करीश. ते कया कया जिनेश्वरो ? तेनां हवे नामो कहे छे. ऋषज, अजित, संजव, अजिनंदन, सुमति, पद्मप्रजु, सुपार्श्व, चंद्रप्रजु, सुविधि, (पुष्पदंत,) शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुंथु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व, तथा वर्धमान जिनेश्वरोने हुं वंदुं छुं. हवे ते चोवीशे जिनेश्वरोनो सामान्य तथा विशेषपणाथी अर्थ कहे छे. सामान्यथी परमपद प्रत्ये जे जाय, ते ऋषज कहेवाय; अथवा जे देशनारूपी जलथी दुःखरूपी अग्निथी दग्ध थएला जगत्ने सिंचे ते वृषज कहेवाय; हवे विशेषपणाथी ऋषज एटले बलदना लांछनवाला अथवा तेमनी माताए स्वप्नमां पेहेलां वृषज जोयो हतो, तेथी पण तेमनुं नाम वृषज कहेवाय. हवे जे परिसह आदिकथी जिताया नथी, ते अजित कहेवाय, अथवा ज्यारे प्रजु गर्जमां हता, त्यारे राजाए जगवाननी माताने द्यूतक्रीडामां जीती न होती तेथी पण तेमनुं " अजित " नाम जाणवुं. तथा जेमने प्रकर्षे करीने चोत्रीश अतिशयो थया छे; ते संजव कहेवाय, अथवा जेमनी स्तुति कर्याथी सुख थाय, ते पण संजव कहेवाय. अथवा प्रजु, गर्जमां हता, ते वखते धान्य घणुं पाक्युं हतुं, तेथी पण तेमनुं संजव नाम जाणवुं. तथा जे देवेंद्र आदिकथी अजिनंदित थया छे, ते " अजिनंदन " कहेवाय तथा उत्तम छे मति जेमनी ते सुमति कहेवाय, अथवा प्रजु गर्जमां आवते छते माताने शुजमति थइ हती, तेथी पण ते सुमति क-

हेवाय. तथा पद्मनी पेठे निःपंकपणाने अंगीकार करीने, जेमनी कांति पद्मसरखी हती, ते पद्मप्रज कहेवाय, अथवा तेमनी माताने पद्मपर शयन करवानो डोहलो उत्पन्न थयो हतो, अने ते देवताए संपूर्ण कर्यो हतो, तेथी पण तेमनुं पद्मप्रज नाम जाणवुं. तथा प्रजु गर्जमां होते छते, तेमनी माता उत्तम पार्श्ववाली, थइ, तेथी प्रजुनुं सुपार्श्व नाम जाणवुं. तथा चंद्रनी कांतिसरखी सौम्य लेश्या जेमने हती, तेथी, तथा माताने चंद्रपान करवानो दोहलो उत्पन्न थयो हतो, तेथी तेमनुं नाम चंद्रप्रज जाणवुं. तथा शोजन छे विधि जेमनो, तथा प्रजु ज्यारे गर्जमां हता त्यारें मातानो पण उत्तम प्रकारनो विधि हतो, तेथी तेमनुं सुविधि नाम जाणवुं; अथवा पुष्पनी कलीउं सरखा तेमना मनोहर दांतो हता, तेथी तेमनुं "पुष्पदंत" एवुं पण बीजुं नाम जाणवुं. तथा सघला प्राणीउंना संतापोने हरवाथी प्रजुनुं "शीतल" एवुं नाम जाणवुं. अथवा प्रजु गर्जमां आवते छते पिताने थएलो पित्तदाह प्रजुनी माताना करस्पर्शथी दूर थयो, तेथी पण तेमनुं शीतल नाम जाणवुं. तथा सकल जुवनने श्रेय करनारा, अथवा मनोहर छे, अंस केतां खजा जेमना एवा, अथवा प्रजु गर्जमां आवते छते, माताए देवताधिष्ठित एवी शय्या आक्रांत करी हती, तेथी पण तेमनुं श्रेयांस नाम जाणवुं. तथा वसु नामना जे देवविशेषो तेउंने पण पूजनीय ते वासुपूज्य कहेवाय; अथवा प्रजु गर्जमां आवते छते इंद्रे राज्यकुल, धनथी जरी दीधुं हतुं, तेथी पण तेमनुं "वासुपूज्य" नाम जाणवुं. तथा निर्मल छे केवलज्ञान आदिक जेमने ते विमल कहेवाय, अथवा प्रजु गर्जमां आवते छते, मातानी मति अने शरीर बन्ने निर्मल थयां, तेथी पण तेमनुं "विमल" नाम जाणवुं. तथा अनंत एवा कर्मना अंशोने जे जिते, अथवा अनंत एवां ज्ञान आदिकथी जे, जय पामे, ते अनंतजित् कहेवाय, अथवा प्रजु गर्जमां आवते छते, माताए अनंत एवी रत्ननी मालाउं दीठी हती, तेथी पण तेमनुं अनंतजित् नाम जाणवुं. तथा डुर्गतिमां पडता एवा प्राणिउंना समूहोने जे धारी राखे, ते धर्म कहेवाय; अथवा प्रजु गर्जमां आवते छते माता दानादिक धर्ममां तत्पर थइ हती, तेथी पण तेमनुं "धर्म" एवुं नाम जाणवुं. तथा शांतिना करनार ते शांति, अथवा प्रजु

गर्भमां आवते उते, पेहेलांथीज चालती मरकी शांत थइ हती, तेथी पण तेमनुं नाम "शांति" जाणवुं. तथा पृथ्वीमां जे रहेला छे, ते कुंथु, अथवा प्रभु गर्भमां आवते उते, माताए रत्नोना कंथुआउनो राशि जोयो हतो, तेथी पण तेमनुं नाम "कुंथु" जाणवुं. तथा प्रभु गर्भमां आवते उते माताए स्वप्नमां सर्वरत्नमय एवो "अर" जोयो हतो, तेथी पण तेमनुं "अर" नाम जाणवुं. तथा परिसहादिक मल्लोने जे जीते ते "मल्लि" कहेवाय, अथवा प्रभु गर्भमां होते उते, माताने सुगंधि पुष्पमाल्यना बिछानापर सुवानो डोहलो थयो हतो, अने ते देवताए पूर्यो हतो, तेथी पण तेमनुं-नाम "मल्लि" जाणवुं. तथा जगतनी त्रिकाल अवस्थाने जाणनारा, तथा उत्तम व्रतवाला ते "मुनिसुव्रत" कहेवाय; अथवा प्रभु गर्भमां आवते उते, माता मुनिनी पेठे उत्तम व्रतवाली थइ, तेथी पण तेमनुं "मुनिसुव्रत" नाम जाणवुं. तथा परिसहादिकथी जे नमी नथी जता. ते अथवा प्रभु गर्भमां होते उते, परचक्रना राजाउए आवीने नमन कर्युं हतुं, तेथी पण तेमनुं "नमि" एवुं नाम जाणवुं. तथा धर्मरूपी चक्रनी नेमि सरखा, ते नेमि कहेवाय, अथवा प्रभु गर्भमां होते उते, माताए अरिष्ट (काला) रत्नोनो मोटो नेमि जोयो हतो, तेथी पण तेमनुं "अरिष्ट-नेमि" नाम जाणवुं. तथा जे सघला जावोने जुए, ते पार्श्व, अथवा प्रभु गर्भमां हता त्यारे रात्रिए माताए शय्यामा सुतां, थकां, अंधकारमां पडखे रहेलो सर्प जोयो हतो, तेवी रीतना स्वप्नना अनुसारें पण प्रभुनुं "पार्श्व" एवुं नाम जाणवुं. अथवा पार्श्व नामें यक्ष, प्रभुनी वैयावच्च करतो हतो, तेथी पण तेमनुं पार्श्व एवुं नाम जाणवुं. तथा जन्मथी मांडी जे ज्ञान आदिकथी वृद्धि पाम्या, ते वर्धमान, अथवा प्रभुना जन्मथी ज्ञातकुल धनधान्यादिकथी वृद्धि पाम्युं, तेथी पण तेमनुं "वर्धमान" एवुं नाम जाणवुं.

एवी रीतनुं कीर्तन करीने चित्तनी शुद्धिमाटे हवे प्रणिधान कहे छे. "एव मए अजित्थुआ" केतां एवी रीतें में स्तुति करी, हवे ते जिनेश्वरो केवा? तो के, "विहूयरयमला" केतां नाश करेली छे, कर्मरूपी रज अने मेल जेउए एवा, तथा "पहीण जर मरणा" केतां नाश थएल छे जरा (घडपण) अने मरण जेमने एवा, "चउवीसंपि जिण-

वरा" केतां चोवीसे जिनेश्वरो, तथा "तित्थयरा" केतां तीर्थंकरो, "मे पसीयंतु" केतां मारापर प्रसाद करो? "कित्तिय" केतां में तेमनी स्तुति करी; "वंदिय" केतां में तेमने वांद्या, "महिया" केतां में तेमने पुष्प आदिकथी पूज्या; वली ते जिनेश्वरो केवा? तो के "जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा" केतां प्राणीवर्गना कर्ममलना अजावें करीने प्रकृष्ट रीतें सिद्ध थया छे, एवा ते जिनेश्वरो "आरुग्ग" केतां सिद्धपणुं, तथा "बोहिलाजं" केतां अरिहंत प्रजुयें बनावेला धर्मनी प्राप्ति, तथा "समाहिवर" केतां उत्तम समाधि, "दिंतु" केतां आपो? वली ते जिनेश्वरो केवा? तो के, "चंदेसु निम्मलयरा" केतां चंद्रथी पण निर्मल एवा, तथा "आइच्चेसु अहिय पयासयरा" केतां सूर्यथी पण अधिक प्रकाश करनारा, तथा "सागरवरगंजीरा" केतां समुद्रनी पेठे उत्तम गांजीर्यतावाला; एवा "सिद्धा" केतां सिद्ध प्रजुउं, "मम" केतां मने सिद्धि" केतां मोक्ष "दिसंतु" केतां आपो?

त्यार बाद पुरकरवरदीवड्ढेनो पाठ कहे छे.

पुरकवरदीवड्ढे, धाईसंडेअ जंबुदीवेअ ॥
जरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥

"पुरकरवरदीवड्ढे, केतां पुष्करावर्तना अर्ध द्वीपमां, बे जरत, बे ऐरवत, तथा बे महाविदेह छे; तथा धातकीउंनां छे वनो जेनी अंदर एवा धातकी खंडमां बे जरत, बे ऐरवत, तथा बे महाविदेह छे; तथा जंबूनामना द्वीपमां एक जरत, एक ऐरवत, अने एक महाविदेह क्षेत्र छे; ए पंदरे क्षेत्रो कर्मजूमिनां छे, तथा बाकीनां अकर्मजूमिनां क्षेत्रो छे; तेउंमां "धम्माइगरे" केतां धर्मनी आदिना करनारा, एवा तीर्थंकरोने "नमंसामि" केतां हुं नमस्कार करीश. हवे श्रुतधर्मनी स्तुति करे छे. ते श्रुतधर्म केवो? तो के, "तमतिमिरपडल विद्धंसणस्स" केतां अज्ञानरूपी जे घन अंधकार तेना समूहने नाश करनारो, तथा "सुरगणनरिंदमहिअस्स" केहेतां चार प्रकारना देवनिकायोथी तथा चक्रवर्त्तिउंथी पूजाएलो, तथा "सीमाधरस्स" केहेतां मर्यादाने धारण करनारो एवो जे श्रुतधर्म तेने "वंदे" केतां हुं नमस्कार करुं छुं. वली ते श्रुतधर्म केवो? तो के, पप्फो-

डियमोहजालस्स" केतां नाश करेल छे, मिथ्यात्वादिक जाल जेणें एवो.

एवी रीतें श्रुत धर्मने वंदन करीने, हवे तेनाज गुणो कहे छे.

> जाई जरामरण सोग पणा सणस्स
> कल्लाण पुक्कल विसाल सुहावहस्स ॥
> कोदेवदाणवनरिंद गणच्चिअस्स
> धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ १ ॥

"धम्मस्ससारं" केतां श्रुत धर्मना सारने, "उवलब्भ" केतां मेलवीने "कः" कोण सचेतन प्राणी, "पमायं" केतां प्रमादने "करे" केतां आचरे? हवे ते श्रुतधर्म केवो? तो के, "जाईजरामरण सोग पणासणस्स" केतां जन्म, जरा, मरण अने शोकनो नाश करनारो; तथा वली केवो? तो के, "कल्लाण पुक्कल विसाल सुहावहस्स" केतां आरोग्यरूप जे पुष्कल अने विशाल सुख, तेने धारण करनारो; वली ते श्रुत धर्म केवो? तो के "देवदाणवनरिंद गणचिअस्स" कहेतां देव, दानव, अने चक्रवर्त्तिउना समूहोथी पण पूजायेलो. एवा श्रुतधर्मना सारने मेलवीने कोण प्रमाद करे?

> सिद्धेभो पयउनमो जिणमये नंदीसया संजमे।
> देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्संभूयभावच्चिये ॥
> लोगो जत्थ पईठियो जगमिणं ते लुक्क मच्चासुरं।
> धम्मो वद्धओ सासउ विजयओ धम्मुत्तरं वद्धउ ॥

"भो" केतां अरे! लोको "पयउ" केतां तमो जुउ? "सिद्धे" केहेतां सिद्ध एवो जे "जिणमये" कहेतां जिनमत ते प्रत्ये नमो कहेतां नमस्कार करो? केम के तेम करवाथी "नंदि" केतां समृद्धि थाय छे, तेम "सया" कहेतां हमेशां "संजमे" कहेतां ते चारित्रनेविषे पण प्रवृत्त थाउ? हवे ते संयम केवुं ते कहे छे. "देवंनाग सुवन्नकिन्नरगणस्सभूअ भावच्चिये" कहेतां देवता देवधरणादिक नागकुमारो, "सुपर्ण" कहेतां गरुडो, "किन्नर" केतां व्यंतर विशेषो, अने उपलक्षणथी बाकीना पण देवोयें करीने उत्तम प्रकारना भावें करीने पूजाएलुं, वली जे जिनमतमां

लोक केहेतां ज्ञान अने आ जगत् पण अटले त्रण लोकमां रहेता मनुष्य, देव अने असुरो पण प्रतिष्ठित थयेला छे, एवी रीतनो जे श्रुतधर्म ते "वड्ढउ" कहेतां वृद्धि पामो? ते पण केवी रीतें वृद्धि पामो? तो के, "सासउ" कहेतां कोइ दहाडे पण स्खलना न पामे एवी रीतें वृद्धि पामो? अने वली "विजयउ" केहेतां जय थकी, "धम्मुत्तरं" कहेतां चारित्र धर्मोत्तर पण "वड्ढउ" कहेतां वृद्धि पामो?

हवे श्रुतधर्मना वंदनमाटे कायोत्सर्गनो पाठ कहे छे.

"सुअस्सभगवउ करेमि काउस्सग्गं" कहेतां श्रुत एटले प्रवचन भगवंतने निमित्ते कायोत्सर्ग करुं छुं पछी आगलनी पेठेज "अप्पाणं वोसिरामि" सुधिनो पाठ भणवो.

एवी रीतें आगमनी पेठेज कायोत्सर्ग पालीने श्रुतनी स्तुतिनो पाठ भणे.

पछी अनुष्ठानपरंपराना फलभूत जे सिद्ध भगवानो, तेउने नमस्कार करवामाटे नीचे प्रमाणे पाठ भणे.

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सयासव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥

"सिद्धाणं" केहेतां कर्मक्षयथी सिद्ध थएला केम के केटलाको कर्म सिद्ध पण कहेवाय छे; जेम के सह्यगिरिसिद्ध, कोइना शिखव्या विनाज खेती, वेपार आदिक शिख्यो हतो ते कर्मसिद्ध कहेवाय, कोकासवर्धकीयें आचार्यना उपदेशथी शिल्पकला जाणी हती, माटे ते शिल्पसिद्ध कहेवाय, आर्यखपुट विद्यासिद्ध हतो. स्तंभाकर्षक मंत्रसिद्ध हतो. योग अने ओषधिउमां सिद्ध होवाथी आर्यसमित् योगसिद्ध कहेवातो, गौतम स्वामी आगमसिद्ध हता, मम्मण शेठ अर्थसिद्ध हतो, स्तुंडिक यात्रासिद्ध हतो. अभयकुमार अभिप्रायसिद्ध हतो, दृढप्रहारी तपःसिद्ध हतो; पण मरुदेवा माता कर्मक्षयसिद्ध हतां. माटे कर्मादिसिद्धोने दूर करवा माटे "बुद्धाणं" एवो पाठ छे अने तेनो अर्थ एवो के, अज्ञानरूपी निद्रामां रहेलुं जगत् उंघते छते पोते जीवादिक तत्वोने जाणनारा; वली ते जिनेश्वर केवा? तो के "पारगयाणं" केतां संसाररूपी समुद्रने पार पहोंचेला ते पण केवी रीतें? तो के "परंपरगयाणं" केतां चौद गुणस्था-

नकोनी श्रेणिना अनुक्रम थकी, अथवा कर्मक्षयथी उपशम आदिकनी सामग्रीथी, एटले सम्यग्दर्शन तथा सम्यग् ज्ञान, अने तेथी सम्यक् चारित्र एवी रीतनी श्रेणिथी मोक्षे गएला, एवा. वली ते प्रभु केवा ?तो के, "लोअग्गमुवयाणं" केहेतां लोकना अग्रभागप्रत्ये प्राप्त थएला, एवा. " सव्व सिद्धाणं " कहेतां पंदर प्रकारना सिद्धो प्रत्ये, हवे ते पंदर प्रकारना सिद्धो कया ? कया ? ते नीचे देखाडे छे.

पेहेला " तीर्थसिद्धा " कहेतां चतुर्विध श्रमणसंघनी उत्पत्ति होते छते जे सिद्ध थाय, ते तीर्थसिद्धो जाणवा; बीजा " अतीर्थसिद्धा " कहेतां तीर्थनी उत्पत्ति हजू थइ न होय, ते पेहेलां मरुदेवा माता आदिकनी पेठे जे सिद्ध थाय, ते अतीर्थसिद्धो कहेवाय. त्रीजा " तीर्थंकरसिद्धा " कहेतां तीर्थंकरपणुं भोगवीने जे सिद्ध थाय, ते. चोथा " अतीर्थंकरसिद्धा " एटले सामान्य केवलीपणामां रहीनेज जे सिद्ध थाय ते. पांचमा " स्वयंबुद्धसिद्धा " कहेतां पोतानी मेलेज बोध पामी जे सिद्ध थाय ते. छठा " प्रत्येकबुद्धसिद्धा " केहेतां प्रत्येकबुद्ध थइने जे सिद्ध थाय ते. सातमा बुद्धबोधितसिद्ध कहेतां, आचार्यना उपदेशथी जे सिद्ध थया होय ते. आठमा स्त्रीलिंगें सिद्ध थएला; नवमा पुल्लिंगें सिद्ध थएला; दशमा नपुंसकलिंगें सिद्ध थएला, अग्यारमा स्वलिंगें सिद्ध थएला, बारमा परलिंगें सिद्ध थएला, तेरमा गृहिलिंगें सिद्ध थएला, चौदमा एकाकी सिद्ध थएला, तथा पंदरमा, एक समयमां जे एकसो आठ सिद्ध थाय छे, ते अनेक सिद्धो जाणवा.

एवी रीतें सामान्यपणाथी सर्व सिद्धोने नमस्कार करीने, नजदीकना उपकारी एवा श्री वीरप्रभुनी स्तुति करे छे.

जो देवाणविदेवो, जं देवा पंजलिनमंसंति ॥
तं देवदेवमहियं, शिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥

" जो " केतां जे महावीर प्रभु, " देवाणविदेवो " कहेतां देवोना पण जे देव छे, तथा " जं " केतां जेमने " देवा " केतां देवताओ " पंजलि " केतां विनयथी हाथ जोडीने, " नमंसंति " कहेतां नमस्कार करे छे; एवा, तथा " देवदेवमहियं " केतां इंद्रोथी पण पूजाएला, एवा

महावीरं " कहेतां महावीर प्रभुने हुं " शिरसा " कहेतां मस्तकें करी-ने " वंदे " कहेतां नमस्कार करुं छुं.

एवी रीतें स्तुति करीने, परोपकार माटे, तथा पोताना भावनी वृ-द्धिमाटे फल देखाडवापूर्वक पाठ भणे छे.

इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ॥
संसारसागराउ, तारेइ नरंव नारीं वा ॥

" जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स " कहेतां ऋषभदेव प्रभु, तथा वर्ध-मान प्रभुने करेलो, " इक्कोविनमुक्कारो " केहतां एकज नमस्कार, " न-रंव नारींवा " पुरुष अथवा स्त्रीने " संसार सागराउ कहेतां संसाररू-पी समुद्रथी " तारेइ "कहेतां तारे छे.

हवे उपरशिवाय बीजी पण स्तुति केटलाको बोले छे, ते नीचे प्र-माणे जाणवी.

उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्कानाणं निसिहिया जस्स ॥
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठनेमिं नमंसामि ॥
चत्तारिअठदसदो, अ वंदिआ जिणवरा चउवीसं ॥
परमठनिठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

" उज्जंतसेलसिहरे " केहेतां गिरनार पर्वतना शिखरपर " जस्स " केहेतां जेनां " दिक्का, नाणं, निसिहिया " दीक्षाकल्याणक, ज्ञानक-ल्याणक, तथा मोक्षकल्याणक थएलां छे; " तं धम्मचकवट्टिं " कहेतां धर्मना चक्रवर्ति एवा ते " अरिठनेमिं " केहेतां अरिष्टनेमिने " नमं-सामि " कहेतां हुं नमस्कार करुं छुं. तथा अष्टापद पर्वतपर रहेला चा-र, आठ, दस, अने बे, एम मली चोवीशे जिनेश्वरोने मे वांद्या, तथा एवा सिद्ध प्रभुउ मने पण सिद्धि आपो ?

त्यार पछी नीचे प्रमाणे पाठ बोलवो.

"वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मदिठि समाहिगराणं, करेमि काउस्सग्गं"

" वेयावच्चगराणं " केहेतां, प्रवचननी वेयावच्च करनारा, तथा " सं-तिगराणं " कहेतां शांतिना करनारा, तथा " सम्मदिठिसमाहिगराणं " केहतां सम्यग्दृष्टिमां समाधि करनारा, एवो गोमुख यक्ष तथा अप्रति-

चक्का देवी, इत्यादिकने निमित्तें " काउस्सग्गं करेमि " कहेतां हुं कायोत्सर्ग करुं बुं.

पछी मुक्तासुक्ति मुद्रायें करीने नीचे प्रमाणे पाठ नणे छे.

जयवीयराय जगगुरु, होउ मम तुहपनावउ नयवं ॥
नवनिवउ मग्गाणुसारिआ, इठफलसिद्धि ॥
लोगविरुद्धचाउ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ॥
सुहगुरुजोगो तवयण, सेवणा आनवमखंडा ॥

हे जगत्ना गुरु वीतराग, तमो, जय पामो ? तथा हे नगवन् ! ! तमारा प्रनावथी नवथी मने निवृत्ति थाउ ? तथा तमारा प्ररूपेला मार्गप्रत्ये, मारुं अनुसरवापणुं थाउ ? इछित फलनी सिद्धि थाउ ? लोकविरुद्ध कार्यनो त्याग थाउ ? गुरुजननी पूजा थाउ ? (अहीं गुरुवर्गमां मातापितादिकनुं पण ग्रहण करवुं) सत्वार्थनुं करवापणुं थाउ ? उत्तम चारित्रयुक्त आचार्यनो संगम थाउ ? तथा एवा आचार्यनां वचनोनी सेवा मलो ? अने ते पण ठेक मारो संसार होय, त्यांसुधि अखंडितपणे मलो ?

एवी रीतें सघलो चैत्यवंदननो विधि कह्यो.

हवे त्यारबाद शुं करवुं ? ते कहे छे.

ततोगुरूणामभ्यर्णे, प्रतिपत्तिपुरःसरं ॥
विदधीत विशुद्धात्मा, प्रत्याख्यानप्रकाशनं ॥ १२४ ॥

अर्थः– तेवार पछी त्यां देववंदन माटे आवेला, अर्थात् स्नात्रादिक जोवा माटे, अथवा धर्मकथा माटे त्यां स्थिर रहेला एवा गुरुनी पासे उचितपणाथी जइ,शुद्धचित्तथी पोताना प्रत्याख्याननो प्रकाश करवो.केमके प्रत्याख्यान त्रण प्रकारनुं छे, आत्मसाक्षिकं,देवसाक्षिकं, अने गुरुसाक्षिकं.

उपरना श्लोकमां जे " उचितपणाथी " एवुं पद कह्युं, ते उचितपणुं हवे बे श्लोकोथी देखाडे छे.

अभ्युत्थानं तदा लोके, ऽनियानं च तदागमे ॥
शिरस्यंजलिसंश्लेषः, स्वयमासनढौकनं ॥ १२५ ॥

आसनाभिग्रहोभक्त्या, वंदना पर्युपासनं ॥
तद्यानेऽनुगमश्चेति, प्रतिपत्तिरियं गुरोः ॥ १२६ ॥

अर्थः— गुरुने जोतांज संभ्रमपूर्वक आसनपरथी उभाथवुं; तेउनां आवतां पोतें सामा जवुं, तथा मस्तकपर हाथ जोडी " नमो खमासमणाणं " एवो पाठ भणवो. तथा पछी पोतानी मेलेज तेमने बेसवामाटे आसन आपवुं; तथा भक्तिथी आसनपर बेसवाने आग्रह करवो. तथा पछी पचीश आवश्यकथी विशुद्ध एवुं वंदन करवुं; तथा गुरु बेसे, त्यारे तेमनी सेवा करवी; ते जाय त्यारे तेमनी पाछल केटलांक पगलां जवुं; एवी रीतनी गुरुनी उचितता सांचववी. तथा तेमनी पासे धर्मदेशना पण सांभलवी.

ततः प्रतिनिवृत्तः सन्, स्थानं गत्वा यथोचितं ॥
सुधीर्धर्माविरोधेन, विदधीतार्थचिंतनं ॥ १२७ ॥

अर्थः— त्यांथी पाछा वली, पोतपोताने उचित एवां स्थानकप्रत्ये जइ उत्तम बुद्धिवाला माणसें, जेम धर्मने विरोध न आवे, तेम धन कमावामाटेनो विचार करवो.

ततो माध्याह्निकीं पूजां, कुर्यात् कृत्वा च भोजनं ॥
तद्विद्भिः सह शास्त्रार्थ, रहस्यानि विचारयेत् ॥ १२८ ॥

अर्थः— ते वार पछी मध्याह्न कालनी श्री जिनेश्वर प्रभुनी पूजा करीने, तथा त्यारबाद भोजन करीने, शास्त्रोना जाणनाराउनी साथे मलीने शास्त्रना अर्थोनां रहस्यो (तात्विकमर्मो) नो विचार करवो.

ततश्च संध्यासमये, कृत्वा देवार्चनं पुनः ॥
कृतावश्यककर्मा च, कुर्यात्स्वाध्यायमुत्तमं ॥ १२९ ॥

अर्थः— ते वार पछी संध्याकाले फरीने देवपूजा करीने, तथा पछी पडिकमणुं करीने उत्तम प्रकारें स्वाध्याय करवो.

टीकाः— जे माणसने बे वखत जमवानी इछा होय, तेणें त्रिकाल वखतनी अंतर्मुहूर्त्त पेहेलां भोजन करीने संध्या वखते पाछुं त्रीजीवार देवपूजन करवुं. तथा तेवार पछी साधु समीपें जइ, उचित स्थानकपर र-

हीने, षड्विध आवश्यक (प्रतिक्रमण) करवुं. तेमां सामायिक. तथा चतुर्विंशतिस्तवनुं वर्णन आगल करेलुं छे, हवे वंदनकनुं वर्णन करे छे. ते वंदन पचीश आवश्यकथी विशुद्ध, तथा बत्रीश दोषोथी रहित जाणवुं.

तेमां " इच्छामि खमासमणो वंदेउं जावणिज्जाये निसीहियाये " एम कही गुरुनां छंदानुज्ञापनमाटे जे नमवुं, ते पेहेलुं वंदन जाणवुं. वली फरीने आवर्त लेइ जे नमन करवुं, ते बीजुं वंदन जाणवुं. त्रीजुं प्रसव थती वखते रचेला करसंपुटनी पेठे हाथ जोडी, तथा दीक्षा वखते ग्रहण करेला रजोहरण अने मुहपत्तिपूर्वक जे वंदन करवुं ते त्रीजुं "यथाजात वंदन " जाणवुं. द्वादश आवर्त्तथी वंदन करवुं, एटले गुरुनां चरणपर हाथ तथा शिर स्थापीने "अहोकायं" इत्यादि सूत्रना उच्चारणपूर्वक छ आवर्त्तो लेवा, अने पाछां पण तेज सूत्रना उच्चारणपूर्वक छ आवर्त्तो लेवा, ए बार जातनां वंदनो जाणवां. तथा चार शिरोवंदन जाणवां. त्रण मन, वचन, अने कायगुप्तिनां वंदनो जाणवां. बे द्विप्रवेशनां, तथा एक निष्क्रमणनुं; एम मली पच्चीश प्रकारनां वंदनो जाणवां.

हवे तेना बत्रीश दोषो देखाडे छे.

संभ्रमसहित वंदन करवुं ते पेहेलो दोष जाणवो. आठ मदने वश थइ वंदन करवुं ते बीजो दोष जाणवो. वंदन करतां वेंत जे नासी जवुं, ते त्रीजो दोष जाणवो; हाथ पग चलाव्या विना, तथा प्रगट रीतें सूत्रोच्चार नहीं करी, वंदन करवुं, ते चोथो दोष जाणवो. तीडनी पेठे कुदी कुदीने वंदन करवुं, ते पांचमो दोष जाणवो. आचार्य निद्रामां होय, अथवा कंइ काममां पड्या होय, तेमने रजोहरण आदिकथी पोतानी तरफ ध्यान खेंचावी, अथवा पोते बरोबर रीतेंमस्तक नहि नमावी जे वंदन करवुं ते छठ्ठो दोष जाणवो. आगल पाछल अंग हलावी वंदन करवुं, ते सातमो दोष जाणवो. एकने नमी मत्स्यनी पेठे तुरत तुरत बीजाने त्रीजाने एम जे नमवुं; ते आठमो दोष जाणवो. गुरुयें कंइक छबको आप्यो होय. तेथी दुभाएलां मनथी, अथवा आ निर्गुणीने वंदन करवुं पडे छे;एवा मनना अभिप्रायथी जे वंदन करवुं, ते नवमो दोष जाणवो. घुंटण अथवा खोलाआदिकमां हाथो राखी वंदन करवुं ते दशमो दोष जाणवो. जयथकी वंदन करवुं ते अग्यारमो दोष जाणवो. हुं आने न

मीश, तोआगलउपर मारी पण सेवा थशे, एम विचारि जे वंदन करवुं, ते बारमो दोष जाणवो. आचार्यनी साथे मित्राइ करवानी इछाथी वंदन करवुं, ते तेरमो दोष जाणवो. हुं वंदन समाचारिमां केवो कुशल छुं? माटे हुं जेप्रकारें वंदन करुं छुं, ते प्रकारें बीजा पण करो? एम गर्व धारण करी वंदन करवुं, ए चौदमो दोष जाणवो. वस्त्रादिकना लोज माटे अथवा, जो हुं आने वंदन करीश, तो आ मारी प्रार्थनानो जंग करशे नहीं, एम विचारि वंदन करवुं, ए पंदरमो दोष जाणवो. चोरनी पेठे तुरत तुरत कोइ जाणे न जाणे, तेवी रीतें जे वंदन करवुं, ते सोलमो दोष जाणवो. आहारादिक काल वखते जे वंदन करवुं, ते सत्तरमो दोष जाणवो. पोताने अथवा गुरुने क्रोध चड्यो होय, ते वखते जे वंदन करवुं, ते अढारमो दोष जाणवो. आ गुरु मारा वंदन, अवंदन परकंइ ध्यान आपता नथी, एम विचारि तर्जनापूर्वक जे वंदन करवुं, ते उंगणीशमो दोष जाणवो. गुरुने विश्वास उपजाववा माटेज कपटथी वंदन करवुं, ते वीशमो दोष जाणवो. हे वाचक; तमोने वांदवाथी अमारा शुं दहाडा वळ्या? इत्यादिक अवहेलनाथी जे वंदन करवुं, ते एकवीशमो दोष जाणवो. अरधी वंदना करीनेज देशादिकनी कथा करवा लागवुं, ते बावीशमो दोष जाणवो. कोइ आडो उन्नो होय तो वंदन कर्या विनाज उन्ना रहेवुं, अने गुरुनी दृष्टि पडे, तो वंदन करे, ते त्रेवीशमो दोष जाणवो. "अहो कायं काय" ए पाठ कहेतां ललाट देशना मध्यन्नागने नहीं स्पर्श करीने जे वंदन करवुं ते चोवीशमो दोष जाणवो. राज्यना कर देवानी पेठे पराणे वंदन करवुं, ते पचीशमो दोष जाणवो. लौकिक करथी तो मुकाया, पण वंदन करथी आपणे मुकावाना नहीं, एवी बुद्धिथी वंदन करवुं, ते छवीशमो दोष जाणवो. रजोहरणने "अहो कायं" इत्यादि पाठ उचारतां शिर न अडाडवुं ते सत्तावीशमो दोष जाणवो. संपूर्ण रीतें वंदन न करवुं, ए अठावीशमो दोष जाणवो. मोटा शब्दथी वंदन करवुं, ए उंगणत्रीशमो दोष जाणवो मुंगा थइ वंदन करवुं ते त्रीशमो दोष जाणवो. दृढ शब्दथी उच्चार करी वंदन करवुं, ते एकत्रीशमो दोष जाणवो. लांबा हाथ करी वंदन करवुं ते बत्रीशमो दोष जाणवो.

हवे ते वंदन करवामां शिष्यने छ अभिलाषो होय छे; इछा, अनुज्ञापना, अव्याबाध, यात्रा, यापना, अने अपराधनी क्षमा.
तेमां गुरुनी पण छ इछाउ होय छे. छंद, अनुज्ञा तहत्ति, तुज्यं, अहमपि; खामेमि
तेनो पाठ "इछामि खमासमणो इत्यादिथी मांडीने "अप्पाणं वोसिरामि" त्यांसुधिनो पाठ बोले;

अहीं शिष्य पेहेलां गुरुने लघुवंदन करीने, तथा पछी प्रमार्जन करी बेसे. पछी पच्चीशवार करीने मुहुपत्ति पडिलेहे, अने पछी ते मुहुपत्तिथी पच्चीशवार शरीरने पडिलेहे. पछी मन, वचन, अने कायाथी शुद्ध थइने आत्मप्रमाण क्षेत्रथी बहार रहीने, चडावेला धनुष्नी पेठे काया नमावीने, बे हाथमां रजोहरण लेइने, एवी रीतें बोले, हे "क्षमाश्रमण" कहेतां क्षमा छे, प्रधान जेमने एवा हे प्रभु! वंदिउं कहेतां तमोने वांदवा माटे "इछामि" कहेतां हुं इछुंछुं. केवी रीतें? तो के "जावणिज्जाये निसीहियाये" कहेतां शरीरनी शक्तिप्रमाणे पापक्रियाउने निषेध करीने;

अहीं गुरु जो कंइ व्याक्षेपमां होय, तो कहेशे के, जरा सबुर कर? अने ते व्याक्षेपनुं कारण कदाच केवा जेवुं होय, तो गुरु कहे, नहीं तर न पण कहे; एवो चूर्णिकारनो मत छे; पण वृत्तिकारनो मत "त्रिविधेन" एम गुरु कहे, एवो छे. पछी शिष्य संक्षेपवंदन करे. हवे गुरु जो व्याक्षेपमां न होय, तो मने पण अभिप्रेत छे, एम गुरु कहे. पछी शिष्य अवग्रहथी बहार रहीनेज "अणुजाणह." कहेतां मने आज्ञा आपो? एम कहे. आचार्यनी चारे बाजुए आत्मप्रमाण क्षेत्रसुधीनो अवग्रह जाणवो. अने ते अवग्रहमां आचार्यनी आज्ञा विना प्रवेश करवो कल्पे नहीं. पछी गुरु कहे के, "अनुजानामि" कहेतां हुं आज्ञा आपुं छुं. पछी शिष्य जमीन प्रमार्जीने नैषिधिकी करतो थको ते अवग्रहमां दाखल थाय, पछी गुरुना चरणपासे बेसी पृथ्वीपर रजोहरण मुकी, तथा तेनी अंदर गुरुना चरणकमलने स्थापीने, मुहुपत्तिए करीने डावा कानथी मांडीने, डाबा हाथथी जमणा कानसुधि, तथा डावा धुंटणने प्रमार्जिने ते मुहुपत्ति डावा धुंटणपर मुके; तथा पछी "अकार" ना उच्चारण जेटला कालमां बे हाथेथी रजोहरणने स्पर्श करीने, "होकार" ना उच्चारण जेटला कालें करीने ललाटने स्पर्श करे;

पछी "काकार" ना उच्चारण जेटला कालें करीने रजोहरणने स्पर्श करीने "यकार" ना उच्चारण जेटला कालें करीने ललाटदेशने स्पर्श करे; ते वार पछी "संफासं" एम बोलतो थको, मस्तक अने बे हाथोथी रजोहरणने स्पर्श करे. तेवार पछी मस्तकपर अंजलि करीने "खमणिज्जोभे किलामो" त्यांथी मांडीने "दिवसो वइक्कंतो" सुधि गुरुसन्मुख दृष्टि राखीने, पाठ जणे. तथा कहे के, मारा ललाटदेशथी, आपना चरणकमलने हुं स्पर्श करुं छुं; तेनी आप मने रजा आपो? केम के आचार्यनी रजा विना तेमना चरणने स्पर्श करवो योग्य नथी. ते वार पछी "खमणिज्जो" केहतां आपें मारा स्पर्शथकी उत्पन्न थती बाधा क्षमा करवी; एम शिष्य कहे. पछी "अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो" कहेतां हे भगवन्! अल्प दुःखवाला एवा आपने घणा शुभथी दिवस तो निर्गमन थयो छेनी? एम कही हाथ जोडीने रहे; एटले गुरु कहेशे के, "तहत्ति" कहेतां तेमज छे. पछी तपनियमनी वार्ता पुछतो थको शिष्य कहे के, आपनो तप नियमतो सुखेंथी थाय छे ने? त्यारे गुरु कहे के, तमोने पण ते तेवीज रीतें छे ने? पछी शिष्य पुछे के, "जवणिज्जंच भे" केतां आपनुं शरीर तो निराबाध छे नी? त्यारे गुरु कहे के, तेमज छे; पछी शिष्य अपराधनी क्षामणा करतो थको, कहे के, "खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं" कहेतां हे क्षमाश्रमण, दिवसमां थएलो योगसंबंधि जे अपराध, तेनी हुं आपनी पासे क्षमा मागुं छुं, त्यारे गुरु कहे के. हुं पण खामेमि केतां खमुं छुं. ते वारपछी शिष्य नमस्कार करतो थको "आवसियाए" थी मांडीने "जो मे अइयारो कउ" त्यां सुधिनुं, पोताना अतिचारनिवेदनपूर्वक प्रायश्चित्तने सूचवनारुं सूत्र बोले. एम कही अवग्रहथी पाछो हठे.

हवे तेत्रीश आशातनाउनुं वर्णन करे छे.

कारणविना गुरुपासे जवुं, ते पेहेली आशातना जाणवी. गुरुने पडखेथी जवुं, ते बीजी आशातना, गुरुने निःश्वास, श्लेष्म आदिकथी दूषण थाय एवी रीतें जवुं, ते त्रीजी आशातना. एवीज रीतें गुरुनी आगलथी, पडखेथी, तथा पाछलथी जवुं, ते त्रण आशातनाउ जाणवि. तथा गुरुनी आगल, पडखे अने पाछल बेसवुं ते त्रण आशातना जाणवी.

आचार्यनी साथे जइ तेमनां पेहेलांज पाछा आववुं, ए दशमि आशातना जाणवी. गुरुने जेने बोलाववो हो, तेने पेहेलांथीज शिष्ये बोलाववो, ए अग्यारमी आशातना जाणवी. आचार्यनी साथे जइ, तेमनी पेहेलां आववानुं चिंतववुं, ए बारमी आशातना जाणवी. भिक्षा लावी, पेहेलां कोइनी पासे आलोचना करी, पाछलथी गुरु पासे आलोचना करवी, ए तेरमी आशातना जाणवी. भिक्षा लावी, पेहेला बीजा कोइ शिष्यने देखाडी पाछलथी गुरुने देखाडवी, ए चौदमी आशातना जाणवी. भिक्षा लावीने गुरुने पूछ्याविना बीजा शिष्यने आपवी, ए पंदरमी आशातना जाणवी. भिक्षा लावी, पेहेलां कोई बीजा शिष्यने बोलावी, पछी गुरुने बोलाववा ए सोलमी आशातना जाणवी. भिक्षा लावी, गुरुने थोडुंक दइ, पोते मिष्टान्न आदिक खावां, ते सत्तरमी आशातना जाणवी. रात्रिए निद्रा वखते गुरु पुछे के, कोण जागे छे ? ते वखते जागतां छतां पण उत्तर न देवो, ते अढारमी आशातना जाणवी. बीजे वखते पण गुरुने उत्तर न देवो, ते ओगणीशमी आशातना जाणवी. गुरु बोलावे ते वखते भोजन, शयन आदिक तजीने पण जो त्यां न आवे, ते वीशमी आशातना जाणवी. गुरुए बोलाव्याथी, नमस्कार करी, आप शी आज्ञा करोछो ? एम न केहेवुं, ते एकवीशमी आशातना जाणवी. गुरुने तुंकारे बोलाववा, ए बावीशमी आशातना जाणवी. गुरुनी सामा बोलवुं, ते त्रेवीशमी आशातना जाणवी. गुरुने बहुज कठोर अने उंचा शब्दथी वंदन करवुं, ते चोवीशमी आशातना जाणवी. गुरु कथा केहेते छते, "ते एमज छे," एम वचमां जे केहेवुं, ते पचीशमी आशातना जाणवी. गुरु कथा केहेते छते, तेमां भूल काडवी, ते छवीशमी आशातना जाणवी. गुरु धर्मकथा केहेते छते, तेनां वखाण न करवां ए सत्तावीशमी आशातना जाणवी. गुरु धर्मकथा केहेतां छतां "भिक्षाकाल थयो छे" इत्यादि शब्दथी पर्षदाभंग करवो ते अठावीशमी आशातना जाणवी. गुरुधर्मकथा केहेते छते, "हुं करीश" एम जे केहेवुं, ते ओगणत्रीशमी आशातना जाणवी गुरु धर्मकथा कही रहेते छते, बेठेली पर्षदामां, पोतानी चतुराइ जणाववामाटे, विशेषें करी धर्मकथा केहेवी, ए त्रीशमी आशातना जाणवी. गुरुनी आगल उंचे आसने, अथवा तुल्य आसने

बेसवुं, ए एकत्रीशमी आशातना जाणवी. गुरुनां आसन आदिकने, तेमनी रजा विना हाथ अथवा पगथी स्पर्श करवो, अने तेम करीने पण पाछी क्षमा न मागवी ए बत्रीशमी आशातना जाणवी.

हवे अहीं ते जेम साधुनी क्रिया कही, तेम श्रावकनी पण तेवीज रीतें जाणवी. केम के ते वखतें श्रावक पण मुनिसरखोज छे.

तेम कर्याबाद शिष्य अवग्रहमांज रहीने, कंइक शरीरने नमावीने अतिचारोनुं आलोचन करतो थको कहे के, "इछाकारेण संदिसह ज-गवन् देवसियं आलोएमी" कहेतां हे जगवन्, आप मने आज्ञा आपो? के जेथी दिवससंबंधि अतिचारोने हुं आलोवुं. एवी रीतें उपलक्षणथी रात्रिक, पाक्षिक विगेरेनुं पण ग्रहण करवुं. तेमां दिवसनी आलोचना एटले मध्याह्नकालथी मांडीने निशीथ पर्यंत, अने रात्रिनी एटले निशीथथी मांडीने मध्याह्न कालसुधीनी आलोचना जाणवी. पछी गुरु कहेशे के, आलोव. त्यारे शिष्य कहेशे के, "इछं आलोएमि" कहेतां हुं आलोवुं छुं. पछी शिष्य, "जो मे देवसीउ" थी मांडीने "तस्स मिछामि दुक्कडं" त्यांसुधि पाठ जणे. "जो मे देवसिउ अइयारो कउ" केतां दिवससंबंधि में जे कंइ अतिचार कर्यो होय, अने ते पण "काइउ, वाइउ, माणसिय" कहेतां काया, वचन अने मन संबंधि; "उस्सुत्तो कहेतां उत्सूत्र, "उमग्गो" क्षायोपशमिक जावने उल्लंघीने "अकप्पो" कहेतां विधिरहित, "अकरणिज्जो" नहीं करवा लायक, "दुज्झाउ" कहेतां दुर्ध्यानरूप, "दुव्विचिंतिउ" कहेतां दुष्टपणाथी चिंतवेलो, "अणायारो" कहेतां अनाचार, "अणिछियवो" कहेतां नहीं इछवा लायक," तथा "असावग्गपाउग्गो" कहेतां श्रावकने अनुचित एवो अतिचार, नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते" कहेतां ज्ञानमां, दर्शनमां, चारित्रमां तथा देशविरतिपणामां, "अने सामायिकमां, तिह्नंगुत्तिणं" कहेतां त्रण गुप्तिउमां जे खंडितपणुं थयुं होय ते, तथा "चउह्नंकसायाणं" कहेतां चार कषायोसंबंधि जे अतिचार लाग्यो होय, ते, तथा "पंचह्मणुव्वयाणं" कहेतां पांच अनुव्रत संबंधि, तथा "तिण्ह गुण व्वयाणं" केतां त्रण गुण व्रत संबंधि, तथा "चउह्नं सिक्खावयाणं" कहेतां चार शिक्षाव्रतसंबंधि, "बारस्स विहस्स सावग्गधम्मस्स" केहेतां एवी रीतें बारे व्रतरूपी आ-

वकवर्मनुं, "जं खंडियं" केहेतां जे खंडित कर्युं होय, "जं विराहियं" केतां जे विराधन कर्युं होय, "तस्समिछामि डुक्कडं" कहेतां ते सघळा अतिचारोने हुं मिथ्या डुःकृत करुं छुं. पछी शिष्य फरीने जरा काया नमावीने, मायामदथी रहित थयो थको अतिचारनी शुद्धिमाटे नीचे प्रमाणे सूत्र जणे.

"सवस्सवि देव देवसिय डुच्चिंतिय डुब्भासिअ डुच्चिठिए इछाकारेण संदिसह"

एटलुं कही शिष्य मौन रहे, त्यारे गुरु कहे, के, "पडिक्कमह" त्यारे शिष्य कहे के, "इछं इछामि" पछी "अप्पुठिठं" नो पाठ शिष्य कहे.

"अप्पुठिठंहि अप्रिंतर देवसिअं खामेमि" कहेतां हुं दिवसनी अंदर थएला अतिचारोने क्षमाववाने तैयार थयेलो छुं पछी गुरु कहेशे के "खामेह" त्यारे शिष्य कहेशे के "इछं खामेमि" एम कही पृथ्वीतलपर स्पर्श करीने, तथा मुहुपत्तिथी मुख ढांकीने नीचे प्रमाणे पाठ कहे.

"जं किंचिअपत्तियं" थी मांडीने "तस्स मिछामि डुक्कडं" सुधिनो पाठ जणे तेनो अर्थ नीचे प्रमाणे जाणवो.

जे कंइ आपना संबंधमां मने, अने मारा संबंधमां आपने, आहारमां, पाणीमां विनयमां, वैयावछमां, आलापमां, संलापमां, उच्चासनमां, समासनमां, वच्चे बोलवामां, आपना गयाबाद विशेष बोलवामां, आपने अप्रीति, अथवा परप्रीति, थइ होय, अथवा जे कंइ मारो विनय सूक्ष्म अथवा बादर प्रणष्ट थयो होय, अने ते आप जाणता हो, अने हुं नहीं जाणतो होउं, तेनो हुं "मिथ्याडुःकृत" देउं छुं.

हवे ते प्रतिक्रमण बे प्रकारनुं, पेहेलुं ध्रुव, अने बीजुं अध्रुव. जरत अने ऐरवतमां पेहेला अने छेल्ला तीर्थंकरोना तीर्थमां, अपराध थाय, अथवा न थाय, तो पण बन्ने वखत पडिकमणुं करवुं, ते ध्रुव अने बाकीना बावीश तीर्थंकरोनां तीर्थोमां, तथा महाविदेहमां तो कारण पड्येज प्रतिक्रमण करवुं, ते अध्रुव जाणवुं.

हवे कायोत्सर्गनुं स्वरूप कहे छे.

ते कायोत्सर्गना बे जेदो जाणवा, एक चेष्टानो, अने बीजो अजिजवनो. चेष्टानो एटले गमनागमनादिकमां इर्यावही पडिकमवामां कराय छे

ते; अने अभिभवनो एटले उपसर्गने जीतवामाटे जे कराय छे, ते. हवे चेष्टा कायोत्सर्ग, आठ, पचीश, सत्तावीश, त्रणसें, पांचसें, अने एक हजारने आठ श्वासोश्वासनो थाय छे. अने अभिभवकायोत्सर्ग तो बाहुबलिनी पेठे मुहूर्तथी मांडीने संवत्सरसूधि कराय छे. ते कायोत्सर्गना त्रण भेदो छे, उभा रहीने, बेठां बेठां, अने सुतां सुतां, एवी रीतें त्रण प्रकारें ते कायोत्सर्ग कराय छे, अने तेउना दरेकना पण चार चार भेदो छे.

हवे ते कायोत्सर्ग एकवीश दोषरहित करवो. ते एकवीश दोषो नीचे प्रमाणे जाणवा.

घोडानी पेठे एक पग जरा उंचो करीने कायोत्सर्ग करवो, तेने पेहेलो घोटकदोष जाणवो. पवनथी चलायमान थएली लतानी पेठे शरीर कंपावीने जे कायोत्सर्ग करवो, तेने बीजो लतादोष जाणवो, थंभाने अवलंबीने करवो, तेने त्रीजो स्थंभदोष जाणवो. भींतने अठंगीने करवो, तेने चोथो कुड्यदोष जाणवो. मालपर मस्तक अठंगीने करवो, तेने पांचमो मालदोष जाणवो. गुह्यदेशपर हाथ राखीने करवो, तेने छठो शबरीदोष जाणवो. कुलस्त्रीनी पेठे मस्तक नीचे नमावीने करवो, तेने सातमो वधूदोष जाणवो. पग पोहोला करीने, अथवा पगो मेलवीने जे करवो, तेने आठमो निगडदोष जाणवो. नाभिनी उपरथी छेक धुंटणसुधी चोलपट्टो बांधीने करवो, तेने नवमो लंबोत्तर दोष जाणवो. दंश (डांस) आदिकने दूर करवा माटे, अथवा अज्ञानथी छेक स्तन सुधि चोलपट्टो बांधीने करवो, तेने दशमो स्तनदोष जाणवो. पगनी तलीउं मेलावीने, तथा आगलना भागो छुटा राखीने, अथवा आगलना भागो मेलावीने, अने तलीउं छुटी राखीने जे करवो, तेने अग्यारमो शकटोर्द्धिका दोष जाणवो. साधवीनी पेठे कपडांथी शरीरने ढांकीने जे करवो, तेने बारमो संयतिदोष जाणवो. रजोहरणने अगाडी करीने करवो, तेने तेरमो खलीन दोष जाणवो. बीजा आचार्योना मत प्रमाणे घोडानी पेठे उंचुं नीचुं मस्तक करवुं, तेने खलीन दोष कहेलो छे. कागडानी पेठे आम तेम आंखो चलावीने दिशाउ तरफ जोवुं तेने चौदमो वायसदोष जाणवो. चोलपट्टो संवरीने करवो, तेने पंदरमो कपित्थदोष जाणवो. भूत वलगेलानी पेठे मस्तक कंपावीने जे करवो, तेने सोलमो

शीर्षोत्कंपितदोष जाणवो. मुंगानी पेठे अप्रगट शब्दो बोलीने करवो, तेने सत्तरमो मूकदोष जाणवो. आलापक गणवामाटे आंगलीउं चलावीने करवो, तेने अढारमो अंगुलीदोष जाणवो; व्यापारांतरने निरूपण करवा माटे भ्रुकुटीनी संज्ञा करीने जे करवो, तेने उंगणीशमो भ्रूदोष जाणवो. वारुणीनारनी पेठे, बडबड शब्द करीने जे करवो, तेने वीशमो वारुणीदोष जाणवो. (दारुडीयानी पेठे घूर्णायमान थइ करवो तेने वारुणीदोष जाणवो, एम पण केटलाक आचार्योनो मत छे.) होठ हलावीने जे करवो, तेने एकवीशमो अनुप्रेक्षादोष जाणवो.

हवे प्रत्याख्याननुं स्वरूप कहे छे.

प्रत्याख्यानना बे भेदो जाणवा, मूलगुणरूप अने उत्तरगुणरूप. मूल गुणो एटले यतियोनां महाव्रतो, तथा श्रावकोनां अणुव्रतो, अने उत्तर गुण एटले यतिउनां पिंडविशुद्धि आदिक, तथा श्रावकोनां शिक्षाव्रतो. शिष्य जाणकार एवा गुरुनी पासे प्रत्याख्यान करे. तेना पण चार भांगा जाणवा; बन्ने जाणकार होय, ते पेहेलो भांगो, गुरु जाणकार अने शिष्य अज्ञानी ए बीजो भांगो, शिष्य अने गुरु बन्ने अज्ञानी ए त्रीजो भांगो, गुरु अज्ञानी अने शिष्य जाणकार ए चोथो भांगो जाणवो. ते प्रत्याख्यानना नोकारसी, पोरसी गंठसी मुठसी आदिक दश भेदो जाणवा.

नोकारसी एटले सूर्य उग्यापछी, नवकारगणी प्रत्याख्यान पालवुं, ते पौरुषी एटले पुरुषप्रमाण छायासुधिना कालसुधि प्रत्याख्यान पालवुं ते. मेघ आदिकथी जो ते छायानी खबर न पडे, तो साधुनां वचनथी अथवा सर्व समाधिनी प्रतीतिथी कदाच ते पौरुषीथी पहेलां पण भोजन करवामां दोष नथी; पण जो खबर पडे तो, अर्ध जमतां पण भोजन बंधकरवुं, अने पछी पौरुषी थया बादज जमवुं. अने तेम जाणतां छतां भोजन करे तो भंग थयो जाणवो. तथा दिवसना अर्धाभागसुधिनुं जे प्रत्याख्यान, ते "सार्द्ध पौरुषी" प्रत्याख्यान जाणवुं. एकज वखत, अथवा एकज आसनपर बेसीने जमवुं, ते एकासन जाणवुं. तथा मुख अने हाथ शिवाय, बीजां अंगोपांग हलाव्या विना जे भोजन करवुं, ते एकस्थान जाणवुं. घृत आदिक विगयोथी रहित जे एक वखतनुं भोजन, ते आचाम्ल जाणवुं. त्रिविध अथवा चतुर्विध आहारनुं जे पच्चखाण, ते अ-

कक अथवा उपवास जाणवो दिवसना छेल्ला भागें अथवा भवना छेल्ला भागें जे प्रत्याख्यान करवुं, ते चरम प्रत्याख्यान जाणवुं. गाय, भैंस, बकरी, ऊंटणी, अने गाडरनां दूध, तथा गाय, भैंस, बकरी, अने गाडरनुं, माखण, ऊंटणीनां दूधनुं माखण थतुं नथी. तथा तल, अलसी, कुसुंब, अने सर्षवनुं तेल, पिंड अने द्रवरूप गोल, काष्ट, अने पिष्टथी उत्पन्न थएलुं मद्य, माक्षिक, कौत्तिक, अने भमरा संबंधिनुं मद्य, जलचर, खेचर, अने स्थलचर संबंधिनुं मांस; अथवा चर्म, रुधिर, अने मांस ए त्रण भेदो पण जाणवा. तथा पकान्न ए दश प्रकारनां पच्चखाणथी विगयनुं पच्चखाण थाय छे.

एवी रीतें गंठसी, वेढसी आदिक पच्चखाणो जाणवां.

एवी रीतें आवश्यक कर्या पछी,

न्याय्यः कालस्ततो देव, गुरुस्मृतिपवित्रितः ॥
निद्रामल्पामुपासीत, प्रायेणाब्रह्मवर्जकः ॥ १३० ॥

अर्थः— रात्रिनो पेहेलो पोहोर, अथवा अरधी रात्रिसुधि स्वाध्यायादिक कर्या बाद, देवगुरुना स्मरणथी पवित्र थइने, एटले चउसरण आदिक भणीने, प्रायः मैथुनरहित, अल्प निद्रा श्रावकें करवी.

निद्राछेदे योषिदंग, सतत्वं परिचिंतयेत् ॥
स्थूलभद्रादिसाधूनां, तन्निवृत्तिं परामृशन् ॥ १३१ ॥

अर्थः— रात्रिवित्या बाद, निद्रा उडते छते, स्थूलभद्रादिक साधुउंए जेम स्त्रीउंनो त्याग कर्यो छे; तेनो विचार करतां थकां, स्त्रीउंनां अंगोनुं स्वरूप विचारवुं.

ते स्थूलभद्रजीनुं चरित्र नीचे प्रमाणे जाणवुं.

एक पाटलीपुत्र नामें उत्तम नगर छे; त्यां छखंड पृथ्वीनो राजा, तथा लक्ष्मीनो तो जाणे पतिज होय नहीं, एवो, तथा नाश करेल छे, वैरीरूपी कंद जेणे एवो नंद नामें राजा हतो; तेने लक्ष्मीना तो आवास सरखो, तथा बुद्धिनो तो भंडार, एवो शकटाल नामें मंत्री हतो. तेने, विनय आदिक गुणोनो तो स्थानक समान, तथा अत्यंत तीक्ष्ण बुद्धिवालो, तथा चंद्र सरखी उत्तम कांतिवालो, स्थूलभद्र नामें मोटोपुत्र हतो.

तथा भक्तिमंत, अने नंद राजाना हृदयने अत्यंत आनंद आपनारा गो-शीर्षचंदन सरखो, बीजो तेने श्रीयक नामें पुत्र हतो. ते शेहेरमां रूपनी शोनाथी उर्वशी सरखी, तथा वश करेल छे, जगतनां पण चित्तो जेणे, एवी, तथा कामदेवने जीवाडवानी तो औषधिरूप एवी कोशा नामें वेश्या हती. तेणीने घेर, विविध प्रकारना जोगो जोगवतो थको, तथा तेणीमां-ज हमेशां तन्मन थइने, स्थूलनद्र त्यां बार वर्षोसुधि रह्यो. श्रीयक तो नंदराजानुं जाणे बीजुं हृदयज होय नहि, एवी रीतें अत्यंत विश्वासपात्र थइने, राजानो अंगरक्षक थयो.

हवे तेज नगरमां कवि, वादी, वैयाकरणी विगेरेमां शिरोमणि सरखो वररुचि नामें एक मोटो ब्राह्मण रहेतो. ते वररुचि हमेशां नवां नवां उत्तम एकसोने आठ काव्यो पोते पोतानी मेले बनावीने राजानी स्तुति करवा लाग्यो. आ मिथ्यादृष्टि छे, एम जाणीने मंत्रीए ते वररुचिनी कोइ दहाडो पण प्रशंसा करी नही, तेथी राजा तेनापर जो के तुष्ट थयो हतो, तो पण तेने दान आपतो नही. पछी वररुचियें पोताने दान नहीं मलवानुं कारण जाणीने तेणे मंत्रीनी स्त्रीनुं आराधन करवा मांड्युं. पछी एक दहाडो ते मंत्रीनी स्त्रीयें खुशी थइने तेने कह्युं के, तारे जे कंइ कार्य होय, ते मने कहे ? त्यारे तेणें कह्युं के, तमारो स्वामी मारा काव्योनी राजा पासे प्रशंसा करे, एटलुं मारे जोइये छीयें. पछी तेणीए तेना उपरोधथी ते वात पोताना स्वामिने कही, त्यारे मंत्रियें कह्युं के, ते मिथ्यात्वी छे, माटे तेनी प्रशंसा हुं शी रीतें करी शकुं ? पछी तेणीए घणो आग्रह करवाथी मंत्रियें ते वात कबुल करी. केम के, अंध, स्त्री, बालक, तथा मूर्खनो आग्रह डुस्त्यज छे. पछी ते वररुचि ज्यारे राजा पासे आवी काव्यो बोलवा लाग्यो, त्यारे मंत्रियें तेनी प्रशंसा करी; अने तेथी राजायें पण संतुष्ट थइने, तेने एकसो ने आठ सोनामोहोरो आपी; केम के, राजाने जे माननीय होय, तेनी अनुकूल एवी वाणीथी पण जीवित मले छे. पछी तो राजा तेने हमेशां एकसो आठ सोनामोहोरो देवा लाग्यो, त्यारे मंत्रियें राजाने कह्युं के, आ आप शुं करो छो ? त्यारे राजायें कह्युं के, फक्त तें करेली तेनी प्रशंसाथीज हुं तेने दउं छुं, केम के जो मारी जाणेज तेने आपतो होउं, तो पेहेलांज तेने शामाटे न-

हि आपता ? त्यारे मंत्रियें कह्युं के, में कंइ तेनी प्रशंसा करी नथी, पण आपनां करेलां काव्यो उत्तम छे, एम में प्रशंसा करी छे. त्यारे राजाए कह्युं के, ते ब्राह्मण बीजानां करेलां काव्यो, अहीं पोतानां तरिके देखावीने स्तुति करे छे, ते बाबतनी खातरी शुं ? त्यारे मंत्रिये कह्युं के, आ ब्राह्मण जे काव्यो बोले छे, ते काव्यो तो छोकरीउं पण जाणे छे, अने तेनी हुं आपने आवती काले प्रज्ञाते खातरी करावी आपीश.

हवे ते मंत्रिने, यक्षा, यक्षदत्ता, भूता, भूतदत्ता, एणिका, वेणा, तथा रेणा, नामें सात महाबुद्धिमती पुत्रियो हती.तेउंनी बुद्धि एवी हती के, पेहेली एकवार कहेलां याद राखी शके तेवी हती, तथा एवी रीतें ते सघली अनुक्रमें बे, त्रण, चार, पांच, छ अने सातवार कहेलुं याद राखी शके तेवी हती. हवे ते मंत्री, ते साते कन्याउंने पोतानी साथे बीजे दिवसे राजानी पासे लेइ गयो, अने त्यां तेमने आडो पडदो बंधावीने राखीयो. पछी वररुचि त्यां आवीने पोताना नवा बनावेला एकसोने आठ श्लोको बोली गयो; अने ते कन्याउंए पण अनुक्रमें ते बोली देखाड्या. तेथी राजाए गुस्से थइ, वररुचिने दान आपवुं बंध कर्युं, केमके मंत्रियोना उपायो निग्रह अनुग्रह करवामां समर्थज होय छे.

हवे वररुचियें त्यांथी जइने, गंगानदीमां एक यंत्र गोठव्युं, अने तेनी अंदर एकसोने आठ सोनामोहोरोने लुगडामां बांधीने राखी. तथा पछी प्रज्ञातमां गंगा नदीमां स्नान करीने, ते ते यंत्रने पगथी दाबवा लाग्यो, अने तेथी ते सोनामोहोरोनी थेली उछलीनें तेना हाथमां पडवा लागी. एवी रीतें हमेशां तेम करवाथी, लोको ते जोइने आश्चर्य पाम्या, तथा ते वात राजाए लोकोना मुखथी सांभलीने मंत्रीने कही. त्यारे मंत्रीए कह्युं के, जो एम होय, तो आपणे प्रज्ञातमां त्यां जइ नजरे जोइ खातरी करीशुं; राजाए पण तेम करवाने कबुल कर्युं. पछी संध्याकाले मंत्रिए एक गुप्तमाणसने नदीने कांठे तेनी तपास करवा मोकल्यो, अने ते माणस पण पक्षीनी पेठे जेम कोइ जोइ शके नहि, तेम झाडीमां भराइने बेठो. पछी ते वखते वररुचि पण गुप्तरीतें त्यां जइ, नदीना पाणीमां सोनामोहोरोनी थेलीराखीने, पाछो घेर गयो. पछी पेला गुप्त पुरुषें तेना (वररुचिना) जीवित सरखी ते थेलीने लेइने, गुप्तरीतें

मंत्रीने आवीने सोंपी. पछी प्रभात काले मंत्री पण ते थेली पोतानी सा-
थे गुप्तपणें राखीने, राजानी साथे गंगाने किनारे गयो, तथा ते वखते
वररुचि पण त्यां आव्यो. ते वखते ते मूढ वररुचि पण, राजाने जोवा
आवेलो जाणीने, पोतानी उत्कृष्टतानुं मान लावीने, विस्तारसहित गं-
गानी स्तुति करवा लाग्यो. ते स्तुति कर्याबाद तेणें पगथी यंत्र चलाव्युं,
पण सोनामोहोरनी पोटली तो तेना हाथमां आवीने पडी नहीं; पछी तो
ते हाथथी करीने ते पोटली शोधवा लाग्यो, पण नहीं जडवाथी मौन र-
ह्यो. पछी मंत्रीश्वरे कह्युं के, तारुं थापण तरिके राखेलुं द्रव्य पण गंगा
केम आपती नथी? के तारे आवी रीतें ते शोधवुं पडे छे!!! माटे हवे
ओलखीने तारी आ सोनामोहोरोनी थेली संभाल? एम कही मंत्रीश्वरें
तेना हाथमां ते थेली आपी. ते सोनामोहोरोनी पोटली जोइने, तेनी
तो मृत्युथी पण वधारे विकट दशा थइ पडी. पछी मंत्रीए राजाने कह्युं
के, आ ठगारो ब्राह्मण लोकोने ठगवा माटे संध्याकाले अत्रे ते सोना-
मोहोरोनी थेली राखी जाय छे, अने प्रभातें आवीने पाछी ग्रहण करे
छे. ते सांभली राजाए कह्युं आ कपट ठीक पकड्युं, एम कही आश्चर्यथी
प्रफुल्लित नयनोवालो थइने राजा पोताने घेर गयो. हवे वररुचि पण
मनमां ईर्ष्या लावीने, पोतानुं वैर वालवानी इच्छा करवा लाग्यो, तथा
तेथी मंत्रीना घरनी सघली वातो, मंत्रीनी एक दासीने मलीने पुछवा
लाग्यो. एक दहाडो ते दासीयें वररुचिने कह्युं के, श्रीयकना लग्नमहो-
त्सवमां मंत्रि, राजाने पोताने घेर जमाडवानो छे. अने ते दिवसें राजाने
भेट आपवा माटे ते शस्त्रो तैयार करावे छे, केम के, राजाओने ते भेट
अत्यंत प्रिय होय छे. हवे छलने जाणनारा एवा ते वररुचिए, ते छलनो
लाभ लेइने, छोकरांओने चणा आदिक आपीने शिखव्युं के, राजा एम
जाणतो नथी के, शकटाल मंत्री पोताने (राजाने) मारीने श्रीयकने
गादीए बेसाडवानो छे. पछी ते छोकरांओ तो हमेशां शेहेरमां जगोए ज-
गोए तेम बोलवा लाग्यां, ते वातनी लोकोना मुखथी राजाने खबर प-
डवाथी ते पण विचारवा लाग्यो के, जे वात बालको, अथवा स्त्रिओ बोले,
तथा जे अदृश्यवाणी थाय, ते वाणी जुठी पडती नथी. तेथी ते वातनी
खातरी करवामाटे. राजाए पोताना एक गुप्त माणसने घेर मोकल्यो;

पछी ते माणसें पण जेम हतो. तेम सघलो मंत्रिना घरनो वृत्तांत राजाने कही संजलाव्यो. पछी सेवावखते मंत्रियें आवीने जेवो राजाने नमस्कार कर्यो के, तुरत राजाए क्रोधथी तेना सन्मुखपण जोयुं नहीं. मंत्रीयें तुरत राजानो जाव जाणी लेइ, घेर आवी श्रीयकने कह्युं के, माराविषे कंइक बुरुं कोइयें राजाने समजाव्युं छे. माटे आ आपणा कुलनो अकस्मात् क्षय थवानो वखत नजदीक आवी पहोच्यो छे, पण जो हुं कहुं तेम तुं करे, तो सर्व कुलनुं रक्षण थइ शके तेम छे. माटे हवे ज्यारे हुं राजाने नमन करुं, त्यारें तारे मारुं मस्तक छेदी नाखवुं; अने पछी कहेवुं के, स्वामिनो अजक्त एवो पिता पण मारवानेज लायक छे. माटे घडपणथी मृत्युने योग्य थयेलो एवो हुं, जो आवी रीतें मृत्यु पामीश, तो तुं मारा कुलगृहनो स्तंजरूप थइने लांबा कालसुधि आनंद पामीश. ते सांजली श्रीयक आंखोमां आंसु लावी कहेवा लाग्यो के, हे तात, आवुं घोर कर्म तो, एक कसाइपण शुं करी शके खरो ? त्यारें मंत्रीश्वरें कह्युं के, एवो एवो विचार करीने तो, तुं केवल वैरीना मनोरथोने संपूर्ण करीश. माटे जेटलामां राजा कुटुंबसहित मने मारी नाखे नहीं, तेटलासुधीमां एक फक्त माराज नाशथी आखा कुटुंबनुं तुं रक्षण कर ? वली हुं मुखमां तालपुट नामें जेर राखीने राजाने नमस्कार करीश, तेथी मने हणवाथी तने पितृहत्यानुं पाप पण लागशे नहीं. पितानी एवी शिखामणथी तेणें ते अंगीकार कर्युं, अने ते प्रमाणेज कर्युं; आगामीकालना सुखमाटे बुद्धिमंतो पोताना नाश पर्यंत पण जयंकर कार्य करे छे. हवे ते जोइ राजाए श्रीयकने कह्युं के, हे वत्स! तें आ दुष्कर कार्य शुं कर्युं ? एवी रीतें राजाए संज्रमपूर्वक पूछवाथी श्रीयकें कह्युं के, ज्यारे आपें मारा पिताने दोषित जाण्या, त्यारें मारे तेमनुं मृत्यु करवुं पड्युं, केम के चाकरोए तो स्वामिना चित्तने अनुसारेज वर्तवुं जोइयें. वली चाकरो पोते ज्यांसुधि दोषोने जाणे, त्यांसुधिज तेउ तेना उपायमाटे विचार करे, पण ज्यारे स्वामी पोतेज ते दोषोने जाणे, त्यारे तेमां चाकरें विचार करवा जेवुं होयज नहीं. पछी शकटालनी सर्व और्ध्वदैहिकनी क्रिया कर्याबाद राजायें श्रीयकने प्रधानपदवी लेवा कह्युं. त्यारें श्रीयकें कह्युं के, मारो एक पिता तुल्य स्थूलजद्र नामें मोटो जा-

छे. अने पिताजीनी कृपाथी ते कोशा नामनी वेश्याने घेर रही, भोगविलासो भोगवे छे, अने तेम करतां तेने बार वर्षो वीती गयां छे. पछी राजाये स्थूलभद्रने बोलावीने मंत्रीपदवी लेवाने तेने कह्युं, के, हुं तेनो विचार करीने, ते मंत्रीपदवी लेइश. त्यारे राजायें कह्युं के, तुं आजेज विचार करी लेजे? ते सांभली स्थूलभद्र अशोक वनमां जइ, पोताना मनसाथे विचारवा लाग्या के, जे माणसो आवा मंत्रि आदिकनां कार्योमां जोडाय छे, ते लोको स्नान, भोजन, निद्रा आदिक सुखो अनुभवी शकता नथी. वली तेवा कार्योमां जोडायाथी, पोताना अने परनां राज्यनी चिंतामां पड्याथी, भरेला घडामां जेम पाणी, तेम स्त्री संबंधि सुखनो तो अवकाशज मली शकतो नथी. वली सघला स्वार्थोने तजीने फक्त राज्यकार्य करवाथी पण खल लोकोनो उपद्रव सहन करवो पडे छे. माटे पोताना शरीर अने द्रव्यना पण व्ययथी राज्यकार्य माटे ज्यारे यत्न करियें त्यारें बुद्धिमान् माणसें पोताना आत्मामाटेज शामाटे यत्न करवो जोइयें नहीं. एम विचारि तेणें पंचमुष्टिथी पोताना केशनो लोच कर्यो, तथा रत्नकंबलना दारा कहाडीने तेनो उंघो बनाव्यो. पछी महासत्ववान् एवा स्थूलभद्र मुनि तो, तुरत राजसभामां जइ, राजाने धर्मलाभ देइ, कहेवा लाग्या के, में तो आ विचार कर्यो!!! पछी संसाररूपी हाथीपर रोषयुक्त एवा ते स्थूलभद्र मुनि, गुफामांथी जेम केसरीसिंह, तेम तेराजसभामांथी निकलीने चालता थया ते जोइ राजायें विचार्युं के, कदाच कपट करीने आ पाछो वेश्याने घेर जतो नहीं, एम विचारि पोते झरुखामां चडी तेमने जोवा लाग्यो. त्यारे मडदाउथी दुर्गंध मारता एवा पण प्रदेशमां नासिका आडुं कपडुं राख्या विनाज जता, एवा स्थूलभद्र मुनिने जोइ राजायें पण पोतानुं मस्तक धुणाव्युं. तथा तेनां वखाण करी, पोतानी निंदा करवा लाग्यो. के, धिक्कार छे, मारा दुष्टविचारने!!! आ तो वीतराग माहात्मा छे.

हवे स्थूलभद्र मुनियें पण तुरतज श्रीसंभूतिविजय आचार्यनी पासे जइने, सामायिकना उच्चारपूर्वक दीक्षा अंगीकार करी. पछी राजायें श्रीयकनो हाथ पकडीने गौरवपूर्वक, तेने मंत्रीपदवीपर बेसाड्यो. पछी श्रीयक पण उत्तम न्यायपूर्वक शकटालनी पेठेज राज्यकार्य हमेशां संभा-

खवा लाग्यो. तथा विनयवंत एवो ते श्रीयक हमेशां कोशाने घेर जइने पण तेनी संज्ञाल लेवा लाग्यो, केम के कुलीन माणसो पोताना भाइना स्नेहथी, तेमनी स्त्रीनी पण संज्ञाल लेवाने चुकता नथी, ते कोशापण श्रीयकने जोइने स्थूलजद्रना वियोगथी पीडित थइ थकी, रुदन करवा लागी, केम के डुःखी प्राणीयो पोताना वहालांर्डने जोइने, पोतानुं डुःख सहन करी शकता नथी. पढी तेणीने श्रीयकें कह्युं के, हे आर्ये! आपणे शुं करीयें? आ डुष्ट वररुचियें मारा पिताने मरावबाथी आम थयुं ढे. माटे तारी बेहेन ङपकोशामां ज्यांसुधि ते डुष्ट रक्त रह्यो ढे, त्यांसुधिमां कंइक ते वैरनी प्रतिक्रिया करवामाटे तुं विचार कर? मारा विचारप्रमाणे ङपकोशाने समजावीने, ते वररुचिने मद्यपाननुं व्यसन कराव? पढी कोशायें पण जरतारना वियोगथी तथा देवरना कहेवाथी, ते वात कबुल करीने ङपकोशाने तेणीयें समजावी. पढी ङपकोशायें पण कोशाना हुकमथी वररुचिने व्यसनी कर्यो, केमके स्त्रीने वश थयेला माणसो शुं करता नथी? पढी एकदहाडो वररुचिने अत्यंत मद्यपान करावीने ङपकोशायें प्रजातमां ते वात कोशाने जइने कही. पढी श्रीयकें पण कोशाना मुखथी ते वृत्तांत सांजळ्यो, अने तेथी मानवा लाग्यो के, आजे तो पिताना वैरनो बदलो वालवानो वखत आवी चुक्यो ढे. हवे ते वररुचि पण शकटालना मृत्यु पढी हमेशां राजापासे आवतो जतो हतो. ते सेवावखते हमेशां राजदरबारमां राजापासे आवतो, अने राजा तथा लोको पण तेना तरफ सारी दृष्टिथी जोता. एक दहाडो नंदराजा शकटालना गुणोने संज्ञालीने विह्वल थयो थको, सजामध्ये श्रीयकने गद्गद स्वरथी कहेवा लाग्यो के, इंद्रनो जेम बृहस्पति, तेम मारो पण शकटाल मंत्री, जक्तिमान्, शक्तिमान् तथा महाबुद्धिवालो हतो. अने तेनुं तो दैवयोगें अकालमृत्यु थयुं माटे हवे हुं शुं करुं? तेना विना मारी आ सज्ञा पण शून्य लागे ढे. त्यारे श्रीयकें कह्युं के, हे राजन्! आपणे तेनुं हवे शुं करीये? आ डुष्ट दारुडीया वररुचिनुं ते सघलुं कार्य ढे. त्यारे राजायें कह्युं के, आ जट्ट शुं खरेखर मद्यपान करे ढे? त्यारे श्रीयकें कह्युं के, हुं आपने ते वातनी आवती काले खातरी करी आपीश. पढी बीजे दिवसे श्रीयकें, पोते शिखवी मुकेला माणस पासे, सज्ञामां बेठेला सघला माणसो

ने एकेक कमल सुंघवा अपाव्युं अने वररुचिने मिंढोलना फलना रस-
थी नावित थयेलुं कमल सुंघवामाटे अपाव्युं. अहो! आवां सुगंधि क-
मलो क्यांथी आव्यां? एम कही राजा आदिक सर्व सनासदो पोतानां
कमलो सुंघवा लाग्या. तेउनी पेठे वररुचि पण पोतानुं कमल सुंघवा ला-
ग्यो, के तुरत रात्रियें पीधेली मदिरानुं तेणें वमन कर्युं. धिक्कार छे, आ व-
धबंधनने उचित एवा दारुडीया ब्राह्मणने!!! एवी रीतें सघला लोकोयें
निर्नछना करवाथी, ते तुरत सनामांथी उठीने चालतो थयो. पछी तेणें
ब्राह्मणोपासे जइ प्रायश्चित्त माग्युं, तो ब्राह्मणोयें तपावेलुं सीसुं तेने पीवा-
नें कह्युं; तेथी मुखमां सीसुं तपावीने पीधुं, अने तेथी तुरतज ते मृत्युपाम्यो.

सिद्धांतरूपी समुद्रना पारने जोनारा, एवा स्थूलनद्र मुनिपण संनू-
तविजय आचार्यनी पासे रही दीक्षा पालवा लाग्या.

हवे तेम करतां एक दहाडो वर्षाकाल आवते छते, केटलाक मुनियो आ-
चार्य माहाराजने वंदन करीने नीचे प्रमाणे अनिग्रहो ग्रहण करता हवा.

एकें एवो अनिग्रह लीधो के, सिंहनी गुफाना द्वारपासे कायोत्सर्ग
करी चार महिनाउना उपवास करीने हुं रहीश. तथा बीजे एवो अनि-
ग्रह लीधो के, हुं तो दृष्टिविष सर्पना बिलना द्वारपासे कायोत्सर्ग करी
चार मासना उपवास करी रहीश. त्रीजे एवो अनिग्रह लीधो के, हुं
चार मास सुधि उपवास करीने, कायोत्सर्ग ध्यानथी कूपमंडुकना आ-
सनपर रहीश. ते साधुउने तेम करवाने योग्य जाणीने जेटलामां गुरुए,
तेमने तेम करवाने आज्ञा आपी, तेटलामां स्थूलनद्र मुनि पण गुरु पासे
आवी विनति करवा लाग्या के, कोशा नामनी वेश्याना घरमां, विचित्र
प्रकारना कामशास्त्रमां कहेलां कामिचित्रोथी चित्रित थयेली, जे चित्र
शाला छे, ते चित्रशालामां षड्रस नोजनयुक्त, केटलाक तपसहित हुं
चार महिना रहीश, एवो हुं अनिग्रह लेउं छुं. गुरुए तेमने पण उपयोग
थी योग्य जाणी तेम करवानी आज्ञा आपी, पछी तेउ सघला मुनिउ पो-
त पोताने स्थानकें गया.

हवे स्थूलनद्र पण कोशावेश्याने घेर गया, त्यां कोशा पण तेमने
आवता जोइ, उनी थइने हाथ जोडी तेमनी साथे आवी उनी; तथा
तेणीए मनमां विचार्युं के, केलना स्तंन सरखा साथलवाला आ स्थूलन-

द्र बलजारथी खिन्न थइने, अहिं पाछा आव्या जणाय छे, एम विचारि तेणीयें कह्युं के, हे स्वामिन्, आप जले पधार्या, तथा आपनुं हुं शुं कार्य करुं ? ते आप फरमावो ? आ शरीर, धन, परिवार विगेरे सघळुं आपनुंज छे. त्यारें स्थूलजद्रें कह्युं के, चतुर्मास सुधि रहेवा माटे तमो आ चित्रशाला मने आपो ? ते सांजली कोशाए पण कह्युं के, जले आप ते ग्रहण करो ? पछी तेणीए ते तैयार करीने आपवाथी स्थूलजद्र महामुनि पण कामनी जगोए धर्मनी पेठे तेमां दाखल थया. पछी ते वेश्या पण मुनिने षट्रस जोजन कराव्या बाद, तेमने क्षोजाववा माटे उत्तम श्रृंगार सजीने त्यां चित्रशालामां आवी. तथा तेमनी पासे बेसीने अप्सरानी पेठे विचित्र प्रकारना हावजावो करवा लागी. तथा आगल जोगवेलां इंद्रियोनां सुखो तथा कामविलासोने पण संजालवा लागी. एवी रीतें तेणीये मुनिने क्षोजाववामाटे जे जे उपायो कर्या, ते सघला उपायो, वज्रपर नखना लिसोटानी पेठे निष्फल थया. एवी रीतें ते हमेशां तेमने क्षोजावामाटे उपायो करवा लागी, पण ते महान् ! मुनि तो जरा पण क्षोजायमान थया नहीं; पण तेणीना उपसर्गथी तो, पाणीथी जेम वीजली, तेम आ महामुनिनो ध्यानरूपी अग्नि उलटो वृद्धि पाम्यो. पछी तो ते वेश्या पोतानी आत्मनिंदा करवा लागी के, आगलनी पेठे तारेविषे विलासनी इछा करती एवी मने धिक्कार छे. एम कही तेना चरणकमलें ते नमस्कार करवा लागी. ते मुनींद्रना इंद्रियोना जीतवावडे करीने, चमत्कार पामेली एवी ते कोशा वेश्याए, श्राविकापणाने अंगीकार करीने एवो अजिग्रह लीधो के, राजा तुष्टमान थइने कदाच मने कोइने आपे, तो ते एक पुरुषविना मारे बीजापुरुषनो नियम छे.

हवे ते चातुर्मास्य पुरुं थयाबाद पेला त्रणे साधुउ पोतपोताना अजिग्रहो संपूर्ण पालीने, गुरुपासे आव्या. पेहेलां सिंहगुफाना द्वारवाला मुनि आव्या. तेमने आवता जोइ, जरा गुरु उजा थइने केहेवा लाग्या के, अहो दुःकरकारक, तमो जले पधार्या. तेवीज रीतें बीजा बे मुनिउ आवते छते पण गुरुए तेमने तेवीज रीतें आदरमान आप्युं; केम के सरखी प्रतिज्ञा करनारने गुरु सरखुंज मान आपे छे. पछी ज्यारे स्थूलजद्र मुनि आव्या, त्यारे गुरुए उजा थइने तेमने कह्युं के, हे दुःकर-

दुःकरकारक महात्मा, तमो जले पधार्या. ते सांजली पेला त्रण मुनिओयें ईर्ष्या लावी विचार्युं के, अहो, गुरुए आ मंत्रिपुत्र होवाथी, तेमने वधारे मान आप्युं. वली आमने त्यां रही षट्रस जोजन कर्युं, तेमने कहे छे के, अहो दुःकरदुःकरकारक; माटे ज्यारे एम छे, त्यारें तो आपणे पण आवते चोमासे तेमज करीशुं. एवी रीतें मनमां ईर्ष्यायुक्त थइने, तेओए संयमपूर्वक आठ मास तो व्यतीत कर्या. पछी वर्षाकाल आवते छते, सिंहगुफाद्वारवालो मुनि गुरुपासे आवीने हर्षित थयो थको, एवो अजिग्रह करवा लाग्यो के, हे जगवन्, आ चोमासुं तो हुं कोशा वेश्याने घेर षट्रस जोजन करीने गुजारीश. त्यारें गुरुयें उपयोगपूर्वक विचार्युं के, आणें स्थूलजड्नी ईर्ष्याथी आ अंगीकार कर्युं छे, एम विचारि गुरुये तेने कह्युं के, हे वत्स! एवो महादुष्कर अजिग्रह तुं कर नहीं? केम के, तेवो अजिग्रह संपूर्ण करवाने तो मेरु सरखा स्थिर मनवाला स्थूलजड् मुनिज समर्थ छे. त्यारे ते मुनियें गुरुने कह्युं के, ते अजिग्रह मारे संपूर्ण करवो मुश्किल नथी, माटे हुं ते अवश्य संपूर्ण करीश. त्यारें गुरुयें कह्युं के, आ अजिग्रहथी तो उलटो तारा आगलना तपनो पण जंग थशे, केमके अत्यंत जार आरोपण कर्याथी उलटो गाओनो जंग थाय छे. पण ते मुनियें तो गुरुनुं वचन नहीं मान्युं; अने तुरत कामदेवनी जूमिसमान, एवा ते वेश्याना घरप्रत्ये गयो. तेमने जोइ वेश्यायें विचार्युं के, खरेखर आ मुनि थूलजड्नी ईर्ष्याथी अहीं आवेल छे, माटे मारे तेने जवसागरमांथी तारवो, एम विचारि, तेणीयें उजां थइने, तेमने नमस्कार कर्यो. पछी मुनियें पोताने रहेवामाटे कोशापासे ते चित्रशालानी मागणी करी, त्यारे वेश्यायें पण ते आपवाथी मुनि तेमां दाखल थया. पछी कोशा तेने षट्रस जोजन जमाडीने, मध्याह्नकालें तेनी परीक्षा करवामाटे उत्तम शृंगार आदिक सजीने तेनी पासे आवी. कमल सरखां नयनवाली एवी ते कोशाने जोइने मुनिनुं मन क्षोजायमान थयुं. केमके, तेवी स्त्री अने तेवुं जोजन कोने विकार न उपजावे? पछी मुनियें कामनी पीडाथी तेनी साथे विलास करवानी मागणी करी, त्यारे कोशायें कह्युं के, हे जगवन्, अमो तो वेश्या छयें, माटे जे कोइ धनआपे, तेनी स्त्री थइ शकियें. त्यारे मुनियें कह्युं के, तमारे तो अमा-

रापर कृपा राखवी जोइयें, केमके वेलुमां जेम तेल, तेम अमारी पासे कं-
इ धन होतुं नथी. त्यारे वेश्याये कह्युं के, नेपालदेशनो राजा, उत्तम मु-
निउने रत्नकंबल आपे छे, माटे ते तुं लाव? ते सांजली ते मुनि पण, मू-
र्खनी पेठे, वर्षाकालमां पण, जाणे कादवयुक्त जूमिमां पोताना व्रतने स्ख-
लना करावतो होय नहीं जेम, तेम स्खलना पामतो थको नेपालदेश तर-
फ चाल्यो. पछी केटलीक मुश्केलीउं वेठीने त्यां जइ, राजापासेथी रत्नकं-
बल मेलवीने पाछो वल्यो, मार्गमां तेने चोरोनो मुलक आव्यो; त्यारे
चोरोनो पालेलो पक्षी तेमने कहेवा लाग्यो के, कोइ बुरद आवे छे, त्यारे
चोरोये वृक्षपर राखेला पोताना माणसने पुछ्युं के कोण आवे छे? त्यारे
ते माणसें कह्युं के, कोइक जिक्षुक आवे छे, पछी अनुक्रमें ते मुनि ज्यारे
त्यां आवी पहोंच्यो, त्यारे तेउये तेने सारी रीतें तपास्यो, पण तेनी पासे-
थी कंइ नहीं मलवाथी, तेउये तेने जतो मेल्यो. त्यारे फरीने ते पक्षीयें
चोरोने कह्युं के, तेनी पासे कंइक मूल्यदार वस्तु छे, त्यारे चोरोयें तेने फ-
रीने पुछ्युं के, तुं सत्य बोल? तारी पासे शुं छे? त्यारे मुनियें कह्युं के,
वेश्याने माटे आ वांसमां रत्नकंबल राखेलो छे, ते सांजली चोरोना रा-
जायें पण तेने जतो मेल्यो. पछी ते मुनियें कोशापासे आवीने, तेणीने
ते रत्नकंबल आप्यो, त्यारे तेणीये तो तेने (रत्नकंबलने) शंकाराख्या
विना कादवयुक्त एवी घरनी खालमां फेंकी दीधो. त्यारें मुनियें कह्युं के,
हे शंखसरखा कंठवाली स्त्रि; आ महामूल्यवान् एवा रत्नकंबलने तें
आवा गंधाता कादवमां शामाटे फेंकी दीधो? त्यारे कोशाये कह्युं के हे
मूढ, आ रत्नकंबल माटे तुं ज्यारे शोक करे छे, त्यारे गुणरत्नमय एवा
पोताना आत्माने नरकनीअंदर पडतो जोइने, शामाटे तुं शोक करतो
नथी? ते सांजलीने उत्पन्न थयेल छे, वैराग्य जेने, एवो ते मुनि कहेवा
लाग्यो के, हे उत्तम स्त्रि; तें मारुं ठीक रक्षण कर्युं, तें मने संसारथकी
बचाव्यो छे. तथा हवे हुं गुरुपासे जइ, मारा आ अतिचारनी आलोयणा
लेइश; तने धर्मलाज थाउ? त्यारे कोशायें पण कह्युं के, ब्रह्मव्रतमां रहे-
ली एवी जे हुं, तेने पण जे तने खेद उपजाव्यो छे, तेनो मिथ्यादुःकृत
देउं छुं. वली फक्त तमारा बोधने माटेज में तमारी आ आशातना करी
छे, माटे तेनी क्षमा करवी; अने हवे तमो तुरत गुरुपासे जइ, तेमनी क-

व्रतने अंगीकार करो? पछी ते मुनिपण तुरत गुरुपासे जइने, तथा आलोचना लेइने अतिउत्कृष्ट तप तपवा लाग्या.

हवे एक दहाडो राजायें पण तुष्टमान थइने, ते कोशा वेश्याने कोइक रथ हांकनाराने आपी, तेथी तेणी पण राजाने आधीन होवाथी, तेने अनुरागविना सेववा लागी; पण तेनी पासे ते हमेशां कहेवालागी के, स्थूलजद्र शिवाय कोइपण पुरुष आ दुनिआमां उत्तम नथी. पछी ते रथी उद्यानमां जइने, पलंगपर बेसी, तेणीने रंजन करवामाटे पोतानी नीचे प्रमाणे चतुराइ देखाडवा लाग्यो. तेणें बाणथी करीने एक आंबानी लुंबने वींधी, तथा पछी ते बाणने बीजा बाणेथीवींध्युं, एवी रीतें दरेक बाणोने बाणथी वींधीने तेनी श्रेणि करी. तथा पछी कटारीथी तेनां मूलने छेदीने ते आंबानी लुंब त्यां बेठांज तेणीने आपी. पछी कोशायें पोतानी चतुराइ देखाडवामाटे, एक सर्षवनो ढगलो कराव्यो तथा तेमां सोइ राखीने, ते सोइने पुष्पोथी ढांकीने, तेनापर तेणीयें नाच कर्यो, तेमां, तेणीने सोइ लागी नहीं, तेम सर्षवनो ढग पण वीखरायो नहीं; ते जोइ तेथी खुशी थइने, तेणीने कहेवा लाग्यो के, माराथी आपी शकाय एवी तुं गमे ते वस्तु माग? हुं तने ते खरेखर देइश. ते सांजली कोशाये कह्युं के, आमां में शुं दुष्कर कार्य कर्युं छे? के जेथी तुं खुशी थयो; केमके अन्यासथी तो आथी पण दुष्कर कार्य निपजी शके छे. माटे आ आंबानी लुंबनुं, छेदवुं के आ मारुं नृत्य, ए कंइ दुष्कर नथी, पण स्थूलजद्रें शिख्याविना जे कार्य कर्युं छे, ते महादुष्कर छे. जे चित्रशालामां तेणें मारासाथे बार वर्षोसुधि जोगविलासो जोगव्या हता, तेज चित्रशालामां ते अखंडित व्रतथी रह्या छे. वली एक स्थूलजद्र मुनिविना स्त्रीना संचारथी बीजा योगिउंनुं चित्त क्षोजायमान थयाविना रहेवुं मुश्केल छे. वली स्त्रीनी संघातें एक दिवस पण बगड्याविना कोण रही शके तेम छे? पण स्थूलजद्र मुनि तो एवी रीतें चार माससुधि रह्या छे. ते सांजली रथिकें पुछ्युं के, जे स्थूलजद्रनां तुं आवी रीतें वखाण करे छे, ते महासत्ववान् स्थूलजद्र कोण छे? त्यारे कोशायें कह्युं के, जे स्थूलजद्रनुं हुं तारी आगल वर्णन करु छुं, ते नंदराजाना मंत्रि शकटालनो ज्येष्टपुत्र छे. ते सांजली रथिक पण संज्रमयुक्त हाथ जोडीने कहेवा लाग्यो के, ते स्थू-

स्थूलभद्र महामुनिनो तो हुं एक किंकर छुं. पछी कोशाये तेने वैराग्ययुक्त जाणीने धर्मदेशना संभलावी, ते सांभली ते पण मोहनिद्राने छोडीने बोध पाम्यो. पछी तेने बोध पामेलो जाणीने, तेणीये पोतानो अभिग्रह कही संभलाव्यो, ते सांभलीने ते पण विस्मयथी प्रफुल्लित लोचनवालो थइने कहेवा लाग्यो के, हे भद्रे, तें स्थूलभद्रजीना गुणो कहीने मने बोध पमाड्यो छे, माटे तें देखाडेला स्थूलभद्रना मार्गने हुं पण अंगीकार करीश. अने हे भद्रे, तारुं कल्याण थाओ ? अने तुं तारो अभिग्रह सुखे-थी पाल एम कही तेणें उत्तम गरुपासे जइ दीक्षा लीधी.

हवे भगवान् स्थूलभद्र पण तीव्र व्रतने पालता हता, एटलामां बार वर्षोनो दुकाल पड्यो. तेथी साधुओनो सघलो संघ समुद्रने कांठे जइने, एकठो मलीने कालरात्रिनी पेठे ते दुष्काल गालवा लाग्यो. त्यां सिद्धां-तोनो पाठ हमेशां गणातो नहीं होवाथी, साधुओ ते भूलीगया, केम के, पाठ कर्या विना बुद्धिमंतो पण भणेलुं भुली जाय छे. पछी सघलो संघ पाटलीपुत्र नगरमां मल्यो, अने त्यां जेओने जेटलुं याद हतुं, ते सघलुं ग्रहण कर्युं. त्यां संघें अग्यार अंगो तो मेलव्यां, पण दृष्टिवाद मल्यो न-हीं; पछी भद्रबाहु स्वामिने दृष्टिवादयुक्त जाणीने. तेमने बोलाववामाटे बे साधुओने त्यां मोकल्या. ते बन्ने मुनिओए त्यां भद्रबाहुस्वामी पासे ज-इ, नमस्कार करी हाथ जोडीने विनति करी के, आपने पाटलीपुत्रमां संघ बोलावे छे. त्यारे भद्रबाहु स्वामीए कह्युं के, में अहीं महाप्राणध्या-ननो प्रारंभ करेलो छे, माटे माराथी त्यां आवी शकाय तेम नथी. पछी ते मुनिओए पाछा पाटलीपुत्र जइने, ते वात संघने कही, त्यारें संघें बीजा बे मुनिओने बोलावीने कह्युं के, तमारे भद्रबाहुस्वामि पासे जइ, तेमने एम कहेवुं के, जे माणस संघनी आज्ञा पाले नहीं, तेने शुं दंड देवो ? ते अमोने कहो ? पछी ज्यारे ते एम कहे के, तेने "संघनी बहार कर-वो," त्यारें तमारे पण तेमने माटे स्वरें करीने कहेवुं के, तमो पण तेज दंडने लायक छो. पछी ते बन्ने मुनिओए त्यां जइने, आचार्य महाराजने पण तेवीज रीतें कह्युं; त्यारें आचार्य महाराजें कह्युं के, भगवान् एवो जे संघ, तेमणे एम नहीं करवुं, पण संघें मारापर कृपा लावीने, अहीं बुद्धिमान् शिष्योने मोकलवा, अने तेमने हुं अत्रे सात वांचना आपीश.

बेहेली वाचना हुं जिक्षाएथी आव्याबाद आपीश, बीजी कालवेलाए आपीश, तथा त्रीजी बहार जइने आव्याबाद आपीश; तथा एक विकाल वखते आपीश, अने त्रण आवश्यक वखते आपीश, अने एवी रीतें मारा कार्यने बाधा थयाविना संघनुं कार्य पण सिद्ध थशे. पछी ते साधुओए पाटलीपुत्रमां आवी, संघने ते वात कह्याथी, संघें पण स्थूलजद्रादिक पांचसें साधुओने त्यां मोकल्या. पछी आचार्य तेमने त्यां वाचना देवा लाग्या, पण तेमने ते अल्प लागवाथी, स्थूलजद्र शिवाय सघला साधुओ पाछा गया. पछी आचार्यें स्थूलजद्रजीने कह्युं के, तारे तो पाछा जवुं नथी ने? त्यारे स्थूलजद्रजीए कह्युं के, मारें जवुं नथी, पण हे जगवन्! हजु पण मने अल्पवाचना मले छे; त्यारें आचार्य महाराजें कह्युं के, मारुं ध्यान हवे संपूर्ण थवा आव्युं छे, तेथी ते थयाबाद तमारी इछाप्रमाणे तमोने वाचना आपीश. पछी ध्यान पूर्ण थयाबाद आचार्य महाराज तेमने तेमनी इछाप्रमाणे वाचना देवा लाग्या, अने एवी रीतें स्थूलजद्र महामुनि बे वस्तु ओछा एवा दशपूर्वो जण्या.

पछी एक दहाडो श्रीजद्रबाहु स्वामी पण विहार करता थका, पाटलीपुत्र नगरें आवीने बहारना जागमां उद्यानमां रह्या. ते वखतें स्थूलजद्रजीनी बेहेनो; के जेओए दीक्षा लीधी हती, तेओ स्थूलजद्रजीने वांदवामाटे त्यां विहार करती थकी आवीयो. त्यां आचार्य महाराजने वांदीने तेओए तेमने पुछ्युं के, हे प्रजु, स्थूलजद्रजी क्यां छे? त्यारें गुरुए कह्युं के, ते पाछलना जागमां छे, ते सांजली तेओ ते तरफ जवा लागीयो! तेओने आवती जोइने, स्थूलजद्रजीए तेमने आश्चर्य पमाडवामाटे पोतानुं सिंहनुं रूप कर्युं. ते सिंहने जोइने, तेओए जय पामीने, आचार्य महाराजने आवी कह्युं के, अमारा जाइने तो सिंह खाइ गयो छे. अने हजु ते त्यांज बेठो छे. त्यारें आचार्यें उपयोगथी जाणीने कह्युं के, तमो त्यां हवे जाओ, तमारा जाइ त्यां छे, त्यां हवे सिंह नथी. पछी तेओए त्यां जइ, तेमने पोताना मूल रूपमां जोइ, वांद्या; अने ते वखते मोटी बेहेन पोतानी वात करवा लागी.

श्रीयकें, पण अमारी साथेज दीक्षा लीधी हती, पण ते क्षुधावान् होवाथी एकासणुं पण करी शकतो न होतो. पछी पर्युषणा आवते छते,

में तेने कह्युं के, आजे तो तुं पौरुषी कर, तेथी तेणें ते पौरुषीनुं पच्चखाण कर्युं; पछी ज्यारे पौरुषी पूरी थइ. त्यारे में कह्युं के, आजें तो तुं पूर्वार्धनुं प्रत्याख्यान कर ? अने एटलो काल तो चैत्यपरिपाटीथी सुखें निकली जशे. पछी तेणें पण तेम कर्युं; पछी पूर्वार्ध थयाबाद में तेने अपरार्धनुं पच्चखाण करवानुं कहेवाथी, तेम पण तेणें कर्युं. पछी ते काल संपूर्ण थया बाद, में तेने कह्युं के, हवे तो रात्रि नजदीक आवी छे, माटे ते निद्रामां सुखें निकली जशे, माटे आजे तो तुं उपवासनुंज पच्चखाण करी ले; तेम कह्याथी तेणें पण तेमज कर्युं. पछी मध्यरात्रिए तो, क्षुधानी पीडाथी, देवगुरुनुं स्मरण करतो थको, ते मृत्यु पामीने देव लोकें गयो. पछी तो मारा मनमां बहु खेद थवा लाग्यो के अरे! में ऋषिनो घात कराव्यो, एम खेदयुक्त थइने हुंतो संघनी पासे प्रायश्चित्त लेवा गइ. त्यारें संघें कह्युं के, तें तो ते सघलुं शुद्ध जावथी कर्युं छे, माटे तेनुं तने प्रायश्चित्त होय नहीं. त्यारें में कह्युं के; मने साक्षात् जो जिनेश्वर प्रभु कहे, तो मने खातरी थाय, नहीतर थाय नहीं. पछी संघें तो मारेमाटे कायोत्सर्ग कर्यो, त्यारें शासनदेवीयें आवीने कह्युं के, तमारुं जे कार्य होय, ते मने कहो ? पछी संघें तेणीने कह्युं के, आ साधवीने जिनेश्वर प्रभु पासे लइ जाउ ? त्यारें देवीयें कह्युं के, गतिना निर्विघ्नपणा माटे तमो कायोत्सर्ग ध्यानमांज रहेजो ? पछी संघें ते वात कबुल करवाथी, ते शासनदेवी मने श्री सीमंधर स्वामिपासे लइ गइ, त्यां में तेमने वांद्या. पछी प्रभुए कह्युं के, जरतक्षेत्रथी आवेली आ साधवी निर्दोष छे; एम कही तेमणे मारापर कृपा करीने बे चूलिका बनावी आपी. पछी हुं पण संदेहरहित थइने, शासनदेवतासाथे अहीं आवी, अने संघने ते बन्ने चूलिकाउ समर्पण करी. एवी रीतें स्थूलजद्रजीने कहीने ते साधवीयो पोताने स्थानकें गइयो, अने स्थूलजद्रजी पण वाचना लेवामाटे गुरुपासे गया. त्यारें गुरुए तेमने अयोग्य कहीने वाचना आपी नहीं, त्यारें स्थूलजद्र मुनि पण दीक्षाना दिवसथी मांडीने पोताना अपराधो विचारवा लाग्या. एवी रीतें विचारिने तेणें गुरु महाराजने कह्युं के, हे जगवन्, मने कंइ पण अपराध स्मरणमां आवतो नथी; त्यारे गुरुए तेमने करीने स्मरण करवा कह्युं. त्यारे पोता-

नो अपराध स्मरण थयाथी, गुरुने चरणे पडीने कहेवा लाग्या के, हे ज-गवन्, ! फरीने एवो अपराध हुं करीश नहीं, माटे आटलो अपराध आप क्षमा करो? त्यारें आचार्य महाराजें कह्युं के, तुं फरीने तो अपराध नहीं करे ते ठीक, पण जे आ तें अपराध कर्यो, तेथी तने वाचना आ-पीश नहीं. पछी सघला संघें एकठा थइने, स्थूलजद्रजीने गुरुने चरणे नमावीने, तेमनी क्षमा फरीने मगावीने, शांत कर्या; केम के मोटाने प्रसादयुक्त करवामां मोटाज समर्थ होय छे. पछी आचार्य महाराजें सं-घने कह्युं के, जेवुं कार्य आ स्थूलजद्रजीए कर्युं, तेवुंज कार्य हवे पछीना मंदसत्व प्राणीउं पण करशे. माटे हवे बाकी रहेलां पूर्वनां पर्वो मारी पासेज रहो? बीजाउंने शिक्षामाटे आमने आ दोषनो दंड जले रह्यो. प-छी संघें आग्रहयुक्त कह्याथी, आचार्य महाराजें उपयोगथी जाण्युं के, पू-र्वोनो उछेद माराथी थवानो नथी; एम विचारि तेमणें स्थूलजद्रजीने कह्युं के, हवे तमारे बीजा कोइने आ जणाववां नहीं, एम कही तेमने वाचना आपी. पछी एवी रीतें स्थूलजद्र महामुनि सर्वपूर्वधर थया, तथा अनुक्रमें आचार्यपदवी मेलवीने जव्यजविकोने बोध करवा लाग्या. एवी रीतें स्थूलजद्र महामुनि, स्त्रीउंथी विरक्त थइने, तथा समतामां रहीने, अनुक्रमें देवलोकें गया; एवी रीतें बुद्धिमान् माणसें संसारसुखथी वि-रक्त थवानो विचार करवो.

एवी रीतें श्री स्थूलजद्र महामुनीश्वरनुं चरित्र जाणवुं.

हवे स्त्रीना अंगनुं स्वरूप कलापकें करीने कहे छे.

यकृच्छकृन्मलश्लेष्म, मज्जास्थिपरिपूरिताः ॥
स्नायुस्यूतावहीरम्याः, स्त्रियश्चर्मप्रसेविकाः ॥ १३२ ॥

अर्थः— हमेशां विष्टा, मेल श्लेष्म, मज्जा, हाडकां विगेरेथी जरेली, तथा स्नायुथी सीवेली, तथा तेथी, बहारथी रमणीय लागती, एवी स्त्री चांमडांनी बनावेली धमणसरखी छे.

बहिरंतर्विपर्यासः, स्त्रीशरीरस्य चेद्भवेत् ॥
तस्यैव कामुकः कुर्याद्, गृध्रगोमायुगोपनं ॥ १३३ ॥

अर्थः— माटे स्त्रीनां शरीरनो जो बहार अने अंदरना जागमां विप-

र्यास (फेरफार) थाय, (सारांशअंदर छे ते बहार देखाय) तोज तेनुं का-मुक माणसें गीध अने शियालीआनी पेठे रक्षण करवुं.

स्त्रीशस्त्रेणापिचेत्कामो, जगदे तज्जिगीषति ॥
तुच्छपिच्छमयं शस्त्रं, किं नादत्ते समूढधीः ॥ १३४ ॥

अर्थः– कामदेव ज्यारे स्त्रीरूपी शस्त्रथी आ जगतने जीतवानी इच्छाकरे छे, त्यारे ते मूढबुद्धि काम, तुच्छ एवुं पीछांरूप शस्त्र शामाटे ग्रहण करतो नथी.

वली निद्रा लीधाबाद नीचे प्रमाणे पण चिंतववुं.

संकल्पयोनिनानेन, हाहा विश्वं विडंबितं ॥
तदुत्खनामि संकल्प, मूलमस्येति चिंतयेत् ॥ १३५ ॥

अर्थः– संकल्प छे मूल जेनुं एवा आ कामदेवें, अरेरे ! समस्त जग-तने विडंबना करेली छे, माटे, तेनां संकल्परूपी मूलनेज हुं उखेडी नाखुं एवो पण विचार करवो. पुराणोमां पण हरिहरादिक देवोने कामदेवथी दूषित थएला कह्या छे.

वली निद्रा लीधाबाद नीचे प्रमाणे पण चिंतववुं.

योयःस्याद् बाधकोदोष, स्तस्य तस्य प्रतिक्रियां ॥
चिंतयेद्दोषमुक्तेषु, प्रमोदं यतिषु व्रजन् ॥ १३६ ॥

अर्थः– जे क्रोध, मान, मायादिक बाध करनारा दोषो छे, तेमने दूर करी वैराग्य, मैत्री, क्षमा आदिकने चिंतववा; अने ते दोषोथी मुक्त थ-एला एवा मुनियो प्रत्यें आनंदधारण करवो.

दुःस्थां भवस्थितिं स्थेम्ना, सर्वजीवेषु चिंतयन् ॥
निसर्ग सुखसंसर्ग ते, ष्वपवर्ग विमार्गयेत् १३७ ॥

अर्थः–सर्वजीवोनेविषे दुःखहेतु रूप एवी भवनी स्थितिने, स्थिरताथी विचारीने तेओने माटे पण हमेशां सुखना संसर्गवाला, एवा मोक्षनी मागणी करवी; अर्थात् ते जीवोने पण मोक्ष मले एवो विचार करवो.

वली निद्रा कर्याबाद नीचे प्रमाणे पण चिंतववुं.

संसर्गेऽप्युपसर्गाणां, दृढव्रतपरायणाः ॥
धन्यास्ते कामदेवाद्याः श्लाघ्यास्तीर्थकृतामपि ॥ १३८ ॥

अर्थः– देवादिकना करेला उपसर्गोनो संसर्ग होते उते पण, दृढताथी व्रतमां तत्पर रहीने जेउ तीर्थंकरोथी पण वखाणने प्राप्त थया छे एवा कामदेवादिक श्रावकोने पण धन्य छे.

हवे ते कामदेवनी कथा कहे छे.

गंगा नदीनी पासे, जिनमंदिरोनी ध्वजाउंथी जाणे धननी धाराउंज पडती होय नहीं, एवुं चंपा नामें नगर छे. ते नगरमां लक्ष्मीना तो कुलघर सरखो जितशत्रु नामें राजा हतो. ते नगरमां कामदेव नामें महा उत्तम बुद्धिवालो एक गृहस्थ हतो; ते मार्गपर रहेला वृक्षनी पेठे अनेक लोकोने आश्रयरूप हतो. तेने स्थिरभूत एवी लक्ष्मी सरखी, तथा रूप अने लावण्यथी शोभती, अने उत्तम आकृतिवाली भद्रा नामनी स्त्री हती. तेनी पासे अढार क्रोड सोनामोहोरो हती, तेमांथी छ क्रोड ते भंडारमां राखतो, छ क्रोड व्याजु फेरवतो, तथा छ क्रोडथी वेपार करतो, तथा तेनी पासे दश दश हजार गायोनां छ गोकुलो हतां.

एक दहाडो ते नगरीना पुण्यभद्र नामें उद्यानमां श्री वीरप्रभु विहार करता आवीने समोसर्या. ते वखतें कामदेव श्रावक पण पगे चालीने प्रभु पासे आव्यो, तथा अमृतना झरा सरखी श्रीवीरप्रभुनी देशना तेणें सांभली. त्यां अत्यंत शुद्ध एवी बुद्धियें करीने कामदेवें, देव, मनुष्य अने असुरोनी समक्ष श्रावकनां बारे व्रतो अंगीकार कर्यां. तेणें भद्रा शिवाय अन्यस्त्रियोनां, ते छ गोकुलो शिवाय बीजी गायोनां, तथा ते अढार क्रोड सोनामोहोरो शिवाय धननां पच्चखाण कर्यां. वली तेणें पांचसें हलो शिवाय बीजां वाहनोनां तेणें पच्चखाण कर्यां. वली तेणें एक गंधकाषाय्य शिवाय बीजां शरीर लुंछवाना वस्त्रनां, तथा लीली मधुयष्टी शिवाय दातणनां पण पच्चखाण कर्यां. क्षीरामलक फल शिवायनां फलोनां, तथा सहस्रपाक अने शतपाक शिवायनां तेलथी मर्दन करवानां पण तेणें पच्चखाण कर्यां. एवी रीतें केटलांक पच्चखाणपूर्वक तेणें प्रभुपासेथी श्रावक व्रत ग्रहण कर्यां. पछी पोताना मोटा पुत्रने कुटुंबनो भार सोंपीने पोते व्रतमां प्रमादरहित थयो थको, पौषधशालामां रहेवा लाग्यो. एवी रीतें ते ज्यारे पौषधशालामां रह्यो हतो, त्यारे तेने क्षोभाववामाटे मध्य रात्रियें कोइक मिथ्यादृष्टि देव, पिशाचनुं रूप करीने त्यां आव्यो. ते पि-

शाचना मस्तकपर, पाकेलां शालीनां पीळां सरखा कर्कश अने पीळी कांतिवाळा केशो लटकता हता. तेनुं कपाल तो घडानी ठीबडी सरखुं हतुं तथा तेनी भ्रुकुटी नोलीयानां पुंछडां सरखी हती, तथा तेना कानो सुपडा जेवा हता, तथा तेनी नाशिका तो जोडलां चूला सरखी हती. तेना होठ तो ऊंटना होठो सरखा हता, तथा दांतो तो हल सरखा हता, तथा जीभ तो सर्प सरखी हती, अने डाढी तो घोडाना पुंछडा जेवी हती. तपावेली मूष सरखी तो तेनी आंखो हती, तथा ऊंटनी डोक जेवी तो तेनी डोक हती. तेनी छाती तो नगरना दरवाजासरखी हती, तथा भुजाओ तो सर्पसरखी भयंकर हती, पाताल सरखुं तेनुं पेट हतुं, तथा नाभि तो कुवा सरखी हती, तथा तेनी जंघाओ तो ताडना वृक्ष जेवी हती, तथा तेना पगो तो पत्थर सरखा हता, तथा तेनो शब्द महाभयानक हतो. तेना मस्तकपर ऊंदरोनी माला हती, तथा कंठमां सरटो(काकीडा)नी माला हती, तथा कानउपर नोलीयां हतां, तथा बाजुबंधनी जगोये तेणें सर्पो विंटाळ्या हता. एवो ते पिशाच मियानमांथी तलवार कहाडीने कामदेवने केहेवा लाग्यो के, अरे दुष्ट, आ तें शुं मांड्युं छे? शुं तने पण स्वर्ग अथवा मोक्ष इछवानुं छे. ? माटे आ कार्यने तुं तजी दे? नहीं तर वृक्षपरनां फलनी पेठे, आ तीक्ष्ण तलवारथी तारुं मस्तक हमणांज उडावी देइश; एवी रीतनी तेनी तर्जनाथी पण कामदेव पोतानी समाधिथी जरा पण चलायमान थयो नहीं; केमके अष्टापद कंइ कुतराना शब्दोथी डरी जतो नथी, एवी रीतें तेने नहीं, क्षोभ पामेलो जोइने, ते दुष्ट देवें तेने एवी रीतें बे त्रण वार कह्युं. पछी तो ते दुष्टें हाथीनुं रूप कर्युं केम के खलमाणसो पोतानी दुष्टताथी विरमता नथी. ते दुष्टें जलसहित वर्षाद सरखुं पोतानुं ऊंचुं रूप कर्युं, ते जाणे तेनुं मिथ्यात्वज ढगलारूप थयुं होय नहीं, तेम शोभवा लाग्युं. पछी तेणें यमना भुजदंड सरखा पोताना बे दांतो ऊंचा कर्या. तथा पोतानी शुंढ ऊंची करीने तेणें कामदेवने कह्युं के, तुं सघलुं पाखंड तजी आप? कया पाखंडी गुरुयें तने आवी रीतें मोहमां नाख्यो छे? अने जो तुं आ पाखंड छोडशे नहीं, तो हुं तने आ शुंडादंडथी उछालीने अहींथी आकाशमां लइ जइश. तथा त्यांथी ज्यारे तुं पडीश, त्यारे आ दांतपर तने झीलीने, पछी नीचो नमी तारा टुकडे टुकडा करी

नाखीश. आवी रीतनां तेनां वचनो सांजलीने पण कामदेव पोताना ध्या-
नथी चलायमान थया नहीं. पछी ते डुष्टे तेने एवी रीतें बे चार वखत
कह्युं. पछी तो ते डुष्टे तेने पोतानी शुंडथी ऊंचे उछाल्यो, अने पाछो दां-
तपर फीली लीधो; तथा पगथी तेने कचरी नाख्यो, केमके एवा डुष्टो
अकार्य करतां जरा पण डरता नथी. पण कामदेवें ते सघलुं सहन कर्युं.
अने पर्वतनी पेठे स्थिर रहि जरा पण पोतानुं धैर्य तज्युं नहीं. पछी तो
ते दुष्टें पोतानुं सर्पनुं रूप कर्युं. तथा आगलनी पेठेज तेणें कह्युं, पण का-
मदेव तो तेथी जरा पण क्षोजायमान थयो नहीं. पछी ते दुष्टें तेना आ-
खा शरीरने पोताना शरीरथी वींट्युं. तथा पछी निर्दय थइने तेणें डंख
मार्यो, पण कामदेवें तो ध्यानमांज मग्नरहीने ते बाधाने गणकारीज न-
हीं. पछी तो ते देवें पोतानुं दिव्यरूप कर्युं, तथा तेने कहेवा लाग्यो के,
इंद्रे देवसजामांतारी प्रशंसा करी, ते माराथी सहन थइ नही; तेथी हुं
अहीं आव्यो माटे इंद्रें जेवी तारी प्रशंसा करी हती, तेवोज तुं छे, माटे
हवे में जे परीक्षामाटे तने उपद्रव कर्यो छे, तेनी मने क्षमा कर? एम
कही ते देव पण पोताने स्थानकें गयो, अने कामदेवें पण ग्रहण करेली
प्रतिमा पारी. उपसर्गोने सहन करनारा एवा ते श्रावकनी श्री वीरप्रजु-
यें पोते पण सजासन्मुख प्रशंसा करेली छे, केमके गुरुउ गुणोना वत्स-
लो होय छे. पछी बीजे दिवसें ते कामदेव श्रावक पण पौषध पारीने प्र-
जुने नमस्कार करवा माटे आव्यो. त्यारे प्रजुयें गौतमादिकोने कह्युं के,
आ श्रावकें गृहस्थधर्ममां पण उपसर्गोने सहन कर्या छे. माटे सर्व सं-
गना त्यागथी यतिधर्ममां प्रवृत्त थएला एवा तमारा जेवाउयें तो विशेषें
करीने तेवा उपसर्गो सहन करवा जोइयें. तेवार पछी ते कामदेव श्राव-
कें कर्मोने निर्मूल करनारी एवी दश श्रावकनी प्रतिमाउ अनुक्रमें निर्वा-
हित करी. पछी तेणें संलेखना करीने अनशनव्रत अंगीकार कर्युं, अने
उत्कृष्ट समाधिमां रही कालधर्मने पाम्यो; तथा त्यांथी अरुणाज विमान-
मां चार पल्योपमनी स्थितिवालो देव थयो, अने त्यांथी चवी महाविदेह
क्षेत्रमां जइ, मोक्षें जशे. माटे एवी रीतें उपसर्गोने पण सहन करीने,
व्रतमां तत्पर थयो थको, ते श्रावक तीर्थंकरोने पण श्लाघनीय (वखाण-
वायोग्य) थयो, माटे तेवा पुरुषोने धन्यवाद छे.

एवी रीतें कामदेवनी कथा जाणवी.

वली निद्रा कर्या बाद नीचे प्रमाणे पण चिंतववुं.

जिनोदेवः कृपाधर्मो, गुरवोयत्र साधवः ॥
श्रावकत्वाय कस्तस्मै, न श्लाघेताविमूढधीः ॥ १३९ ॥

अर्थः– जे श्रावकधर्ममां राग आदिकने जीतनारा देव छे, दया रूप धर्म छे, तथा पंचमहाव्रतधारी गुरुउ छे, एवा श्रावकधर्म प्रत्ये कयो बुद्धिमान् माणस श्लाघा करे नहीं ?

वली निद्रा उड्याबाद नीचे प्रमाणे मनोरथो करवा.

जिनधर्मविनिर्मुक्तो, माभूवं चक्रवर्त्यपि ॥
स्यां चेटोपि दरिद्रोपि, जिनधर्माधिवासितः ॥ १४० ॥

अर्थः– सम्यग् ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप जिनधर्मथी रहित थइने, हुं चक्रवर्त्ती पण न थउं तो सारुं, केम के ते नरकना हेतुरूप छे. अने जिनधर्मे करीने सहित एवो हुं कदाच दास अने दरिद्र थाउं तो पण सारुं.

त्यक्तसंगोजीर्णवासा, मलक्लिन्नकलेवरः ॥
भजन्माधुकरीं वृत्तिं, मुनिचर्यां कदा श्रये ॥ १४१ ॥

अर्थः– स्त्री आदिकना संगथी रहित थइने, जाणे वस्त्रवालो, तथा मेलयुक्त शरीरवालो थइने, तथा भ्रमरतुल्य आजीविकावालो थइने, हुं मूलोत्तर गुणरूप मुनिपणाने क्यारे धारण करीश ?

त्यजन् दुःशीलसंसर्गं, गुरुपादरजः स्पृशन् ॥
कदाहं योगमभ्यस्यन्, प्रभवेयं भवच्छिदे ॥ १४२ ॥

अर्थः– दुःशीलोनो संग तजीने, तथा गुरुना चरणोनी रजोने स्पर्श करीने, तथा रत्नत्रयरूप योगनो अभ्यास करीने, हुं भवना नाशने माटे क्यारे तैयार थइश.

महानिशायां प्रकृते, कायोत्सर्गे पुराद्बहिः ॥
स्तंभवत्स्कंधकषणं, वृषाः कुर्युः कदा मयि ॥ १४३ ॥

अर्थः– मध्य रात्रिए, नगरनी बहार कायोत्सर्ग ध्यानमां रहे छते

स्तंजनी पेठे मने जाणीने, बळदो पोताना स्कंधो क्यारे मारा शरीर साथे घसशे ? (आ प्रतिमाधारी श्रावकने आश्रीने जाणवुं.)

वने पद्मासनासीनं, क्रोडस्थितमृगार्जकं ॥
कदा घ्रास्यंति वक्त्रेमां, जरंतोमृगयूथपाः ॥ १४४ ॥

अर्थः— वननी अंदर पद्मासन करीने बेठेला, तथा खोळामां रहेलां ठे, हरणनां बच्चांउ जेने, एवा मने मुखनी अंदर घरडा एवा मृगना यूथपतिउ क्यारे सुंघशे ?

शत्रौ मित्रे तृणे स्त्रैणे, स्वर्णेऽश्मनि मणौ मृदि ॥
मोक्षे नवे नविष्यामि, निर्विशेषमतिः कदा ॥ १४५ ॥

अर्थः— शत्रुमां, मित्रमां, तृणमां, स्त्रीलंपटमां, वा (स्त्रीसमूहमां)सुवर्णमां, पत्थरमां, मणिमां, माटीमां, तथा मोक्षमां, अने नवमां पण तुल्यबुद्धिवाळो हुं क्यारे थइश ?

आ कुलकमां पेहेला श्लोकमां जिनधर्मनो अनुराग, बीजा श्लोकमां धर्मपरिग्रहनो मनोरथ, त्रीजामां यतिचर्या पर चडवानो मनोरथ, चोथामां कायोत्सर्गादिकनो मनोरथ, पांचमामां पर्वतोनी गुफा आदिकमां रहेवानो यतिचर्यानो मनोरथ, तथा ठठामां परम सामायिकना परिपाकनो मनोरथ कह्यो ठे.

हवे ते वातनो उपसंहार करता थका कहे ठे.

अधिरोढुं गणश्रेणिं, निश्रेणीं मुक्तिवेश्मनः ॥
परानंदलताकंदान्, कुर्यादिति मनोरथान् ॥ १४६ ॥

अर्थः— मुक्तिरूपी मेहेल पर चडवाने सीडी समान, एवी गुण स्थानकोनी श्रेणिपर चडवाने, मोक्षरूपी लतानां मूल समान एवा मनोरथो करवा.

इत्याहोरात्रिकीं चर्या, मप्रमत्तः समाचरन् ॥
यथावडुक्तवृत्तस्थो गृहस्थोऽपि विशुध्यति ॥ १४७ ॥

अर्थः— एवी रीतें दिवस अने रात्रिसंबंधि आचारने प्रमादरहित आचरतो थको, तथा उपर कहेला प्रतिमादिक वृत्तमां रह्यो थको, ग-

हस्थ पण शुक्लध्याने प्राप्त थाय छे. अर्थात् पापोथकी निर्मुक्त थाय छे.

हवे श्रावकोनी अग्यार प्रतिमाउनुं स्वरूप कहेछे. शंकादिक दोषरहित, केवल शांत अवस्थामां रहीने, जय, लोज, लज्जा आदिकथी रहित थइने, एक मास सुधि सम्यग्दर्शनने जे पालवुं, ते पहेली प्रतिमा जाणवी.

बे माससुधि अखंडित रीतें, पूर्वे कहेली प्रतिमाना अनुष्ठान सहित बारे व्रतने जे पालवां, ते बीजी प्रतिमा जाणवी.

त्रण मास सुधि बन्ने वखत अप्रमादी रहीने, पूर्वे कहेली प्रतिमाना अनुष्ठान सहित जे सामायिकमां रहेवुं, ते त्रीजी प्रतिमा जाणवी.

चार मास सुधि चार पर्वोमां, पूर्वे कहेली प्रतिमाना अनुष्ठान सहित, अखंडित रीतें, पौषध व्रतने जे पालवुं, ते चोथी प्रतिमा जाणवी.

पांच मासो सुधि चतुःपर्वीमां, घरमां, अथवा घरना द्वारमां, अथवा चोवटामां, परिषह अने उपसर्ग आदिकथी निष्कंप थइने, आगल कहेली प्रतिमाना अनुष्ठानपूर्वक आखी रात्रिसुधि कायोत्सर्ग ध्यानमां रहेवुं, ते पांचमी प्रतिमा जाणवी.

उपर कहेली प्रतिमाना अनुष्ठानपूर्वक छ मास सहित ब्रह्मचर्य व्रतमां रहेवुं ते छठी प्रतिमा जाणवी.

सात मास सुधि सचित्त आहारनो जे त्याग करवो ते सातमी प्रतिमा जाणवी.

आठ मास सुधि पोते बिलकुल आरंज नही करवो ते आठमी प्रतिमा जाणवी.

नव मास सुधि चाकरो पासे पण आरंज नहीं कराववो ए नवमी प्रतिमा जाणवी.

दश माससुधि पोताने माटे बनावेलो आहार नहीं जमवो ए दशमी प्रतिमा जाणवी.

अग्यार मासो सुधि स्त्रीआदिकना संगने तजीने, रजोहरण आदिकथी मुनिनो वेष धारण करीने, तथा केशोनो लोच करीने, पोताना गोत्रीउं आदिकमां रहीने, "प्रतिमाने प्राप्त थयेला एवा आश्रमणो पासकने जिक्षा आपो? एम बोलीने, धर्मलाज शब्दनां उच्चारण विना, उत्तम साधुनी पेठे जे आचरवुं, ते अग्यारमी प्रतिमा जाणवी.

हवे पांच श्लोकोयें करीने विधि विशेष कहे छे.

सोऽथावश्यकयोगानां, नंगे मृत्योरथागमे ॥
कृत्वा संलेखनामादौ, प्रतिपद्य च संयमं ॥ १४८ ॥
जन्मदीक्षाज्ञानमोक्ष, स्थानेषु श्रीमदर्हतां ॥
तदनावे गृहेऽरण्ये, स्थंडिले जंतुवर्जिते ॥ १४९ ॥
त्यक्त्वा चतुर्विधाहारं, नमस्कारपरायणः ॥
आराधनां विधायोच्चै, श्चतुःशरणमाश्रितः ॥ १५० ॥
इह लोके परलोके, जीविते मरणे तथा ॥
त्यक्त्वाशंसां निदानं च, समाधिसुधियोक्षितः॥ १५१ ॥
परीषहोपसर्गेन्यो, निर्निकोजिन नक्तिनाक् ॥
प्रतिपद्येत मरण, मानंदश्रावकोयथा ॥ १५२ ॥

॥ पंचनिःकुलकं ॥

अर्थः– श्रावक जो आवश्यक योगो करवाने अशक्त होय, तो मृत्युसमये पेहेलां संलेखना एटले शरीर अने कषायोनी तनुताने धारण करीने, तथा संयमने पण ग्रहण करीने, श्रीमान् अरिहंत प्रनुनां, जन्म, दीक्षा, ज्ञान अथवा मोक्षनां कल्याणकनां स्थानकें जइने, अथवा तेनो अनाव होय, तो घेर रहीने अथवा अरण्यमां जइने, जंतुरहित एवा स्थंडिल प्रदेशमां रहीने, नमस्कारमां तत्पर रही, चार प्रकारना आहारने तजीने, चउसरणनो आश्रय करीने तथा उंचे प्रकारें आराधना करीने, आ लोक, परलोक, जीवित तथा मरणमां पण, आशंसा अने नियाणानो पण त्याग करीने, तथा समाधिपूर्वक उत्तम बुद्धि लावीने तथा परिषह अने उपसर्गोथी पण निर्नय रहीने, आनंद श्रावकनी पेठे जिननक्तिमां लीन थइने समाधिमरणने अंगीकार करवुं.

हवे ते आनंद श्रावकनी कथा कहे छे.

उत्कृष्ट ऋद्धिथी बीजां शेहेरोने पण दूर करनार, एवुं वणिक्ग्राम नामें एक मोटुं नगर हतुं. त्यां प्रजाने पितानी पेठे पालनारो एवो, तथा

प्रख्यात एवो जितशत्रु नामें राजा हतो. ते शेहेरमां पृथ्वीपर आवेलो जाणे चंद्रज होय नहीं, एवो माणसोनां नेत्रोने अत्यंत आनंद आपनारो आनंद नामनो एक गृहपति हतो. तेने अत्यंत रूप अने लावण्य युक्त, चंद्रने जेम रोहिणी, तेम शिवनंदा नामनी स्त्री हती. तेनी पासे सोल क्रोड सोना मोहोरो हती, तेमांथी चार क्रोड भंडारमां, चार क्रोड व्याजु, तथा चार क्रोड व्यापारमां तेणें रोकी हती तथा तेनी पासे चार गोकुलो हतां.

हवे ते नगरथी ईशान खुणमां कोल्लाक नामना नगरमां तेनां घणां सगांसंबंधिउ रहेतां हतां. हवे ते वखते श्री वीरप्रभु पण विहार करता थका ते नगरनी समीपमां रहेला वनमां आवी समोसर्या. एवी रीतें प्रभुने त्यां आवेला जाणीने. जितशत्रु राजा परिवार सहित एकदम त्यां आव्यो. ते वखते आनंद पण पगे चालीने प्रभु पासे आव्यो, तथा अमृत सरखी मधुर एवी प्रभुनी देशना तेणें सांभली. पछी तेणें प्रभुने नमस्कार करीने बार प्रकारनां श्रावकनां व्रतो ग्रहण कर्यां. तथा पछी घेर आवीने तेणें पोतानी स्त्रीने ते सघलो वृत्तांत कही संभलाव्यो. ते सांभली शिवनंदा पण पोतानां कल्याण माटे, वाहनपर बेसीने, गृहीव्रत लेवा माटे उत्सुक थइ थकी प्रभु पासे गइ; तथा त्यां प्रभुने वंदन करीने तेणें गृहीव्रत अंगीकार कर्या पछी ते तुरत यानपर आरूढ थइने पोताने घेर गइ.

त्यार बाद गौतम स्वामियें प्रभुने नमस्कार करीने पुछ्युं के, हे भगवन्, आ आनंद श्रावक शुं यतिधर्मने अंगीकार करशे? त्यारे भगवानें कह्युं के, आ आनंद श्रावक घणा लांबा कालसुधि श्रावकधर्मने पालशे पछी अहींथी चवीने ते सौधर्म देवलोकमां अरुणाभ विमानमां चार पल्योपमनी स्थितिवालो देव थशे.

हवे एवी रीतें श्रावक व्रतने शुद्ध रीतें पालतां थकां आनंद श्रावकनां चौद वर्षो निकली गयां एक दहाडो रात्रिना शेष भागे ते विचारवा लाग्यो के, हुं अहीं घणां धनवान लोकोनो आश्रित छुं. अने ते चिंताथी अरिहंत प्रभुयें कहेला धर्ममां मारुं चित्त हजु बरोबर स्थिर रहेतुं नथी

एम विचारि प्रजातें जागृत थइने, तेणें कोल्लाक गाममां एक विशाळ पोषधशाळा करावी तथा सघळा सगा संबंधियोने बोलावी, जमाडीने पोताना मोटा पुत्रने सघळो घरनो कारजार सोंपी आप्यो. तथा पछी ते सघळाउनी रजा लेइने, पेली पौषधशालामां, धर्मकार्यो करवानी इछाथी गयो; तथा त्यां ते महात्मा कर्मनी पेठे शरीरने पण सूक्ष्म करतो थको धर्मकार्य करवा लाग्यो; तथा अनुक्रमें तेणें मोक्षरूपी मेहेलनी निश्रेणि सरखी सघळी श्रावकनी प्रतिमाउ पण अंगीकार करी; अने ते तपस्याथी तेनुं शरीर फक्त हाडकां अने त्वचारूपज रह्युं. एक दहाडो मध्यरात्रियें जागृत थइने ते मनमां विचारवा लाग्यो के, ज्यांसुधि हजु मारामां बेसवा उठवानी शक्ति छे, तथा प्रजुनुं नाम संजालवानी पण शक्ति छे, अने ज्यांसुधि मारा धर्माचार्य श्री वीरप्रजु पण विहार करता रह्या छे, त्यांसुधिमां संलेखना करीने, चतुर्विध आहारनां पण हुं पच्चखाण करुं. एम विचार करीने तेणें सघलुं पोताना विचार मुजबज अंगीकार कर्युं. एवी रीतें रह्यां थकां तेने अनुक्रमें अवधिज्ञान प्राप्त थयुं. ते वखतें श्रीवीर प्रजु पण विहार करता थका आवीने त्यां धर्मदेशना देवा लाग्या. ते वखते गौतम स्वामी पण जिक्षामाटे नगरमां गया, अने अन्न पाणी लेइने, आनंदथी जूषित थएला, एवा ते कोल्लाक शेहेरमां गया. त्यां तेमणे घणा लोकोने एकठा थएला जोया; ते लोको मांहोमांहे वातो करता हता के, श्रीवीर प्रजुना शिष्य, तथा पुण्यात्मा, एवा आनंद श्रावकें निरीह थइने अनशन ग्रहण कर्युं छे, हुं पण ते श्रावकनां दर्शन करुं, एम विचारि ते आनंद श्रावकनी पौषधशालाप्रत्ये गया. एवी रीतें अकस्मात् आवेला गौतमस्वामिने जोइने, आनंद श्रावकें अत्यंत आनंदयुक्त थइने तेमने वांद्या, अने कह्युं के, हे जगवन् आ तपस्याथी हुं उजो थवाने अशक्त छुं, तेथी सेवकपर कृपा करी आप अहीं पधारो, तो आपनां चरण कमलोने स्पर्श करीने हुं पवित्र थउं ते सांजळी गौतम स्वामिपण तेमनी पासे आव्या, त्यारे आनंद श्रावकें पण मन, वचन अने कायानी शुद्धिथी, तेमना चरणोने पोताना मस्तकथी स्पर्श कर्यो; तथा पुछ्युं के, हे जगवन्! गृहस्थने पण शुं अवधिज्ञान थाय छे? त्यारे गौतमस्वामियें पण हा पाडी. त्या-

रे आनंद श्रावकें पण कह्युं के, हे जगवन्, गुरुचरणोनी कृपाथी मने पण अवधिज्ञान थएलुं छे.

पछी गौतमस्वामी पण पोताने स्थानकें गया. एवी रीतें वीश वर्षसुधि श्रावकधर्मने रूडी रीतें पालीने आनंद श्रावक त्यांथी चवीने अरुणाजविमानमां देव थयो, तथा त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां जइ मोक्ष पाम्यो.

एवी रीतें आनंद श्रावकनी कथा जाणवी.

हवे बे श्लोकोयें करीने श्रावकनी उत्तर गति कहे छे.

प्राप्तः संकल्पेष्विंद्रत्व, मन्यद्वा स्थानमुत्तमं ॥
मोदतेऽनुत्तरप्राज्य, पुण्यसंजारजाक् ततः ॥ १५३ ॥
च्युत्वोत्पद्य मनुष्येषु, जुक्त्वा जोगान् सुदुर्लजान् ॥
विरक्तो मुक्तिमाप्नोति, शुद्धात्मांतर्जवाष्टकं ॥ १५४ ॥

अर्थः– एवी रीतें श्रावक व्रत पालीने, ते श्रावक सौधर्मादिक देवलोकमां इंद्रपणुं, अथवा बीजुं उत्तम स्थानक पामीने, अति उत्तम पुण्यशाली थइने आनंद पामे छे, तथा त्यांथी चवीने मनुष्य क्षेत्रमां उत्तम जाति कुलादिकमां जन्म लेइने, तथा त्यां पण दुर्लज एवा शब्द, रूप, रस, गंध आदिकना जोगोने जोगवीने, अंते विरक्त थइने, शुद्ध आत्मा एवो ते श्रावक आठ जवमां तो निश्चें करीने मोक्षने पामे छे;

हवे आ योगशास्त्रना त्रीजा प्रकाशने उपसंहरता थका कहे छे.

इति संक्षेपतः सम्यक्, रत्नत्रयमुदीरितं ॥
सर्वोऽपि यदनासाद्य, नासादयति निर्वृतिं ॥ १५५ ॥

अर्थः– एवी रीतें सम्यक् प्रकारें संक्षेपथी रत्नत्रयनुं वर्णन कर्युं, के जेने मेलव्या विना सर्व प्राणीयो मोक्ष मेलवी शकता नथी.

एवी रीतें परमार्हतश्रीकुमारपाल राजाथी सेवाएला, आचार्य महाराजश्री हेमचंद्रजीए बनावेला, अध्यात्मोपनिषत् नामना संजात पट्टबंध श्रीयोगशास्त्रना, पोतें करेला विवरणसहित त्रीजा प्रकाशनुं विवरण समाप्त थयुं.

श्रीजिनाय नमः

चतुर्थः प्रकाशः प्रारभ्यते.

हवे आत्मानुं रत्नत्रयनी साथेनुं एकत्वपणुं कहे छे.

आत्मैव दर्शनज्ञान, चारित्राण्यथवा यतेः ॥
यत्तदात्मकएवैष, शरीरमधितिष्ठति ॥ १ ॥

अर्थः— अथवा यतिने आत्माज दर्शन, ज्ञान अने चारित्र छे; कारण के, ते ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप एवो जे आत्मा ते शरीरनी अंदर रहे छे; केम के, जो ते आत्माथी भिन्न होय, तो ते मुक्तिनां हेतु रूप थइ शकतां नथी.

वली पण तेमनो आत्मासाथे ए भेदज देखाडता थका कहे छे.

आत्मानमात्मना वेत्ति, मोहत्यागाद्य आत्मनि ॥
तदेव तस्य चारित्रं, तज्ज्ञानं तच्च दर्शनं ॥ २ ॥

अर्थः— जे माणस मोहना त्यागथी पोतानी मेलेज आत्माने जाणे छे तेम अनाश्रवरूप होवाथी तेनुं चारित्र छे, तथा बोधिरूप होवाथी तेज तेनुं ज्ञान छे, तथा श्रद्धानरूप होवाथी तेज तेनुं दर्शन छे.

हवे आत्मज्ञाननीज स्तुति करे छे.

आत्माज्ञानभवं दुःख, मात्मज्ञानेन हन्यते ॥
तपसाप्यात्मविज्ञान, हीनैश्छेत्तुं न शक्यते ॥ ३ ॥

अर्थः— आत्माना अज्ञानथी उत्पन्न थएलुं दुःख आत्मज्ञानथीज हणी शकाय छे, केम के, आत्मज्ञानविना तपथी पण ते दुःख छेदी शकातुं नथी. वली पण आत्मानीज स्तुति करे छे.

अयमात्मैव चिद्रूपः, शरीरी कर्मयोगतः ॥
ध्यानाग्निदग्धकर्मा तु, सिद्धात्मा स्यान्निरंजनः ॥ ४ ॥

अर्थः— आ आत्मा चैतन्य स्वभाववालो छे, अने कर्मोना योगथी ते शरीरयुक्त थाय छे; पण ध्यानरूपी अग्निथी ज्यारे ते कर्मो बली जाय छे, त्यारे तेज आत्मा सिद्धस्वरूपवालो, तथा निर्मल एवो शरीररहित थाय छे.

अयमात्मैव संसारः, कषायेंद्रियनिर्जितः ॥
तमेव तद्विजेतारं, मोक्षमाहुर्मनीषिणः ॥ ५ ॥

अर्थः— कषाय अने इंद्रियोना विषयोथी पराजव पामेलो एवो आज आत्मा, नरक, तिर्यच, मनुष्य, देवरूप संसारनो हेतु छे, अने ज्यारे तेज आत्मा ते कषाय अने इंद्रियोना विषयोने जीते छे त्यारे तेनेज पंडितो मोक्ष कहे छे.

हवे कषायोनुं स्वरूप कहे छे.

स्युः कषायाः क्रोधमान, मायालोजाः शरीरिणां ॥
चतुर्विधास्ते प्रत्येकं,जेदैः संज्वलनादिजिः ॥ ६ ॥

अर्थः— प्राणिउने क्रोध, मान, माया अने लोज नामना, चार कषायो होय छे, अने ते प्रत्येकना संज्वलन, प्रत्याख्यानी, अने अनंतानुबंधि एवा चार जेदो होय छे.

हवे ते संज्वलन आदिकनुं लक्षण कहे छे.

पक्षं संज्वलनः प्रत्या, ख्यानोमासचतुष्टयं ॥
अप्रत्याख्यानको वर्षं, जन्मानंतानुबंधकः ॥ ७ ॥

अर्थः— संज्वलन कषाय एक पखवाडीयां सुधि रहे, प्रत्याख्यानी कषाइ, चार माससुधि रहे, अप्रत्याख्यानी कषाय एक वर्ष सुधि रहे, तथा अनंतानुबंधि कषाय छेक जीवितकालसुधि रहे.

वली पण तेमनुं लक्षणांतर कहे छे.

वीतरागयतिश्राद्ध, सम्यग्दृष्टित्वघातकाः ॥
ते देवत्वमनुष्यत्व, तिर्यक्त्वनरकप्रदाः ॥ ८ ॥

अर्थः— ते कषायो अनुक्रमें वीतरागपणुं, यतिपणुं, श्रावकपणुं, तथा सम्यग्दृष्टिपणाना नाश करनारा छे; अने देवपणुं, मनुष्यपणुं, तिर्यचपणुं तथा नरकपणुं अनुक्रमें देनारा छे. तेउमांथी ते चारे प्रकारना क्रोध, अनुक्रमें पाणीनी श्रेणि, धूडनी श्रेणि, पृथ्वीनी श्रेणि, तथा पर्वतनी श्रेणि सरखा छे; चारे प्रकारना मान तिनिश, लता, काष्टस्तंज, तथा पाषाणस्तंज सरखा छे. चारे प्रकारनी माया, अवलेखन, गोमुत्रिका, मेषशृंग, तथा

वंशीमूल सरखी छे; तथा चारे प्रकारनो लोज, हरिद्रा, खंजन, कर्दम तथा करमचीना रंग जेवा छे;

हवे तेउना दोषो कहे छे.

तत्रोपतापकः क्रोधः, क्रोधो वैरस्य कारणं ॥
ङुर्ग ते वर्त्तनी क्रोधः, क्रोधः शमसुखार्गला ॥ ए ॥

अर्थः—क्रोध शरीर अने मनने ताप आपनारो छे; तथा वैरनुं कारण छे, तथा ङुर्गतिमां जवानो तो मार्ग छे, तथा आत्मामां दाखल थता समतारूपी सुखने तो आडी आवेली जोगल समान छे.

हवे अग्निना दृष्टांतथी क्रोधनुं दूषण देखाडे छे.

उत्पद्यमानः प्रथमं, दहत्येव स्वमाश्रयं ॥
क्रोधः कृशानुवत्पश्चा, दन्यं दहति वा न वा ॥ १० ॥

अर्थः—क्रोध उत्पन्न थाय छे के, तुरतज पेहेलां तो पोतानो आश्रयज अग्निनी पेठे बाले छे, अने पछी बीजाने तो बाले अथवा न पण बाले. आठ वर्षे उणां एवां क्रोड पूर्व सुधि पण जे तप कर्युं होय, ते तपने क्रोधरूपी अग्नि तत्काल बाली जस्म करे छे. अत्यंत पुण्यना योगथी उपार्जन करेलुं जे समतारूपी अमृत, ते क्रोधरूपी जेरनो संसर्ग थयाथी दूषित थाय छे. विचित्र प्रकारना गुणोने धरनारी एवी चारित्ररूपी रचनाने क्रोधरूपी धुंवाडो मलीन करे छे. वृद्धि पामतो एवो क्रोध शुं अकार्य करी शकतो नथी? केम के द्वैपायनना क्रोधरूपी अग्निमां द्वारिका नगरी पण काष्ट तरीकें उपयोगमां आवी. क्रोध करवाथी पण जे कार्यनी सिद्धि थाय छे, तेमां क्रोधने कारणरूप मानवो नहीं, ते फल तो जन्मांतरमां मेलवेलां उत्तम कर्मोनुं जाणवुं. धिक्कार छे, ते प्राणिउने, के जेउ पोताना बन्ने जवनां ङुःख माटे तथा पोताना अने परना नाशमाटे क्रोध करे छे. जुउ के, पापी एवा क्रोधांध माणसो, पिताने, माताने, गुरुने; मित्रने, जाइने, स्त्रीने, तथा आत्माने पण (पोताने पण) मारी नाखे छे.

हवे ते क्रोधने जितवानो उपाय देखाडे छे.

क्रोधवह्नेस्तदाह्नाय, शमनाय शुजात्मजिः ॥
श्रयणीया क्षमैकैव, संयमारामसारणिः ॥ ११ ॥

अर्थः– क्रोध रूपी अग्निने तुरत शमाववा माटे पुण्यात्माउंये, संयम रूपी बगीचाने. पाणीनी नेहेर समान एवी एक क्षमानेज अंगीकार करवी.

हवे माननामना कषायनुं स्वरूप कहे छे.

विनयश्रुतशीलानां, त्रिवर्गस्य च घातकः ॥
विवेकलोचनं लुंपन्, मानोऽधंकरणोनृणां ॥ १२ ॥

अर्थः– विनय, ज्ञान, अने शील, तथा धर्म, अर्थ अने काम, ए त्रणे वर्गने घात करनारो एवो जे मान नामनो कषाय, ते माणसोनां विवेकरूपी लोचनने फोडीने तेउंने आंधला बनावे छे.

जातिलाजकुलैश्वर्य, बलरूपतपःश्रुतैः ॥
कुर्वन्मदं पुनस्तानि, हीनानि लजते जनः ॥ १३ ॥

अर्थः– जाति, लाज, कुल, ऐश्वर्य, बल, रूप, तप अने ज्ञाननो मद करवाथी, माणसने ते ते वस्तुउं हीन मले छे. उत्तम, मध्यम, अने अधम एवा अनेक प्रकारना जातिजेदोने जोइने कयो बुद्धिमान् माणस जातिमद करे? उत्तम तथा हीन बन्ने जातिउं कर्मथकी मले छे, माटे एवी अशाश्वती जातिने पामीने शा माटे मद करवो जोइयें? अंतरायना क्षयथीज लाज थाय छे, माटे वस्तुनां तत्वने जाणनार माणस लाजनो मद करतो नथी. कोइ देव आदिकनां वरदानथी मोटो लाज थइ पडे छे, पण तेथी महात्माउं बिलकुल मद करता नथी. अकुलीनोने पण बुद्धिवान लक्ष्मीवान तथा शीलवान जाणीने मोटा कुलवालाउंयें पण मद करवो नहीं. इंद्रनुं त्रण जुवनोनुं ऐश्वर्यपणुं सांजलीने, पोताना ऐश्वर्यनो कोण मद करे? महाबलवान माणसने पण रोग आदिकथी निर्बल जोइने बलनो मद पण कोण करे? सनत्कुमारना रूपना क्षयने जोइने कयो माणस रूपनो मद करे? श्री वीर प्रजुना तपनी निष्ठाने जोइने कयो माणस तपनो पण मद करे? वली श्रीगणधर महाराजोनी शास्त्ररचनाउं जोइने कयो माणस पोताना ज्ञाननो मद करे?

हवे ते मानने दूर करवानो उपाय जे मार्दव तेनो उपदेश करे छे.

उत्सर्पयन् दोषशाखा, गुणमूलान्यधोनयन् ॥
उन्मूलनीयो मानडु, स्तन्मार्दवसरित्प्लवैः ॥ १४ ॥

अर्थः– दोषोरूपी शाखाउने विस्तारतुं, तथा गुणोरूपी मूलोने नीचे लेइ जतुं, एवुं मानरूपी वृक्ष, तेने नम्रतारूपी नदीना प्रसरोथी मूलमांथी उखेडी नाखवुं.

मानमां रहेवाथी बाहुबलि पण पापोमां विंटाया हता, अने मान मुकवाथी तत्काल केवली थया. चक्रवर्त्ती पण दीक्षा लेइने तुरत एक रंक साधुने पण नमे छे.

हवे माया नामना कषायनुं स्वरूप कहे छे.

असूनृतस्य जननी, परशुः शीलशाखिनः ॥
जन्मभूमिरविद्यानां, माया दुर्गतिकारणं ॥ १५ ॥

अर्थः– माया कहेतां कपट छे ते, असत्यने उत्पन्न करनारुं छे, तथा शीलरूपी वृक्षने कापी नाखवाने ते कुहाडासमान छे, तथा अज्ञाननुं तो ते जन्मस्थानक छे, तथा दुर्गतिनुं कारण छे.

हवे परने ठगवामाटे कपट करवाथी, तेनुं फल पोतानेज ठगवापणुं मले छे, ते कहे छे.

कौटिल्यपटवः पापा, मायया बकवृत्तयः ॥
भुवनं वंचयमाना, वंचयंते स्वमेवहि ॥ १६ ॥

अर्थः– कौटिल्य एटले लुच्चाइमां चतुर, तथा बगलाभगतसरखा एवा दुष्ट माणसो, कपटथी भुवनने ठगता थका, खरेखर तेउ पोताना आत्मानेज ठगे छे.

हवे ते मायाने जीतवामाटे आर्जवनो उपदेश दीये छे.

तदार्जवमहौषध्या, जगदानंदहेतुना ॥
जयेज्जगद्रोहकरीं, मायां विषधरीमिव ॥ १७ ॥

अर्थः–तेथी करीने, जगत्ने आनंद करवाना हेतुरूप एवी सरलतारूपी मोटी औषधीयें करीने, जगत्नो द्रोह करनारी, नागणी सरखी मायाने जीतवी

हवे लोभकषायनुं स्वरूप कहे छे.

आकरःसर्वदोषाणां, गुणग्रसनराक्षसः ॥
कंदोव्यसनवल्लीनां, लोभः सर्वार्थबाधकः ॥ १८ ॥

अर्थः– सर्वदोषोनी खाणरूप, तथा गुणोने ग्रसन करवामां राक्षस सरखो, तथा दुःखरूपी वेलडीउंनां मूल सरखो, एवो लोभ सर्व पुरुषार्थोने बाधा करनारो छे.

हवे त्रण श्लोकोयें करीने लोभनुं दुर्जयपणुं कहे छे.

धनहीनःशतमेकं, सहस्रं शतवानपि ॥
सहस्राधिपतिर्लक्षं, कोटिं लक्षेश्वरोऽपिच ॥ १ए ॥
कोटीश्वरो नरेंद्रत्वं, नरेंद्रश्चक्रवर्त्तितां ॥
चक्रवर्त्ती च देवत्वं, देवोऽपींद्रत्वमिछति ॥ २० ॥
इंद्रत्वेऽपि हि संप्राप्ते, यदीछा न निवर्त्तते ॥
मूले लघीयांस्तल्लोभः, शरावइव वर्धते ॥ २१ ॥
॥ त्रिभिर्विशेषकं ॥

अर्थः– धनहीन माणस एकसोनी इछा करे छे, अने सो मले त्यारे हजारनी इछा करे छे, तथा हजार मले त्यारे लाखने इछे छे, तथा लाख मले त्यारे क्रोडने इछे छे, क्रोड मले त्यारे राजापणाने इछे छे, तथा राजा थाय त्यारे चक्रवर्त्तिपणाने इछे छे, तथा चक्रवर्त्ती देवपणाने इछेछे, तथा देवपणुं मले त्यारे इंद्रपणाने इछे छे; वली ते मलवाथी पण इछा ज्यारे निवृत्त थती नथी, त्यारे, ते लोभ शरावलां (शकोरुं वा रामपात्र) नी पेठे मूलमां नानो, तथा पछी वृद्धि पामतो जाय छे.

माटे सघलां पापोमां जेम हिंसा शिरोमणि छे, तथा सघला रोगोमां जेम राजयक्ष्मरोग शिरोमणि छे, तेम लोभ सर्व अपराधोमां शिरोमणि छे. अहो आ पृथ्वीमां लोभनुं केटलुं माहात्म्य छे? केम के, भंडार मलवाथी वृक्षो पण तेने पोतानां मूलीआंउथी ढांकी मेले छे. सरप, उंदर विगेरे प्राणीउ पण धनना लोभथी निधानवाली जगोमां भराइ रहे छे. मोटा मोटा मुनियो पण, उपशांतमोहपणाने पामीने, तथा क्रोध आदिकने जीतीने पण, फक्त लोभना अंशमात्रथी पाछा पडे छे. एक मांसना टुकडामाटे जेम कुतराउ, तेम सगा भाइयो पण धनना लोभथी लडे छे.

हवे ते लोजने जीतवानो उपाय देखाडे छे.

लोजसागरमुद्वेल, मतिवेलं महामतिः ॥
संतोषसेतुबंधेन, प्रसरंतं निवारयेत् ॥ २२ ॥

अर्थः– क्रमें क्रमें वृद्धि पामता तथा फेलाता एवा लोजरूपी समुद्रने बुद्धिमान् माणसें अतिशयें करीने, संतोषरूपी सेतुबंधथी एटले पालथी अटकावी राखवो.

जेम राजार्जमां चक्रवर्ती, तथा देवोमां इंद्र, तेम सघला गुणोमां संतोष मोटो गुण छे. चक्रवर्ति जेवाउं पण स्वाधीन राज्यने छोडीने, संतोषपणाथी मुनिपणुं अंगीकार करे छे. इंद्रियोनां दमवाथी, तथा कायाने पीडा आपवाथी पण शुं छे? केवलसंतोषथीज मुक्तिरूपी स्त्री आपणा मुखसामुं जुवे छे. संतोषी एवा घासपर सुनाराउंने पण जे सुख मले छे, ते सुख, संतोष विनाना एवा मखमलनी पथारीपर सुनारने पण मलतुं नथी.

क्षांत्या क्रोधो मृदुत्वेन, मानोमायाऽर्जवेन च ॥
लोजश्चानीहया जेयाः, कषाया इतिसंग्रहः ॥ २३ ॥

अर्थः–माटे एवी रीतें क्षमाथी क्रोधने, तथा कोमलताथी मानने, तथा सरलपणाथी मायाने, तथा अनिछाथी लोजने, एम सर्व कषायोने तजवा.

हवे इंद्रियोना जयनुं स्वरूप कहे छे.

विनेंद्रियजयं नैव, कषायान् जेतुमीश्वरः ॥
हन्यते हैमनं जाड्यं, न विना ज्वलितानलं ॥ २४ ॥

अर्थः– इंद्रियोने जीत्याविना कषायोने जीती शकाता नथी, केम के, जाज्वल्यमान थएला एवा अग्निविना सोनानो मेल दूर थइ शकतो नथी.

अदांतैरिंद्रियहयै, श्चलैरपथगामिजिः ॥
आकृष्य नरकारण्ये, जंतुः सपदि नीयते ॥ २५ ॥

अर्थः–नहीं दमेला, तथा चपल, अने खोटे मार्गे जनारा एवा इंद्रियोरूपी घोडाउंयें करीने खेंचाइने, प्राणी तुरत नरकरूपी अरण्यमां लइ जवाय छे. नहीं जीतेली एवी इंद्रियो केवी रीतें नरकप्रत्ये लेइ जाय छे? ते कहे छे.

इंद्रियैर्विजितोजंतुः, कषायैरभिभूयते ॥
वीरैः कृष्टेष्टकः पूर्वं वप्रः कैः कैर्न खंड्यते ॥ २६ ॥

अर्थः— इंद्रियोयें करीने जीतायेलो प्राणी कषायोथी पण पराजवने पामे ळे; केम के, पेहेलां वीर पुरुषोये खेंची लीधेली ळे इंटो जेमांथी, एवो कील्लो पाळलथी कया कया निर्बल पुरुषोथी पण नथी खंडित करातो? अर्थात् सर्वथी खंडित कराय ळे.

हवे ते नहीं जीतेली एवी इंद्रियो आ लोकमां पण डुःखरूप ळे ते कहे ळे.

कुलघाताय पाताय, बंधाय च वधाय च ॥
अनिर्जितानि जायंते, करणानि शरीरिणां ॥ २७ ॥

अर्थः— नहीं जीतेली एवी इंद्रियो प्राणीयोना रावण आदिकनी पेठे कुलना घात माटे थाय ळे. तथा सौदासनी पेठे राज्य आदिकथी पाडनारी थाय ळे, तथा चंडप्रद्योतनी पेठे बंधनमाटे थाय ळे, तथा रावण आदिकनी पेठे वधमाटे पण थाय ळे.

सौदासनी कथा नीचे प्रमाणे जाणवी. ते राज्य पालतो हतो, पण तेने नाना प्रकारनां मांस खावानी लोलता हती, तेथी ते मांस खाइने पोताना आत्माने खुशी करतो. एक दहाडो धार्मिक एवा श्रावकोए राजाने खुशी करीने अमारी पडो वजडाव्यो; तेथी ते दिवसें कोइ पण जीवनो वध थइ शक्यो नहीं; अने राजाए रखावेलुं मांस पण ते दिवसें बिलाडीयो खाइ गइ. तेथी रसोइआउंए कोइना बालकने लावी, तेने मारी नाखी राजाने तेनुं मांस पीरस्युं. पळी राजाए रसोइआउंने एकांत बोलावी सोगन देइने पुळ्युं; त्यारे रसोइआउंए पण जेवी बनी हती, तेवी वात राजाने कही; तेथी राजा मनुष्यमांसनो लोलुपी थयो; अने तेटलामाटे बालकोने शोधी लाववा माटे तेणें पोतानां माणसो राख्यां. पळी ते वातनी लोकोने खबर पडवाथी, सघला मंत्रि विगेरेए एकठा थइने, राजाने मद्यपानमां आसक्त करी, बांधीने वनमां ळोडी दीधो. एवी रीतें राज्यथी, कुलथी तथा परिवारथी पतित थइने, पशुनी पेठे अरण्यमां रखडीने डुःख पामवा लाग्यो.

स्पार्थमांज वश थयली एवी इंद्रियोथी कोण माणस विडंबना पाम-

मलो नथी ? केम के शास्त्रार्थोने जाणनाराउं पण इंद्रियोनी विडंबनाथी मूर्खनी पेठे आचरणो करे छे. इंद्रियोनी विडंबनानी वधारे वातो शुं करीयें ? केम के ते इंद्रियनी विडंबनाथी जरतें पण पोताना जाइ बाहुबलिपर शस्त्रघात कर्यो छे. जे छेल्ला जवमां पण शस्त्रोथी प्राणीउं लडे छे. ते सघलुं इंद्रियोनुं विटंबन जाणवुं. इंद्रियोथी जिताएला एवा बिचारा देव, दानव, अने मनुष्यो पण हलकां कार्यो करे छे. इंद्रियोने वश थयेला माणसो नहीं खावालायक वस्तुउं खाय छे. नहीं पीवालायक वस्तुउं पीए छे, तथा नहीं गमन करवा योग्य स्थानकें गमन करे छे. इंद्रियोथी हणायेला माणसो वेश्यानां दासपणा आदिक नीच कार्यो पण कुलमर्यादा तजीने करे छे. मोहांध माणसोने परस्त्री तथा परधननी पण जे इछा थाय छे, ते सघलुं इंद्रियोनुं माहात्म्य छे. वली जे इंद्रियोने वश थयाथी प्राणीउंने वध बंधनादिक कष्टो वेठवां पडे छे. एवी इंद्रियोप्रत्ये तो नमस्कारज थाउ. पोते इंद्रियोथी जीताया थका बीजाउंने जे उपदेश आपे छे, तेउंनी विवेकी माणसो मुख आडा हाथ दइने हांसी करे छे,

एवी रीतें सामान्यपणाथी इंद्रियोना दोषोने कहीने, हवे स्पर्शन आदिक इंद्रियोना दोषोने पांच श्लोकोयें करीने कहे छे.

> वशास्पर्शसुखास्वाद, प्रसारितकरः करी ॥
> आलानबंधनक्लेश, मासादयति तत्क्षणात् ॥ २८ ॥
> पयस्यगाधे विचरन्, गिलन् गलगतामिषं ॥
> मैनिकस्य करे दीनो, मीनः पतति निश्चितं ॥ २९ ॥
> निपतन्मत्तमातंग, कपोले गंधलोलुपः ॥
> कर्णतालतलाघाता, न्मृत्युमाप्नोति षट्पदः ॥ ३० ॥
> कनकछेदसंकाश, शिखालोकविमोहितः ॥
> रभसेन पतन् दीपे, शलभो लभते मृतिं ॥ ३१ ॥
> हरिणो हारिणीं गीति, माकर्णयितुमुद्धुरः ॥
> आकर्णाकृष्टचापस्य, याति व्याधस्य वेध्यतां ॥ ३२ ॥

अर्थः— हाथणीना स्पर्शथी मलता सुखना स्वादथी विस्तारेली छे सुंढ जेणे, एवो हाथी, तुरतज पोताने थंजा साथे बंधावाना क्लेशने पामे छे. तेम अगाध पाणीमां विचरतो एवो मत्स्य, दोरीमां बांधेला लोढाना कांटापर रहेला मांसने चाखतो थको, बिचारो खरेखर मछिमारना हाथमां जइ पडे छे. तेम मदोन्मत्त हाथीना गंडस्थलपर रहेला मदमां गंधनो लोलुपी थइने पडतो एवो भ्रमर, हाथीना कानना ऊपाटाथी मृत्यु पामे छे; तथा सोनाना टुकडा सरखी दीवानी शिखा जोइने विमोहित थएलो पतंगियो तेमां एकदम पडतो थको मृत्यु पामे छे; तेम मनोहर गीत सांजलवाने उत्सुक थएलो हरिण पण, छेक कानसुधि चडावेल छे, धनुष् जेणें एवा पारधिथी मृत्यु (वेध्यपणा) ने पामे छे.

एवं विषयएकैकः पंचत्वाय निषेवितः ॥
कथं हि युगपत्पंच, पंचत्वाय नवंति न ॥ ३३ ॥

अर्थः— एवी रीतें सेवेलो एवो एकेक विषय पण ज्यारे मृत्युमाटे थाय छे. त्यारे पांचे इंद्रियोना विषयोने साथे सेववाथी, तेउं मृत्युमाटे केम न थाय ? अर्थात् थायज.

हवे तेउंने जीतवामाटे उपदेश दे छे.

तदिंद्रियजयं कुर्या, न्मनःशुध्द्या महामतिः ॥
यां विना यमनियमैः, कायक्लेशोवृथा नृणां ॥ ३४ ॥

अर्थः—माटे महाबुद्धिमान् माणसें मनःशुद्धिथी इंद्रियोनो जय करवो; केम के ते मनःशुद्धि विना, यम नियमोथी माणसोने फोकटनो कायक्लेश छे.

जे माणसें इंद्रियोने जीती नथी, तेउंने बोध दुर्लज थाय छे, माटे सर्वदुःखोथी बुटवा माटे इंद्रियोने जीतवी. इंद्रियोने जीतवाथी मोक्ष मले छे, तथा इंद्रियोने नहीं जीतवाथी संसारनी वृद्धि थाय छे, माटे ते बन्नेनो अंतर जाणीने जे योग्य लागे ते करवुं. मखमलनी गादी तथा कांकराना स्पर्शमां रति अरति तजीने स्पर्शेंद्रियने जीतवी. स्वादिष्ट अने अस्वादिष्ट एवां जोजनमां प्रीति अप्रीतिने तजीने रसेंद्रियने जीतवी. सुगंधि अने दुर्गंधि वस्तुउंमां साम्य (समतोलपणुं) राखीने घ्राणेंद्रियने जीतवी. मनोहर, अने मनने न गमे एवुं पण रूप जोइने,

हर्षे तथा जुगुप्साने तजीने चक्षु इंद्रियने जीतवी; तथा वीणा आदिकना मनोहर स्वरने तथा गधेडा आदिकना कठोर स्वरने सांभळीने पण, तेमां प्रीति अप्रीति तजीने श्रोत्रेंद्रियने जीतवी.

हवे वशमां नहीं राखेलुं मन जे कार्य करे छे, ते कहे छे.

मनः क्षपाचरो भ्राम्य, न्नपशंकं निरंकुशः ॥
प्रपातयति संसारा, वर्त्तगर्त्ते जगत्त्रयीं ॥ ३५ ॥

अर्थः– मनरूपी राक्षस शंका अने अंकुशरहित जमतो थको, संसाररूपी खाडामां त्रणे जगतने पाडे छे.

वळी पण मनने वश नहीं करवाथी थता दोषो कहे छे.

तप्यमानांस्तपोमुक्तौ, गंतुकामान्शरीरिणः ॥
वात्येव तरलं चेतः, क्षिपत्यन्यत्र कुत्रचित् ॥ ३६ ॥

अर्थः– तप तपता, मोक्ष प्रत्ये जवानी इच्छावाळा एवा प्राणिओने, चपल एवुं मन, पवननी पेठे नरका(दिकमां फेंकी दे छे. एटलेधारेला स्थलथी बीजे क्यांइ फेंके छे.

वळी पण वश नहीं रहेला एवा मननो दोष कहे छे.

अनिरुद्धमनस्कः सन्, योगश्रद्धां दधाति यः ॥
पद्भ्यां जिगमिषुर्ग्रामं, सपंगुरिव हस्यते ॥ ३७ ॥

अर्थः– जे माणस मनने वश राख्या विना, योगीपणाना अभिधानने धारण करे छे, ते माणस गामप्रत्ये पगें चाली जवाने इच्छनार एवा पांगळा माणसनी पेठे हांसीने पात्र थाय छे.

मनोरोधे निरुध्यन्ते, कर्माण्यपि समंततः ॥
अनिरुद्धमनस्कस्य, प्रसरन्ति हि तान्यपि ॥ ३८ ॥

अर्थः– मनने वश करवाथी, चारे बाजुथी कर्मो पण रोकाय छे, अने मनने वश नहीं करनारानां ते ज्ञानावरणादिक कर्मो विस्तार पामे छे.

हवे ते मनने वश करवामाटे उपदेश करे छे.

मनःकपिरयंविश्व, परिभ्रमणलंपटः ॥
नियंत्रणीयो यत्नेन, मुक्तिमिच्छुभिरात्मनः ॥ ३९ ॥

अर्थः– जगतमां परिभ्रमण करवामां लोलुप एवा आ मनरूपी वांदराने, पोतानी मुक्तिने इछता एवा माणसोयें यत्नपूर्वक वशमां राखवो;

हवे इंद्रियोने जीतवाना हेतुरूप एवी मनशुद्धिनी स्तुति करे छे.

दीपिका खल्वनिर्वाणा, निर्वाणपथदायिनी ॥
एकैव मनसः शुद्धिः, समाम्नाता मनीषिभिः ॥ ४० ॥

पूर्वाचार्योयें एक मनःशुद्धिनेज, मोक्षमार्ग देखाडनारी, तथा नहीं बुझाइ जाय एवी, खरेखर दीपिका सरखी पारंपर्यपणाथी कहेली छे.

हवे ते मनशुद्धिना अन्वय अने व्यतिरेकें करीने गुणांतरना देखाडवावडे उपदेश कहे छे.

सत्यां हि मनसः शुद्धौ, संत्यसंतोपि यद्गुणाः ॥
संतोप्यसत्यां नो संति, सैव कार्या बुधैस्ततः ॥ ४१ ॥

अर्थः– मनशुद्धि होते छते नहीं छता एवा पण क्षांति आदिक गुणो थाय छे, अने मनशुद्धि न होते छते, ते गुणो होय, तो पण नथी देखाता, माटे पंडित लोकोयें ते मनशुद्धिज अंगीकार करवी. हवे जे लोको एम माने छे के, मनशुद्धिनी कंइ जरूर नथी, अमो तो तपबलथीज मुक्ति मेलवीशुं, तेउने माटे कहे छे.

मनःशुद्धिमबिभ्राणा, ये तपस्यंति मुक्तये ॥
त्यक्त्वा नावं भुजाभ्यां ते, तितीर्षंति महार्णवं ॥ ४२ ॥

अर्थः– मनशुद्धिने नहीं धारण करनारा एवा जे कदाग्रही माणसो मुक्तिमाटे तपज कर्या करे छे, तेउ पासे रहेला नावने छोडीने, पोताना हाथथीज महासागर तरवाने इछे छे.

हवे मनशुद्धिने तजीने जेउ केवल ध्याननेज कर्मक्षयनुं कारण माने छे, तेउ प्रत्यें कहे छे.

तपस्विनोमनःशुद्धिं, विनाभूतस्य सर्वथा ॥
ध्यानं खलु मुधा चक्षु, र्विकलस्येव दर्पणः ॥ ४३ ॥

अर्थः– एक लेशमात्र पण मनशुद्धि विनाना एवा तपस्वीनुं ध्यान, खरेखर चक्षुविनाना माणसप्रत्ये जेम दर्पण तेम वृथा छे; (जो के मनशु-

र्द्धिविना ध्यान धरनारने तेनां तप अने ध्यानना बलथी ठेक नवमा ग्रैवेयकसुधि गति थाय छे, तो पण ते प्रायिक छे, पण कंइ फलरूपें नथी; केमके उत्तम फल तो मोक्षज छे.

तदवश्यं मनःशुद्धिः, कर्तव्या सिद्धिमिच्छता ॥
तपःश्रुतयमप्रायैः, किमन्यैः कायदंडनैः ॥ ४४ ॥

अर्थः– माटे मोक्षने इछता एवा प्राणिये, अवश्य मनशुद्धि करवी; बीजां कायाने दंडरूप एवां, तप, आगमज्ञान, नियम विगेरेथी शुं वलवानुं छे.

टीकाः– मनशुद्धि एटले लेश्यानी विशुद्धिथी मननुं निर्मलपणुं. लेश्या एटले जेम स्फटिकना वासणमां जुदा जुदा रंग नाख्याथी ते तेवाज रंगनुं देखाय छे, तेम आत्मा पण कृष्ण, नील, कापोत, तेजः पद्म, अने शुक्लवर्णना मेलापथी तन्मय थाय छे, अर्थात् आत्माना अशुद्धतम, अशुद्धतर, अशुद्ध, शुद्ध, शुद्धतर अने शुद्धतम एवा परिणामो जाणवा. अने ते जंबुफल खावाना दृष्टांतथी जाणी लेवा. तेउमांथी पेहेली त्रण लेश्याउं अप्रशस्त छे, अने पछीनी त्रण लेश्याउं उत्तरोत्तर प्रशस्त छे. अने तेथी मृत्युकाले जेवी ते लेश्या प्रवर्त्तती होय, तेवी गति थाय छे; केमके प्रभुयें कहेलुं छे के, "जल्लेसे मरइ, तल्लेसेसु उववज्जइ" अन्यदर्शनियो पण कहे छे के, "अंते च भरतश्रेष्ट, या मतिः सा गतिर्नृणां" एवी रीतें अशुद्धलेश्याना त्यागथी, तथा शुद्ध लेश्याना अंगीकारथी मननी शुद्धि थाय छे. हवे मननी शुद्धि माटे सहेलो उपायांतर देखाडे छे.

मनःशुद्ध्यै च कर्तव्यो, रागद्वेषविनिर्जयः ॥
कालुष्यं येन हित्वात्मा, स्वस्वरूपेऽवतिष्ठते ॥ ४५ ॥

अर्थः– मननी शुद्धिमाटे रागद्वेषने जीतवा; अर्थात् उदयमां आवेला रागद्वेषने प्रायश्चित्तथी निष्फल करवा, अने नवा उपजाववा नहीं; के जेथी करीने आ मनरूप आत्मा अशुद्धपणाने छोडीने पोताना स्वरूपमां एटले परम शुद्धिमां रहे छे.

हवे त्रण श्लोकोयें करीने रागद्वेषनुं दुर्जयपणुं कहे छे.

आत्मायत्तमपि स्वांतं, कुर्वतामत्र योगिनां ॥
रागादिभिः समाक्रम्य, परायत्तं विधीयते ॥ ४६ ॥

अर्थः—आ जगतमां मनने पोताने स्वाधीन करता एवा योगीउंना मनने पण राग आदिक कषायो खेंची जइने परने स्वाधीन करी मुके ठे. तथा-

रक्ष्यमाणमपि स्वांतं, समादाय मनाग्मिषं ॥
पिशाचाइव रागाद्या, श्छलयंति मुहुर्मुहुः ॥ ४७ ॥

अर्थः— यम, नियमादिकोथी रक्षण कराता एवा पण योगीउंना मनने, जरा प्रमादरूपी मिशने पामीने, राग आदिक कषायो पिशाचोनी पेठे वारंवार पोताना स्वाधीनपणामां लेइ लेठे. तथा-

रागादितिमिरध्वस्त, ज्ञानेन मनसा जनः ॥
अंधेनांधइवाकृष्टः, पात्यते नरकावटे ॥ ४८ ॥

अर्थः— राग आदिक अंधकारथी नाश थयेल ठे, तत्वालोक जेमांथी एवा मनथी आकृष्ट थयेलो माणस, आंधलाथी खेंचायेलो जेम आंधलो, तेम नरकरूपी खाडामां जइने पडे ठे.

द्रव्य आदिकमां जे रति अने प्रीति ते राग, तथा तेउमांज जे अरति अने अप्रीति ते द्वेष जाणवो. माटे ते राग अने द्वेष बन्ने प्राणिउंने दृढ बंधनरूप ठे, तथा सर्व प्रकारनां दुःखोरूपी वृक्षनां मूलीआ समान ठे. जो आ दुनीयामां राग द्वेष न होत, तो सुखमां कोण मग्न थइने रहेत, तथा दुःखमां कोण दुःखी थात, तथा मोक्ष पण कोने थात? राग विना द्वेष नथी, अने द्वेष विना राग नथी, माटे ते बन्नेमांथी जो एक ने पण तजी देवाय, तो ते बन्ने तज्या एम समजवुं. आ जीव स्वजावें तो स्फटिक सरखो निर्मल ठे, पण उपाधिजूत एवा जे राग आदिक, तेउथी तेरूप थइ जाय ठे. खरेखर आ जगत् नायक विनानुं ठे, केमके सर्वेनी दृष्टियें राग आदिक लुंटाराउ प्राणीउंना ज्ञानरूपी धनवाला एवा आत्मस्वजावने लुंटी जाय ठे. माटे बन्ने लोकमां अहित करनारा एवा रागद्वेषथी जेवो मुनिउ जय राखे ठे, तेवो जय व्याघ्र, जल, अग्नि आदिकथी पण राखता नथी.

हवे ते राग द्वेषने जीतवानो उपाय देखाडे ठे.

अस्ततंद्रैरतः पुंभि, र्निर्वाणपदकांक्षिभिः ॥
विधातव्यः समत्वेन, रागद्वेषद्विषज्जयः ॥ ४९ ॥

अर्थः— आथी करीने मोक्षपदनी इछा राखनारा एवा पुरुषोयें प्रमादरहित थइने, राग द्वेषमां उदासीनपणुं राखीने, ते शत्रुउनो जय करवो.

हवे रागद्वेषने जीतवानो उपाय जे तेउमां साम्यपणुं ते कहे छे.

अमंदानंदजनने, साम्यवारिणि मज्जतां ॥
जायते सहसा पुंसां, रागद्वेषमलक्षयः ॥ ५० ॥

अर्थः— अत्यंत आनंदने उत्पन्न करनारा एवा उदासीनतारूपी पाणीमां स्नान करनारा पुरुषोने तुरतज रागद्वेषरूपी मेलनो नाश थाय छे.

ते उदासीनपणाथी सर्व कर्मोनो पण नाश थाय छे ते हवे कहे छे.

प्रणिहंति क्षणार्धेन, साम्यमालंब्य कर्म तत् ॥
यन्न हन्यान्नरस्तीव्र, तपसा जन्मकोटिभिः॥ ५१ ॥

अर्थः— प्राणी, क्रोडो जन्मोना तीव्र तपथी पण जे कर्मने हणी शकतो नथी, ते कर्मनो, उदासीनपणाथी ते एक अरधा क्षणमां पण नाश करेछे.

हवे ते उदासीनपणुं शी रीतें क्षणवारमां कर्मोनो नाश करनारुं छे. ते कहेछे.

कर्म जीवं च संश्लिष्टं, परिज्ञातात्मनिश्चयः ॥
विभिन्नीकुरुते साधुः, सामायिकशलाकया ॥ ५२ ॥

अर्थः— जाणेल छे आत्मानो निश्चय जेणे, एवो साधु, सामायिकरूपी सलीये करीने, एकबीजाने वलगी रहेला एवा कर्म अने जीवने जुदा करे छे.

हवे एवी रीतनां उदासीनपणाथी परमात्मानुं पण दर्शन थाय छे, ते कहेछे.

रागादिध्वांतविध्वंसे, कृते सामायिकांशुना ॥
स्वस्मिन् स्वरूपं पश्यंति, योगिनः परमात्मनः ॥ ५३ ॥

अर्थः— सामायिकरूपी सूर्यथी, राग आदिक अंधकारनो नाश करते छते, योगियो पोताना आत्मामांज परमात्मानुं स्वरूप जोइ शके छे.

हवे ते उदासीनपणानो प्रभाव देखाडे छे.

स्निह्यंति जंतवोनित्यं, वैरिणोऽपि परस्परं ॥
अपि स्वार्थकृते साम्य, भाजः साधोः प्रभावतः ॥ ५४ ॥

अर्थः— स्वार्थमाटे पण समता धारणकरनारा साधुना प्रभावथी हमेशां वैर राखनारा एवा नकुल सर्प आदिक वैरी जंतुउ पण परस्पर स्नेह

राखे छे. (जिनसमवसरणनेविषे जेम) चैतन्यवाला तथा चैतन्यविनाना एवा, इष्ट अने अनिष्ट पदार्थोथी पण जे रागद्वेष थता नथी, तेनुं नाम उदासीनपणुं जाणवुं. गोशीर्ष चंदनना लेपथी, तथा शरीरने बोलावाथी पण जेने समतापणुं रहे छे, तेने उदासीनपणुं जाणवुं. योगियो खावापीवा आदिकना रसने तजीने पण समतारूपी रसने पीए छे. समतानो एवो प्रजाव छे के, महापापिउ पण तेथी क्षण वारमां मोक्षपद मेलवी शके छे. माटे सर्वशास्त्रोनुं मथन कर्याथी एवुंज जणाय छे के, समता सरखुं आ लोक अने परलोकमां पण बीजुं उत्कृष्टुं सुख नथी- माटे एवा समतारूपी सुखने मेलववामां बिलकुल प्रमाद करवो नहीं.

हवे समता शाथी थाय छे ? ते कहे छे.

साम्यं स्यान्निर्ममत्वेन, तत्कृते जावनाः श्रयेत् ॥
अनित्यतामशरणं, जवमेकत्वमन्यतां ॥ ५५ ॥
अशौचमाश्रवविधिं, संवरं कर्मनिर्जरां ॥
धर्मस्वाख्याततां लोकं, द्वादशीं बोधिजावनां ॥ ५६ ॥

अर्थः— निर्ममपणाथी समता थाय छे, अने तेने माटे नीचे जणावेली बार जावनाउ अंगीकार करवी. ते बार जावनाउनां नामो नीचे प्रमाणे जाणवां. पेहेली अनित्य जावना, बीजी अशरणजावना, त्रीजी जवजावना, चोथी एकत्वजावना, पांचमी अन्यत्वजावना, उठी अशौच जावना, सातमी आश्रवजावना, आठमी संवरजावना, नवमी कर्मनिर्जराजावना, दशमी धर्मजावना, अग्यारमी लोकस्वरूपजावना, तथा बारमी बोधिबीजजावना.

हवे अनित्यतानामनी पेहेली जावना देखाडे छे.

यत्प्रातस्तन्न मध्याह्ने, यन्मध्याह्ने न तन्निशि ॥
निरीक्ष्यते जवेऽस्मिन् हा, पदार्थानामनित्यता ॥ ५७ ॥
शरीरं देहिनां सर्व, पुरुषार्थनिबंधनं ॥
प्रचंडपवनोद्भूत, घनाघनविनश्वरं ॥ ५८ ॥

कल्लोलचपला लक्ष्मीः, संगमाः स्वप्नसंनिभाः ॥
वात्याव्यतिकरोत्क्षिप्त,तूलतुल्यं च यौवनं ॥ ५९ ॥

अर्थः– जे प्रभातमां छे, ते मध्याह्ने नथी, अने जे मध्याह्ने छे, ते रात्रिए नथी, माटे आ संसारमां एवी रीतें पदार्थोनी अनित्यता छे; तथा सर्वपुरुषार्थोनां कारणरूप एवुं प्राणीउनुं आ शरीर, प्रचंडपवनोथी हणाएला एवां वादलां सरखुं नाशवंत छे; तेम आ लक्ष्मी पाणीना कल्लोल सरखी चपल छे, तथा सघला पदार्थोना संगमो स्वप्नसरखा छे, तथा यौवन, पवनथी उडता एवा पुंबडां सरखुं चपल छे.

इत्यनित्यं जगद्वृत्तं, स्थिरचित्तः प्रतिक्षणं ॥
तृष्णाकृष्णाहिमंत्राय, निर्ममत्वाय चिंतयेत् ॥ ६० ॥

अर्थः– एवी रीतें चित्तने स्थिर करीने, क्षणक्षण प्रत्ये, विचारवुं के. जगत्नुं स्वरूप अनित्य छे, माटे तृष्णारूपी कृष्णसर्पने मंत्र समान, एवा निर्ममपणाने चिंतववुं.

हवे अशरणभावनानुं स्वरूप कहे छे.

इंद्रोपेंद्रादयोप्येते, यन्मृत्योर्यांति गोचरं ॥
अहो तदंतकातंके, कः शरण्यः शरीरिणां ॥ ६१ ॥

अर्थः– ज्यारे आ इंद्र तथा उपेंद्र आदिको पण मृत्युने प्राप्त थाय छे, माटे एवी रीतें मृत्युनो भय आवते छते प्राणीने कोनुं शरणुं छे ?

पितुर्मातुः स्वसुर्भ्रातु, स्तनयानां च पश्यतां ॥
अत्राणो नीयते जंतुः, कर्मभिर्यमसद्मनि ॥ ६२ ॥

अर्थः– पिता, माता, बेहेन, भाइ, तथा दीकराना पण देखतां थकां शरणां विनानो एवो आ जंतु, कर्मोयें यमने भवने लेइ जवाय छे.

शोचंते स्वजनानंतं, नीयमानान् स्वकर्मभिः ॥
नेष्यमाणं तु शोचंति, नात्मानं मूढबुद्धयः ॥ ६३ ॥

अर्थः– पोतानां कर्मोथी मृत्यु पामता एवा पोताना कुटुंबियो माटे तो मूढबुद्धि माणसो शोक करे छे, पण तेउ कर्मोयेंकरीने लइ जवाता एवा पोताना आत्मामाटे तो शोक करताज नथी. माटे,

संसारे दुःखदावाग्नि, ज्वलज्ज्वालाकरालिते ॥
वने मृगार्भकस्येव, शरणं नास्ति देहिनः ॥ ६४ ॥

अर्थः– दुःखरूपी दावानलनी बलती ज्वालाउंथी भयंकर थएला एवा आ संसारमां, वनमां रहेला मृगना बालकने जेम, तेम प्राणीने कोइ पण शरण नथी.

हवे त्रण श्लोकोयें करीने संसार भावनानुं स्वरूप कहे छे.

श्रोत्रियः श्वपचः स्वामी, पतिर्ब्रह्माकृमिश्च सः ॥
संसारनाट्ये नटवत्, संसारी हंत चेष्टते ॥ ६५ ॥

अर्थः– अरे ! ! आ संसाररूपी नाटकमां संसारी जीव नटनी पेठे चेष्टा करी रह्यो छे, केम के जे वेदांतनो पार पामनार होय छे, ते कसाइ थाय छे, शेठ होय ते चाकर थाय छे, तथा जे ब्राह्मण होय, ते पण एक कीडो थाय छे. तथा,

न यांति कतमां योनिं, कतमां वा न मुंचति ॥
संसारी कर्मसंबंधा, दवक्रयकुटीमिव ॥ ६६ ॥

अर्थः– संसारी जीव कर्मोना संबंधथी भाडानी कोटडीनी पेठे, कइ कइ योनिमां दाखल थतो नथी ? तथा कइ कइ योनिने छोडतो नथी ? अर्थात् सर्व योनियोमां दाखल थाय छे, अने तेउने ते छोडे पण छे.

समस्तलोकाकाशेऽपि, नानारूपैः स्वकर्मभिः ॥
वालाग्रमपि तन्नास्ति, यन्न स्पृष्टं शरीरिभिः ॥ ६७ ॥

अर्थः– आ समस्त लोकाकाशमां एक वालनो अग्रभाग पण एवो नथी के जेने प्राणियोयें पोतानां विविध कर्मोयें करीने स्पर्श करेलो न होय, अर्थात् सर्व जगोए जीवें स्पर्श करेलो छे.

संसारी जीवोना चार भेदो छे, नारकि, तिर्यंचो, मनुष्यो, तथा देवो. तथा तेउ प्रायः बहु दुःखीआ, अने कर्मोथी बाधायुक्त थएला छे. नारकीना जीवो त्रिविधें दुःख भोगवे छे. तेउ घटीयंत्रमां उत्पन्न थाय छे, तथा तेमने परमाधामीउ तेमांथी बहुज सांकडा द्वारेथी खेंची कहाडे छे. वली तेमना हाथपगो कापीने, धोबिउ पत्थरपर जेम कपडांउने, तेम

तेउने तीक्ष्ण कांटावाली शिलाउ पर पछाडे छे; वली तेमने पर्वतोथी वेरे छे, तथा तलनी पेठे पीले छे. वली ज्यारे तेउ तृषातुर थाय छे, त्यारे तेमने तपावेलां सीसांवाली वैतरणीनदीमां उतारे छे. वली तेउने ज्यारे छायानी अभिलाषा थाय छे, त्यारे तेउने तलवारोनां बनावेला वनमां लइ जइने तेमनापर हथीयारो रूपी पांदडांउ पाडवामां आवे छे. वली तेमने परस्त्रीनी रतिने याद देवरावीने तपावेली एवी लोखंडनी पुतलिउ साथे आलिंगन करावे छे. वलि तेमने मांसनुं लोलुपपणुं याद करावीने तेनाज अंगनुं मांस खावा आपे छे, तथा मद्यपाननुं लोलुपपणुं याद देवरावीने तेमने तपावेलुं सीसुं पीवरावे छे. एवीरीतें महादुःखथी हणाया थका उत्कृष्टुं त्यां तेत्रीश सागरोपमनुं आयुष्य नोगवे छे. हवे तिर्यंचो पण एकेंद्रियपणा आदिकने पामीने पृथ्वीकायपणाने पामे छे. तथा तेउ हलादिक शस्त्रोथी नेदाय छे, हाथी, घोडा आदिकथी खुंदाय छे, तथा नेहेर आदिकथी नींजाय छे, अने अग्निथी बलाय छे. तेउनां कुंनारो घडा, इंट आदिक बनावीने पकावे छे, तथा तेमनो कीचड करीने नींत आदिकमां चोडे छे. वली ज्यारे तेउ अप्कायपणाने प्राप्त थाय छे, त्यारे तेउ बरफरूप थाय छे, तथा धूली आदिक तेमने सुकावी नाखे छे. वली तेमने वासणोमां नरीने तपावे छे, तथा तरस्या प्राणीउ तेमने पी जाय छे. वली ज्यारे तेउ तेजस्कायपणाने पामे छे, त्यारे जलादिको तेउने ठारी नाखे छे, तथा काष्टआदिकथी तेमने बाले छे. वली ज्यारे तेउ वायुकायपणाने प्राप्त थाय छे, त्यारे तेमने वींजणा आदिकथी हणे छे, तथा शीत अने उष्ण आदिक द्रव्यना संयोगोथी वारंवार तेउनो नाश करवामां आवे छे. वली तेउ परस्पर पण अथडाइने लडी मरे छे, तथा श्वासोछ्वास आदिकना पवनथी तेमने दुःख अपाय छे, तथा सर्प आदिको तेमने पी जाय छे. वली कंदादिक दश प्रकारथी ज्यारे तेउ वनस्पतिपणाने प्राप्त थाय छे, त्यारे तेमनुं अनेक प्रकारें छेदन नेदन थाय छे, तथा तेमने अग्निना योगथी पकावे छे. वली ज्यारे तेउ बेइंद्रियपणाने पामे छे, त्यारे पूरा आदिक अग्निमां तपावाय छे, तथा पीवाय छे, कृमियोयें पगें कचराय छे, तथा तेमने चकलां आदिक खाइ जाय छे. शंख आदिको औषधि आदिकमाटे बका-

वाय छे; वली ज्यारे तेउं त्रेइंद्रियपणाने पामे छे, त्यारे ते मांकड आदिक पण कचराय छे, तथा उष्ण पाणीथी तेमने तपावाय छे. वली कीडी आदिको पगें कचराय छे; वली ज्यारे चउरिंद्रियपणाने पामे छे, त्यारे ते मधमांखो जमरा आदिको मधनी लोलुपताथी हणाय छे. तथा डांस मछर आदिको पण पंखा आदिकथी हणाय छे; तथा मांख, करोलीआ आदिको पण घीलोडी(गरोली)आदिकथी जक्षण कराय छे. पंचेंद्रिय जलचरो परस्पर जक्षण कराय छे, तथा मछीमारो आदिक तेमने पकडे छे, तथा बगला आदिक तेमने गली जाय छे. तेमनी चमार लोको चांबडी उखेडे छे, तथा मांसजक्षिउं तेमने जुंजेछे; तथा ज्यारे तेउं स्थलचरोनेविषे मृगादिकपणे उत्पन्न थाय छे, त्यारे ते नबलाउंने सबला एवा सिंहादिको मारी नाखे छे, तथा ते निरपराधिउंने मृगया आदिकना लोलुपीपणाथी शिकारीउं पण मारी नाखे छे. तथा वली तेउं क्षुधा, तृषा, अतिजारनी वेदना, तथा अंकुश आर आदिकनी वेदनाने पण ते सहन करे छे. तथा तेतर, पोपट, चकलां आदिको, सिंचाणा, बाज गीध आदिकोथी जक्षण कराय छे. तथा तेउंने पाराधिउं नाना प्रकारना उपायोथी पकडीने हणे छे. एवी रीतें तिर्यंचोने जल, अग्नि, शस्त्र आदिकनो अत्यंत जय रहेलो छे. वली तेउं मनुष्यपणांए करीने जो अनार्यदेशमां उपजे छे, तो मुखथी पण न कही शकाय एवां पापाचरणो आचरे छे. वली आर्यदेशमां पण उत्पन्न थइने, जो चंडाल आदिक कुलमां जन्मे, तो पण पापकर्मो करीने दुःखोने अनुजवे छे. वली मनुष्यो पण परनी उत्कृष्टी संपदा जोइने तथा पोताने निर्धन जोइने, अने, पोते परनी चाकरी करताथका दुःखने पामे छे. वली रोग, घडपण तथा मरणपर्यंत पण तेमने माथे कष्ट पडे छे. अग्नि सरखी सोयोथी हरेक रुंवाडे जोंकवाथी जेटलुं प्राणीने दुःख थाय छे. तेथी पण आठगणुं गर्जावासमां प्राणीने दुःख थाय छे. योनिबहार निकल्यापछी प्राणीने जे दुःख पडे छे, तेथी पण अनंतगणुं दुःख गर्जावासमां ते जोगवे छे. वली पुरुष पुरुषरूपें थतोज नथी, केम के पेहेलां बाल्यावस्थामां ते विष्ठायें करीने डुक्कर सरखो होय छे, तथा यौवन अवस्थामां कामें करीने गधेडा सरखो होय छे, तथा घडपणमां घरडा बेल सरखो होय छे. वली ते

बाल्यावस्थामां मामुखो होय छे, यौवनावस्थामां स्त्रीमुखो होय छे, तथा वृद्धपणामां पुत्रमुखो होय छे, अर्थात् पोते स्वतंत्र थइ शकतो नथी. वली माणस धननी आशाथी विह्वल थयो थको, चाकरी, खेती, वेपार, पाशुपाल्य इत्यादिक कार्योथी पोतानो जन्म निष्फल गुमावे छे. तेमां पण कोइ वखते चोरी करे छे, कोइ वखते जुगार रमे छे, नीच पुरुषो साथे संग करे छे, तेथी एवी एवी भवभ्रमणना कारणरूप अनेक चेष्टाओ करे छे. वली मोहांध मनुष्यो सुख आव्ये आनंदथी, तथा दुःख आव्ये रडवाथी पोतानो जन्म गुमावे छे, पण धर्मकार्य करतो नथी. अनंत कर्मोना क्षयथी आ मनुष्यपणाने पामीने पापी जीवो पाछा पण पाप कार्योज करवा मांडे छे. वली स्वर्ग अने मोक्षनी प्राप्तिनां कारणरूप एवा आ मनुष्यभवने पामीने नरक मले एवां अकार्यो करे छे. वली ज्यारे देवपणुं पामे छे, त्यारे पण शोक, ईर्ष्या आदिकथी त्यां पण दुःख वेठेछे. बीजानी उत्कृष्टी ऋद्धि देखीने ईर्ष्या लावी ते देवो अत्यंत विषाद पामे छे. तथा च्यवना वखते पण भोगवेलां सुखोने याद करता थका, तथा विषाद करता थका ते देवो दीपकनी पेठे विनष्ट थाय छे. एवी रीतें संसारनी चारे गतियोमां बीलकुल सुख नथी, पण ते दुःखमयज छे, एम संसारभावना भाववी.

हवे बे श्लोकोयें करीने एकत्वभावना कहे छे.

एक उत्पद्यते जंतु, रेक एव विपद्यते ॥
कर्माण्यनुभवत्येकः, प्रचितानि भवांतरे ॥ ६८ ॥

अर्थः— एकलोज जीव उत्पन्न थाय छे, एकलो मृत्यु पामे छे, तथा भवांतरोमां एकठां करेलां कर्मोने पण ते एकलोज अनुभवे छे. तथा,

अन्यैस्तेनार्जितं वित्तं, भूयः संभूय भुज्यते ॥
सत्वेकोनरकक्रोडे, क्लिश्यते निजकर्मभिः ॥ ६९ ॥

अर्थः— आ जीवें उपार्जन करेलां धनने, घणाओ एकठा थइने भोगवे छे, अने ते तो पोते एकलोज पोतानां कर्मोयें करीने नरकमां जइ दुःख भोगवे छे.

हवे अन्यत्व भावनानुं स्वरूप कहे छे.

यत्रान्यत्वं शरीरस्य, वैसादृश्याच्छरीरिणः ॥
धनबंधुसहायानां, तत्रान्यत्वं न दुर्वचं ॥ ७० ॥

अर्थः— जीवनी साथे असादृश्यपणाथी जेम शरीरनुं जुदा पणुं छे, तेम धन आदिक नव प्रकारथी बंधुरूप थएलां जे मातपितादिक, तेउंनी साथे पण आ जीवने जुदापणुंज छे. तथा.

यो देहधनबंधुभ्यो, भिन्नमात्मानमीक्षते ॥
क्व शोकशंकुना तस्य, हंतातंकः प्रतन्यते ॥ ७१ ॥

अर्थः— जे प्राणी देह अने धनादिक नव प्रकारथी थयेला बंधुउंथी पोताना आत्माने भिन्न लेखे छे, तेने शोकरूपी शल्य शीरीतें पीडा आपी शके?

हवे अशुचित्वभावनानुं स्वरूप कहे छे.

रसासृग्मांसमेदोऽस्थि, मज्जशुक्रांत्रवर्चसां ॥
अशुचीनां पदं कायः, शुचित्वं तस्य तत्कुतः ॥ ७२ ॥

अर्थः— रस, रुधिर, मांस, चरबी, हाडकां, मज्जा, वीर्य, आंतरडां, तथा विष्टा विगेरे अशुचि पदार्थोनुं स्थानरूप काया छे, माटे तेमां पवित्रपणुं तो छेज क्यां! माटे,

नवस्रोतः स्रवद्विस्र, रसनिःस्यंदपिच्छिले ॥
देहेऽपि शौचसंकल्पो, महन्मोहविजृंभितं ॥ ७३ ॥

अर्थः— शरीरमां रहेलां नव द्वारोमांथी झरता दुर्गंधयुक्त रसनां झरवाथी लिप्त थएला एवा आ शरीरमां पण जे शौचपणानो संकल्प करवो, ते महामोहनुं विजृंभित छे; अर्थात् तेम मानवुं ते मूर्खाइ भरेलुं छे.

वली आ काया गर्भमां पण वीर्य अने रुधिरना मेलापथी उत्पन्न थइ, मलथी वृद्धि पामे छे, तथा अंदर अशुचि पडदाथी ढंकाइ रहे छे, तेमां शुचिपणुं तो शी रीतेंज कही शकाय? माताए जमेलां अन्नपानना रसथी जे वृद्धि पामे छे, एवी आ कायामां शीरीतें शौचपणुं मानी शकाय! वली जेमां उत्तम उत्तम लाडु आदिक पदार्थो पड्याथी पण विष्टामय

थाय छे, एवा आ शरीरने कोण पवित्र माने? सुगंधि तांबूल चावीने माणस रात्रिए सूइ जाय छे, पछी ज्यारे ते प्रभातमां जागे छे. त्यारे तेनुं मुख दुर्गंध मारतुं देखाय छे.

हवे आश्रवभावनानुं स्वरूप कहे छे.

मनोवाक्कायकर्माणि, योगाः कर्म शुभाशुभं ॥
यदाश्रवंति जंतूना, माश्रवास्तेन कीर्त्तिताः ७४ ॥

अर्थः—प्राणीओने मन, वचन अने कायाना योगो, शुभ अने अशुभकर्मोने उपार्जन करे छे, तेथी तेओने आश्रवरूप कहेला छे.

मैत्र्यादिवासितं चेतः, कर्म सूते शुभात्मकं ॥
कषायविषयाक्रांतं, वितनोत्यशुभं पुनः ॥ ७५ ॥

अर्थः— मैत्री, करुणा अने उपेक्षा, ए त्रण भावनाथी वासित थएलुं चित्त, शुभ कर्मोने उपार्जन करे छे, अने कषाय अने विषयोथी आक्रांत थएलुं चित्त अशुभ कर्मोने (विस्तारे) छे. तथा,

शुभार्जनाय निर्मथ्यं, श्रुतज्ञानाश्रितं वचः ॥
विपरीतं पुनर्ज्ञेय, मशुभार्जनहेतवे ॥ ७६ ॥

अर्थः— निर्मथ्य केतां सत्य एवुं सिद्धांत अने ज्ञानने आश्रित रहेलुं वचन, शुभकर्मो उपार्जन करे छे, तथा तेथी विपरीत वचन, अशुभ कर्मोने उपार्जन करनारुं जाणवुं. तथा,

शरीरेण सुगुप्तेन, शरीरी चिनुते शुभं ॥
सततारंभिणा जंतु, घातकेनाशुभं पुनः ॥ ७७ ॥

अर्थः— कायोत्सर्गादिक शुभ चेष्टामां रहेला शरीरें करीने प्राणी शुभ कर्मो एकठां करे छे, अने हमेशां जीवहिंसादिक आरंभो करवाथी अशुभकर्मोने उपार्जन करे छे. तथा.

कषायविषयायोगाः, प्रमादाविरती तथा ॥
मिथ्यात्वमार्त्तरौद्रे चे, त्यशुभं प्रतिहेतवः ॥ ७८ ॥

अर्थः— क्रोध, मान, माया तथा लोभरूप कषाय, तथा उत्कषायथी हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, तथा पुरुष, स्त्री अने नपुंसक

लिंगरूप नव नोकषाय स्पर्शादिक इंद्रियोना विषयो, मन, वचन, अने कायाना योग, तथा अज्ञान, संशय, विपर्यय, राग, द्वेष, स्मृतिभ्रंश, धर्मनो अनादर, दुःप्रणिधान, ए आठ प्रकारनो प्रमाद, अविरतिपणुं, मिथ्यात्व तथा आर्त्त अने रौद्रध्यान, एटलां वानां अशुभ कर्मोनां हेतुउ छे.

ज्ञान अने दर्शननो तथा तेना हेतुउनो नाश, आशातना, मत्सर विगेरे करवाथी ज्ञानावरणी तथा दर्शनावरणी कर्मोनो आश्रव थाय छे;

देवपूजा, गुरुसेवा, सुपात्रदान, दया, क्षमा, सरागसंयम, देशसंयम, अकामनिर्जरा, शौच, तथा बालतप, ए सद्वेद्यना आश्रवो जाणवा.

दुःख, शोक, वध, ताप, आक्रंदन, परिदेवन, ते पोताने अने परने पण असद्वेद्यना आश्रवो जाणवा. वीतराग, आगम, संघ, धर्म, तथा सर्व देवोना अवर्णवाद, तीव्रमिथ्यात्वनुं परिणाम, सर्वज्ञ, सिद्ध, धार्मिक विगेरेनां दूषणो बोलवां, उन्मार्गनी देशना देवी, असंयतिने पूजवा, वगर विचार्युं काम करवुं तथा गुरु आदिकनुं अपमान करवुं, इत्यादि दृष्टिमोहनां आश्रवो कहेलां छे.

कषायना उदयथी आत्मानो जे तीव्र परिणाम थाय छे. तेने चारित्र मोहनीयनो आश्रव कहेलो छे.

कामयुक्त तथा हांसीनां वचनो, बहु बकवुं, दैन्यताथी शब्द करवो, विगेरे हास्यना आश्रवो जाणवा. देशांतरो जोवानुं उत्सुकपणुं, चित्र, नाटक आदिक जोवां, परनां चित्तने वश करवुं, विगेरे रतिना आश्रवो जाणवा.

अदेखाइ, पापाचरण, परनां सुखनो नाश करवो, विगेरे अरतिनां आश्रवो जाणवां.

पोताने नयनो परिणाम थवो, परने पण नय पमाडवो तथा निर्दयपणुं राखवुं, ए नयनां आश्रवो जाणवां.

परने दिलगिरि उपजाववी, तथा पोताने दिलगिरि थवाथी रडवुं, इत्यादि शोकनां आश्रवो जाणवां. चतुर्विध संघनो अवर्णवाद बोली जुगुप्सा करवी, इत्यादि जुगुप्सानां आश्रवो जाणवां.

ईर्ष्या, विषयोमां आसक्तपणुं, मृषावाद, वक्रपणुं, परस्त्रीनी इच्छा, इत्यादि स्त्रीवेदनां आश्रवो जाणवां.

पोतानीज स्त्रीथी संतोषी रहेवुं, ईर्ष्या नहीं करवी, कषायनुं मंदपणुं

अवक्रपणुं अने शील पालवुं, इत्यादि पुरुषवेदनां आश्रवो जाणवां.

स्त्री पुरुषोनुं अत्यंत उग्रपणे कामसेवन, कषायोनी तीव्रता, तथा व्रतनुं जांगवुं, ए नपुंसकवेदनां आश्रवो जाणवां.

साधुउंनी निंदा, धर्मिउंने विघ्न करवापणुं, विरतिउंने अविरति कहेवा तथा तेउंने अंतराराय करवो. अचारित्रिआना गुणो बोलवा, चारित्रीनां दूषणो बोलवां, तथा कषाय अने नोकषायोनी उदीरणा करवी, ए सामान्य रीतें चारित्र मोहनीनां आश्रवो जाणवां.

पंचेंद्रिय प्राणीउंनो वध, बहु आरंज, परिग्रह, निर्दयपणुं, मांसनुं जोजन, स्थिरवैरपणुं, रौद्रध्यान, मिथ्यात्व, अनंतानुबंधि कषाय, कृष्ण, नील, अने कापोत लेश्या, जूतुं जाषण, परधननी चोरी, वारंवार मैथुनसेवन, तथा अवशेंद्रियपणुं, इंद्रियो वश न राखवी एटलां नरकनां आयुष्यनां आश्रवो जाणवां.

जूठा मार्गनी देशना, सन्मार्गनो नाश, मूढचित्तपणुं, आर्त्तध्यान शल्यपणुं, कपट, आरंज, परिग्रह अतिचार सहित शीलव्रत, नील अने कापोत लेश्या, तथा अप्रत्याख्यानी कषायो, तेउंने तिर्यंच आयुष्यनां आआश्रवो जाणवां.

अल्प परिग्रह अने आरंज, सहज कोमलता अने आर्जवपणुं कापोत अने पीत लेश्या, धर्मध्यानमां अनुराग प्रत्याख्यानी कषाय, मध्यम परिणाम, संविजागनुं करवापणुं देवगुरुनुं पूजन, मिष्ठ वचन, तथा लोकयात्रामां मध्यस्थपणुं ए मनुष्यनां आश्रवो जाणवां.

सरागसंयम, देशसंयम, अकामनिर्जरा उत्तम मित्रनी सोबत, धर्मश्रवण, शीयल, सुपात्रें दान, तप, श्रद्धा, रत्नत्रयनुं अविराधनपणुं, मृत्यु वखते पद्म अने पीत लेश्याना परिणाम; तथा अज्ञान तप, ए देवनां आयुष्यनां आश्रवां जाणवां.

मन, वचन अने कायानुं वक्रपणुं, परने ठगवुं, कपट, मिथ्यात्व, चुगली, चलचित्तपणुं, सुवर्ण आदिकमां जेलसेल करवी, जूठी साक्षी, वर्णादिकमां जेलसेल, तीव्र कषायपणुं इत्यादि अशुजनां आश्रवो छे.

संसारथी जीरुपणुं, प्रमादनी हानि, सद्भाव, क्षांतिआदिक गुणो, धर्मीउंने आदरसत्कार विगेरे तीर्थंकर नामकर्मने उपार्जन करनारा आश्रवो छे.

अरिहंत तथा सिद्धोनी जक्ति, तेम गुरु, स्थविर, बहुश्रुत, गछ, श्रुतज्ञान तपस्वी विगेरेमां जक्ति, आवश्यक तथा शीलमां अप्रमादीपणुं, विनयपणुं, ज्ञाननो अज्यास, तप, त्याग, वारंवार ध्यान, प्रजावना, संघ अने साधुनी वैयावच्च अपूर्व ज्ञाननुं ग्रहण, सम्यक्त्वनी शुद्धि, ए वीश आश्रवो पेहेला तथा छेल्ला जिनेश्वरे स्पर्शेला छे, अने बाकीना जिनेश्वरोयें एक, बे, त्रण अथवा सर्वे स्पर्शेला छे. परनी निंदा, हांसी, अवज्ञा, गुणोनुं लोपन, छता अछता दोषनुं आछादन तथा जातिआदिकनो मद, ए नीचगोत्रनां आश्रवो जाणवां.

तथा तेथी उलटी रीतनां उंचगोत्रनां आश्रवो जाणवां.

दान, लाज, वीर्य, जोग तथा उपजोगमां कारण के, कारणविना जे अंतराय करवो ते अंतराय कर्मनां आश्रवो जाणवां.

हवे संवर जावनानुं स्वरूप कहे छे.

सर्वेषामाश्रवाणां तु, निरोधः संवरः स्मृतः ॥
सपुनर्भिद्यते द्वेधा, द्रव्यजावविजेदतः ॥ ७ए ॥

अर्थः– सघला आश्रवोनो जे निरोध, तेनुं नाम संवर जाणवुं; अने तेना बे जेदो, द्रव्यथी अने जावथी.

हवे ते बे प्रकारनुं स्वरूप कहेछे.

यः कर्मपुज्ञलादान, छेदः सद्रव्यसंवरः ॥
जवहेतुक्रियात्यागः सपुनर्जावसंवरः ॥ ८० ॥

अर्थः–कर्मपुज्ञलना आश्रवोना ग्रहणनो जे छेद ते द्रव्यसंवर जाणवुं. तथा संसारना कारणरूप एवी क्रियाउनो जे त्याग, ते जावसंवर कहेवाय.

हवे ते आश्रवोने रोकवा माटे कहेछे.

येन येन ह्युपायेन, रुध्यते योयआश्रवः ॥
तस्य तस्य निरोधाय, ससयोज्यो मनीषिजिः ॥ ८१ ॥

अर्थः–माटे जे जे उपायथी जे जे आश्रव रोकाय, तेना तेना अटकावमाटे ते ते उपाय विद्वानोए जोडवो.

हवे ते उपायो देखाडे छे.

क्षमया मृदुनांवेन, ऋजुत्वेनाप्यनीहया ॥
क्रोधं मानं तथा मायां, लोनं रुंध्याद्यथाक्रमं ॥ ८२ ॥

अर्थः—क्रोधने क्षमाथी, मानने कोमलताथी, मायाने सरलपणाथी, तथा लोनने निरीहपणाथी रोकवो.

हवे विषयोने तजवामाटे कहेछे.

असंयमकृतोत्सेकान्, विषयान् विषसंनिजान् ॥
निराकुर्यादखंडेन, संयमेन महामतिः ॥ ८३ ॥

अर्थः—महाबुद्धिमान् माणसें असंयम एटले इंद्रियोना उन्मादमां सामर्थ्यवाल थएला, एवा झेर सरखा स्पर्शादिक विषयोने, अखंड एवा जितेंद्रियपणायें करीने दूर करवा.

हवे योग, प्रमाद, अने अविरतिना प्रतिपक्षिउंने कहेछे.

तिसृनिर्गुप्तिनिर्योगान्, प्रमादं वा प्रमादतः ॥
सावद्ययोगहानेना, विरतिं चापि साधयेत् ॥ ८४ ॥

अर्थः— त्रण गुप्तिउंथी मन, वचन अने कायाना योगोने, तथा मद्य, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथारूप पांचप्रकारना अथवा अज्ञान, संशय, विपर्यय, राग, द्वेष, स्मृतिभ्रंश, धर्मानादरता, अने डुःप्रणिधानरूप आठ प्रकारना प्रमादने, अप्रमादिपणाथी, अने सावद्य व्यापारना त्यागथी अविरितिने पण साधवी.

हवे मिथ्यात्व अने आर्त्त तथा रौद्रध्यानना उपायो कहे छे.

सद्दर्शनेन मिथ्यात्वं, शुनस्थैर्येण चेतसः ॥
विजयेतार्त्तरौद्रे च, संवरार्थं कृतोद्यमः ॥ ८५ ॥

अर्थः— संवरमाटे करेल छे उद्यम जेणें एवा योगीयें सम्यग् दर्शनथी मिथ्यात्वने, तथा धर्मध्यानरूप एवी चित्तनी स्थिरताथी आर्त्त अने रौद्रध्यानने जितवां.

जेम चोवटामां घणा द्वारवालुं घर होय, अने तेमां जेम धूल दाखल थाय छे, पण जो द्वार बंध होय तो दाखल थती नथी; अथवा जेम को-

एक तळाव खुल्लुं होय, अने तेमां जेम चारे बाजुयेथी पाणी जराय छे. अने जो आडी पाळ बांधी होय, तो तेमां पाणी जरातुं नथी; अथवा जेम एक वहाणमां छिद्र पड्युं होय, अने तेमांथी जेम पाणी जराय छे, पण जो ते छिद्रने बुरी लीधुं होय, तो तेमां पाणी प्रवेश करी शकतुं नथी. तेम योगादिक आश्रवद्वारोने जे रोक्यां होय, तो संवरें करीने मनोहर थएला एवा आ आत्मामां कर्मरूपी द्रव्यनो प्रवेश थतो नथी. संवरथी आश्रवद्वारोनो निरोध थाय छे, अने ते संवर क्षांति आदिक घणा गुणोयें करीने युक्त छे. मिथ्यात्वना अनुदयनी उत्तरें मिथ्यात्वसंवर होय छे; तेम देशविरति आदिकमां अविरति संवर होय, अने अप्रमत्त तथा संयत आदिक गुणस्थानोमां प्रमादनो संवर मानेलो छे; अने प्रशांत क्षीणमोहादिकमां कषायनो संवर होय, अने अयोगी केवलीमां तो संपूर्णरीतें योगोनो संवर होय.

हवे निर्जरा भावनानुं स्वरूप कहे छे.

संसारबीजभूतानां, कर्मणां जरणादिह ॥
निर्जरा सा स्मृता द्वेधा, सकामा कामवर्जिता ॥ ८६ ॥

अर्थः— चतुर्गतिरूप संसारनां बीजभूत कर्मोने जीर्ण करनारी, ते निर्जरा जाणवी; तेना बे भेदो; एक तो कंइ पण अभिलाषयुक्त ते सकामनिर्जरा, अने बीजी कोइपण जातना अभिलाष विनानी, ते अकाम निर्जरा. एवी रीतें बे प्रकारनी निर्जरा जाणवी.

हवे ते बन्ने प्रकारनी निर्जरा कहे छे.

ज्ञेया सकामा यमिना, मकामा त्वन्यदेहिनां ॥
कर्मणां फलवत्पाको, यदुपायात्स्वतोऽपिच ॥ ८७ ॥

अर्थः— सकाम निर्जरा मुनिर्ओनी जाणवी, अने अन्य जीवोनी अकाम निर्जरा जाणवी; केम के कर्मोनो पाक पण फलनी पेठे बे प्रकारनो छे एक उपायथी, अने बीजो पोतानी मेळे; अर्थात् जेम वृक्षोनां फलोने घास आदिकथी ढांकीने, अथवा वृक्षोपरज पकाववामां आवे छे.

तेम कर्मोनो पाक पण पोतानी मेले अने उपायथी पण थाय छे.

हवे स्पष्ट दृष्टांते करीने सकामनिर्जरानो हेतु कहे छे.

सदोषमपि दीप्तेन, सुवर्णं वह्निना यथा ॥
तपोऽग्निना तप्यमान, स्तथा जीवोविशुध्यति ॥ ८८ ॥

अर्थः— जेम दोषवाळुं पण सुवर्ण प्रदीप्त करेला अग्निथी शुद्ध थाय छे, तेम तपरूपी अग्निथी तपतो एवो आ जीव पण शुद्ध थाय छे. ते तप बाह्य अने अंतरनुं, एम बे प्रकारनुं छे; जेमांथी हवे बाह्य तपनुं स्वरूप कहे छे.

अनशनमौनोदर्यं, वृत्तेः संक्षेपणं तथा ॥
रसत्यागस्तनुक्लेशो, लीनतेति बहिस्तपः ॥ ८९ ॥

अर्थः— आहारनो सर्वथा त्याग, ऊनोदरी, वृत्तिनो संक्षेप, रसनो, त्याग, शरीरनो क्लेश, अने संलीनता ए छ प्रकारनुं बाह्य तप जाणवुं.

टीकाः— अनशन बे प्रकारनुं, एक इत्वर, अने बीजुं यावज्जीवनुं, इत्वर एटले नमस्कारसहित, अने ते श्री महावीर प्रभुना तीर्थमां उत्कृष्टुं छमाससुधिनुं, अने श्री ऋषभदेव प्रभुना तीर्थमां एक वर्षसुधिनुं; अने बाकीना तीर्थंकरोनां तीर्थोमां आठ माससुधिनुं. जावजीवनुं अनशन त्रण प्रकारनुं जाणवुं. “ पादपोपगमन, ” “ इंगिनी, ” अने “ भक्तप्रत्याख्यान ” ते पादपोपगमन अनशन बे प्रकारनुं जाणवुं, पेहेलुं सव्याघात, अने बीजुं अव्याघात. रोग आदिकनी वेदनाथी जे करवुं ते सव्याघात; अने ते विना स्थंडिल प्रदेशमां जइ उत्तम ध्यानमां रही करवुं ते अव्याघात. इंगिनी एटले सिद्धांतोमां कहेलो एक जातनो विधि अने तेणें करीने युक्त जे अनशन ते इंगिनी जाणवुं. अर्थात् आयुष्यनी हानि जाणीने स्थंडिल प्रदेशमां जइ, एकाकी चतुर्विध आहारनां पच्चखाण करीने, छाया विगरेमां हालवा चालवानी चेष्टासहित सम्यग् ध्यानमां तत्पर रही जे प्राणने तजवा, ते इंगिनी अनशन जाणवुं. तथा गछमां रही, कोमळ संथारापर रहीने, तथा शरीरना उपकरणोना ममत्वनो त्याग करीने, त्रिविध अथवा चतुर्विध आहारनां पच्चखाण करे, तथा पोते नवकार मंत्र जपे, अथवा पासे रहेला साधुओ तेने नव-

कार आदिक संजवावे; तथा तेनां पडखां आदिक फेरवे, एवी रीतें समाधिपूर्वक जे देहत्याग करवो, ते जक्तप्रत्याख्यान नामनुं अनशन जाणवुं; ऊनोदरी तप पण चार प्रकारनुं छे; वृत्ति एटले जिक्षानो संक्षेप; रस एटले मद्य, मांस, मध, माखण, घी, तेल, गोल विगेरे रसोनो त्याग करवो ते; तथा कायाने क्लेश आपवो ते; तथा लीनता एटले एकांत स्थानकें रहेवुं ते. ए छ प्रकारनुं बाह्य तप जाणवुं.

हवे आज्यंतर तपनुं स्वरूप कहे छे.

प्रायश्चित्तं वैयावृत्यं, स्वाध्यायोविनयोपि च ॥
व्युत्सर्गोऽथ शुन्नं ध्यानं, षोढेत्याभ्यंतरं तपः ॥ ए० ॥

अर्थः— प्रायश्चित्त, वैयावच्च, सज्झायध्यान, विनय, अनेषणीय आहार पाणी तथा कषायना त्याग, अने शुन्नध्यान, ए छ प्रकारनुं आज्यंतर तप जाणवुं.

टीकाः— मूल गुण तथा उत्तर गुणमां जे स्वल्प पण अतिचार आवे तेनुं प्रायश्चित्त लेवुं ते, ते प्रायश्चित्तपण दश प्रकारनुं छे. तथा स्थविर, गुरु, ग्लान आदिकनी वैयावच्च करवी ते; तेना पण दश जेदो छे. तथा स्वाध्याय एटले कालवेलाने व्यतिक्रमीने जे शास्त्राज्यास करवो ते; अने तेना पण पांच प्रकारो छे; तथा विनयना पण चार जेदो छे. व्युत्सर्ग बे प्रकारनो बाह्य अने आज्यंतर; बाह्य व्युत्सर्ग एटले बार प्रकारनी उपधिथी अतिरिक्त एवा अनेषणीय, अने संसक्त अन्न पानादिकनो त्याग. तथा आज्यंतर व्युत्सर्ग एटले आज्यंतर कषायोनो तथा मृत्युकाले शरीरनो पण त्याग; तथा शुन्न ध्यान एटले धर्म ध्यान अने शुक्लध्यान; एवी रीतें छ प्रकारनुं तप जाणवुं.

हवे तपने निर्जराना हेतुरूप कहेता थका कहे छे.

दीप्यमाने तपोवह्नौ, बाह्ये वाज्यंतरेपि च ॥
यमी जरति कर्माणि, ऊर्जराण्यपि तत्क्षणात् ॥ ए१ ॥

अर्थः— बाह्य अथवा आज्यंतर तपरूपी अग्नि बलते थके, मुनि, दुःखें करी क्षय थाय एवां पण ज्ञानावरणादिक कर्मोनो क्षय करे छे.

हवे धर्मस्वाख्याततता नामनी जावनानुं स्वरूप कहे छे,

स्वाख्यातःखलु धर्मोऽयं, जगवद्भिर्जिनोत्तमैः ॥
यं समालंबमानोहि, न मज्जेद्भवसागरे ॥ ए२ ॥

अर्थः— जगवंत एवा श्रीजिनेश्वर प्रजुर्गए आ धर्म, अत्यंत उत्कृष्टरीतें कहेलो छे. के जे धर्मनुं आलंबन लेतो प्राणी, खरेखर आ जवरूपी समुद्रमां डुबी शकतो नथी.

हवे ते धर्मनुं स्वरूप कहे छे.

संयमः सूनृतं शौचं, ब्रह्माकिंचनता तपः ॥
क्षांतिर्मार्दवमृजुता, मुक्तिश्च दशधा सतु ॥ ए३ ॥

अर्थः— संयम, सत्य, पवित्रता, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, तप, क्षमा, मार्दव, सरलता, तथा मुक्ति ए दश प्रकारनो धर्म कहेलो छे.

टीकाः— संयम सत्तर प्रकारनो जाणवो; सर्व प्रकारना जीवोनुं मर्दन, मन वचन अने कायाथी, करवुं, करावबुं अने अनुमोदवुं नहीं; एम नव प्रकारथी जीवसंयम जाणवो. पुस्तक आदिक अजीव पदार्थोनी यतना, प्रमार्जन आदिक करवुं, ते अजीव संयम; तथा जीवाकुल जूमिने तपासीने, तथा तेने प्रमार्जन करीने तेपर शयन विगेरे करवुं, ते प्रेक्षासंयम जाणवो; सावद्य व्यापारवाला गृहस्थोनी उपेक्षा करवी ते उपेक्षासंयम जाणवो, सचित्त, अचित्त तथा मिश्र पृथ्वीपर रजवाला पगोने प्रमार्जीने जवुं, ते प्रमार्जनासंयम जाणवो. अनेषणीय जक्तपानादिकने निर्जंतु जगोपर परठववां, ते परिष्ठापनासंयम जाणवो, अजिमान ईर्ष्या आदिकमांथी मनने निवृत्त करीने, धर्मध्यानादिकमां जोडवुं, ते मनःसंयम जाणवो; हिंस्र तथा कठोरवचनो नहीं बोलीने, शुज वचनोमां जे प्रवृत्ति करवी, ते वाक्संयम जाणवो; अने शुज क्रियामां प्रवृत्ति करवी ते कायसंयम जाणवो. एवी रीतें सत्तर प्रकारें संयम जाणवो. मृषावादनो जे त्याग ते सत्य जाणवुं; शौच एटले संयममां अदत्तादान आदिकनो अतिचार नहीं लगाडवो ते; ब्रह्मचर्य एटले आत्मस्वजावमां रमवुं ते, अने तेने माटे गुरुकुल सेवीने अब्रह्ममां प्रवृत्ति नहिं करवी. अकिंचन एटले शरीर अने ठेक धर्मोपकरणनेविषे पण म-

मत्वनाव नहिं राखवो ते; अर्थात् परिग्रहरहितपणुं; तप एटले उपर कहेलां बाह्य अने आज्यंतर तप; क्षांति एटले क्षमा; जातिमदादिकनो जे त्याग, ते मार्दव; रुजुता एटले मन, वचन अने कायाना वक्रनावोनो त्याग; तथा मुक्ति एटले बाह्य तथा आज्यंतर वस्तुउमां तृष्णानो त्याग; अर्थात् निःसंगपणुं;

हवे ते धर्मनुं माहात्म्य कहे छे.

धर्मप्रनावतः कल्प, डुमाद्यादृदतीप्सितं ॥
गोचरेपि न ते यत्स्यु, रधर्माधिष्ठितात्मनां ॥ ए४ ॥

अर्थः– धर्मना प्रनावथी कल्पवृक्ष आदिको इछित फलने आपे छे, अने अधर्मियोने तो ते गोचर (प्रत्यक्ष) पण थतां नथी. तथा,

अपारे व्यसनांनोधौ, पतंतं पाति देहिनं ॥
सदा सविधवर्त्येको, बंधुर्धर्मोऽतिवत्सलः ॥ एए ॥

अर्थः– हमेशां साथे रहेतो, अने बंधु समान अति वत्सल एवोएक धर्म, अपार एवा डुःखरूपी समुद्रमां पडता प्राणीनुं रक्षणकरे छे. तथा.

आप्लावयति नांनोधि, राश्वासयति चांबुदः ॥
यन्महीं सप्रनावोऽयं, ध्रुवं धर्मस्य केवलः ॥ ए६ ॥

अर्थः– समुद्र जे पृथ्वीने डुबाडी देतो नथी, तथा वरसाद जे पृथ्वीने तृप्त करे छे, ते पण खरेखर केवल धर्मनोज प्रनाव छे.

साधारण धर्मनुं साधारण माहात्म्य कहे छे.

नज्वलत्यनलस्तिर्यग्, यदूर्ध्वं वाति नानिलः ॥
अचिंत्यमहिमा तत्र, धर्मएव निबंधनं ॥ ए७ ॥

अर्थः– अग्नि आडो बलतो नथी, तथा पवन उंचो वातो नथी, ते सघलुं अचिंत्य महिमावंत एवा धर्मनुं कारण छे. तथा,

निरालंबानिराधारा, विश्वाधारोवसुंधरा ॥
यच्चावतिष्ठते तत्र, धर्मादन्यन्नकारणं ॥ ए८ ॥

अर्थः– आलंबन तथा आधाररहित, अने चराचर प्राणीउना आ-

धारजूत एवी आ पृथ्वी, जे रहेली छे, त्यां पण धर्मशिवाय बीजुं कारण नथी.

सूर्यचंद्रमसावेतौ, विश्वोपकृतिहेतवे ॥
उदयेते जगत्यस्मिन्, नूनं धर्मस्य शासनात् ॥ ९९ ॥

अर्थः– वळी आ जगत्‌मां, चराचर प्राणियोना उपकारमाटे जे सूर्यचंद्र उगे छे, ते पण खरेखर धर्मना शासनथीज उगे छे, तथा,

अबंधूनामसौ बंधु, रसखीनामसौ सखा ॥
अनाथानामसौ नाथो, धर्मो विश्वैकवत्सलः ॥ १०० ॥

अर्थः– वळी जगत्‌ना प्राणीउने वत्सलजूत एवो आ धर्म, अबंधुउने बंधुसमान छे, तथा अमित्रोने मित्रसमान छे, अने अनाथोने नाथ समान छे; तथा,

रक्षोयक्षोरगव्याघ्र, व्यालानलगरादयः ॥
नापकर्त्तुमलं तेषां, यैर्धर्मः शरणं श्रितः ॥ १०१ ॥

अर्थः– जेउए धर्मनुं शरणुं लीधेलुं छे, तेउने राक्षस, यक्ष, सर्प, व्याघ्र, हाथी अग्नि विष विगेरे पण पराजव करवाने समर्थ नथी. तथा,

धर्मोनरकपाताल, पातादवति देहिनः ॥
धर्मोनिरुपमं यच्छ, त्यपि सर्वज्ञवैभवं ॥ १०२ ॥

अर्थः– धर्म छे ते, प्राणिउने नरक अने पातालमां पडवाथी बचावे छे, तथा अनुपम एवुं सर्वज्ञपणानुं सुख पण आपे छे.

हवे लोक जावनानुं स्वरूप कहे छे.

कटिस्थकरवैशाख, स्थानकस्थनराकृतिं ॥
द्रव्यैः पूर्णं स्मरेल्लोकं, स्थित्युत्पत्तिव्ययात्मकैः ॥ १०३ ॥

अर्थः– कटिजागपर राखेल छे बन्ने हाथ जेणे, तथा प्रसारेल छे पग जेणे, एवा एक जगोपर उजा रहेला धनुर्धर पुरुषना सरखी आकृतिवाला, तथा स्थिति, उत्पत्ति, अने नाशस्वजाववाला धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, काल, जीव, अने पुजलोथी जरेला, तथा चौद रज्जुना प्रमाणवाला एवा, आ लोकनुं स्मरण करवुं.

हवे ते लोकनुं स्वरूपज कहे छे.

लोको जगत्त्रयाकीर्णो, भुवः सप्तात्र वेष्टिताः ॥
घनांभोधिमहावात, तनुवातैर्महाबलैः ॥ १०४ ॥

अर्थः— ते लोक अधोलोक, तिर्यक्लोक, अने ऊर्ध्वलोक त्रणे जगत्थी आकीर्ण थयेलो छे, तेनी अंदर रत्नप्रभा, शर्करप्रभा, वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, अने महातमःप्रभा, एवी सात नारकीनी भूमिओ छे, अने तेओ महाबलवान् एवा निबिड महासागर, तथा घनवा अने तनवाथी नीचे अने पडखेथी वींटाएलीओ छे.

वेत्रासनसमोऽधस्ता, न्मध्यतो झल्लरीनिभः ॥
अग्रेमरुजसंकाशो, लोकः स्यादेवमाकृतिः ॥ १०५ ॥

अर्थः— आ लोक नीचेथी नेत्रना आसन सरखो, मध्यमां झालर सरखो, अग्र भागमां मरुज सरखो एवी रीतनी आकृतिवालो छे.

निष्पादितोन केनापि, न धृतः केनचिन्न सः ॥
स्वयंसिद्धो निराधारो, गगने किंत्ववस्थितः ॥ १०६ ॥

अर्थः— आ लोकने कोइयें पण बनाव्यो नथी, अर्थात् ते अनादि छे; तेम कोइयें तेने धारी राख्यो पण नथी, पण ते पोतानी मेलेज उत्पन्न थएलो, अने आधाररहित आकाशमां रहेलो छे.

हवे त्रण श्लोकोयें करीने बोधिबीजना दुर्लभपणानी भावना कहे छे.

अकामनिर्जरारूपा, त्पुण्याज्जंतोः प्रजायते ॥
स्थावरत्वात्त्रसत्वं वा, तिर्यक्त्वं वा कथंचन ॥ १०७ ॥

अर्थः— अकामनिर्जरारूप पुण्यथी प्राणियोने, केटलांक कष्टें करीने स्थावरपणामांथी त्रसपणुं अथवा तिर्यंचपणुं मले छे.

मानुष्यमार्यदेशश्च, जातिः सर्वाक्षपाटवं ॥
आयुश्च प्राप्यते तत्र, कथंचित्कर्मलाघवात् ॥ १०८ ॥

अर्थः— वली आ लोकमां कर्मोना लाघवपणाथी केटलेक कष्टें मनुष्यभव, तेमां पण आर्यदेश, तेमां पण उत्तम जाति, तेमां पण सर्व इंद्रिओनुं पटुपणुं, अने तेमां पण दीर्घ आयुष्य मली शके छे.

प्राप्तेषु पुण्यतः श्रद्धा, कथकश्रवणेष्वपि ॥
तत्वनिश्चयरूपं तद्, बोधि रत्नं सुदुर्लभं ॥ १०९ ॥

अर्थः— वली पुण्यथी श्रद्धा एटले धर्मोपदेशनी अभिलाषा. धर्मनो उपदेश देनार गुरु, अने श्रवण पण मलते छते, तत्वना निश्चयरूप जे बोधिबिजरूपी रत्न, ते मलवुं बहु मुश्केल छे.

भावनाभिरविश्रांत, मिति भावितमानसः ॥
निर्ममः सर्वभावेषु, समत्वमवलंबते ॥ ११० ॥

अर्थः— एवी रीतनी भावनाउंथी मनने अत्यंत वासित करीने, ममतारहित माणस सर्व भावोमां समपणुं एटले उदासीनताने धारण करे.

हवे ते उदासीनपणानुं फल कहे छे.

विषयेभ्योविरक्तानां, साम्यवासितचेतसां ॥
उपशाम्येत्कषायाग्नि, र्बोधिदीपः समुन्मिषेत् ॥ १११ ॥

अर्थः— इंद्रियोना विषयोथी विरक्त थयेला, तथा समतायें करीने युक्त चित्तवाला, एवा योगिउंनो कषायरूपी अग्नि शांत थाय छे, अने तेउंने बोधिबीजरूपी दीपक प्रगटी निकले छे.

समत्वमवलंब्याथ, ध्यानं योगी समाश्रयेत् ॥
विना समत्वमारब्धे, ध्याने स्वात्मा विडंब्यते ॥ ११२ ॥

अर्थः— योगीयें समतानुं आलंबन लेइने ध्यान धरवुं केमके समता विना ध्यान धरवाथी आत्मा उलटो विडंबना पामे छे. वली,

मोक्षः कर्मक्षयादेव, सचात्मज्ञानतोभवेत् ॥
ध्यानसाध्यं मतं तच्च, तध्ध्यानं हितमात्मनः ॥ ११३ ॥

अर्थः— कर्मोना क्षयथी मोक्ष थाय छे, अने ते कर्मक्षय आत्मज्ञानथी थाय, ते आत्मज्ञान ध्यानथी थइ शके छे,माटे ध्यान छे ते, आत्माने हितकारि छे.

न साम्येन विना ध्यानं, न ध्यानेन विना च तत् ॥
निष्कंपं जायते तस्मा, द्वयमन्योन्यकारणं ११४ ॥

अर्थः— समता विना ध्यान थइ शकतुं नथी, अने ध्यान विना सम-

थती नथी; वळी समता विना निष्कंप ध्यान थइ शकतुं नथी माटे ते बन्ने अन्योन्य कारणरूपें रहेलां छे.

हवे ध्याननुं स्वरूप कहे छे.

मुहूर्त्तांतर्मनःस्थैर्यं, ध्यानं छद्मस्थयोगिनां ॥
धर्म्यं शुक्लं च तद्द्वेधा, योगरोधस्त्वयोगिनाम् ॥ ११५ ॥

अर्थः— छद्मस्थ योगिओने एक मुहूर्त्त सुधिनुं मननी स्थिरतावालुं ध्यान होय छे, ते ध्यान बे प्रकारनुं होय छे धर्मध्यान अने शुक्लध्यान; अने अयोगी केवलीओने तो मन, वचन, अने कायाना निरोधनो जे काल, तेज ध्यानरूप छे; केम के तेओ तो देशोनपूर्वकोटिसुधि मन, वचन अने कायानो व्यापार सहित विहार करेछे, अने मोक्षवखते व्यापारनो निरोध करेछे.

मुहूर्त्तात्परतश्चिंता, यद्वा ध्यानांतरं भवेत् ॥
बह्वर्थसंक्रमे तु स्या, द्दीर्घापि ध्यानसंततिः ॥ ११६ ॥

अर्थः—मुहूर्त्तवार पछी चिंता, अथवा ध्यानांतर होइ शके अने बहु अर्थनो जो संक्रम होय, तो लांबा काल सुधि पण ध्याननी परंपरा थइ शके.

मैत्रीप्रमोदकारुण्य, माध्यस्थानि नियोजयेत् ॥
धर्म्यध्यानमुपस्कर्त्तुं, तद्धि तस्य रसायनं ॥ ११७ ॥

अर्थः— धर्मध्यानना उपकारमाटे, मैत्री, प्रमोद, कारुण्य अने मध्यस्थपणाने जोडवां, केम के तेम करवुं ते, ते ध्यानने रसायण सरखुं पुष्टि करनारछे.

हवे ते मैत्रीनुं स्वरूप कहे छे.

माकार्षीत्कोऽपि पापानि, मा च भूत्कोपि दुःखितः ॥
मुच्यतां जगदप्येषा, मतिर्मैत्री निगद्यते ॥ ११८ ॥

अर्थः—कोइ पण प्राणी पापकार्य करो नहीं; अने कोइ पण दुःखी थाओ नहीं; अने सघलां जगत्ने मोक्ष मलो; एवी रीतनी बुद्धि ते मैत्री कहेवाय.

हवे प्रमोदनुं स्वरूप कहे छे.

अपास्ताशेषदोषाणां, वस्तुतत्वावलोकिनां ॥
गुणेषु पक्षपातोयः, सप्रमोदः प्रकीर्त्तितः ॥ ११९ ॥

अर्थः– दूर करेल छे सघला दोषो जेउंये, तथा वस्तुनां तत्वोने जाणनार एवा, अर्थात् ज्ञान अने क्रिया बन्ने करीने युक्त एवा मुनिउंना गुणोमां जे पक्षपात राखवो, तेने प्रमोद कहेलो छे.

हवे कारुण्यनुं स्वरूप कहे छे.

दीनेष्वार्त्तेषु भीतेषु, याचमानेषु जीवितं ॥
प्रतीकारपरा बुद्धिः, कारुण्यमभिधीयते ॥ १२० ॥

अर्थः– अज्ञानना बलथी कुशास्त्रो प्ररूपनारा एवा दीन, तथा तृष्णा आदिकथी पीडित थएला, तथा वैरी, रोग आदिकथी डर पामता, अने पोताना प्राण बचाववानी याचना करता एवा प्राणिउंने, ते ते कष्टोमांथी छोडाववानी जे बुद्धि, ते कारुण्य कहेवाय छे.

हवे मध्यस्थनुं स्वरूप कहे छे.

क्रूरकर्मसु निःशंकं, देवतागुरुनिंदिषु ॥
आत्मशंसिषु योपेक्षा, तन्माध्यस्थमुदीरितं ॥ १२१ ॥

अर्थः– शुद्ध देवगुरुनी निंदा करनारा एवा क्रूर कार्योना करनाराउंमां तथा पोतानी प्रशंसा करनाराउंमां निःशंकपणे जे उपेक्षा करवी, तेने माध्यस्थपणुं कह्युं छे. माटे,

आत्मानं भावयन्नाभि, र्भावनाभिर्महामतिः ॥
त्रुटितामभिसंधत्ते, विशुद्धध्यानसंततिं ॥ १२२ ॥

अर्थः– एवी रीतें उपर कहेली भावनाउंथी, पोताना आत्माने भावतो थको, महाबुद्धिमान् योगी, त्रुटेली एवी पण शुद्ध ध्याननी परंपराने सांधी दे छे.

हवे ते ध्यान कये स्थानकें करवुं, ते देखाडे छे.

तीर्थं वा स्वस्थताहेतुं, यत्तद्वा ध्यानसिद्धये ॥
कृतासनजयो योगी, विविक्तं स्थानमाश्रयेत् ॥ १२३ ॥

अर्थः– करेल छे आसनोनो जय कहेतां अभ्यास जेणें एवा योगीयें ध्यानसिद्धिमाटे, ज्यां तीर्थंकरोनो जन्म, दीक्षा, ज्ञान, अथवा मोक्ष थयो होय, तेवां तीर्थस्थानोनो, अथवा ज्यां चित्तने स्वस्थता मले एवां

गिरिगुफा आदिक गमे ते स्थाननो आश्रय लेवो; अर्थात् तेवां गमे ते कोइ स्थानमां जइ ध्यान धरवुं.

हवे ते आसनोनां नामो कहे छे.

पर्यंकवीरवज्राब्ज, भद्रदंडासनानि च ॥
उत्कटिका गोदोहिका, कायोत्सर्गस्तथासनं ॥ १२४ ॥

अर्थः— पर्यंकासन, वीरासन, वज्रासन, अब्जासन, भद्रासन, दंडासन, उत्कटिकासन, गोदोहिकासन, तथा कायोत्सर्ग, ए आसनो जाणवां.

हवे अनुक्रमें ते आसनोनुं स्वरूप कहे छे.

स्याज्जंघयोरधोभागे, पादोपरि कृते सति ॥
पर्यंको नाभिगोत्तान, दक्षिणोत्तरपाणिकः ॥ १२५ ॥

अर्थः— बन्ने जंघाउना नीचेना भागो पग उपरे करते छते, तथा नाभिसुधि उंचो जमणो अने डाबो हाथ उपर उपर राखवाथी पर्यंकासन थाय.

हवे वीरासननुं स्वरूप कहे छे.

वामोऽंघ्रिदक्षिणोरूर्ध्वं, वामोरूपरि दक्षिणः ॥
क्रियते यत्र तद्वीरो, चितं वीरासनं स्मृतं ॥ १२६ ॥

अर्थः— जे आसनमां डाबो पग जमणा साथलपर, तथा जमणो पग डाबा साथलपर कराय छे, ते वीरने उचित एवुं वीरासन जाणवुं.

हवे वज्रासननुं स्वरूप कहे छे.

पृष्टे वज्राकृतीभूत, दोर्भ्यां वीरासने सति ॥
गृह्णीयात्पादयोर्यत्रां, गुष्ठौ वज्रासनं तु तत् ॥ १२७ ॥

अर्थः— उपर कह्या प्रमाणे वीरासन करीने, पाछलना भागमां वज्र सरखी आकृतिवाला थयेला एवा बन्ने हाथोथी, जे आसनमां पगना अंगुठाउं ग्रहण कराय छे, तेने वज्रासन कहेलुं छे.

हवे मतांतरथी वीरासननुं स्वरूप कहे छे.

सिंहासनाधिरूढस्या, सनापनयने सति ॥
तथैवावस्थितिर्या ता, मन्ये वीरासनं विदुः ॥ १२८ ॥

अर्थः— पृथ्वीपर पग राखीने, तथा सिंहासनपर बेसीने, पछी सिंहासनने खेसवीने तेवीज रीतें जे रहेवुं; तेने पण अन्य सिद्धांतियो वीरासन एवुं कायक्लेश तपना प्रकरणमां कहे छे.

वळी पतंजलि ऋषि तो उन्ना रहीने एक पग पृथ्वीपर, अने बीजो घुंटणसुधि खेंचीने उंचो राखवो, तेने वीरासन कहे छे.

हवे पद्मासननुं स्वरूप कहे छे.

जंघायामध्यन्नागे तु, संश्लेषोयत्र जंघया ॥
पद्मासनमिति प्रोक्तं, तदासनविचक्षणैः ॥ १२९ ॥

अर्थः— एक जंघाना मध्यन्नागमां बीजी जंघानो जेमां संश्लेष थाय छे, तेने आसनना जाणनाराउंये पद्मासन कहेलुं छे.

हवे न्नद्रासननुं स्वरूप कहे छे.

संपुटीकृत्य मुष्काग्रे, तलपादौ तथोपरि ॥
पाणिकछपिकां कुर्यात्, यत्र न्नद्रासनं तु तत् ॥ १३० ॥

अर्थः— मुष्कन्नागनी पासे पगनां बन्ने तलिआउंनो संपुट करीने, तेपर हाथनी कछपिका करवाथी न्नद्रासन थाय छे.

हवे दंडासननुं स्वरूप कहे छे.

श्लिष्टांगुलीश्लिष्टगुल्फौ, नूश्लिष्टोरू प्रसारयेत् ॥
यत्रोपविश्य पादौ त, दंडासनमुदीरितं ॥ १३१ ॥

अर्थः— बेसीने आंगलीयो, तथा गुल्फने जोडी देइने तथा पृथ्वीपर साथलने राखीने, आसनमां पगने प्रसाराय, तेने दंडासन कहेलुं छे.

हवे उत्कटिका तथा गोदोहिका आसनोनुं स्वरूप कहे छे.

पुतपार्ष्णिसमायोगे, प्राहुरुत्कटिकासनं ॥
पार्ष्णिन्यां तु नुवस्त्यागे,तत्स्याद्गोदोहिकासनं ॥ १३२ ॥

अर्थः— पुत अने पगनां तलीयांउंनो योग थाते छते, उत्कटिका नामनुं आसन कहेलुं छे, तथा, तेज पगनां तलीआं ज्यारे पृथ्वीने अडकतां नथी, त्यारे ते गोदोहिकासन कहेवाय.

हवे कायोत्सर्गनुं स्वरूप कहे छे.

प्रालंबितभुजद्वंद्व, मूर्द्धस्थस्यासितस्य वा ॥
स्थानं कायानपेक्षं यत्, कायोत्सर्गः स कीर्त्तितः ॥१३३॥

अर्थः— बन्ने हाथो लांबा करीने, उभा रहीने, अथवा बेठां बेठां कायानी अपेक्षाविना जे रहेवुं, तेने कायोत्सर्ग कहेलो छे. (जिनकल्पिउ) फक्त उभा उभाज कायोत्सर्ग करे, अने स्थविर कल्पिउ तो उभा उभा बेठा बेठा अने उपलक्षणथी सुतासुता पण कायोत्सर्ग करे.

एवी रीतें आम्रकुब्जासन, क्रौंचासन, हंसासन, अश्वासन, गजासन विगेरे घणी जातनां आसनो छे; माटे,

जायते येन येनेह, विहितेन स्थिरं मनः ॥
तत्तदेव विधातव्य, मासनं ध्यानसाधनं ॥ १३४ ॥

अर्थः— जे जे आसन करवाथी मन स्थिर थाय, ते ते ध्यानने साधनारुं आसन करवुं.

सुखासनसमासीनः, सुश्लिष्टाधरपल्लवः ॥
नासाग्रन्यस्तदृग्द्वंद्वो, दंतै र्दंतानसंस्पृशन् ॥ १३५ ॥
प्रसन्नवदनःपूर्वा, भिमुखोवाप्युदङ्मुखः ॥
अप्रमत्तः सुसंस्थानो, ध्याता ध्यानोद्यतो भवेत् ॥ १३६ ॥

अर्थः— सुखें करी आसन वालीने बेठेलो, तथा सारी रीतें जोडी दीधेल छे, बन्ने होठ जेणे एवो, तथा नासिकाना अग्रभागपर राखेल छे, बन्ने आंखो जेणे एवो, तथा उपला दांतोथी नीचला दांतोने, अने नीचला दांतोथी उपला दांतोने नहीं स्पर्श करतो एवो, तथा प्रसन्न मुखवालो, अने पूर्व दिशा, अथवा उत्तरदिशा तरफ, अने उपलक्षणथी जिन, अथवा जिनप्रतिमा सन्मुख उभेलो, तथा प्रमाद रहित अने शरीरना उत्तमसन्निवेशवालो, एवो ध्यान धरनार योगी ध्यानमां उद्यमवंत थइ शके.

एवी रीतें परमार्हतश्रीकुमारपाल भूपालथी सेवायेला श्री आचार्य महाराजश्री हेमचंद्रजीये बनावेला अध्यात्मोपनिषद् नामना, तथा थयेल छे, पट्टबंध जेमनो, एवा आ योगशास्त्रमां पोते करेलुं चोथा प्रकाशनुं विवरण समाप्त थयुं. श्रीरस्तु.

श्री जिनाय नमः

॥ अथ पंचमः प्रकाशः प्रारभ्यते ॥

हवे प्राणायाम आदिक आठ अंगो अन्यदर्शनियोयें योगनां कहेलां छे; पण ते प्राणायाम मुक्तिसाधनना ध्यानमां उपयोगी नथी, तो पण ते कायाना आरोग्यपणामां अने कालज्ञानादिकमां उपयोगी छे, तेथी तेनुं स्वरूप पण अहीं अमोयें दर्शाव्युं छे. ते नीचे प्रमाणे जाणवुं.

प्राणायामस्ततः कैश्चित्, आश्रितोध्यानसिध्धये ॥
शक्यो नेतरथा कर्त्तुं, मनःपवननिर्जयः ॥ १ ॥

अर्थः— तेथी पतंजलि आदि केटलाकोये ध्यानसिद्धिमाटे प्राणायामनो एटले मुख अने नासिकाना वायुने रोकवापणानो आश्रय लीधेलो छे, केमके ते विना मन अने पवननो जय थइ शकतो नथी.

हवे ते प्राणायामथी मनने शीरीतें जीताय? ते माटे कहे छे.

मनोयत्र मरुत्तत्र, मरुद्यत्र मनस्ततः ॥
अतस्तुल्यक्रियावेतौ, संवीतौ क्षीरनीरवत् ॥ २ ॥

अर्थः—ज्यां मन छे, त्यां पवन छे, तथा ज्यां पवन छे, त्यां मन छे, माटे तुल्य क्रियावालां तेउ बन्ने, क्षीरनीरनी पेठे जोडाइने रहेलां छे.

हवे तेउनुं तुल्यक्रियापणुं देखाडे छे.

एकस्य नाशेऽन्यस्य स्या, न्नाशो वृत्तौ च वर्त्तनं ॥
ध्वस्तयोरिंद्रियमति, ध्वंसान्मोक्षश्च जायते ॥ ३ ॥

अर्थः— ते बन्नेमांथी जो एकनो नाश थाय, तो बीजानो पण नाश थाय, अने एक जो हयात होय, तो बीजो पण हयात होय; वली ते बन्नेनो नाश होते छते इंद्रिय अने मतिनो नाश थाय छे,अने तेथी मोक्ष थायछे.

हवे प्राणायामनुं लक्षण अने तेना भेदो कहे छे.

प्राणायामो गतिच्छेदः, श्वासप्रश्वासयोर्मतः ॥
रेचकः पूरकश्चैव, कुंभकश्चेति सत्रिधा ॥ ४ ॥

अर्थः— श्वास अने उच्छ्वासनी गतिने जे रोकवुं, तेनुं नाम प्राणायाम; तेना रेचक, पूरक, अने कुंभक नामें त्रण भेदो छे.

हवे बीजा आचार्यना मत प्रमाणे पण तेना भेदो कहे छे.

प्रत्याहारस्तथाशांत, उत्तरश्चाधरस्तथा ॥
एभिर्भेदैश्चतुर्भिस्तु, सप्तधा कीर्त्यते परैः ॥ ५ ॥

अर्थः– प्रत्याहार, शांत, उत्तर, अने अधर, तथा तेनी साथे उपरना त्रण भेदोयें करीने युक्त एवा सात भेदो पण बीजा आचार्यो प्राणायामना कहे छे.

हवे तेउंनुं अनुक्रमें लक्षण कहे छे.

यत्कोष्ठादतियत्नेन, नासाब्रह्मपुराननैः ॥
बहिः प्रक्षेपणं वायोः; सरेचकइति स्मृतः ॥ ६ ॥

अर्थः– उदरमांथी बहुज यतनापूर्वक वायुने, नासिका, ब्रह्मपुररंध्र, अने मुखथी जे बहार फेंकवो, तेने रेचक प्राणायाम कहेलो छे. तथा,

समाकृष्य यदापानात्, पूरणं स तु पूरकः ॥
नाभिपद्मे स्थिरीकृत्य, रोधनं स तु कुंभकः ॥ ७ ॥

अर्थः– बाहारना वायुनुं आकर्षण करीने, छेक अपानद्वारसुधि उदरने तेथी भरवुं, ते पूरक प्राणायाम जाणवो, तथा ते वायुने नाभिपद्ममां स्थिर करीने जे रोकवो, ते कुंभक प्राणायाम जाणवो.

स्थानात्स्थानांतरोत्कर्षः प्रत्याहारःप्रकीर्त्तितः ॥
तालुनासाननद्वारै, र्निरोधः शांत उच्यते ॥ ८ ॥

अर्थः– नाभि आदिक स्थानथी हृदय आदिक स्थानमां वायुनुं जे खेंचवुं, तेने "प्रत्याहार" कहेलो छे, तथा तालु नासिका अने मुखद्वारथी वायुनो जे निरोध करवो, ते शांत कहेवाय छे. तथा,

आपीयोर्द्ध्वं यदुत्कृष्य हृदयादिषु धारणं ॥
उत्तरः ससमाख्यातो, विपरीतस्ततोऽधरः ॥ ९ ॥

अर्थः– बाहारना पवनने पीइने, तथा तेने उंचो चडावीने हृदयादिकमां जे धारी राखवो, तेने उत्तरप्राणायाम कहेलो छे, तथा तेथी विपरीत ते अधरप्राणायाम जाणवो; अर्थात् उंचेथी नीचे लाववो ते.

हवे तेउनुं फल कहे छे.

रेचनादुदरव्याधिः, कफस्य च परिक्षयः ॥
पुष्टिः पूरकयोगेन, व्याधिघातश्च जायते ॥ १० ॥

अर्थः— रेचनथी पेटनी पीडानो, तथा कफनो नाश थाय छे अने पूरकथी पुष्टि तथा व्याधिउनो नाश थाय छे.

विकसत्याशु हृत्पद्मं, ग्रंथिरंतर्विभिद्यते ॥
बलस्थैर्यविवृद्धिश्च, कुंभनाद् भवति स्फुटं ॥ ११ ॥

अर्थः— कुंभन प्राणायामथी हृदयकमल तुरत विकस्वर थाय छे. तथा अंदरनी गांठ भांगी जाय छे,अने प्रगट रीतें बल अने स्थिरतानी वृद्धिथायछे.

प्रत्याहाराद् बलं कांति, र्दोषशांतिश्च शांततः ॥
उत्तराधरसेवातः, स्थिरता कुंभकस्य तु ॥ १२ ॥

अर्थः— प्रत्याहारथी बल अने कांति वधे छे तथा शांतथी दोषनी शांति थाय छे, अने उत्तर अने अधर सेववाथी कुंभकनी स्थिरता थाय छे.

हवे ते प्राणायाम पांचे वायुने जीतवानो हेतु छे. ते कहे छे.

प्राणमपानसमाना, वुदानं व्यानमेव च ॥
प्राणायामैर्जयेत् स्थान, वर्णक्रियार्थबीजवित् ॥ १३ ॥

अर्थः— प्राणादिकनां स्थान, वर्ण, क्रिया अर्थ अने बीजने जाणनार योगी, प्राणायामें करीने, प्राणवायुने, अपान केतां विष्टादिक दूर करनार वायुने, उदान कहेतां रसादिकोने उंचे लेइ जनारा वायुने, तथा व्यान केतां व्यापक वायुने पण जीती शके छे.

हवे ते प्राणोनां स्थानादिक कहे छे.

प्राणो नासाग्रहन्नाभि, पादांगुष्ठांतगो हरित् ॥
गमागमप्रयोगेण, तज्जयो धारणेन वा ॥ १४ ॥

अर्थः— प्राणवायु नासिकाना अग्र भागपर,हृदयमां, नाभिमां तथा पगना अंगुठाना अग्रभागपर होय छे,अने ते हरित् वर्णनो होय छे, तथा आववा जवाना प्रयोगें करीने अथवा धारण करवाथी तेनो जय थाय छे.

हवे ते गमागम प्रयोग तथा धारणनुं वर्णन करे छे.

नासादिस्थानयोगेन, पूरणाद्रेचनान्मुहुः ॥

गमागमप्रयोगः स्यात्, धारणं कुंजनात्पुनः ॥ १५ ॥

अर्थः— नासिकादि स्थानना योगें करीने वारंवार पूरण तथा रेचनथी गमागमनो प्रयोग थाय, तथा कुंजनथी धारण थाय.

हवे अपान वायुनुं स्वरूप कहे छे.

अपानः कृष्णरुग्मन्या, पृष्टपृष्टांतपार्ष्णिगः ॥

जेयः स्वस्थानयोगेन, रेचनात्पूरणान्मुहुः ॥ १६ ॥

अर्थः— अपान वायु काळा रंगनो होय छे, तथा ते गळांनी पाछळनी नाडीउमां, गुदामां तथा पगना पाछळना जागमां होय छे, अने ते पोताना स्थानना योगथी रेचन अने पूरणथी वारंवार जीती शकाय छे.

हवे समानवायुनुं स्वरूप कहे छे.

शुक्लः समानोहृन्नाभि, सर्वसंधिष्ववस्थितः ॥

जेयः स्वस्थानयोगेना, सकृद्रेचनपूरणात् ॥ १७ ॥

अर्थः— समान वायु सफेदरंगनो होय छे, तथा ते हृदय, नाभि, अने सर्व संधिस्थानोमां रहेलो छे, अने पोताना स्थानना योगें करीने, ते वारंवार रेचन अने पूरणथी जीती शकाय छे.

हवे उदानवायुनुं स्वरूप कहे छे.

रक्तोहृत्कंठतालुभ्रू, मध्यमूर्ध्नि च संस्थितः ॥

उदानोवश्यतां नेयो, गत्यागतिनियोगतः ॥ १८ ॥

अर्थः— उदान वायु लाल रंगनो होय छे, तथा ते हृदय, कंठ, तालु, भ्रुकुटीउनो मध्य जाग तथा मस्तकमां रहेलो छे, अने ते गमनागमनना नियोगथी जीती शकाय छे.

हवे ते गमनागमननो प्रयोग कहे छे.

नासाकर्षणयोगेन स्थापयेत्तं हृदादिषु ॥

बलादुत्कृष्यमाणं च, रुध्वा रुध्वा वशं नयेत् ॥ १९ ॥

अर्थः—नासिकाने खेंचवाना योगें करीने ते उदान वायुने हृदय आदिकमां

विषे स्थापवो, अने बलथी ऊंचे चडता एवा तेने रोकी रोकीने वशमां लेवो.

हवे व्याननुं स्वरूप कहे छे.

सर्वत्वग्वृत्तिकोव्यान, शक्रकार्मुकसन्निभः ॥
जेतव्यःकुंभकाभ्यासा, त्संकोचप्रसृतिक्रमात् ॥ २० ॥

अर्थः– व्यान वायु सर्व जगोये त्वचामां वर्त्ते छे,अने तेनो रंग इंद्रधनुषना जेवो होय छे, तथा तेने संकोच अने प्रसरें करीने, कुंभकना अभ्यासथी जीतवो.

हवे तेनां ध्यान धरवा लायक बीजो कहे छे.

प्राणापानसमोदान, व्यानेष्वेषु च वायुषु ॥
यैं पैं वैं लौं बीजानि, ध्यातव्यानि यथाक्रमं ॥ २१ ॥

अर्थः– प्राण, अपान, समान, उदान, अने व्यान वायुमां, अनुक्रमें यैं, पैं, वैं, लौं एवी रीतनां बीजो ध्याववां.

हवे त्रण श्लोकोयें प्राणादिकना जयना अर्थने कहे छे.

प्राबल्यं जाठरस्याग्ने, र्दीर्घश्वासमरुज्जयौ ॥
लाघवं च शरीरस्य, प्राणस्य विजये भवेत् ॥ २२ ॥

अर्थः– जठराग्निनुं प्राबल्य, दीर्घश्वास अने पवननो जय, अने शरीरनी लघुता, एटलां वानां प्राणना जयमाटे थाय छे.

रोहणं क्षतभंगादे, रुदराग्नेः प्रदीपनं ॥
वर्चोऽल्पत्वं व्याधिघातः, समानापानयोर्जये ॥ २३ ॥

अर्थः–समान अने अपाननो जय होते छते, गुमडां तथा हाडकां आदिकना भंगनुं दूर थवुं थाय छे, तथा जठराग्नि प्रदीप्त थाय छे, चरबीनुं अल्पपणुं, तथा व्याधिनो पण नाश थाय छे.

उत्क्रांतिर्वारिपंकाद्यै, श्चाबाधोदाननिर्जये ॥
जये व्यानस्य शीतोष्णा, संगः कांतिररोगिता ॥ २४ ॥

अर्थः– उदाननो जय करते छते, पाणी कादव आदिकनी अबाधा, तथा उत्क्रांति थाय छे. अने व्याननो जय करते छते, ठंडी अने तापनी अबाधा, कांति, अने निरोगीपणुं थाय छे.

हवे तेउनुं सामटुं फल कहे ठे.

यत्र यत्र नवेत्स्थाने, जंतोरोगः प्रपीडिकः ॥

तच्छांत्यै धारयेत् तत्र, प्राणादिमरुतः सदा ॥ २५ ॥

अर्थः– जे जे स्थानकें प्राणीने पीडा करनारो रोग थयो होय, तेनी शांतिने माटे त्यां त्यां, प्राणादिक वायुउने धारवा.

एवं प्राणादिविजये, कृताभ्यासः प्रतिक्षणं ॥

धारणादिकमभ्यस्ये, न्मनःस्थैर्यकृते सदा ॥ २६ ॥

अर्थः– एवी रीतें वारंवार प्राणादिकना जयमां अभ्यास करीने, हमेशां मननी स्थिरतामाटे धारणा, ध्यान समाधि आदिकनो अभ्यास करवो.

हवे ते धारणादिक पांच श्लोकोयें करीने कहे ठे.

उक्तासनसमासीनो, रेचयित्वानिलं शनैः ॥

आपादांगुष्ठपर्यंतं, वाममार्गेण पूरयेत् ॥ २७ ॥

पादांगुष्ठे मनःपूर्वं, रुध्वा पादतले ततः ॥

पार्ष्णौ गुल्फे च जंघायां, जानुन्यूरौ गुदे ततः २८ ॥

लिंगे नाभौ च तुंदे च, हृत्कंठरसनेऽपि च ॥

तालुनासाग्रनेत्रे च, भ्रुवोर्भाले शिरस्यथ ॥ २९ ॥

एवं रश्मिक्रमेणैव, धारयन्मरुता सह ॥

स्थानात्स्थानांतरं नीत्वा, यावद्ब्रह्मपुरं नयेत् ॥ ३० ॥

ततः क्रमेण तेनैव, पादांगुष्ठांतमानयेत् ॥

नाभिपद्मांतरं नीत्वा, ततो वायुं विरेचयेत् ॥ ३१ ॥

॥ पंचभिः कुलकं ॥

अर्थः– उपर जणावेलां आसनोपर बेसीने, धीरेधीरे पवनने रेचीने, डाबी नाडीथी मननीसाथे पगना अंगुठाथी मांडीने ठेक ब्रह्मद्वारसुधि शरीरने पूरवुं, तेमां पेहेलां पगना अंगुठामां, पठी पगना तलीआउमां, पठी पगना पाठलना नागमां, पठी गुल्फोमां, पठी जंघामां, पठी ढुंटणमां, पठी साथलमां, पठी गुदामां, पठी लिंगमां, पठी नाभिमां, पठी जठरमां, पठी हृदयमां, पठी कंठमां, पठी जीनमां, पठी तालुमां, पठी

नासिकाना अग्रज्ञागमां, पढी नेत्रमां, पढी ज्रुकुटीउंमां, पढी कपालमां तथा पढी मस्तकमां, एवी रीतें अनुक्रमें पवननी साथे मनने लावीने ठेक ब्रह्मद्वारसुधि धरवो, पढी अनुक्रमें तेवीज रीतें ठेक उतारी उतारीने पगना अंगुठासुधि लाववो, अने नाजिपद्ममां लावीने पवननुं विरेचन करवुं.

हवे चार श्लोकोयें करीने धारणानुं फल कहे ठे.

पादांगुष्ठादौ जंघायां, जानूरुगुदमेहने ॥
धारितः क्रमशोवायुः, शीघ्रगत्यै बलाय च ॥ ३२ ॥
नाजौ ज्वरादिघाताय, जठरे कायशुद्धये ॥
ज्ञानाय हृदये कूर्म, नाड्यां रोगजराच्छिदे ॥ ३३ ॥
कंठे क्षुत्तर्षनाशाय, जिह्वाग्रे रससंविदे ॥
गंधज्ञानाय नासाग्रे रूपज्ञानाय चक्षुषोः ॥ ३४ ॥
ज्ञाले तद्रोगनाशाय, क्रोधस्योपशमाय च ॥
ब्रह्मरंध्रे च सिद्धानां, साक्षाद्दर्शनहेतवे ॥ ३५ ॥

॥ चतुर्जिः कलापकं ॥

अर्थः– पगना अंगुठा, पार्ष्णि, तथा गुल्फमां, जंघामां, घुंटणमां, साथलमां, अने लिंगमां धारण करेलो वायु अनुक्रमें शीघ्रगति अने बलमाटे गुणकारी ठे, नाजिमां रहेलो ज्वरादिकना नाशमाटे ठे, जठरमां रहेलो कायानी शुद्धिमाटे ठे, हृदयमां रहेलो ज्ञानमाटे ठे, कूर्मनाडीमां रहेलो रोग अने घडपणना नाश माटे ठे, कंठमां रहेलो क्षुधा अने तृषाना नाश माटे ठे, जीजना अग्रज्ञागमां रहेलो रसना ज्ञान माटे ठे, नासिकाना अग्रज्ञागमां रहेलो गंधना ज्ञानमाटे ठे, चक्षुउंमां रहेलो रूपना ज्ञानमाटे ठे, कपालमां रहेलो त्यांना रोगना नाशमाटे ठे, तथा क्रोधना उपशम माटे पण ठे, अने ब्रह्मद्वारमां रहेलो साक्षात् सिद्धोना दर्शनमाटे ठे.

हवे धारणाने उपसंहरता थका पवननुं चेष्टित कहे ठे.

अन्यस्य धारणामेवं, सिद्धीनां कारणं परं ॥
चेष्टितं पवमानस्य, जानीयाद् गतसंशयः ॥ ३६ ॥

अर्थः– एवी रीतें धारणानो अभ्यास करीने, संशयरहित थया थकां सिद्धिना उत्कृष्ट कारणसरखुं, पवननुं चेष्टित जाणवुं.

नाभेर्निष्क्रामतश्चारं, हृन्मध्ये नयतोगतिं ॥

तिष्ठतोद्वादशांते तु, विद्यात्स्थानं नभस्वतः ॥ ३७ ॥

अर्थः– नाभिथी निकलता, अने हृदयमां जता, तथा ब्रह्मरंध्रमां रहे-ता एवा पवननुं स्थान जाणवुं.

हवे ते चारादिकोनां ज्ञाननुं फल कहे छे.

तच्चारगमनस्थान, ज्ञानादभ्यासयोगतः ॥

जानीयात्कालमायुश्च, शुभाशुभफलोदयं ॥ ३८ ॥

अर्थः– तेना चार, गमन अने स्थानना ज्ञानथी, अभ्यासना योगें क-रीने शुभ अने अशुभ फलना उदयवालां एवां काल अने आयुष्यने जाणवां.

ततः शनैः समाकृष्य पवनेन समं मनः ॥

योगी हृदयपद्मांत, र्विनिवेश्य नियंत्रयेत् ॥ ३९ ॥

अर्थः– पछी योगियें धीरेथी पवननी साथे मनने खेंचीने, हृदयपद्म-नी अंदर राखीने, तेने नियंत्रित करवो.

हवे ज्यारे हृदयमां पवन होय, त्यारे मनमां जे फल थाय छे ते कहे छे.

ततोऽविद्या विलीयंते, विषयेछा विनश्यति ॥

विकल्पाविनिवर्त्तंते ज्ञानमंतर्विजृंभते ॥ ४० ॥

अर्थः– तेथी अविद्याउं विलीन थाय छे, विषयनी इछा पण नाश पा-मे छे. विकल्पो निवृत्त थाय छे, अने अंदर ज्ञान प्रगट थाय छे. वली,

क मंडले गतिर्वायोः, संक्रमः क क विश्रमः ॥

का च नाडीति जानीयात्, तत्र चित्ते स्थिरीकृते ॥ ४१ ॥

अर्थः– हृदयमां मनने स्थिर करवावडे करीने, वायुनी गति कया मं-डलमां छे, तथा तेनुं संक्रमण अने विश्राम पण क्यां छे, तथा नाडी कइ छे, ते सघलुं जणाय.

हवे ते मंडलो कहे छे.

मंडलानि च चत्वारि, नाशिकाविवरे विडः ॥
नौमवारुणवायव्या, भेयाख्यानि यथोत्तरं ॥ ४२ ॥

अर्थः– नाशिकानां विवरोमां, अनुक्रमें, भूमिसंबंधि, वारुण, वायव्य, तथा अग्निसंबंधि एम चार मंडलो कहेलां छे.

हवे भौम मंडलनुं स्वरूप कहे छे.

पृथिवीबीजसंपूर्णं, वज्रलांछनसंयुतं ॥
चतुरस्त्रं हतस्वर्णं, प्रनं स्याद्भौममंडलं ॥ ४३ ॥

अर्थः– पृथिवीनां बीजें करी संपूर्ण, अने चारे खुणे वज्र लांछने करीने युक्त, अने तपावेला सुवर्णसरखी प्रजावालुं भौममंडल होय.

हवे वारुणमंडलनुं स्वरूप कहे छे.

स्यादर्धचंद्रसंस्थानं, वारुणाक्षरलांछितं ॥
चंद्राजममृतस्यंद, सांडं वारुणमंडलं ॥ ४४ ॥

अर्थः– वारुणमंडल अर्धचंद्रनां संस्थानवालुं, अने वारुण एटले वकारें करीने लांछित, अने चंद्र सरखी सफेद कांतिवालुं, अने अमृतना करणा सरखुं सांद्र होय छे.

हवे वायव्यमंडलनुं स्वरूप कहे छे.

स्निग्धांजनघनछायं, सुवृत्तं बिंडुसंकुलं ॥
डुर्लक्ष्यं पवनाक्रांतं, चंचलं वायुमंडलं ॥ ४५ ॥

अर्थः–स्निग्ध एवा अंजन अने वादलांनी छाया सरखुं, गोल, मध्यमां बिंडुवालुं, डुर्लक्ष्य, पवनें करीने आक्रांत थएलुं तथा चंचल, एवुं वायुमंडल होय.

हवे आग्नेयनुं स्वरूप कहे छे.

ऊर्ध्वज्वालांचितं भीमं, त्रिकोणं स्वस्तिकान्वितं ॥
स्फुलिंगपिंगं तद्बीजं, ज्ञेयमाग्नेयमंडलं ॥ ४६ ॥

अर्थः–उंची ज्वालावालुं, जयंकर, त्रण खुणावालुं, तथा ते खुणाउंमां स्वस्तिकनां चिह्नवालुं,अने अग्निना तणखा सरखुं पीलुं आग्नेयमंडल जाणवुं.

हवे तेना बोधने माटे कहे छे.

अभ्यासेन स्वसंवेद्यं, स्यान्मंडलचतुष्टयं ॥
क्रमेण संचरन्नत्र, वायु र्ज्ञेयश्चतुर्विधः ॥ ४७ ॥

अर्थः— अभ्यासें करीने ते चारे मंडल स्वसंवेद्य थाय, अने तेमां संचरतो वायु अनुक्रमें चार प्रकारनो जाणवो.

हवे अनुक्रमें ते चार प्रकारो कहे छे.

नासिकारंध्रमापूर्य, पीतवर्णैः शनैर्वहन् ॥
कवोष्णोऽष्टांगुलः स्वछो, भवेद्वायुः पुरंदरः ॥ ४८ ॥

अर्थः— नासिकाना द्वारने पूरीने, पीतवर्णें करीने धीरे धीरे वहेतो, तथा जरा उनो, आठ आंगुलना प्रमाणवालो स्वछ पार्थिव वायु पुरंदर कहेवाय. तथा,

धवलः शीतलोऽधस्तात्, त्वरितत्वरितं वहन् ॥
द्वादशांगुलिमानश्च, वायुर्वरुण उच्यते ॥ ४९ ॥

अर्थः— सफेद, शीतल तथा नीचेना जागमां तुरत तुरत वहेतो बार आंगुलना प्रमाणवालो वायु वरुण कहेवाय छे. तथा,

उष्णशीतश्च कृष्णश्च, वहंस्तिर्यगनारतं ॥
षडंगुलप्रमाणश्च, वायुः पवनसंज्ञितः ॥ ५० ॥

अर्थः— क्वचित् उष्ण अने क्वचित् ठंडो, काला रंगनो, तथा हमेशां तिर्छो वहेतो, अने छ आंगलना प्रमाणवालो वायु पवन नामथी उंलखाय छे. तथा.

बालादित्यसमज्योती, रत्युष्णश्चतुरंगुलः ॥
आवर्त्तवान् वहन्नूर्ध्वं, पवनोदहनः स्मृतः ॥ ५१ ॥

अर्थः— सूर्य सरखी लाल कांतिवालो, अत्यंत उष्ण, आवर्त्तवालो, तथा उंचे वहेतो, अने चार आंगुलना प्रमाणवालो वायु दहन कहेवाय.

हवे जे वायु होते छते जे कार्य करवुं ते कहे छे.

इंद्रं स्तंभादिकार्येषु, वरुणं शस्तकर्मसु ॥
वायुं मलिनलोलेषु, वश्यादौ वह्निमादिशेत ॥ ५२ ॥

अर्थः– स्तंजादिक कार्योमां पुरंदरने, उत्तम कार्योमां वरुणने, मलीन अने चपलकार्योमां वायुने, अने वशीकरणादिकमां दहन पवनने जोडवो.

हवे प्रारंज करेला कार्यमां, तथा कार्यना प्रश्नमां जे वखते जे वायु होय, तेनुं फल चार श्लोकोथी कहे छे.

छत्रचामरहस्त्यश्वा, रामराज्यादिसंपदं ॥
मनीषितं फलं वायुः, समाचष्टे पुरंदरः ॥ ५३ ॥
तथा राज्यादिसंपूर्णैः पुत्रस्वजनबंधुन्निः ॥
सारेण वस्तुना चापि, योजयेद्वरुणः क्षणात् ॥ ५४ ॥
कृषिसेवादिकं सर्वं, मपि सिद्धं विनश्यति ॥
मृत्युन्नीः कलहो वैरं, त्रासश्च पवने न्नवेत् ॥ ५५ ॥
न्नयं शोकं रुजं दुःखं, विघ्नव्यूहपरंपरां ॥
संसूचयेद्विनाशं च, दहनोदहनात्मकः ॥ ५६ ॥

अर्थः– पुरंदर वायु छत्र, चामर, हाथी, घोडा, बगीचा तथा राज्य आदिक इच्छित संपदानुं फल सूचवे छे. तथा वरुण छे ते राज्य आदिक संपदाथी संपूर्ण थएला एवा स्वजन बंधुउनी साथे, तथा उत्तम वस्तु साथे मेलाप करावे छे. अने पवनवायुथी खेती, सेवा विगेरे जे सिद्ध थयुं होय, ते पण नाश पामे छे, तथा मृत्युनी बीक, क्लेश, वेर अने त्रास थाय. तथा दहन स्वजाववालो दहन वायु, जय, शोक, रोग, दुःख, विघ्न विगेरेनी श्रेणि, तथा नाशने सूचवे छे.

हवे तेउनुं वधारे सूक्ष्मपणुं कहे छे.

शशांकरविमार्गेण, वायवो मंडलेष्वमी ॥
विशंतः शुन्नदाः सर्वे, निष्क्रामंतोऽन्यथा स्मृताः ॥ ५७ ॥

अर्थः– सघला वायुउ डाबा अने जमणा मार्गथी मंडलमां दाखल थता शुजने देनारा छे, तथा निकलता थका तेउ सर्वे अशुजने देनार छे.

हवे तेनुं कारण कहे छे,

प्रवेशसमये वायु, र्जीवो मृत्युस्तु निर्गमे ॥
उच्यते ज्ञानिभिस्तादृक्, फलमप्यनयोस्ततः ॥ ५८ ॥

अर्थः— प्रवेश वखतें जीव वायु होय ले, तथा निर्गमन वखते मृत्यु वायु होय ले, माटे तेउंनुं ज्ञानियोयें एवुं फल कहेलुं ले.

हवे बे श्लोकोयें करीने वायुनुं शुजपणुं अशुजपणुं, तथा मध्यमपणुं नाडीजेदथी कहे ले.

पथेंदोरिंद्रवरुणौ, विशंतौ सर्वसिद्धिदौ ॥
रविमार्गेण निर्यांतौ, प्रविशंतौ च मध्यमौ ॥ ५९ ॥

अर्थः— चंद्रनाडीने मार्गे प्रवेश करता पुरंदर अने वरुण वायु सर्व सिद्धिने देनारा ले, तथा सूर्यनाडीने मार्गे निकलता अने प्रवेश करता तेउ मध्यम जाणवा.

दक्षिणेन विनिर्यांतौ, विनाशायानिलानलौ ॥
निःसरंतौ विशंतौ च मध्यमावितरेण तु ॥ ६० ॥

अर्थः— जमणीनाडीने मार्गे निकलता पवन अने दहन वायु नाश माटे ले, तथा डाबी बाजुथी निकलता अने प्रवेश करता वायु मध्यम जाणवा.

हवे नाडीनुं स्वरूप कहे ले.

इडा च पिंगला चैव, सुषुम्णा चेति नाडिकाः ॥
शशिसूर्यशिवस्थानं, वामदक्षिणमध्यगाः ॥ ६१ ॥

अर्थः— डाबी बाजुनी इडा नाडीनुं चंद्र स्थान ले, जमणी बाजुनी पिंगला नाडीनुं सूर्य स्थान ले, तथा मध्यमां रहेली सुषुम्णा नाडीनुं शिव स्थान ले.

हवे बे श्लोकोयें करीने ते नाडीयोमां वायुना संचारनुं फल कहे ले.

पीयूषमिव वर्षंती, सर्वगात्रेषु सर्वदा ॥
वामामृतमया नाडी, सम्मताजीष्टसूचिका ॥ ६२ ॥
वहंत्यनिष्टशंसित्री, संहंत्री दक्षिणा पुनः ॥
सुषुम्णा तु जवेत्सिद्धि, निर्वाणफलकारणं ॥ ६३ ॥

अर्थः— हमेशां सर्व गात्रोमां अमृतनेज जाणे वरसती, एवी अमृतमय डाबी नाडी शुजने सूचवनारी कहेली ले; अने जमणी नाडी वहे-

ती थकी, अनिष्ट सूचवनारी छे, अने सुषुम्णा नाडी अणिमादिक सिद्धि अने मोक्षनां फलनां कारणरूप छे.

वली तेउनुं विशेष फल कहे छे.

वामैवाभ्युदयादीष्ट, शस्तकार्येषु सम्मता ॥
दक्षिणा तु रताहार, युध्दादौ दीप्तकर्मणि ॥ ६४ ॥

अर्थः— अभ्युदय आदिक उत्तम कार्योमां डाबी नाडी कहेली छे. अने संजोग, आहार तथा युद्धादिक दीप्त कार्योमां जमणी नाडी कहेली छे.

हवे ते नाडीउनो विषयविभाग कहे छे.

वामा शस्तोदये पक्षे, सिते कृष्णे तु दक्षिणा ॥
त्रीणि त्रीणि दिनानींदु, सूर्ययोरुदयः शुभः ॥ ६५ ॥

अर्थः— अजवालीआ पक्षमां सूर्योदय वखते डाबी नाडी उत्तम जाणवी, अने कृष्णपक्षमां जमणी नाडी शुभ जाणवी, वली ते ते पक्षमां त्रण त्रण दिवसो सुधि ते बन्ने नाडीउनो शुभ उदय जाणवो.

हवे तेउनो अस्तनियम कहे छे.

शशांकेनोदये वायोः, सूर्येणास्तं शुभावहं ॥
उदये रविणात्वस्य, शशिनास्तं शिवं मतं ॥ ६६ ॥

अर्थः— जे दिवसें चंद्रथी वायुनो उदय थाय, ते दिवसें सूर्यथी अस्त थाय तो सारुं, अने जे दिवसें सूर्यथी उदय थाय, ते दिवसें चंद्रथी अस्त थाय तो सारुं.

हवे पूर्वे कहेला अर्थनेज त्रण श्लोकोयें करीने विस्तारथी कहे छे.

सितपक्षे दिनारंभे, यत्नेन प्रतिपद्दिने ॥
वायोर्वीक्षेत संचारं, प्रशस्तमितरं तथा ॥ ६७ ॥
उदेति पवनः पूर्वं, शशिन्येषत्र्यहं ततः ॥
संक्रामति त्र्यहं सूर्ये, शशिन्येव पुनस्त्र्यहं ॥ ६८ ॥
वहेद्यावद्बृहत्पर्व, क्रमेणानेन मारुतः ॥
कृष्णपक्षे पुनः सूर्यो, दयपूर्वमयं क्रमः ॥ ६९ ॥

॥ त्रिभिर्विशेषकं ॥

अर्थः– अजवाळीया पक्षमां पडवाने दिवसें दिवसना प्रारंभ वखते प्रशस्त अने अप्रशस्त एवो वायुनो संचार जोवो; तेमां पेहेलां त्रण दिवस सुधि चंद्रनाडीमां ते वहे छे, पछी त्रण दिवस सूर्यनाडीमां जाय छे, अने पाछो त्रण दिवस चंद्रनाडीमां जाय छे; एवी रीतें अनुक्रमें छे-क पूर्णिमासुधि वहे छे, अने कृष्णपक्षमां पेहेलां सूर्यनाडी अने पछी चंद्रनाडीमां एम अनुक्रमें वहे छे.

हवे श्लोकोयें करीने उपरना क्रममां व्यतिक्रम होते छते फल कहे छे.

त्रीन् पक्षानान्यथान्वस्य, मासषट्केन पंचता ॥
पक्षद्वयं विपर्यासे, ऽभीष्टबंधुविपद् भवेत् ॥ ७० ॥
भवेत्तु दारुणो व्याधि, रेकं पक्षं विपर्यये ॥
दित्र्याद्यहविपर्यासे, कलहादिकमुद्दिशेत् ॥ ७१ ॥

अर्थः– जो त्रण पखवाडीआं सुधि विपरीतपणे नाडी वहे, तो छ मासमां मृत्यु थाय, बे पक्षसुधि विपरीतपणे वहे तो वहालां सगांओने पीडा थाय, अने एक पक्षसुधि तेम वहे, तो भयंकर व्याधि थाय, अ-ने बे त्रण दिवस तेम वहे तो, क्लेश आदिक थाय. तथा–

एकद्वित्रीण्यहोरात्रा, ण्यर्क एव मरुद्वहन् ॥
वर्षैस्त्रिभिर्द्वाभ्यामेके, नांतायेंदोरुजे पुनः ॥ ७२ ॥

अर्थः– एक दिवस अने रात्रिए जो सूर्यनाडीज वहे तो त्रण वर्षें मृत्यु थाय, बे दिवसरात्रि वहे, तो बे वर्षें मृत्यु थाय, तथा त्रण दिवस-रात्रि वहे, तो एक वर्षें मृत्यु थाय अने चंद्रनाडी वहे तो रोग थाय.

मासमेकं रवावेव, वहन् वायुर्विनिर्दिशेत् ॥
अहोरात्रावधिं मृत्युं, शशांकेन धनक्षयं ॥ ७३ ॥

अर्थः– एक मास सुधि जो सूर्यनाडीज वहेती रहे तो एक रात्रि दिवसमां मृत्यु थाय, अने जो चंद्रनाडी तेम वहे, तो धननो क्षय थाय.

वायुस्त्रिमार्गगः शंसे, न्मध्याह्नात्परतोमृतिं ॥
दशाहं तु द्विमार्गस्थः, संक्रांतौ मरणं दिशेत् ॥ ७४ ॥

अर्थः– त्रणे नाडीओना मार्गमां रहेलो वायु मध्याह्न पछी मृत्यु सू-

चवे छे, तथा दश दहाडासुधि बे नाडीमां रहेलो, अने ते पछी संचार करतो मरण सूचवे छे.

दशाहं तु वहन्निंदा, वेवोद्वेगरुजे मरुत् ॥
इतश्चेतश्च यामार्धं, वहन् लाभार्चनादिकृत् ॥ ७५ ॥

अर्थः– दश दहाडा सुधि चंद्रनाडीमांज वहेतो वायु, उद्वेग अने रोग माटे थाय छे, तथा अरधा पोहोरसुधि एक बीजी नाडीमां जतो, लाभ अने पूजा आदिकमाटे थाय.

विषुवत्समयप्राप्तौ, स्पंदेते यस्य चक्षुषी ॥
अहोरात्रेण जानीयात्, तस्य नाशमसंशयं ॥ ७६ ॥

अर्थः– तुल्य रात्रि दिवसनो संगम होते छते, जेनी आंखो फरके छे, तेनो एक रात्रि दिवसमां निश्चयें करीने नाश थाय छे. तथा,

पंचातिक्रम्य संक्रांती, मुखे वायुर्वहन् दिशेत् ॥
मित्रार्थहानिनिस्तेजो, ऽनर्थान् सर्वान्मृतिं विना ॥ ७७ ॥

अर्थः– वायुनां पांच संक्रमण पछी जो मुखमां वायु वहे, तो मित्र, धन विगेरेनी हानि, निस्तेजपणुं, तथा मृत्यु शिवाय सर्व अनर्थो थाय. तथा–

संक्रांतीः समतिक्रम्य, त्रयोदश समीरणः ॥
प्रवहन् वामनासायां, रोगोद्वेगादि सूचयेत् ॥ ७८ ॥

अर्थः– तेर संक्रांति पछी चउदमी संक्रांतिमां, डाबी नासिकामां जो वायु वहे, तो रोग अने उद्वेग आदिक सूचवे छे. तथा,

मार्गशीर्षस्य संक्रांति, कालादारभ्य मारुतः ॥
वहन् पंचाहमाचष्टे, वत्सरेऽष्टादशे मृतिं ॥ ७९ ॥

अर्थः– मागसर महीनानी संक्रांतिथी मांडीने, जो पांच दिवससुधि (एकज नाडीमां) पवन वहे, तो अढार वर्षे मृत्यु थाय. तथा,

शरत्संक्रांतिकालाच्च, पंचाहं मारुतो वहन् ॥
ततः पंचदशाब्दाना, मंते मरणमादिशेत् ॥ ८० ॥

अर्थः– शरदनी संक्रांतिथी पांच दिवससुधि जो एकज नाडीमां पवन वहे, तो पंदर वर्षने अंते मरण सूचवे छे; तथा,

श्रावणादेः समारभ्य, पंचाहमनिलो वहन् ॥
अंते द्वादशवर्षाणां, मरणं परिसूचयेत् ॥ ८१ ॥
वहन् ज्येष्ठादिदिवसा, दशाहानि समीरणः ॥
दिशेन्नवमवर्षस्य, पर्यंते मरणं ध्रुवं ॥ ८२ ॥
आरभ्य चैत्राद्यदिना, त्पंचाहं पवनो वहन् ॥
पर्यंते वर्षषट्कस्य, मृत्युं नियतमादिशेत् ॥ ८३ ॥
आरभ्य माघमासादेः, पंचाहानि मरुद्वहन् ॥
संवत्सरत्रयस्यांते, संसूचयति पंचतां ॥ ८४ ॥

॥ चतुर्भिः कलापकं ॥

अर्थः– श्रावणनी आदिथी मांडीने पांच दिवसोसुधि एकज नाडीमां जो वायु वहे, तो ते बार वर्षे मृत्यु सूचवे छे, जेठथी मांडीने दश दिवसोसुधि तेम वहे तो निश्चें नवमे वर्षे मृत्यु सूचवे छे, अने चैत्रथी मांडीने पांच दिवसो सुधि जो तेम वहे, तो छ वर्षे निश्चें मृत्यु सूचवे छे तथा माहाथी मांडीने जो पांच दिवसो सुधि तेम वहे,तो त्रण वर्षे मृत्यु सूचवेछे.

सर्वत्र द्वित्रिचतुरो, वायुश्चेद्दिवसान् वहेत् ॥
अब्दभागैस्तु ते शोध्या, यथावदनुपूर्वशः ॥ ८५ ॥

अर्थः– सर्व जगोये बे, त्रण, अने चार दिवसो सुधि जो वायु वहे, तो वर्षना भागोथी तेउने अनुक्रमें शोधवा.

हवे कालज्ञाननुं स्वरूप कहेछे.

अथेदानीं प्रवक्ष्यामि, किंचित्कालस्य निर्णयं ॥
सूर्यमार्गं समाश्रित्य, सच पौष्णे च गम्यते ॥ ८६ ॥

अर्थः– हवे कंइक कालनो निर्णय कहीशुं; ते सूर्यना मार्गने आश्रीने पौष्णमां जणाय छे.

हवे ते पौष्णनुं स्वरूप कहे छे.

जन्मऋक्षगते चंद्रे, समसप्तगते रवौ ॥
पौष्णनामा भवेत्कालो, मृत्युनिर्णयकारणं ॥ ८७ ॥

अर्थः– जन्म नक्षत्रमां चंद्र आवते बते, तथा समसतमां सूर्य आवते बते, मृत्युनिर्णयना कारणरूप पौष्ण नामें काल थाय.

हवे तेनेविषे सूर्यनाडीना प्रवाहें करीने कालज्ञान कहे बे.

दिनार्धं दिनमेकं च, यदा सूर्ये मरुद्वहन् ॥
चतुर्दशे द्वादशेऽब्दे, मृत्यवे जवति क्रमात् ॥८८॥

अर्थः– अरधो दिवस अने आखो दिवस, ज्यारे सूर्यनाडीमां वायु वहेतो होय, त्यारे अनुक्रमें, चौदमे, अने बारमे वर्षे मृत्यु माटे ते थाय.

तथैव च वहन् वायु, रहोरात्रं द्व्यहं त्र्यहं ॥
दशमाष्टमषष्ठाब्दे, ष्वंताय जवति क्रमात् ॥ ८९ ॥

अर्थः– वली तेवीज रीतें एक रात्रिदिवस एकज नाडीमां वहेतो वायु दशमे वर्षे, बे दिवस वहेतो आठमे वर्षे, त्रण दिवस वहेतो बठे वर्षे मृत्युमाटे थाय बे.

वहन् दिनानि चत्वारि, तुर्येब्दे मृत्यवे मरुत् ॥
साशीत्यहःसहस्रे तु, पंचाहानि वहन् पुनः ॥ ९० ॥

अर्थः– वली जो ते चार दिवसोसुधि वहे, तो चोथे वर्षे मृत्यु थाय, तथा पांच दिवसोसुधि वहे, तो त्रण वर्षे मृत्यु थाय.

एकद्वित्रिचतुःपंच, चतुर्विंशत्यहःक्षयात् ॥
षडादीन् दिवसान् पंच, शोधयेदिह तद्यथा ॥ ९१ ॥

अर्थः– ब आदिक दिवसोने, एक, बे, त्रण, चार, पांच वार चोवीश दिवसना क्षयथी नीचे प्रमाणे शोधवा.

षट्कं दिनानामध्यर्कं, वहमाने समीरणे ॥
जीवत्यह्नां सहस्रं षट्, पंचाशद्दिवसाधिकं ॥ ९२ ॥

अर्थः– सूर्यनाडी जो ब दिवससुधि चाले, तो एक हजार अने बपन दिवसो सुधि जीवे. तथा,

सहस्रं साष्टकं जीवे, द्वायौ सप्ताहवाहिनि ॥
सषट्त्रिंशन्नवशतीं, जीवेत्त्वष्टाहवाहिनि ॥ ९३ ॥

अर्थः– जो सात दिवस वहे, तो एक हजारने आठ दिवस जीवे अने आठ दिवस सुधि वहे, तो नवसोने छत्रीश दिवस जीवे. तथा,

एकत्रैव नवाहानि, तथा वहति मारुते ॥
अह्नामष्टशतीं जीवे, च्चत्वारिंशद्दिनाधिकां ॥ ९४ ॥

अर्थः– वली तेवी रीतें एकज नाडीमां जो नव दिवसोसुधि वायु वहे, तो आठसोने चालीश दिवसोसुधि जीवी शके. तथा,

तथैव वायौ प्रवह, त्येकत्र दश वासरान् ॥
विंशत्यधिकामह्नां, जीवेत्सप्तशतीं ध्रुवं ॥ ९५ ॥

अर्थः– तेवीज रीतें वली जो दश दिवसो सुधि एकज नाडीमां वायु वहे, तो सातसो ने वीश दिवस जीवे.

एकद्वित्रिचतुः पंच, चतुर्विंशत्यहःक्षयात् ॥
एकादशादिपंचाहा, न्यत्र शोध्यानि तद्यथा ॥ ९६ ॥

अर्थः– वली अग्यार आदिक दिवसोने पण, नीचे प्रमाणे, एक, बे, त्रण चार अने पांच एवी चोवीशीयुक्त दिवसोना क्षयथी शोधवा.

एकादशदिनान्यर्के, नाड्यां वहति मारुते ॥
षण्णवत्यधिकान्यह्नां षट्शतान्येव जीवति ॥ ९७ ॥

अर्थः– सूर्य नाडीमां जो अग्यार दिवसो सुधि वायु वहे, तो छसोने छनु दिवस जीवे.

तथैव द्वादशाहानि, वायौ वहति जीवति ॥
दिनानां षट्शतीमष्ट, चत्वारिंशत्समन्वितां ॥ ९८ ॥

अर्थः– तेवीज रीतें जो बार दिवसो सुधि वायु वहे, तो छसोने अडतालीश दिवसोसुधि जीवी शके. तथा,

त्रयोदशदिनान्यर्क, नाडीवाहिनि मारुते ॥
जीवेत्पंचशतीमह्नां, षट्सप्ततिदिनाधिकां ॥ ९९ ॥

अर्थः– वली जो सूर्यनाडीमां तेर दिवसो सुधि वायु वहे, तो पांचसो ने छोंतेर दिवसो जीवे. तथा,

चतुर्दश दिनान्येवं, प्रवाहिनि समीरणे ॥
अशीत्यभ्यधिकं जीवे, दह्नां शतचतुष्टयं ॥ १०० ॥

अर्थः– वली एवीज रीतें जो चौद दिवसो सुधि नाडी वहे, तो चारसो ने एंशी दिवसो सुधि जीवे.

तथा पंचदशाहानि, यावद् वहति मारुते ॥
जीवेत् षष्ठीदिनोपेतं, दिवसानां शतत्रयं ॥ १०१ ॥

अर्थः– वली एवीज रीतें जो पंदर दिवसो सुधि वहे, तो त्रणसोने साठ दिवसो सुधि जीवे. तथा,

एकद्वित्रिचतुःपंच, द्वादशाहक्रमक्षयात् ॥
षोडशाद्यानि पंचाहा, न्यत्र शोध्यानि तद्यथा ॥ १०२ ॥

अर्थः– तथा सोल आदिक पांच दिवसोने, एक, बे त्रण, चार अने पांच संख्यावाला बार बार दिवसोना क्षयथी शोधवा अने ते नीचे प्रमाणे.

प्रवहत्येकनाशायां, षोडशाहानि मारुते ॥
जीवेत्सहाष्टचत्वारिं, शतं दिनशतत्रयीं ॥ १०३ ॥

अर्थः– जो एकज नाशिकामां सोलदिवसो सुधि वायु वहे, तो त्रणसोने अडतालीश दिवसो सुधि जीवे.

वहमाने तथा सप्त, दशाहानि समीरणे ॥
अह्नां शतत्रये मृत्यु, श्चतुर्विंशतिसंयुते ॥ १०४ ॥

अर्थः– वली तेवीज रीतें सत्तर दिवसो सुधि वायु वहे, तो त्रणसोने चोवीश दिवसें मृत्यु थाय. तथा,

पवने विचरत्यष्टा, दशाहानि तथैव च ॥
नाशोष्टाशीतिसंयुक्ते, गते दिनशतद्वये ॥ १०५ ॥

अर्थः– वली एवीज रीतें जो अढार दिवसो सुधि, वायु वहे, तो बसोने अठ्याशी दिवसें मृत्यु थाय.

विचरत्यनिले तद्वत्, दिनान्येकोनविंशतिः ॥
चत्वारिंशद्युते याते, मृत्युर्दिनशतद्वये ॥ १०६ ॥

अर्थः– वली तेवीजरीतें जो उंगणीश दिवसो सुधि वहे, तो बसोने चालीश दिवस जाते थके मृत्यु थाय. तथा,

विंशतिदिवसानेक, नासाचारिणि मारुते ॥
साशीतौ वासरशते, गते मृत्युर्न संशयः॥ १०७ ॥

अर्थः– वली एवीज रीतें जो वीश दिवसो सुधि वायु वहे तो एकसो ने एंशी दिवसे मृत्यु थाय, तेमां संशय नथी. तथा,

एकद्वित्रिचतुःपंच, दिनषट्ककमक्रयात् ॥
एकविंशादि पंचाह्वा, न्यत्र शोध्यानि तद्यथा ॥१०८॥

अर्थः– एकवीश आदिक पांच दिवसोने, अनुक्रमें नीचे प्रमाणे, एक, बे, त्रण, चार, अने पांच संख्यावाला ठ ठ दिवसोना क्रयथी शोधवा.

एकविंशत्यहं त्वर्के, नाडीवाहिनि मारुते ॥
चतुःसप्ततिसंयुक्तं, मृत्यु र्दिनशते नवेत् ॥ १०९ ॥

अर्थः– सूर्यनाडीमां जो एकवीश दिवसोसुधि वायु वहे तो, एकसोने चमोतेर दिवसें मृत्यु थाय. तथा,

द्वाविंशतिदिनान्येवं, सद्विषष्ठावहःशते ॥
षड्दिनोनैः पंचमासै, स्त्रयोविंशत्यहानुगे ॥ ११० ॥

अर्थः– एवीज रीतें बावीश दिवसो सुधि जो नाडी वहे, तो एकसो ने बासठ दिवसें मृत्यु थाय, अने जो त्रेवीश दिवसो सुधि वहे तो पांच मासमां ठ दिवस उंठे मृत्यु थाय. तथा;

तथैव वायौ वहति, चतुर्विंशतिवासरी ॥
विंशत्यभ्यधिके मृत्यु, र्नवेद्दिनशते गते ॥ १११ ॥

अर्थः– तेवीज रीतें जो चोवीश दिवसो सुधि वायु वहे, तो एकसो ने वीश दिवसें मृत्यु थाय. तथा,

पंचविंशत्यहं चैवं, वायौ मासत्रये मृतिः ॥
मासद्वये पुनर्मृत्युः, षर्विंशतिदिनानुगे ॥ ११२ ॥

अर्थः– एवीज रीतें जो पचीश दिवसोसुधि वायु वहे, तो त्रण मासें मृत्यु थाय, अने ठवीश दिवसो सुधि वहे, तो बेमासें मृत्यु थाय. तथा,

सप्तविंशत्यहं वहे, न्नाशो मासेन जायते ॥
मासार्धेन पुनर्मृत्यु, रष्टाविंशत्यहानुगे ॥ ११३ ॥

अर्थः—एवीज रीतें जो सत्तावीश दिवसो सुधि वहे, तो एक मासमां मृत्यु थाय, अने जो अठावीश दिवसो सुधि वहे, तो अरधा मासमां मृत्यु थाय.

एकोनत्रिंशदहगे, मृतिः स्याद्दशमेऽहनि ॥
त्रिंशद्दिनीचरे तु स्या, त्पंचत्वं पंचमे दिने ॥ ११४ ॥

अर्थः— एवीज रीतें जो उंगणत्रीश दिवसो सुधि वहे, तो दशमे दिवसें मृत्यु थाय अने त्रीश दिवसो सुधि वहे, तो पांचमे दिवसे मृत्यु थाय.

एकत्रिंशदहचरे, वायौ मृत्युर्दिने त्रये ॥
द्वितीयदिवसे नाशो, द्वात्रिंशदहवाहिनि ॥ ११५ ॥

अर्थः— एवीज रीतें जो एकत्रीश दिवसो सुधि वायु वहे, तो त्रण दिवसें मृत्यु थाय, जो बत्रीश दिवसो सुधि वहे तो बीजे दिवसे मृत्यु थाय.

हवे सूर्यनाडीनुं स्वरूप उपसंहरता थका चंद्रनाडीनुं स्वरूप कहे छे.

त्रयस्त्रिंशदहचरे, त्वेकाहेनापि पंचता ॥
एवं यदीडनाड्यां स्यात्, तदा व्याध्यादिकं दिशेत् ॥११६॥

अर्थः— एवीज रीतें जो सूर्यनाडी तेत्रीश दिवसो सुधि वहे, तो एक दिवसमां मृत्यु थाय, अने एवीज रीतें जो चंद्रनाडीमां वायु संचरे तो व्याधि, मित्रनाश, महाजय आदिक थाय.

अध्यात्मं वायुमाश्रित्य, प्रत्येकं सूर्यसोमयोः ॥
एवमभ्यासयोगेन, जानीयात् कालनिर्णयं ॥ ११७ ॥

अर्थः— एवी रीतें सूर्य अने चंद्रनाडीना, शरीरमां रहेला वायुने आश्रीने तथा एवी रीतें अभ्यासना योगथी कालनो निर्णय जाणवो.

आध्यात्मिकविपर्यासः, संजवेद्व्याधितोऽपि हि ॥
तन्निश्चयाय बध्नामि, बाह्यं कालस्य लक्षणं ॥ ११८ ॥

अर्थः— शरीरमां रहेला वायुनो व्याधिथी पण विपर्यास थाय छे, माटे तेना निश्चयमाटे कालनुं बाह्य लक्षण हुं बांधुंछुं.

नेत्रश्रोत्रशिरोभेदात्, सच त्रिविधलक्षणः ॥
निरीक्ष्यः सूर्यमाश्रित्य, यथेष्टमपरः पुनः ॥ ११ए ॥

अर्थः– ते काल सूर्यने आश्रिने, नेत्र, कर्ण, अने मस्तकना भेदथी त्रण प्रकारनो जोवो, अने ते त्रण भेदथी बीजो काल इछाप्रमाणे जोवो.

हवे तेमांथी नेत्रनुं लक्षण कहे छे.

वामे तत्रेक्षणे पद्मं, षोडशछदमैंदवं ॥
जानीयाद् भावनीयं तु, दक्षिणे घादशछदं ॥ १२० ॥

अर्थः– त्यां डाबी आंखमां शोल पत्रनुं चंद्रकमल जाणवुं, तथा जमणी आंखमां बार पत्रनुं भाववुं.

खद्योतद्युतिवर्णानि, चत्वारि छदनानि तु ॥
प्रत्येकं तत्र दृश्यानि स्वांगुलीविनिपीडनात् ॥ १२१ ॥

अर्थः– हवे ते प्रत्येक बन्ने कमलोमां (गुरूपदेशथी) पोतानी आंगुलीथी दाबवावडें करीने खद्योतनां रंगनां चार पत्रो जोवां.

सोमाधोभ्रूलतापांग, घ्राणांतिकदलेषु तु ॥
दले नष्टे क्रमान्मृत्युः, षट्त्रियुग्मैकमासतः ॥ १२२ ॥

अर्थः– चंद्र कमलना नीचेना भागमां पत्रो न देखाते छते छ मासें मृत्यु थाय, अने भ्रूकुटीनी समीपे जो न देखाय, तो त्रण मासें मृत्यु थाय तथा अपांगनी समीपे जो न देखाय, तो बे मासें मृत्यु थाय तथा जो नासिकानी समीपमां न देखाय, तो एक मासें मृत्यु थाय तथा;

अयमेवक्रमः पद्मे, भानवीये यदा भवेत् ॥
दशपंचत्रिद्विदिनैः, क्रमान्मृत्यु स्तदा भवेत् ॥ १२३ ॥

अर्थः– आवीज रीतनो क्रम जो सूर्यकमलमां थाय, तो अनुक्रमें, दश, पांच, त्रण अने बे दिवसें मृत्यु थाय.

एतान्यपीड्यमानानि, द्वयोरपि हि पद्मयोः ॥
दलानि यदि वीक्ष्यंते मृत्युर्दिनशतात्तदा ॥ १२४ ॥

अर्थः– आंगलीथी दाब्या विना जो बन्ने पद्मनां पत्रो देखाय, तो एकसो दिवसोमां मृत्यु थाय.

हवे बे श्लोकार्थे करीने कर्णनुं लक्षण कहे छे.

ध्यात्वा हृद्यष्टपत्राब्जं, श्रोत्रे हस्ताग्रपीडिते ॥
न श्रूयेताग्निनिर्घोषो, यदिस्वः पंचवासरान् ॥ १२५ ॥
दश वा पंचदश वा, विंशतिं पंचविंशतिं ॥
तदा पंच चतुस्त्रिद्व्ये, कवर्षै र्मरणं जवेत् ॥ १२६ ॥

अर्थः– हृदयनेविषे आठ पत्रोवालां कमलने ध्यावीने, हस्ताग्रथी कानने दाबवो; अने तेम कर्याथी जो, पोतानो. अग्निशब्द पांच, दश, पंदर, वीश के पचीश दिवसो सुधि न संजलाय, तो अनुक्रमें पांच चार, त्रण, बे अने एक वरसें मृत्यु थाय. तथा,

एकद्वित्रिचतुःपंच, चतुर्विंशत्यहःक्षयात् ॥
षडादिषोडशादिना, न्यांतराण्यपि शोधयेत् ॥ १२७ ॥

अर्थः–छ आदिक अंतरना शोल दिवसोने, एक, बे, त्रण, चार, अने पांच संख्याना चोवीश चोवीश दिवसोना क्षयथी शोधवा.

हवे मस्तकनुं लक्षण कहे छे.

ब्रह्मद्वारे प्रसर्पंतीं, पंचाहं धूममालिकां ॥
न चेत्पश्येत्तदाज्ञेयो, मृत्युः संवत्सरैस्त्रिभिः ॥ १२८ ॥

अर्थः– (गुरूपदेशथी दृष्टिगोचर थाय एवी) ब्रह्मद्वारमां विस्तार पामती धूममाला जो पांच दिवसो सुधि न देखाय तो त्रण वरसें मृत्यु जाणवुं.

हवे छ श्लोकोयें करीने प्रकारांतरथकी कालज्ञान कहे छे.

प्रतिपद्दिवसे काल, चक्रज्ञानाय शौचवान् ॥
आत्मनो दक्षिणं पाणिं, शुक्लपक्षं प्रकल्पयेत् ॥ १२९ ॥

अर्थः– पवित्र माणसें पडवाने दिवसे कालचक्र जाणवामाटे पोताना जमणा हाथप्रत्ये शुक्लपक्षनी कल्पना करवी. तथा,

अधोमध्योर्ध्वपर्वाणि, कनिष्ठांगुलिकानि तु ॥
क्रमेण प्रतिपत्षष्ठे, कादशीः कल्पयेत्तिथीः ॥ १३० ॥

अर्थः–कनिष्ठिका एटले टचली आंगुलीना नीचेना, मध्यना तथा उंचेना पर्वमां अनुक्रमें पडवो, छठ, अने अग्यारसआदि तिथिउं कल्पवी. तथा

अवशेषांगुलीपर्वा, एयवशेषतिथीस्तथा ॥
पंचमी दशमी राका, पर्वाण्यंगुष्ठगानि तु ॥ १३१ ॥

अर्थः— अंगुठाना पर्वोमां पांचम, दशम, अने पुनम कल्पवी, तथा बाकीनी आंगलीउनां पर्वोमां बाकीनी तिथिउ कल्पवी. तथा,

वामपाणिं कृष्णपक्ष, तिथीस्तद्वच्च कल्पयेत् ॥
ततश्च निर्जने देशे, बद्धपद्मासनः सुधीः ॥ १३२ ॥
प्रसन्नः सितसंव्यानः, कोशीकृत्य करद्वयं ॥
ततस्तदंतः शून्यं तु, कृष्णवर्णं विचिंतयेत् ॥ १३३ ॥

अर्थः— तेवीज रीतें डाबा हाथप्रत्ये कृष्णपक्षनी तिथिउने कल्पवी; पछी माणस विनानी कोइ जगोपर जइने, बुद्धिमान् माणस पद्मासन वालीने, प्रसन्न थइने, तथा सफेद डुपट्टो राखीने, तथा बन्ने हाथोनो संपुट करीने, तेनी अंदर शून्य एवो कृष्णवर्ण चिंतववो. तथा,

उद्घाटितकरांभोज, स्ततो यत्रांगुलीतिथौ ॥
वीक्ष्यते कालबिंदुः स, काल इत्यत्र कीर्त्यते ॥ १३४ ॥

अर्थः— पछी ते हस्तकमलने उघाडतां थकां, ज्यां आंगलीनी तिथिमां कालबिंदु देखाय, तेनुं नाम अत्रे काल कहेलुं छे.

हवे ते कालज्ञानमां बीजा उपायो कहे छे.

क्षुतविण्मेदमूत्राणि, भवंति युगपद्यदि ॥
मासे तत्र तिथौ तत्र, वर्षांते मरणं तदा ॥ १३५ ॥

अर्थः— छींक, विष्ठा, वीर्यस्राव, तथा मूत्र, जो एकीज वखते थाय, तो ते मासमां, ते तिथिमां, अथवा ते वर्षने अंते मृत्यु थाय.

रोहिणीं शशभृल्लक्ष्म, महापथमरुंधतीं ॥
ध्रुवं च न यदा पश्ये, द्वर्षेण स्यात्तदा मृतिः ॥ १३६ ॥

अर्थः— रोहिणी नक्षत्रने, चंद्रने, छायामार्गने, अरुंधतीने, अने ध्रुवने जो न जोइ शके, तो एक वर्षे मृत्यु थाय. तथा,

स्वप्ने स्वं भक्ष्यमाणं च, गृध्रकाकनिशाचरैः ॥
उह्यमानं खरोष्ट्राद्यै, र्यदा पश्येत्तदा मृतिः ॥ १३७ ॥

अर्थः— स्वप्नमां पोताने, गीध, कागडा, अने निशाचरोथी भक्षण करातो, तथा गधेडा, उंट, विगेरेथी उपाडातो जो जुए, तो एक वर्षे मृत्यु थाय छे. तथा,

रश्मिनिर्मुक्तमादित्यं, रश्मियुक्तहविर्भुजं ॥
यदा पश्येद्विपद्येत, तदैकादशमासतः ॥ १३८ ॥

अर्थः— सूर्यने किरणो विनानो, अने अग्निने किरणोवालो जो जुए, तो अग्यार मासमां मृत्यु थाय. तथा,

वृक्षाग्रे कुत्रचित्पश्येत्, गंधर्वनगरं यदि ॥
पश्येत्प्रेतान्पिशाचान् वा, दशमे मासि तन्मृतिः॥ १३९॥

अर्थः— कोइ जगोए वृक्षना अग्रजागपर जो गंधर्वोना नगरने, अने प्रेत अथवा पिशाचोने साक्षात् जुवे, तो दशमे मासे मृत्यु थाय. तथा,

छर्दिर्मूत्रपुरीषं वा, सुवर्णरजतानि वा ॥
स्वप्ने पश्येद्यदि तदा, मासान्नवैव जीवति ॥ १४० ॥

अर्थः— वली जो स्वप्नमां, श्लेश्म, मूत्र, विष्ठा सुवर्ण अथवा रुपांने जुए, तो एक मासज जीवे. तथा,

स्थूलोकस्मात्कृशोकस्मा, दकस्मादतिकोपनः ॥
अकस्मादतिभीरुर्वा मासानष्टैव जीवति ॥ १४१ ॥

अर्थः— कारण विना अकस्मात् पुष्ट, दुबलो, अति गुस्सावालो, तथा अति बिकण जो थइ जाय, तो आठ माससुधि जीवे. तथा,

समग्रमपि विन्यस्तं, पांशौ वा कर्दमेऽपि वा ॥
स्याच्चेत्खंडं पदं सप्त, मास्यंते म्रियते तदा ॥ १४२ ॥

अर्थः— धूल अथवा कादवमां आखुं पगलुं मुक्या छतां पण जो ते खंडित देखाय, तो सात मासने अंते मृत्यु थाय. तथा,

तारां श्यामां यदा पश्ये, च्छुष्येदधरतालु च ॥
न स्वांगुलित्रयं माया, द्राजदंतद्वयांतरे ॥ १४३ ॥
गृध्रः काकः कपोतो वा, क्रव्यादोन्योऽपि वा खगः ॥
निलीयेत यदा मूर्ध्नि, षण्मास्यंते मृतिस्तदा ॥ १४४ ॥

अर्थः– आंखनी कीकीने काला रंगवाली जुवे, अने होठ तथा तालु जो (अकस्मात्) सुकाइ जाय, तथा राजदंतनी अंदर पोतानी त्रण आंगुली न देखाय, अने गीध, कागडो, कपोत, क्रव्याद, (मांस जक्षी पक्षी) अथवा बीजो कोइ पक्षी मस्तकमां संताइ जाय तो ७ मासें मृत्यु थाय. तथा,

स्वप्ने मुंडितमभ्यक्तं, रक्तगंधस्रगंबरं ॥
पश्येद्याम्यां खरे यांतं, स्वं योऽब्दार्धं सजीवति ॥ १४५ ॥

अर्थः–स्वप्नमां, पोताने मुंडित, मर्दन करेलो, लाल चंदन अने फुलनी माला वालो, तथा रात्रियें गधेडापर स्वार थइने जतो जो जुवे, तो ते अरधा वरससुधि जीवे. तथा,

घंटानादो रतांते चे, दकस्मादनुजूयते ॥
पंचता पंचमास्यंते, तदा जवति निश्चितं ॥ १४६ ॥

अर्थः– संजोगने अंते अकस्मात् जो घंटानो नाद अनुजवे, तो खरेखर पांच मासें मृत्यु थाय. तथा,

वक्रीजवति नासाचे, द्वर्त्तुली जवतो दृशौ ॥
स्वस्थानाद् भ्रश्यतः कर्णौ, चतुर्मास्यास्तदा मृतिः॥१४७॥

अर्थः– जो नासिका वांकी थाय, आंखो गोल थाय, तथा कर्णो तेना स्थानकथी खसी जाय, तो चारमासें मृत्यु थाय. तथा,

कृष्णं कृष्णपरीवारं, लोहदंडधरं नरं ॥
यदा स्वप्ने निरीक्षेत, मृत्युर्मासैस्त्रिनिस्तदा ॥ १४८ ॥

अर्थः– जो स्वप्नमां श्याम रंगवाला, श्यामरंगनां परिवारवाला, लोखंडना दंडने धारण करनारा एवा माणसने जो जुवे, तो त्रण मासें मृत्यु थाय. तथा,

इंदुमुष्णं रविं शीतं, छिद्रं जूमौ रवावपि ॥
जिह्वां श्यामां मुखं कोक, नदानं च यदेक्षते ॥ १४९ ॥
तालुकंपोमनःशोको, वर्णोऽगे नैकधा यदा ॥
नानेश्चाकस्मिकी हिक्का, मृत्युर्मासद्वयात्तदा ॥ १५० ॥

अर्थः– चंद्रने उष्ण, सूर्यने ठंडो, जूमि अने सूर्यमां छिद्र, जीजने

श्याम रंगवाली, मुखने नालीयेर सरखुं जो जुवे, तथा तालुनो कंप, मननो शोक, शरीरपर अनेक प्रकारनो रंग, तथा नाजिथी अकस्मात् ह्रींक थाय तो बे मासें मृत्यु थाय. तथा,

जिह्वा नास्वादमादत्ते, मुहुः स्खलति जाषणे ॥
श्रोत्रे न शृणुतः शब्दं, गंधं वेत्ति न नासिका ॥ १५१ ॥
स्पंदेते नयने नित्यं, दृष्टवस्तुन्यपि भ्रमः ॥
नक्तमिंद्रधनुः पश्येत्, तथोल्कापतनं दिवा ॥ १५२ ॥
न बायामात्मनः पश्येत्, दर्पणे सलिलेऽपि वा ॥
अनब्दां विद्युतं पश्येत्, शिरोकस्मादपि ज्वलेत् ॥ १५३ ॥
हंसकाकमयूराणां, पश्येच्च क्वापि संहतिं ॥
शीतोष्णखरमृद्वादे, रपि स्पर्शं न वेत्ति च ॥ १५४ ॥
अमीषां लक्ष्मणां मध्या, द्यदेकमपि दृश्यते ॥
जंतोर्जवति मासेन, तदा मृत्युर्नसंशयः ॥ १५५ ॥
॥ पंचजिः कुलकं ॥

अर्थः– जीज स्वाद न ले, तथा बोलती वखते वारंवार स्खलायमान थाय, बन्ने कर्णो शब्द सांजले नहिं, नाशिका गंधने उंलखी न शके, हमेशां बन्ने आंखो फरक्या करे, दीठेली वस्तुमां पण ज्रम पडे, रात्रिए इंद्रधनु जुए, तथा दिवसें उल्कापात जुए, पोतानी ग्राया आरिसा अथवा पाणीमां न जोइ शके, मेघ (वादलां) विना विजलीने जुए, अकस्मात् मस्तक ज्वलायमान थाय, तथा हंस, कागडा, अने मयूरना ना, शने जुए, ठंडुं, उष्ण, खरबचडुं, कोमल विगेरेनो स्पर्श मालुम न पडे; उपरनां सघलां चिह्नोमांथी एक पण चिह्न जो प्राणीने थाय, तो तेनुं एक मासमां मृत्यु थाय, तेमां बिलकुल संशय नथी. तथा,

शीते हकारे प्युत्कारे, चोष्णे स्मृतिगतिक्षये ॥
अंगपंचकशैत्ये च स्याद्दशाहेन पंचता ॥ १५६ ॥

अर्थः– हकार शब्दनो उच्चार करवाथी जो मुखमांथी ठंमो वायु निकले, तथा फुत्कार करवाथी उष्ण निकले. तथा, स्मरणशक्ति अने गति-

नो क्षय थाय, तथा पांच अंगपर शीतलता थाय, तो दश दिवसमां मृत्यु थाय. तथा

अर्धोष्णमथ शीतं च, शरीरं जायते यदा ॥
ज्वालाकस्माज्ज्वलेद्वांगे, सप्ताहेन तदा मृतिः ॥ १५७ ॥

अर्थः– जो शरीर अरधुं उष्ण अने अरधुं शीतल थाय, तथा शरीरमां अकस्मात् ज्वालाउ निकले, तो सात दिवसें मृत्यु थाय. तथा,

स्नातमात्रस्य हृत्पादं, तत्क्षणाद्यदि शुष्यति ॥
दिवसे जायते षष्ठे, तदा मृत्युरसंशयं ॥ १५८ ॥

अर्थः– स्नान कर्या पछी तुरतज जो हृदय अने पग सुकाइ जाय, तो संशयविना छठे दिवसे मृत्यु थाय. तथा,

जायते दंतघर्षश्चे, च्छवगंधश्च दुःसहः ॥
विकृता नवति छाया, त्र्यहेन म्रियते तदा ॥ १५९ ॥

अर्थः– दांतनो घसारो थाय, तथा सहन न थइ शके एवी मुडदां सरखी गंध थाय, तथा छायामां विकृति थाय, तो त्रण दिवसें मृत्यु थाय.

न स्वनाशां स्वजिह्वां न, न ग्रहान्नामला दिशः ॥
नापि सप्त ऋषीन् व्योम्नि, पश्यति म्रियते तदा ॥१६०॥

अर्थः– पोतानी नासिका, जीन्न, ग्रहो, निर्मल दिशाउ, तथा आकाशमां सप्त ऋषिउने पण जो न जोइ शके, तो ते मृत्यु पामे. तथा,

प्रनाते यदि वा सायं, ज्योत्स्नावत्यामथो निशि ॥
प्रवितत्य निजौ बाहू, निजछायां विलोक्य च ॥ १६१ ॥
शनैरुत्क्षिप्य नेत्रे स्व, छायां पश्येत्ततोऽबरे ॥
न शिरोदृश्यते तस्यां, यदा स्यान्मरणं तदा ॥ १६२ ॥

अर्थः– प्रनातमां अथवा सायंकाले, अथवा अजवाली रात्रियें, पोताना बन्ने हाथो विस्तारिने, छायाने जोवी; तथा पछी धीरेथी पोतानी आंखो उघाडीने आकाशमां छाया जोवी; तेमां जो मस्तक न देखाय तो मृत्यु थाय. तथा,

नेक्ष्यते वामबाहुश्चेत्, पुत्रदारक्षयस्तदा ॥
यदि दक्षिणबाहुर्ने, क्ष्यते भ्रातृक्षयस्तदा ॥ १६३ ॥

अर्थः– वली ते वखते जो डाबो हाथ न देखाय, तो पुत्र अने स्त्री-नो नाश थाय, तथा जो जमणो हाथ न देखाय, तो भाइयोनो नाश थाय. तथा,

अदृष्टे हृदये मृत्यु, रुदरे च धनक्षयः ॥
गुह्ये पितृविनाशस्तु, व्याधिरुरुयुगे भवेत् ॥ १६४ ॥

अर्थः– वली ते वखते जो हृदय न देखाय, तो मृत्यु थाय, अने उदर न देखाय, तो धननो क्षय थाय, तथा जो गुह्यस्थान न देखाय, तो पितृनो नाश थाय, अने जो बन्ने साथलो न देखाय, तो व्याधि थाय.

अदर्शने पादयोश्च, विदेशगमनं भवेत् ॥
अदृश्यमाने सर्वांगे, सद्यो मरणमादिशेत् ॥ १६५ ॥

अर्थः– बन्ने पगो न देखाय, तो परदेश जवानुं थाय, तथा जो सर्व अंग न देखाय, तो तुरत मरण थाय.

हवे वली बीजा प्रकारथी एटले शकुनथी कालज्ञान कहे छे.

अहिवृश्चिककृम्याखु, गृहगोधापिपीलिकाः ॥
यूकामत्कुणलूताश्च, वाल्मिकोऽथोपदेहिका ॥ १६६ ॥
कीटिका घृतवर्णाश्च, भ्रमर्यश्च यदाधिकाः ॥
उद्वेगकलहव्याधि, मरणानि तदा दिशेत् ॥ १६७ ॥युग्मं॥

अर्थः–सर्प, वींछी, कृमीआं, उंदर, गीलोडी, कीडी, जु, मांकड, करोलीया, वल्मीक, उधइ, घीमेल, अने भमरीयो जो अधिक देखाय, तो उद्वेग, कलह अने मृत्यु थाय. तथा,

✓ उपानद्वाहनछत्र, शस्त्रछायांगकुंतलान् ॥
चंच्वा चुंबेद्यदाकाक, स्तदाऽसन्नैव पंचता ॥ १६८ ॥

अर्थः– जो कागडो, पगरखां, वाहन, छत्र, हथियार, छाया, अंग, अने वालने पोतानी चांचथी चुंबन करे, तो मृत्यु नजदीक छे, एम जाणवुं. तथा,

अश्रुपूर्णदृशोगावो, गाढं पादैर्वसुंधरां ॥
खनंति चेत्तदानीं स्या, द्रोगोमृत्युश्च तत्प्रभोः ॥ १६९ ॥

अर्थः— आंसुथी संपूर्ण आंखो वाली गायो, पोताना पगोथी बहुज पृथ्वीने जो खणे, तो तेना स्वामीने रोग अने मृत्यु थाय. तथा,

अनातुरकृतेह्येत, च्छकुनं परिकीर्त्तितं ॥
अधुनातुरमुद्दिश्य, शकुनं परिकीर्त्यते ॥ १७० ॥

अर्थः— एवी रीतें नीरोगीने माटे शकुनोनुं स्वरूप कह्युं; हवे रोगीने माटे शकुनोनुं स्वरूप कहे छे.

दक्षिणस्यां वलित्वा चेत्, श्वा गुदं लेढ्युरोऽथवा ॥
लांगूलं वा तदा मृत्यु, रेकद्वित्रिदिनैः क्रमात् ॥ १७१ ॥
शेते निमित्तकाले चेत्, श्वा संकोच्याखिलं वपुः ॥
धृत्वा कर्णौ वलित्वांगं, धुनोत्यथ ततो मृतिः ॥ १७२ ॥
यदि व्यात्तमुखो लालां, मुंचन् संकोचितेक्षणः ॥
अंगं संकोच्य शेते श्वा, तदा मृत्युर्न संशयः ॥ १७३ ॥

॥ त्रिभिर्विशेषकं ॥

अर्थः— निमित्त-काले, कुतरो दक्षिण दिशामां वलीने जो पोतानी गुदाने अथवा छातीने के पुंछडीने चाटे तो अनुक्रमें एक बे अने त्रण दिवसें रोगीनुं मृत्यु थाय; तथा ते वखते जो ते पोतानुं सघलुं शरीर संकोचीने सुवे, तथा कान पकडीने तथा शरीरने वालीने जो धुणावे तो पण मृत्यु थाय; तथा मुख पोहोलुं करीने, लाल मुकतो थको, आंखो संकोचीने, तथा अंगने पण संकोचीने जो ते सुवे, तो पण मृत्यु थाय, तेमां संशय नथी.

हवे बे श्लोकोथी कागडानां शकुनोनुं स्वरूप कहे छे.

यदातुरगृहस्योर्ध्वं, काकपक्षिगणो मिलन् ॥
त्रिसंध्यं दृश्यते नूनं, तदा मृत्युरुपस्थितः ॥ १७४ ॥
महानसे तथा शय्या, गारे काकाः क्षिपंति चेत् ॥
चर्मास्थिरज्जुं केशान्वा, तदासन्नैव पंचता ॥ १७५ ॥

अर्थः– अथे संध्या वखते रोगीना घरपर जो कागडाउनुं टोळुं मळे, तो मृत्यु जाणवुं; तथा रोगीनां रसोडां, अने शयनगृह उपर जो कागडाउ, चांबडुं, हाडकुं, दोरडुं, अथवा केशोने फेके, तो पण मृत्यु नजदीकें जाणवुं.

हवे नव श्लोकोयें करीने उपश्रुतिथी कालज्ञान कहे छे.

अथवोपश्रुतेर्विद्या, द्विद्वान् कालस्य निर्णयं ॥
प्रशस्ते दिवसे स्वप्न, काले शस्तां दिशं श्रितः ॥ १७६ ॥
पूत्वा पंचनमस्कृत्या, चार्यमंत्रेण वा श्रुती ॥
गेहाच्छन्नश्रुतिर्गच्छे, च्छिल्पिचत्वरभूमिषु ॥ १७७ ॥
चंदनेनार्चयित्वा क्ष्मां, क्षिप्त्वा गंधाक्षतादि च ॥
सावधानस्ततस्तत्रो, पश्रुतेः शृणुयाद्ध्वनिं ॥ १७८ ॥
अर्थांतरापदेश्यश्च, सरूपश्चेति सद्विधा ॥
विमर्शगम्यस्तत्राद्यः, स्फुटोक्तार्थोऽवरः पुनः ॥ १७९ ॥
यथैष भवनस्तंभः, पंचषड्भिरयं दिनैः ॥
पक्षैर्मासैरथो वर्षै, र्भक्ष्यते यदि वा न वा ॥ १८० ॥
मनोहरतरश्चासीत्, किंत्वयं लघु भक्ष्यते ॥
अर्थांतरापदेश्यःस्या, देवमादिरुपश्रुतिः ॥ १८१ ॥
एषा स्त्री पुरुषो वाऽसौ, स्थानादस्मान्न यास्यति ॥
दास्यामो न वयं गंतुं, गंतुकामोन चाप्ययं ॥ १८२ ॥
विद्यते गंतुकामोऽय, महं च प्रेषणोत्सुकः ॥
तेन यास्यत्यसौ शीघ्रं, स्यात्सरूपेत्युपश्रुतिः॥ १८३ ॥
कर्णोद्घाटनसंजातो, पश्रुत्यंतरमात्मनः ॥
कुशलाः कालमासन्न, मनासन्नं च जानते ॥ १८४ ॥

॥ नवभिः कुलकं ॥

अर्थः– उपश्रुतिथी पण निचे प्रमाणे विद्वानें कालनो निर्णय जाणवो. उत्तम दिवसें स्वप्न वखतें उत्तम दिशामां रहीने, पंच नमस्कार अ-

थवा आचार्यमंत्रथी पवित्र थइने घेरथी कर्ण ढांकीने शिल्पियोना चोवटानी भूमिमां जवुं; तथा त्यां पृथ्वीने चंदनथी पूजीने, तथा ते पर सुगंधि, अक्षत विगेरे नाखीने, सावधान थइ उपश्रुतिनो ध्वनि सांजळवो. ते ध्वनि " अर्थांतरापदेश्य " अने " सरूप " एवा बे प्रकारनो जाणवो. तेमांथी पेहेलो विचारगम्य,अने बीजो स्फुट रीतें कहेला अर्थवालो जाणवो. विचारगम्य एटले जेम के, आ घरनो स्तंभ पांच, ठ दिवसोमां, पखवाडीआउंमां, मासमां अथवा वर्षोमां खवाइ जशे, के नही? ते स्तंभ मनोहर हतो, पण तुरत खवाइ जाय तेवो हतो, इत्यादि अर्थांतरापदेश्य ध्वनि विचारगम्य जाणवो. तथा बीजा जेम के, आ स्त्री, अथवा आ पुरुष आ जगोयेथी जशे नही, तेम अमो तेने जवा पण देशुं नही; वली आ जवाने उत्सुक ठे, अने हुं पण तेने जवा देवाने राजी बुं, अने तेथी ते तुरत जशे; इत्यादि सरूप उपश्रुति जाणवी, एवी रीतनी कान खुल्ला करीने सांजळेली उपश्रुतिथी पण कुशल माणसो पोताना कालने नजदिक अथवा दूर रहेलो जाणे ठे.

हवे चार श्लोकोवडे शनैश्चरपुरुषें करीने कालज्ञान कहे ठे.

शनिः स्याद्यत्र नक्षत्रे, तद्दातव्यं मुखे ततः ॥
चत्वारि दक्षिणे पाणौ, त्रीणि त्रीणि च पादयोः ॥ १८५ ॥
चत्वारि वामहस्ते तु, क्रमशः पंच वक्षसि ॥
त्रीणि शीर्षे दृशोर्द्वे द्वे, गुह्य एकः शनौ नरे ॥ १८६ ॥
निमित्तसमये तत्र, पतितं स्थापनाक्रमात् ॥
जन्मर्क्षं नामऋक्षं वा, गुह्यदेशे भवेद्यदि ॥ १८७ ॥
दृष्टं श्लिष्टं ग्रहैर्दुष्टैः, सौम्यैरप्रेक्षितायुतं ॥
सज्जस्यापि तदा मृत्युः, का कथा रोगिणः पुनः ॥ १८८ ॥

॥ चतुर्भिः कलापकं ॥

अर्थः— जे नक्षत्रमां शनि होय, ते मुखमां मुकवुं, चार जमणा हाथमां, तथा बन्ने पगमां त्रण त्रण, डाबा हाथमां, चार, तथा अनुक्रमें पांच वक्षःस्थलमां, त्रण मस्तकमां बबे बन्ने आंखोमां तथा एक गुह्य

स्थानकें, पछी निमित्तसमये स्थापनाक्रमथी जन्मनक्षत्र, अथवा नाम नक्षत्र जो गुह्य प्रदेशमां आवी पडे, अने ते पर दुष्टग्रहोनी दृष्टि पडे, अथवा तेउनो संयोग थाय, अने उत्तम ग्रहनी दृष्टि न पडे, तो साजा माणसनुं पण मृत्यु थाय, त्यारे रोगीनी तो वातज शी करवी ! ! !

हवे प्रश्न लग्नना अनुसारें कालज्ञान कहे छे.

प्रश्नायामथ लग्नास्ते, चतुर्थदशमस्थिताः ॥
ग्रहाः क्रूराः शशी षष्ठा, ष्टमश्चेत् स्यात्तदा मृतिः ॥१८९॥

अर्थः—प्रश्न करते छते तत्काल लग्न अस्त होते थके, लग्नथी (सातमे) चोथे अथवा दशमे स्थानकें जो क्रूर ग्रहो होय, तथा चंद्र जो छठे के आठमे होय, तो मृत्यु थाय.

पृच्छायाः समये लग्ना, धिपतिर्भवति ग्रहः ॥
यदिवास्तमितोमृत्युः, सज्जस्यापि तदा भवेत् ॥ १९० ॥

अर्थः— पूछती वखते लग्ननो स्वामी एवो ग्रह जो अस्त पामेलो होय, तो साजानुं पण मृत्यु थाय.

लग्नस्थश्चेच्छशीसौरि, र्द्वादशोनवमः कुजः ॥
अष्टमोऽर्कस्तदा मृत्युः, स्याच्चेन्न बलवान् गुरुः ॥ १९१ ॥

अर्थः— लग्नमां चंद्र होय, अने शनी बारमे, तथा मंगल नवमे अने सूर्य आठमे होय, अने जो गुरु बलवान् न होय तो मृत्यु थाय. तथा,

रविः षष्ठस्तृतीयो वा, शशी च दशमस्थितः ॥
यदा भवति मृत्युः स्या, त्तृतीये दिवसे तदा ॥ १९२ ॥

अर्थः— वली छठे सूर्य, अथवा त्रीजे अने दशमे चंद्र होय तो त्रीजे दिवसें मृत्यु थाय. तथा,

पापग्रहाश्चेदुदया, त्तुर्ये वा द्वादशेऽथवा ॥
दिशंति तद्विदो मृत्युं, तृतीये दिवसे तदा ॥ १९३ ॥

अर्थः— उदयथी चोथे अथवा बारमे पापग्रहो होय, तो तेना जाणनाराउ त्रीजे दिवसें मृत्यु कहे छे. तथा,

उदये पंचमे वाऽपि, यदि पापग्रहो भवेत् ॥
अष्टभिर्दशभिर्वा स्या, द्दिवसैः पंचता तदा ॥ १९४ ॥

अर्थः— उदय वखते पापग्रह जो पांचमे होय, तो आठ अथवा दश दिवसे मृत्यु थाय. तथा,

धनुर्मिथुनयोः सप्त, मयोर्यद्यशुभग्रहाः ॥
तदा व्याधिर्मृतिर्वास्या, ज्ज्योतिषामितिनिर्णयः ॥ १९५ ॥

अर्थः— सातमा एवा धनु अने मिथुन राशिमां जो अशुभ ग्रहो आवे, तो व्याधि अथवा मृत्यु थाय एम ज्योतिषियोनो निर्णय छे.

हवे आठश्लोकोयें करीने यंत्रद्वाराथी कालज्ञान कहे छे.

अंतस्थाधिकृतपाणि, नामप्रणवगर्भितं ॥
कोणस्थरेफमाग्नेय, पुरं ज्वालाशताकुलं ॥ १९६ ॥
सानुस्वारैरकाराद्यैः, षट्स्वरैः पार्श्वतो वृतं ॥
स्वस्तिकांकबहिःकोणं, स्वाक्षरांतःप्रतिष्ठितं ॥ १९७ ॥
चतुःपार्श्वस्थगुरुपं, यंत्रवायुपुरावृतं ॥
कल्पयित्वा परिन्यस्येत्, पादहृच्छीर्षसंधिषु ॥ १९८ ॥
सूर्योदयक्षणे सूर्यं, पृष्टे कृत्वा ततः सुधीः ॥
स्वपरायुर्विनिश्चेतुं, निजछायां विलोकयेत् ॥ १९९ ॥
पूर्णां छायां यदीक्षेत, तदा वर्षे न पंचता ॥
कर्णाभावे तु पंचत्वं, वर्षैर्द्वादशभिर्भवेत् ॥ २०० ॥
हस्तांगुलीस्कंधकेश, पार्श्वनासाद्वये क्रमात् ॥
दशाष्टसप्तपंचत्र्ये, कवर्षैर्मरणं भवेत् ॥ २०१ ॥
षण्मास्या म्रियते नाशे, शिरसश्चिबुकस्य वा ॥
ग्रीवानाशे तु मासेनै, कादशाहेन दृक्क्षये ॥ २०२ ॥
सच्छिद्रे हृदये मृत्यु, र्दिवसैः सप्तभिर्भवेत् ॥
यदि छायाद्वयं पश्ये, द्यमपार्श्वे तदा व्रजेत् ॥ २०३ ॥

॥ अष्टभिः कुलकं ॥

अर्थः– मध्यमां रहेलुं, तथा अधिकृतपाणि छे नाम जेनुं, एवा प्रणवें करीने गर्भित, तथा खुणामां रेफवालुं, तथा सेंकडो ज्वालाउंथी आकुल थएलुं चारे बाजुथी अनुस्वारयुक्त एवा अकार आदिक छ स्वरोथी विंटायेलुं. बहारना खुणाउंमां स्वस्तिकोथी चिह्नित थयेलुं, तथा तेनी अंदर स्व एवा अक्षरोनी मध्यमां रहेलुं, तथा चारे पडखे विसर्गसहित यकारवालुं, एवी रीतना यंत्रने वायुना समूहथी आवृत थएलुं कल्पीने, बन्ने पगोपर, हृदयमां, मस्तकें तथा सांधाउंमां राखवुं; पछी ते बुद्धिमान् माणसें सूर्योदय वखते सूर्यने पछाडी राखीने, पोतानुं आयुष्य जोवा माटे पोतानी छायाने जोवी; तेमां जो संपूर्ण छाया देखाय, तो मृत्यु न थाय, पण जो कर्ण न देखाय, तो बार वरसें मृत्यु थाय, तथा हाथ, आंगली, स्कंध, केश, पडखां अने नासिकानो जो क्षय देखाय, तो अनुक्रमें दश, आठ, सात, पांच, त्रण अने एक वरसें मृत्यु थाय; तथा मस्तक अने दाढीनो जो क्षय देखाय, तो छ मासें मृत्यु थाय, तथा कंठनो क्षय जोवाथी एक मासमां, अने आंखोनो क्षय जोवाथी अग्यारदिवसें मृत्यु थाय; तथा छिद्र सहित जो हृदय देखाय तो सात दिवसें मृत्यु थाय, तथा जो बे छाया देखाय तो ते वखतेज मृत्यु पामे.

हवे यंत्रना प्रयोगने उपसंहरता थका विद्यायें करीने कालज्ञाननुं स्वरूप कहे छे.

इति यंत्रप्रयोगेण, जानीयात्कालनिर्णयं ॥
यदि वा विद्यया विद्या, द्वक्ष्यमाणप्रकारया ॥ २०४ ॥

अर्थः– एवी रीतें यंत्रना प्रयोगथी कालनो निर्णय जाणवो, अथवा हवे कहेवाना प्रकारथी विद्यायें करीने पण जाणवो.

हवे सात श्लोकोयें करीने ते विद्या कहे छे,

प्रथमं न्यस्य चूडायां, स्वाशब्दमोंच मस्तके ॥
क्षिं नेत्रहृदये पंच, नाभ्यब्जे हाक्षरं ततः ॥२०५॥

अर्थः– पेहेलां शिखामां “ स्वा ” शब्दने, अने मस्तकपर “ ॐ ” शब्दने, नेत्र अने हृदयमां पांच “ क्षि ” शब्दने तथा नाभिकमलपर “हा”

अक्षने जोडवो. पछी "ॐजुंसः ॐमृत्युंजयाय ॐ वज्रपाणिने शूलपाणिने हर हर दह दह स्वरूपं दर्शय दर्शय हुं फट्."

अनया विद्ययाष्टाग्र, शतवारं विलोचने ॥
स्वछायां चाभिमंत्र्यार्के, पृष्टे कृत्वारुणोदये ॥ २०६ ॥
परछायां परकृते, स्वछायां स्वकृते पुनः ॥
सम्यक्कृतपूजः स, ह्युपयुक्तो विलोकयेत् ॥ २०७ ॥

अर्थः— उपरनी विद्याथी एकसोने आठवार बन्ने नेत्रो, तथा पोतानी ठायाने मंत्रीने, तथा प्रभातमां सूर्यने पछाडी करीने, परने माटे परनी ठाया, अने पोताने माटे पोतानी ठाया, सारी रीतें पूजा आदिक करीनेजोवि.

संपूर्णां यदि पश्येत्ता, मावर्षं न मृतिस्तदा ॥
क्रमजंघाजान्वभावे, त्रिद्व्येकाब्दैर्मृतिः पुनः ॥ २०८ ॥

अर्थः— वली ते ठाया जो संपूर्ण देखाय, तो वर्षसुधि मृत्यु न थाय, तथा पग, जंघा अने घुटणोनो अभाव होते ठते, त्रण, बे, अने एक वर्षे मृत्यु थाय. तथा,

ऊरोरभावे दशभि, र्मासैर्नश्येत्कटेः पुनः ॥
अष्टाभिर्नवभिर्वापि, तुंदाभावे तु पंचषैः ॥ २०९ ॥

अर्थः—साथलोनो अभाव होते ठते दश मासें, केडनो अभाव होते ठते आठ अथवा नव मासें, अने पेटनो अभाव होते ठते पांच ठ मासें मृत्यु थाय.

ग्रीवाभावे चतुस्त्रिद्व्ये, कमासैर्म्रियते पुनः ॥
कक्षाभावे तु पक्षेण, दशाहेन भुजक्षये ॥ २१० ॥

अर्थः— कंठनो अभाव होते ठते चार, त्रण, बे अने एक मासें पण मृत्यु थाय, अने कुंखना अभावें पखवाडिये, तथा भुजाना अभावें दश दिवसें मृत्यु थाय.

दिनैः स्कंधक्षयेऽष्टाभि, श्चतुर्याम्या तु हृत्क्षये ॥
शीर्षाभावे तु यामाभ्यां, सर्वाभावे तु तत्क्षणात् ॥ २११ ॥

अर्थः— स्कंधनो अभाव होते ठते आठ दिवसें, हृदयनो अभाव होते

छते चार पोहोरे, मस्तकनो अजाव होते छते बे पोहोरे, अने सर्वनो अजाव होते छते तत्क्षण मृत्यु थाय छे.

एवमाध्यात्मिकं कालं, विनिश्चेतुं प्रसंगतः ॥
बाह्यस्यापि हि कालस्य, निर्णयः परिजाषितः ॥ २१२ ॥

अर्थः— एवी रीतें आध्यात्मिक कालनो निश्चय करावामाटे प्रसंगोपात्त बाह्यकालनो पण निर्णय कह्यो.

हवे जय अने पराजयना परिज्ञाननो उपाय कहेछे.

को जेष्यति द्वयोर्युद्धे, इति पृछत्यवस्थितः ॥
जयः पूर्वस्य पूर्णे स्या, द्रिक्ते स्यादितरस्य तु ॥ २१३ ॥

अर्थः—बन्नेनां युद्धमां कोण जीतशे ? एम पूछीने रह्यो छते, पूर्ण होते थके पूर्व पक्षनो जय थाय, अने अधुरे रहेते थके सामा पक्षवालानो जय थाय.

हवे ते पूर्ण अने अधुरानुं स्वरूप कहे छे.

यस्त्यजेत् संचरन् वायु, स्तद्रिक्तमभिधीयते ॥
संक्रामेत्तु यत्र स्थाने, तत्पूर्णं कथितं बुधैः ॥ २१४ ॥

अर्थः— संचरतो वायु जे तजी दे, ते अधुरुं कहेवाय, अने जे स्थानमां संक्रमण पामे, ते पंडितोयें संपूर्ण कहेवाय छे. तथा,

प्रष्टादौ नाम चेद् ज्ञातु, र्गृह्णात्यत्यातुरस्य तु ॥
स्यादिष्टस्य तदा सिद्धि, र्विपर्यासे विपर्ययः ॥ २१५ ॥

अर्थः— पुछनार माणस पेहेलां जाणनारनुं (वैद्यनुं) अने पछी जो रोगीनुं नाम ले, तो कार्यनी सिद्धि थाय, अने तेथी उलटी रीतें नाम लेवाथी विपर्यास थाय.

वामबाहुस्थिते दूते, समनामाक्षरो जयेत् ॥
दक्षिणबाहुगे त्वाजौ, विषमाक्षरनामकः॥ २१६ ॥

अर्थः— जो दूत डाबा हाथ पासे आवी उन्ने, तो सम अक्षरनां नामवालो जीते, अने जो जमणा हाथपासे उन्ने, तो लडाइमां विषम अक्षरना नामवालो जीते. तथा,

भूतादिनिर्गृहीतानां, दष्टानां वा भुजंगमैः ॥
विधिः पूर्वोक्तएवासौ, विज्ञेयः खलु मांत्रिकैः॥ २१७ ॥

अर्थः— भूत आदिकना वलगाडवाला, तथा सर्पे डंखेला प्राणियोमाटे पण मांत्रिकोयें उपरनोज विधि जाणवो.

पूर्णा संजायते वामा, नाडी हि वरुणेन चेत् ॥
कार्याण्यारभ्यमाणानि, तदा सिध्यंत्यसंशयं ॥ २१८ ॥

अर्थः— जो डाबी नाडी पवनथी संपूर्ण थाय, तो प्रारंभ करातां कार्यो संशयरहित सिद्ध थाय. तथा,

जयजीवितलाभादि, कार्याणि निखिलान्यपि ॥
निष्फलान्येव जायंते, पवने दक्षिणास्थिते ॥ २१९ ॥

अर्थः— जो जमणि नासिकामां वायु होय, तो जय, जीवित, लाभ आदिक सघळां कार्यो निष्फल जाय छे.

ज्ञानी बुध्वानिलं सम्यक्, पुष्पं हस्तात्प्रपातयेत् ॥
मृतजीवितविज्ञाने, ततः कुर्वीत निश्चयं ॥ २२० ॥

अर्थः— ज्ञानी माणसें वायुने सारी रीतें जाणीने हाथथी पुष्प पाडवुं, तथा तेथी मृत्यु अने जीतितनुं ज्ञान मेळववुं. तथा,

त्वरितो वरुणे लाभ, श्चिरेण तु पुरंदरे ॥
जायते पवने स्वल्पः, सिद्धोप्यग्नौ विनश्यति ॥ २२१ ॥

अर्थः— वरुण होते छते तुरत लाभ थाय छे, पवन होते छते स्वल्प लाभ थाय छे, तथा अग्नि होते, छते, सिद्ध थएलो लाभ पण नाश पामे.

आयाति वरुणे यातः, तत्रैवास्ते सुखं क्षितौ ॥
प्रयाति पवनेऽन्यत्र, मृतइत्यनले वदेत् ॥ २२२ ॥

अर्थः— वरुण होते छते, गएलो आवे छे अने त्यां सुखेथी पृथ्वीपर रहे छे, अने पवन होते छते बीजी जगोये जाय छे, अने अग्नि होते छते मृतक कहेवाय छे. तथा,

दहने युद्धपृच्छायां, युद्धभंगश्च दारुणः ॥
मृत्युसैन्यविनाशो वा, पवने जायते पुनः ॥ २२३ ॥

अर्थः— दहन होते छते युद्धनी पृछा करवाथी, भयंकर युद्धनो भंग थाय, अने पवन होते छते मृत्यु अने सैन्यनो नाश थाय छे. तथा,

महेंद्रे विजयो युद्धे, वारुणे वांछिताधिकः ॥
रिपुभंगेन संधिर्वा, स्वसिद्धिपरिसूचकः ॥ २२४ ॥

अर्थः— महेंद्र होते थके युद्धमां जय थाय, तथा वारुण होते थके, इछितथी पण अधिक थाय, अने ते शत्रुना भंगथी संधि अथवा पोतानी सिद्धिने सूचवनारो छे. तथा,

भौमे वर्षति पर्जन्यो, वरुणे तु मनोमतं ॥
पवने दुर्दिनांभोदौ, वह्नौ वृष्टिः कियत्यपि ॥ २२५ ॥

अर्थः— भौम होते छते वरसाद वरसे छे, वरुण होते छते मन मले छे, पवन होते छते दुर्दिन अने वरसाद होय, अने अग्नि होते छते केट-लीक वृष्टि थाय. तथा,

वरुणे शस्यनिष्पत्ति, रतिश्लाघ्या पुरंदरे ॥
मध्यस्था पवने च स्या, न्न स्वल्पापि हुताशने ॥ २२६ ॥

अर्थः— वरुण होते छते धान्यनी उत्पत्ति थाय, अने ते पुरंदर होते छते अति उत्तम थाय, तथा पवन होते छते मध्यस्थ कहेवाय, अने अ-ग्नि होते थके स्वल्प पण न थाय.

महेंद्रवरुणौ शस्तौ, गर्भप्रश्ने सुतप्रदौ ॥
समीरदहनौ स्त्रीदौ, शून्यं गर्भस्य नाशकं ॥ २२७ ॥

अर्थः— महेंद्र अने वरुण गर्भप्रश्नमां पुत्रने देनारा उत्तम छे, अने शून्य तो गर्भने नाश करनारुं छे. तथा,

गृहे राजकुलादौ च, प्रवेशे निर्गमेऽथवा ॥
पूर्णांगपादं पुरतः, कुर्वतः स्यादभीप्सितं ॥ २२८ ॥

अर्थः— घरमां अने राजकुलमां पण प्रवेश अने निर्गमन वखते जे

बाजुनुं अंग वायुथी जरेलुं होय; ते तरफनो पग अगाडी करीने जवाथी इछित कार्यसिद्धि थाय. तथा,

गुरुबंधुनृपामात्या, अन्येपीप्सितदायिनः ॥
पूर्णांगे खलु कर्तव्याः, कार्यसिद्धिमजीप्सता ॥ २२९ ॥

अर्थः— वायुथी संपूर्ण अंग होते बते, गुरु, बंधु, राजा, अमात्य अने बीजा पण इछित देनारा होय बे, माटे वायुथी पूर्ण अंग होते बते कार्यसिद्धि प्रत्ये इछा करवी. तथा,

आसने शयने वापि, पूर्णांगे विनिवेशिताः ॥
वशीजवंति कामिन्यो, न कार्मणमतः परं ॥ २३० ॥

अर्थः— वायुथी पूर्ण अंग होते बते, आसन अथवा शय्यापर बेसाडेली स्त्रियो वश थाय बे, एम करवामां आ शिवाय बीजुं कोइ पण कामण वधारे बलवत् नथी. तथा,

अरिचौराधमर्णाद्या, अन्येऽप्युत्पातविग्रहाः ॥
कर्तव्याः खलु रिक्तांगे, जयलाजसुखार्थिजिः ॥ २३१ ॥

अर्थः— जय लाज अने सुखना आर्थि माणसोये, वायुथी खाली शरीर होते बते, शत्रु, चोर, लेणदार विगेरे बीजा उत्पात अने विग्रहोनो उपाय करवो. तथा,

प्रतिपक्षप्रहारेज्यः, पूर्णांगे योऽजिरक्षति ॥
न तस्य रिपुजिः शक्ति, र्बलिष्टैरपि हन्यते ॥ २३२ ॥

अर्थः— वायुथी पूर्ण अंग होते बते, जे माणस शक्तिनां प्रहारोथी पोतानुं रक्षण करे बे, तेनी शक्तिने बलवान् शत्रु पण हणावी शकतो नथी.

वहंतीं नासिकां वामां, दक्षिणां नाजिसंस्थितः ॥
पृछेद्यदि तदा पुत्रो, रिक्तायां तु सुता जवेत् ॥ २३३ ॥

अर्थः— डाबी अथवा जमणी नाडी वहेते बते उजो रहीने जो पूबे, तो पुत्र थाय बे, अने ते नाडी खाली होय ने पूबे, तो पुत्री थाय बे; तथा,

सुषुम्णावाहजागे द्वौ, शिशू रिक्ते नपुंसकं ॥
संक्रांतौ गर्जहानिः स्यात्, समे क्षेममसंशयं ॥ २३४ ॥

अर्थः– सुषुम्णा नाडी वहेते उते बे बालक, अने ते खाली होते उते नपुंसक तथा संक्रांति होते उते गर्भनी हानि, अने तुल्य होते उते संशयरहित कुशलपणुं थाय.

चंद्रे स्त्री पुरुषः सूर्ये, मध्यभागे नपुंसकं ॥
प्रश्नकाले तु विज्ञेय, मिति कैश्चिन्निगद्यते ॥ २३५ ॥

अर्थः– चंद्रनाडी होते उते स्त्री, सूर्यनाडी होते उते पुरुष, मध्यभाग होते उते नपुंसक, एवी रीतें प्रश्नकालें पण जाणवुं, एम पण केटलाकोए कहेलुं छे.

हवे पवनना निश्चय उपायने कहे छे.

यदा न ज्ञायते सम्यक्, पवनः संचरन्नपि ॥
पीतश्वेतारुणश्यामै, र्निश्चेतव्याः सबिंदुभिः ॥ २३६ ॥

अर्थः– ज्यारें संचरतो पण पवन सारी रीतें जणातो नथी, त्यारे ते बिंदुउंथी, पीलो, सफेद, लाल के श्याम, एम निश्चय करवो,

हवे बे श्लोकोथी ते बिंदुउं जोवानो उपाय कहे छे.

अंगुष्ठाभ्यां श्रुती मध्यां, गुलीभ्यां नासिकापुटे ॥
अंत्योपांत्यांगुलीभिश्च, पिधाय वदनांबुजं ॥ २३७ ॥
कोणावक्ष्णो निपीड्याद्यां, गुलीभ्यां श्वासरोधतः ॥
यथावर्णं निरीक्षेत, बिंदुमव्यग्रमानसः ॥ २३८ ॥ युग्मं ॥

अर्थः– बे अंगुठाउंथी बन्ने कानोने, तथा वचली बन्ने आंगलीयोथी नसकोरांउंने, अने टचली तथा तेनी पासेंनी एम बन्ने आंगलीउंथी मुखने, तथा पेहेली बे आंगलीउंथी आंखना खुणाउंने दबावी, श्वासने रोकीने, निश्चल चित्तथी बिंदुनो रंग जोवो.

हवे बिंदुना ज्ञानथी पवननो निश्चय कहे छे.

पीतेन बिंदुना भौमं, सितेन वरुणं पुनः ॥
कृष्णेन पवनं विद्या, दरुणेन हुताशनं ॥ २३९ ॥

अर्थः– पीला बिंदुथी भौमने, सफेदथी वरुणने, कालाथी पवनने, अने लालथी अग्नि जाणवो.

हवे नहीं अभिमत एवी नाडीने निषेधवाने उपाय कहे छे.

निरुत्सेद् वहंतीं यां, वामां वा दक्षिणामथ ॥
तदंगं पीडयेत्सद्यो, यथा नाडीतरा वहेत् ॥ २४० ॥

अर्थः– चालती एवी डाबी अथवा जमणी, जे नाडीने रुंधवानी इच्छा होय, ते अंगने दाबवुं, के जेथी बीजी नाडी वहेवा मांडे.

अग्रे वामविभागे हि, शशिक्षेत्रं प्रचक्षते ॥
पृष्ठे दक्षिणभागे तु, रविक्षेत्रं मनीषिणः ॥ २४१ ॥

अर्थः– डाह्या माणसो अग्र एवा डाबा विभागमां चंद्रक्षेत्रने कहे छे, तथा पाछला एवा जमणा विभागमां सूर्यक्षेत्रने कहे छे.

लाभालाभौ सुखं दुःखं, जीवितं मरणं तथा ॥
विदंति विरलाः सम्यग्, वायुसंचारवेदिनः २४२ ॥

अर्थः– विरला एवा वायुसंचारने जाणनारा माणसो सारी रीतें, लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, जीवित तथा मरणने जाणी शके छे. तथा,

अखिलं वायुजन्मेदं, सामर्थ्यं तस्य जायते ॥
कर्तुं नाडीविशुद्धिं यः, सम्यग् जानात्यमूढधीः ॥ २४३ ॥

अर्थः– जे बुद्धिमान् माणस नाडीनी विशुद्धि करवाने सारी रीतें जाणे छे, तेने वायुथी उत्पन्न थतुं सघलुं सामर्थ्य जणाय छे.

हवे चार श्लोकोयें करीने नाडीनी शुद्धि कहे छे.

नाभ्यब्जकर्णिकारूढं, कलाबिंदुपवित्रितं ॥
रेफाक्रांतं स्फुरद्भासं, हकारं परिचिंतयेत् ॥ २४४ ॥
तं ततश्च तडिद्वेगं, स्फुलिंगार्चिशतांचितं ॥
रेचयेत् सूर्यमार्गेण, प्रापयेच्च नभस्तलं ॥ २४५ ॥
अमृतैः प्लावयंतं त, मवतार्य शनैस्ततः ॥
चंद्राभं चंद्रमार्गेण, नाभिपद्मे निवेशयेत् ॥ २४६ ॥

निष्क्रमं च प्रवेशं च, यथामार्गमनारतं ॥
कुर्वन्नेवं महाभ्यासो, नाडीशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ २४७ ॥
॥ चतुर्भिः कलापकं ॥

अर्थः— नाभिरूपी अष्ट कर्णिकापर चडेला, अने कलाबिंदुथी पवित्र थएला, रेफसहित, स्फुरायमान कांतिवाला, एवा हकारने चिंतववो; तथा पछी तेने विजलीनी झडपे, स्फुलिंगोनी सेंकडो शिखा सहित सूर्यमार्गेथी विरेचवो, अने आकाशतलमां प्राप्त करवो; पछी तेने अमृतथी भीजावीने तथा धीरेथी नीचे उतारीने, चंद्र सरखा ते हकारने चंद्रमार्गेथी नाभिपद्मपर राखवो; तथा एवी रीतें यथार्थ मार्गे तेनुं आवागमन करवाथी, थएलो अभ्यास नाडीशुद्धिने मेलवी शके छे.

हवे नाडीसंचारनुं ज्ञान होते छते फल कहे छे.

नाडीशुद्धाविति प्राज्ञः, संपन्नाभ्यासकौशलः ॥
स्वेच्छया घटयेद् वायुं, पुटयोस्तत्क्षणादपि ॥ २४८ ॥

अर्थः— एवी रीतें नाडीशुद्धिमां प्राप्त करेला अभ्यासथी हुशीयार थएला चतुर माणसें पोतानी इच्छाप्रमाणे तत्क्षण पण वायु, पुटोनी अंदर घटाववो.

हवे डाबी जमणी नाडीमां रहेता पवननुं कालमान कहे छे.

द्वे एव घटिके सार्धे, एकस्यामवतिष्ठते ॥
तामुत्सृज्यापरां नाडी, मधितिष्ठति मारुतः ॥ २४९ ॥

अर्थः— एक नाडीमां अढी घडी सुधि वायु रहे छे, अने पछी ते नाडीने छोडीने बीजी नाडीमां जाय छे. तथा,

षट्शतात्यधिकान्याहुः, सहस्राण्येकविंशतिं ॥
अहोरात्रे नरिस्वस्थे, प्राणवायोर्गमागमं ॥ २५० ॥

अर्थः— प्राण वायुनुं एक अहोरात्रमां स्वस्थ नरमां एकवीश हजार ने छसो वखत आवागमन थाय छे.

मुग्धधीर्यः समीरस्य, संक्रांतिमपि वेत्ति न ॥
तत्वनिर्णयवार्त्तां स, कथं कर्त्तुं प्रवर्त्तते ॥ २५१ ॥

अर्थः– जे मुग्धबुद्धि माणस वायुना संक्रमणने पण जाणतो नथी, ते तत्वना निर्णयनी वार्ताने पण करवाने शी रीतें प्रवर्त्तमान थाय ?

हवे आठ श्लोकोयें करीने वेधविधि कहे छे.

पूरितं पूरकेणाधो, मुखं हृत्पद्ममुन्मिषेत् ॥
ऊर्ध्वश्रोतो भवेत्तच्च, कुंभकेन प्रबोधितं ॥ २५२ ॥
आक्षिप्य रेचकेणाथ, कर्षेद्वायुं हृदंबुजात् ॥
ऊर्ध्वश्रोतःपथग्रंथिं, भित्त्वा ब्रह्मपुरं नयेत् ॥ २५३ ॥
ब्रह्मरंध्रान्निष्क्रमय्य, योगी कृतकुतूहलः ॥
समाधितोऽर्कतूलेषु, वेधं कुर्याछनैः शनैः ॥ २५४ ॥
मुहुस्तत्र कृताभ्यासो, मालतीमुकुलादिषु ॥
स्थिरलक्षतया वेधं, सदा कुर्यादतंद्रितः ॥ २५५ ॥
दृढाभ्यासस्ततः कुर्याद्, वेधं वरुणवायुना ॥
कर्पूरागुरुकुष्टादि, गंधद्रव्येषु सर्वतः ॥ २५६ ॥
एतेषु लब्धलक्षोऽथ, वायुसंयोजने पटुः ॥
पक्षिकायेषु सूक्ष्मेषु, विदध्याद्वेधमुद्यतः ॥ २५७ ॥
पतंगभृंगकायेषु, जाताभ्यासो मृगेष्वपि ॥
अनन्यमानसो धीरः, संचरेद्विजितेंद्रियः ॥ २५८ ॥
नराश्वकरिकायेषु, प्रविशन्निःसरन्निति ॥
कुर्वीत संक्रमं पुस्तो, पलरूपेष्वपि क्रमात् ॥ २५९ ॥

॥ अष्टभिः कुलकं ॥

अर्थः– पूरक वायुथी पूरेलुं, नीचे रहेला मुखवालुं थयाथका हृदयकमल प्रफुल्लित थाय, तथा कर्ण उंचावालुं थयां थकां ते कुंभक वायुथी प्रबोधित थाय; पछी तेने रेचकथी आक्षिप्त करीने हृदय कमलमांथी खेंचवो, अने कर्णने उंचा राखीने वचमां रहेली मार्गनी गांठने भेदीने ब्रह्मपुरमां लेइ जवो; पछी करेल छे कुतूहल जेणें एवा योगीयें तेने ब्रह्मद्वारमांथी कहाडीने समताथी आकडानां रूमां धीरे धीरें वेध करवो;

एवी रीतें तेमां वारंवार अभ्यास करवा बाद, प्रमादरहित थइने माल-तीनां मुकुल आदिकमां, हमेशां स्थिरलक्षणपणाये करीने वेध करवो; एवी रीतें तेमां दृढ अभ्यास कर्याबाद वरुणवायुयें करीने, कपूर, अगुरु आदिक गंध द्रव्योमां वेध करवो; तेमां प्रवीण थया बाद, तथा वायुने संयोजवामां हुशीयार थइने सूक्ष्म एवा पक्षि आदिकना शरीरोमां उद्यमवंत थइने वेध करवो; एवी रीतें पतंगिया जमरा आदिकमां अभ्यास कर्या बाद हरिणमां पण करवो; अने ते वखते तेमांज तल्लीन थइने, तथा इंद्रियोने जितीने तेमां संचरवुं; पछी अनुक्रमें मनुष्य, घोडा हाथी आदिकनां शरीरोमां आवागमन करवुं, तथा पछी पत्थर आदिकमां पण अनुक्रमें जवा आववानो अभ्यास करवो.

एवं परासुदेहेषु, प्रविशेद्वामनाशया ॥
जीवद्देहप्रवेशस्तु, नोच्यते पापशंकया ॥ २६० ॥

अर्थः— एवी रीतें मृत्यु पामेला प्राणिउनां शरीरमां डावी नाशिकाथी प्रवेश करवो, पण पापनी शंकाथी जीवतां प्राणीना शरीरमां प्रवेश करवो कह्यो नथी. एवी रीतें परनां शरीरमां प्रवेश करीने पण बुद्धिमान् योगियें अरधो दिवस अथवा एक आखो दिवसज क्रीडा करवी, अने पछी पाछुं पोताना शरीरमां दाखल थवुं.

क्रमेणैवं परपुर, प्रवेशाभ्यासशक्तितः ॥
विमुक्त इव निर्लेपः, स्वेछया संचरेत् सुधीः ॥ २६१ ॥

हवे ते परपुरप्रवेशनुं फल कहे छे.

अर्थः— उत्तम बुद्धिमान् माणस एवी रीतना क्रमथी परशरीरमां प्रवेश करवाना अभ्यासनी शक्तिथी विमुक्तनी पेठे निर्लेप थइने पोतानी इछा प्रमाणे संचरी शके.

एवी रीतें परमार्हत श्रीकुमारपाल राजाथी सेवायेला आचार्य महाराज श्री हेमचंद्रजीयें रचेला अध्यात्मोपनिषद् नामना, थयेल छे पट्टबंध जेनो एवा आ योगशास्त्रमां पोतेज करेलुं पांचमा प्रकाशनुं विवरण संपूर्ण थयुं. ॥ श्रीरस्तु. ॥

श्री जिनाय नमः

॥ षष्ठः प्रकाशः प्रारभ्यते ॥

हवे ते परपुरप्रवेशनुं अपरमार्थपणुं कहे छे.

इह चायं परपुर, प्रवेशश्चित्रमात्रकृत् ॥
सिध्येन्न वा प्रयासेन, कालेन महतापि हि ॥ १ ॥

अर्थः— अहीं कहेलो आ परपुरप्रवेश फक्त आश्चर्य करनारो छे, ते सिद्ध थाय, अथवा प्रयासथी केटलेक काले सिद्ध न पण थाय. केमके,

जित्वापि पवनं नाना, करणैः क्लेशकारणैः ॥
नाडीप्रचारमायत्तं, विधायापि वपुर्गतं ॥ २ ॥
अश्रद्धेयं परपुरे, साधयित्वापि संक्रमं ॥
विज्ञानैकप्रसक्तस्य, मोक्षमार्गो न सिध्यति ॥ ३ ॥

अर्थः— क्लेशनां कारणरूप एवा नाना प्रकारना उपायोथी पवनने जीतीने पण, तथा शरीरमां रहेला नाडीना प्रचारने वश करीने पण तथा परपुरप्रवेश साधीने पण ते पर श्रद्धा नहीं करवी, केमके, एवी रीतना फक्त विज्ञानमांज आसक्त रहेनारने मोक्षमार्ग सिद्ध थतो नथी.

हवे ध्यानसिद्धिमाटे प्राणायामनो प्रक्षेप करे छे.

तन्नाप्नोति मनः स्वास्थ्यं, प्राणायामैः कदर्थितं ॥
प्राणस्यायमने पीडा, तस्यां स्याच्चित्तविप्लवः ॥ ४ ॥

अर्थः— प्राणायामथी कदर्थना पामेलुं मन स्वस्थताने पामतुं नथी, केमके तेथी पीडा थाय छे, अने ते पीडा होते छते चित्त व्याकुल थाय छे.

पूरणे कुम्भने चैव, रेचने च परिश्रमः ॥
चित्तसंक्लेशकरणान्, मुक्तेः प्रत्यूहकारणं ॥ ५ ॥

अर्थः— पूरण, कुंभन, अने रेचनमां परिश्रम थाय छे, अने एवी रीतें मनने ते क्लेशकारी होवाथी मोक्ष माटे ते विघ्नरूप छे.

इंद्रियैः समभिकृष्य, विषयेभ्यः प्रशांतधीः ॥
धर्मध्यानकृते तस्मा, न्मनः कुर्वीत निश्चलं ॥ ६ ॥

अर्थः– तेथी विषयोथी विरक्त बुद्धिवाळा थइने, तथा इंद्रियोनी साथे मनने पण खेंचीने धर्मध्यान माटे तेने निश्चल करवुं.

नाभिहृदयनासाग्र, भालभ्रूतालुदृष्टयः ॥
मुखं कर्णौ शिरश्चेति, ध्यानस्थानान्यकीर्तयन् ॥ ७ ॥

अर्थः– नाभि, हृदय, नासिकाना अग्रभागो, कपाल, भ्रूकुटी, तालु, आंख, मुख, कान, अने मस्तक ए ध्याननी धारणानां स्थानको छे.

हवे धारणानुं फल कहे छे.

एषामेकत्र कुत्रापि, स्थाने स्थापयतो मनः ॥
उत्पद्यंते स्वसंवित्ते, र्बहवः प्रत्ययाः किल ॥ ८ ॥

अर्थः– उपर कहेलां कोइ पण स्थानकें मनने स्थिर करवाथी खरेखर आत्मज्ञाननी घणी प्रतीतियो उत्पन्न थाय छे.

एवी रीतें परमार्हत श्री कुमारपाल राजायें सेवायेल आचार्य महाराज श्री हेमचंद्रजीये रचेला अध्यात्मोपनिषद् नामना, तथा थयेल छे पट्टबंध जेने, एवा योगशास्त्रमां पोतेज करेलुं छठा प्रकाशनुं विवरण संपूर्ण थयुं. श्रीरस्तु.

श्रीजिनायनमः

॥ सप्तमः प्रकाशः प्रारभ्यते ॥

हवे ध्यान धरनारनो क्रम कहे छे.

ध्यानं विधित्सता ज्ञेयं, ध्याता ध्येयं तथा फलं ॥
सिध्यंति नहि सामग्रीं, विना कार्याणि कर्हिचित् ॥ १ ॥

अर्थः– ध्यान धरवाने इछता माणसें ध्याता ध्येय, अने फलने जाणवुं जोइयें, केमके सामग्री विना कार्यो कोइ पण वखते सिद्ध थतां नथी.

हवे छ श्लोकोयें करीने ध्यान धरनारनुं स्वरूप कहे छे.

अमुंचन् प्राणनाशेऽपि, संयमैकधुरीणतां ॥
परमप्यात्मवत्पश्यन्, स्वस्वरूपापरिच्युतः ॥ २ ॥

उपतापमसंप्राप्तः, शीतवातातपादिभिः ॥
पिपासुरमरीकारि, योगामृतरसायनं ॥ ३ ॥
रागादिभिरनाक्रांतं, क्रोधादिभिरदूषितं ॥
आत्मारामं मनः कुर्वन्, निर्लेपः सर्वकर्मसु ॥ ४ ॥
विरतः कामभोगेभ्यः, स्वशरीरेऽपि निःस्पृहः ॥
संवेगहृदनिर्मग्नः, सर्वत्र समतां श्रयन् ॥ ५ ॥
नरेंद्रे वा दरिद्रे वा, तुल्यकल्याणकामनः ॥
अमात्रकरुणापात्रं, भवसौख्यपराङ्मुखः ॥ ६ ॥
सुमेरुरिव निष्कंपः, शशीवानंददायकः ॥
समीर इव निःसंगः, सुधीर्ध्याता प्रशस्यते ॥ ७ ॥

॥ षड्भिः कुलकं ॥

अर्थः— प्राण जाय तो पण संयमनुं एक अग्रेसरपणुं नहीं तजनारो तथा पोताना आत्मस्वरूपथी नहीं खसीने, परने, पण पोतानी पेठेज जोतो, तथा टाढ, पवन, अने तडकाथी पण उपतापने नहीं पामतो तथा मोक्ष करनारा योगरूपी अमृतनां रसायनने पीवानी इच्छा करतो तथा राग आदिकथी नहीं आक्रमण थयेलुं, अने क्रोधादिकथी नहि दूषित थएल एवुं, आत्मारामरूप मनने करतो, तथा सर्व कार्योमां निर्लेप थएल, तथा काम भोगथी विरक्त थयेलो, तथा पोताना शरीरमां पण स्पृहा विनानो, तथा वैराग्यरूपी सरोवरमां निमग्न थयेलो, तथा सर्वे जगोए समताने धारण करतो, तथा राजा अने दरिद्र बन्नेनां कल्याणने तुल्यरीतें इच्छतो, तथा सर्वपर करुणावालो, भवनां सुखथी विरक्त थयेलो, मेरुनी पेठे निश्चल, चंद्रनी पेठे आनंद देनारो, पवननी पेठे संगरहित, तथा उत्तम बुद्धिवालो ध्यान धरनार प्रशंसाने पात्र छे.

हवे भेदपूर्वक ध्येयनुं स्वरूप कहे छे.

पिंडस्थं च पदस्थं च, रूपस्थं रूपवर्जितम् ॥
चतुर्धा ध्येयमाम्नातं, ध्यानस्यालंबनं बुधैः ॥ ८ ॥

अर्थः— पंडितोए ध्याननां आलंबन रूप, पिंडस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, तथा रूपातीत एम चार प्रकारनुं ध्येय मानेलुं छे.

हवे ते ध्येयने धारणाना भेदोथी कहे छे.

पार्थिवी स्यादथाग्नेयी, मारुती वारुणी तथा ॥
तत्रभूः पंचमी चेति, पिंडस्थे पंच धारणाः ॥ ए ॥

अर्थः—पिंडस्थ ध्यानमां, पार्थिवी, आग्नेयी, मारुती वारुणी अने तत्रभू एवी पांच धारणाओ होय छे. तेमांथी पार्थिवी धारणा त्रण श्लोकोथी कहे छे.

तिर्यग् लोकसमं ध्यायेत्, क्षीराब्धिं तत्र चांबुजं ॥
सहस्रपत्रं स्वर्णाभं, जंबूद्वीपसमं स्मरेत् ॥ १० ॥
तत्केसरततेरंतः, स्फुरत्पिंगप्रभांचितां ॥
स्वर्णाचलप्रमाणां च, कर्णिकां परिचिंतयेत् ॥ ११ ॥
श्वेतसिंहासनासीनं, कर्म निर्मूलनोद्यतं ॥
आत्मानं चिंतयेत्तत्र, पार्थिवी धारणेत्यसौ ॥ १२ ॥

॥ त्रिभिर्विशेषकं ॥

अर्थः— तिर्यक् लोकना प्रमाण जेवडा क्षीरसमुद्रने ध्याववो; तेमां जंबूद्वीप जेवडुं, हजार पत्रनुं स्वर्ण सरखी कांतिवालुं एवुं कमल ध्याववुं, ते कमलना केसराओनी श्रेणिमां स्फुरायमान पीली कांतिवाली, तथा मेरु पर्वत जेवडी कर्णिका चिंतववी, ते पर सफेद सिंहासन पर बेठेला तथा कर्मोनो नाश करवाने उद्यमवंत थएला एवा आत्माने चिंतववो; तेनुं नाम पार्थिवी धारणा जाणवुं.

हवे छ श्लोकोये करीने आग्नेयी धारणानुं स्वरूप कहे छे.

विचिंतयेत्तथा नाभौ, कमलं षोडशच्छदं ॥
कर्णिकायां महामंत्रं, प्रतिपत्रं स्वरावलीं ॥ १३ ॥
रेफबिंदुकलाक्रांतं, महामंत्रे यदक्षरं ॥
तस्यरेफाद्विनिर्यांतीं, शनै धूमशिखां स्मरेत् ॥ १४ ॥

स्फुलिंगसंततिं ध्यायेत्, ज्वालामालामनंतरं ॥
ततो ज्वालाकलापेन, दहेत् पद्मं हृदि स्थितं ॥ १५ ॥
तदष्टकर्मनिर्माण, मष्टपत्रमधोमुखं ॥
दहत्येव महामंत्र, ध्यानोत्थः प्रबलानलः ॥ १६ ॥
ततोदेहाद्बहिर्ध्यायेत् पद्मं वह्निपुरं ज्वलत् ॥
लांछितं स्वस्तिकेनांते, वह्निबीजसमन्वितं ॥ १७ ॥
देहं पद्मं च मंत्रार्चि, रंतर्वह्निपुरं बहिः ॥
कृत्वा सुभस्मसाच्छाम्येत्, स्यादाग्नेयीतिधारणा ॥ १८ ॥

॥ षड्भिः कुलकं ॥

अर्थः– नाभिनेविषे शोल पत्रोवालुं कमल चिंतववुं, तथा तेनी कर्णिकाउमां " अर्हं " एवो महामंत्र ध्याववो, अने दरेक पत्रे स्वरोनी पंक्ति ध्याववी; महामंत्रमां रेफ, बिंदु अने कलाथी आक्रांत थएल जे " हैं " अक्षर, तेना रेफथी धीरेधीरे नीकलती एवी धूमशिखानुं स्मरण करवुं; पछी तेमां स्फुलिंगोनी श्रेणी, अने ज्वालानी पंक्तिउ ध्याववी पछी ते ज्वालाना समूहथी हृदयमां रहेला कमलने बालवुं, पछी ते महामंत्रना ध्यानथी उत्पन्न थएलो प्रबल अग्नि आठ कर्मोना निर्माण रूप तथा नीचेमुखवाला आठ पत्रोने बाले पछी देहथी बहार अग्नि समीप बलता तथा स्वस्तिकथी लांछित अने अग्निबीजे करीने सहित एवा कमलने ध्याववुं, पछी मंत्रनी शिखा अने अंतर अग्निनी समीप देह अने पद्मने, बहार कहाडीने भस्मसात् कर्या बाद शांत थवुं, ए आग्नेयी धारणा जाणवी.

हवे बे श्लोकोए करीने वायवी धारणानुं स्वरूप कहे छे.

ततस्त्रिभुवनाभोगं, पूरयंतं समीरणं ॥
चालयंतं गिरीनब्धीन्, क्षोभयंतं विचिंतयेत् ॥ १९ ॥
तच्चभस्मरजस्तेन, शीघ्रमुद्धूय वायुना ॥
दृढाभ्यासः प्रशांतात्मा, नयेदिति च मारुतीं ॥ २० ॥

अर्थः– पछी त्रणे भुवनोने पूरी देता, तथा पर्वत अने समुद्रने पण

चलायमान करता एवा पवनने ध्याववो, तथा पछी उपरनी जस्मने ते वायुथी तुरत उडाडीने, दृढ अभ्यासथी आत्माने शांत करवो ए मारुती (वायवी) धारणा जाणवि.

हवे बे श्लोकोथी वारुणी धारणानुं स्वरूप कहे छे.

स्मरेद्वर्षत्सुधासारैः, घनमालाकुलं नभः ॥
ततोऽर्धेंदुसमाक्रांतं, मंडलं वारुणांकितं ॥ २१ ॥
नभस्तलं सुधांभोभिः प्लावयेत्तत्पुरं ततः ॥
तद्रजः कायसंभूतं, क्षालयेदिति वारुणी ॥ २२ ॥

अर्थः— अमृत सरखो वरसाद वरसावनारुं, तथा मेघमालाथी आकुल एवा आकाशनुं स्मरण करवुं, तथा पछी अर्धचंद्रथी आक्रांत थएलुं तथा वारुणथी अंकित थयेलुं मंडल ध्याववुं, पछी ते नभस्तलने अमृत सरखा पाणीथी प्लावित करवुं, अने एकठी थएली ते रजने धोवी; एवी रीतें वारुणी धारणा जाणवी.

हवे तत्रभू धारणाने त्रण श्लोकें करीने उपसंहरता थका कहे छे.

सप्तधातुविनाभूतं, पूर्णेंदुविशदद्युतिं ॥
सर्वज्ञकल्पमात्मानं, शुद्धबुद्धिः स्मरेत्ततः ॥ २३ ॥
ततः सिंहासनारूढं, सर्वातिशयभासुरं ॥
विध्वस्ताशेषकर्माणं, कल्याणमहिमान्वितं ॥ २४ ॥
स्वांगगर्भे निराकारं, संस्मरेदिति तत्रभूः ॥
साभ्यासइतिपिंडस्थे योगी शिवसुखं भजेत् ॥ २५ ॥

अर्थः— पछी सात धातुउ विना उत्पन्न थयेलुं, तथा संपूर्ण चंद्रसरखी सफेद कांतिवालुं, तथा सर्वज्ञ सरखुं, एवुं आत्मस्वरूप, शुद्धबुद्धि योगीयें ध्याववुं; पछी सिंहासनपर बेठेलुं, सर्व अतिशयथी शोभतुं, नाश करेल छे, सर्व कर्मो जेणे एवुं, कल्याणकना महिमायें करी सहित, पोताना अंगगर्भमां आकाररहित एवुं स्वात्मस्वरूप जे ध्याववुं, ते तत्रभूधारणा कहेवाय; एवी रीतना पिंडस्थ ध्यानमां, अभ्यासयुक्त थएलो योगी मोक्षसुखने भजी शके.

हवे त्रण श्लोकोयें करीने, पिंडस्थ ध्येयनुं माहात्म्य कहे छे.

अश्रांतमिति पिंडस्थे, कृताभ्यासस्य योगिनः ॥
प्रजवंति न दुर्विद्या, मंत्रमंडलशक्तयः ॥ २६ ॥
शाकिन्यः क्षुद्रयोगिन्यः, पिशाचाः पिशिताशिनः ॥
त्रस्यंति तत्क्षणादेव, तस्य तेजोसहिष्णवः ॥ २७ ॥
डुष्टाः करटिनः सिंहाः, शरजाः पन्नगा अपि ॥
जिघांसवोऽपि तिष्ठंति, स्तंजिता इव दूरतः ॥ २८ ॥

॥ त्रिजिर्विशेषकं ॥

अर्थः– एवी रीतें पिंडस्थ ध्यानमां करेल छे, अत्यंत अज्यास जेणें एवा योगीने उच्चाटन, मारण स्तंजन आदिक विद्याउं, मंत्र, मंडल शक्तिविगेरे पराजव करी शकतां नथी. तेम शाकिनी, क्षुद्र योनिउं, पिशाच, मांसाहारी विगेरे तेनां तेजने सहन नहीं करता थका तत्क्षण त्रास पामे छे; तथा डुष्ट एवा हाथी सिंह, अष्टापद सर्प विगेरे घातकी प्राणीउं पण स्तंजितनी पेठे तेनाथी दूरज रहे छे.

एवी रीतें परमार्हत श्री कुमारपाल राजाथी सेवायेला आचार्य महाराज श्रीहेमचंद्रजीये रचेला अध्यात्मोपनिषद् नामना, तथा थयेल छे पट्टबंध जेनो, एवा श्री योगशास्त्रमां पोते करेलुं सातमा प्रकाशनुं विवरण संपूर्ण थयुं. ॥ श्रीरस्तु ॥

श्री जिनायनमः

॥ अष्टमः प्रकाशः प्रारज्यते ॥

हवे पदस्थ ध्येयनुं लक्षण कहे छे.

यत्पदानि पवित्राणि, समालंब्य विधीयते ॥
तत्पदस्थं समाख्यातं, ध्यानं सिद्धांतपारगैः ॥ १ ॥

अर्थः– जे ध्यान पवित्र पदोनुं (मंत्राक्षरोनुं) आलंबन लइने कराय छे, तेने सिद्धांतना पारगामिउयें "पदस्थध्यान" कहेलुं छे.

तत्र षोडश पत्राढ्ये, नाभिकंदगतेंऽबुजे ॥
स्वरमालां यथापत्रं, भ्रमंतीं परिचिंतयेत् ॥ २ ॥
चतुर्विंशतिपत्रं च, हृदि पद्मं सकर्णिकं ॥
वर्णान्यथाक्रमं तत्र, चिंतयेत्पंचविंशतिं ॥ ३ ॥
वक्त्राब्जेऽष्टदले वर्णा, ष्टकमन्यत्ततः स्मरेत् ॥
संस्मरन्मातृकामेवं, स्याच्छ्रुतज्ञानपारगः ॥ ४ ॥

अर्थः— नाभिकंदपर रहेला तथा शोल पत्रोवाला कमलपर पत्रपत्रप्रत्ये भ्रमण करती एवी स्वरोनी पंक्ति चिंतववी; वली हृदयमां चोवीश पत्रोनुं कर्णिकासहित कमल चिंतववुं; तथा तेपर अनुक्रमें पचीश व्यंजनोने चिंतववा. पछी आठ पत्रवाला मुख कमलपर बीजा आठ व्यंजनो चिंतववा; एवी रीतनी मातृकाने स्मरण करतां थकां (त्रिकाल) ज्ञानमां पारगामी थवाय.

हवे तेनुं फल कहे छे.

ध्यायतोऽनादिसंसिद्धान् वर्णानेतान्यथाविधि ॥
नष्टादिविषये ज्ञानं, ध्यातुरुत्पद्यते क्षणात् ॥ ५ ॥

अर्थः—एवी रीतनां अनादिसिद्ध एवा ते अक्षरोने विधिपूर्वक ध्यावतां थकां, ध्यान धरनारने क्षणवारमां नष्टादिक विषयमां ज्ञान उत्पन्न थायछे.

हवे बार श्लोकोयें करीने प्रकारांतरथी पदमयी देवताने ध्येयपणायेकरीने देखाडे छे.

अथवा नाभिकंदाधः, पद्ममष्टदलं स्मरेत् ॥
स्वरालिकेसरं रम्यं, वर्गाष्टकयुतैर्दलैः ॥ ६ ॥
दलसंधिषु सर्वेषु, सिद्धस्तुतिविराजितं ॥
दलाग्रेषु समग्रेषु, मायाप्रणवपावितं ॥ ७ ॥
तस्यांतरंतिमं वर्णं, माद्यवर्णपुरस्कृतं ॥
रेफाक्रांतं कलाबिंदु, रम्यं प्रालेयनिर्मलं ॥ ८ ॥

अर्हमित्यक्षरं प्राणं, प्रांतसंस्पर्शि पावनं ॥
ह्रस्वं दीर्घं प्लुतं सूक्ष्म, मतिसूक्ष्मं ततः परं ॥ ९ ॥
ग्रंथीन् विदारयन्नाभि, कंठहृद्घंटिकादिकान् ॥
सुसूक्ष्मध्वनिना मध्य, मार्गयायि स्मरेत्ततः ॥ १० ॥
अथ तस्यांतरात्मानं, प्लाव्यमानं विचिंतयेत् ॥
बिंदुतप्तकलानिर्यत्, क्षीरगौरामृतोर्मिभिः ॥ ११ ॥
ततः सुधासरःसूत, षोडशाब्जदलोदरे ॥
आत्मानं न्यस्य पत्रेषु, विद्यादेवीश्च षोडश ॥ १२ ॥
स्फुटस्फटिकभृंगार, क्षरत्क्षीरसितामृतैः ॥
आभिराप्लाव्यमानं स्वं, चिरं चित्ते विचिंतयेत्॥ १३ ॥
अथास्य मंत्रराजस्या, भिधेयं परमेष्टिनं ॥
अर्हंतं मूर्धनि ध्यायेत्, शुद्धस्फटिकनिर्मलं ॥ १४ ॥
तद्ध्यानावेशतः सोहं सोहमित्यालपन्मुहुः ॥
निःशंकमेकतां विद्या, दात्मनः परमात्मनः॥ १५ ॥
ततोनीरागमद्वेष, ममोहं सर्वदर्शिनं ॥
सुरार्च्यं समवसृतौ, कुर्वाणं धर्मदेशनां ॥ १६ ॥
ध्यायन्नात्मानमेवेत्थ, मभिन्नं परमात्मना ॥
लभते परमात्मत्वं, ध्यानी निर्धूतकल्मषः ॥ १७ ॥

॥ द्वादशभिः कुलकं ॥

अर्थः– अथवा नाभिकंदनी नीचे आठ पांखडीनुं कमल ध्याववुं, तेमां स्वरनी पंक्तिसहित केसराउं, तथा आठ वर्गोनां अक्षरोवालां, पत्रो ध्याववां; पांखडीउंना सघला सांधाउंमां सिद्धनी स्तुतिरूप "ह्रीं" पद ध्यावबुं, तथा तेउंना सघला अग्रभागोमां माया प्रणवरूप "ॐ ह्रीं" ए पद ध्यावबुं; वली तेनी वच्चे भेला अक्षर हकार, तथा पेहेला अक्षर अकारने अगाडी मुकीने स्मरवुं, अने ते हकारपर रेफ चंद्रकला अने बिं-

डु मुकवां अने तेथी बरफ सरखुं उज्वल "अर्हँ" एवुं पद थशे. अने ते पद प्राणप्रांतने स्पर्श करनारुं, तथा पापोने नाश करनारुं छे, अने ह्रस्व दीर्घ, सूक्ष्म अने अतिसूक्ष्म एवो उच्चार थाय; एवी रीतें उच्चार करवाथी ते नाभि, कंठ, अने हृदयथी घंटिकादि गांठोने विदारे, पछी अत्यंत सूक्ष्म ध्वनिथी मध्य मार्गमां जतुं तेने स्मरवुं; पछी बिंडुथी तप्त थयेली कलामांथी निकलता दूध सरखा सफेद अमृतना मोजाउंथी अंतरात्माने भिंजावतुं एवुं, तेने चिंतववुं; पछी अमृतना सरोवरथी उत्पन्न थयेला तथा सोल पांखडीवाला कमलना मध्यभागमां आत्माने राखीने, ते पत्रोमां शोल विद्यादेवीउंने चिंतववी, पछी स्फटिक सरखी निर्मल झारीउंमांथी झरता दूध सरखा सफेद अमृतथी पोताने लांबा कालसुधि सिंचाता चिंतववुं; पछी आ मंत्रराजना अभिधेय तथा परमेष्टी अने स्फटिक सरखा निर्मल एवा अर्हंतने मस्तकने विषे ध्याववा, पछी ते ध्यानना आवेशथी "सोहं सोहं" एम वारंवार कहेतां थकां, शंकारहित आत्मासाथे परमात्मानी एकता जाणवी, पछी राग, द्वेष अने मोहरहित, सर्वदर्शी, देवोथी पूजनीय तथा समवसरणमां धर्मदेशना देता, एवा परमात्माने अभेदपणाथी आत्मासाथे ध्यावतां थकां ध्यान धरनार योगी क्लेशने नाश करतो थको, परमात्मपणाने पामे.

वली पण प्रकारांतरथी पंचमयी देवतानुं पांच श्लोकोयें करीने स्वरूप कहेछे.

यद्वा मंत्राधिपं धीमान्, ऊर्ध्वाधोरेफसंयुतं ॥
कलाबिंडुसमाक्रांत, मनाहतयुतं तथा ॥ १८ ॥
कनकांभोजगर्भस्थं, सांद्रचंद्रांशुनिर्मलं ॥
गगने संचरंतं च, व्याप्नुवंतं दिशः स्मरेत् ॥ १९ ॥
ततोविशंतं वक्त्राब्जे, भ्रमंतं भ्रूलतांतरे ॥
स्फुरंतं नेत्रपत्रेषु, तिष्ठंतं भालमंडले ॥ २० ॥
निर्यांतं तालुरंध्रेण, श्रवंतं च सुधारसं ॥
स्पर्धमानं शशांकेन, स्फुरंतं ज्योतिरंतरे ॥ २१ ॥

संचरंतं नजोजागे, योजयंतं शिवश्रिया॥
सर्वावयवसंपूर्णं, कुंजकेन विचिंतयेत् ॥ ७२ ॥

॥ पंचजिः कुलकं ॥

अर्थः— अथवा बुद्धिमान् माणसें मंत्राधिराजने उंचें अने नीचें रेफसहित, तथा कला अने बिंडुथी आक्रांत अने अनाहतनादें करीने युक्त करवो, तथा तेने सुवर्णकमलना मध्यजागमां रहेलुं, तथा घाटा एवा चंडना किरणो सरखुं निर्मल, तथा आकाशमां संचरतुं, अने दिशाउंमां व्यापतुं तथा पठी मुखकमलमां पेसतुं जृकुटीउंमां ज्रमण करतुं, नेत्रोमां स्फुरायमान थतुं, कपालपर रहेतुं, तालुरंध्रथी निकलतुं, ज्योतिनी अंदर स्फुरतुं, आकाशजागमां संचरतुं, मोक्षलक्ष्मी साथे जोडातुं, तथा सर्व अवयवें करीने संपूर्ण एवुं कुंजकें करीने चिंतववुं. कह्युं ठे के,

अकारादिहकारांतं, रेफमध्यं सबिंडुकं ॥
तदेव परमं तत्वं, योजानाति सतत्ववित् ॥ ७३ ॥

अर्थः— अकारथी मांडीने हकार पर्यंत, मध्यें रेफ अने बिंडु सहित, एवी रीतनां परम तत्वने जे जाणे ठे, तेज तत्वने जाणनारो ठे.

हवे ध्यानमां मंत्रराजनुं फल कहे ठे.

महातत्वमिदं योगी, यदैव ध्यायति स्थिरः ॥
तदेवानंदसंपद्नू, मुक्तिश्रीरुपतिष्ठते ॥ ७४ ॥

अर्थः— स्थिर एवो योगी आ महातत्वने ज्यारे ध्यावे ठे, तेज वखत आनंदनी संपदानी जूमिसमान एवी मुक्तिरूपी लक्ष्मी प्राप्त थाय ठे.

रेफबिंडुकलाहीनं, शुभ्रं ध्यायेत्ततोऽक्षरं ॥
ततोऽनक्षरतां प्राप्त, मनुच्चार्यं विचिंतयेत् ॥ ७५ ॥

अर्थः— पठी रेफ, बिंडु अने कलाविनानो सफेद अक्षर चिंतववो, पठी अक्षर रहितपणाने प्राप्त थयेलुं, तथा न उच्चारी शकाय, एवुं चिंतववुं.

निशाकरकलाकारं, सूक्ष्मं जास्करजास्वरं ॥
अनाहताजिधं देवं, विस्फुरंतं विचिंतयेत् ॥ ७६ ॥

अर्थः— चंद्रनी कलाना आकार सरखुं, सूक्ष्म, तथा सूर्यसरखुं तेजस्वी, अने स्फुरायमान थतुं एवुं अनाहत नामना देवनुं चिंतवन करवुं. पछी,

तदेव च क्रमात्सूक्ष्मं, ध्यायेद्वालाग्रसंनिभं ॥
क्षणमव्यक्तमीक्षेत, जगज्ज्योतिर्मयं ततः ॥ २७ ॥

अर्थः— पछी अनुक्रमें तेनेज वालना अग्र जागसरखुं सूक्ष्म ध्यावबुं, पछी क्षणवार सुधि जगत् ज्योतिर्मय अव्यक्त जोवुं अने एवी रीतें,

प्रच्याव्य मानसं लक्ष्या, दलक्ष्ये दधतः स्थिरं ॥
ज्योतिरक्षयमत्यक्ष, मंतरुन्मीलति क्रमात्॥ २८ ॥

अर्थः— लक्ष्यमांथी अलक्ष्यमां धारण करातुं, एटले अत्यंत सूक्ष्म थतुं, एवुं अक्षय ज्योति अनुक्रमें अंतरमां प्रगट थाय छे.

इति लक्ष्यं समालंब्य, लक्ष्यजावः प्रकाशितः ॥
निषण्णमनसस्तत्र, सिध्यत्यजिमतं मुनेः ॥ २९ ॥

अर्थः— एवी रीतें लक्ष्यना आलंबनथी लक्ष्यनो जाव कह्यो; तेमां निश्चल मनवाला योगीनुं इछित सिद्ध थाय छे. तथा,

तथा हृत्पद्ममध्यस्थं, शब्दब्रह्मैककारणं ॥
स्वरव्यंजनसंवीतं, वाचकं परमेष्ठिनः ॥ ३० ॥
मूर्ध्संस्थितशीतांशु, कलामृतरसप्लुतं ॥
कुंजकेन महामंत्रं, प्रणवं परिचिंतयेत् ॥ ३१ ॥

अर्थः— हृदयकमलना मध्यजागमां रहेलुं, तथा एक ब्रह्मशब्दना कारणरूप, अने स्वर तथा व्यंजनथी वीटायेलो, अने परमेष्टिनो वाचक, तथा मस्तकपर रहेल चंद्रनी कलाना अमृतरसथी जीजायेलो, एवा महामंत्र प्रणवरूप ॐकारने कुंजक नामना प्राणायामवडे चिंतववो.

हवे तेना ध्येयपणामां प्रकारांतरो कहे छे.

पीतं स्तंजेऽरुणं वश्ये, क्षोजणे विद्रुमप्रजं ॥
कृष्णं विद्वेषणे ध्यायेत्, कर्मघाते शशिप्रजं ॥ ३२ ॥

अर्थः— स्तंजनमां पीळुं, वशीकरणमां लाल, क्षोजनमां परवाला सरखुं, विद्वेषमां काळुं तथा कर्मघातमां चंद्रसरखुं ध्यावबुं.

हवे प्रकारांतरथी पदमयी देवताने स्तवे छे.

तथा पुण्यतमं मंत्रं, जगत्रितयपावनं ॥
योगी पंचपरमेष्ठि, नमस्कारं विचिंतयेत् ॥ ३३ ॥

अर्थः– तथा योगीयें अत्यंत पवित्र, तथा त्रणे जगत्ने पवित्र करनारा, एवा पंचपरमेष्ठीने नमस्काररूप अत्यंत पवित्र मंत्रने स्मरवो. पछी,

अष्टपत्रे सितांभोजे, कर्णिकायां कृतस्थिति ॥
आद्यं सप्ताक्षरं मंत्रं, पवित्रं चिंतयेत्ततः ॥ ३४ ॥

अर्थः– आठ पांखडीउंवाला सफेद कमलमां रहेली कर्णिकामां करेल छे, स्थिति जेणें, एवा पेहेलां, सात अक्षरोवाला "नमो अरिहंताणं" एवा पवित्र मंत्रने चिंतववो.

सिद्धादिकचतुष्कं च, दिक्पत्रेषु यथाक्रमं ॥
चूलापादचतुष्कं च, विदिक्पत्रेषु चिंतयेत् ॥ ३५ ॥

अर्थः– सिद्ध आदिक चारे पदो अनुक्रमें दिशाउंना पत्रोमां. तथा विदिशानां पत्रोमां उपरना "एसोपंचनमुक्कारो इत्यादि" चार पदो चिंतववां.

त्रिशुद्ध्या चिंतयन्नस्य, शतमष्टोत्तरं मुनिः ॥
भुंजानोऽपि लभेतैव, चतुर्थतपसः फलं ॥ ३६ ॥

अर्थः–मन, वचन अने कायानी शुद्धिथी तेने एकसोने आठवार चिंतवतो मुनि, भोजन करतां थकां पण उपवासनुं फल मेलवी शके छे.

एनमेव महामंत्रं, समाराध्येह योगिनः ॥
त्रिलोक्यापि महीयंते, ऽधिगताः परमां श्रियं ॥ ३७ ॥

अर्थः– एवी रीतना महामंत्रने अहीं आराधीने, परम लक्ष्मीने प्राप्त थएला योगीउं त्रणे लोकथी पण पूजाय छे. तथा,

कृत्वा पापसहस्राणि, हत्वा जंतुशतानि च ॥
अमुं मंत्रं समाराध्य, तिर्यंचोऽपि दिवं गताः ॥ ३८ ॥

अर्थः– हजारो पापो करीने, तथा सेंकडो प्राणिउंने हणीने पण आ मंत्रनुं आराधन करीने कंबल शंबल आदिक तिर्यंचो पण देवलोकें गया छे.

वळी प्रकारांतरथी ते विद्या कहे छे.

गुरुपंचकनामोत्था, विद्या स्यात् षोडशाक्षरा ॥
जपन् शतद्वयं तस्या, श्चतुर्थस्याप्नुयात्फलं ॥ ३९ ॥

अर्थः– गुरुपंचक केतां पंच परमेष्टिनां फक्त नामरूप शोळ अक्षरोवाळी विद्या थाय, अने तेने बसो वार जपवाथी उपवासनुं फळ मळे. तथा,

शतानि त्रीणि षड्वर्णं, चत्वारि चतुरक्षरं ॥
पंचवर्णं जपन् योगी, चतुर्थफलमश्नुते ॥ ४० ॥

अर्थः– "अरहंत सिद्ध" ए छ अक्षरनी विद्या त्रणसें वार जपवाथी, "अरहंत" ए चार अक्षरनी विद्या चारसोवार जपवाथी, तथा "असिआउसा" ए पांच अक्षरनी विद्या पांचवार जपवाथी योगी उपवासनुं फळ मेळवी शके. तथा,

प्रवृत्तिहेतुरेवैत, दमीषां कथितं फलं ॥
फलं स्वर्गापवर्गौ तु, वदंति परमार्थतः ॥ ४१ ॥

अर्थः– आमनुं आ फल तो फक्त प्रवृत्तिना हेतुरूप कह्युं छे, पण परमार्थथी तो तेउनुं स्वर्ग अने मोक्षरूप फल छे.

वळी प्रकारांतरथी पदमयी देवता विषे कहे छे.

पंचवर्णमयी पंच, तत्व विद्योद्धृता श्रुतात् ॥
अभ्यस्यमाना सततं, भवक्लेशं निरस्यति ॥ ४२ ॥

अर्थः– "ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा नमः" एवी रीतनी पांच अक्षरोवाळी, तथा पांच तत्वोवाळी, तथा वादनामना पूर्वमांथी उद्धरी कहाडेली, विद्या हमेशां अभ्यास कराती थकी थता क्लेशोने दूर करे छे. तथा,

मंगलोत्तमशरण, पदान्यव्यग्रमानसः ॥
चतुःसमाश्रयाण्येव, स्मरन् मोक्षं प्रपद्यते ॥ ४३ ॥

अर्थः– चार मंगळ, चार लोकोत्तम, अने चार शरण तेउनुं स्मरण करतो थको प्राणी मोक्षपदने पामे छे. तथा,

मुक्तिसौख्यप्रदां ध्याये, द्विद्यां पंचदशाक्षरां ॥
सर्वज्ञाभं स्मरेन्मंत्रं, सर्वज्ञानप्रकाशकं ॥ ४४ ॥

अर्थः— मोक्षसुखने देनारी पंदर अक्षरी विद्या ध्याववी, अने सर्वज्ञान प्रकाश करनारो "ॐ श्रीँ ह्रीँ अर्हंनमः एवा सर्वज्ञतुल्य मंत्रनेस्मरवो.

वक्तुं न कश्चिदप्यस्य, प्रभावं सर्वतः क्षमः ॥
समं भगवता साम्यं, सर्वज्ञेन बिभर्त्ति यः ॥ ४५ ॥

अर्थः— सर्वज्ञपणायें करीने प्रभुनी तुलनाने जे धारण करे छे, एवो कयो माणस आ मंत्रना प्रभावने कहेवाने समर्थ थाय.? तथा,

यदीच्छेद्भवदावाग्नेः, समुच्छेदं क्षणादपि ॥
स्मरेत्तदादिमंत्रस्य, वर्णसप्तकमादिमं ॥ ४६ ॥

अर्थः— जो भवरूपी दावानलना एक क्षणवारमां नाशने इच्छता होइयें, तो मूलमंत्रना पेहेला सात अक्षरोनुं (नमो अरहंताणं) स्मरणकरवुं.

पंचवर्णं स्मरेन्मंत्रं, कर्मनिर्घातकं तथा ॥
वर्णमालांचितं मंत्रं, ध्यायेत् सर्वाभयप्रदं ॥ ४७ ॥

अर्थः— कर्मोने नाश करनारा पांच अक्षरना मंत्रने तथा अक्षरोनी श्रेणियुक्त अने सर्व प्रकारनां अभयने देनारा एवा मंत्रने पण ध्याववो.

हवे दश श्लोकोयें करीने व्युष्टिसहित मंत्राक्षर कहे छे.

ध्यायेत् शिताब्जं वक्रांत, रष्टवर्गी दलाष्टके ॥
ॐनमो अरहंताण, मिति वर्णानपि क्रमात् ॥ ४८ ॥
केसरालीं स्वरमयीं, सुधाबिंदुविभूषितां ॥
कर्णिकां कर्णिकायां च, चंद्रबिंबात्समापतत् ॥ ४९ ॥
संचरमाणं वक्रेण, प्रभामंडलमध्यगं ॥
सुधादीधितिसंकाशं, मायाबीजं विचिंतयेत् ॥ ५० ॥
ततो भ्रमंतं पत्रेषु, संचरंतं नभस्तले ॥
ध्वंसयंतं मनोध्वांतं, स्रवंतंच सुधारसं ॥ ५१ ॥
तालुरंध्रेण गच्छंतं, लसंतं भ्रूलतांतरे ॥
त्रैलोक्याचिंत्यमाहात्म्यं, ज्योतिर्मयमिवाद्भुतं ॥ ५२ ॥

इत्यमुं ध्यायतो मंत्रं, पुण्यमेकाग्रमानसं ॥
वाङ्मनोमलमुक्तस्य, श्रुतज्ञानं प्रकाशते ॥ ५३ ॥
मासैः षड्भिः कृताभ्यासः, स्थिरीभूतमनास्ततः ॥
निःसरंतीं मुखाम्भोजा, च्छिखां धूमस्य पश्यति ॥ ५४ ॥
संवत्सरं कृताभ्यास, स्ततो ज्वालां विलोकते ॥
ततः संजातसंवेगः, सर्वज्ञमुखपंकजं ॥ ५५ ॥
स्फुरत्कल्याणमाहात्म्यं, संपन्नातिशयं ततः ॥
भामंडलगतं साक्षा, द्दिव सर्वज्ञमीक्षते ॥ ५६ ॥
ततः स्थिरीकृतस्वांत, स्तत्रसंजातनिश्चयः ॥
मुक्त्वासंसारकांतार, मध्यास्ते सिद्धिमंदिरं ॥ ५७ ॥

॥ दशभिः कुलकं ॥

अर्थः– मुखनी अंदर आठ पांखडीउंनुं कमल ध्याववुं तथा ते पांखउंमां अक्षरोना आठ वर्गो ध्याववा, तथा " ॐ नमो अरहंताणं " एवी रीतनां अक्षरोने पण अनुक्रमें ध्याववां; वली स्वरमय केसरानी पंक्ति तेमां ध्याववी, तथा सुधाबिंदुथी विभूषित एवी कर्णिका तेमां ध्याववी, अने ते कर्णिकामां चंद्रना बिंबथी पडतुं, तथा मुखें करीने संचार करतुं अने प्रभाना मंडलनी वच्चे रहेलुं, तथा चंद्रसरखुं मायाबीज चिंतववुं; पछी पत्रोमां भ्रमण करतुं आकाशतलमां संचरतुं मनना अंधकारने नाश करतुं, गोल, सुधारसवालुं, तालुद्वारथी जतुं भ्रूकुटीमां उल्लसायमान थतुं, त्रणे लोकोमां अचिंत्य माहात्म्यवालुं, तथा ज्योतिर्मयनी पेठे अद्भुत, एवी रीतना पवित्र मंत्रने एकाग्र चित्तथी स्मरतां थकां, मन वचनना मलथी मुकायेलाने श्रुतज्ञान उत्पन्न थाय छे; एवी रीतें स्थिर मनें करीने छ माससुधि अभ्यास करवाथी, मुखकमलमांथी निकलती एवी धुंवाडानी शिखाने जुवे छे. तथा एवी रीतें एक वर्षसुधि अभ्यास करवाथी ते मुखमांथी निकलती ज्वालाने जोइ शके छे, पछी वैराग्ययुक्त थवाथी सर्वज्ञना मुखकमलने जोइ शके छे, तथा पछी स्फुरायमान छे, कल्याणकोनुं माहात्म्य जेमनुं तथा प्राप्त थयेल छे, अतिशयो जेमने, एवा सर्वज्ञने सा-

क्षात् जालमंडलमां रहेला जुवे छे; पछी मनने स्थिर करीने, तथा निश्चययुक्त थइने, संसाररूपी वनने तजीने मोक्षमंदिरप्रत्ये जाय छे.

शशिबिंबादिवोद्भूतां, स्रवंतीममृतं सदा ॥
विद्यां क्ष्मिमितिभालस्थां, ध्यायेत्कल्याणकारणं ॥ ५८ ॥

अर्थः– चंद्रबिंबथी उत्पन्न थएली, तथा हमेशां अमृतने झरनारी, अने कल्याणनां कारणनां कारणरूप कपालमां रहेली "क्ष्मि" नामनी विद्याने ध्याववी.

क्षीरांभोधेर्विनिर्यांतीं, प्लावयंतीं सुधांबुभिः ॥
भाले शशिकलां ध्यायेत्, सिद्धिसोपानपद्धतिं ॥ ५९ ॥

अर्थः– क्षीरसमुद्रथी निकलती, तथा अमृतमय जलथी प्लावन करती अने मोक्ष प्रत्ये निसरणी सरखी एवी चंद्रकलाने भालमां ध्याववी.

अस्याः स्मरणमात्रेण, त्रुट्यद्भवनिबंधनः ॥
प्रयाति परमानंद, कारणं पदमव्ययं ॥ ६० ॥

अर्थः– तेनां स्मरणमात्रथीज भवनां निबंधनने तोडीने परम आनंदनां कारणरूप एवा मोक्षपदप्रत्ये जाय छे. तथा,

नासाग्रे प्रणवःशून्य, मनाहतमिति त्रयं ॥
ध्यायन् गुणाष्टकं लब्ध्वा, ज्ञानमाप्नोति निर्मलं ॥ ६१ ॥

अर्थः– नासिकाना अग्रभागप्रत्ये प्रणव, शून्य, अने अनाहत एम त्रणेने ध्यावतां थकां, अणिमादिक आठ गुणोने मेलवीने निर्मल एवुं ज्ञान पामे छे.

शंखकुंदशशांकाभां, स्त्रीनमून् ध्यायतः सदा ॥
समग्रविषयज्ञान, प्रागल्भ्यं जायते नृणां ॥ ६२ ॥

अर्थः– शंख, डोलर अने चंद्र सरखा एवा ते त्रणेने हमेशां ध्यावतां थकां, माणसोने सघली वस्तुओनां ज्ञाननी चतुराइ आवे छे. तथा,

द्विपार्श्वप्रणवद्वंद्वं, प्रांतयोर्माययावृतं ॥
सोहंमध्ये विमूर्धानं, अर्ह्लींकारं विचिंतयेत् ॥ ६३ ॥

अर्थः– बन्ने पडखे बे प्रणव बन्ने छेडे मायाथी वींटायेलो, "सोहं"

एटलुं मध्यमां अने जेने मस्तके बिंदु एवा अर्हींकारने चिंतववो. तथा,

कामधेनुमिवाचिंत्य, फलसंपादनक्षमां ॥
अनवद्यां जपेद्विद्यां, गणभृद्वदनोद्गतां ॥ ६४ ॥

अर्थः– कामधेनुनी पेठे, अचिंत्य फल संपादन करवाने समर्थ, तथा गण-धरोना मुखथी निकलेली एवी अवद्यरहित (निर्दोष) विद्याने जपवी. तथा.

षट्कोणे अप्रतिचक्रे, फडिति प्रत्येकमक्षरं ॥
सव्येत्यसिद्धिचक्राय, स्वाहा बाह्येऽपसव्यतः ॥ ६५ ॥
भूतांतं बिंदुसंयुक्तं, तन्मध्ये न्यस्य चिंतयेत् ॥
नमोजिणाणमित्यादौ, रोंपूर्वं वेष्टयेद्बहिः ॥ ६६ ॥

अर्थः– ७ खुणावाला अप्रतिचक्रमां फट् एवा प्रत्येक अक्षर तथा ज-मणी बाजुये "सिद्धिचक्राय स्वाहा" तथा डाबी बाजुये बाहारना भाग-मां, भूतांत बिंदुसहित, तेनी अंदर राखीने चिंतववुं, तथा नमो जिणा-णं इत्यादिक रों पूर्वं करीने बहारथी वींटवुं. तथा,

अष्टपत्रेंऽबुजे ध्याये, दात्मानं दीप्ततेजसं ॥
प्रणवाद्यस्य मंत्रस्य, वर्णान् पत्रेषु च क्रमात् ॥ ६७ ॥

अर्थः– आत्मामां आनंदी एवा माणसें आठ पत्रोवाला कमलमां ते-जने ध्याववुं, तथा तेनां पत्रोमां अनुक्रमें प्रणव आदिक मंत्रनां अक्ष-रोने ध्याववां. तथा,

पूर्वाशाभिमुखः पूर्व, मधिकृत्यादिमंडलं ॥
एकादशशतान्यष्टा, क्षरमंत्रं जपेत्ततः ॥ ६८ ॥

अर्थः– पछी दिशा सन्मुख पूर्वें आदित्यमंडलनुं अधिकरण करीने आठ अक्षरोना मंत्रने, अग्यारसोवार जपवो.

पूर्वाशानुक्रमादेव, मुद्दिश्यान्यदलान्यपि ॥
अष्टरात्रं जपेद्योगी, सर्वप्रत्यूहशांतये ॥ ६९ ॥

अर्थः– एवी रीतें पूर्वदिशाना अनुक्रमथी अन्य पत्रोने पण उद्देशी-ने योगीयें सर्व विघ्नोनी शांतिमाटे आठरात्रिसुधि जप करवो. तथा,

अष्टरात्रे व्यतिक्रांते, कमलस्यास्यवर्तिनः ॥
निरूपयति पत्रेषु, वर्णानेतानतुक्रमं ॥ ७० ॥

अर्थः— एवी रीतें आठरात्रि गयाबाद आ कमलनां पत्रोमां वर्तता एवा आ अक्षरोने अनुक्रमें निरूपण करे छे.

भीषणाः सिंहमातंग, रक्षःप्रभृतयः क्षणात् ॥
शाम्यंति व्यंतराश्चान्ये, ध्यानप्रत्यूहहेतवः ॥ ७१ ॥

अर्थः— ध्यानमां विघ्नभूत एवा भयंकर, सिंह, हाथी, राक्षस, व्यंतर तथा बीजा प्राणीओ पण क्षणवारमां शांत थाय छे.

मंत्रः प्रणवपूर्वोऽयं, फलमैहिकमिच्छुभिः ॥
ध्येयः प्रणवहीनस्तु, निर्वाणपदकांक्षिभिः ॥ ७२ ॥

अर्थः— आ लोकसंबंधि फलने इछनाराओये प्रणवपूर्वक आ मंत्रने ध्याववो, अने मोक्षसुख इछनाराओये प्रणवरहित ध्याववो. तथा,

चिंतयेदन्यमप्येनं, मंत्रं कर्मौघशांतये ॥
स्मरेत् सत्वोपकाराय, विद्यां तां पापभक्षिणीं ॥ ७३ ॥

अर्थः— कर्मोना समूहनी शांतिमाटे बीजा पण आ मंत्रने चिंतववो, तथा प्राणीओना उपकारमाटे पापोने भक्षण करनारी ते विद्याने स्मरवी.

प्रसीदति मनः सद्यः, पापकालुष्यमुज्झति ॥
प्रभावातिशयादस्या, ज्ञानदीपः प्रकाशते ॥ ७४ ॥

अर्थः— आना प्रभावातिशयथी मन तुरत प्रसादने पामे छे, तथा पापरूपी कालुष्यने तजे छे, अने ज्ञानरूपी दीवो प्रकाशने पामे छे.

ज्ञानवद्भिः समाम्नातं, वज्रसाम्यादिभिः स्फुटं ॥
विद्यावादात्समुद्धृत्य, बीजभूतं शिवश्रियः ॥ ७५ ॥
जन्मदावहुताशस्य, प्रशांतिनववारिदं ॥
गुरूपदेशाद्विज्ञाय, सिद्धचक्रं विचिंतयेत् ॥ ७६ ॥

अर्थः—'वज्रस्वामी आदिक ज्ञानिओयें विद्यावादमांथी उधरीने मोक्षलक्ष्मीनां बीजरूप प्रगटरीतें कहेलुं, तथा जन्मरूपी दावानलने शांत क-

रवामां नवा वरसाद सरखुं, सिद्धचक्र गुरुना उपदेशथी जाणीने चिंतववुं.

नाभिपद्मे स्थितं ध्याये, दकारं विश्वतोमुखं ॥
सिवर्णं मस्तकांभोजे, अकारं वदनांबुजे ॥ ७७ ॥

उकारं हृदयांभोजे, साकारं कंठपंकजे ॥
सर्वकल्याणकारीणि, बीजान्यन्यान्यपि स्मरेत् ॥ ७८ ॥

अर्थः– चारे बाजुथी मुखवाला एवा दकारने नाभिपद्ममां रहेलो ध्याववो, तथा सि अक्षरने मस्तकरूपी कमलपर रहेलो ध्याववो, अने मुखरूपी कमलपर आकारने ध्याववो, हृदयरूपी कमलपर उकारने तथा कंठरूपी कमलपर साकारने ध्याववो, अने एवी रीतें सर्व कल्याणनां बीजां पण बीजोने ध्याववां. तथा,

श्रुतसिंधुसमुद्भूतं, अन्यदप्यक्षरं पदं ॥
अशेषं ध्यायमानं स्या, न्निर्वाणपदसिद्धये ॥ ७९ ॥

अर्थः– सिद्धांतो रूपी समुद्रथी उत्पन्न थयेला, एवा बीजा पण सघला अक्षर पदने ध्याववाथी ते मोक्षपदनी सिद्धिमाटे थायछे. केमके,

वीतरागो भवेद्योगी, यत्किंचिदपि चिंतयेत् ॥
तदेव ध्यानमाम्नात, मन्यग्रंथेषु विस्तरात् ॥ ८० ॥

अर्थः– माटे उपरकहेलां पदोमांथी जे कंइ योगी चिंतवे, तेथी वितराग थाय, अने ते ध्यान अन्य ग्रंथोमां विस्तारथी आपेलुं छे.

एवं च मंत्रविद्यानां, वर्णेषु च पदेषु च ॥
विश्लेषः क्रमशः कुर्या, ल्लक्ष्मीभावोपपत्तये ॥ ८१ ॥

अर्थः– एवी रीतें मंत्र विद्यानां अक्षरो अने पदोमां अनुक्रमें लक्ष्मीभावनी प्राप्तिमाटे विश्लेष करवो.

एवी रीतें परमार्हत श्रीकुमारपाल राजाथी सेवाएला एवा आचार्य महाराज श्रीहेमचंद्रजीए बनावेला अध्यात्मोपनिषद् नामना, तथा थएल छे, पट्टबंध जेनो एवा आ योगशास्त्रमां पोतेज करेलुं आठमा, प्रकाशनुं विवरण संपूर्ण थयुं. श्रीरस्तु.

॥ श्री जिनाय नमः ॥

नवमः प्रकाशः प्रारभ्यते.

हवे सात श्लोकोयें करीने रूपस्थ ध्येयनुं स्वरूप कहे छे.

मोक्षश्रीसंमुखीनस्य, विध्वस्ताखिलकर्मणः ॥
चतुर्मुखस्य निःशेष, भुवनाभयदायिनः ॥ १ ॥
इंदुमंडलसंकाश, छत्रित्रितयशालिनः ॥
लसद्भामंडलाभोग, विडंबितविवस्वतः ॥ २ ॥
दिव्यदुंदुभिनिर्घोष, गीतसाम्राज्यसंपदः ॥
रणद्विरेफझंकार, मुखराशोकशोभिनः ॥ ३ ॥
सिंहासननिषण्णस्य, वीज्यमानस्य चामरैः ॥
सुरासुरशिरोरत्न, दीप्तपादनखद्युतेः ॥ ४ ॥
दिव्यपुष्पोत्कराकीर्णा, संकीर्णपरिषद्भुवः ॥
उत्कंधरैर्मृगकुलैः, पीयमानकलध्वनेः ॥ ५ ॥
शांतवैरेभसिंहादि, समुपासितसंनिधेः ॥
प्रभोः समवसरण, स्थितस्य परमेष्ठिनः ॥ ६ ॥
सर्वातिशययुक्तस्य, केवलज्ञानभास्वतः ॥
अर्हतोरूपमालंब्य, ध्यानं रूपस्थमुच्यते ॥ ७ ॥

॥ सप्तभिः कुलकं ॥

अर्थः— मोक्षनी लक्ष्मीनी सन्मुख थएला, तथा नाश करेल छे, सघलां कर्मो जेमणे एवा, तथा चार मुखोवाला, तथा सघला भुवनोने अभयदान देनारा, तथा चंद्रमंडल सरखा त्रण छत्रोथी शोभता, तथा उल्लसायमान थता भामंडलथी तुलना करेल छे, सूर्यनी पण जेमणे एवा, तथा दिव्य दुंदुभिना शब्दो सहित उत्तम छे गीतनी संपदा जेमनी एवा, तथा झंकार करता एवा भमराउना शब्दथी मुखरित (शब्दायमान) थएल छे, अशोक वृक्ष जेमनुं एवा. तथा सिंहासनपर बेठेला, अने चामरोथी विंजाता एवा, तथा सुरासुरना मुकुटोथी कांति-

युक्त थएल छे; नखोनी शोजा जेमनी एवा, तथा दिव्य पुष्पोना समूहोथी जराइ गयेल छे, परिषदा जेमनी एवा, तथा ऊंची डोकीवालां हरणीयांथी पीवायेलो छे, मधुर शब्द जेमनो एवा, तथा शांत थएल छे, परस्पर वैर जेमनां, एवा हाथी सिंह विगेरेथी उपाश्रित थएल छे, नजदिकनो जाग जेमनो एवा, तथा समवसरणमां बेठेला, तथा सघला अतिशयोयें करीने युक्त एवा, तथा केवल ज्ञानथी युक्त एवा, परमात्मा अरिहंत प्रजुनां आलंबनथी जे ध्यान धरवुं ते रूपस्थ ध्यान कहेवाय छे.

हवे त्रण श्लोकोयें करीने प्रकारांतरथी रूपस्थ ध्येयनुं स्वरूप कहे छे.

रागद्वेषमहामोह, विकारैरकलंकितं ॥
शांतं कांतं मनोहारि, सर्वलक्षणलक्षितं ॥ ८ ॥
तीर्थैकैरपरिज्ञात, योगमुद्रामनोरमं ॥
अक्ष्णोरमंदमानंदं, निःस्यंदं ददद्भुतं ॥ ९ ॥
जिनेंद्रप्रतिमारूप, मपि निर्मलमानसः ॥
निर्निमेषदृशा ध्यायन्, रूपस्थध्यानवान् जवेत् ॥ १० ॥

॥ त्रिजिर्विशेषकं ॥

अर्थः— राग. द्वेष अने मोहना विकारथी कलंकरहित थएलुं, शांत, तेजस्वी, मनोहर, सर्व लक्षणें करीने युक्त, अन्य तीर्थियोयें नथी जाणेली एवी योगमुद्रायें करीने मनोहर, आंखोने अत्यंत आनंद, आपनारुं, एवुं जिनेंद्रनी प्रतिमारूप ध्यानने निर्मल मनथी अने अनिमेष दृष्टिथी ध्यावतां थकां, रूपस्थ ध्यानवालो प्राणी थाय छे. तथा,

योगी चाभ्यासयोगेन, तन्मयत्वमुपागतः ॥
सर्वज्ञीजूतमात्मान, मवलोकयति स्फुटं ॥ ११ ॥

अर्थः— अभ्यासें करीने तन्मयपणाने प्राप्त थएलो योगी पोताने सर्वज्ञरूप थएलो प्रगटरीतें जुए छे- तथा,

सर्वज्ञोजगवान् योय, महमेवास्मिसध्रुवं ॥
एवं तन्मयतां यातः, सर्ववेदीति मन्यते ॥ १२ ॥

अर्थः— जे सर्वज्ञ ज्ञगवान् डे, तेज हुं पण खरेखर हुं, एवी रीतें तन्मयपणाने प्राप्त थएलो योगी सर्वज्ञ मनाय डे.

वीतरागो विमुच्येत, वीतरागं विचिंतयन् ॥
रागिणं तु समालंब्य, रागी स्यात् क्षोज्ञणादिकृत् ॥ १३ ॥

अर्थः— वीतरागने चिंतवता थका, योगी मोक्ष पामे डे, अने रागीना आलंबनथी, क्षोज्ञ आदिकने करनार एवो पोते पण रागी थाय डे. केम के,

येन येन हि ज्ञावेन, युज्यते यंत्रवाहकः ॥
तेन तन्मयतां याति, विश्वरूपोमणिर्यथा ॥ १४ ॥

अर्थः— जेम मणि विश्वरूप थाय डे, (अर्थात् स्फटिकमणि जेवुं पुष्प पासे होय तेवो ज्ञासे डे) तेम जे जे ज्ञावथी यंत्र जोडनार जोडाय डे, तेथी ते तन्मयपणाने प्राप्त थाय डे. माटे,

नासद्ध्यानानि सेव्यानि, कौतुकेनापि किंत्विह ॥
स्वनाशायैव जायंते, सेव्यमानानि तानि यत् ॥ १५ ॥

अर्थः— कौतुकें करीने पण आ जगत्मां डुर्ध्यान ध्याववां नही, केम के, तेम कर्याथी ते ध्यानो पोतानाज नाशमाटे थाय डे. केम के,

सिध्ध्यंति सिध्ध्यः सर्वाः, स्वयं मोक्षावलंबिनां ॥
संदिग्धा सिध्धिरन्येषां, स्वार्थभ्रंशस्तु निश्चितः ॥ १६ ॥

अर्थः— मोक्षना अवलंबनवालाउने सघली सिध्धिउ पोतानी मेलेज सिद्ध थाय डे, अने बीजाउने तो सिध्धि थवी संदेहवाली डे, पण स्वार्थज्रंश तो निश्चित डे.

एवी रीतें परमार्हत श्री कुमारपाल राजाथी सेवाएला एवा आचार्य महाराजश्री हेमचंद्रजीये रचेला अध्यात्मोपनिषद् नामना, तथा थयेल डे द्वादश पट्टबंध जेना एवा योगशास्त्रमां पोतेज करेलुं नवमा प्रकाशनुं विवरण संपूर्ण थयुं. श्री रस्तु.

श्री जिनाय नमः

॥ दशमः प्रकाशः प्रारभ्यते ॥

हवे रूपातीत ध्येयनुं स्वरूप कहे छे.

अमूर्त्तस्य चिदानंद, रूपस्य परमात्मनः ॥
निरंजनस्य सिद्धस्य, ध्यानं स्याद्रूपवर्जितं ॥ १ ॥

अर्थः– अमूर्त्त, तथा चिदानंदरूप तथा निरंजन एवा परमात्मा सिद्धनुं ध्यान रूपरहित थाय.

इत्यजस्रं स्मरन् योगी, तत्स्वरूपावलंबनः ॥
तन्मयत्वमवाप्नोति, ग्राह्यग्राहकवर्जितं ॥ २ ॥

अर्थः– एवी रीतें सिद्धना स्वरूपने अवलंबीने हमेशां तेनुं स्मरण करतो थको योगी, ग्राह्य तथा ग्राहकें करीने वर्जित एवा तन्मयपणाने पामेछे.

अनन्यशरणीभूय, सतस्मिन् लीयते तथा ॥
ध्यातृध्यानोभयाभावे. ध्येयेनैक्यं यथा व्रजेत् ॥ ३ ॥

अर्थः– बीजा कोइनुं पण शरणुं लीधा विना, ते, तेनेविषे तेवी रीतें लीन थाय छे, के जेथी ध्यानार अने ध्यान बन्नेना अभावथी ध्येयनी साथे ऐक्यपणाने पामे छे. तथा,

सोऽयंसमरसीभाव, स्तदेकीकरणं मतं ॥
आत्मा यदपृथक्त्वेन, लीयते परमात्मनि ॥ ४ ॥

अर्थः– तेज ते समरसी भाव छे, एवी रीतनी तुलना जे करवी, तेनुं नाम एकीकरण, अने ते, आत्मासाथे अभिन्नभावें करीने परमात्मा प्रत्ये लीन थाय छे.

अलक्ष्यं लक्ष्यसंबंधात्, स्थूलात् सूक्ष्मं विचिंतयेत् ॥
सालंबाच्च निरालंबं, तत्ववित्तत्वमंजसा ॥ ५ ॥

अर्थः– लक्ष्यना संबंधथी अलक्ष्य एवुं सूक्ष्म स्थूलथी चिंतववुं; अने सालंबनथी तत्व जाणनारें तुरत निरालंब तत्व चिंतववुं.

एवं चतुर्विधध्याना, मृतमग्नं मुनेर्मनः ॥
साक्षात्कृतजगत्तत्वं, विधत्ते शुद्धिमात्मनः ॥ ६ ॥

अर्थः— एवी रीतें चार प्रकारनां ध्यानरूपी अमृतमां मग्न थयेलुं मुनिनुं मन, जगतनां तत्वने साक्षात् करीने आत्मशुद्धि धारण करे छे.

हवे प्रकारांतरथी चतुर्विध ध्येयनुं स्वरूप कहे छे.

आज्ञापायविपाकानां, संस्थानस्य च चिंतनात् ॥
इत्थं वा ध्येयभेदेन, धर्मध्यानं चतुर्विधं ॥ ७ ॥

अर्थः— आज्ञा, अपाय, विपाक, अने संस्थान एवी रीतनां चार प्रकारनां ध्येयस्थ पण धर्मध्यान थइ शके छे.

हवे आज्ञा ध्याननुं स्वरूप कहे छे.

आज्ञां यत्र पुरस्कृत्य, सर्वज्ञानामबाधितां ॥
तत्वतश्चिंतयेदर्थां, स्तदाज्ञाध्यानमुच्यते ॥ ८ ॥

अर्थः— सर्वज्ञोनां आज्ञा वचनने, परस्पर बाधारहित अगाडी करीने, अर्थ सहित तत्वोथी जे चिंतववां, तेनुं नाम आज्ञाध्यान कहेवायछे.

सर्वज्ञवचनं सूक्ष्मं, हन्यते यन्न हेतुभिः ॥
तद्रूपं च समादेयं, न मृषाभाषिणो जिनाः ॥ ९ ॥

अर्थः— सर्वज्ञनुं जे सूक्ष्मवचन हेतुउथी हणातुं नथी, तेउने ते स्वरूपें विचारवुं केम के, जिनेश्वरो मृषा बोलनारा होता नथी.

हवे अपायध्याननुं स्वरूप कहे छे.

रागद्वेषकषायाद्यै, र्जायमानान् विचिंतयेत् ॥
यत्रापायांस्तदपाय, विचयध्यानमिष्यते ॥ १० ॥

अर्थः— राग द्वेष अने कषाय आदिकोथी उत्पन्न थता अपायोने ज्यां चिंतववा, तेने अपायध्यान जाणवुं. तथा,

ऐहिकामुष्मिकापाय, परिहारपरायणः ॥
ततः प्रतिनिवर्त्तेत, समंतात्पापकर्मणः ॥ ११ ॥

अर्थः— आ लोक अने परलोकसंबंधि अपायोने दूर करवामां तत्पर थइने चारे कोरथी पापकार्योथी पाछा हठवुं.

हवे विपाकविचयनुं स्वरूप कहे छे.

प्रतिक्षणसमुद्भूतो, यत्र कर्मफलोदयः ॥
चिंत्यते चित्ररूपः स, विपाकविचयोदयः ॥ १२ ॥

अर्थः– क्षण क्षणप्रत्ये उत्पन्न थयेलो, कर्मोनां फलोनो विचित्र उदय जेमां चिंतवाय, ते विपाकध्यान जाणवुं. तथा,

या संपदार्हतोया च, विपदानारकात्मनः ॥
एकातपत्रता तत्र, पुण्यापुण्यस्य कर्मणः ॥ १३ ॥

अर्थः– जेक अरिहंतसुधिनी संपदा, अने जेक नारकीउ सुधिनी विपदा, तेमां सघलामां पुण्य अने पापनुंज प्राबल्य छे.

हवे संस्थान ध्याननुं स्वरूप कहे छे.

अनाद्यंतस्य लोकस्य, स्थित्युत्पत्तिव्ययात्मनः ॥
आकृतिं चिंतयेद्यत्र, संस्थानविचयः सतु ॥ १४ ॥

अर्थः– अनादि अने अनंत, तथा स्थिति, उत्पत्ति, अने नाशना स्वभाववाला एवा लाकनी आकृति ज्यां चिंतवाय, तेनुं नाम संस्थान ध्यान जाणवुं.

हवे ते लोकध्याननुं फल कहे छे.

नानाद्रव्यगतानंत, पर्यायपरिवर्त्तनात् ॥
सदासक्तं मनोनैव, रागाद्याकुलतां व्रजेत् ॥ १५ ॥

अर्थः– नाना प्रकारनां द्रव्योमां प्राप्त थयेला अनंता पर्यायोनां परिवर्तनथी तेमां रक्त थयेलुं मन राग आदिकथी आकुलताने प्राप्त न थाय.

हवे धर्मध्याननुंज विशेष स्वरूप कहे छे.

धर्मध्याने भवेद्भावः, क्षायोपशमिकादिकः ॥
लेश्याः क्रमविशुद्धाः स्युः, पीतपद्मसिताः पुनः ॥ १६ ॥

अर्थः– धर्मध्यान होते छते, क्षायोपशमिक आदिक भाव थाय, अने अनुक्रमें विशुद्ध एवी, पीत, पद्म, अने सित एवी लेश्याउ पण थायछे.

हवे ते चतुर्विध धर्मध्याननुं फल कहे छे.

अस्मिन्नितांतवैराग्य, व्यतिषंगतरंगिते ॥
जायते देहिनां सौख्यं, स्वसंवेद्यमतींद्रियं ॥ १७ ॥

अर्थः— अत्यंत वैराग्यना मेलापथी तरंगित थयेला ते धर्मध्यानथी प्राणीओने इंद्रियोने अगोचर एवुं आत्मसंवेद्य सुख थाय छे.

हवे चार श्लोकें करीने तेनुं आ लोकसंबंधि सुख कहे छे.

त्यक्तसंगास्तनुं त्यक्त्वा, धर्मध्यानेन योगिनः ॥
ग्रैवेयकादिस्वर्गेषु, भवंति त्रिदशोत्तमाः ॥ १८ ॥
महामहिमसौभाग्यं, शरच्चंद्रनिभप्रभं ॥
प्राप्नुवंति वपुस्तत्र, स्रग्भूषांबरभूषितं ॥ १९ ॥
विशिष्टवीर्यबोधाढ्यं, कामार्त्तिज्वरवर्जितं ॥
निरंतरायं सेवंते, सुखं चानुपमं चिरं ॥ २० ॥
इच्छासंपन्नसर्वार्थे, मनोहारि सुखामृतं ॥
निर्विघ्नमुपभुंजाना, गतं जन्म न जानते ॥ २१ ॥

अर्थः— तजेल छे संग जेओये एवा योगीओ धर्मध्यानथी शरीर तजीने ग्रैवेयक आदिक स्वर्गोनेविषे उत्तम देवो थाय छे; तथा त्यां उत्तम महिमावाला, अने शरद् ऋतुना चंद्र सरखी कांतिवाला, तथा पुष्पमाला, आभूषण अने वस्त्रोथी भूषित थयेलां एवां शरीरने पामे छे; वली त्यां विशिष्ट प्रकारनां वीर्यअने बोधवालां, तथा कामनी पीडायें करीने वर्जित, अंतरायरहित, तथा अनुपम एवां सुखने मेलवे छे; वली त्यां पोतानी इच्छाप्रमाणे उत्तम एवा सुखरूपी अमृतने विघ्नरहित भोगवता थका, पोताना आगला भवने जाणता पण नथी.

दिव्यभोगावसाने च, च्युत्वा त्रिदिवतस्ततः ॥
उत्तमेन शरीरेण, वतरंति महीतले ॥ २२ ॥
दिव्यवंशे समुत्पन्ना, नित्योत्सवमनोरमान् ॥
भुंजते विविधान् भोगा, नखंडितमनोरथाः ॥ २३ ॥
ततोविवेकमाश्रित्य, विरज्याशेषभोगतः ॥
ध्यानेन ध्वस्तकर्माणः, प्रयांति पदमव्ययं ॥ २४ ॥

॥ त्रिभिर्विशेषकं ॥

अर्थः– एवी रीतें देवसंबंधि जोगो जोगव्याबाद ते देवलोकथी च्यवीने, उत्तम शरीरें करीने पृथ्वीतलपर अवतरे छे; त्यां उत्तमवंशमां उत्पन्न थइने, हमेशां उत्सवें करीने मनोहर एवा विविध प्रकारना जोगोने अखंडित मनोरथोवाला थया थका जोगवे छे; पछी त्यां विवेक लावीने तथा सघला जोगोथी विरक्त थइने,धर्म अने शुक्लध्यानथी कर्मोनो नाश करीने छेवटे मोक्ष जाय छे.

एवी रीतें परम आर्हत श्री कुमारपालराजाथी सेवायेला, एवा आचार्य महाराजश्रीहेमचंद्रजीयें रचेला अध्यात्मोपनिषद् नामना, तथा थयेल छे, पट्टबंध जेनो एवाश्रीयोगशास्त्रमां पोतेज करेलुं दशमा प्रकाशनुं विवरण समाप्त थयुं. श्रीरस्तु.

श्री जिनाय नमः

एकादशः प्रकाशः प्रारभ्यते.

हवे धर्मध्यानने उपसंहरता थका शुक्लध्याननी स्तुति करे छे.

स्वर्गापवर्गहेतु, धर्मध्यानमिति कीर्तितं यावत्॥
अपवर्गैकनिदानं, शुक्लमतः कीर्त्यते ध्यानम्॥ १ ॥

अर्थः– स्वर्ग अने मोक्ष बन्नेनां कारणरूप एवुं धर्मध्यान पेहेलां कह्युं, हवे मोक्षनांज हेतुभूत एवा शुक्लध्याननुं स्वरूप कहे छे.

हवे शुक्लध्यानना अधिकारीने जणावे छे.

इदमादिमसंहनना, एवालं पूर्ववेदिनः कर्त्तुं॥
स्थिरतां न याति चित्तं, कथमपि यत्स्वल्पसत्वानां॥ २ ॥

अर्थः– वज्र ऋषभनाराच संघयण वाला, अने पूर्वधरोज आ ध्यान धरवाने समर्थ थाय छे, केम के, अल्प सत्विउनुं चित्त स्थिरपणाने पामतुं नथी.

धत्ते न खलु स्वास्थ्यं, व्याकुलितं तनुमतां मनोविषयैः॥
शुक्लध्याने तस्मा, न्नास्त्यधिकारोऽल्पसाराणां॥ ३ ॥

अर्थः– विषयोथी व्याकुलताने पामेलुं एवुं प्राणीउनुं मन खरेखर स्वस्थताने धारण करतुं नथी अने तेथी अल्पसत्वीउने शुक्लध्याननो अधिकार नथी. तथा,

अनवच्छित्याम्नायः, समागतोऽस्येति कीर्त्यतेऽस्माभिः ॥
दुष्करमप्याधुनिकैः, शुक्लध्यानं यथाशास्त्रं ॥४॥

अर्थः—जो के आज कालनां प्राणिउंने शुक्लध्यान थवुं मुश्कील छे,तो पणप्रस्तावना भेदने अटकाववा सारुं शास्त्रप्रमाणे अमोए पणअत्रेतेनुंवर्णनकरेलछे

हवे शुक्लध्यानना भेदो कहे छे.

ज्ञेयं नानात्वश्रुत, विचारमैक्यं च श्रुताविचारं च ॥
सूक्ष्मक्रियमुत्सन्न, क्रियमितिभेदैश्चतुर्धा तत् ॥ ५ ॥

अर्थः— नाना प्रकारना सिद्धांतोना विचारनुं, पहेलुं; अने श्रुता विचार नामें बीजुं ऐक्य, त्रीजुं सूक्ष्मक्रिय, अने चोथुं उत्सन्नक्रिय, एम चारप्रकारनुं शुक्लध्यान जाणवुं.

तेउमांथी हवे पेहेला भेदनुं वर्णन करेछे.

एकत्रपर्यायाणां, विविधनयानुसरणं श्रुतद्रव्ये ॥
अर्थव्यंजनयोगां, तरेषु संक्रमणयुक्तमाद्यं तत् ॥ ६ ॥

अर्थः— श्रुत द्रव्यमां पर्यायोनुं एकत्ररीतें विविध प्रकारना नयोनुं अनुसरण, अने ते पण अर्थ, व्यंजन अने योगांतरोमां संक्रमणें करीने युक्त, ते पेहेलुं शुक्लध्यान जाणवुं.

हवे बीजा भेदनुं स्वरूप कहे छे.

एवं श्रुतानुसारा, देकत्ववितर्कमेकपर्याये ॥
अर्थव्यंजनयोगां, तरेषु संक्रमणमन्यत्तु ॥ ७ ॥

अर्थः— एवी रीतें श्रुतने अनुसारें एक पर्यायमां एकत्वपणुं, अर्थ, व्यंजने अने योगांतरोमां जे संक्रमण ते बीजुं शुक्लध्यान जाणवुं.

हवे त्रीजा भेदनुं स्वरूप कहे छे.

निर्वाणगमनसमये, केवलिनोदरनिरुद्धयोगस्य ॥
सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति, तृतीयं कीर्त्तितं शुक्लं ॥ ८ ॥

अर्थः— मोक्षगमन वखतें, रोकेल छे मन, वचन अने बादरथी कायाना योगो जेणें एवा केवली प्रभुने श्वासोछ्वासनी सूक्ष्मक्रियावालुं अने अप्रतिपाति जे ध्यान थाय छे, तेने त्रीजुं शुक्लध्यान जाणवुं.

हवे चोथानुं स्वरूप कहे छे.

केवलिनः शैलेशी, गतस्य शैलवदकंपनीयस्य ॥
उत्सन्नक्रियमप्रति, पाति तुरीयं परमशुक्लं ॥ ए ॥

अर्थः– शैलेशी प्रत्ये प्राप्त थएला, तथा पर्वतनी पेठे निष्कंप एवा केवलीने उत्सन्न क्रियावालुं, अने अप्रतिपाति एवुं जे ध्यान थाय छे, तेने उत्कृष्टुं चोथुं शुक्लध्यान जाणवुं. तथा,

एकत्र योगनाजा, माद्यं, स्यादपरमेकयोगानां ॥
तनुयोगिनां तृतीयं, निर्योगाणां चतुर्थं तु ॥ १० ॥

अर्थः– एकत्र योगीने पेहेलुं, एकयोगीने बीजुं, थोडा योगीने त्रीजुं, अने निर्योगीने चोथुं ध्यान थाय छे.

छद्मस्थितस्य यद्वत्, मनः स्थिरं ध्यानमुच्यते तज्ज्ञैः ॥
निश्चलनंगं तद्वत्, केवलिनां कीर्तितं ध्यानं ॥ ११ ॥

अर्थः– ध्यानना जाणनाराउए जेम, छद्मस्थनां स्थिर मनने ध्यान कहेलुं छे, तेम केवलीउनां निश्चल शरीरने पण ध्यानरूप कहेलुं छे. तथा,

पूर्वाभ्यासाज्जीवो, पयोगतः कर्मजरणहेतोर्वा ॥
शब्दार्थबहुत्वाद्वा, जिनवचनाद्वाप्ययोगिनोध्यानं ॥ १२ ॥

अर्थः– पूर्वना अभ्यासथी जीवना उपयोगथी, अथवा कर्मोनी निर्जराना हेतुथी, अथवा शब्दार्थनी बाहुलताथी, अथवा जिनवचनथी पण अयोगीनुं ध्यान कहेवाय छे. तथा,

आद्ये श्रुतावलंबन, पूर्वे पूर्वश्रुतार्थसंबंधात् ॥
पूर्वधराणां छद्म, स्थयोगिनां प्रायशोध्याने ॥ १३ ॥

अर्थः– पेहेलां श्रुतोना अवलंबनपूर्वक पूर्वश्रुतार्थना संबंधथी प्रायः करीने पूर्वधर एवा छद्मथी योगिने ध्यानमां जोडाय छे. तथा,

सकलालंबनविरह, प्रथिते द्वे त्वंतिमे समुद्दिष्टे ॥
निर्मलकेवलदृष्टि, ज्ञानानां क्षीणदोषाणां ॥ १४ ॥

अर्थः– क्षीण थएल छे दोषो जेमना, एवा निर्मल केवलज्ञानियोने सकल आलंबनना विरहथी प्रसिद्ध एवां छेल्लां बन्ने थाय छे. तथा,

तत्र श्रुताद्गृहित्वै, कमर्थमर्थाद्व्रजेच्छब्दं ॥
शब्दात्पुनरप्यर्थं, योगाद्योगांतरं च सुधीः ॥ १५ ॥

अर्थः– त्यां श्रुतथी एक अर्थने ग्रहण करीने, ते अर्थथी शब्दप्रत्ये जाय, अने फरीने पण शब्दथी अर्थप्रत्ये जाय, अने एवी रीतें ते उत्तम बुद्धिमान् योगी एक योगथी बीजा योगमां प्राप्त थाय. तथा,

संक्रामत्यविलंबित, मर्थप्रभृतिषु यथा किल ध्यानी ॥
व्यावर्त्तते स्वयमसौ, पुनरपि तेन प्रकारेण ॥ १६ ॥

अर्थः– जेम ध्यानी माणस तुरत अर्थ आदिकमां दाखल थाय छे, तेवीज रीतें फरीने ते पोतानी मेलेज तेउमांथी व्यावर्तन करे छे. तथा,

इति नानात्वे निसिता, भ्यासः संजायते यदा योगी ॥
आविर्भूतात्मगुण, स्तदैकताया भवेद्योग्यः ॥ १७ ॥

अर्थः– एवी रीतें जुदा जुदा प्रकारोमां अभ्यासवान् योगी, प्रगट थएल छे आत्मगुण जेने एवो थयो थको, ते एकताने योग्य थाय छे.

उत्पादस्थिति भंगा, दिपर्यायाणां यदेकयोगः सन् ॥
ध्यायति पर्ययमेकं, तत्स्यादेकत्वमविचारं ॥ १८ ॥

अर्थः– उत्पाद, स्थिति, अने भंग आदिक पर्यायोनो एक योग होते छते एक पर्यायने जे ध्यावुं, तेनुं नाम एकत्व अविचारवालुं कहेवाय. तथा,

त्रिजगद्विषयं ध्याना, दणुसंस्थं धारयेत् क्रमेण मनः ॥
विषमिव सर्वांगगतं, मंत्रबलान्मांत्रिकोदंशे ॥ १९ ॥

अर्थः– जेम मंत्रवादी मंत्रना बलथी, सर्व अंगमां व्याप्त थएला झेरने दंश उपर लावे छे, तेम अनुक्रमें त्रण जगतना विषयवालुं मन ध्यानथी अणुमां लावीने धारवुं. तथा,

अपसारितेंधनभरः, शेषस्तोकेंधनोऽनलो ज्वलितः ॥
तस्मादपनीतोवा, निर्वाति यथा मनस्तद्वत् ॥ २० ॥

अर्थः– दूर करेल छे काष्टोनो समूह जेमांथी, अने बाकी थोडां काष्टोथी ज्वलायमान थतो अग्नि, जेम ठरी जाय, तेम सर्व आलंबन विनानुं मन पण शुक्लध्यानप्रत्ये प्राप्त थाय.

हवे बीजा ध्याननुं फल कहे छे,

ज्वलति ततश्च ध्यान, ज्वलने भृशमुज्वले यतींद्रस्य ॥
निखिलानि विलीयंते, क्षणमात्राद् घातिकर्माणि ॥ २१ ॥

अर्थः– ध्यानरूपी अग्नि अत्यंत आकरो बलते छते, योगींद्रनां सघलां घातिकर्मो क्षणवारमां नाश पामे छे.

हवे ते घातिकर्मो कहे छे.

ज्ञानावरणीयं दृ, ष्ट्यावरणीयं च मोहनीयं च ॥
विलयं प्रयांति सहसा, सहांतरायेण कर्माणि ॥ २२ ॥

अर्थः– ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, तथा मोहनीय कर्मो अंतराय कर्मनी साथे तुरत नाश पामे छे.

हवे घातिकर्मोनो क्षय होते छते फल कहे छे.

संप्राप्य केवलज्ञा, न दर्शने दुर्लभे ततोयोगी ॥
जानाति पश्यति तथा, लोकालोकं यथावस्थं ॥ २३ ॥

अर्थः– पछी योगी दुर्लभ एवां केवलज्ञान अने केवलदर्शन पामीने, लोकालोकने यथावस्थित जाणे छे, अने जुए छे.

हवे केवलज्ञानी तीर्थंकरना अतिशयोने चोवीश आर्याउयें करीने कहे छे.

देवस्तदा स भगवान्, सर्वज्ञः सर्वदश्र्यनंतगुणः ॥
विहरत्यवनीवलयं, सुरासुरनरोरगैः प्रणतः ॥ २४ ॥

अर्थः– ते वखतें सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, अने अनंत गुणवाला, ते प्रभु, सुर, असुर अने भुवनपतिउथी नमाया थका पृथ्वीतलपर विहार करे छे.

वाग्ज्योत्स्नयाऽखिलान्यपि, विबोधयंति भव्यजंतुकुमुदानि ॥
उन्मूलयति क्षणतो, मिथ्यात्वं द्रव्यभावगतं ॥ २५ ॥

अर्थः– वाणीरूपी चांदनीयें करीने सघला भव्य प्राणियोरूपी कुमुदाने ते विकस्वर करे छे, तथा क्षणवारमां द्रव्य अने भाव बन्नेथी मिथ्यात्वने निर्मूल करे छे. तथा,

तन्नामग्रहमात्रा, दनादिसंसारसंभवं दुःखं ॥
भव्यात्मनामशेषं, परिक्षयं याति सहसैव ॥ २६ ॥

अर्थः— तेनां फक्त नामग्रहणथीज जव्य प्राणिर्जनुं अनादिसंसारथी उत्पन्न थएलुं सघलुं डुःख तुरतज नाश पामे ले. तथा,

अपि कोटीशतसंख्याः, समुपासितुमागताः सुरनराद्याः ॥
क्षेत्रे योजनमात्रे, मांति तदास्य प्रजावेण ॥ २७ ॥

अर्थः— सेंकडो क्रोडोगमे उपासना करवाने आवेला सुरमनुष्य आदिको फक्त योजनमात्रजूमिमां पण तेमना प्रजावथी माइ शके ले. तथा,

त्रिदिवौकसो मनुष्या, स्तिर्यंचोऽन्येप्यमुष्य बुध्यंते ॥
निजनिजजाषानुगतं, वचनं धर्मावबोधकरं ॥ २८ ॥

अर्थः— देव, मनुष्य, तिर्यंच, अने बीजार्ज पण, धर्मनो बोध करनारा प्रजुनां वचनने पोतपोतानी जाषामां समजी शके ले.

आयोजनशतमुग्रा, रोगाः शाम्यंति तत्प्रजावेण ॥
उदयिनि शीतमरीचा, विव तापरुजः क्षितेः परितः ॥२९॥

अर्थः— वली ते प्रजुना प्रजावथी पृथ्वीमां फरता सो योजन सुधिमां, चंद्र उग्ये बते जेम तापनी पीडा तेम जयंकर रोगो नाश पामे ले,

मारीतिदुर्जिक्षा, ऽतिवृष्ट्यनावृष्टिडमरवैराणि ॥
न जवंत्यस्मिन् विहरति, सहस्ररश्मौ तमांसीव ॥ ३० ॥

अर्थः— मरकी इति, डुर्जिक्ष, (डुकाल) अतिवृष्टि, अनावृष्टि, जय, अने वैर, आ प्रजु विहार करते बते, सूर्यनां बतां जेम अंधकार तेम तेर्ज पण होतां नथी. तथा,

मार्तंडमंडलश्री, विडंबि जामंडलं विजोः परितः ॥
आविर्भवत्यनुवपुः, प्रकाशयत् सर्वतोऽपि दिशः ॥ ३१ ॥

अर्थः— सूर्यनां मंडलनी शोजाने धारण करतुं, तथा चारे बाजुर्जथी दिशार्जने प्रकाशित करतुं, एवुं प्रजुनी आसपासनुं जामंडल शरीरप्रत्ये प्रगट थाय ले. तथा.

संचारयंति विकचा, न्यनुपादन्यासमाशु कमलानि ॥
जगवति विहरति तस्मिन्, कल्याणीजक्तयोदेवाः ॥ ३२ ॥

अर्थः— वली ते प्रजु विहार करते बते, उत्तम जक्तिमंत देवो, पगले

पगले तुरत विकस्वर थयेलां (सुवर्णनां) कमलोनो संचार करे छे. तथा,

अनुकूलो वाति मरुत्, प्रदक्षिणं यांत्यमुष्यशकुनाश्च ॥
तरवोऽपि नमंति नवं, त्यधोमुखाः कंटकाश्च तदा ॥ ३३ ॥

अर्थः– पवन पण अनुकूल वाय छे, तथा पक्षिओ तेमने प्रदक्षिणा करे छे, वृक्षो पण नमे छे, अने कांटाओ पण नीचां मुखवाला थाय छे. तथा,

आरक्तपल्लवोशो, कपादपः स्मेरकुसुमगंधाढ्यः ॥
प्रकृतस्तुतिरिवमधुकर, विरुतैर्विलसत्युपरि तस्य ॥ ३४ ॥

अर्थः– लाल पत्रोवालुं, तथा प्रफुल्लितथएलां पुष्पोना सुगंधवालुं, अने भमराओना शब्दोथी जाणे स्तुति करतुं एवुं अशोकवृक्ष प्रभुनापर विलसी रहे छे. तथा,

षडपि समकालमृतवो,, भगवंतं ते तदोपतिष्ठंते ॥
स्मरसाहायककरणे, प्रायश्चित्तंग्रहीतुमिव ॥ ३५ ॥

अर्थः– वली ते वखते छए ऋतुओ एकी वखतें, कामदेवने साहाय करवाथी जाणे प्रायश्चित्त लेवामाटेज होय नहीं, तेम प्रभुनी पासे आवे छे. तथा,

अस्य पुरस्तान्निनदन्, विजृंभते दुंदुभिर्नभसि तारं ॥
कुर्वाणो निर्वाण, प्रयाणकल्याणमिव सद्यः ॥ ३६ ॥

अर्थः– जाणे मोक्षप्रयाणनुं कल्याणक करतो होय नहीं, तेम तेमनी पासे शब्द करतो एवो मनोहर दुंदुभि आकाशमां तुरत प्रगट थाय छे.

पंचापि चेंद्रियार्थाः, क्षणान्मनोज्ञीभवंति तदुपांते ॥
कोवा न गुणोत्कर्षं, सविधौ महतामवाप्नोति ॥ ३७ ॥

अर्थः– तेमनी पासे पांचे इंद्रियोना अर्थो क्षणवारमां मनोहर थाय-छे, केमके मोटानी समीपें कोण गुणोत्कर्षने पामतुं नथी? तथा,

अस्य नखारोमाणि च, वर्धिष्णून्यपि नहि प्रवर्धंते ॥
भवशतसंचितकर्म, छेदं दृष्ट्वैव भीतानि ॥ ३८ ॥

अर्थः– सेंकडो भवोमां संचित करेलां कर्मोनो छेद जोइने जाणे डरे-

लांज होय नहीं, तेम वधवानां स्वभाववाळां पण तेमनां नख अने रोम वृद्धि पामतां नथी. तथा,

शमयंति तदभ्यर्णे, रजांसि गंधजलवृष्टिभिर्देवाः ॥
उन्निद्रकुसुमवृष्टिभि, रशेषतः सुरभयंति भुवं ॥ ३९ ॥

अर्थः— वळी तेनी पासें देवो सुगंधि जलनी वृष्टियी धूलने शांत करे-छे, तथा प्रफुल्लित एवां पुष्पोनी वृष्टियी पृथ्वीने पण सुगंधित करे छे. तथा,

छत्रत्रयीपवित्रा, विभोरुपरि भक्तितस्त्रिदशराजैः ॥
गंगाश्रोतस्त्रितयी, व धार्यते मंडलीकृत्य ॥ ४० ॥

अर्थः— वळी प्रभुपर इंद्रो भक्तियी पवित्र एवां त्रण छत्रो, गंगा नदी-ना त्रण झरा सरखां मंडलरूप करीने धरे छे. तथा,

अयमेकएव नः प्रभु, रित्याख्यातुं बिडौजसोन्नमितः ॥
अंगुलिदंडइवोच्चै, श्चकास्ति रत्नध्वजस्तस्य ॥ ४१ ॥

अर्थः— आज एक आपणा प्रभु छे, एवुं कहेवामाटे इंद्रें जाणे अंगु-लिदंड उंचो कर्यो होय नहीं, तेम प्रभुनो रत्नध्वज शोभे छे. तथा,

अस्य शरदिंदुदीधिति, चारूणि च चामराणि धूयंते ॥
वदनारविंदसंपा, ति राजहंसभ्रमं दधति ॥ ४२ ॥

अर्थः— वळी मुखरूपी कमलपर पतन करता एवा राजहंसना भ्रमने धारण करतां, अने शरद् ऋतुना चंद्रनी कांतिसरखां मनोहर एवां चाम-रो प्रभुपर वीझाय छे. तथा,

प्राकारास्त्रयउच्चै, र्विभांति समवसरणस्थितस्यास्य ॥
कृतविग्रहाणि सम्यक्, चारित्रज्ञानदर्शनानीव ॥ ४३ ॥

अर्थः— शरीरधारी एवां सम्यग्ज्ञान, दर्शन अने चारित्रोज जाणे होय नही, एवा समवसरणमां रहेला आ प्रभुना त्रण गढो उंचे प्रका-रें शोभे छे. तथा,

चतुराशावर्त्तिजनान्, युगपदिवानुग्रहीतुकामस्य ॥
चत्वारि भवंति मुखा, न्यंगानि च धर्ममुपदिशतः ॥ ४४ ॥

अर्थः— चारे दिशाउंमां रहेला मनुष्योने एकी वखतेज जाणे अनुग्र-

ह करवानी इच्छावाला होय नहीं, तेम, धर्मोपदेश वखते प्रजुनां चार मुख अने शरीरो थाय ले, तथा,

अनिवंद्यमानपादः, सुरासुरनरोरगैस्तदा जगवान् ॥
सिंहासनमधितिष्ठति, जास्वानिव पूर्वगिरिशृंगं ॥ ४५ ॥

अर्थः— वली ते वखते सुर, असुर, नर अने जुवनपतिउथी वंदायेला ले चरणो जेना एवा जगवान्, सूर्य जेम पूर्वाचलना शिखरपर तेम सिंहासनप्रत्ये रहे ले. तथा,

तेजः पुंजप्रसर, प्रकाशिताशेषदिक्रमस्य तदा ॥
त्रैलोक्यचक्रवर्त्ति, त्वचिह्नमग्रे जवति चक्रं ॥ ४६ ॥

अर्थः— तेजना समूहना विस्तारथी प्रकाशित करेल ले, सघली दिशाउनो समूह जेणे एवुं चक्र, प्रजुनी पासे ते वखतें, त्रणे लोकना चक्रवर्त्तिपणानां चिह्नरूप थाय ले. तथा,

जुवनपतिविमानपति, ज्योतिःपतिवानव्यंतराः सविधे ॥
तिष्ठंति समवसरणे, जघन्यतः कोटिपरिमाणाः ॥ ४७ ॥

अर्थः— जघन्यथी एक क्रोड जुवनपति, वैमानिक, ज्योतिषि अने वानव्यंतर देवो प्रजुना समवसरणमां रहे ले.

हवे बीजा केवलीउनुं स्वरूप कहे ले.

तीर्थंकरनामसंज्ञं, न यस्यकर्मास्ति सोऽपि योगबलात् ॥
उत्पन्नकेवलः सन्, सत्यायुषि बोधयत्युर्वीं ॥ ४८ ॥

अर्थः— जेने तीर्थंकर नामकर्म नथी, ते पण योगबलथी केवली थइने आयुष्य होते बते पृथ्वीप्रत्ये बोध आपे ले.

संपन्नकेवलज्ञा, न दर्शनोंऽतर्मुहूर्त्तशेषायुः ॥
अर्हति योगी ध्यानं, तृतीयमपि कर्त्तुमचिरेण ॥ ४९ ॥

अर्थः— प्राप्त थयेल ले, केवलज्ञान अने केवलदर्शन जेने, अने अंतर्मुहूर्त्त ले बाकी आयुष्य जेनुं एवा योगी तुरत,

आयुःकर्मसकाशा, दधिकानि स्युर्यदान्यकर्माणि ॥
तत्साम्याय तदोप, क्रमेत योगी समुद्घातं ॥ ५० ॥

अर्थः– आयुःकर्मना योगथी कदाच बीजां अधिक कर्मो होय, तेउने शमाववामाटे योगीयें समुद्घात करवुं. तथा,

दंरूकपाटे मंथा, नकं च समयत्रयेण निर्माय ॥
तुर्ये समये लोकं, निःशेषं पूरयेद् योगी ॥ ५१ ॥

अर्थः– योगी त्रण समयमां, दंड, कपाट, अने मंथानक करीने चोथे समये सघला लोकने पूरे. तथा,

समयैस्ततश्चतुर्भि, र्निवर्त्तिते लोकपूरणादस्मात् ॥
विहितायुःसमकर्मा, ध्यानी प्रतिलोममार्गेण ॥ ५२ ॥

अर्थः– एवी रीतें चार समये करीने लोकपूरणथी निवृत्त थयाबाद, आयुष्यसम कर्मने करीने प्रतिलोममार्गथी ध्यानी थाय ठे. तथा,

श्रीमानचिंत्यवीर्यः, शरीरयोगेऽथ बादरे स्थित्वा ॥
अचिरादेव हि निरुण, ध्दि बादरौ वाङ्मनसयोगौ ॥ ५३ ॥

अर्थः– अचिंत्यवीर्यवालो तथा शोजायुक्त थइने, बादर एवा शरीरयोगमां रहीने, तुरतज बादर एवा मनवचनना योगने रोकेठे. तथा,

सूक्ष्मेण काययोगे, न काययोगं सबादरं रुध्यात् ॥
तस्मिन्ननिरुध्दे सति, शक्योरोद्धुं न सूक्ष्मतनुयोगः ५४ ॥

अर्थः– सूक्ष्म एवा काययोगें करीने बादर काययोगने रुंधे, ते रुंध्याविना सूक्ष्मकाययोग रोधी शकातो नथी. तथा,

वचनमनोयोगयुगं, सूक्ष्मं निरुणध्दि सूक्ष्मतनुयोगात् ॥
विदधाति ततो ध्यानं, सूक्ष्मक्रियमसूक्ष्मतनुयोगं ॥ ५५ ॥

अर्थः– सूक्ष्म कायना योगथी सूक्ष्म एवा मन वचनना योगने रोके ठे; तथा पठी सूक्ष्मक्रियावालुं, अने असूक्ष्म शरीरना योगवालुं ध्यान धरे ठे. तथा,

तदनंतरं समुत्प, न्नक्रियमाविर्भवेदयोगस्य ॥
अस्यांते क्षीयंते, त्वघातिकर्माणि चत्वारि ॥ ५६ ॥

अर्थः– ते वार पठी योगनुं समुत्पन्नक्रिय प्रगट थायठे, अने तेने अंते चार अघातिकर्मोनो क्षय थाय ठे. तथा,

लघुवर्णपंचकोद्गिरण, तुल्यकालमवाप्य शैलेशीं ॥
क्षपयति युगपत्परितो, वेद्यायुर्नामगोत्राणि ॥ ५७ ॥

अर्थः— पांच लघु अक्षर बोलाय तेटला कालमां शैलेशीने (मेरुसरखा स्थिरपणाने) पामीने एकी वखते सर्व बाजुथी वेद्य एवां आयु, नाम अने गोत्र कर्मोनो ते क्षय करे छे. तथा,

औदारिकतैजस का, र्मणानि संसारमूलकरणानि ॥
हित्वेह ऋजुश्रेण्या, समयेनैकेन याति लोकांतं ॥ ५८ ॥

अर्थः— संसारनां मूलनां कारणरूप एवां औदारिक, तैजस अने कार्मणोने अहीं तजीने ऋजुश्रेणिना एक समयमां ते लोकांतप्रत्ये जाय छे.

नोर्ध्वमुपग्रहविरहा, दधोपि वा नैव गौरवाभावात् ॥
योगप्रयोगविगमात्, न तिर्यगपि तस्य गतिरस्ति ॥ ५९ ॥

अर्थः— उपग्रहना अभावथी तेनी उर्ध्वगति होती नथी, अथवा गौरवपणाना अभावथी अधोगति पण तेनी होती नथी, तेम योगप्रयोगना नाशथी तेनी तिर्छिगति पण होती नथी.

लाघवयोगाद्धूमव, दलाबुफलवच्च संगविरहेण ॥
बंधनविरहादेरं, डवच्च सिद्धस्य गतिरूर्ध्वं ॥ ६० ॥

अर्थः— लाघवपणाना योगथी धूमनी पेठे, तथा संगना अभावथी, तथा बंधनना अभावथी एरंडनी पेठे सिद्धनी उर्ध्वगति थाय छे. तथा,

सादिकमनंतमनुपम, मव्याबाधं स्वभावजं सौख्यं ॥
प्राप्तः सकेवलज्ञा, न दर्शनोमोदते मुक्तः ॥ ६१ ॥

अर्थः— पछी मुक्त थयो थको केवलज्ञान अने केवलदर्शन पामीने सादि अनंत अनुपम, बाधारहित एवुं स्वाभाविक सुख ते पामे छे.

एवी रीतें परमार्हतश्रीकुमारपाल राजाथी सेवायेला आचार्य महाराजश्रीहेमचंद्रजीयें बनावेला अध्यात्मोपनिषद् नामना, तथा थयेल छे, पट्टबंध जेनो एवा, श्रीयोगशास्त्रमां पोतेंज करेलुं अग्यारमा प्रकाशनुं विवरण समाप्त थयुं. श्रीरस्तु.

श्रीजिनाय नमः ॥

द्वादशः प्रकाशः प्रारभ्यते.

श्रुतसिंधोर्गुरुमुखतो, यदधिगतं तदिह दर्शितं सम्यक् ॥
अनुभवसिद्धमिदानीं, प्रकाश्यते तत्वमिदममलं ॥ १ ॥

अर्थः— सिद्धांतोरूपी समुद्रमांथी, अने गुरुनां मुखथकी, जे कंइं में जाण्युं हतुं, ते अहीं सारी रीतें देखाड्युं. हवे अनुभवथी सिद्ध एवुं निर्मल तत्व हुं प्रकाशुं छुं.

इहविक्षिप्तं याता, यातं श्लिष्टं तथा सुलीनं च ॥
चेतश्चतुःप्रकारं, तज्ज्ञचमत्कारकारि भवेत् ॥ २ ॥

अर्थः— अहीं योगाभ्यासमां विक्षिप्त, यातायात, श्लिष्ट, अने सुलीन एवुं चार प्रकारनुं चित्त, तेना जाणनाराओने चमत्कार करनारुं थाय.

विक्षिप्तं चलमिष्टं, यातायातं च किमपि सानंदं ॥
प्रथमाभ्यासे द्वयमपि, विकल्पविषयग्रहं तत्स्यात् ॥ ३ ॥

अर्थः— कंइंक आनंदसहित विक्षिप्त एटले चल, अने यातायात, ए बन्ने विकल्पोनां विषयवालां चित्तो प्रथमना योगाभ्यासमां थाय. तथा,

श्लिष्टं स्थिरसानंदं, सुलीनमतिनिश्चलं परानंदं ॥
तन्मात्रकविषयग्रह, मुभयमपि बुधैस्तदाम्नातं ॥ ४ ॥

अर्थः— स्थिर तथा आनंद सहित एवुं श्लिष्ट चित्त, अने अत्यंत निश्चल तथा परम आनंदरूप सुलीन चित्त होय, अने ते बन्ने तन्मय विषयोने ग्रहण करनारा पंडितोए कहेलां छे. तथा,

एवं क्रमशोऽभ्यासा, वेशाद्ध्यानं भजेन्निरालंबं ॥
समरसभावं यातः, परमानंदं ततोऽनुभवेत् ॥ ५ ॥

अर्थः— एवी रीतें अनुक्रमें अभ्यासना आवेशथी निरालंबन एवा ध्यानने भजे, अने समता रसना भावने प्राप्त थयो थको परम आनंदने अनुभवे.

बाह्यात्मानमपास्य, प्रसक्तिभाजांतरात्मना योगी ॥
सततं परमात्मानं, विचिंतयेत्तन्मयत्वाय ॥ ६ ॥

अर्थः– बाह्य आत्माने तजीने, प्रसक्तजावथी अंतरात्मायें करीने योगी हमेशां तन्मयपणामाटे परमात्माने चिंतवे.

हवे बे आर्याउयें करीने बहिरात्मानुं स्वरूप कहे छे.

आत्मधिया समुपात्तः, कायादिः कीर्त्यतेऽत्र बहिरात्मा ॥
कायादेः समधिष्ठा, यको जवत्यंतरात्मा तु ॥ ७ ॥

अर्थः– आत्मबुद्धिथी ग्रहण करेलो जे कायादिक ते बहिरात्मा कहेवाय, अने कायादिकप्रत्ये अधिष्ठायक अंतरात्मा कहेवाय. तथा,

चिद्रूपानंदमयो, निःशेषोपाधिवर्जितः शुद्धः ॥
अत्यक्षोऽनंतगुणः, परमात्मा कीर्त्तितस्तज्ज्ञैः ॥ ८ ॥

अर्थः– चिद्रूप तथा आनंदमय, अने सघली उपाधिउथी रहित, शुद्ध, इंद्रिने अगोचर, अने अनंत गुणमय एवो परमात्मा तेना जाणकारोए कहेलो छे,

पृथगात्मानं काया, त्पृथक् च विद्यात्सदात्मनः कायं ॥
उजयोर्जेदज्ञाता,ऽत्मनिश्चयेन स्खलेद् योगी ॥ ए ॥

अर्थः– कायाथी आत्माने, अने आत्माथी कायाने योगी पृथक् जाणे, अने एवी रीतें बन्नेने जाणीने योगी आत्मनिश्चयें करीने अटके.

अंतःपिहितज्योतिः, संतुष्यत्यात्मनोऽन्यतोमूढः ॥
तुष्यत्यात्मन्येव हि, बहिर्निवृत्तभ्रमोयोगी ॥ १० ॥

अर्थः– अंदर आछादित थएल छे ज्योति जेनुं एवो मूढ, आत्माथी परजावमां संतुष्ट थाय छे, अने योगी छे ते बहिरात्मामांथी ज्रमने तजीने अंतरात्मामांज संतुष्ट थाय छे. तथा,

पुंसामयत्नलज्यं, ज्ञानवतामव्ययं पदं नूनं ॥
यद्यात्मन्यात्मज्ञा, नमात्रमेते समीहंते ॥ ११ ॥

अर्थः– ज्यारे योगीउ आत्मानेविषे आत्मज्ञानमात्रने इछे छे, त्यारे ते ज्ञानी पुरुषोने यत्नविना प्राप्त थाय, तेवुं खरेखर मोक्षपद मळेछे.

श्रयते सुवर्णजावं, सिद्धरसस्य स्पर्शतो यथा लोहं ॥
आत्मध्यानादात्मा, परमात्मत्वं तथाप्नोति ॥ १२ ॥

अर्थः— जेम सिद्धरसना स्पर्शथी लोखंड, सुवर्णमय भावने पामे छे, तेम आत्मध्यानथी आत्मा परमात्मपणाने पामे छे, तथा,

जन्मांतरसंस्कारा, त्स्वयमेव किल प्रकाशते तत्वं ॥
सुप्तोत्थितस्य पूर्व, प्रत्ययवन्निरुपदेशमपि ॥ १३ ॥

अर्थः— जन्मांतरना संस्कारथी पोतानी मेलेज तत्व प्रकाशे छे, जेम ऊंघीने उठेलाने पूर्वनुं कार्य सांभले छे, तेम. तथा,

अथवा गुरुप्रसादा, दिहैव तत्वं समुन्मिषति नूनं ॥
गुरुचरणोपास्तिकृतः, प्रशमजुषः शुद्धचित्तस्य ॥ १४ ॥

अर्थः— अथवा गुरुना चरणनी सेवा करनार, समतावंत, तथा शुद्ध चित्तवाला योगीने गुरुना प्रसादथी अहींज खरेखर तत्व प्रगट थाय छे.

तत्र प्रथमे तत्व, ज्ञाने संवादको गुरुर्भवति ॥
दर्शयिता त्वपरस्मिन्, गुरुमेव सदा भजेत्तस्मात् ॥ १५ ॥

अर्थः— त्यां संस्कारजन्म एवा प्रथम तत्वज्ञानमां पण गुरुज संवादक छे, अने बीजा अहीं संबंधि तत्वज्ञानने पण गुरुज देखाडनारा छे, माटे गुरुने हमेशां सेववा.

यद्वत्सहस्रकिरणः,प्रकाशको निचिततिमिरमग्नस्य ॥
तद्वद्गुरुरत्रभवे, दज्ञानध्वांतपतितस्य ॥ १६ ॥

अर्थः— जेम घाटा अंधकारमां मग्न थएलाने सूर्य प्रकाशकरता छे, तेम अज्ञानरूपी अंधकारमां पडेलाने आ भवमां गुरु तारवाने समर्थ छे.

ततश्च प्राणाया, मप्रभृतिक्लेशपरित्यागतस्ततो योगी ॥
उपदेशं प्राप्य गुरो, रात्माभ्यासे रतिं कुर्यात् ॥ १७ ॥

अर्थः— पछी प्राणायाम आदिक क्लेशोना त्यागथी योगी गुरुनो उपदेश पामीने आत्मअभ्यासमां रति करे. तथा,

वचनमनःकायानां, क्षोभं यत्नेन वर्जयेच्छांतः ॥
रसभांडमिवात्मानं, सुनिश्चलं धारयेन्नित्यं ॥ १८ ॥

अर्थः— पछी शांत थइने यत्नें करीने मन; वचन अने कायाना क्षो-भने वर्जे, अने रसभांडनी पेठे हमेशां आत्माने निश्चल धारे. तथा,

औदासीन्यपरायण, वृत्तिः किंचिदपि चिंतयेन्नैव॥
यत्संकल्पाकलितं, चित्तं नासादयेत् स्थैर्यं ॥ १९ ॥

अर्थः— उदासीनपणामां तत्परवृत्तियुक्त थयो थको ते किंचित् पण चिंतवे नहीं, केम के, संकल्पें करीने आकुल एवुं चित्त स्थिरता पामे नहीं. तथा,

यावत् प्रयत्नलेशो, यावत्संकल्पकल्पना कापि ॥
तावन्न लयस्यापि, प्राप्तिस्तत्वस्य का तु कथा ॥ २० ॥

अर्थः—ज्यांसुधि लेशपण प्रयत्न छे, तथा ज्यांसुधि कोइ पण संकल्पनी कल्पना छे, त्यांसुधि लयनी पण प्राप्ति थती नथी, त्यारे तत्वनी तो वातज शी?

यदिदं तदिति न वक्तुं, साक्षाद् गुरुणापि हंत शक्येत ॥
औदासीन्यपरस्य, प्रकाशते तत्स्वयं तत्वं ॥ २१ ॥

अर्थः— औदासीन्यमां तत्पर थयेलाने स्वयमेव (पोतानी मेले) जे तत्व प्रकाशे छे, तेने साक्षात् गुरु पण कही शकता नथी. तथा,

एकांतेऽपि पवित्रे, रम्ये देशे सदा सुखासीनः ॥
आचरणाग्रशिखाग्रा, च्छिथिलीभूताखिलावयवः ॥ २२ ॥
रूपं कांतं पश्य, न्नपि शृण्वन्नपि गिरं कलमनोज्ञां ॥
जिघ्रन्नपि च सुगंधी, न्यपि भुंजानो रसास्वादं ॥ २३ ॥
भावान् पश्यन्नपि मृदू, न्नवारयन्नपि च चेतसोवृत्तिं ॥
परिकलितौदासीन्यः, प्रणष्टविषयभ्रमोनित्यं ॥ २४ ॥
बहिरंतश्च समंतात्, चिंताचेष्टापरिच्युतोयोगी ॥
तन्मयभावं प्राप्तः, कलयति भृशमुन्मनीभावं ॥ २५ ॥

॥ चतुर्भिः कलापकं ॥

अर्थः— एकांत अने पवित्र, तथा मनोहर एवा प्रदेशमां पण हमेशां सुखें रहेतो, अने उत्कृष्ट आचरणोथी आरंभी शिखाना अग्रभाग पर्यंत

शिथिल थयेल छे सघला अवयवो जेना एवो, तथा मनोहर रूप जोतो अने मनोहर वाणी सांजलतो, सुगंधोने सुंघतो, अने रसोना स्वादोने जोगवतो, कोमल जावोने जोतो, अने चित्तनी वृत्तिने, नहीं निवारण करतो पण, उदासीनताने धारण करतो, हमेशां विषयोना जमोने नष्ट करीने, बहार अने अंदरनी चिंता तथा चेष्टाथी दूर रहीने, तन्मयपणाने प्राप्त थयो थको योगी उत्कृष्ट एवा विरक्तपणाना जावने अत्यंत धारण करे छे. तथा,

गृह्णंति ग्राह्याणि, स्वानि स्वानींद्रियाणि नो रुध्यात् ॥
न खलु प्रवर्त्तयेद्वा, प्रकाशते तत्वमचिरेण ॥ २६ ॥

पोत पोतानी ग्राह्य वस्तुउने ग्रहण करती एवी इंद्रियोने रोकी शकाय नहीं, अथवा प्रवृत्त पण कराय नहीं, अने तुरत तत्व पण प्रकाश करे नहीं. तथा,

चेतोऽपि यत्र यत्र, प्रवर्त्तते ना ततस्ततोवार्यं ॥
अधिकीजवति हि वारित, मवारितं शांतिमुपयाति ॥२७॥

अर्थः– तेम चित्त पण ज्यां त्यां जम्या करे छे, माटे तेने पण वारी शकातुं नथी, वारवाथी, अधिक थाय छे, अने नहीं वारवाथी शांति पामे छे.

मदमत्तोहि नागो, वार्यमाणोप्यधिकीजवति यद्वत् ॥
अनिवारितस्तुकामां, ल्लब्ध्वा शाम्यति मनस्तद्वत् ॥ २८ ॥

अर्थः– मदोन्मत्त एवा हाथीने वारतां थकां पण जेम अधिक मत्त थाय छे, अने नहीं निवार्याथी, कामने मेलवीने जेम शांत थाय छे. तेवी स्थिति मननी पण जाणवी.

यर्हि यथा यत्र यतः, स्थिरीजवति योगिनश्चलं चेतः ॥
तर्हि तथा तत्र ततः, कथंचिदपि चालयेन्नैव ॥ २९ ॥

अर्थः– ज्यारे, जेम, ज्यां जेथी योगीनुं चल एवुं चित्त स्थिर थाय, त्यारे, तेम, त्यां अने तेथी कोइ पण रीतें चलायमान थाय नहीं. तथा,

अनया युक्त्याज्यासं, विदधानस्यातिलोलमपि चेतः ॥
अंगुल्यग्रस्थापित, दंड इव स्थैर्यमाश्रयति ॥ ३० ॥

अर्थः—आ युक्तियें करीने अभ्यास करता एवा योगिनुं चल एवुं पण चित्त, आंगलीना अग्र जागपर स्थापन करेला दंडनी पेठे स्थिरताने पामेछे.

हवे बे आर्याउयें करीने इंद्रियोना जयनो विधि कहे छे.

निःसृत्यादौ दृष्टिः, संलीना यत्र कुत्रचित्स्थाने ॥
तत्रासाद्य स्थैर्यं, शनैः शनैर्विलयमाप्नोति ॥ ३१ ॥

अर्थः— पेहेलां निकलीने कोइ पण जगोये ज्यां दृष्टि लीन थाय छे, त्यां स्थिरता पामीने धीरे धीरे लीन थाय छे.

सर्वत्रापि प्रसृता, प्रत्यग्भूता शनैः शनैर्दृष्टिः ॥
परतत्वामलमुकुरे, निरीक्षते ह्यात्मनात्मानं ॥ ३२ ॥

अर्थः— सर्व जगोये प्रसरेली, तथा धीरे धीरे प्रत्यक्ष थयेली एवी दृष्टि उत्कृष्ट तत्वरूपी निर्मल आरिसामां आत्माने जुवे छे.

हवे त्रण आर्याउयें करीने मनने जीतवानो विधि कहे छे.

औदासीन्यनिमग्नः प्रयत्नपरिवर्जितः सततमात्मा ॥
जावितपरमानंदः, क्वचिदपि न मनोनियोजयति ॥ ३३ ॥

अर्थः— उदासीनतामां निमग्न थएलो, अने प्रयत्नें करीने वर्जित एवो आत्मा, हमेशां, जावित छे परमानंद जेणे एवो थयो थको, क्वचित् पण मनने जोडतो नथी. तथा,

करणानि नाधितिष्ठं, त्युपेक्षितं चित्तमात्मना जातु ॥
ग्राह्ये ततोनिजनिजे, करणान्यपि न प्रवर्त्तंते ॥ ३४ ॥

अर्थः—आत्मायें करीने उपेक्षित एवा चित्त प्रत्ये इंद्रियो पण पोतानुं सामर्थ्य चलावी शकती नथी; अने तेथी पोतपोतानी ग्राह्य वस्तुउ प्रत्ये इंद्रियो पण प्रवर्त्तती नथी. तथा,

नात्मा प्रेरयति मनो, न मनः प्रेरयति यर्हि करणानि ॥
उजयभ्रष्टं तर्हि, स्वयमेव विनाशमाप्नोति ॥ ३५ ॥

अर्थः— आत्मा मनने प्रेरतो नथी अने तेवी रीतें ज्यारे मन पण इंद्रियोने प्रेरतुं नथी, त्यारे एवी रीतें उजयथी ज्रष्ट थएलुं मन पोतानी मेलेज नाश पामे छे.

नष्टे मनसि समंतात्, सकले विलयं च सर्वतोयाते ॥
निष्कलमुदेति तत्वं, निर्वातस्थायिदीप इव ॥ ३६ ॥

अर्थः– मन चारे बाजुथी नष्ट होते छते, तथा सकल तत्व क्षयने पामते छते, पवनविना जेम दीपक तेम निष्कल तत्व प्रगट थाय छे. तथा,

अंगमृदुत्वनिदानं, स्वेदनमर्दनविवर्जनेनापि ॥
स्निग्धीकरणमतैलं, प्रकाशमानं हि तत्वमिदं ३७॥

अर्थः– स्वेदन मर्दन विना पण अंगने मृदुपणानां कारणरूप, अने तेलविना स्निग्ध करनारुं, एवुं ते प्रकाशतुं तत्व जाणवुं. तथा,

अमनस्कतया संजा, यमानया नाशिते मनःशल्ये ॥
शिथिलीभवति शरीरं, छत्रमिव स्तब्धतां त्यक्त्वा ॥ ३८ ॥

अर्थः– उत्पन्न थता अमनस्कपणायें करीने मनरूपी शल्य नाश पामते छते, छत्रनी पेठे स्तब्धपणाने तजीने शरीर शिथिल थाय छे.

शल्यीभूतस्यांतः, करणस्य क्लेशदायिनः सततं ॥
अमनस्कतां विनान्यत्, विशल्यकरणौषधं नास्ति ॥ ३९॥

अर्थः– शल्यरूप थयेला, अने हमेशां क्लेश देनारा एवा अंतःकरणने शल्यरहित करवाने अमनस्कपणाविना बीजुं औषध नथी. तथा,

कदलीवच्चाविद्या, लोलेंद्रियपत्रला मनःस्कंदा ॥
अमनस्कफले दृष्टे, नश्यति सर्वप्रकारेण ॥ ४० ॥

अर्थः– चपल इंद्रियोरूपी पत्रवाली, तथा मनरूपी मूलवाली केलसमान अविद्या (अज्ञानपणुं) अमनस्करूपी फल देखाते छते, सर्व प्रकारें नष्ट थाय छे. तथा,

अतिचंचलमतिसूक्ष्मं, दुर्लक्ष्यं वेगवत्तया चेतः ॥
अश्रांतमप्रमादा, दमनस्कशलाकया भिंद्यात् ॥ ४१ ॥

अर्थः– अति चंचल, तथा अतिसूक्ष्म, अने वेगपणायें करीने अति दुर्लक्ष्य, एवुं चित्त अत्यंत प्रमाद विना अमनस्करूपी शलाकाथी भेदी शकाय.

विश्लिष्टमिवप्लुष्टमि, वोड्डीनमिव प्रलीनमिव कायं ॥
अमनस्कोदयसमये, योगी जानात्यसत्कल्पं ॥ ४२ ॥

अर्थः— अमनस्कपणाना उदय वखते योगी छे ते, कायाने विश्लिष्ट (विखायेलानी) पेठे, नष्टनी पेठे, उडीगयेलानी पेठे, अथवा लीन थयेलानी पेठे असत् कल्पनावाली जाणे छे. तथा,

समदैरिंडियभुजगै, रहिते विमनस्कनवसुधाकुंडे ॥
मग्नोऽनुभवति योगी, परामृतास्वादमसमानं ॥ ४३ ॥

अर्थः— मदोन्मत्त एवा इंद्रियो रूपी सर्पोयें करीने रहित, एवा विमनस्करूपी नवा अमृतकुंडमां मग्न थयेलो योगी, अतुल्य एवा उत्कृष्ट अमृतना स्वादने अनुभवे छे. तथा,

रेचकपूरककुंभक, करणाभ्यासक्रमं विनापि खलु ॥
स्वयमेव नश्यति मरुत्, विमनस्के सत्ययत्नेन ॥ ४४ ॥

अर्थः— रेचक, पूरक, कुंभक करवाना अभ्यास विना पण, विमनस्क पणुंहोते छते, यत्नविना वायु पोतानी मेलेज नाश पामे छे.

चिरमाहितप्रयत्नै, रपि धर्तुं योहि शक्यते नैव ॥
सत्यमनस्के तिष्ठति, स समीरस्तत्क्षणादेव ॥ ४५ ॥

अर्थः— लांबा कालथी धारण करेला प्रयत्नोयें करीने पण जे पवन धारी शकातो नथी, ते पवन तत्क्षणज अमनस्कपणुं होते छते स्थिर थाय छे.

यातेऽभ्यासे स्थिरता, मुदयति विमले च निष्कले तत्वे ॥
मुक्त इव भाति योगी, समूलमुन्मूलितश्वासः ॥ ४६ ॥

अर्थः— अभ्यास उदय होते छते, तथा स्थिरता, मलते छते, अने निर्मल, तथा निष्कल तत्व होते छते, मूलथी श्वासने दूर करीने योगी मुक्तनी पेठे शोभे छे.

यो जाग्रदवस्थायां,स्वस्थः सुप्त इव तिष्ठति लयस्थः ॥
श्वासोच्छ्वासविहीनः, सहीयते न खलुमुक्तिजुषः ॥ ४७ ॥

अर्थः— वली जे जाग्रत अवस्थामां पण ध्यानमां रह्यो थको सुतेलानी पेठे स्वस्थ रहे छे. अने श्वासोच्छ्वास विनानो थयो थको, मुक्तथी जुदो पडी शकतो नथी.

जागरणस्वप्नजुषो, जगतीतलवर्तिनः सदा लोकाः ॥
तत्वविदो लयमग्ना, नो जाग्रति शेरते नापि ॥ ४८ ॥

अर्थः– जगत्मां रहेला लोको हमेशां जागता अने स्वप्नवाला होय छे, पण ध्यानी एवा तत्वने जाणनारा योगीयो तो जागता के उंघता पण नथी.

भवति खलु शून्यभावः, स्वप्ने विषयग्रहश्च जागरणे ॥
एतद्वितीयमतीत्या, नंदमयमवस्थितं तत्वं ॥ ४९ ॥

अर्थः– स्वप्नमां खरेखर शून्य भाव थाय छे, अने जागरणमां विषयोनुं ग्रहण थाय छे, माटे ते बन्नेने तजवाथी आनंदमय तत्व थाय छे. तथा,

कर्माण्यपि दुःखकृते, निष्कर्मत्वं सुखाय विदितं तु ॥
न ततः प्रयतेत कथं, निःकर्मत्वे सुलभमोक्षे ॥ ५० ॥

अर्थः– कर्मो तो दुःख माटे छे, अने निःकर्मपणुं सुखमाटे जणायेलुं छे, माटे सुलभ छे मोक्ष जेथी एवा निःकर्मपणामां शामाटे प्रयत्न न करवो? तथा.

मोक्षोऽस्तु वा मास्तु, यदिवा परमानंदस्तु वेद्यते सखलु ॥
यस्मिन्निखिलसुखानि, प्रतिभासंते न किंचिदिव ॥ ५१ ॥

अर्थः–मोक्ष थाओ अथवा मा थाओ, तो पण परमानंदपणुं तो खरेखर वेदी शकाय छे, के जे परमानंदपणुं होते छते बीजां सघलां सुखो तेना कंइ पण हिसाबमां नथी. तथा,

मधु न मधुरं नैताः शीतास्त्विषस्तुहिनद्युते
रमृतममृतं नामैवास्याः फले तु मुधा सुधा ॥
तदलममुना संरंभेण प्रसीद सखे मनः
फलमविकलं त्वय्येवैतत् प्रसादमुपेयुषः ॥ ५२ ॥

अर्थः– वळी तेना सुख आगळ मध मधुरुं नथी, तेम चंद्रनी कांति पण शीतल नथी, अमृत तो निष्फल छे, अने सुधा पण फोकट छे, माटे हे मित्र! बीजा यत्नथी सर्युं, पण आ परमानंदना अतुल्य फलने पामीने तेमां मन लगाड? वळी,

सत्ये तस्मिन्नरतिरतिदं गृह्यते वस्तु दूरा
दप्यासन्नेप्यसति तु मनस्याप्यते नैव किंचित् ॥
पुंसामित्यप्यवगतवतामुन्मनीभावहेता
विच्छा बाढं न भवति कथं सद्गुरूपासनायां ॥ ५३ ॥

अर्थः– ते मन होते छते अरति अने रतिने देनारी वस्तु दूरथी ग्रहण कराय छे, अने तेम नजदीक नहीं होते छते, तेमां किंचित् पण प्राप्त करातुं नथी, एवी रीतें जाणता एवा पुरुषोनी पण इच्छा उन्मनी भावना हेतुरुप एवी सद्गुरुनी उपासनामां अत्यंत रीतें केम प्रवर्त्तती नथी ? तथा,

तांस्तानापरमेश्वरादपिपरान् भावैः प्रसादं नयं
स्तैस्तैस्तत्तदुपायमूढभगवन्नात्मन् किमायास्यसि ॥
हंतात्मानमपि प्रसादय मनाग्येनासतांसंपदः ॥
साम्राज्यं परमेपि तेजसि तव प्राज्यं समुज्जृंभते ॥ ५४ ॥

अर्थः– हे उपायमूढ एवा आत्मा, परमेश्वरथी अन्य एवाउने ते ते भावोयें करीने प्रसादप्रत्ये लावतो थको फोकट तुं शामाटे प्रयासमां पडे छे ? पण फक्त तारा आत्मानेज तुं परमानंदमां लाव्य के जेथी उत्कृष्ट तेज होते छते तने परम साम्राज्यनी संपदा मळे.

या शास्त्रात्सुगुरोर्मुखादनुभवाच्चाज्ञायि किंचित्क्वचित्
योगस्योपनिषद् विवेकिपरिषच्चेतश्चमत्कारिणी ॥
श्रीचौलुक्यकुमारपालनृपते रत्यर्थमभ्यर्थना
दाचार्येण निवेषिता पथि गिरां श्रीहेमचंद्रेण सा ॥ ५५ ॥

अर्थः– विवेकिउनी सभाना चित्तने चमत्कार करनारी, एवी योगनी उपनिषद्, जे कंइ शास्त्रोथी, सुगुरुना मुखथी, अने अनुभवथी जाणी हती, ते श्री चौलुक्य वंशना कुमारपाल नामना राजानी अत्यंत प्रार्थनाथी आचार्य महाराज श्री हेमचंद्रजीयें वाणीना मार्गमां मेली, अर्थात् आ शास्त्र रचीने तेमां प्रकाशित करी.

एवी रीते आ योगशास्त्रनुं शुरू गुजराती भाषांतर जामनगरनिवासी पंडित श्रावक हीरालाल वि. हंसराजे करेलुं छे. तेमां प्रमादथी के मतिदोषथी जे कंइ विपरीत के उत्सूत्र लखायुं होय, ते "मिछामिडुकडं." अने ते सुज्ञ जनोये क्षमा करी सुधारीने वांचवुं. केम के,

गछतः स्खलनं क्वापि, भवत्येव प्रमादतः

हसंति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः ॥ १ ॥

अर्थः– मार्गे जतां थकां प्राणीने प्रमादथी स्खलना तो क्यांक पण थाय छे; पण ते वखते दुर्जनोज त्यां हांसी करे छे, पण सज्जनो तो तेने सारी रीते उठाडीने बेठो करे छे.

हवे भाषांतरकर्ता समाप्तिमंगल माटे पोतानां गुरु श्रीचारित्रविजयजी* महाराजनी स्तुति करे छे.

लब्ध्वायदीयचरणांबुजतारसारं स्वादछटाधरितदिव्यसुधासमूहम्

संसारकाननतटेह्यटतालिनेव पीतो मया प्रवरबोधरसप्रवाहः॥१॥

वंदे मम गुरुं तंच, चारित्रविजयाभिधम्॥

परोपकारिणां धुर्यं, दत्तानंदकदंबकम् ॥ २ ॥ युग्मम् ॥

+ हीनपुण्या न पश्यंति, रागांधास्तत्वसंस्थितिम् ॥

लाभेऽलाभफलंचैव, लभंते ते नराधमाः ॥ १ ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रंथः, गुरु श्रीमच्चारित्रविजयसुप्रसादात् ॥

---

* मुनिराज श्रीआत्मारामजी महाराजनां हाल मुख्यशिष्य श्रीचारित्रविजयजी छे, अने तेओ हाल मेसाणामां चतुर्मास रहेला छे. तेओ ज्ञानथी अने उमरथी गीतार्थ सरखा छे; तथा महा शांतस्वभावी अने उत्तम चारित्र पालनारा छे. तेओ थोडा वर्ष अगाउ जामनगर चतुर्मास करवा आवेल हता; तेमनी पासे में (भाषांतर कर्ता हीरालाले) संस्कृत भाषानो अभ्यास कर्यो हतो; माटे ते भाषानुं, तथा जैनशास्त्रोनुं ज्ञान थवामां मारापर तेमनो मोटो उपकारछे. तेम महाराज श्रीहंसविजयजी तथा कांतिविजयजी आदिकनो पण ते संबंधमां मारापर उपकार थयेलो छे. + पादाद्याक्षरैर्भाषांतरकर्तुर्नामसूचकोयंश्लोकः

अथ जामनगरनिवासि हंसराजात्मजपंडित श्रावक हीरालाल- विरचितं भक्तामरपादपूर्तीरुपं श्री विजयानंदस्तोत्रम् ।

वसंततिलकावृत्तम् ।

नत्वाजिनंजनितजंतुमहोपकारं, वंदेमुनिंमुनिवरार्चितपादपद्मम् ॥
आनंदपूर्वविजयाभिधमत्रभूमा, वालंबनंभवजलेपततांजनानाम् ॥ १ ॥
तीर्थंकराननसुधांशुसमुल्लसंतीं, वाणीसुधारसयुतांहिमुदापिबंतम् ॥
वाचंयमंविदितधर्ममथस्तुवंतं, स्तोष्येकिलाहमपितंप्रथमंजिनेंद्रम् ॥ २ ॥
यस्योपदेशसुविनिर्मलमाल्यमेनं, संक्रांतवर्णगुणगुंफितमुक्तवारं ॥
मुक्त्वान्यशासनशयुंचविनाहिमूर्ख, मन्यःकइछतिजनःसहसाग्रहीतुम् ॥३॥
स्याद्वादभंगिभरभासुरमस्यबोधं, भव्यांगिमानसमरालसहस्रपत्रम् ॥
शक्तोभवामिननुवर्णयितुंकथंयत्, कोवातरीतुमलमंबुनिधिंभुजाभ्याम् ॥४॥
पादप्रचारसपिसंप्रविधार्यधात्र्यां, योलोकबांधवइवात्रचकारबोधम् ॥
स्वीयाश्रितांगिकमलस्ययतोप्यशक्तो,नाभ्येतिकिंनिजशिशोःपरिपालनार्थं
जैनेंद्रधर्ममहिमायदमेरिकायां, जझेयदंतकिलतत्तवप्रभावः ॥
आम्रद्रुमेषुसुरभौसुरभिर्यदागा, त्तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतु ॥ ६ ॥
तीर्थंकरागमकुशेशयराजहंसं, योगींद्रवारवरमानससन्निवासम् ॥
त्वांवीक्ष्यमेनिबिडकर्मगतंप्रणाशं, सूर्यांशुभिन्नमिवशार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥
पाषाणतुल्यकठिनाश्चपितेमुनींद्र, धर्मोपदेशवचनप्रविधत्तचित्ताः ॥
यास्यंतिमोक्षममलछदगोहिकिंनो, मुक्ताफलद्युतिमुपैतिननूदबिंदुः ॥ ८ ॥
शास्त्राण्यहंजिनवचोमृतसंभृतानि, दृष्ट्वाघनानिसदयंभवतोदितानि ॥
हृष्टःशिखीवकिमुभोनगतोहिहर्षं, पद्माकरेषुजलजानिविकाशभांजि ॥ ९ ॥
मिथ्यात्वतामसभरोग्रनिशाटनाभा, रेरेपरेमुनिवरस्यमहत्त्वमस्य ॥
हंतेहकिंसपदिपश्यतशिष्यवर्गं, भूत्याश्रितंयइहनात्मसमंकरोति ॥ १० ॥
मिथ्यात्विनोघनतरानपिसंनिरीक्ष्य, व्याकृष्टमेवनमनोममतान्प्रतीह ॥
श्रुत्वावचस्तवघनंह्यपिसंविलोक्य, क्षारंजलंजलनिधेरसितुंकइछेत् ॥ ११ ॥
सिद्धांततोयनिधिपारगतंगताकं त्वांवीक्ष्यवाङ्महिलयाकिलभूमिभागे ॥
श्मश्रुछलेननिहितेवकटाक्षमाला, यत्तेसमानमपरंनहिरूपमस्ति ॥ १२ ॥
खद्योतभांदधतियस्यवचस्त्वदीय, वागर्कमेनमपरंहिशठाभजंते ॥

दृष्टेन्द्रिकैरवगणोऽत्र तदिंदुबिंबं, यद्वासरे जवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥
येकूटवेषमिशतो जगतीह मुग्धान्, व्याधा मृगानिव जनान्निजपाशधर्मे ॥
कर्षंतिसंप्रतिमुनींद्र विनाजवंतं, कस्तान्निवारयतिसंचरतोयथेष्टं ॥ १४ ॥
एकांतवादवचनानिपरोदितानि, नाशंगतानिसहसामुनिराजतानि ॥
स्याद्वादपेशलवचस्तवकिंहतंनु, किंमंदराद्रिशिखरंचलितंकदाचित् ॥१५॥
यत्रान्यदर्शनमताङ्गुरूपदेशा, हिंसादिदोषकलिताःशलजप्रजावं ॥
लब्धाःप्रलब्धमहिमामहिमानुषेंद्रो, दीपोपरस्त्वमसिनाथजगत्प्रकाशः १६
चंडद्युतिस्तुजनितातपवारएष, स्त्वंत्वंगिनाममितशांतिकरः प्रबुद्धः ॥
तेनैवनिर्जयमितीहविधोषयामि, सूर्यातिशायिमहिमासिमुनींद्रलोके॥१७।
वाचंयमेशममचित्तचकोरपक्षी, मिथ्यात्विचौरजरज्जूरिजयप्रदंवै ॥
दृष्ट्वामुमोदतवमोददवक्त्ररूपं, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबं ॥ १८ ॥
जल्पंतिनास्तिकमृतेन्वितिकेजगत्यां, कार्यंकियन्मुनिवरस्यवचोजिरस्य ॥
दुर्जिक्षमाप्यननुमूर्खमृतेवदेत्कः, कार्यंकियज्जलधरैर्जलजारनम्रैः ॥ १९ ॥
लग्नंमनोममसुनेहियथातवोक्तौ, नैवंतथान्यवचसीहवसुंधरायां ॥
रत्नार्थिनांहृदयरत्नगणेयथासं, नैवंतुकाचशकलेकिरणाकुलेपि ॥ २० ॥
योजव्यलोकनिकरश्चरणौप्रणौति, मोक्षप्रदौतवमुनीशजवाब्धियानौ ॥
तस्याथकिंकुगुरुरत्रकदापिलोके, कश्चिन्मनोहरतिनाथजवांतरेपि ॥ २१ ॥
बोधंविबोधितजगज्जनजातवृंदं, मौनींद्रयच्छसिसदैवमुदात्वमेव ॥
अर्कंविबोधितजगज्जनजातवृंदं, प्राच्येवदिग्जनयतिस्फुरदंशुजालं॥ २२ ॥
माधुर्यवारविजितामृतवृंदमेनं, जैनावलंबिजनचित्तचकोरचंद्रं ॥
जव्यांगिसेवितविनात्रतवोपदेशं, नान्यःशिवःशिवपदस्यमुनींद्रपंथा ॥२३॥
मिथ्यात्विशास्त्रगजदारणपुंडरीकं, स्याद्वादशास्त्रवरमानसराजहंसं ॥
एवंविधंतवमुनीशनयोपपन्नं ज्ञानस्वरूपममलंप्रवदंतिसंतः ॥ २४ ॥
त्वत्तःपरोमुनिवरेंद्रसदैवलक्ष्मीं, लब्ध्वावृथास्वपुरुषोत्तमतांव्यनक्ति ॥
ज्ञात्वात्वकिंचनमयेतिविनिश्चितंत्वां, व्यक्तंत्वमेवजगवन्पुरुषोत्तमोसि॥२५
जैनेंद्रदर्शनसमुद्रसुधाकराय, सिद्धांतसारकमलभ्रमरोपमाय ॥
अज्ञानसुप्तजनजागरणारुणाय, तुभ्यंनमोजिनजवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥
क्रोधोग्रधूमनिकरांधितनेत्रयुग्मे, रज्ञानरात्रितिमिराटनमत्तचित्तैः ॥
मिथ्यात्विघूकनिवहैस्त्रिविलोकबंधो, स्वप्नांतरेपिनकदाचिदपीक्षितोसि ॥२७

श्यामत्ववारपरिणिःकृतभृंगवृंद, केशोच्चयालिपरिचुंबितशीर्षन्नागं ॥
वक्त्रंमुनीशतवन्नातिसुधोर्मिगौरं, बिंबंरवेरिवपयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥
सिद्धांतसारकलितानिहितानितानि, नव्येवचांसिविगतानिहितेप्रसारं ॥
प्रातर्यथात्रकिरणानिमहत्प्रन्नाणि, तुंगोदयाद्रिशिरसीवसहस्त्ररश्मेः ॥२९॥
तेजस्विनिर्ग्रहगणैरिवशिष्यवर्गैं, नित्यंमुनीशचरणक्रमसंश्रितैश्च ॥
अंगंविन्नातितववेष्टितमत्रवर्ण्यं, मुच्चैस्तटंसुरगिरेरिवशातकौंनं ॥ ३० ॥
मन्ये मुनीशपरमोदरगं तवेदं, सिद्धांतपारगवलित्रयमायतं ते ॥
संसारसागरशरण्यद्भुतंहिन्नावि, प्रख्यापयत्रिजगतःपरमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥
वाचंयमेशतववाचममोघपुण्यां, श्रुत्वाप्यतत्सपदितीर्थकरत्वन्नावं ॥
धर्मंजनाउपदिशंतिचकांचनानि, पद्मानितत्रविबुधाःपरिकल्पयंति॥३२॥
नव्यांगिनांतवमुनींद्रयथोपदेशो, धत्तेपदं नचतथैवपरस्यमह्यां ॥
यादृक्प्रन्नामृतकरस्यहिमुत्प्रदात्री, तादृक्कुतो ग्रहगणस्यविकासिनोपि॥३३॥
संसारतोयनिधितारणयानरूपौ, लक्ष्मीप्रनूतपरमध्वजमंडितौच ॥
पादौमुनीशनवतोनवतोजनानां, दृष्ट्वानयंनवतिनोनवदाश्रितानां ॥ ३४ ॥
आक्रांतलोकनिवहोनटकोटिकल्पो, दामोदरादिसुरसंहतिनाप्यजेय्यः ॥
एवंविधोऽपिमदनोमुनिराजनव्यं, नाक्रामतिक्रमयुगाचलसंश्रितंते ॥३५॥
क्रोधादिधूमनिकरांधितलोकनेत्रं, नार्यांगजादितृणकाष्टविवर्धितं च ॥
वाचंमयेंद्रकिलकर्मकुपीटयोनिं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥
कूटोपदेशविषवारविदग्धलोक, मिथ्यात्विनायकनुजंगमसंचयश्च ॥
नैवं कदर्थयति तं हि कदापिलोके, त्वन्नामनागदमनी हृदियस्यपुंसः॥३७॥
सूरीश नूरिनवनंगिनराजिताघं, नव्यांगिनां जनितदुःखसमूहमुग्रं ॥
मार्तंडमंडलविन्नानरतः प्रन्नाते, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु निदामुपैति॥३८॥
संसारतापपरितापितमंगमेनं, विष्टाद्यनिष्टमिह हि प्रविहाय तूर्णं ॥
एकांतशांतपदमव्ययमोक्षरुपं, त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लनन्ते ॥ ३९ ॥
छेदप्रनेदनविकुट्टनताडनादि, तीर्यंचनारकमनुष्यनवप्रनूतं ॥
मुक्तिंविमुक्तसकलापदमत्र नव्या, त्रासं विहाय नवतःस्मरणाद्व्रजंति ॥४०॥
रत्नत्रयं मुनिवरेंद्र विलन्य नव्या, स्त्वत्तो नवाहिशमनौषधरूपमत्र ॥
मुक्तिस्त्रियोऽपिगतरूपविन्नाह्यनीष्टा, मर्त्यानवन्तिमकरध्वजतुल्यरूपाः॥४१
नव्या मुनीश तव वागमृतं निपीय, आस्येंदुनिर्गतममूल्यरसप्रवाहं ॥

आनंददामतुलजां प्रविलज्य मुक्तिं, सद्यः स्वयं विगतबंधजया जवंति ॥४२॥
जव्यव्रजो जवति वै जवतोऽजिमुक्तो, वाचंयमेश निखिलं प्रविहाय पापं॥
साहित्यसाररसने रसनारसज्ञो, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥
एवं विधां स्तुतिमिमामनवद्यरूपां, काव्यज्ञचित्तरसदां गुरुजक्तिरम्यां ॥
नित्यं जनः पठति यः पुरुषोत्तमं हि, तंमानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥
जक्तामरपादपूर्त्या, विजयानंदसद्गुरोः ॥
आत्मारामजि दित्यन्या, जिधानस्य मुनीशितुः ॥ ४५ ॥
हीरालालाजिधेनैवं, हंसराजात्मजेन वै ॥
स्तुतिः कृतेयंश्राद्धेन, जामनगरवासिना ॥ ४६ ॥ युग्मम् ॥

इति जामनगर निवासि श्रावकवर्य हंसराजात्मज पंडित हीरालाल विरचिता जक्तामरपादपूर्त्यात्मका परमगुरुसूरिश्वरश्रीविजयानंदस्या-पराजिधानश्रीमदात्मारामजितः स्तुतिः संपूर्णा. गुरुश्रीमच्चारित्रविजय सुप्रसादात्.

शुद्धि पत्र.

पां.	लीं.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३	२९	प्रद्यात	प्रद्योत.
३	२९	लाकमां	लोकमां
५	२७	भमर्यो	भमरो
६	२७	कर्या	कर्यो
१२	२८	प्रभुए	प्रभुनां
१३	१३	त्यारे	ज्यारे
१६	१०	लक्ष	लक्षण
२०	५	कारण	ग्रहण
३१	२५	छडे	छेडे
३७	२३	कह्युंके	पछी प्रभुए कह्युंके,
३९	२८	विचरि	विचार
४१	१५	हाय	होय
४५	१	जोता	जाता
४८	१०	दक्षिणा	दक्षिण
४९	१४	भदेवें	भदेव
४९	१५	तथा	०
५५	१०	ज्यारे	०
५५	१२	नाखी	नाख्यो
५५	१९	कही	करी
५६	४	भरतें	भरत
५७	२०	एक	एक दहाडो
५९	२६	रत्नमय	रत्नत्रय
६६	१२	जेम	जेम तेम
७०	२८	तेअ	ते
७२	७	दशमुं	०
७३	२	वटे मार्गने	वटेमार्गुने
७८	१७	मोह	(मोहनो)
७९	१८	मनोगुणै	मनोगुप्त्ये
७९	१८	नेयाभिः	नेर्याभिः
८१	२८	त्यात्	[illegible]
८२	२	गागात्	गात्
८३	२	चपलवाताकी रहेली	[illegible]
९०	८	डुंकारो	हुंकारो
९३	१८	कवसरे	अवसरे
९३	२०	सदाग्रही	अकदाग्रही
११३	२३	अपुकंपा	अनुकंपा
११६	२५	एवी	एवी रीते
१२६	२०	नित्तिआने	निमित्तिआने
१६०	४	शकतुं	शकतुं नथी;
१६७	१६	मंगरच्छेदं	मंगच्छेदं
१६८	४	यार्व	यींव
१८६	१०	मात्रपि	मात्रमपि
१८९	२२	स्त्रीनां साधारण	साधरणस्त्रीनां (वेश्यानां)
२०२	२३	एवी	एवी पण
२०६	२	भर्तारखाली	भर्तारवाळी
२१८	२१	थी	घी,
२५२	१४	सावध	सावद्य
२५२	२७	अधिकार	अधिकारी
२५३	१३	भंते सामाइ	०
२५४	२३	तेणीए	तेओए
२८५	२२	तेम	तेम ते
२९९	१५	घाई	घायई
३००	१७	स्संभूय	स्सभूअ
३३६	१९	गणश्रेणिं	गुणश्रेणिं
३३८	८	दहतां	दहताम्
३४७	६	लक्षेश्वरो	[illegible]
४५६	१२	भंगं	भंगं